अमूल्य शास्त्र दानदाता

जैन स्तम्भ दानवीर

स्व. राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी, जौहरी

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर

लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण)

मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा महा क्षेत्र साधुमार्गिय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धार रूप महा कार्य हैद्राबाद में हुए इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपश्री के कृतज्ञ होंगे

शिष्य अमोल ऋषि

उपकारी महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज! आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आपके परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा

दास अमोल ऋषि

आभारी महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज !

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री साचित्त शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय २ पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदद देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्धारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के आभारी होंगे

आपका अमोल ऋषि

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घण्टे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया और ऐसा सरल बना दिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुवे हम आप के बडे आभारी हैं

सबकी तर्फ से

सुखदेव सहाय ज्वालाप्रसाद

सहाय मुनिमंडल

अपनी छती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी के शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोप चार का संयोग मिला दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीसे वार्तालाप, कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके इस लिये इस कार्य बहुत उक्त मुनिवर्गों का भी बडा उपकार है

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

और भी सहायदाता

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहन-लालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी तपस्वीजी माणकचन्द्जी, कवी वर श्री अमी ऋषिजी, सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी प श्री नथमलजी, पं श्री जोरावरमलजी कविवर श्री नानचन्द्रजी प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी गुणज्ञ सतीजी श्री रंभाजी धोराजी सर्वज्ञ भंडार, भीना सरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, लींबडी भंडार, कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं

सुखदेव सहाय ज्वालाप्रसाद

आभारी महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज !

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी,गुटका और समय २पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के आभारी होंगे

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य,आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज' आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया और ऐसा सरल बना दिया कि कोई भी हिन्दी भाषा सहज में समज सके, मेसो ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुवे हम आप के बडे आभारी हैं

सबकी तर्फ से

श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्रकी प्रस्तावना

श्रीसिद्धाय नराधिप कुलाम्बरधातशो कैतिरमान्वा॥सर्व सुरासुर भासुर स्वरसघदिताघ्राब्ध ॥१॥
श्रीमद्वीरजिनेन्द्रो पादपद्म समणस्य कुर्वेह ॥ स्तद्बुद्धार्थ श्रीजबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्रस्य ॥ २ ॥

श्री सिद्धार्थ राजा के पुत्र सर्व सुरासुरो के पूज्य श्रीवीर जिनेश्वर के पावों को नमस्कार कर के यह पंचम उपाङ्ग श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र का हिन्दी भाषानुवाद करता हुं ॥ २ ॥ यह भगवती सूत्र का उपांग कहा जाता है भगवती सूत्र मे द्वीप समुद्रों क्षेत्रों तथा चंद्र सूर्य ज्योतीषीयों का संक्षेप मे बहुत स्थान वर्णन किया है- जिस की सम्यक् प्रकार समझ होने के वास्ते इस जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ती सूत्र की रचना रचीगइ है इस जबूद्वीप प्रज्ञप्ती में जम्बूद्वीप के अन्दर रहे भरतादि क्षेत्रों का वैताढ्यादि पर्वतों का पद्मादी द्रह का, गगा आदि नदीयों का, ऋषभादि कूटों का, ऋषभदेवजी का तथा भरतचक्रवर्ती का तीर्थंकर के जन्मोत्सव का बहुत विस्तार से वर्णन किया है. वैसे ही पीछे से चन्द्रादि ज्योतिषीयों का ग्रह, नक्षत्र ताराओं की संख्या, आकार मंडल विमान ज्योतिषीयों के सुख वगैरह का वर्णन किया है इस का मुख्य उतारा तो इटोला (गुजरात) के भंडार से प्राप्त हुई धनपतसिंह बाबू के तरफ से छपी हुई प्रत से किया है और गौणता में मेरे पास की एक प्रत से किया है तथापि छद्मस्तता का जोग से जो कोइ अशुद्धीयों रहगइ हो उसे शुद्ध कीजीये.

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी।

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महा लाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु २००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नही होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गियों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

मोरवाला (काठीयावाड) निवासी धर्म प्रेमी कार्यदक्ष कुसम मणिलाल शिवलाल शेठ' इनोंने जैन ट्रेनिंग कालेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्त की इन से शास्त्रोध्धार का कार्य अच्छा होगा एसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाये, इनोंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोध्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम लिया तैसे ही भाषानुवाद की प्रेसकोपी बनाइ यद्यापि यह भाइ पगार से रहे थे तथापि इनोंने इस कार्य को सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की इस लिये इनको भी धन्यवाद देते हैं

जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्रकी अनुक्रमणिका,

॥ पञ्चम उपाङ्ग. जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र ॥

॥ भरतक्षेत्रस्य अधिकार ॥

णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएण मिहिलाणाम णयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वण्णओ ॥ तीसेण महिलाए णयरीए बहिया उत्तर पुरत्थिमे

मंगलाचरण के लिये प्रथम पच परमेष्टि को नमस्कार करते हैं, यथा—अनत चतुष्टय, अष्ट प्रातिहार्य यों बारह गुण के धारक अरिहंत भगवान को मेरा नमस्कार होवो, २ अष्ट कर्म रहित सिद्ध भगवान को मेरा नमस्कार होवो ३ पंचाचार के पालक छत्तीस गुण युक्त आचार्य भगवान को मेरा नमस्कार होवो, ४ इग्यारः अग बारह उपांग के पठन करनेवाले करण सीत्तरी और चरण सित्तरी से गुण युक्त उपाध्याय भगवान को मेरा नमस्कार होवो, सब लोक में रहे हुवे सब साधुओं को मेरा नमस्कार होवो ॥१॥ इस कोलेमें अवसर्पिनी काल के चौथे आरे में, उस समय भगवानने यह भाव देखे तब मिथिला नामक

इत्यनुक्रमणिका

जबू द्दीवदीव पण्णत्त ? गोयमा ! अयणं जबू दीवदीवे सव्वदीव समुद्दाण सव्वब्भतरिए, सव्वखुड्डाए, वट्टे-तेल्लापूय संठाण सठिए, वट्टे-रहचक्कवाल सठाण सठिए, वट्टे पुक्खर कण्णिया सठाण सठिए, वट्टे पडिपुण्णचद सट्ठाण सट्ठिए, वट्टे-एगजोयण सय सहस्स आयामविक्खभेण, तिण्णि जोयण सय सहस्साइं सोलस सहस्साइ दोण्णिय सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णिकोसे अट्ठावीसच धणुसयतेरसय अगुलाइं अद्धगुलच किंचि विसेसाहिअं परिक्खेवेण पण्णत्ते॥ ४॥ सेण एगाए वइरामईए जगईए सव्वओ समता सपरिक्खित्ते, साण जगई-अट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, मूले बारसजोयणाइ विक्खभेण,

यह जम्बू द्वीप नामक द्वीप कहां है ? यह जम्बूद्वीप कितना बडा है ? जम्बूद्वीप का कैसा सस्थान है? और इस का आकार भाव कैसा है ? अहो गौतम ! यह जम्बूद्वीप सब द्वीप समुद्र में आभ्यन्तर है सब से छोटा है तेल में तला पूडे जैसा गोल है रथ के चक्र जैसा गोल है, पुष्कर कमलकी कर्णिका जैसा गोल है, प्रतिपूर्ण चद्र जैसा गोल है, गोलाकार में एक लाख योजन का लम्बा चौडा है और तीन लाख सोलह हजार दो सत्ताइस योजन, तीन कोश, एकसो अठाइस धनुष्य, और साढे तेरह अगुल से किंचित् अधिक की परिधि है ॥ ४ ॥ इस को एक वज्रमय जगती चारों तरफ वेष्टितकर रही है वह आठ योजन की ऊंची है, मूल में बारह योजन चौडी है, बीच में आठ योजन चौडी है, और ऊपर चार

दिसीभाए एत्थण माणिभद्दे णामं चेइए होत्था वण्णओ ॥ जियसत्तूराया धारिणी देवी वण्णओ ॥ २ ॥ तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥ ३ ॥ तेण कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णाम अणगार, गोयम गोत्तेण सत्तुस्सेहे समचउरसे जाव तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ करेइत्ता वदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जाव एवं वयासी—कहिणं भंते ! जम्बू दीवेदीवे ?, के महालएण भंते ! जंबू दीवेदीवे, ? किं संठिएणं भंते ! जंबू दीवदीवे, किमागार भाव पडोयारेण भंते !

नगरी थी वह ऋद्धि से परिपूर्ण थी उस मिथिला नगरी के बाहिर ईशान कौन में मणिभद्र नामक चैत्य था वहां जितशत्रु राजा राज्य करता था उस को धारणी नामक राणी थी राजा रानी का वर्णन उववाइ सूत्र में कूणिक राजा और उस की धारणी रानी का कहा वैसा जानना ॥२॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीरस्वामी वहां पधारे, परिषदा वदन करने को नीकली वन्दना नमस्कार कर बैठी भगवंतने धर्मकथा कही वह श्रवण कर पीछी गइ ॥३॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के ज्येष्ट अंतेवासी (शिष्य) गौतम गोत्रीय सात हाथ की ऊंचाइवाले समचतुस्र संस्थानवाले इन्द्रभूति नामक अनगार यावत तिनवार आवर्त्त प्रदक्षिणावर्त्त करके वंदना नमस्कार करके ऐसे बोले अहो भगवन्

सव्वरयणामयी अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७ ॥ तीसेणं पउमवर वेइयाए अयमेयारूवे वण्णावासे प... , तंजहा-वयरामयणेम्मा, एवं जहा जीवाभिगमे; जाव अट्ठो जाव धुवा णियगा सासया जाव णिच्चा ॥ ८ ॥ तीसेण जगईए उप्पिं बाहिं पउमवर वेइयाए एत्थण महं एगे वणसडे पण्णत्ते, देसूणाइं दो जोअणाइं विक्खभेण, जगई समए परिक्खेवेण, वणसड वण्णओ णेयव्वो ॥ ९ ॥ तस्सण वणसडस्स अतो बहु समरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामए आलिंग पुक्खरेइवा जाव णाणाविह पचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए, तंजहा—किण्हेहिं एवं वण्णो,

मनुष्य की चौडी जगती जितनी की परिधि वाली सब रत्नमयी यावत् प्रतिरूपा है ॥ ७ ॥ उस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं —उस की वज्ररत्नमय नीम है यावत् जैसे जीवाभिगम सूत्र में वर्णन किया है वैसा ही यहां कहना यावत् वह ध्रुव, क्षय रहित, शाश्वत् यावत् नित्य है॥८॥ उस जगती के उपर और पद्मवर वेदिका से बाहिर एक बडा वनखण्ड कहा है वह कुच्छ कम दो योजन का चौडा है जगती जितनी परिधि वाला है यहां वनखण्ड का वर्णन करना, ॥ ९ ॥ उस वनखण्ड में बहुत रमणीय भूमि भाग है, जैसे आलिंग पुष्कर [नगारे] का चम विभाग तैसा सम-बराबर है यावत् विविध प्रकार की पांच वर्ण वाली मणियों और तृण से शोभित हैं ऐसे ही वर्ण गंध, स्पर्श, शब्द का वर्णन जीवाभिगम सूत्र प्रमाणे जानना [illegible]

मज्झे अट्ठजोयणाइं विक्खभेण,उवरि चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले विच्छिण्णा, मज्झेसंखित्ता, उवरिं तणुया, गोपुच्छसंठाण सट्ठिया, सव्व वइरामई, अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्ककडच्छाया,सप्पभा,सस्सिरीया सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा ॥ ५ ॥ साण जगई एगेण महत गवक्खकडएण सव्वओ समता सपरिक्खित्ता, सेण गवक्खकडए अद्धजोयण उड्ढ उच्चत्तेण,पंचधणुसयाइं विक्खभेणं, सव्वरयणामए, अच्छे जाव पडिरूवे ॥ ६ ॥ तीसेण जगईए उप्पि बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगा पउमवरवेइया पण्णत्ता, अद्धजोयण उड्ढ उच्चत्तेणं, पंचधणुसयाइं विक्खभेण, जगई समीया परिक्खेवेण,

योजन चौडी है मूल में विस्तीर्ण, बीचमें संकुचित और ऊपर पतली है गोपुच्छ संस्थान (आकार) वाली है सब वज्ररत्नमय स्वच्छ सुकोमल घटारी,मठारी,रज रहित,निर्मल है पंक [कर्दम रहित निकंकर शुभ्रकान्ति छायावाली प्रभा,श्री व उद्योत सहित,जिसको आंखोंसे प्रसन्नकारी दर्शनीय अभिरूप और प्रतिरूप है ॥५॥ उस जगती के चारों तरफ जाली वाला गवाक्ष है, यह गवाक्ष आधा योजनका ऊंचा है, पांचसो धनुष्यका चौडा है, सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥६॥ उस जगती के ऊपर बीच में एक पद्मवर वेदिका है यह आधा योजनकी ऊंची पांचसो

जबू द्दीवस्स विजए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्व-यस्स पुरत्थिमेण पणयालीस जोयणसहस्साइ वीइवइत्ता जबूद्दीव दीव पुरत्थिम पेरते लवण समुद्दस्स पुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेण, सीआए महाणईए उप्पिं एत्थण जबूद्दीवस्स विजए णाम दारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण, तावइय चेव पवेसेण, सेए वर कणगथूभियाए, जाव दारस्स-वण्णओ जाव रायहाणी ॥ एव चत्तारिवि दारा सरायहाणीया भाणियव्वा ॥ १३ ॥ जबूद्दीवस्सण भते ! दीवस्स दारस्सय २ केवइए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा !

अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का [विजय] द्वार कहां कहा है, ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में पेंतालीस हजार योजन [illegible] [जम्बूद्वीप] के पूर्व के अंत में और लवण समुद्र पूर्वार्ध से पश्चिम में सीता महा नदी [illegible] [विजय] द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा, चार योजन का चौडा और उतना ही प्रवे[श] वा[ला] कहा है. उस को एक कनक स्थूमिका कही है यों सब वर्णन जीवाभिगम सूत्र में कहा जैसा. सब चारों द्वार का यावत् राज्यधानी वगैरह का वर्णन यहां भी कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के प्रत्येक द्वार को कितना २ अंतर कहा ? अहो

गधो फासो सद्दो, पुक्खरिणीओ पव्वयगा घरगा मडवगा, पुढविसिला नहगाय णेयव्वा ॥ तत्थण बहवे वाणमतरा देवाय देवीओय आसयति सयात चिट्ठति णिसिअति तुअट्टति रमति ललति कीलाति माहति पुरा पोराणाण सुमाण सुप रिकताण कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाण फलविचिविसेसे पच्चणुभवमाणा विहरति ॥ १० ॥ तीसेण जगईए उप्पि अतो पउमवर वेईआए एत्थण एगे मह वणसडे पण्णत्ते, देसूणाइ दो जोअणाइ विक्खभेण वेइयासमए परिक्खेवेण, किण्हे जाव तणविहुणो णेअव्वो ॥ ११ ॥ जबूद्दीवस्सणं भते ! दीवस्स कइ दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता, तजहा—विजए, वेजयते, जयन, अपराजिते ॥ १२ ॥ कहिण भते !

सब वर्णन जानना यहां पर बहुत वाणव्यंतर देव और देवियों बैठते हैं, शयन करते हैं, खडे रहते हैं, सोते हैं खेलते हैं, क्रीडा करते हैं मोहित होते हैं और पहिले भव में किये हुये परिपक्व, शुभ, कल्याणकारी, कृत कर्मों का फल भोगवते हुवे विचरते हैं ॥ १० ॥ उस जगती के उपर और पद्मवर वेदिका से अंदर एक बडा खण्ड है वह कुच्छ कम दो योजन का चौडा और वेदिका जितना परिधि वाला है, इस का भी कथन तृण विना पूर्व जैसे जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित. ॥ १२ ॥

बहुले, उज्झरबहुले, णिज्झरबहुले, खड्डाबहुले, दरीबहुले, ...
बहुले, गुच्छबहुले, गुम्मबहुले, लयाबहुले, वल्लीबहुले, अडवीबहुले, सावयबहुले,
तेणबहुले तक्करबहुले, डिंबबहुले, डमरबहुले, दुभिक्खबहुले, दुक्कालबहुले, पासंडबहुले,
किवणबहुले वणीमगबहुले, ईतिबहुले, मारिबहुले, कुवुट्ठिबहुले अणावुट्ठिबहुले, राय-
बहुले, रोगबहुले, संकिलेसबहुले, अभिक्खणं, २ संखोहबहुले, पाईण१डीणायए,
उदीण दाहिण वित्थिण्णे, उत्तरओ पलिअंक संठिए, दाहिणओ धणुपट्ठसंठिए, तिधा-

बहुत हैं, निर्झरने बहुत हैं खड्डे बहुत हैं गुफाओं बहुत हैं, नदियों बहुत हैं द्रह बहुत हैं, वृक्ष बहुत हैं, गुच्छ, गुल्म लता और वल्लियों बहुत हैं अटवि बहुत हैं, हिंसक जीवों बहुत हैं, चोर बहुत हैं तस्कर बहुत हैं, स्वदेश के राजाका उपद्रव सो डिम्ब बहुत है अन्य देश के राजा से उत्पन्न हुवा उपद्रव सो डमर बहुत है, दुर्भिक्ष बहुत हैं, दुष्काल बहुत हैं, पाखंड बहुत हैं, कृपण बहुत हैं भिखारी बहुत हैं, तीडादिक जन्तुओं का उपद्रव बहुत हैं मारि बहुत हैं, कुवृष्टि बहुत है अनावृष्टि बहुत है, राजा बहुत हैं रोग बहुत हैं, सक्लेश बहुत हैं, और बारबार क्षोभ बहुत हैं यह भरतक्षेत्र पूर्व पश्चिम लम्बा और उत्तर दक्षिण चौडा है उत्तर में पर्यंकासन संस्थानवाला और दक्षिण में धनुष्य पीठिका के संस्थानवाला है पूर्व दक्षिण और पश्चिम यों तीन तरफ लवण समुद्र स्पर्शा हुवा है गंगा सिंधु महा नदियों से और वैताढ्य पर्वत से इस

अउणासीइं जोअणसहस्साइ बावण्णच जोअणाइ देसूणंच अद्धजोअण दारस्सय दारस्सय अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥ गाहा ॥ अउणासीइ सहस्सा, बावण्ण चेव जोयणाहुति ॥ ऊणच अद्धजोअण, दारंतर जबूद्दीवस्स ॥१॥ १४ ॥ कहिण भते ! जबूद्दीवे दीवे भरहेणाम वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! चुल्लहिमवतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणेण, दाहिण लवण समुद्दस्स उत्तरेण, पुरत्थिम लवण समुद्दस्स पच्चत्थिमेण पच्चत्थिम लवण समुद्दस्स पुरत्थिमेण, एत्थण जबूदीवे दीवे भरहेणाम वासे पण्णत्ते, खाणुबहुले, कंटबहुले, विसमबहुले दुग्गबहुले, पव्वयबहुले, पवाय-

गौतम ! गुन्यासी ह जार और साढी बावन योजन (७९५२ ॥) में कुच्छ कम का अंतर प्रत्येक द्वार का जानना है और गाथाय भी यही है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र कहां कहा है? अहो गौतम! चुल्लहिमवत वर्षधर पर्वत से दक्षिण में और दक्षिण लवण समुद्र से उत्तर में पूर्व के लवण समुद्र से पश्चिम में और पश्चिम के लवण समुद्र से पूर्व में जम्बूद्वीप का भरत क्षेत्र कहा है इस भरत क्षेत्र में शुष्क वृक्ष के ठुंठे बहुत हैं बोरटेबाम्बुलादिक के कंटक बहुत हैं, ऊंची नीची विषम भूमि का बहुत है, दुर्गम न बहुत हैं, पर्वत के टेकरे बहुत हैं, पानी के परने बहुत हैं, ऊपर के निकलने के पानी के [illegible]

दाहिणद्धे भरहे णामवासे पण्णत्ते, पाईण पडीणायए, उदीण दाहिण विच्छिण्णे, अद्ध चदसट्ठाण संठिए, तिहा लवण समुद्दंपुट्ठे, गगासिंधूहिं महाणईहिं तिभागपविभत्ते, दोण्णि अट्ठतीसे जोअणसए, तिण्णिअ एगूणतीसइभागे जोयणस्स विक्खभेण ॥१६॥ तस्स जीवा उत्तरेण पाईण पडिणायया दुहा लवण समुद्दपुट्ठा, पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दपुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल लवण समुद्दपुट्ठा, णवजोयणसहस्साइं सत्तय अडयाले जोयणसए दुवालसय एगूणवीसइ भाए जोयणस्स आयामेण ॥ तीसे धणुपुट्ठे दाहिणेण णवजोयणसहस्साइं सत्त

कहा है यह पूर्व पश्चिम लम्बा और उत्तर दक्षिण चौडा है अर्ध चंद्र संस्थानवाला है दक्षिण, पूर्व और पश्चिम यों तीन दिशा में लवण समुद्र को स्पर्शा हुआ है गगा सिंधु दोनों नदियों (पूर्व पश्चिम) के मध्य में आनेसे इस के तीन भाग हुए हैं २३८ ३/१९ योजन का चौडा है ॥ १६ ॥ इस दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र की जीवा (धनुष्य के उपर पणच होवे वैसी दोरी) उत्तर दिशा में पूर्व पश्चिम लम्बी और दोनों तरफ लवण समुद्र का स्पर्श कर रही है पूर्व दिशा में पूर्व के लवण समुद्र को और पश्चिम दिशा में पश्चिम लवण समुद्र को दक्षिणार्ध भरत की जीवा ९७४८ १२/१९ योजन की लम्बी है इस की धनुष्य पीठिका

लवणसमुद्द पुट्ठे, गंगासिंधूहिं महाणईहिं वेअड्ढेणय पव्वएण, छब्भाग पविभत्ते॥जंबू द्दीवे दीवे णउयसयभागे, पंच छव्वीस जोयणसए, छच्च एगूण वीसइभाए जोअणस्स विक्खंभेण ॥ १५ ॥ भरहस्सण वासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण वेअड्ढे णाम पव्वए पण्णत्ते, जेण भरहवास दुहाविभयमाणे २ चिट्ठइ तंजहा-दाहिणड्ढ भरहंच, उत्तरड्ढ भरहंच॥१६॥कहिण भंते! जंबूद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे भरहे णाम वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणेण, दाहिण लवण समुद्दस्स उत्तरेण, पुरत्थिम लवण समुद्दस्स पच्चत्थिमेण, पच्चत्थिम लवण समुद्दस्स पुरत्थिमेण, एत्थण जंबुद्दीवे दीवे

भरत क्षेत्र के छ विभाग होगये हैं जिसे छ खण्ड कहते हैं इस जम्बूद्वीप की चौडाइ के १९० भाग करे जिस में का एक भाग जितना अर्थात् ५२६ $\frac{6}{19}$ योजन का चौडा है (१००००० योजन का १९० भाग करने से इतना भाग आता है)॥ १५ ॥ भरत क्षेत्र के बीच में एक वैताढ्य पर्वत कहा है इस पर्वतने भरतक्षेत्र के दो विभाग किये हैं यथा दक्षिणार्ध भरत और उत्तरार्ध भरत ऐसे विभाग करके रहा है॥१६॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप में दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र कहां कहा है? अहो गौतम! वैताढ्य पर्वत से दक्षिण में और दक्षिण लवण समुद्र से उत्तर में, पूर्व के लवण समुद्र से पश्चिम में, और पश्चिम के लवण [illegible] में, जम्बूद्वीप का भरत क्षेत्र

पालिया अप्पेगइया णिरयगामी, अप्पेगइया तिरिय-गामी, अप्पेगइया मणुयगामी, अप्पेगइया देवगामी, अप्पेगइया सिज्झति, बुज्झति मुच्चति परिणिव्वायंति, सव्व दुक्खाणमंत करेंति ॥ १९ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवे २ भरहेवासे वेयड्ढे णामं पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! उत्तरड्ढ भरहवासस्स दाहिणेण, दाहिणड्ढ भरहवासस्स उत्तरेण, पुरत्थिम लवण समुद्दस्स पच्चत्थिमेण पच्चत्थिम लवण समुद्दस्स पुरत्थिमेण, एत्थण जंबुद्दीवे दीवे भरहेवासे वेअड्ढेणाम पव्वए पण्णत्ते पाईण पडीणायए उदीण दाहिण विच्छिण्णे, दुहा लवणसमुद्द पुट्ठे, पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं

असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट तीन कोशकी अवगाहना, बहुत प्रकार के आयुष्यवाले अर्थात् जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम के आयुष्य वाले हैं, बहुत वर्ष आयुष्य भोगवकर कितनेक नरकमें जाते हैं, कितनेक तिर्यंच में जाते हैं कितनेक मनुष्यमें जाते हैं कितनेक देवलोकमें जाते हैं और कितनेक सिद्ध बुद्ध मुक्त परिनिर्वाण हो सब दुःख के अंत कर्ता होते हैं ॥१९॥ अब वैताढ्य पर्वतका वर्णन करते हैं—अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्रमें वैताढ्य पर्वत कहां कहा है? अहो गौतम! उत्तरार्ध भरत क्षेत्र से दक्षिणमें और दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र से उत्तरमें पूर्व के लवण समुद्र से पश्चिम में और पश्चिम के लवण समुद्र से पूर्व में जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र का वैताढ्य पर्वत कहा है

छाव्वट्ठे जोयणसए एक्कच एगूणवीसइ भाग जोयणस्स, किंचिविसेसाहिअ परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ १७ ॥ दाहिणड्ढ भरहस्सण भंते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामए आलिंग पुक्खरेइवा जाव णाणाविह पंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए तंजहा किंचिमेहिं चेव, अकिंचिमेहिं चेव ॥ १८ ॥ दाहिणड्ढ भरहेण भंते! वासे मणुयाण केरिसए आयारभाव पडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! तेण मणुया बहुसंघयणा बहु संठाणा, बहु उच्चत्तपज्जवा, बहुआउ पज्जवा, बहूइं वासाइं आउयं पालेंति

दक्षिण में ९७६६ १२/१९ योजन से कुच्छ अधिक परिधि है ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र का कैसा आकार भाव है ? अहो गौतम ! दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में बहुत रमणीक भूमि भाग है जैसे आलिंग पुष्कर का तला यावत् विविध प्रकार की पांचों वर्णवाली कृत्रिम और अकृत्रिम मणियों व तृणों से शोभनीक है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के मनुष्य का कैसा स्वरूप कहा है ? अहो गौतम ! वे मनुष्य बहुत प्रकार के संघयन अर्थात् [वज्र ऋषभ नाराचादि छ संघयन] वाले बहुत प्रकार के संस्थान अर्थात् समचतुस्रादि छ संस्थानवाले, बहुत प्रकार की ऊंचाइ की पर्यायवाले, अर्थात् [illegible]

तीसे धणुपुट्ठे दाहिणेण दस जोयण सहस्साइ सत्तय तेआले जोजणसए पण्णरसय एगूणवीसइ भागे जोयणस्स परिक्खेवेण, रुयग सठाण सठिए, सव्वरययामए अच्छे सण्हे लट्ठे घट्ठे मट्ठे णीरए णिम्मले णिप्पके णिक्ककडच्छाए सप्पभेसस्सिरिए पासाइए दरसणिज्जे, अभिरूवे पडिरूवे, ॥ उभओ पासिं दोहिं पउमवर वेइयाहिं, दोहिं वणसडेहिं, सव्वओ समता सपरिक्खित्ते ॥ ताओण पउमवर वेइयाओ अद्ध जोअण उड्ढ उच्चत्तेण, पचधणुसयाइ विक्खभेण, पव्वय सामियाओ आयामेण, वण्णओ भाणियव्वो ॥ तेण वणसडा—देसूणाइ दो जोयणाइ विक्खभेण, पउमवर वेइआ

पर्वत की जिव्हा उत्तर दिशा में पूर्व पश्चिम के लवण समुद्र को स्पर्श कर रही है. अर्थात् पूर्व के अत से पूर्व का लवण समुद्र और पश्चिम के अंत से पश्चिम का लवण समुद्र स्पर्शा है यह जिव्हा १०७२० $\frac{१२}{१९}$ योजन की लम्बी है दक्षिण में इस की धनुष्य पीठिका की परिधि १०७४३ $\frac{१५}{१९}$ योजन की है यह रुचक नामक ग्रीवाभरण के आकारवाला है, सब रत्न में स्वच्छ, श्लक्ष्ण लष्ट, घष्टारा मठारा रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निष्कंकर छायावाला, प्रभावाला प्रसन्नकारी दर्शनीय अभिरूप और प्रतिरूप है दोनों बाजु दो पद्मवर वेदिका और दो वनखण्ड करव्याप्त है वे पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊंची है पांच सो धनुष्य की चौडी है पर्वत जितनी लम्बी है वगैरह सब वर्णन पूर्वोक्त प्रकार कहना वे वनखण्ड कुच्छ

आठवे शतक का दूसरा उद्देशा १०३१

आठवा शतक का-तीसरा उद्देशा १०७३

आठवा शतक का चौथा उद्देशा १०७९

आठवे शतक का पांचवा उद्देशा १०८०

आठवे शतक का-छट्ठा उद्देशा १०९४

नवव‍ा शतक का प्रथमो उद्देशा

नववे शतक का दूसरा उद्देशा

नववे शतक का-तीसरा उद्देशा

नववा शतक का-इकतीसवा उद्देशा

नववा शतक का बावीसवा उद्देशा

नववा शतक का-तेतीसवा उद्देशा

नववा शतक का-चौतीसवा उद्देशा

१० दशवे शतक का-पहिला उद्देशा

१२ द्वादश शतक का प्रथम उद्देशा

द्वादश शतक का दूसरा उद्देशा

द्वादशम शतक का तीसरा उद्देशा

द्वादश शकत का चौथा उद्देशा

द्वादश शतक का-पाचवा उद्देशा

बारवा शतक का छट्ठा उद्देशा

चउदवा शतक का दशवा उद्देशा

पञ्चदश शतक का एक ही उद्देशा

अष्टादश शतक का-प्रथमोद्देशा

अठारवा शतक का तीसरा उद्देशा

अठारवे शतक का चौथा उद्देशा

अठारवे शतक का पाचवा उद्देशा

अठवा शतक का छट्ठा उद्देशा

अठारवा शतक का सातवा उद्देशा

छव्वीसवा शतक

☛ पुज्य श्री कहानजी ऋषि महाराज का सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद किया उन ३२ ही शास्त्रों की १०००—१००० प्रतों सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवा कर दाक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादुरलाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजीने सब को अमूल्य लाभ दिया है

पुज्य श्री कहानजी ऋषि महाराज का सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्प में ३२ ही शास्त्रो का हिंदी भाषानुवाद किया. उन ३२ ही शास्त्रों की १०००—१००० प्रतों सीर्फ पांच ही वर्प में छपवा कर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादुरलाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसाद जीने सब को अमूल्य लाभ दिया है

॥ पंचमांग ॥

॥ विवाह पण्णत्ति (भगवती) सूत्र ॥

* प्रथम शतकम् *

ण० नमस्कार अ० अरहत को ण० नमस्कार सि० सिद्धको ण० नमस्कार आ० आचार्य को ण०

णमो अरहताण । णमो सिद्धाण । णमो आयरियाण । णमो उवज्झायाण । णमो लोए

श्री अरहंत को नमस्कार होवो कर, चरण व मस्तक का सुप्रणिधान सो नमस्कार कहा जाता है किसको नमस्कार करना ? श्री अरहत को अरहंत किस को कहते हैं ? देवताओं से विनिर्मित महा-प्रातिहार्य नामक पूजा मे जो पूजित बने हुवे हैं, अथवा रह० एकान्त देश व अन्त जिम को नहीं है,

नमस्कार उ० उपाध्याय को ण०नमस्कार लो० लोकमें स० सर्व सा० साधुको ॥*॥ ण०नमस्कार बं०ब्राम्ही

सव्वसाहूण ॥ * ॥ णमो बमीए लिवीए ॥ * ॥ रायगिह, चलण, दुक्खे, कखप-

अर्थात् जो सब भाव को जान व देख सकते हैं उन को अरहंत कहते हैं ऐसे अरहंत भगवंत को नमस्कार होवो इस का अरूहंताण व अरिहंताणं ऐसे दो पाठान्तर हैं अष्टप्रकार के कर्मरूप शत्रुको हणनेवाले अरिहंत कहाते हैं कर्मरूप बीज का क्षय होने से ससार में पुनःजन्म लेने का जिन को नहीं है इसलिये अरुहंत कहाते हैं; उनको नमस्कार होवो सिद्ध भगवंत को नमस्कार होवो वे कैसे हैं ? शुक्ल ध्यानरूप अग्नि से अष्टप्रकार के कर्मों को दग्ध करके जो मोक्ष पहुचे हैं उन्हें सिद्ध कहते हैं; उन को नमस्कार होवो जिन शासन के उपदेशक, ज्ञानादि पंचाचार पालनेवाले, गच्छ के नायक, अष्ट संपदा के धारक, ऐसे श्री आचार्यको नमस्कार होवो इग्यारह अंग व बारह उपांग स्वयं पठन करे, अन्य को पठन करावे, और चरण सत्तरी व करण सत्तरी पचीस गुणों से युक्त होवे ऐसे उपाध्याय को नमस्कार होवो ज्ञानादिक से मोक्ष मार्ग साधे वैसे सब साधु को नमस्कार होवो यहांपर " सव्वसाहूण " पाठ में सव्व शब्दका प्रयोग करने से सामायिक विशेष, अप्रमत्तादिक, पुलाकादिक, जिन कल्पिक, परिहार विशुद्ध कल्पिक, यथा लिंगादि कल्पिक प्रत्येक बुद्ध, स्वयबुद्ध, व बुद्धबोधित प्रमुख गुणवंत साधुओं को भी ग्रहण कीये हैं उक्त पंच परमेष्ठी मोक्षमार्ग के सहायक व परम उपकारी हैं * ब्राम्ही लिपिक

को नमस्कार होवो' अर्थात् श्री ऋषभदेवजीने गृहवास में अपनी ज्येष्ठ पुत्री ब्राह्मी को अठारह प्रकार की लिपि बतलाई उस लिपि से शास्त्र लिखे गये इस लिये उस का कथन करनेवाले श्री ऋषभदेव स्वामी को शास्त्र के उपदेश देनेवाले श्री सुधर्मास्वामी नमस्कार करते हैं इस तरह नमस्कार किये पीछे पांचवा अंग श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति का अधिकार कहते हैं इस में जीवाजीव की विविध प्रकार की प्ररूपना की है, गौतमादिक के विविध प्रकार के प्रश्नों व उनके उत्तर दिये हैं इस में एक सरिखा संबध होनेपरभी पुष्पावकीर्ण की तरह भिन्न २ प्रकार का अधिकार है इस का अपर नाम भगवती है अर्थात् भगवंत की वाणी सर्वमान्य होने से भगवती कहाती है इस के १३८ शतक हैं, उन के उद्देशे १०००० प्रमाण हैं, ३६ हजार प्रश्न हैं और पद २८८००० हैं प्रथम शतक श्री भगवन्तने राजग्रही नगरी में कहा इस के दश उद्देशे कहे हैं प्रत्येक उद्देशे में भिन्न २ प्रश्न पूछे हैं सो बताते हैं अब उद्देशेके नाम) बताते हैं १ चलण—चलमाणे

---

१ कितनेक 'नमो बंभीए लिवीए' इनका ब्राह्मी लिपि को नमस्कार होवो ऐसा अर्थ करके अक्षर स्थापना निक्षेप सिद्ध करते हैं, परतु जैसे अनुयोग द्वार में पाथा का जान पुरुष पाथा कहाता है वैसे ही लिपिका शिखानेवाला पुरुष लिपिक कहा जा सकता है इसलिये यहांपर सूत्रकारने अक्षर स्थापना रूप लिपि को नमस्कार नहीं करते हुवे लिपि बतानेवाले श्री ऋषभदेव स्वामी को नमस्कार किया है और भी वीर निर्वाण पीछे ९८० वर्ष में पुस्तकारूढ ज्ञान हुवा इस से लिपि को नमस्कार करना नहीं संभवता है

लि० लिपिक को॥*॥रा० राजगृह में च० चलन दु० दुःख कं० कांक्षा प्रदोष प० प्रकृति पु० पृथ्वी जा० यावन्त णे० नारकी बा० बाल गु० गुरुक च० चलन॥*॥ण० नमस्कार सु० श्रुतको ते० उस का० काल ते० उस स० समय में रा० राजगृह णा० नाम न० नगर हो० था व० वर्णन वाला त० उस रा० राजगृह

ओसेय, पगइ, पुढवीओ, जावते, नेरइए, बाले, गुरुएय, चलणाओ॥*॥णमो सुअस्स ॥

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम णयरे होत्था, वण्णओ तस्सण रायगिह-

चलिए इत्यादि चलण विषय अर्थ का निर्णय रूप पहिला उद्देशा नव प्रश्न का जानना २ दुःख इस में जीव अपना कीया हुवा कर्म वेदता है इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है ३ कांक्षा प्रदोष इस में जीवने कांक्षा मोहनीय कर्म किया ? ऐसे प्रश्नोंकी पृच्छा है ४ प्रकृति-इस में कर्म की कितनी प्रकृतियों कही है इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है पृथ्वी-इस में रत्नप्रभादि कीतनी पृथ्वी है इसका निर्णय किया है ६ जावंत इसमें जितना अंतर मे सूर्य का उदय होता होवे उसका निर्णय किया है ७ नारकी-इस में नरक में नारकी उत्पन्न होते हैं या नारकी सिवाय अन्य जीव उत्पन्न होते है इसका निर्णय किया है ८ बाल-इसमें एकान्त बालका स्वरूप कहा है, ९ गुरुक-इसमें कोनसा जीव भारी होता है इसप्रश्न का निर्णय किया है १० चलणाओ-इसमें अन्य दर्शनियों का ऐसा कथन होवे कि चलमाणे अचलिए इत्यादि प्रश्न का निर्णय किया है॥*॥इस द्वादशांग रूप श्रुत सो अर्हंत प्रवचन उस को नमस्कार होवो इस तरह नमस्कार करके श्री

न० नगर की ब० बाहिर उ० ईशान दि० दिशा में गु० गुणशिल णा० नामका चे० चैत्य हो० था त० वहा से० श्रेणिक राजा चि० चेलणादेवी ॥ १ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर आ० आदिकर ति० तीर्थंकर स० स्वय सबुद्ध पु० पुरुपोत्तम पु० पुरुपसिंह

स्स णयरस्स वहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणासिलए णाम चेइए होत्था तत्थ-

ण सेणिए राया, चिल्लणादेवी ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महा-

वीरे आदिगरे, तित्थगरे,सयसबुद्धे, पुरिसुत्तमे पुरिससीहे, पुरिसवर पुडरीए,पुरिसवरगधह-

सुधर्मा स्वामी अपने पाटवीय शिष्य श्री जम्बूस्वामी को कहते हैं कि उसकाल उस समय में अर्थात् इस अवसर्पिणी काल के दुपम सुपम नामक चौथे आरेमें भगवन्तने इस कथाका उपदेश दिया तब राजगृह * नामक नगर था उसका वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना उस राजगृही नगरी की ईशान कोन में गुणशील नामक यक्ष का चैत्य (बिंब अथवा बिम्ब युक्त आयतन) था उस राजगृह में श्रेणिक राजा राज्य करता था और उनको चेलणा नामक राणी थी ॥ १ ॥ उस काल उस समय में श्रुत व चारित्र धर्म की आदि के करनेवाले, साधु साध्वी, श्रावक व श्राविका इन चार तीर्थ को

---

* यद्यपि वर्तमान काल में राजगृह नामक नगर है तथापि अतीत काल जैसा अब नहीं है अनत वर्णादिक के पुद्गलों का क्षय हुवा है, इसलिये यहां भूतकाल का प्रयोग किया है

लि० लिपिक को॥*॥रा० राजगृह में च० चलन दु० दुःख क० कांक्षा प्रदोष प० प्रकृति पु० पृथ्वी जा० जावन्त णे० नारकी बा० बाल गु० गुरुक च० चलन॥*॥ण० नमस्कार सु० श्रुतको ते० उस का० काल ते० उस स० समय में रा० राजगृह णा० नाम न० नगर हो० था व० वर्णन वाला त० उस रा० राजगृह

ओसेय, पगइ, पुढवीओ, जावते, नेरइए, बाले, गुरुएय, चलणाओ॥*॥णमो सुअस्स॥

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम णयरे होत्था, वण्णओ तस्सण रायगिह-

चलिए इत्यादि चलण विषय अर्थ का निर्णय रूप पहिला उद्देशा नव प्रश्न का जानना २ दुःख इस में जीव अपना कीया हुवा कर्म वेदता है इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है ३ कांक्षा प्रदोष-इस में जीवने कांक्षा मोहनीय कर्म किया? ऐसे प्रश्नोंकी पृच्छा है ४ प्रकृति-इस में कर्म की कितनी प्रकृतियों कही हैं इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है पृथ्वी-इस में रत्नप्रभादि कीतनी पृथ्वी है इसका निर्णय किया है ६ जावत इसमें जितना अंतर मे सूर्य का उदय होता होवे उसका निर्णय किया है ७ नारकी-इस में नरक में नारकी उत्पन्न होते हैं या नारकी सिवाय अन्य जीव उत्पन्न होते हैं इसका निर्णय किया है ८ बाल-इसमें एकान्त बालका स्वरूप कहा है, ९ गुरुक-इसमें कोनसा जीव भारी होता है इसप्रश्न का निर्णय किया है १० चलणाओ-इसमें अन्य दर्शनियों का ऐसा कथन होवे कि चलमाणे अचलिए इत्यादि प्रश्न का निर्णय किया है॥*॥इस द्वादशांग रूप श्रुत सो अर्हत प्रवचन उस को नमस्कार होवो इस तरह नमस्कार करके श्री

र० सरण ग० गति प० रहे हुवे अ० अमतिहत व० मधान ना० ज्ञान दर्शन ध० धरने वाले वि० निवृत्त छ० छद्मस्थपने से जि० जिते जा० जितानेवाले ति० तीरे ता० तारक बु० बुद्ध बो० बुझाने मु० मुक्त मो० मुक्तकरे स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी सि० शिव अ० अचल अ० रोगरहित अ० अनंत अ० अक्षय अ०

दसणधरे, वियट्ट छउमे जिणे, जावए, तिणे, तारए, बुद्धे, बोहिए, मुत्ते मोयए स-
व्वण्णू सव्वदरिसी सिव, मयल, मरुअ, मणत, मक्खय, मव्वाबाह, मपुणरावत्तिय,

चक्षु के दातार, मोक्ष मार्ग के दातार, विविध प्रकार के उपद्रव से पीडित, जीव को रक्षा स्थान-मोक्ष स्थान देनेसे शरण देनेवाले, सम्यक्त्व चारित्र रूप बोधिके देनेवाले, श्रुत चारित्र रूप धर्म देनेवाले, धर्म के उपदेशक, धर्म के नायक, धर्मरूप रथके सारथी, जैसे पृथिवी पे समस्त राजाओं में चक्रवर्ती मधान है वैसेही धर्म कथन में भगवान् चक्रवर्ती चारों गतिके अंत करनेवाले, जैसे समुद्र में रहे हुवे जीवों को द्वीप आधार भूत है वैसेही संसार रूप समुद्र में रहे हुवे माणियों को आधार भूत, अमतिहत व श्रेष्ट ज्ञान दर्शन के धारक, छद्मस्थपना से निवर्तनेवाले, रागादि जीतनेवाले, अन्य को धर्मोपदेश कर के रागद्वेष जीतानेवाले, स्वय संसार समुद्र से तीरनेवाले, अन्य को संसार समुद्र से तीरानेवाले, स्वयंतत्त्वको जानने-वाले, अन्य को तत्त्वका ज्ञान देनेवाले, स्वय अष्टकर्म से मुक्त होनेवाले व अन्य को मुक्त करानेवाले, सर्वज्ञ सर्वदर्शी, सब उपद्रव रहित, अचल, रोगरहित, अनंत, अक्षय, अव्याबाध, अपुनरावर्त ऐसीसिद्ध

पु० पुरुषवर पुंडरीक पु० पुरुषवर गंधहस्ती लो० लोकमें उत्तम लो० लोक के नाथ लो० लोक के हितकर्ता लो० लोक में दीपसमान लो० लोकमें प० सूर्यसमान अ० अभय देनेवाले च० चक्षुके देनेवाले म० मार्ग देनेवाले जी० जीव देनेवाले रक्षक बो० बोधि देनेवाले ध० धर्मके देनेवाले ध० ध० धर्मके उपदेशक ध० धर्मके नायक ध० धर्मके सारथि ध० धर्ममें व० प्रधान चा० चातुरंत चक्रवर्ती दी० द्वीप ता० त्राण

त्थी, लोगुत्तमे, लोगनाहे, लोगहिए लोगपदीवे, लोग पज्जोयगरे, अभयदए, चक्खुदए, मग्गदए, सरणदए, जीवदए, बोहिदए, धम्मदए, धम्मदेसिए, धम्मनायगे, धम्मसारहिए, धम्मवर चाउरत चक्कवट्टी, दीवो ताण सरणगइपइट्ठे, अप्पडिहयवरणाण

स्थापनेवाले, अन्यके उपदेश विना स्वतःही हेय ज्ञेय उपादेय पदार्थ स्वरूप को जाननेवाले, रूपादि अतिशय अथवा जात्यादिकके उच्चत्वसे पुरुषोंमें उत्तम, शौर्यगुणसे पुरुषमें सिंह समान, सब अशुभ पाप रहित होनेसे पुरुषोंमें पुंडरीक कमल समान, पुरुषोंमें गंधहस्ती समान लोक में उत्तम, लोकके नाथ अर्थात् योग सो जिसको पहिले धर्म नहीं प्राप्त हुआहै उनको धर्म की प्राप्ति कराना और क्षेम सो धर्मकी प्राप्ति होनेपर मनको स्थिर रहनेदेना इस तरह योग व क्षेम दोनों करनेवाले होनेसे लोकके नाथ, षड्विध जीवनिकाय रूप लोक की रक्षा करने से हितकारी, संज्ञी पचेन्द्रिय जीवरूप लोकको दीपसमान, गणधरादि लोकको उद्योतके करनेवाले, अभय के दाता, श्रुतज्ञानरूप

१ आसन्न सिद्धिक मोक्षगामी सब भव्य जीव

प० पद्म गो०गौर उ०उग्रतप दि०दीप्ततप त०तप्ततप म०महातप घो०घोरतप उ०उदार घो० घोर घो० घोर गुण घो० घोरतपस्वी घो० घोर ब्रह्मचारी उ० शुश्रुषा रहित स० संक्षिप्त वि० बहुत त० तेजस लेश्या च० चौदहपुर्वी च० चार णा० ज्ञान के उ० धारक स० सर्व अक्षर स० सन्निपाति स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर से अ० दूर नहीं नजदीक नहीं उ० ऊर्ध्वजानु अ० अधोशिर झा० ध्यान कोठे में उ०

तवे, तत्ततवे, महातवे,घोरतवे,उराले, घोरे, घोरगुणे, घोर तवस्सी घोर बंभचेरवासी, उच्छू-
ढ सरीरे, संखित्तविउल तेउलेस्से, चउद्दसपुव्वी, चउणाणोवगए, सव्वक्खरसण्णि-
वाती, समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंत उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठो-

की अवगाहनावाले, समचतुरस्र संस्थान से संस्थित, वज्रऋषभ नाराच संघयण युक्त, कनकके बिन्दुसमान व पद्म कमल समान गौर वर्णवाले, उग्रतपस्वी, दीप्त तपवाले, आशंसादि दोष रहित, महत् तप करनेवाले, घोर तप करनेवाले, प्रधान तपसे पार्श्वस्थादि जीव को भय उपजानेवाले, परीषह व इन्द्रियादि रिपु को नाश करने में घोर, अन्य जीव नहीं आचर सके वैसे घोरगुणों का धारन करनेवाले, घोर तपस्वी, घोर ब्रह्मचारी, शरीर की शुश्रुषा का त्याग करनेवाले, अनेक योजन प्रमाण क्षेत्राश्रित वस्तुदहन में समर्थ तेजोलेश्या को संकुचित करनेवाले, उत्पातादि चौदह पूर्व के धारक, केवल ज्ञान वर्जित चार ज्ञान के धारक व सब अक्षर के प्रयोगको जाननेवाले गौतम स्वामी श्री श्रमण, भगवंत महावीर स्वामी से

अव्याबाध अ० पुनरागमन रहित सि० सिद्धगति ना० नाम ठा० स्थान को स० प्राप्त करने की का० इच्छावाले जा० यावत् स० समवसरण प० परिषदा णि० निर्गता ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प्रति-गता ॥ २ ॥ ते० उस का० काल से० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर के जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी इ० इन्द्रभूति ना० नाम का अ० अनगार गो० गौतम गोत्रीय स० सात हाथ के ऊंचे स० समचतुस्र संठान स० सहित व० वज्र ऋषभ नाराच संघयणी क० सुवर्ण पु० कसोटी णि० घसाहुवा

सिद्धगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव समोसरणं । परिसाणिग्गया । धम्मोक-हिओ परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं, समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभुती णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरं-स संठाण संठिए, वज्जरिसह नाराय संघयणे कणगपुलगणिघसपम्हगोरे, उग्गतवे, दित्त

गति को प्राप्त करने की इच्छावाले श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने राजग्रह नगर के गुणशील नामक बगीचे में बारह प्रकार की परिषदा को समस्त धर्मोपदेश दिया जीव है, अजीव है लोक है अलोक है यावत् मोक्ष है परिषदा के देव, देवी, मनुष्य वगैरह सब भगवंत को वांदकर स्वस्थान गये ॥२॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत का जेष्ठ अंतेवासी इन्द्रभूति नामक अणगार, गौतम गोत्रीय, सात हाथ

१ चार देव, चार देवी व चतुर्विध संघ

विशेष उत्पन्न हुआ है कुतुहल उ० स्थान से उ० उठे ड० स्थान मे उ०उठकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को ति० तीनवक्त आ०आदान प०प्रदक्षिणा क०की क०करके व०वंदे न० नमस्कारकिये व० वंदनकर ण० नमस्कार कर ण० नीचा आसनसे णा० दूरनहीं सु०श्रवण करन की इच्छावाले ण० नमस्कार करते अ० सन्मुख वि० विनय से प० हस्त जोडकर प० सेवा करते ए० ऐसा व बोले ॥ ४ ॥ से० वह णू० निश्चय भ० भगवन्

कोउहल्ले, । उट्ठाएउट्ठेति, उट्ठाएउट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव-उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण, पयाहिण करेइ, करेइत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासणे णातिदूरे, सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएण पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी ॥ ४ ॥ से णूण-

से उपस्थित हुवे उपस्थित होकर जहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी विराजते थे वहां आये आकर श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीको तीन वार प्रदक्षिणा कर के वंदे नमस्कार किया वंदणा नमस्कार कर के अविदूर व अति नजीक भी नहीं वैसे भगवंत के वचन श्रवण करने की अत्यंत अभिलाषा रखते हुवे, नमस्कार करते हुवे, भगवन्त सन्मुख मुख कर के विनय पूर्वक हस्तद्वय जोडकर सेवा करते हुवे ऐसा बोले अर्थात् गौतम स्वामीने ऐसा प्रश्नकिया॥४॥अहो भगवन् ! जो कर्म अपनी स्थितिसे चलनेलगे, भोग सन्मुख हुवे

रहेहुवे सं० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते वि० विचरते हैं ॥३॥ त० तब गो० गौतम को जा० उत्पन्न है स ० श्रद्धा मा० उत्पन्न है सं० संशय जा० उत्पन्न है को० कुतुहल उ० उत्पन्न हुइ है स० श्रद्धा उ० उत्पन्न संशय उ० उत्पन्न कुतुहल स० विशेष उत्पन्न है श्रद्धा स० विशेष उत्पन्न है संशय स० विशेष उत्पन्न है कुतुहल स० विशेष उत्पन्न हुइ है श्रद्धा स० विशेष उत्पन्न हुवा है संशय स०

वगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ ३ ॥ तएण से भगवं गोयमे जा-
यसड्ढे, जायससये, जायकोउहल्ले, उप्पण्णसड्ढे, उप्पण्णससए, उप्पण्णकोउहल्ले, स-
जायसड्ढे, सजाय ससये, सजाय कोउहल्ले, समुप्पन्नसड्ढे, समुप्पन्नससये, समुप्पन्न

बहुत दूर नहीं वैसेही नजीक भी नहीं ऐसे ऊर्ध्वजानु व अधोशिर (उत्कट आसन) कर बैठेहुवे धर्म ध्यान व शुक्लध्यान करते और, संयम व तपसे आत्मा को भावते हुवे विचर रहें ॥ ३ ॥ उस समय श्री गौतम स्वामी को तत्त्वार्थ जानने की श्रद्धा उत्पन्न हुई; क्योंकी " चलमाणे चलिए " इस में वर्तमानकाल व अतीतकाल एक सरिखा कहा ऐसा वाक्य किस न्यायसे कहा? ऐसा संशय उत्पन्न हुवा, किस प्रकार से इस का अर्थ प्रकाशेंगे ऐसा कुतुहल उत्पन्न हुवा, तत्काल श्रद्धा उत्पन्न हुई, तत्काल संदेह उत्पन्न हुवा तत्काल कुतुहल उत्पन्न हुवा, विशेष श्रद्धा हुई, विशेष संशय उत्पन्न हुवा, व विशेष कुतुहल उत्पन्न हुवा है जिस को ऐसे व समुत्पन्न श्रद्धा, समुत्पन्न संशय व समुत्पन्न कुतुहल वाले श्री गौतमस्वामी स्वस्थानक

मरा णि० निजरते को णि० निर्जरा हु० हा गो० गौतम ! च० चलते को च० चला जा० यावत् णि०

छिज्जमाणे छिण्णे ? भिज्जमाणे भिण्णे ? दज्झमाणे दड्ढे ? मिज्जमाणे मडे ? णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे

इन्धन जलाना शरू किया इस तरह जलते को जलाया कहना ! ८ जिस के आयुष्य का संचित पुद्गल का क्षय होने लगा मृत्यु सन्मुख हुवा तब उस मरते को मरा कहना ? ९ जीव प्रदेश से कर्म पुद्गलों की निर्जरा करने लगा उस निर्जरा करने को निर्जरा कहना ? यह नवप्रश्नों श्री महावीर स्वामीसे गौतम स्वामीने पूछे तब भगवन्त महावीर स्वामी उत्तर देते हैं कि हा गौतम ! उनका अर्थ वैसाही है अर्थात् जैसे किसी कपड़ा बनानेवाले वनकरने कपड़ा बनाना शरू किया और प्रथम तन्तु बुना उसे वस्त्र बुना कहा जाता है वैसेही उक्त प्रकार के कार्य जिस समय में शरू किये उस ही समय में हुवे कहे जासकते हैं यद्यपि इन को पूर्ण होने में असंख्यात समय व्यतीत होते हैं तथापि उस की परिणति में उस की सब आकृति बनजाते है यह वह पूर्ण करने का अभिलाष बना हुवा है १ वैसे ही जिसने अपने अनादि कर्म को कर्मस्थिति से मचलित किये, भोगवने सन्मुख हुवा उन्हें निश्चय से कर्म भोगवेगा २ जो उदय नहीं आये हैं उन को उदीरणा से उदय में लाने का जिसने प्रयत्न किया वह उदीरना करेगा ३ जिनके कर्म उदयमें आकर वेदना देनेलगे वे सबही वेद जावेंगे ४ जिन के कर्म जीवके प्रदेशसे पतन होनेलगे उन के सब कर्म पड़ेंगे ५ जिसने कर्म की स्थिति ह्रस्व कालकी की वह क्षय करेगा ६ जो कर्म पुद्गलों को परावर्तन करने लगा वह परावर्तेगा

च० चलते को च० चला उ० उदीरते को उ० उदीरा वे० वेदते को वे० वेदा प० छोडते को प० छोडा छि० छेदने को छि० छेदा भि० भेदते को भि० भेदा द० जलाते को द० जलाया मि० मरते को म०

भंते ! चलमाणे चालिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे वेदिए ? पहेज्जमाणे पहीणे !

उनकर्मों को क्या चली कहना ? + २ जो कर्म उदय में नहीं आये हैं, बहुत आगामिक काल में उदय आवेंगे उनको शुभ अध्यवसाय से आकर्ष कर उदय में लावे उसे उदीरणा कहते हैं इस तरह प्रथम समय में उदीरणा करते को उदीरेही क्या कहना ? ३ कर्म उदय में आकर प्रथम समय में वेदते होवे उन्हें क्या वेदेही कहना ? ४ जो कर्म पुद्गल जीव के प्रदेश मे अवलम्बन कर रहे थे वे पतन होने लगे उन्हें क्या पतन हुवा कहना ? ५ जो कर्म दीर्घकाल की स्थितिवाले थे उनका छेदन कर अल्प काल की स्थितिवाले बनाये, इस तरह से प्रथम समय में छेदते को छेदा कहना ? ६ जो कर्म तीव्ररस देने वाले थे उनको मंद रस देनेवाले बनाये इस तरह उनकर्मों को प्रथम समयमें भेदतेको भेदे कहना ? ७ ध्यानरूप ज्वालासे कर्मरूप

+ श्री सुधर्मा स्वामी ने सूत्र की आदि में अन्य अनेक प्रश्नों को छोडकर "चलमाणे चालिए" यह प्रश्न क्यों ग्रहण किया ? समाधान-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चारों को साधने में उद्यमश्रेष्ठ कहा है चारों में मोक्ष श्रेष्ठ है वह कर्मक्षय से होता है और कर्म क्षय अनुक्रम से होता है इसलिये प्रधान हेतु की सिद्धि के लिये प्रथम ही "चलमाणे चालिए" इसप्रश्नसे निश्चय किया कि जिनके कर्म अपने अनादि स्वभावकी सिद्धिसे चलित हुवे उन का चले ही कहना मोक्ष प्राप्ति का प्रथम कार्य में ही यह दर्शाया है

अथवा णा० विविध अर्थी वि० विविधउच्चारके णा० विविध व्यंजनके गो० गौतम ए० ये च० चार पद ए० एकअर्थी णा० विविध उच्चार णा० विविध व्यंजन उ० उत्पन्न पक्षके ए० ये प० पांचपद णा० विविधअर्थी णा० विविध उच्चारके

णाणा वजणा? गोयमा! चलमाणे चालिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेइज्जमाणे वेइए, पहेज्ज-
माणे पहीणे, एएण चत्तारि पया एगट्ठा णाणा घोसा, णाणावजणा उप्पण्ण

ये चार पद उत्पन्न पक्ष आश्रित एक अर्थवाले, अनेक घोष, व अनेक व्यंजनवाले हैं यहापर दो पक्ष ग्रहण किये हैं एक उत्पाद पक्ष और दूसरा विगम पक्ष उस में उक्त चारों पद केवल ज्ञान सो उत्पाद और मोक्ष सो विगत पद उस में यह चारों पद केवल उत्पाद विषयक होने से एक अर्थ वाले कहे हैं जैसे केवल ज्ञान पर्याय जीव को पहिले नहीं प्राप्त हुइ थी और जीव का प्रयास केवल ज्ञान निमित्त है इसलिये वह ही केवल ज्ञान उत्पत्ति पर्याय कहा जो कर्म चलायमान होवेंगे वे उदय में आवेंगे और जो उदय में आवेंगे वे वेदे जावेंगे और वेदे पीछे क्षीण होवेंगे, इस लिये उत्पाद पक्ष में ये चारों पद एकार्थ वाची जानना अथवा स्थिति बंधादि भविशेषित सामान्य आश्रय से एकार्थ है केवल उत्पादक पक्ष के साधक है, क्यों कि उत्पन्न पक्ष में कर्म चिंता का प्रक्षीणपना होता है छिन्न पद में स्थिति का विगम कहा, भिन्न पद में रसका विगम कहा दज्झ पद में दाहरूप विगम कहा, मिज्ज पद में आयुष्य कर्म के अभावका विगम कहा, णिज्जरिज्ज पद में सब कर्म का विगम कहा इस लिये इन को विगत पक्ष में

निजरनको णि०निर्जरा॥८॥ए०येन ०नवपद किं०क्या ए०एक अर्थी णा०विविध उच्चारके णा०विविधव्यजनके उ०

णे ? ॥ हता गोयमा ! चलमाणे चलिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे ॥ ५ ॥ एएण भंते नवपदा किं एगट्ठा, णाणा घोसा, णाणा वंजणा उदाहु णाणट्ठा, णाणा घोसा,

७ जो शुभ ध्यानरूप अग्नि से कर्म रूप इन्धन जलानेलगा वह कर्म को जलावेगा ८ जिसके आयुष्य का पुद्गल क्षीण होनेलगा वह मरेगा ९ जिसने कर्म की निर्जरा करनी शरु की वह कर्म की निर्जरा करेगा इस रीति से इन नव कार्यों को प्रारंभ करते ही बनाहुवा कहना ॥ ५ ॥ पुन. गोतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! इन नव पद का क्या एक अर्थ या एक प्रयोजन है ? या उदात्त, अनुदात्त व स्वरित घोषवाले हैं ? अनेक व्यंजनमय है ? अथवा विविध प्रकार के अर्थवाले, घोषवाले, या व्यंजनवाले हैं ÷ अहो गौतम ! १ चलमाणे चलिए २ उदीरिज्जमाणे उदीरिए, ३ वेइज्जमाणे वेइए ४ पहेज्जमाणे पहीण

÷ यहां चौभंगी जानना १ एक अर्थ एक व्यंजन जसे क्षीर क्षीर २ एक अर्थ अनेक व्यंजन यथा क्षीर पय ३ अनेक अर्थ एक व्यंजन अर्क गोमहिषी का क्षीर ४ अनेक अर्थ अनेक व्यंजन घट पटादि इस में दूसरा चौथा भांगा यहां ग्रहण किया है, अन्य दोनों भांगे असंभवित होनेसे नहीं ग्रहण किये हैं इस सूत्र में चलमाणादि चार पद आश्रित दूसरा भांगा जानना और छिज्जमाण वगैरह पांचपद आश्रित चौथा भांगा जानना

श्वासले ऊ० ऊंचाश्वासले णी० नीचाश्वासले ज० जैसे उ० ऊश्वासपद म ॥ ८ ॥ णे० नारकी भ० भग-
वन् आ० आहाराके अर्थी ज० जैसे प०पन्नवणा में प० प्रथम शतक में आ० आहार उद्देशे में त० तैसे भा०
कहना ठि० स्थिति उ० ऊश्वास आ० आहार कि० किसतरह आ० आहारले स० सर्वसे क० कितना भाग
स० सर्व की० किसप्रकार से मु० वारंवार प० परिणमें ॥ ९ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् पु० पूर्व आ०

जहा उस्सासपदे ॥ ८ ॥ णेरइयाणं भंते आहारट्ठी, ? जहा पन्नवणाए पढमसए
आहारुद्देसए तहा भाणियव्वं ॥ गाथा ॥ ठिति उस्सासाहारे, किंवाहारेइ सव्वओवावि,
कइभाग सव्वाणिव कीसव भुज्जो परिणमति ॥ १ ॥ ९ ॥ णेरइयाणं भंते पुव्वा-

के जीव निरंतर समय मात्रका विरह रहित-श्वासोश्वास लेते हैं ऐसा कहा है वैसेही यहां जानना ॥ ८ ॥
अहो भगवन् नारकी आहार के अर्थी वांच्छक हैं ? इस का पन्नवणा सूत्र में प्रथम शतक के आहार उद्देशे
में जैसे कहा है वैसे कहना नारकी कैसे आहारलेवे ? आत्मा के सब प्रदेश से आहार लेवे नारकी कितना
आहार लेवे ? आहार निमित्त जितने पुद्गल ग्रहण किये होवे उस के असंख्यातवे भाग का आहार लेवे,
अनंत भाग में आस्वादे, अथवा आहार परिणम योग्य सब पुद्गल का आहार करे जिन पुद्गलों का
आहार किया है वे पुद्गलों किस प्रकार से वारंवार परिणमते हैं ? वे आहार के पुद्गलों इन्द्रियपने यावत्
दुःख पने परिणमते हैं वगैरह सब अधिकार विस्तार पूर्वक पन्नवणा सूत्र से जानना ॥ ९ ॥ अब नारकी

पक्खस्स छिज्जमाणे छिण्णे भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए णिज्जरिज्ज-माणे णिज्जिण्णे, एएण पंचपदा णाणट्ठा, णाणाघोसा, णाणा वजणा, विगय पक्ख-स्स ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालं ठिइ पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दस वास सहस्साइं ठिइं पण्णत्ता, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिइं पण्णत्ता ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते केवइय कालस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ?

णा० विविधप्रकार के वि० विगतपक्ष के ॥ ६ ॥ णे० नारकी को भं० भगवन् के० कितने कालकी ठि० स्थिति प० प्ररूपी गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् के० कितना का० काल में आ० थोडाश्वासले पा० बहुत

एक कहे हैं ये पांचों पद विगत पक्ष की अपेक्षा से विविध प्रकार के अर्थ, घोष, व व्यंजनवाले हैं ये पांचों पद विगत पक्ष वाचक हैं इसका अन्तिम नववा पदमें मोक्षकी कथा कही और वह मोक्ष जीवको होता है ॥६॥ नरकादिक चौवीस दंडक के जीव कहे जाते हैं उन में से प्रथम नरककी स्थितिका प्रश्न चलता है अहो भगवन् ! नरक के नेरइयों की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नारकी की प्रथम नरक की अपेक्षासे जघन्य दश हजार वर्ष की और सातवी नरक की अपेक्षासे उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की कही ॥ ७ ॥ अहो भगवन् नारकी कितनेकाल तक श्वासोश्वास लेवे ? अहो गौतम जैसे श्वासोश्वासपद में नारकी

द्विसजोगी १५	त्रिसजोगी २०		चतु सजोगी १५	पंचसजोगी ६
१२	१२३	२५६	१२३४	१२३४५
१३	१२४	३४५	१२३५	१२३४६
१४	१२५	३४६	१२३६	१२३५६
१५	१२६	३५०	१२४५	१२४५६
१६	१३४	४५६	१२४६	१३४५६
२३	१३५		१२५६	२३४५६
२४	१३६		१३४५	
२५	१४५		१३४६	छसजोगी १
२६	१४६		१३५६	१२३४५६
३४	१५६		१४५६	एक संजोगी ६
३५	२३४		२३४५	
३६	२३५		२३४६	१ ४
४५	२३६		२३५६	२ ५
४६	२४५		२४५६	३ ६
५६	२४६		३४५६	

करो पो० पुद्गल प० परिणमें प० परिणमते हैं अनाहारी आ० आहार करेंने पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणमें प० परिणमेंगे अ० अनाहारीक अ० आहार नहीं करेंगे पा० पुद्गल णो० नहीं

परिणमतिय। अणाहारिया आहारिज्जस्समाणा पोग्गला णो परिणया परिणामिस्सति। अणाहारिया अणाहारिज्जस्स-माणा पोग्गला णो परिणया णो परिणामिस्सति ॥ १० ॥ णेरइयाण भंते पुव्वाहारिया पोग्गला निया ॥ पुच्छा ॥

अहो गौतम ! नारकी को पहिले ग्रहण किये हुवे पुद्गल परिणमें क्यों कि ग्रहण किये पीछे ही पुद्गल परिणमते हैं पूर्व कालमें ग्रहण किये वर्तमान में ग्रहण करते हैं वैसे पुद्गलों नारकी को परिणमें और परिणमते हैं अतीत काल में पुद्गल नहीं ग्रहण किये हैं और भविष्य में ग्रहण करेंगे वैसे पुद्गल नारकी को परिणमें नहीं हैं परंतु अनागत में ग्रहण किये अनंतर परिण मेंगे, अतीत काल में ग्रहण नहीं किये और भविष्यमेंभी ग्रहण नहीं करेंगे वैसे पुद्गल नारकी को परिणमें नहीं और परिणमेंगे

आहारकिये पो० पुद्गल प० परिणमें आ० आहारकिये आ० आहार करते पो० पुद्गल प०परिणमें अ-आ-रनहींकिये आ० आहार करेंगे पो०पुद्गल प०परिणमें अ०आहारनहींकिये अ० नहीं आहार करेंगे पो० पुद्गल प०परिणमें गा०गौतम! णे०नारकी पु०पूर्वेआहारनहीं किये पो०पुद्गल प०परिणमें आ० आहारकिये आ०आहा

हारिया पोग्गला परिणया आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया अणाहारिया आहारिज्जस्समाणा पोग्गला परिणया अणाहारिया अणाहारिज्जस्समाणा पोग्गला परिणया? गोयमा णेरइयाण पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया, आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया

के आहाराधिकार से आहार विषयिक प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! नारकी को पहिले शरीर साथ आहार किए हुए पुद्गल क्या परिणमे? पूर्वकाल में जिन पुद्गलों का आहार किया होवे अथवा वर्तमान में आहार करते हैं वे पुद्गलों नारकी को क्या परिणमें? पूर्वकाल में जिन पुद्गलों का आहार नहीं किया और भविष्य में आहार करेंगे वैसे पुद्गलों क्या नारकी को परिणमें? और पूर्वकाल में आहार के पुद्गलों संग्रहे नहीं और अनागत में भी संग्रह करेंगे नहीं वैसे पुद्गलों क्या नारकी को परिणमें? यहां चार प्रश्न कहे इस के ६३ भांगे होते हैं अतीत काल में आहारे, वर्तमान में आहारते हैं और अनागत में आहारेंगे, अतीत काल में आहारे नहीं, वर्तमान में नहीं आहारते हैं और भविष्य में आहारेंगे नहीं इस तरह छ पद के ६३ भांगे होते हैं अब भगवंत श्री महावीर स्वामी उत्तर देते हैं

अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल चि० चिने अ० सूक्ष्म बा० बादर ए० ऐसे उपाचिरा णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं गो० गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकारके पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं उ० अपवर्तनकिये उ० अपवर्तते हैं उ० अपवर्तेंगे स० संक्रमें सं० संक्रमते हैं सं० संक्रमेंगे नि० निसरें नि० निसरते हैं नि० निसरेंगे नि० एकत्रित हुवे नि० एकत्रित होते हैं नि० एकत्रित

कतिविहा पोग्गला चिज्जति ? गोयमा ! आहारदव्व वग्गणमाहिकिच्च, दुविहा पोग्गला चिज्जति तजहा अणूचेव बायराचेव । एव उवचिज्जति ॥ णेरइयाण भंते कतिविहा पोग्गला उदीरति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिकिच्च दुविहा पोग्गला उदीरति, तजहा—अणूचेव बायराचेव । सेसावि एव चेव भाणियव्वा । वेदति । णिज्जरति । उयट्टिंसु । उयट्टति । उयट्टिस्सति ॥ सकामिंसु । सकामति । सकामिस्सति॥

सेही शरीर संबंधी चय उपचय पहिले कहा आहार में ही चय उपचय होता है परतु अन्य द्रव्य से नहीं होता है उस में सूक्ष्म सो केवलि गम्य और बादर सो चर्मचक्षु ग्राह्य है ऐसे ही उपचिन आश्रित कहना अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल की उदीरना होवे ? अहो गौतम ! नारकी को कर्मद्रव्य वर्गणा आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल की उदीरणा होवे क्यों की उदीरनादिक कर्म द्रव्य को होती है ऐसे ही ५ वेदे ६ निर्जरे ७ अपवर्तन हुवे, ८ अपवर्तन होता है, ९ अपवर्तन होवेंगे १०

---

१ अध्यवसाय से कर्म स्थिति का हीन करना यहां अपवर्तन में उपलक्षण से उद्वर्तन भी ग्रहण करना उद्वर्तन सो स्थिति आदि की वृद्धि करना

प०परिणमें णो०नहीं प०परिणमेंगे॥१०॥णे०नारकीने भ०भगवन् पु०पूर्वाहारी पो०पुद्गल चि०इकठेकिये ज० जैसे प० पारेणमें त० तैसे चि० इकठेकिये उ० उपचिने उ० उदीरे व० वेदे णि० निर्जरे ए० एकेक प० पद्में च०चार प्रकारके पो०पुद्गल हैं॥११॥णे०नारकी क०कितने प्रकारसे पो०पुद्गल भि०भेदाते हैं गो०गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दो प्रकार के पो० पुद्गल भि० भेदावे अ० सूक्ष्म बा० बादर णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल चि० चिणे गो० गौतम ! आ० आहार द० द्रव्य व० वर्गणा

परिणया तहा चिया।वि एवचिया उवचिया,उदीरिया,वेइया,णिज्जिणा॥गाथा॥परिणत चियाय उवचिया उदीरिया वेइयाय णिज्जिण्णा, एक्किक्कम्मि पदम्मि चउव्विहा पोग्गलाहोंति ॥ १ ॥ ११ ॥ णेरइयाण भते कतिविहा पोग्गला भिजाति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिगिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जति तजहा अणूचेव बायराचेव णेरइयाण भते

नहीं ॥१०॥अहो भगवन् नारकीको पहिले आहारे हुवे पुद्गल एकत्रित किये? अहो गौतम इसका सब खुलाला जैसे परिणमें का कहा वैसे ही जानना और इसी तरह बहुत एकत्रित किये, उदीरे, वेदे और निर्जरे ऐसे एक २ पद में चार २ भेद जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् नारकी को कितने पुद्गल अनुभाग भेद से भेदाते ? अथात तीव्रमंद, मध्यमंद से भेदपावे, उद्वर्तन करण से मन्दरस तीव्रहोवे तीव्ररस मंद होवे ? अहो गौतम कर्म द्रव्यवर्गणाके आश्रित दो प्रकारके पुद्गल भेदपावे सूक्ष्म व बादर उदारिकादि द्रव्यमें कर्म द्रव्यही सूक्ष्म है अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल चिणे, एकत्रित हुवे ? अहो गौतम आहार द्रव्य वर्गणा के आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल एकत्रित होवे हैं क्यों की आहार द्रव्य

अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल चि० चिने अ० सूक्ष्म बा० बादर ए० ऐसे उपाचिन णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल उ०उदीरते हैं गो० गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकारके पो०पुद्गल उ०उदीरते हैं उ०अपवर्तनकिये उ०अपवर्तते हैं उ०अपवर्तेंगे स० सक्रमें स०सक्रमते हैं सं० सक्रमेंगे नि० विखरें नि० विखरते हैं नि० विखरेंगे नि० एकत्रित हुवे नि० एकत्रित होते हैं नि० एकत्रित

कतिविहा पोग्गला चिज्जति ? गोयमा ! आहारदव्व वग्गणमाहिकिच्च, दुविहा पोग्गला चिज्जाति तजहा अणूचेव बायराचेव । एव उवाचिज्जाति ॥ णेरइयाण भंते कतिविहा पोग्गला उदीरति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिकिच्च दुविहा पोग्गला उदीरति, तजहा—अणूचेव बायराचेव । सेसावि एव चेव भाणियव्वा । वेदाति । णिज्जरति । उयट्टिंसु । उयट्टति । उयट्टिस्सति ॥ सकामिंसु । सकामति । सकामिस्सति॥

सेही शरीर सबधी चय उपचय पहिले कहा आहार से ही चय उपचय होता है परंतु अन्य द्रव्य से नहीं होता है उस में सूक्ष्म सो केवालि गम्य और बादर सो चर्मचक्षु ग्राह्य है ऐसे ही उपाचिन आश्रित कहना अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल की उदीरना होवे ? अहो गौतम ! नारकी को कर्मद्रव्य वर्गणा आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल की उदीरणा होवे क्यों की उदीरनात्मिक कर्म द्रव्य को होती है ऐसे ही ५ वेदे ६ निर्जरे ७ अपवर्तन हुवे ८ अपवर्तन होता है, ९ अपवर्तन होवेंगे १०

१ अध्यवसाय से कर्म स्थिति का हीन करना यहां अपवर्तन में उपलक्षण से उद्वर्तन भी ग्रहण करना उद्वर्तन सो स्थिति आदि की वृद्धि करना

होंगे स० सर्व में क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा आ० आश्री भे० भेद चि० चिन उ० उपचिन उ० उदीर वे० वेद णि० निर्जरा उ० अपवर्तन सं० संक्रमन नि० निधत्त णि० निकाच ति० तीन प्रकार का का० काल ॥ १२ ॥ न० नारकी जे जा० पो० पुद्गल ते० तेजस् क० कार्माणपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं०

निहत्तिंसु । निहत्तति । निहत्तिस्सति निकाइंसु । निकायति । निकाइस्सति ॥ सव्वे-सुवि कम्म दव्ववग्गण महिकिच्च ॥ गाथा ॥ भेदिय चिता उवचिता, उदीरिता वे-दियाय णिज्जिण्णा । उवट्टण संकामण णिहत्तणिकायणे तिविह कालो ॥ १ ॥ १२॥ णेरइयाणं भंते जे पोग्गला तेया कम्मत्ताए गिण्हंति, ते किं तीतकाल समए गिण्हंति?

मूल व उत्तर प्रकृतियों का अध्यवसाय से परस्पर संचार होना उसे संक्रामन कहते हैं अतीत काल में संक्रमण ११ हुवा, वर्तमान काल में संक्रमण होता है और १२ आगामिक में संक्रमण होयेगा, भिन्न २ बिखरे हुवे पुद्गलों को निधत्त करना १३ ऐसे अतीत काल में एकत्रित किये, १४ वर्तमान में कर रहे हैं १५ आगामिक में एकत्रित करेंगे १६ अतीत काल में निकाचे, १७ वर्तमान में निकाचते हैं और १८ आगामिक में निकाचेंगे उक्त सब १८ भेद कर्म द्रव्य वर्गणा आश्रित जानना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! नारकी जो पुद्गल तेजस व कार्माण शरीरपने ग्रहण करते हैं वे क्या अतीतकाल में ग्रहण करते हैं वर्तमान

क्या ती० अतीत काल स० समय में गि० ग्रहण करते हैं प० वर्तमान समय में गि० ग्रहण करते हैं अ० अनागत स० समय में गि० ग्रहण करते हैं गो० गौतम णो० नहीं ती० अतीत काल में गि० ग्रहण करते हैं प० वर्तमान काल में गि० ग्रहण करते हैं णो० नहीं अ० अनागत काल में गि० ग्रहण करते हैं णे० नारकी जे० जो पो० पुद्गल ते० तेजस क० कार्माणपने ग० ग्रहाहुवा उ० उदीरते हैं ते० वे किं क्या ती० अतीत काल में ग० ग्रहा हुवा पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं प० वर्तमान काल में घि० लेते

पडुप्पण्ण कालसमए गिण्हाति ? अणागय काल समए गिण्हति ? गोयमा ! णो तीत कालसमए गिण्हति, पडुप्पण्ण कालसमए गिण्हति, णो अणागय कालसमए गिण्हति णेरइयाण भंते ज पोग्गला तेयाकम्मत्ताए गहिए उदीरति, ते किंतीत कालसमय गहिए पोग्गले उदीरति, पडुप्पण्ण काल समय घिप्पमाणे पोग्गले उदीरति, गहण समय पुरक्खडे पोग्गले उदीरति ? गोयमा ! तीत काल समय गहिए

में ग्रहण करते हैं या अनागत में ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! अतीत काल में नहीं ग्रहण करे वर्तमान काल में ग्रहण करे और अनागत काल में ग्रहण करे नहीं अहो भगवन् नारकी जो पुद्गल तेजस कार्माण कर्मपने ग्रहण करके उदीरते हैं वे क्या अतीत काल के ग्रहण किये पुद्गल उदीरते हैं, वर्तमानकाल में ग्रहण करते पुद्गल उदीरते हैं अथवा ग्रहण समय से आगे के पुद्गल उदीरते हैं ? अहो गौतम!

होंगे स० सर्व में क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री भे० भेद चि० चिन उ० उपाचिन उ० उदीर वे० वेद णि० निर्जरा उ अपवर्तन सं० संक्रमन नि० निधत्त णि० निकाच ति० तीन प्रकार का का० काल ॥ १२ ॥ न० नारकी जे जो० पो० पुद्गल ते० तेजस् क० कार्माणपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं०

निहत्तिंसु । निहत्तंति । निहत्तिस्सति निकाइंसु । निकायंति । निकाइस्सति ॥ सव्वेसुवि कम्म दव्ववग्गण महिकिच्च ॥ गाथा ॥ भेदिय चिता उवचिता, उदीरिता वेदियाय णिज्जिण्णा । उवट्टण संकामण णिहत्तणिकायणे तिविह कालो ॥ १ ॥ १२॥ णेरइयाणं भंते जे पोग्गला तेया कम्मत्ताए गिण्हंति, ते किं तीतकाल समए गिण्हंति?

मूल व उत्तर प्रकृतियों का अध्यवसाय से परस्पर संचार होना उसे संक्रामन कहते हैं अतीत काल में संक्रमण ११ हुवा, वर्तमान काल में संक्रमण होता है और १२ आगामिक में संक्रमण होवेगा, भिन्न २ बिखरे हुवे पुद्गलों को निधत्त करना १३ ऐसे अतीत काल में एकत्रित किये, १४ वर्तमान में कर रहे हैं १५ आगामिक में एकत्रित करेंगे १६ अतीत काल में निकाचे, १७ वर्तमान में निकाचते हैं और १८ आगामिक में निकाचेंगे उक्तसव १८ भेद कर्म द्रव्य वर्गणा आश्रित जानना ॥ १२ ॥ अहोभगवन् ! नारकी जो पुद्गल तेजस व कार्माण शरीरपने ग्रहण करते हैं वे क्या अतीतकाल में ग्रहण करते हैं वर्तमान

संग्रहते स० सर्व में अ० अचलित नो० नहीं च० चलित ने० नारकी जी० जीव किं क्या च० चलित क० कर्म णि० णिर्जरे अ०अचलित गो०गौतम च० चलित क०कर्म णि०णिर्जरे णो० नहीं अ० अचलित क० कर्म णि० णिर्जरे ब० बंध उ०उदय उ०अपवर्त स० संक्रमन नि० निधत्त नि०निकाच में अ० अचलित क० कर्म णि० णिर्जरे ब० बंध उ०उदय उ०अपवर्त स० संक्रमन नि० निधत्त नि०निकाच में अ० अचलित क० कर्म म० होवे च० चलित णि० निर्जरा में ॥ १४ ॥ अ० असुर कुमार की भं० भगवन् के० कितना का०

उदीरति, अचलिय कम्म उदीरति ? गोयमा णो चलिय कम्म उदीरंति अचालिय कम्म उदीरति । एवं वेदाति उयट्टति । सकामाति । निहत्ताति । णिकायति । सव्वेसु अचलिय णो चलिय णेरइयाण भंते जीवाओ किं चलिय कम्म णिज्जरेंति अचलिय कम्म णिज्जरेंति ? गोयमा ! चलिय कम्म णिज्जरेंति, णो अचलिय कम्म णिज्जरेंति ॥ गाहा ॥ बंधोदयवेदोवट्ट सकमण णिहत्त णिकाएसु । अचलिय कम्मतुभवे, चलिय जीवाउ णिज्जरए ॥ १४ ॥ असुरकुमारण भंते केवइय काल

की उदीरणा करे या अचलित कर्म की उदीरणा करे ? अहो गौतम ! चलित कर्म की उदीरणा करे नहीं परंतु अचलित कर्म की उदीरणा करे ऐसे ही ३ वेदना, ४ क्षीण करना ५ संक्रमाना ६ धारना ७ निकाचना इन सब में चलित कर्म लेना नहीं परंतु अचलित कर्म लेना ८ अहो भगवन् नारकी जीव-प्रदेश से चलित कर्म की निर्जरा करते हैं या अचलित कर्म की निर्जरा करते हैं ? अहो गौतम ! नारकी

पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं ग० ग्रहण समय पु० आगे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं गो० गौतम ! ती० अतीत काल में ग० ग्रहे हुवे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं णो० नहीं प० वर्तमान में घि० लेते हुवे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं णा० नहीं ग्रहण समय पु० आगे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं ए० ऐसे वे० वेदते हैं णि० निर्जरते हैं ॥ १३ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् जी० जीव किं० क्या च० चलित क० कर्म ब० बांधे अ० अचलित क० कर्म ब० बांधे गो० गौतम णो० नहीं च० चलित क० कर्म ब० बांधे अ० अचलित क० कर्म बं० बांधे उ० उदीरे वे० वेदे उ० अपवर्ते स० संक्रमे नि० निधत्ते नि०

पोग्गले उदीरति णो पडुप्पण्ण काल समय घिप्पमाणे पोग्गले उदीरति, णो गहण समय पुरक्खडे पोग्गले उदीरति । एवं वेदति । णिज्जरति ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते जीवाओ किंचलियं कम्मबंधति, अचलियं कम्मबंधति ? गोयमा णोचलियं कम्मबंधति अचलियं कम्मं बंधति णेरइयाणं भंते जीवाओ किंचलियं कम्मं

अतीत काल में ग्रहण किये पुद्गल उदीरते हैं परंतु वर्तमान में ग्रहण करते अथवा ग्रहण समय आगे के पुद्गल उदीरते नहीं हैं ऐसेही वेदन निर्जरा का जानना ॥ १३ ॥ १ अहो भगवन् ! नारकी जीव प्रदेश से क्या चलित कर्म का बंधकरे या अचलित कर्म का बंधकरे ? अहो गौतम ! तेजस कर्म के योगसे चलित कर्म का बंधकरे नहीं परंतु अचलित कर्म का बंधकरे अहो भगवन् नारकी जीव प्रदेश से चलित कर्म

संग्रहते स० सर्व में अ० अचलित नो० नहीं च० चलित ने० नारकी जी० जीव किं क्या च० चलित क० कर्म णि० णिर्जरे अ०अचलित गो०गौतम च० चलित क०कर्म णि०णिर्जरे णो० नहीं अ० अचलित क० कर्म णि० णिर्जरे ब० बंध उ०उदय उ०अपवर्त स० सक्रमन नि० निधत्त नि०निकाच में अ० अचलित क० कर्म म० होवे च० चलित णि० निर्जरा में ॥ १४ ॥ अ० असुर कुमार की भ० भगवन् के० कितना का०

उदीरति, अचलिय कम्म उदीरति ? गोयमा णो चलिय कम्म उदीरंति अचालिय कम्म उदीरंति । एवं वेदाति उयट्टति । सकामति । निहत्ताति । णिकायति । सव्वेसु अचालिय णो चलिय णेरइयाण भते जीवाओ किं चलिय कम्म णिज्जरेंति अचालिय कम्म णिज्जरेंति ? गोयमा ! चलिय कम्म णिज्जरेंति, णो अचलिय कम्म णिज्जरेंति ॥ गाहा ॥ बधोदयवेदोवट्ट सकमण णिहत्त णिकाएसु । अचलिय कम्मतुभवे, चलिय जीवाउ णिज्जरए ॥ १४ ॥ असुरकुमारण भते केवइय काल

की उदीरणा करे या अचलित कर्म की उदीरणा करे ? अहो गौतम ! चलित कर्म की उदीरणा करे नहीं परंतु अचलित कर्म की उदीरणा करे ऐसे ही ३ वेदना, ४ क्षीण करना ५ सक्रमाना ६ धारना ७ निकाचना इन सब में चलित कर्म लेना नहीं परंतु अचलित कर्म लेना ८ अहो भगवन् नारकी जीव-प्रदेश से चलित कर्म की निर्जरा करते हैं या अचलित कर्म की निर्जरा करते हैं ? अहो गौतम ! नारकी

काल की ठि० स्थिति गो० गौतम ज० जघन्य द० दश वर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट सा० अधिक सा० सागरोपम ॥ १५ ॥ असुर कुमार के० कितनाकाल में आ० थोडा श्वासले पा० बहुत श्वास से ऊ० ऊंचा श्वासले नी० नीचाश्वासले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थो० स्तोक उ० उत्कृष्ट सा० अधिक प० पक्ष

ठिई प० गोयमा जहण्णेण दस वास सहस्साइ ठिई प० उक्कोसेण साइरेग सागरोवम ॥ १५ ॥ असुरकुमाराण भते केवइय काल आणमतिवा, पाणमति वा ऊससतिवा, नीससंतिवा ॥ पुच्छा ॥ गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमतिवा पाणमतिवा, ऊससतिवा, नीससंतिवा, ॥ १६ ॥ असुर-

चलित कर्म की निर्जरा करे अचलित कर्म की निर्जरा करे नहीं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! असुरकुमार की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुच्छ अधिक कही [उत्तर दिशाके बलेन्द्र आश्रित जानना] ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमारके देव कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार के देव जघन्य सात स्तोक में उत्कृष्ट एक पक्ष से कुच्छ अधिक में श्वासोश्वास लेवे ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं अहो भगवन् ![1] कितने समय में उन को आ-

१ असुरनिकायमें उत्पन्न होनेसे व कुमारकी तरह क्रीडा करनेसे असुरकुमार कहाये गये हैं

॥ १८ ॥ अ० असुरकुमार भ० भगवन् आ० आहार के अर्थी हं० हा आ० आहार के अर्थी अ० असुर कुमार को भ० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० असुर कुमार को दु० दोप्रकार का आ० आहार आ० आभोगनिवर्तित अ० अनाभोगनिवर्तित त० तहां जे० जो अ० अनाभोग निवर्तित से० वह अ० समय समय में अ० आंतरा रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे त० तहां जे० जो आ० आभोग निवर्तित से वह ज० जघन्य च० चतुर्थभक्त

कुमाराण भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । असुर कुमाराण भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! असुर कुमाराण दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा आभोगनिव्वत्तिएय, अणाभोग णिव्वत्तिएय । तत्थणं जे से अणाभोगणिव्वत्तिए से अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ । तत्थण जे से आभोगणिव्वत्तिए से जहण्णेण चउत्थ भत्तस्स उक्कोसेण

हार की इच्छा उत्पन्न होती है ? अहो गौतम ! असुर कुमार को दो प्रकार का आहार कहा १ आ-भोग निवर्तित सो जानते हुवे आहार लेवे और २ अनाभोग निवर्तित सो अनजान से करे उस में जो अनाभोग निवर्तित आहार है उस की इच्छा प्रतिसमय विरह रहित नारकी को उत्पन्न होवे और आभोग निवर्तित जो आहार है उस की इच्छा जघन्य चतुर्थ भक्त (एक दिन) में उत्पन्न होवे उत्कृष्ट एक हजार

उ० उत्कृष्ट सा० सातिरेक वा० सहस्र वर्ष में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे ॥ १७ अ० असुर कुमार किं० क्या आ० आहार आ० ग्रहण करते हैं गो० गौतम द० द्रव्य से अ० अनंत प० प्रदेश द० द्रव्य खे० क्षेत्र का० काल भा० भाव से प० पन्नवणा में से० शेष ज० जैसे ने० नारकी को जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीसतरह मु० वारवार प० परिणमते हैं गो० गौतम सो० श्रोतेन्द्रियपने सु० सुरूपपने सु० अच्छावर्णपने इ० इष्टपने इ० इच्छापने अ० अच्छी वांच्छापने उ० प्रधानपने णो० नहीं अ०

साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ १७ ॥ असुरकुमाराण भंते किं आहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणतपएसियाइ दव्वाइ खेत्त काल भाव पण्णवागमेण सेस जहा णेरइयाण जाव तेण तेसिं पोग्गला कीसत्ता भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइदियत्ताए, सुरूवत्ताए, सुवण्णत्ताए, इट्ठत्ताए, इच्छियत्ताए,

वर्ष से कुच्छ अधिक समय में उत्पन्न होवे ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के देवता क्या आहार करे ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशी द्रव्य का आहार करे, क्षेत्र से, काल से, भाव से आहार करने की विधि जैसी पन्नवणा सूत्र में कही है वैसी यहां जानना और शेष सब अधिकार नारकी का कहा वैसे ही यहां कहना और उनको पुद्गल कीस तरह परिणमते हैं ? उन को पुद्गल श्रोतेन्द्रियपने, सुरूप, सर्वोत्कृष्ट वर्ण, इष्टपने, ईप्सितपने बहुऋतु में सुखदायीपना से, वारंवार ऐसाही बना रहे ऐसी

अधोपन सु० सुखपने णो० नहीं दु० दुःखपने भु० वारंवार प० परिणमते हैं ॥ १८ ॥ अ० असुर कुमार भ० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमें अ० असुरकुमार के अ० अभिलाप से ज० जैसे णे० नारकी जा० यावत् च० चलित क० कर्म णि० निर्जरते हैं ॥ १९ ॥ ना० नागकुमार की भ० भगवन् के० कितना काल की ठि० स्थिति गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट दे० देशऊण,

अभिज्झियत्ताए, उड्ढत्ताए णो अहत्ताए सुहत्ताए णोदुहत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ १८ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ? असुरकुमाराभिलावेणं जहा णेरइयाणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ १९ ॥ णागकुमाराणं भंते केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ॥ २० ॥ नागकुमाराणं भंते केवइयं काल

इच्छापने, ऊर्ध्वपने, अधोपने नहीं, व सुखपने वारंवार परिणमते हैं परतु दुःखपने नहीं परिणमते हैं ॥१८॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार को पूर्व के ग्रहण किये हुवे पुद्गल परिणमें ? ये चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वहां तक असुरकुमारका सब अधिकार नारकीका अधिकार जैसे कहना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नाग कुमार जाति के देवता की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट देश ऊना दो पल्योपम की स्थिति कही ॥ २० ॥ अहो भगवन्!

दो० दोपल्योपम की ॥ २० ॥ ना० नागकुमार भ० भगवन् के० कितना काल में आ० थोडाश्वास ले पा० बहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वास ले नीचा श्वास ले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थोम उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त पृथक ॥ २१ ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् आ० आहारके अर्थी हं० हां आ० आहार के अर्थी णा० नागकुमार को भ० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे गो० गौतम ना० नागकुमार दु० दोप्रकार का आहार आ० आहारे आ० आभोग निवर्तित अ० अनाभोग

स्स आणमतिवा, पाणमतिवा, ऊससतिवा, णीससतिवा ? गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्कोसेण मुहुत्त पुहुत्तस्स आणमातिवा, पाणमतिवा, ऊससातिवा, नीससतिवा ॥ २१ ॥ नागकुमाराण भत आहारट्ठी ? हता आहारट्ठी । णागकुमाराण भते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! णागकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णणे तजहा

नागकुमार के देवता कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! नाग कुमार देवता जघन्य सात स्तोक उत्कृष्ट मुहूर्त से पृथक्[1]में श्वासोश्वास लेते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! नागकुमार जाति के देवता आहार के अर्थी हैं अहो भगवन् ! उन को कितने काल में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! आहार दो प्रकार का है

१ दो मुहूर्तसे नव मुहूर्ततक इसको प्रत्येक मुहूर्तभी कहते हैं

निवर्तित त० तहां जे० जो अनाभोग निवर्तित से०उनको अ०समय समयमें अ०आंतरा रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे त० तहां जे० जो आ० आभोग निवर्तित से०उनको ज० जघन्य च० चतुर्थभक्त उ० उत्कृष्ट दि० दिवस पृथक् आ० आहार की स०इच्छा उत्पन्न होवे से० शेष ज० जैसे अ०असुरकुमार जा० यावत् च० चलित क० कर्म णि० निर्जरते हैं॥ २२॥ ए० ऐसे सु०सुवर्ण कुमार को भी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार को ॥२३॥ पु० पृथ्वी काया की भ० भगवन् के० कितना काल की ठि० स्थिति गो०

आभोगणिव्वत्तिएय अणाभोगनिव्वत्तिएय । तत्थण जे से अणाभोग णिव्वत्तिए से अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ, तत्थण जे से आभोग णिव्वत्तिए से- जहण्णेण चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण दिवस पुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ, सेस जहा असुरकुमारण जाव चलिय कम्म णिज्जरेंति ॥ २२ ॥ एव सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणति ॥२३॥ पुढविकाइयाण भते केवइयकालठिई पण्णत्ता ? गोयमा !

१ आभोग निवर्तित, २ अनाभोग निवर्तित उस में अनाभोग निवर्तित आहार की निरतर समय २ में अविच्छिन्नपने इच्छा उत्पन्न होती रहती है और आभोग निवर्तित आहार की इच्छा जघन्य चतुर्थ भक्त उत्कृष्ट दिन पृथक् अर्थात् दो दिन से नव दिन तक शेष चलित कर्म निर्जरे वहां तकका अधिकार असुर कुमार जैसे कहना ॥ २२ ॥ जैसे नागकुमार का कहा वैसे ही सुवर्णकुमार यावत् स्तनित कुमारका

दो० दोपल्योपम की ॥ २० ॥ ना० नागकुमार भ० भगवन् के० कितना काल में आ० थोडाश्वास ले पा० पहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वास ले नीचा श्वास ले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थोम उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त पृथक ॥ २१ ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् आ० आहारके अर्थी हैं० हां आ० आहार के अर्थी णा० नागकुमार को भ० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स०उत्पन्न होवे गो० गौतम ना० नागकुमार दु० दोप्रकार का आहार आ० आहारे आ० आभोग निर्वर्तित अ० अनाभोग

स्स आणमतिवा, पाणमतिवा, ऊससतिवा, णीससतिवा ? गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्कोसेण मुहुत्त पुहुत्तस्स आणमतिवा, पाणमतिवा, ऊससतिवा, नीससतिवा ॥ २१ ॥ नागकुमाराण भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । णागकुमाराण भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! णागकुमाराण दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा

नागकुमार के देवता कितने काल में श्वासोश्वास लेवे हैं ? अहो गौतम ! नाग कुमार देवता जघन्य सात स्तोक उत्कृष्ट मुहूर्त से पृथक्में श्वासोश्वास लेत हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! नागकुमार जाति के देवता आहार के अर्थी हैं अहो भगवन् ! उन को कितने काल में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! आहार दो प्रकार का है

१ दो मुहूर्तसे नव मुहूर्ततक इसको प्रत्येक मुहूर्तभी कहते हैं

उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० समय समय में अ० अंतर रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे पु० पृथ्वी काया भ० भगवन् किं० कौनसा आ० आहार आ० ग्रहण करे गो० गौतम द० द्रव्य से ज० जैसे णे० नारकी णि० निर्व्याघात छ० छदिशि में वा० व्याघात आश्री सि० कदाचित् ति० तीनदिशा में सि० क्वचित् च० चारदिशा में सि० क्वचित् प० पाचदिशा में व० वर्ण से का० काला नी० नीला

आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ पुढविकाइयाण भते किमाहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ जहा णेरइयाण णिव्वाघाएण छदिसिं वाघायपडुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं, सियपचदिसिं, वण्णओ काल नील लोहिय हालिद्द सुक्किलाण, गधओ सुब्भिगध दुरभिगधाइ, रसओ तित्ताइ

कायिक जीव क्या आहार करते हैं ? द्रव्य से अनत प्रदेशात्मक द्रव्य का आहार करे वगैरह सब अधिकार नारकी जैसे कहना निर्व्याघात से छ दिशि का आहार लेवे पूर्वादिचार व ऊर्ध्व और अधो व्याघात आश्रित अर्थात् लोकान्त के उपर या नीचे व पूर्व दक्षिण में अलोक होवे वैसे स्थान उत्पन्न होने वाले पृथ्वी कायिक जीव तीन दिशा का आहार लेवें उपर नीचे अलोक होवे वैसे स्थान में उत्पन्न होनेवाले चार दिशाका आहार करें, और छ दिशामें से एक दिशा में ही मात्र अलोक होवे वैसेस्थान उत्पन्न होनेवाले पाच

१ लोकान्त निष्कुट को व्याघात कहते हैं उसका छोडकर अन्यत्र उत्पन्न होनेवाले

गौतम ज० जघन्य अ० अन्तर्मुहुर्त उ० उत्कृष्ट बा० बावीसवर्ष स० सहस्र की ॥ २४ ॥ पु० पृथ्वी काया भ० भगवन के० कितना काल आ० थोडा श्वास ले पा० बहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वासले नी० नीचा श्वास ले गो० गौतम वे० वेमात्रा ॥ २५ ॥ पु० पृथ्वी काया आ० आहारार्थी ह० हां गो० गौतम आ० आहार के अर्थी पु० पृथ्वी काया को के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स०

जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ ॥ २४ ॥ पुढविकाइयाण भते केवइयकालस्स आणमतिवा, पाणमतिवा, ऊससातिवा, नीससतिवा ? गोयमा! वेमायाए आणमतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा नीससतिवा ॥ २५ ॥ पुढविकाइयाण भते ! आहारट्ठी ? हता गोयमा ! आहारट्ठी । पुढविकाइयाण भते केवइय कालस्स

जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष की ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी कायाके जीव वे मात्रा से श्वासोश्वास लेवे अर्थात् उन को श्वासोश्वास लेने की मर्यादा नहीं है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी कायिक जीवों क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं अहो भगवन् ! उन को आहार की इच्छा कितने काल में उत्पन्न होती है ? अहो गौतम ! उन को प्रति समय विरह रहित आहार की इच्छा उत्पन्न होती है अहो भगवन् ! पृथ्वी

आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! अणुसमय अविराहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ पुढविकाइयाण भते किमाहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ जहा णेरइयाण णिव्वाघाएण छदिसिं वाघायपडुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं, सियपचदिसिं, वण्णओ काल नील लोहिय हालिद्द सुक्किलाण, गधओ सुब्भिगध दुरभिगधाइ, रसओ तित्ताइ

उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० समय समय में अ० अतर रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे पु० पृथ्वी काया भ० भगवन् किं० कौनसा आ० आहार आ० ग्रहण करे गो० गौतम द० द्रव्य से ज० जैसे णे० नारकी णि० निर्व्याघात छ० छदिशि में वा० व्याघात आश्री सि० क्वचित् ति० तीनदिशा में सि० क्वचित् च० चारदिशा में सि० क्वचित् प० पांचदिशा में व० वर्ण से का० काला नी० नीला

कायिक जीव क्या आहार करते हैं ? द्रव्य से अनत प्रदेशात्मक द्रव्य का आहार करे वगैरह सब अधिकार नारकी जैसे कहना निर्व्याघात से छ दिशि का आहार लेवे पूर्वादिचार व ऊर्ध्व और अधो व्याघात[1] आश्रित अर्थात् लोकान्त के उपर या नीचे व पूर्व दक्षिण में अलोक होवे वैसे स्थान उत्पन्न होने वाले पृथ्वी कायिक जीव तीन दिशा का आहार लेवें उपर नीचे अलोक होवे वैसे स्थान में उत्पन्न होनेवाले चार दिशाका आहार करें, और छ दिशामें से एक दिशा में ही मात्र अलोक होवे वैसेस्थान उत्पन्न होनेवाले पांच

१ लोकान्त निष्कुट को व्याघात कहते हैं उसका छोडकर अन्यत्र उत्पन्न होनेवाले

लो० राता हा० पीला सु० शुक्र ग० गंधसे सु० सुरभिगंध दु० दुरभिगंध र० रस से ति० तिक्तादि फा० स्पर्श से क० कर्कश आदि से० शेष त० तैसे णा० जानना क० कीतना भाग आ० आहार करते हैं क० कीतना भाग फा० स्पर्शते हैं गो० गौतम अ० असंख्यात में भाग आ० आहार करते हैं अ० अनंत में भाग फा० स्पर्शते हैं जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीस तरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं शेष ज० जैसे णे० नारकी जा०

५, फासओ कक्खडाइ ८, ॥ सेस तहेव णाणत्त कइभाग आहारेंति, कइभाग फासेंति ? गोयमा ! असंखेज्जइ भाग आहारेंति अणतभाग फासेंति । जाव तेण पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति ? गोयमा फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो

दिशा का आहार करे वर्ण से काला, नीला, रक्त, पीला व शुक्र पुद्गलोंका आहार करें, गंध से सुरभिगंध व दुरभिगंध का आहार करें, रस से तिक्तादि पांचों रस का आहार करें और स्पर्श से कर्कशादि आठों स्पर्श का आहार करें शेष जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना परतु इतना विशेष जानना कि कितना भाग का आहार करे व कितना भाग आस्वादे ? अहो गौतम ! असंख्यात भाग का आहार करे, व अनंत में भाग में आस्वादे वे पुद्गल कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे पुद्गलों स्पर्शेन्द्रियपने परिणमे अथवा विषम मात्रा या विविध मात्रा से वारंवार परिणमे यावत् चलित कर्म निर्जरे वहां तक का शेष

यावत् णो० नहीं अ० अचलित क० कर्म णि० निर्जरते हैं॥२६॥ए० ऐसे जा० यावत् व० वनस्पति काया को प० विशेष ठि० स्थिति व० कहना जा० जो ज० जिनका उ० ऊश्वास वे० वेमात्रा ॥ २७ ॥ बे० बे न्द्रिय की ठि० स्थिति भाँ० कहना उ० ऊश्वास वे० वेमात्रा ॥ २८ ॥ बे० बे द्वीन्द्रिय को आ० आहारकी पु० पृच्छा अ० अनाभोग निवर्तित त० तैसे त० तहां जे० जो आ० आभोगनिवर्तित अ०

परिणमति, सेस जहा णेरइयाण जाव णो अचलिय कम्म णिज्जरेंति ॥ २६ ॥ एव जाव वणस्सइ काइयाण, णवरठिती वण्णेतव्वा जा जस्स उस्सासो वेमायाए॥ २७ ॥ बेइदियाण ठिती भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए ॥ २८ ॥ बेइदियाण आहारे पुच्छा,

सब अधिकार नारकी जैसे कहना ॥ २६ ॥ जैसे पृथ्वी कायिक जीवों का अधिकार कहा वैसे ही अप्कायिक, तेउकायिक वायुकायिक व वनस्पति कायिक जीवोंका जानना इस में मात्र स्थिति की भिन्नता बतलाइ है सो कहते हैं—सब की जघन्य अंत मुहूर्त की उत्कृष्ट अप्कायिक जीवों की सात हजार वर्ष की, तेउकायिक जीवों की तीन अहो रात्रि, वायु कायिक जीवों की तीन हजार वर्ष की और वनस्पति कायिक जीवों की दश हजार वर्ष की और श्वासोश्वास मर्यादा रहित ॥ २७ ॥ द्वीन्द्रिय की स्थिति बारह वर्ष की कही और श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! द्वीन्द्रिय कैसे आहार करते हैं ? अहो गौतम ! आहार के दो भेद आभोगनिवर्तित व अनाभोगनिवर्तित उस में आभोग

लो० राता हा० पीला सु० शुक्ल ग० गधसे सु० सुरभिगध दु० दुरभिगध र० रस से ति० तिक्तादि फा० स्पर्श मे क० कर्कश आदि से० शेप त० तैसे णा० जानना क० कीतना भाग आ० आहार करते हैं क० कीतना भाग फा० स्पर्शते हैं गो० गौतम अ० असख्यात में भाग आ० आहार करते हैं अ० अनंत में भाग फा० स्पर्शते हैं जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीस तरह मु० वारवार प० परिणमते हैं गो० गौतम फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमाश्रा मु० वारंवार प० परिणमते हैं शेप ज० जैसे णे० नारकी जा०

५, फासओ कक्खडाइ ८, ॥ सेस तहेव णाणत्त कइभाग आहारेंति, कइभाग फासेंति ? गोयमा ! असखेज्जइ भाग आहारेंति अणतभाग फासेंति । जाव तेण पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति ? गोयमा फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो

दिशा का आहार करे वर्ण से काला, नीला, रक्त, पीला व शुक्ल पुद्गलोंका आहार करें, गध से सुरभिगध व दुरभिगध का आहार करें, रस से तिक्तादि पांचों रस का आहार करें और स्पर्श से कर्कशादि आठों स्पर्श का आहार करें शेप जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना परंतु इतना विशेप जानना कि कितना भाग का आहार करे व कितना भाग आस्वादे ? अहो गौतम ! असख्यात भाग का आहार करे, व अनंत में भाग में आस्वादे वे पुद्गल कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे पुद्गलों स्पर्शेन्द्रियपने परिणमे अथवा विपम मात्रा या विविध मात्रा से वारंवार परिणमे यावत् चलित कर्म निर्जरे वहां तक का शेप

अ० जैसे लो० रोम आहार प० कवल आहार जे० जो पो० पुद्गल लो० रोम आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे स० सर्व अ० निर्विशेष आ० आहारकरे जे० जो० पो० पुद्गल प० कवल आहारपने गि० ग्रहण करतेहैं पो० पुद्गल को अ०असख्यात भाग को अ० आहारकरे अ० अनेक भाग स० सहस्र अ० नहीं भोगवे अ० नहीं स्पर्शे वि० विध्वंसपासे हैं ए० इन पो० पुद्गल को अ० नहीं भोगवा न० नही स्पर्शा क० कौन से अ० थोडे ब० बहुत तु० सरिखे वि० विशेपाधिक गो० गौतम स०सर्व से थोडा पो०पुद्गल अ० नहीं

पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हाति तेसिण पोग्गलाण असखेज्जइ भाग आहारेंति अणेगाईचण भागसहस्साइ अणासाइज्जमाणाइ अफासाइज्जमाणाइ विद्धसमावज्जइ॥ एएसिण भते पोग्गलाण अणासाइज्जमाणाण अफासाइज्जमाणाण य, कयरे २ हिंतो अप्पावा, बहुलावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला

ग्रहण करते हैं उन सब पुद्गलों का आहार करते हैं और जो पुद्गल प्रक्षेप आहारपने ग्रहण किये जाते हैं, उन का असख्यात में भागमें आहार करते हैं, और अनेक सहस्र भाग नहीं आस्वादते व नहीं स्पर्शते उन का विध्वस होता है अहो भगवन् ! नहीं आस्वादन किये हुवे व नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों में से कोनसा अल्प व बहुत है ? अथवा तुल्य है या विशेपाधिक है ? अहो गौतम ! सब से

असंख्यात समय अ० अन्तर्मुहूर्त वे० वेमाभा आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे से० शेप त० तैसे जा० यावत् अ० अनत भाग आ० आस्वादे ॥ २९ ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् जे० जो पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं० क्या स० सर्व आ० आहार करते हैं णो० नहीं स० सर्व आ० आहार करते हैं गो० गौतम बे० बेइन्द्रिय को दु० दोप्रकार का आ० आहार प० कहा त० वह

अणाभोगणिव्वत्तिए तहेव ॥ तत्थणं जेसे आभोगणिव्वत्तिए सेण असंखेज्ज समइए, अंतोमुहुत्तिए बेमायाए आहारट्ठे समुप्पजइ सेस तहेव जाव अणतभाग आसायति ॥ २९ ॥ बेइंदियाण भंते जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! बेइंदियाण दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा लोमाहारेय पक्खेवाहारेय । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति, जे

निर्वर्तित आहार असंख्यात समयिक अंतर्मुहूर्त में मर्यादा रहित आहार करे अन्य यावत् अनंत भाग का आस्वादन करे वहांतक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय जितने पुद्गलों को आहार के लिये ग्रहण करते हैं उन सब का क्या वे आहार करते हैं या सब का आहार नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! द्वीन्द्रिय के आहार के दो भेद कहे हैं १ रोम आहार सो ओघ से मर्यादि समय में जो पुद्गलों प्रवेश करे और २ प्रक्षेप आहार सो कवल रूप, इस में जो पुद्गल रोम आहारपने

ज० जैसे लो० रोम आहार प० कवल आहार जे० जो पो० पुद्गल लो० रोम आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे स० सर्व अ० निर्विशेष आ० आहारकरे जे० जो० पो० पुद्गल प० कवल आहारपने गि० ग्रहण करतेहैं पो० पुद्गल को अ०।असख्यात भाग को अ० आहारकरे अ० अनेक भाग स० सहस्र अ० नहीं भोगवे अ० नहीं स्पर्शे वि० विध्वसपाते हैं ए० इन पो० पुद्गल को अ० नहीं भोगवा न० नहीं स्पर्शा क० कौन से अ० थोडे ब० बहुत तु० सरिसे वि० विशेषाधिक गो० गौतम स०सर्व से थोडा पो०पुद्गल अ० नहीं

पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हति तेसिण पोग्गलाण असखेज्जइ भाग आहारेंति अणेगाइंचण भागसहस्साइ अणासाइज्जमाणाइ अफासाइज्जमाणाइ विद्धसमावज्जइ॥ एएसिण भंते पोग्गलाण अणासाइज्जमाणाण अफासाइज्जमाणाण य, कयरे २ हिंतो अप्पावा, बहुलावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला

ग्रहण करते हैं उन सब पुद्गलों का आहार करते हैं और जो पुद्गल प्रक्षेप आहारपने ग्रहण किये जाते हैं, उन का असख्यात में भागमें आहार करते हैं, और अनेक सहस्र भाग नहीं आस्वादते व नहीं स्पर्शते उन का विध्वस होता है अहो भगवन् ! नहीं आस्वादन किये हुवे व नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों में से कोनसा अल्प व बहुत है ? अथवा तुल्य है या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से

भोगवा अ० नहीं स्पर्शा म० अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भ० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे पो० पुद्गल की० कीसतरह मु० वारवार प० परिणमते हैं गो० गौतम जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा मु० वारवार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भ० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमा त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥ ते० तेइन्द्रिय च० चउरेन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाण भंते पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेण तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ बेइंदियाण भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चालिय कम्म णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

थोडे आस्वाद नहीं कराये हुवे पुद्गल उस से अस्पर्शमान पुद्गल अनंत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! जो पुद्गल द्वीइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व वमात्रासे परिणमते हैं अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पहिले के आहारे हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की व चतुरेन्द्रिय की स्थिति ६ मास की अन्य सब अ-

नहीं सुंघते अ० नहीं स्वादलेते अ० नहीं स्पर्शते वि० विध्वंसपाते हैं पो० पुद्गल को अ० नहीं सुंघेहुवे अ० नहीं स्वादलिये अ० नहीं स्पर्शेहुवे गो० गौतम स० सर्व से थोडा पो० पुद्गल अ० नहीं सुंघेहुवे अ० नहीं स्वादलिये अ० अनतगुने अ० नहीं स्पर्शेहुवे अ० अनंतगुने ते० तेइन्द्रिय को घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार परिणमें च० चतुरिन्द्रिय को च० चक्षु

याण णाणत्त ठिईए जाव अणेगाइ च ण भागसहस्साइ अणाघाइज्जमाणाइ, अणासाइज्जमाणाइ, अफासाइज्जमाणाइ विद्धसमागच्छंति एएसिण भते पोग्गलाण अणाघाइज्जमाणाणं, अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्ज माणाण य पुच्छा ॥ गोयमा? सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणतगुणा अफासाइज्जमाणा अणतगुणा ॥ तेइदियाण घाणेंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो

षिकार अनेक भाग सहस्र घ्राणेन्द्रिय से नहीं सुंघते, रसनेन्द्रिय से नहीं आस्वादते व स्पर्शेन्द्रिय से नहीं स्पर्शते नष्ट होते हैं वहां तक पहिले जैसे कहना उन में कोनसा अल्प व बहुत है? तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे घ्राणेन्द्रियपने नहीं सुंघे हुवे पुद्गलों, इस से रसनेन्द्रियपने नहीं आस्वादे हुवे पुद्गलों अनंत गुने, इस से स्पर्शेन्द्रियपने नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों अनंत गुने, तेइन्द्रिय को आहार के पुद्गल घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रियपने, व विविध प्रकार से परिणमते हैं वैसे ही चतुरेन्द्रिय को

भोगना अ० नहीं स्पर्शा अ० अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भ० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे पो० पुद्गल की० कीसतरह मु० वारवार प० परिणमते हैं गो० गौतम जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने बे० बेमात्रा मु० वारवार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भ० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमा त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥ ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

अणासाइज्जमाण्ण, अफासाइज्जमाणा अणतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाण भते पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेण तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति ? गोयमा ! जिब्भिदिय फासिंदिय बेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमति ॥ बइंदियाण भते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चालिय कम्म णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

थोडे आस्वाद नहीं कराये हुवे पुद्गल उस से अस्पर्शमान पुद्गल अनत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! जो पुद्गल द्वीइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व बमात्रासे परिणमते हैं अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पाहिले के आहारे हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पाहिले जैसे कहना ॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की व चतुरेन्द्रिय की स्थिति ६ मास की अन्य सब अ

ए० ऐसे म० मनुष्य को ण० विशेष आ० आभोग निवर्तितपने ज० जघन्य अ० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट अ० अठम भक्त सो० श्रोतेन्द्रिय च० चक्षुइन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा मु० वारवार प० परिणमें से० शेष त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे॥३४॥ वा० वाणव्यंतर को ठि० स्थिति णा० नानाप्रकारकी अ० निरवशेष ज० जैसे णा० नाग कुमार को॥३५॥ ए० ऐसा जो० ज्योतिषी को ण० विशेष उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त

मुहुत्त, उक्कोसेण अट्ठमभत्तस्स सोइंदिय चक्खुदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति सेसं तहेव जाव चलियं कम्मंणिज्जरेंति ॥ ३४ ॥ वाणमंतराणं ठिईए णाणत्तं । अवसेसं जहा णाग कुमाराणं ॥३५॥ एवं जोइसियाणं

मनुष्य को जानना परंतु आभोग निर्वर्तित आहार की इच्छा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अठम भक्त सो तीन दिन में होवे देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के मनुष्य आश्रित दोनों को आहार के पुद्गल श्रोतेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रियपने व वेमात्रा से परिणमते हैं अन्य चलित कर्म की निर्जरा करे वहांतक सब पहिले जैसे कहना ॥ ३४ ॥ वाणव्यंतर देवता की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की अन्य सब नाग कुमार जैसे कहना ॥ ३५ ॥ ज्योतिषी देवता की स्थिति जघन्य एक पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम व एकलाख वर्ष अधिक जानना और

इन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने भु० वारंवार प० परिणमें ॥ ३२ ॥ प० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच ठि० स्थिति भ० कहना ऊ० उश्वास वे० वेमात्रा आ० आहार अ० अनाभोग निर्वर्तित पने अ० समय समय में अ० आंतरा रहित आ० आभोग निवर्तितपने ज०जघन्य अ० अन्तर्मुहूर्त उ०उत्कृष्ट छ० छठ्ठ भक्त में से० शेष ज० जैसे च० चतुरेन्द्रिय जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३३ ॥

परिणमंति चउरिंदियाणं चक्खुदिय घाणिंदिय जिब्भिदिय फासिंदियत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३ २ ॥ पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण ठिई भाणिऊण ऊसासोवेमायाए आहारो अणाभोगणिव्वात्तिए अणुसमइयं अविरहिओ आभोनिव्वत्तिओ जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण छट्ठभत्तस्स सेस जहा चउरिंदियाण जाव चलिय कम्म णिज्जरेंति ॥३३॥ एव मणुस्साणवि णवर आभोगणिव्वात्तिए जहण्णेण अतो-

चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रियपने परिणमते हैं ॥ ३२ ॥ तिर्यंच पचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अंतमुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की उन का श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना उन को अनाभोग निवर्तित आहार प्रति समय विरह रहित होता है और आभोग निवर्तित आहार जघन्य अंत मुहूर्त में उत्कृष्ट छठ भक्त सो दो दिन में (देवकुरु उत्तर कुरु के क्षेत्र के तिर्यंच आश्रित) और चलित कर्म की निर्जरा करेंगे यहांतक का शेष सब अधिकार चतुरेन्द्रिय जैसे कहना ॥ ३३ ॥ ऐसे ही

स्थितिपद में त० तैसे भा० कहना स० सर्व जी० जीव का आ० आहार ज० जैसे प० पन्नवणा में प० प्रथम आ० आहार उद्देशे में त० तैसे भा० कहना ए० यहां से आ० लेकर णे० नारकी भ० भगवन् आ० आहार के अर्थी जा० यावत् दु० दुःखपने भु० वारंवार परिणमें ॥ ३७ ॥ जी० जीव भ० भगवन् किं० क्या आ० आत्मारंभी प० परारंभी उ० उभयारंभी अ० अनारंभी गो० गौतम अ० कितनेक जी० जीव आ० आत्मारंभी प० परारंभी उ० उभयारंभी णो० नहीं अ० अनारंभी अ० कितनेक जीव णो० नहीं

ठिती जहा ठितीपदे तहा भाणियव्वा सव्व जीवाण आहारोय जहा पन्नवणाए पढमे आहारुद्देसए तहा भाणेयव्वो । एत्तो आढत्तो णेरइयाण भंते आहारट्ठी जाव दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३७ ॥ जीवाण भंते किं आयारंभा, परारंभा, तदुभयारंभा, अणारंभा? गोयमा!अत्थेगइया जीवा आयारंभावि,परारंभावि तदुभयारंभावि,

जानना इसी तरह चौविस दंडक का कहदेना अहो भगवन्! नारकी को आहार की इच्छा होती है ? यावत् दुःखरूप वारंवार परिणमे इस में पहिले नारकी की वक्तव्यता कही वह आरंभ पूर्वक होती है इस लिये आरंभका निरूपण करते हैं॥३७॥अहो भगवन्! क्या जीव स्वतः घात करनेवाले हैं, व अन्य की पास घात करानेवाले हैं स्वतः घात करानेवाले व अन्य की पास करानेवाले हैं, या दोनों प्रकार की घात से रहित अनारंभी हैं ? अहो गौतम कितनेक जीव आत्मारंभी हैं, परारंभी भी हैं, आत्मपरारंभी भी हैं परन्तु अनारंभी

पृथक् आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट दिवस पृथक् ॥ ३६ ॥ वे० वैमानिक को ठि० स्थिति भा० कहना उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस प० पक्ष आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीसवर्ष स० सहस्र से० शेष त० तैसे जा० यावत् णि० निर्जरे ए० ऐसे ठि० स्थिति आ० आहार भा० कहना ठि० स्थिति ज० जैसे ठि०

वि णवर उस्सासो जहण्णेण मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्त पुहुत्तस्स आहारो जहण्णेण दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणवि दिवस पुहुत्तस्स सेस तचेव ॥ ३६ ॥ वेमाणियाण ठिई भाणियव्वाओहिया, उस्सासो जहण्णेण मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेण तेत्तीसाए पक्खाण ॥ आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेण दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेण तेत्तीसाए वाससहस्साण, सेस तचेव जाव णिज्जरेंति एव ठिती आहारो य भाणियव्वो

उश्वास जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक मुहूर्त आहार की इच्छा जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक दिन में होवे ॥ ३६ ॥ वैमानिक, देवताओं की स्थिति जघन्य एक पल्योपमकी उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की श्वासोश्वास जघन्य प्रत्येक मुहूर्त में लेवे उत्कृष्ट ३३ पक्ष में लेवे, आभोग निवर्तित आहार की इच्छा जघन्य प्रत्येक दिन में होवे उत्कृष्ट तेत्तीस हजार वर्ष में होवे शेष चालिस कर्म की निर्जरा करे वहांतक सब अधिकार पहिले जैसे कहना सब जीवों की स्थिति स्थिति पद से जानना व आहार पन्नवणा सूत्रके पहिले आहार उद्देशे में जैसा

अप्रमत्त संयति त० तहां जे० जो अ० अप्रमत्त संयति ते० वे णो० नहीं आ० आत्मारंभी णो० नहीं प० परारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी त० तहां जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० वे सु० शुभयोग प० आश्रित णो० नहीं आ० आत्मारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी अ० अशुभयोग प० आश्रित आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी त० तहां जे० जो० अ० असंयति ते० वे अ० अविरति

आयारंभा जाव अणारंभा ॥ तत्थण जे ते संसार समावण्णगा, तेदुविहा प०, त० संजयाय, असंजयाय । तत्थण जे ते संजया, ते दुविहा प०, त० पमत्त संजयाय, अपमत्त संजयाय । तत्थण जे ते अपमत्त संजया तेण णो आयारंभा, णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थण जे ते पमत्त संजया ते सुहजोग पडुच्च णो आयारंभा,

गतिरूप संसार में अनंत चक्र परिभ्रमण करके समस्त कर्म क्षयरूप स्थानक सो मोक्ष को प्राप्त हुवे उन को सिद्ध कहते हैं वे सिद्ध आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं और जो संसार समावन्न जीव हैं वे दो प्रकार के कहे हैं संयति सो चारित्र सहित व असंयति सो चारित्र रहित उस में संयति के दो भेद १ प्रमत्त संयति २ अप्रमत्त संयति जो सप्तम गुणस्थान वर्ती अप्रमत्त संयति हैं वे आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं और जो छठे गुणस्थानवर्ती प्रमत्त संयति हैं वे शुभ योग आश्रित आत्मारंभी, परारंभी, व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं,

पो अणारंभा ॥ अत्थेगइया जीवाणो आयारभा, णो परारभा, णो तदुभयारभा, अणारभा ॥ से केणट्ठेण भंते एव वुच्चइ ? अत्थेगइया जीवा आयारंभावि । एव पडि उच्चारेयव्व ॥ गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-ससार समावण्णगाय, असंसार समावण्णगाय ॥ तत्थणं जे ते असंसार समावण्णगाय, तेण सिद्धा सिद्धा ण णो

आ० आत्मारंभी णो० नहीं परारंभी णो० नहीं उ० उभयारंभी अ० अनारंभी से० वह के० कीसतरह ए० ऐसा वु० कहा अ० कितनेक जी० जीव आ० आत्मारंभी ए० ऐसे प० पीछा कहना गो० गौतम जी० जीव दु० दोप्रकार के स० संसारी अ० संसार को अप्राप्त त० तहां जे० जो अ० संसार को अप्राप्त ते० वे सि० सिद्ध णो० नहीं आ० आत्मारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी त० तहां जे० जो स० संसारी, ते० वे दु० दोप्रकार के सं०संयति अ०असंयति त०तहां जे०जो स०संयति से०वे दु०दोप्रकार के प० प्रमत्त संयति अ०

नहीं है कितनेक जीव आत्मारंभी नहीं है, परारंभी नहीं है, उभयारंभी भी नहीं है परंतु अनारंभी हैं अहो भगवन् ! कितनेक जीव आत्मारंभी हैं, परारंभी है और उभयारंभी भी है परन्तु अनारंभी नहीं है वैसे ही कितनेक जीव आत्मारंभी नहीं है, परारंभी नहीं है, आत्मपरारंभी दोनों नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं ऐसा जो आपका कथन है यह किस तरह से हैं ? अहो गौतम ! जीव के दो भेद हैं १ संसार में रहनेवाले और २ संसार से मुक्त उस में जो संसार असमापन्न जीव हैं वे चार

अप्रमत्त संयति त० तहां जे० जो अ० अप्रमत्त सयति ते० वे णो० नहीं आ० आत्मारंभी णो० नहीं प० परारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी त० तहां जे० जो प० प्रमत्त सयति ते० वे सु० शुभयोग प० आश्रित णो० नहीं आ० आत्मारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी अ० अशुभयोग प० आश्रित आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी त० तहां जे० जो० अ० असयति ते० वे अ० अविरति

आयारंभा जाव अणारंभा ॥ तत्थण जे ते ससार समावण्णगा, तेदुविहा प०, त० सजयाय, असजयाय । तत्थण जे ते सजया, ते दुविहा प०, त० पमत्त सजयाय, अपमत्त सजयाय । तत्थण जे ते अपमत्त सजया तेण णो आयारंभा, णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थण जे ते पमत्त सजया ते सुहजोग पडुच्च णो आयारंभा,

गतिरूप संसार में अनत वक्त परिभ्रमण करके समस्त कर्म क्षयरूप स्थानक सो मोक्ष को प्राप्त हुवे उन को सिद्ध कहते हैं वे सिद्ध आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परतु अनारंभी हैं और जो ससार समापन्न जीव हैं वे दो प्रकार के कहे हैं संयति सो चारित्र सहित व असयति सो चारित्र रहित उस में सयति के दो भेद १ प्रमत्त संयति २ अप्रमत्त सयति जो सप्तम गुणस्थान वर्ती अप्रमत्त संयति हैं वे आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परतु अनारंभी हैं और जो छट्ठे गुणस्थानवर्ती प्रमत्त संयति हैं वे शुभ योग आश्रित आत्मारंभी, परारंभी, व उभयारंभी नहीं हैं परतु अनारंभी हैं,

प० आश्रित आ० आत्मारभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारभी से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसे वु० कहा जाता है अ० कितनेक जीव जा० यावत् अ० अनारंभी ॥ ३८ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् किं० क्या आ० आत्मारंभी प० परारंभी त० उभयारभी अ० अनारभी गो० गौतम णे० नारकी

णो परारभा, जाव अणारभा । असुह जोग पडुच्च आयारभावि जाव णो अणारभा । तत्थण जे ते असजया ते अविरतिं पडुच्च आयारभावि जाव णो अणारभा से ते-णट्ठेणं गोयमा एव वुच्चइ, अत्थेगइया जीवा जाव अणारभा ॥३८॥ णेरइयाण भते किं आयारभा, परारभा, तदुभयारभा, अणारभा ? गोयमा ! णेरइया आया

और अशुभ योगें आश्रित आत्मारंभी परारभी व उभयारभी हैं परतु अनारभी नहीं हैं और जो असंयति हैं वे अविरति की अपेक्षा से आत्मारभी, परारंभी, व उभयारंभी हैं परतु अनारभी नहीं है इसलिये अहो गौतम! ऐसा कहा कि कितनेक जीव आत्मारभी, परारभी व उभयारभी हैं परतु अनारंभी नहीं है और आत्मारंभी, परारभी व उभयारभी नहीं हैं परंतु अनारभी हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन्! नारकी आत्मारंभी, परारभी व उभयारभी हैं या अनारभी हैं? अहो गौतम नारकी आत्मारभी, परारंभी, व

मत्युपेक्षणादि करणसा अशुभयोग पुढवी आऊक्काए । तऊवाऊ वणस्सइ तसाणं ॥ पडिलेहण पमत्तो। छण्ह विराहणा हाइ ॥ १ ॥ प्रमादसे प्रतिलखना करनेवाला छ ही कायाका घातक होताहै

आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी से० वह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम अ० अविरति प० प्रत्ययिक से० वह ते० इसलिये जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी ए० ऐसे जा० यावत् पं० पचेन्द्रिय तिर्यंच म० मनुष्य ज० जैसे जी० जीव ण० विशेष सि० सिद्ध वि० रहित भा० कहना वा० वाणव्यंतर जा० यावत् वे० वैमानिक ज० जैसे णे० नारकी॥३९॥

रंभावि जाव णो अणारंभा ॥ से केणट्ठेण भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च से तेणट्ठेण जाव णो अणारंभा ॥ एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ मणुस्सा जहा जीवा णवरं सिद्धविरहिता भाणेयव्वा ॥ वाणमंतरा जाव वेमाणिया जहा नेरइया

उभयारंभी हैं परंतु अनारंभी नहीं हैं अहो भगवन् ! वह कैसे ? नारकी आत्मारंभी हैं यावत् अनारंभी नहीं हैं अहो गौतम नारकी के जीव अविरति होने से आत्मारंभी हैं यावत् अनारंभी नहीं हैं जैसे नारकी का कहा वैसेही दश भुवनपति, पांच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय व तिर्यंच पचेन्द्रियतक जानना और मनुष्य को सिद्ध भगवान् छोडकर जैसे जीवको संयति, असंयति, प्रमत्त अप्रमत्त ऐसे चार भांगे कहें वैसे ही यहां भांगा अनुसार आत्मारंभी परारंभी, उभयारंभी व अनारंभी के भेद जानना और जैसे नारकी को कहा वैसे ही वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ ३९ ॥ अविरति व सलेशी की साधर्म्यतासे आगे

स० लेश्या सहित ज० जैसे ओ०औधिक कि०कृष्णलेश्या नी०नीललेश्या का०कापुत लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण०[विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त भा० कहना ते० तेजो लेश्या प० पद्मलेश्या सु० शुक्ल लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष सि० सिद्ध णा० नहीं मा० कहना ॥४०॥ इ० यह भ० भविक भ० भगवन णा० ज्ञान प० परभविक ज्ञान उ० उभय भविक गो० गौतम इ० यह भ० भविक ज्ञान

॥ ३९ ॥ सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स, काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा। णवर पमत्त अपमत्ताण भाणियव्वा। तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा। णवर सिद्धा ण भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इह भविए भंते णाणे, परभविए णाणे, तदुभय भवि एणाणे ? गोयमा ! इह भविए वि णाणे, परभवि-

लेश्या का प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! सलेशी जीव आरंभी हैं? अहो गौतम जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसा कहना कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावालेको समस्त जीव जैसे कहना परंतु इसमें प्रमत्त व अप्रमत्तका कथन करना नहीं तेजु, पद्म, व शुक्ल लेश्या वाले औधिक जीव (सब जीव) जैसे कहना यहां पर सिद्ध को कहना नहीं क्योंकि सिद्ध अलेशी हैं ॥ ४० ॥ अब आरंभ का हेतुभूत ज्ञानका स्वरूप बताते हैं अहो भगवन्'

प०परभविक उ०उभय भविक ज्ञान दं०दर्शन ए०ऐसे॥४१॥ इ०यह भ०भविक च० चारित्र प० परभविक चारित्र उ०उभयभविक चारित्र गो०गौतम इ०यह भविक चारित्र णो०नहीं प०परभविक चारित्र णो०नहीं उ० उभयभविक चारित्र ए०ऐसे त०तपसयम॥४२॥ अ०असंवृत्त अ० अनगार सि०सिझे बु०बुझे मु०मुक्त होवे प०

एवं णाणे, तदुभयभविएवि णाणेय दसणपि एवामेव ॥४१॥ इह भविए भते चारित्ते, परभविए भते चारित्ते, तदुभय भविए चारित्ते ? गोयमा ! इह भविए चरित्ते, णो पर भविए चारित्ते, णो तदुभय भविए चारित्ते एव तवे, सजमे ॥ ४२ ॥ असवुडेण भते अणगारे सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिणिव्वाति, सव्वदुक्खाणमतकरेति ? गोयमा !

इस भविके ज्ञान होता है, परभविके ज्ञान होता है, अथवा दोनों प्रकार का ज्ञान होता है ? अहो गौतम ! इस भविक, परभविक व तदुभयभविक ज्ञान होता है ऐसे ही दर्शनका जानना ॥ ४१ ॥ अहो भगवन्! इस भवका चारित्र, परभवका चारित्र, व दोनों भवका चारित्र? अहो गौतम! इस भव सबंधिही चारित्र है परतु परभविक व उभय भविक चारित्र नहीं है ऐसेही तप व सयम का जानना ॥४२॥ अहो भगवन् असंवृत्त आश्रवद्वार को नहीं रुंधने वाला अणगार क्या सिझे, बुझे, कर्म से मुक्त होवे निर्वाणको प्राप्त होवे

[1] जो ज्ञान यहां पर शीखने में आया होवे और परभव में साथ न जावे, [2] इस भवमे शीखने मे आया होवे और परभवमें साथ जावे [3] इस भवमे शीखनेमें आया होवे वह परभव में व परतरभव में अनुवर्तसो

स० लेश्या सहित ज० जैसे ओ० औधिक कि० कृष्णलेश्या नी० नीललेश्या का० कापुत लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त भा० कहना ते० तेजो लेश्या प० पद्मलेश्या सु० शुक्ल लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष सि० सिद्ध णा० नहीं भा० कहना ॥४०॥ इ० यह भ० भविक भ० भगवन णा० ज्ञान प० परभविक ज्ञान उ० उभय भविक गो० गौतम इ० यह भ० भविक ज्ञान

॥ ३९ ॥ सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स, काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा । णवर पमत्त अपमत्ताण भाणियव्वा । तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्क-लेसस्स जहा ओहिया जीवा । णवर सिद्धा ण भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इह भविए भंते णाणे, परभविए णाणे, तदुभय भवि एणाणे ? गोयमा ! इह भविए वि णाणे, परभवि-

लेश्या का प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! सलेशी जीव आरंभी हैं? अहो गौतम जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसा कहना कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावालेको समस्त जीव जैसे कहना परंतु इसमें प्रमत्त व अप्रमत्तका कथन करना नहीं तेजु, पद्म, व शुक्ल लेश्या वाले औधिक जीव (सब जीव) जैसे कहना यहां पर सिद्ध को कहना नहीं क्योंकि सिद्ध अलेशी हैं ॥ ४० ॥ अब आरंभ का हेतुभूत ज्ञानका स्वरूप बताते हैं अहो भगवन्!

करे आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदाचित् ष० बांधे सि० कदाचित् नो० नहीं ष० बांधे अ० असाता व० वेदनीय क० कर्म को मु० वारंवार उ० इकठाकरे अ० अनादी अ० अनत दी० दीर्घकाल चा० चातुरत स० संसार कतार में अ० परिभ्रमणकरे से० उसको ते० इसलिये गो० गौतम अ० असवृत अ० अनगार णो० नहीं सि० सिझे ॥ ४३ ॥ स० सवृत अ० अनगार सि० सिझे ह० हा

सिय बधइ सिय नो बधइ, असाया वेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो भुज्जो उवचिणइ, अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससार कतार अणुपरियट्टति । से तेणट्ठेण गोयमा ! असवुडे अणगारे णो सिज्झइ ॥ ४३ ॥ सवुडेण भते अणगारे सिज्झइ ? हता सिज्झइ जाव अत करेइ ॥ सेकेणट्ठेण भते एव वुच्चइ ? गोयमा ! सवुडेण

कर्मों को दीर्घ काल की स्थितिवाले बनाता है मंद रस देनेवाले कर्मोंको तीव्ररस देनेवाला करता है, अल्प प्रदेशात्मक कर्मों को बहुत प्रदेशात्मक कर्म करता है आयुष्य कर्म का वध किसि समय करता है किसि-समय नहीं करता है, असाता वेदनीय कर्म पुन.पुन. संचित करता है, और अनादि अनत संसार कतार में परिभ्रमण करता है; इसलिये अहो गौतम ! असंवृत अनगार सिझे नहीं, यावत् ससार का अतकरे नहीं ॥ ४३ ॥ अहो भगवन्! आश्रवद्वार का रुधन करनेवाला सवृत अणगार क्या सिझे यावत् अतकरे ? हां गौतम ! संवृत अणगार सिझे यावत् अत करे भगवन् ! किस कारन से सवृत्त अणगार सिझे यावत् अंत

निर्वाणपावे स० सर्व दुःख का अं० अंत करे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के०
केसे भं० भगवन् जा० यावत् अंत न०नहीं क० करे गो० गौतम अ० असंवृत अनगार आ० आयुष्य
व० वर्जकर स० सात कर्म प्रकृति सि० शिथिल बं० बंधन ब० बांधीहुइ को ध० निकाचित बं० बंधनसे
ब० बद्ध प० करे ह० ह्रस्वकाल की ठि० स्थिति की दी० दीर्घकाल की ठि० स्थिति प० करे मं०
मंद अनुभाग को ति० तीव्र अनुभाग प० करे अ० अल्प प्रदेश को ब० बहुत प्रदेश प०

पाइणइ समेइ ॥ से केणट्टेणं भंते जाव अंतं न करेति ? गोयमा ! असंवुडे अण-
गारे आउय वज्जाओ सत्तकम्म [★]पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणिय बंधण
बद्धाओ पकरेइ, हस्सकालट्ठितीयाओ दीहकालट्ठितीयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ
तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्प पदेसग्गाओ बहुप्पदेसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्म

व सब दुःखों का अंत करे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् ऐसा नहीं होता है पुन
गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! किस कारणसे असंवृत अणगार सिद्ध नहीं, बुद्ध नहीं यावत्
सब दुःख का अंतकरे नहीं? अहो गौतम ! असंवृत अणगार आयुष्य कर्म छोडकर अन्य सात कर्म की
प्रकृतियों का शिथिल बंधन हुवा होवे तो उन का निकाचित बंध करता है, इस कालकी स्थिति वाले

★ आयुष्य कर्मका बंध भव भव आश्रित एकही वक्तहोता है

करे आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदाचित् ब० बांधे सि० कदाचित् नो० नहीं ब० बांधे अ० असाता वे० वेदनीय क० कर्म को मु० वारंवार उ० इकठाकरे अ० अनादी अ० अनत दी० दीर्घकाल चा० चातुरत स० संसार कतार में अ० परिभ्रमणकरे से० उसको ते० इसलिये गो० गौतम अ० असवृत अ० अनगार णो० नहीं सि० सिझे ॥ ४३ ॥ स० सवृत अ० अनगार सि० सिझे ह० हां

सिय बधइ सिय नो बधइ, असाया वेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो भुज्जो उवचिणइ, अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससार कतार अणुपरियट्टति । से तेणट्ठेण गोयमा ! असवुडे अणगारे णो सिज्झइ ॥ ४३ ॥ सवुडेण भते अणगारे सिज्झइ ? हता सिज्झइ जाव अत करेइ ॥ सेकेणट्ठेण भते एव वुच्चइ ? गोयमा ! सवुडेण

कर्मों को दीर्घ काल की स्थितिवाले बनाता है मंद रस देनेवाले कर्मोंको तीव्ररस देनेवाला करता है, अल्प प्रदेशात्मक कर्मों को बहुत प्रदेशात्मक कर्म करता है आयुष्य कर्म का बंध किसि समय करता है किसि समय नहीं करता है, असाता वेदनीय कर्म पुन:पुन सचित करता है, और अनादि अनत संसार कतार में परिभ्रमण करता है; इसलिये अहो गौतम ! असंवृत अनगार सिझे नहीं, यावत् ससार का अतकरे नहीं ॥ ४३ ॥ अहो भगवन्! आश्रवद्वार का रुधन करनेवाला सवृत अणगार क्या सिझे यावत् अतकरे ? हां गौतम ! संवृत अणगार सिझे यावत् अत करे भगवन् ! किस कारन से सवृत अणगार सिझे यावत् अंत

सि० सिझे यावत् अ० अंतकरे से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है पूर्ववत् ॥ ४४ ॥ जी० जीव भ० भगवन् अ० असयति अ० अविरति अ० अप्रतिहत प० प्रत्याख्यान पा०

अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठितीयाओ हस्सकालट्ठितीयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ, आउयचणं कम्म न बंधइ, असायावेयणिज्जं च णं कम्मणं भुज्जो भुज्जो उवचिणइ अणादीयचणं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं वीईवयइ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं संवुडे अणगारे सिज्झइ जाव अंतकरेइ ॥ ४४ ॥ जीवेणं भंते असंजए, अविरए, अप्पडिहय

करे ? अहो गौतम ! संवृत्त अणगार आयुष्य छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का निकाचित बंधन किया होवे ना उन को शिथिलकरे, दीर्घ काल की स्थिति वाले कर्मों को ह्रस्व काल की स्थिति वाले बनावे तीव्र रसवाले कर्मों को अल्प रसवाले बनावे, बहुत प्रदेशात्मक कर्मों को अल्प प्रदेशात्मक बनावे, आयुष्य कर्म का बंध करे नहीं, असाता वेदनीय कर्म को वारंवार संचित करे नहीं व अनादि अनंत संसार में परिभ्रमण करे नहीं, इसलिये अहो गौतम ! संवृत अणगार सिझे यावत् दुःखों का अंतकरे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! असयति, अविरति, व प्रत्याख्यान से पापकर्म नहीं रोकने वाला यहां से चवकर परलोक

पापकर्म इ० यहां से चु० चवकर पे० परलोक में देव सि० होवे गो० गौतम अ० कितनेक दे० देवसि० होवे अ० कितनेक णो० नहीं दे० देव सि० होवे से० वह के० कैसे भ० भगवन् जा० यावत् इ० यहा से चु० चवकर पे० परलोक में अ० कितनेक दे० देव सि० होवे अ० कितनेक णो० नहीं दे० देव सि० होवे गो० गौतम जे० जो जी० जीव गा० ग्राम आ० आगर न० नगर नि० निगम रा० राज्यधानि खे० खेड क० कव्वड म० मडप दो० द्रोणमुख प० पट्टण आ० आश्रम स० सन्निवेश में अ० अकाम तृष्णा

पञ्चक्खाय पावकम्मे, इतो चुते पेच्चा देवे सिया ? गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया अत्थेगइए णो देवे सिया । सेकेणट्ठेण भंते जाव इतो चुते पेच्चा अत्थेगइए देवेसिया, अत्थेगइए णो देवे सिया? गोयमा! जे इमे जीवा गामागर नगर निगम रायहाणि खेड कव्वड मडव दोणमुह पट्टणासम सन्निवेसेसु अकामतण्हाए, अकामछुहाए,

में क्या देवता होवे ? अहो गौतम ! कितनेक देव होवे और कितनेक देव न होवे अहो भगवन् ? किस कारण से कितनेक देव होवे और कितनेक देव नहोवे ! जो जीव ग्राम, आगर, नगर, निगम, राज्यथानी, खेड, कव्वड, मंडप द्रोणमुख, पट्टण आश्रम, सन्निवेश में अकाम विना इच्छा से, तृष्णा, क्षुधा, ब्रह्मचर्य, शीत, आतप, दंश मशक, स्नान नहीं करना, स्वेद नहीं पुछना, शरीर का मेल दुर नहीं करना, मल, पंक व परिदाह से अल्प या बहुत समय तक आत्मा को क्लेश पहुंचावे और इस तरह आत्मा को कष्ट देते

सि॰ सिझे यावत् अं॰ अंतकरे से॰ वह के॰ कैसे भ॰ भगवन् ए॰ ऐसे वु॰ कहा जाता है पूर्ववत् ॥ ४४ ॥ जी॰ जीव भ॰ भगवन् अ॰ असयति अ॰ अविरति अ॰ अप्रतिहत प॰ प्रत्याख्यान पा॰

अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठितीयाओ हस्सकालट्ठितीयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावा-ओ मदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ, आउयचण कम्म न बधइ, असायावेयणिज्जचण कम्मणो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ अणादीयचण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससार कतार वीईवयइ से तेणट्ठेण गोयमा ! एव सवुडे अणगारे सिज्झइ जाव अतकरेइ ॥ ४४ ॥ जीवेण भतेअसजए, अविरए, अप्पडिहय

करे ? अहो गौतम ! संवृत अणगार आयुष्य छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का निकाचित बंधन किया होवे ना उन को शिथिलकरे, दीर्घ काल की स्थिति वाले कर्मों को ह्रस्व काल की स्थिति वाले बनावे तीव्र रसवाले कर्मों को अल्प रसवाले बनावे, बहुत प्रदेशात्मक कर्मों को अल्प प्रदेशात्मक बनावे, आयुष्य कर्म का बंध करे नहीं, असाता वेदनीय कर्म को वारंवार संचित करे नहीं व अनादि अनंत संसार में परिभ्रमण करे नहीं, इसलिये अहो गौतम! संवृत अणगार सिझे यावत् दुःखों का अंतकरे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! असयति, अविरति, व प्रत्याख्यान से पापकर्म नहीं तोडने वाला यहां से चवकर परलोक

के दे० देवलोक प० मरूपे गो० गौतम इ० यह म० मनुष्य लोकमें अ० अशोक वृक्षके वन स० सप्त पर्णवन च० चपकवन चू० आम्रवन ति० तिल्कवन ला० वृक्ष विशेष नि० वट के वन छ० छत्राहवन अ० अशनवन स० शणवन अ० अल्सीके वन कु० कुसुमवन सि० सरसव के वन ध० वृक्ष विशेष नि० नित्य कु० कुसुम वाले मौं० मंजरी ल० वल य० फूलजाति गु० लता गो० पद्मसमुद ज० समश्रेणी जु० युगल वि० नमेहुवे प० विशेप नमेहुवे मु० मगट पिं० लुम्र मं० माजर व० नवकुपल ध० धारन करने वाले सि० शो-

लाउयवणेइवा, निग्गोहवणेइवा, छत्तोहवणेइवा, असणवणेइवा, सणवणेइवा, अयासिवणेइवा, कुसुमवणेइवा, सिद्धत्थवणेइवा, बधुजीववणेइवा, निच्च कुसुमिय माइयलवइयथवइय गुलुइय गोच्छिय जमालिय जुवालिय विणमिय पणमिय सुविभत्त पिंडिमंजरि वडिंगधरे, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ एवामेव तेसिं वाणमंतरा-

युगल वृक्ष के पुष्पों का भार से नमे हुवे, विशेप नमें हुवे, नविन कुंपल रूपी मुकुट को धारण करने वाले व वनलक्ष्मी से बहुत ही शोभनीक हैं वैसेही उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक जानना उस की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की जानना वे देवलोक बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों से व्याप्त, क्रीडा में आसक्त होनेसे उपरा उपर आच्छादे हुवे, परस्पर बहुत दूर तक खेलनेस

अ० अकामक्षुधा अ० अकाम ब्रह्मचर्य अ० अकाम सी० शीत आ०आतप दं० दंश म० मशक अ० स्नान रहित मे० स्वेद ज० जल म० मल प० कर्दम प० परिदाह थ० थोडे सु० बहुत का० काल अ० आत्मा का प० कष्टदेवे प० कष्टदेकर का० काल के अवसर में का० काल कि० करके अ० अन्यतर वा० वाण व्यतर दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न भ० होवे के० कैसे भ० भगवन् वा० वाणव्यतर दे० देवता

अकाम बंभचेरवासेणं, अकामसीतातवदंसमसग, अण्हाणगसेयजल्लमल पंकपरिदाहेण अप्पतरोवा भुज्जतरोवा काल अप्पाण परिकिलेसति परिकिलेसइत्ता, कालमासे कालकिच्चा, अण्णयरसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ॥ केरिसाण भंते तेसिं वाणमतराण देवाण देवलोगा प०? गोयमा! से जहा नामए इह मणुस्स लोगंमि असोगवणेइवा सत्तवण्णवणेइवा, चंपयवणेइवा, चूयवणेइवा, तिलगवणेइवा,

काल के अवसर में काल करे तो वाणव्यंतर देवलोक में देवतापने उत्पन्न होवे अहो भगवन्! उन वाणव्यतर देवता के देवलोक कैसे हैं? अहो गौतम जैसे मनुष्य लोक में अशोकवन, सप्तपर्णवन, चंपकवन आम्रवन, तिलक वन, अलवुक (तुम्बी का) वन, न्यग्रोधवन, छत्राहवन, अशनवृक्षवन, शणवृक्ष के वन मल्लिका वन, कुसुमवन, सिद्धत्य-श्वेतसरसवका वन, बंधजीव सो मध्यान्ह के कुसुमका वन वगैरह वनों सदैव कुसुमों से फुले हुवे मंजरी, गुच्छा, गुल्म, बेल, पत्र, अन्य अनेक वृक्षोंकी श्रेणियों के समुह व

के दे० देवलोक प० मरूपे गो० गौतम इ० यह म० मनुष्य लोकमें अ० अशोक वृक्षके वन स० सप्त पर्णवन च० चंपकवन चू० आम्रवन ति० तिलकवन ल० वृक्ष विशेष नि० वड के वन छ० छत्राहवन अ० अशनवन स० शणवन अ० अल्सीके वन कु० कुसुमवन सि० सरसव के वन ब० वृक्ष विशेष नि० नित्य कु० कुसुम वाले मो० मंजरी ल० वल थ० फूलजाति गु० लता गो० पत्रसमुह ज० समश्रेणी जु० युगल वि० नमेहुवे प० विशेष नमेहुवे सु० मगट पिं० लुम्ब मं० मांजर व० नवकुंपल ध० धारन करने वाले सि० शो-

लाउयवणेइवा, निग्गोहवणेइवा, छत्तोहवणेइवा, असणवणेइवा, सणवणेइवा, अयासिवणेइवा, कुसुमवणेइवा, सिद्धत्थवणेइवा, बधुजीववणेइवा, निच्च कुसुमिय माइयलवइयथवइय गुलुइय गोच्छिय जमालिय जुवालिय विणमिय पणमिय सुविभत्त पिंडिमजरि वडिंगधरे, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ एवामेव तेसिं वाणमतरा-

युगल वृक्ष के पुष्पों का भार से नमे हुवे, विशेष नमें हुवे, नविन कुपल रूपी मुकुट को धारण करने वाले व वनलक्ष्मी से बहुत ही शोभनीक हैं वैसेही उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक जानना उस की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की जानना वे देवलोक बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों से व्याप्त, क्रीडा में आसक्त होनेसे उपरा उपर आच्छादे हुवे, परस्पर बहुत दूर तक खेलनेसे

मनिक अ० अतीव सु० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यन्तर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति में उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से ब० बहुत वा० वाणव्यन्तर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित स० सस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीव २ सु० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यन्तर दे० देवके दे० देवलोक प० मरूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

ण देवाण देवलोया जहण्णेण दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेण पलिओवमट्ठिईए-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फु-डा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥ ए-रिसगाण गोयमा ! तेसिं वाणमंतराण देवाण देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जीवे ण असंजए जाव देवेसिया ॥ ४५ ॥ सेव भंते ! भंते ति भगव

मंथारा जैसे विस्तीर्ण घने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं अहो गौतम ! उन वाणव्यन्तर के ऐसे देवलोक कहे हैं और इसी कारण से कितनेक असंयति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है आप जैसा कहते हो वैसा ही है अन्यथा नहीं है इस प्रकार भगवन्त के

जाता है जी० जीव अ० असयति जा० यावत् दे० देव सि० होवे॥४५॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को व० वदे ण० नमस्कार किया व० वदना करके स० सयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ १ ॥ ✱ ✱

रा० राजगृह ण० नगर म० समवसरण प० परिपदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी०

गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता सजमेण तवसा अप्पा-

ण भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ ✱

रायगिहे णयरे, समोसरण, परिसा णिग्गया जाव एव वयासी जीवेण भते सय

वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वन्दना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर के सयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १ ॥ १ ॥ + + ×

गत उद्देशा में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दु खरूप होते हैं इसलिये आगे दु.ख का प्रश्न करते हैं राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिपदा वादने को आई, वाणी सुनकर परिपदा पीछीगई उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! जीव अपना किया हुवा दु ख वेदता है ? अहो गौतम ! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

मनिक अ० अतीव इ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से व० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित स० सस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीव २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

ण देवाण देवलोया जहण्णेण दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेण पलिओवमट्ठिईएहिं वहुहिं वाणमतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फुडा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥• एरिसगाण गोयमा ! तोसिं वाणमतराण देवाण देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जीवे ण असजए जाव देवोसिया ॥ ४५ ॥ सेव भते ! भते ति भगव

संथारा जैसे विस्तीर्ण घने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं और इसी कारण से कितनेक असयति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है आप जैसा कहते हैं; वैसा ही है अन्यथा नहीं है इस प्रकार भगवन्त के

जाता है जी० जीव अ० असयति जा० यावत् दे० देव सि० होवे॥४५॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को व० वदे ण० नमस्कार किया व० वदना करके स० सयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ १ ॥ * *

रा० राजगृह ण० नगर स० समवसरण प० परिषदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी०

गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ *

रायगिहे णयरे, समोसरणं, परिसा णिग्गया जाव एव वयासी जीवेण भते सय

वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर के सयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १ ॥ १ ॥ + + ×

गत उद्देश में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दु खरूप होते हैं इसलिये आगे दु ख का प्रश्न करते हैं राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वादने को आई, वाणी सुनकर परिषदा पीछीगई उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! जीव अपना किया हुवा दु ख वेदता है ? अहो गौतम ! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

मानिक अ० अतीव उ० सुदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति मे उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से ब० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित स० सस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीत २ उ० सुदर शोमते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिय गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

ण देवाण देवलोया जहण्णेण दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेण पलिओवमट्ठिईएहिं बहुहिं वाणमतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फुडा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठाति ॥ एरिसगाण गोयमा ! तेर्सि वाणमतराण देवाण देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जीवे ण असजए जाव देवेसिया ॥ ४५ ॥ सेव भते ! भते ति भगव

संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं और इसी कारण से कितनेक असयाति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४८ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है आप जैसा कहते हैं वैसा ही है अन्यथा नहीं है इस प्रकार भगवन्त के

जाता है जी० जीव अ० असयति जा० यावत् दे० देव सि० होवे॥४५॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को व० वंदे ण० नमस्कार किया व० वंदना करके स० संयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ १ ॥ ✱ ✱

रा० राजगृह ण० नगर स० समवसरण प० परिषदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी०

गोयमे समण भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता संजमेण तवसा अप्पा-

ण भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ ✱

रायगिहे णयरे, समोसरण, परिसा णिग्गया जाव एवं वयासी जीवेणं भंते सय

वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वन्दना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर के संयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १ ॥ १ ॥ + + ×

गत उद्देश में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दुःखरूप होते हैं इसलिये आगे दुःख का प्रश्न करते हैं राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वांदने को आई, वाणी सुनकर परिषदा पीछीगई उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! जीव अपना किया हुवा दुःख वेदता है ? अहो गौतम ! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

मनिक अ० अतीव उ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति मे उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से ब० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित स० सस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीत २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० यह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

ण देवाण देवलोया जहण्णेण दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेण पलिओवमट्ठिईएहिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फुडा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥ एरिसगाण गोयमा ! तेसिं वाणमंतराण देवाण देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे ण असंजए जाव देवेसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते त्ति भगवं

संथारा जैसे विस्तीर्ण घने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं और इसी कारण से कितनेक असंयति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है आप जैसा कहते हैं; वैसा ही है अन्यथा नहीं है इस प्रकार भगवन्त के

नहीं उदयमें आया वे० वेदे से० यह ते० इसलिये ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० ऐसा च० चौवीस दं० दंडक को जा० यावत् वे० वैमानीक ज० जैसे दु० दुःख में दो० दोभेद त० तैसे आ० आयुष्य में ए० एकवचन पो० पृथक् ए० एक वचन से जा० यावत् वे० वैमानिक पु० पृथक् तक ॥ १ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सरिखे आहारी स० सर्व स० सरिखे शरीरी स० सर्व स० सरिखे ऊश्वासनी

जीवेण भते सय कड आउय वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइय वेदेंति, अत्थेगइय णो वेदेंति जहा दुक्खेणं दो दडगा तहा आउएणवि एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेण, जाव वे-माणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाण भते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण भते एव वुच्चइ णे-रइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा। णेरइया दुविहा पण्ण

नहीं अहो भगवन् ! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं ऐसे ही अनेक जीव आश्रित जानना और चौविस ही दंडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सरिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

जीव भ० भगवन् स० स्वकृत दु० दुःख वे० वेदता है गो० गौतम अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वे० वेदे से० वह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वदे गो० गौतम उ० उदयमें आया वे० वेदे णो० नहीं अ०

कड दुक्ख वेदेइ ? गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ । सेकेणट्ठेण भते एव वुच्चइ अत्थेगइय वेदेइ अत्थेगइय नोवेदेति ? गोयमा ! उदिण्ण वेदेति णो अणुदिण्ण वेदाति सेतेणट्ठेण एव वुच्चइ गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय णोवेदेइ एव चउवीसदडएण जाव वमाणिए ॥ जीवाण भते सय कड दुक्ख वेदेंति ? गोयमा ! अत्थगइया वेदेंति, अत्थेगइया णो वेदेंति । से केणट्ठेण भते एव वुच्चइ ? गोयमा ! उदिण्ण वेदेंति णो अणुदिण्ण वेदेंति ॥ एव जाव वेमाणिया

नेक स्वकृत कर्मवेदे नहीं अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक स्वकृत कर्मों वेदते हैं और कितनेक नहीं वेदते हैं अहो गौतम ! उदय में आये हुवे कर्म वेदते हैं और उदय में नहीं आये हुवे कर्म नहीं वेदते हैं और इसी कारण से ऐसा कहा है कि कितनेक जीव स्वकृत दुःखवेदे और कितनेक जीव स्वकृत दुःख नहीं वेदे ऐसे ही पृथक् २ चौविसही दडक आश्रित जानना उपर जैसे एक जीव आश्रित कहा है वैसेही अनेक जीव आश्रित जानना अहो भगवन् जीव स्वकृत आयुष्य वेदे ? अहो गौतम ! कितनेक वेदे और कितनेक वेदे

नहीं उदयमें आया वे० वेदे से० वह ते० इसलिये ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० ऐसा च० चौवीस द० दंडक को जा० यावत् वे० वैमानीक ज० जैसे दु० दुःख में दो० दोभेद त० तैसे आ० आयुष्य में ए० एकवचन पो० पृथक् ए० एक वचन से जा० यावत् वे० वैमानिक पु० पृथक् तक ॥ १ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् स० सर्व स० सरिखे आहारी स० सर्व स० सरिखे शरीरी स० सर्व स० सरिखे ऊश्वासनी

जीवेण भते सय कड आउय वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइय वेदेंति, अत्थेगइय णो वेदेंति जहा दुक्खेण दो दडगा तहा आउएणवि एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेण, जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाण भते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे ? सेकेणट्ठेण भते एव वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा। णेरइया दुविहा पण्ण

नहीं अहो भगवन् ! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं ऐसे ही अनेक जीव आश्रित जानना और चौविस ही दंडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सारिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सरिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

जीव भं० भगवन् स० स्वकृत दु० दुःख वे० वेदता है गो० गौतम अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वे० वेदे से० यह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वेदे गो० गौतम उ० उदयमें आया वे० वेदे णो० नहीं अ०

कड दुक्ख वेदेइ ? गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइयं नो वेदेइ । सेकेणट्ठेण भते एव वुच्चइ अत्थेगइय वेदेइ अत्थेगइय नोवेदेति ? गोयमा ! उदिण्ण वेदेति णो अणुदिण्ण वेदेति सेतेणट्ठेण एव वुच्चइ गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय णोवेदेइ एव चउवीसदडएण जाव वेमाणिए ॥ जीवाण भते सय कड दुक्ख वेदेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया वेदेंति, अत्थेगइया णो वेदेंति । से केणट्ठेण भते एव वुच्चइ ? गोयमा ! उदिण्ण वेदेंति णो अणुदिण्ण वेदेंति ॥ एव जाव वेमाणिया

नेक स्वकृत कर्म वेदे नहीं अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक स्वकृत कर्मों वेदते हैं और कितनेक नहीं वेदते हैं अहो गौतम ! उदय में आये हुवे कर्म वेदते हैं और उदय में नहीं आये हुवे कर्म नहीं वेदते हैं और इसी कारण से ऐसा कहा है कि कितनेक जीव स्वकृत दुःख वेदे और कितनेक जीव स्वकृत दुःख नहीं वेदे ऐसे ही पृथक् २ चौवीसही दंडक आश्रित जानना उपर जैसे एक जीव आश्रित कहा है वैसेही अनेक जीव आश्रित जानना अहो भगवन् जीव स्वकृत आयुष्य वेदे ? अहो गौतम ! कितनेक वेदे और कितनेक वेदे

नहीं उदयमें आया वे० वेदे से० यह ते० इसलिये ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० ऐसा च० चौवीस दं० दंडक को जा० यावत् वे० वैमानीक ज० जैसे दु० दुःख में दो० दोभेद त० तैसे आ० आयुष्य में ए० एकवचन पो० पृथक् ए० एक वचन से जा यावत् वे० वैमानिक पु० पृथक् तक ॥ १ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् स० सर्व स० सरिखे आहारी स० सर्व स० सरिखे शरीरी स० सर्व स० सरिखे ऊश्वासनी

जीवेण भते सय कड आउय वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइय वेदेंति, अत्थेगइय णो वेदेंति जहा दुक्खेणं दो दडगा तहा आउएणवि एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेण, जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाण भते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे ? सेकेणट्ठेण भते एव वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा। णेरइया दुविहा पण्ण

नहीं अहो भगवन् ! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं ऐसे ही अनेक जीव आश्रित जानना और चौविस ही दडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार सबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सारिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सरिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

भामन्ने गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है ण० नारकी णो० नहीं स० सर्व स० समाहारी णा० नहीं स० सर्व म० समशरीरी णो० नहीं स० सर्व स० सरिखा उ० उश्वास णि० निश्वासले गो० गौतम णे० नारकी दु० दोमकार के प० मरूपे म० महा शरीरी अ० अल्प शरीरी त० तहां जे० जो म० महा शरीरी ते० वे ब० बहुत पो० पुद्गल आ० आहार

चा तजहा महासरीराय अप्पसरीराय। तत्थण जेते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले ऊससति, बहुतराए पोग्गले णीससति, अभिक्खण आहारेंति, अभिक्खण परिणामेंति, अभिक्खण ऊससति, अभिक्खण णीससति, ॥ तत्थण जेते अप्पसरीरा तेण अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति,

अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन्! किस कारन से सब नारकी सारिख आहार, शरीर, श्वासोश्वास वाले नहीं हैं? अहो गौतम! नारकी दोमकार के कहे हैं १ बडे शरीर वाले और २ छोटे शरीर वाले * जो बडे शरीर वाले हैं वे बहुत दु खी होते हुवे बहुत पुद्गलों का आहार करे, बहुत पुद्गलों परिणमावे बहुत पुद्गलों को उश्वास रूप से ग्रहण करे, बहुत पुद्गलों को निश्वासरूप से नीकाले और भी वारवार

* नारकी की भवधारनीय अवगाहना जघन्य अंगुलका असख्यात वा भाग उत्कृष्ट ५०० धनुष्य और उत्तर वैक्रेय जघन्य अगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन प्रमाण

करे ब० बहुत पो० पुद्गल प० परिणमे ब० बहुत पो० पुद्गल ऊ० ऊश्वासे ब० बहुत पो० पुद्गल का णी० निश्वास ले अ० वारंवार आ० आहारले अ० वारंवार परिणमे अ० वारंवार ऊ० ऊश्वासले अ० वारंवार णी० निश्वासले त० तहां जे० जो० अ० अल्प शरीरी ते० वे अ० थोडा पो० पुद्गल आ० आहार करे अ० थोडा पो० पुद्गल परिणमे अ० थोडे पो० पुद्गल ऊ० ऊश्वासले अ० थोडे पो० पुद्गल नी० निश्वासले ॥ २ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् स० सर्व स० समकर्म वाले गो० गौतम णो० नहीं इ०

अप्पतराए पोग्गले ऊससंति, अप्पतराए पोग्गले णीससति । आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च ऊससंति, आहच्च णीससति से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ, णेरइया णो सव्वे समाहारा, जाव णो सव्वे समुस्सास णीसासा ॥ २ ॥ णे-रइयाण भंते सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, । सेकेणट्ठेण भंते एवं

आहारकरे, वारंवार परिणमावे, वारंवार श्वासलेवे, वारंवार श्वास नीकाले, और जो छोटे शरीर वाले हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं, अल्प पुद्गलों परिणमाते हैं, अल्प पुद्गलों का श्वासलेते हैं, अल्प पुद्गलों को श्वासरूप नीकालते हैं अथवा आंतरा सहित आहार करते हैं, परिणमते हैं, श्वास लेते हैं व श्वास नीकालते हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि सब नारकी एक सरिखे शरीर, आहार व उश्वास, निश्वासवाले नहीं हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरीखे कर्म वाले हैं ? अहो

यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम णे० नारकी दु० दोमकार के पु० पहिले के उत्पन्न प० पश्चात् उ० उत्पन्न त० वहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे भ० अल्प कर्म वाले त० वहां ज० जो प० पश्चात् उ० उत्पन्न ते० वे म० महाकर्म वाले ॥ ३ ॥ णे०

वुच्चइ? गोयमा ! णेरइया दुविहा प० त० पुव्वोववण्णगाय पच्छोववण्णगाय तत्थण जे ते पुव्वोववण्णगा तेणं अप्पकम्मतरा तत्थण जे ते पच्छोववण्णगा तेण महाकम्मतरा सेतेणट्ठेण गोयमा एव वुच्चइ ॥ ३ ॥ णेरइयाण भंते सव्वे समवण्णगा ? गोय-

गौतम ? यह अर्थ योग्य नहीं हैं अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद १ पूर्वोत्पन्न-पहिले उत्पन्न हुवे २ पश्चादुत्पन्न-पीछे से उत्पन्न हुवे उस में जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे अल्पकर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयु कर्म तथा अन्य कर्म भेदे हुवे हैं व जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे बहुत कर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयुष्य कर्म बहुत थोडा छेदा हुवा है + इसलिये सब नारकी सरीखे कर्म वाले नहीं हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरीखे

+ यहां सरिखि स्थिति वाले नारकी को अंगीकार करके यह सूत्र कहा है, अन्यथा कोइ एक सागरोपम की स्थिति वाला नारकी बहुत स्थिति भोगव कर शेष एक पल्योपम रहे पीछे दूसरा दश हजार वर्ष की स्थिति वाला नारकी उत्पन्न होवे तो; क्या पहिले उत्पन्न हुवा शेष पल्योपमके आयुष्य वाला नारकी

नारकी भ० भगवन् स० सर्व स० समवर्णवाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे वि० विशुद्ध वर्णवाले त० तैसेही से० वह ते० इसलिये ॥ ४ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् स० सर्व स० सम लेश्यावाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ त० तहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे वि० विशुद्ध लश्यावाले जे० जो प० पीछे

मा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण तहचेव ? गोयमा ! जे ते पुव्वोववण्णगा तेण विसुद्ध वण्णतरागा तहेव । सेतेणट्ठेण गोयमा ॥४॥ णेरइयाण भंते सव्वे समलेस्सा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण जाव णो सव्वे समलेस्सा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पुव्वोववण्णगाय, पच्छोववण्णगाय तत्थण जे ते पुव्वोव

वर्ण वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं क्या कारण से ? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद पहिले उत्पन्न हुवे और पीछे उत्पन्न, जो पहिले उत्पन्न हुवे वे ,विशुद्ध वर्णवाले होते हैं, और पीछे जो उत्पन्न हुवे हैं वे विशुद्ध वर्ण वाले नहीं हैं, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सम वर्ण वाले नहीं हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सरिखि लेश्या वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्या कारण से ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद? पहिले उत्पन्न हुवे व २ पीछे उत्पन्न हुवे जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे विशुद्ध

की आपेक्षा से दश हजार वर्ष की स्थिति वाला महाकर्मीहोसके । अर्थात् नहीं होवे

यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम णे० नारकी दु० दोप्रकार के पु० पहिले के उत्पन्न प० पश्चात् उ० उत्पन्न त० तहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे भ० अल्प कर्म वाल त० तहां ज० जो प० पश्चात् उ० उत्पन्न ते० वे म० महाकर्म वाले ॥ ३ ॥ णे०

वुच्चइ? गोयमा ! णेरइया दुविहा प० त० पुव्वोववण्णगाय पच्छोववण्णगाय तत्थण जे ते पुव्वोववण्णगा तेण अप्पकम्मतरा तत्थण जे ते पच्छोववण्णगा तेण महाकम्मतरा सेतेणट्ठेण गोयमा एव वुच्चइ ॥ ३ ॥ णेरइयाण भंते सव्वे समवण्णगा ? गोय-

गौतम ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद १ पूर्वोत्पन्न-पहिले उत्पन्न हुवे २ पश्चादुत्पन्न-पीछे से उत्पन्न हुवे उस में जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे अल्पकर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयु कर्म तथा अन्य कर्म भेदे हुवे हैं व जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे बहुत कर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयुष्य कर्म बहुत थोडा छेदा हुवा है + इसलिये सब नारकी सरीखे कर्म वाले नहीं हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरीखे

+ यहां सरिखि स्थिति वाले नारकी को अंगीकार करके यह सूत्र कहा है; अन्यथा कोइ एक सागरोपम की स्थिति वाला नारकी बहुत स्थिति भोगव कर शेष एक पल्योपम रहे पीछे दूसरा दश हजार वर्ष की स्थिति वाला नारकी उत्पन्न होवे तो; क्या पहिले उत्पन्न हुवा शेष पल्योपमके आयुष्य वाला नारकी

जे० जो स० संज्ञी ते० वे म० बहुत वेदना वाले जे० जो अ० असंज्ञी अ० थोडीवेदनावाले ॥८॥ णे० नारकी भ० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी ति० तीन प्रकार के स० सम्यक् दृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० सममिथ्यादृष्टि जे० जो म० समदृष्टि ते० उन को च० चारक्रिया प० प्ररूपी आ०

ते असण्णिभूया तेण अप्पवेयणतरागा से तेणट्ठेण गोयमा ॥ ९ ॥ णेरइयाण भंते सव्वे समाकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण भंते ? गोयमा ! णेरइया तिविहा प० त० सम्मदिट्ठीय, मिच्छादिट्ठीय, सम्मामिच्छादिट्ठीय । तत्थण जेते सम्मदिट्ठी तेसिण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ त० आरंभिया, परिग्गहिया,

ऐसा भी अर्थ करते हैं कि संज्ञी पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होवे सो संज्ञीभूत वे बहुत वेदनावाले होवे क्यों कि अशुभ अध्यवसाय से बहुत अशुभ कर्म का बंध कीया और इस से नरक में उत्पन्न हुवे और असंज्ञी पंचेन्द्रिय प्रथम नरक में असंज्ञीपने उत्पन्न होवे वे अल्प वेदनावाले होवे क्यों कि उनको अति तीव्र अशुभ अध्यवसाय नहीं होते हैं अथवा संज्ञीभूत सो पर्याप्ता बहुत वेदनावाले और असंज्ञीभूत सो अपर्याप्ता अल्पवेदना वाले, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी वेदनावाले नहीं हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सम क्रियावाले हैं ? अहो गौतम यह अर्थ योग्य नहीं हैं क्यों कि नारकी के तीन भेद कहे हैं १ समदृष्टी, २ मिथ्यादृष्टी ३ सममिथ्यादृष्टि उस में जो समदृष्टी हैं उन को चार

उत्पन्न हुवे ते० वे अ० अविशुद्ध लेश्यावाले ॥ ५ ॥ ण० नारकी भं० भगवन् स० सर्व म० समवेदनावाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी दु० दोप्रकार के स० संज्ञी अ० असंज्ञी

वण्णगा तेण विसुद्धलेसतरागा । तत्थण जे ते पच्छोववण्णगा तेणं अविसुद्ध लेसतरागा । सेतेणट्ठेण गोयमा ! ॥ ५ ॥ णेरइयाण भंते सव्वे समवेदणा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण भंते ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्णिभूयाय, असण्णिभूयाय । तत्थण जेते सण्णिभूया तणमहावेदणा, तत्थण जे

लेश्या वाले होते हैं; क्यों की उन को अल्प कर्म रहते हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अशुद्ध लेश्या वाले हैं क्यों कि उन को बहुत कर्म रहते हैं इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी लेश्या वाले नहीं हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी को सरिखी वेदना है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है किस कारण से ? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद १ संज्ञीभूत सो समदृष्टि व असंज्ञीभूत सो मिथ्यादृष्टि उस में जो संज्ञी भूत समदृष्टि हैं वे बहुत वेदना वाले हैं क्यों कि सम्यग् ज्ञान से पूर्वकृत कर्म विपाक की स्मृति होनेसे अती दुःख होवे और पश्चाताप करे कि मैंने अरिहंत प्ररूपित धर्म पाला नहीं इस कारण से उन को मानसिक दुःख बहुत होवे और जो असंज्ञीभूत मिथ्यादृष्टि हैं वे अल्पवेदना वाले हैं क्यों कि वे अपने कृतकर्म को नहीं जानते हैं इस से उन को मानसिक दुःख अल्प रहता है कितनेक

अे॰ जो स॰ सन्नी ते॰ वे म॰ बहुत वेदना वाले जे॰ जो अ॰ असन्नी अ॰ थोडीवेदनावाले ॥६॥ णे॰ नारकी भ॰ भगवन् स॰ सर्व स॰ समक्रियावाले गो॰ गौतम नो॰ नहीं इ॰ यह अर्थ स॰ समर्थ णे॰ नारकी ति॰ तीन प्रकार के स॰ सम्यक् दृष्टि मि॰ मिथ्यादृष्टि स॰ समामिथ्यादृष्टि जे॰ जो स॰ समदृष्टि ते॰ उन को च॰ चारक्रिया प॰ प्ररूपी आ॰

ते असण्णिभूया तेण अप्पवेयणतरागा से तेणट्ठेण गोयमा ॥ ६ ॥ णेरइयाण भते सव्वे समाकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण भते ? गोयमा ! णेरइया तिविहा प॰ त॰ सम्मदिट्ठीय, मिच्छादिट्ठीय, सम्मामिच्छादिट्ठीय । तत्थण जेते सम्मदिट्ठी तेसिणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ त॰ आरंभिया, परिग्गहिया,

ऐसा भी अर्थ करते हैं कि सन्नी पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होवे सो सन्नीभूत वे बहुत वेदनावाले होवे क्यों कि अशुभ अध्यवसाय से बहुत अशुभ कर्म का बंध कीया और इस से नरक में उत्पन्न हुवे और असंज्ञी पंचेन्द्रिय प्रथम नरक में असन्नीपने उत्पन्न होवे वे अल्प वेदनावाले होवे क्यों कि उनको अति तीव्र अशुभ अध्यवसाय नहीं होते हैं अथवा सन्नीभूत सो पर्याप्ता बहुत वेदनावाले और असन्नीभूत सो अपर्याप्ता अल्पवेदना वाले, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी वेदनावाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सम क्रियावाले हैं ? अहो गौतम यह अर्थ योग्य नहीं हैं क्यों कि नारकी के तीन भेद कहे हैं १ समदृष्टी, २ मिथ्यादृष्टी ३ समामिथ्यादृष्टि उस में जो समदृष्टी हैं उन को चार

आरंभकी प० प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए० ऐसे स० सममिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थण जे ते मिच्छदिट्ठी तेसिण पचकिरिया ओ कज्जति त० आरंभिया जाव मिच्छादसणवत्तिया । एवसम्मामिच्छदिट्ठीणपि सेतेणट्ठेण गोयमा ॥७॥ णेरइयाण भंते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा ? गोयमा!

क्रिया लगती है १ पृथिव्यादिक का आरंभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्रहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति के अभाव से जो क्रिया लगेसो अप्रत्याख्यान मिथ्यादृष्टी नारकी को पांच क्रिया लगे उक्त चार क्रियाओं में मिथ्यादर्शन प्रत्यायिक क्रिया बढी और ऐसे ही सममिथ्यादृष्टी को जानना इस कारण से अहो गौतम! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले हैं? और सब सरीखे एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं हैं अहो भगवन्! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं है? अहो गौतम! नारकी के चार भेद कहे हैं १ कितनेक सम आयुष्य वाले हैं और एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं २ कितनेक सम आयुष्यवाले हैं विषम उत्पन्न होते हैं अर्थात्

इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी च० चार प्रकार के अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले वि० विपमो उत्पन्न अ० कितनेक वि० विपम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक वि० विपम आयुष्यवाले वि० विपमत्पन्न ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् स० सर्व स० सम आहारी स० सर्व स० सम शरीरी ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कह-

णोइणट्ठे समट्ठे। सेकेणट्ठेण भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा प०त० अत्थेगइया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा, सेतेणट्ठेण गोयमा ॥८॥ असुरकुमाराणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा ? जहा णेरइया

एक साथ नहीं उत्पन्न होते हैं ३ कितनेक विपम आयुष्यवाले हैं और एक साथ उत्पन्न होने वाले हैं ४ कितनेक विपम आयुष्य वाले हैं और विपम उत्पन्न होने वाले हैं, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी एक सरिखे आयुष्य व एक साथ उत्पन्न होने वाले नहीं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के सब देवता क्या सरिखे आहार वाले व सरिखे शरीर वाले हैं ? अहो गौतम जैसे नारकी का कहा वैसेही यहां कहना विशेष इतनाही कि असुरकुमारका भवधारणीय शरीरकी अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वे भाग उत्कृष्ट सात हाथकी और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट एकलक्ष योजनकी जो महाशरीर वाले होते

आरंभिकी प० प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए० ऐसे स० सममिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थण जे ते मिच्छदिट्ठी तेसिण पचकिरिया ओ कज्जति त० आरभिया जाव मिच्छादसणवत्तिया । एवसम्मामिच्छदिट्ठीणपि सेतेणट्ठेण गोयमा ॥७॥ णेरइयाण भते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा ? गोयमा!

क्रिया लगती हैं १ पृथिव्यादिक का आरभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्रहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति क अभाव से जो क्रिया लगेसो अप्रत्याख्यान मिथ्यादृष्टी नारकी को पांच क्रिया लगे उक्त चार क्रियायों में मिथ्यादर्शन प्रत्यायिक क्रिया बढी और एसे ही समपिथ्यादृष्टी को जानना इस कारण से अहो गौतम! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले हैं? और सब सरीखे-एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं हैं अहो भगवन्! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं है? अहो गौतम! नारकी के चार भेद कहे हैं १ कितनेक सम आयुष्य वाले हैं और एक साथ उत्पन्न होनवाले हैं २ कितनेक सम आयुष्यवाले हैं विषम उत्पन्न होते हैं अर्थात्

इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी च० चार प्रकार के अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले वि० विषमो उत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले वि० विषमोत्पन्न ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् स० सर्व स० सम आहारी स० सर्व स० सम शरीरी ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कहि-

णोइणट्ठे समट्ठे सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा प०तं० अत्थेगइया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥८॥ असुरकुमाराणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा ? जहा णेरइया

एक साथ नहीं उत्पन्न होते हैं ३ कितनेक विषम आयुष्यवाले हैं और एक साथ उत्पन्न होने वाले हैं ४ कितनेक विषम आयुष्य वाले हैं और विषम उत्पन्न होने वाले हैं, इसलिये अहो गौतम ' सब नारकी एक सरिखे आयुष्य व एक साथ उत्पन्न होने वाले नहीं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के सब देवता क्या सरिखे आहार वाले व सरिखे शरीर वाले हैं ? अहो गौतम जैसे नारकी का कहा वैसेही यहां कहना विशेष इतनाही कि असुरकुमारको भवधारणीय शरीरकी अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वे भाग उत्कृष्ट सात हाथकी और उत्तर वैक्रिय जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट एकलक्ष योजनकी जो महाशरीर वाले होते

ना प० विशेष क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या प० कहना पु० पूर्वोत्पन्न म० बहुत कर्मवाले अ० अविशुद्धवर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प० पीछे उत्पन्न हुवे प० प्रशस्त से० शेष त० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार

तहा भाणियव्वा, णवरं कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था सेसतचेव एव जाव थणियकुमाराण ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाण आहारकम्म वण्ण लेस्सा

हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओ अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का सचय करते हैं इस से कितनेक तिर्यंच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमारों का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना ॥ ९ ॥ पृथ्वी

॥ ० ॥ पु० पृथ्वी काया को आ० आहार क० कर्म व० वर्ण लेश्या ज० जैसे णे० नारकी पु० पृथ्वीकाया भ० भगवन् स० सर्व स० समवेदना वाले हं० हां स० समवेदना वाले से० वह के० कैसे गो० गौतम पु० पृथ्वीकाया स० सर्व अ० असन्नी अ० निर्धारविना वे० वेदते हैं पे० वह ते० इसलिये पु० पृथ्वीकाया सं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले हं० हां स० समक्रिया वाले से० वह के० कैसे पु० पृथ्वी काया गो० गौतम स० सर्व मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि ण० निरंतर प० पांचक्रिया क० करते हैं आ० आरंभिकी

जहा णेरइयाण, पुढविकाइयाण भंते सव्वे समवेदणा ? हंता समवेदणा से केणट्ठेण भंते सव्वे समवेयणा ? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णिभूया, अणिदाए वेदण वेदेंति सेतेणट्ठेण । पुढविकाइयाण भंते सव्वे समकिरिया ? हंता समकिरिया । सेकेण-ट्ठेण भंते पुढविकाइया ? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे माईमिच्छादिट्ठी ताणणेय-

काया को आहार, कर्म, वर्ण, व लेश्या नारकी जैसे कहना अहो भगवन् ! क्या सब पृथ्वीकायिक जीव समवेदना वाले हैं ? गौतम सब पृथ्वी कायिक जीव समवेदनावाले हैं अहो भगवन् ! किस तरह से वे सब समवेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक असज्ञी भूत होने से निर्धार विना वेदना वेदते हैं परन्तु वे कर्म पहिले के उपार्जित हैं वैसा जाने नहीं इसलिये अहो गौतम ! सब पृथ्वी कायिकजीव समवेदना वेदते हैं अहो भगवन् ! सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखी क्रिया वाले हैं ! हां गौतम वे सब सरिखी

ना ण० विशेष क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या प० कहना पु० पूर्वोत्पन्न म० बहुत कर्मवाले अ० अविशुद्धवर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प० पीछे उत्पन्न हुवे प० प्रशस्त से० शेष तं० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार

तहा भाणियव्वा, णवर कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था सेसतचेव एवं जाव थणियकुमाराण ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाण आहारकम्म वण्ण लेस्सा

हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओ अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का सञ्चय करते हैं इस से कितनेक तिर्यंच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना ॥ ९ ॥ पृथ्वी

॥ ९ ॥ पु० पृथ्वी काया को आ० आहार क० कर्म व० वर्ण लेश्या ज० जैसे णे० नारकी पु०पृथ्वीकाया भ० भगवन् स० सर्व स० समवेदना वाले ह० हा स० समवेदना वाले से० वह के० कैसे गो० गौतम पु० पृथ्वीकाया स० सर्व अ० असज्ञि अ० निर्द्धाराविना वे० वेदते हैं वे० वह ते० इसलिये पु०पृथ्वीकाया भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले ह० हां स० समक्रिया वाले से० वह के० कैसे पु० पृथ्वी काया गो० गौतम स० सर्व मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि णे० निरंतर प० पांचक्रिया क० करते हैं आ० आरंभिकी

जहा णेरइयाण, पुढविकाइयाण भंते सव्वे समवेदणा? हंता समवेदणा से केणट्ठेण भंते सव्वे समवेयणा? गोयमा! पुढविकाइया सव्वे असण्णिभूया, अणिदाए वेदण वेदेंति सेतेणट्ठेण। पुढविकाइयाण भंते सव्वे समकिरिया? हंता समकिरिया। सेकेण-ट्ठेण भंते पुढविकाइया? गोयमा! पुढविकाइया सव्वे माईमिच्छादिट्ठी ताणणेय-

काया को आहार, कर्म, वर्ण, व लेश्या नारकी जैसे कहना अहो भगवन्! क्या सब पृथ्वीकायिक जीव समवेदना वाले हैं? गौतम सब पृथ्वी कायिक जीव समवेदनावाले हैं अहो भगवन्! किस तरहसे वे सब समवेदना वेदते हैं? अहो गौतम! सब पृथ्वीकायिक असज्ञी भूत होने से निर्धार विना वेदना वेदते हैं परंतु ये कर्म पहिले के उपार्जित हैं वैसा जाने नहीं इसलिये अहो गौतम! सब पृथ्वी कायिकजीव समवेदना वेदते हैं अहो भगवन्! सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखी क्रिया वाले हैं! हां गौतम वे सब सरिखी

ना ण० विशेष क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या प० कहना पु० पूर्वोत्पन्न म० बहुत कर्मवाले अ० अविशुद्धवर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प० पीछे उत्पन्न हुवे प० प्रशस्त से० शेष त० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार

तहा भाणियव्वा, णवर कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था सेसतचेव एव जाव थणियकुमाराण ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाण आहारकम्म वण्ण लेस्सा

हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओ अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का सचय करते हैं इस से कितनेक तिर्यच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना ॥ ९ ॥ पृथ्वी

मिथ्यादृष्टि स० समभिथ्यादृष्टि त० तहां जे० जो स० समदृष्टि ते० वे दु० दोमकार के अ० असयति स० सयतासयति त० तहां जे० जो स० सयतासयति ते० उनको ति० तीन कि० क्रिया तं० वह ज०जैसे आ० आरंभिकी प०पारिग्राहिकी मा० मायामत्ययिकी अ० असयति को च० चार मि०

रिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण भते ? गोयमा ! पांचेंदिय तिरिक्ख जोणिया, तिविहा प० त० सम्मादिट्ठी, मिच्छदिट्ठी ! सम्मामिच्छदिट्ठी, तत्थण जे ते सम्मादिट्ठी ते दुविहा प०त० असजयाय, सजयासजयाय, तत्थण जे ते सजयासजया तेसिण तिण्णि किरियाओ कज्जति, तजहा-आरभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया असज-

छोटा शरीरको अपनी २ अवगाहना जैसे कहना विकलेन्द्रियादिक को मक्षेप आहार होता है ॥ ११ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय नारकी जैसे कहना परतु क्रिया में जो भेद हैं सो बताते हैं अहो भगवन् क्या सब तिर्यच पचन्द्रिय सरिखि क्रिया वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं किस कारन से ? तिर्यच पंचेन्द्रिय के तीन भेद, सम्यक दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, व समामिथ्यादृष्टि, उस में जो समदृष्टि हैं उनके दो भेद असंयति व सयतासयति उस में जो सयतासयति हैं उनको तीन क्रिया लगती हैं १ आरंभिकी, २ पारिग्रहिकी व ३ मायामत्ययिकी, असंयतिको चार, समभिथ्यादृष्टि व मिथ्यादृष्टी को पांच २ क्रियाओं कही

जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी से० वह ते० इसलिये पु० पृथ्वी काया स० समायुष्य वाले स० समवर्ण वाले ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कहना ॥ १० ॥ ज० जैसे पु० पृथ्वी काया त० तैसे जा० यावत् च० चतुरेन्द्रिय ॥ ११ ॥ पं० पचेन्द्रिय तिर्यंच ज० जैसे णे० नारकी णा० नानाप्रकार कि० क्रियामें पं० पचेन्द्रिय तिर्यंच भ० भगवन् स० सर्व स० समक्रिया वाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम प० पंचेन्द्रिय तिर्यंच ति० तीन प्रकार के स० समदृष्टि मि०

तियाणं पचकिरियाओ कज्जति, तजहा - आरभिया जाव मिच्छादसणवत्तिया सेते-णट्ठेण पुढविकाइया समाउया समोववण्णगा? जहा णेरइया तहा भाणियव्वा ॥१०॥ जहा पुढविकाइया तहा जाव चउरिंदिया ॥ ११ ॥ पचिंदिय तिरिक्खजोणिया जहा णेरइया, णाणत्त किरियासु ॥ पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण भते सव्वे समाकि-

क्रिया वाले हैं ? अहो भगवन् ! वह कैसे ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक जीव मायावी व मिथ्या दृष्टी हैं, उनको अवश्यही आरंभिकी यावत् मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी पांच क्रियायों लगती हैं इसी से पृथ्वी कायिक जीव समक्रिया वाले हैं सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखे आयुष्य वाले व साथ उत्पन्न होने वाले हैं? इसका सब अधिकार नारकी जैसे कहना॥१०॥ जैसे पृथ्वी कायाका अधिकार कहा वैसेही अपकाय तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना यहांपर बडा शरीर व

वे० वेदना म० मनुष्य भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रिया वाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम म० मनुष्य ति० तीन प्रकार के स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० सममिथ्यादृष्टि त० तहां जे० जो स० समदृष्टि ते० व ति० तीन प्रकार के स० संयति अ० असयति म० संयतासंयति जे० जो सं० संयति ते० वे दु० दो प्रकार के स० सराग संयति वी० वीतराग संयति त० वहां जे० जो वी० वीतराग संयति ते० वे अ० अक्रिया वाले स० सराग संयति दु० दो

समकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण भते ? गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता त० सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, तत्थण जे ते सम्मादिट्ठी ते तिविहा प० त० सजयाय असजयाय सजया सजयाय । तत्थणजेते सजया ते दुविहा प० त० सराग सजयाय वीयराग सजयाय, तत्थण जे ते वीयराग सजया तेण अकिरिया । तत्थण जे ते सराग सजया ते दुविहा प० त० पमत्त सजयाय,

मनुष्य के तीन भेद कहे हैं सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि सममिथ्यादृष्टि; उस में जो सम्यग्दृष्टि हैं उनके तीन भेद कहे हैं संयति, असंयति व संयतासंयति; उसमें संयति के दो भेद सरागसंयति व वीतराग संयति उसमें जो वीतराग संयति हैं वे अक्रिय हैं अर्थात् उन को किसी भी सांपरायिक क्रिया नहीं लगती है जो सरागसंयति हैं उनके दो भेद प्रमत्त संयति व अप्रमत्त संयति अप्रमत्त संयति सातवे गुण स्थानवर्ती हैं उनको एक मायाप्रत्ययिकी क्रिया लगती है और छठे गुणस्थानवर्ती प्रमत्त संयतिको आरंभिकी व

मिथ्यादृष्टिको पं०पांच स०सममिथ्यादृष्टि को प०पांच॥१२॥ म०मनुष्य ज०जैसे णे०नारकी णा० नानाप्रकार म०महाशरीरी आ० कदाचित् [आ०आहार करते हैं जे० जो अ० अल्प शरीरी ते० वे अ० थोडे पो० पुद्गल आ० आहार करते हैं अ० वारंवार आ० आहार करते हैं से० शेष ज० जैसे णे० नारकी जा० यावत्

याण चचारि,मिच्छदिट्ठीण पच सम्ममिच्छादिट्ठीण पच॥१२॥मणुस्सा जहा णेरइया,णाणत्त जे महासरीरा ते आहच्च आहारेंति ४ । जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति ४ । आभिक्खण आहारेंति सेस जहा णेरइयाण जाव वेदणा मणुस्साण भते सव्वे

॥१२॥ मनुष्य का अधिकार नारकी जैसे कहना विशेष इतना कि क्या सब मनुष्य सरिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य के दो भेद; बडे शरीरवाले व छोटे शरीरवाले उस में जो बडे शरीर वाले हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, बहुत पुद्गल परिणमते हैं, वैसे ही श्वासोश्वास लेते हैं यहां नरकमें वारवार आहार करने का कहा है, परतु देवकुरु उत्तरकुरु के युगलिये तीन दिन में आहार लेते हैं छोटे शरीर वाले अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं, उस के दो भेद समूर्च्छिम व बालक ये दोनों वारवार आहार करते हैं बाकी का सब अधिकार नारकी जैसे कहना अहो भगवन् ! सब मनुष्य सरिखि क्रिया वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं अहो भगवन् ! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम !

मिथ्या दृष्टि उ० उत्पन्न हुवे अ० अल्प वेदना वाले अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे म० बहुत वेदना भा० कहना जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक को ॥ १४ ॥ स० सलेशी णे० नारकी स० सर्व स० समाहारी औ० औघिक स० सलेशी सु० शुक्लेशी ए० इन ति० तीन में ए० एक सरिखे क० कृष्णलेशी नी० नीललेशी ए० एक सरिखे ण० विशेष वे० वेदना में मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न

सुरकुमारा णवरं वेदणाए णाणत्त । मायी मिच्छदिट्ठी उववण्णगाय अप्पवेयणतरा, अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णगाय महावेयणतरा भाणियव्वा ॥ जोइस वेमाणियाय ॥ १४ ॥ सलेस्साण भते णेरइया सव्वे समाहारगा ओहियाण, सलेस्साणं

प्रकारकी है सो बताते हैं ज्योतिषी वैमानिक में मायी मिथ्यादृष्टि पने उत्पन्न हुवे सो अल्पवेदनावाले हैं क्यों की उन को साता वेदनीय कर्म अल्प रहता है और अमायी सम्यक्दृष्टि बहुत वेदनावाले हैं क्यों की उनको साता वेदनीय कर्म विशेष रहता है इतना ज्योतिषी व वैमानिक में असुरकुमार से विशेष है शेष सब असुरकुमार जैसे कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! लश्या सहित नारकी क्या सरिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव, सलेशी व शुक्लेशी इन तीन का एक गमा मानना कृष्ण व नील लेशीका एक गमा जानना, वेदना में इतना विशेषपना कि मायावी, मिथ्यादृष्टी को बहुत वेदना और अमायी सम्यग्दृष्टी को अल्पवेदना मनुष्यपद में, क्रिया सूत्र में व औधिक (समुच्चय) दंडक में सराग, वीतराग,

प्रकार के प०प्रमत्त अ० अप्रमत्त जे०-जो अ० अप्रमत्त सयति ते० उनको ए० एक मा० मायाप्रत्ययिकी क्रिया जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० उनको दो० दोक्रिया आ० आरंभिकी मा० मायाप्रत्ययिकी जे० जो सं० संयतासंयति ते० उनको आ० पहिली ति० तीन क्रि० क्रिया अ० असंयति को च० चारक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को प० पांचक्रिया स० समामिथ्यादृष्टि को प० पांचक्रिया ॥ १३ ॥ वा० वाणव्यंतर जो०ज्योतिषी वे०वैमानिक ज० जैसे अ०असुरकुमार न०विशेष वे०वेदना में णा०नानाप्रकार मा०मायी मि०

अपमत्त संजयाय, ॥ तत्थणं जे ते अपमत्तसजया तेसिण एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ । तत्थण जे ते पमत्तसजया तेसिण दो किरिया कज्जइ तं० आरंभियाय मायावत्तियाय तत्थणं जे ते संजयासजया तेसिण आदिमाओ तिण्णि किरियाओ कज्जंति । असंजयाणंचचारि किरियाओ कज्जंति मिच्छदिट्ठीण पंच सम्मामिच्छदिट्ठीणं पंच ॥ १३ ॥ वाणमतरजोइसवेमाणिया जहा अ-

मायाप्रत्ययिकी ऐसी दो क्रियाओं लगती हैं जो सयतासयति-श्रावक हैं उन को आरंभिकी माया प्रत्ययिकी व परिग्रहिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं असंयति को चार क्रियाओं लगती हैं उपर्युक्त तीन और चौथी अप्रत्याख्यान मिथ्यादृष्टि व समामिथ्यादृष्टि को पांच क्रियाओं उपर्युक्त क्रियाओंमें मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी क्रिया पांचवी कही ॥ १३ ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक को असुरकुमार जैसे कहना शरीर का अल्पपना व बहुतपना अपने २ शरीर की अवगाहना के अनुसार जानना वेदना विविध

मिथ्या दृष्टि उ० उत्पन्न हुवे अ० अल्प वेदना वाले अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे म०
बहुत वेदना भा० कहना जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक को ॥ १४ ॥ स० सलेशी ने० नारकी स० सर्व
स० समाहारी ओ० औधिक स० सलेशी सु० शुक्लेशी ए० इन ति० तीन में ए० एक सरिखे क० कृ-
ष्णलेशी नी० नीललेशी ए० एक सरिखे ण० विशेष वे० वेदना में मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न

सुरकुमारा णवरं वेदणाए णाणत्त । मायी मिच्छदिट्ठी उववण्णगाय अप्पवेयणतरा, अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णगाय महावेयणतरा भाणियव्वा ॥ जोइस वेमाणियाय ॥ १४ ॥ सलेस्साण भंते णेरइया सव्वे समाहारगा ओहियाण, सलेस्साणं

प्रकारकी है सो बताते हैं ज्योतिषी वैमानिक में मायी मिथ्यादृष्टि पने उत्पन्न हुवे सो अल्पवेदनावाले हैं क्यों की उन को साता वेदनीय कर्म अल्प रहता है और अमायी सम्यक्दृष्टि बहुत वेदनावाले हैं क्यों की उनको साता वेदनीय कर्म विशेष रहता है इतना ज्योतिषी व वैमानिक में असुरकुमार से विशेष है शेष सब असुरकुमार जैसे कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! लेश्या सहित नारकी क्या सरिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव, सलेशी व शुक्ललेशी इन तीन का एक गमा जानना कृष्ण व नील लेशीका एक गमा जानना, वेदना में इतना विशेषपना कि मायावी, मिथ्यादृष्टी को बहुत वेदना और अमायी सम्यग्दृष्टी को अल्पवेदना मनुष्यपद में, क्रिया सूत्र में व औधिक (समुच्चय) दण्डक में सराग, वीतराग,

हुवे अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे भा० कहना म० मनुष्य कि० क्रिया में स० सरागी वी० वीतरागी अ० अप्रमत्त प० प्रमत्त भा० कहना का० कापुतलेशी ए० ऐसे ण० विशेष णे० नारकी ज० जैसे ओ० औधिक दं० दंडक त० तैसे भा० कहना ते० तेजु लेशी प० पद्मलेशी ज० जिनको अ० है ज० जैसे ओ० औधिक त० तैसे भा० कहना ण० विशेष म० मनुष्य स० सरागी वी० वीतरागी भा० कहना दु० दुःख आ० आयुष्य उ० उदीरणा आ० आहार क० कर्म व० वर्ण ल० लेश्या स०

सुक्कलेस्साण एएसिण तिण्ह एक्कोगमो कण्हलेसणीललेस्साणपि एगोगमो ॥ णवर वेदणाए मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णगाय, अमायीसम्मदिट्ठी उववण्णगाय भाणियव्वा मणुस्सा किरियासु सराग वीतराग अपमत्ता पमत्ताण भाणियव्वा ॥ काउलेस्साणवि एवमेवगमो णवर णेरइए जहा ओहिए दडए तहा भाणियव्वा तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा जस्स अत्थि जहा ओहिओ तहा भाणियव्वा णवर मणुस्सा सराग वीतरागा ण भा-

अपमत्त व प्रमत्त कहा है, परंतु कृष्ण नीललेश्यावाले मनुष्य में यह कहना नहीं, क्योंकि दोनों लेश्यावाले को संयम का अभाव होता है कापुत लेश्या में वैसा जानना परतु नारकी को औधिक दंडक जैसे कहना तेजो लेश्या व पद्मलेश्या जिन को हैं, उन का औधिक दंडक जैसे कहना मनुष्य सराग वीतराग कहे हुवे हैं ये यहांपर कहना नहीं, क्यों की तीनों लेश्यावालों को वीतरागपने का अभाव होता है अब उद्देश के प्रारंभ से जो अधिकार आयासो गाथासे बताते हैं एक वचन व बहुवचन आश्रित क्या दुःख व आयुष्य

समवेदना स० समक्रिया स० समायुष्य बो० जानना ॥ १८ ॥ क० कितनी भ० भगवन् ल० लेश्या प० प्ररूपी गो० गोतम छ० छलेश्या प० प्ररूपी ल० लेश्या का बी० दूसरा उ० उद्देशा भा० कहना जा०

णियव्वा गाथा ॥ दुक्खाउएउदिण्णे आहारे कम्म वण्ण लेस्साय सम-
वेयण समकिरिया समाउया चेव बोधव्वा ॥ १ ॥ १६ ॥ कइण भंते
लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा लेस्साण बीओउ-

उदय में आया हुवा वेदे ? क्या सरिखे आहार, कर्म वर्ण, लेश्या, वेदना, क्रिया व आयुष्यवाले हैं ? वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे कहना ॥१८॥ नारकी सलेशी हैं ऐसा पहिले कहा इसलिये आगे लेश्याका स्वरूप कहते हैं अहो भगवन् ! लेश्या के कितने भेद ? अहो गौतम ! लेश्या के छ भेद कहे हैं इन छही लेश्या का वर्णन पन्नवणा सूत्र में लेश्यापद का दूसरा उद्देशा में जैसा कहा है वैसा जानना- अहो भगवन् ! इन लेश्यामेंसे कोनसी लश्यावाला विशेष ऋद्धि का धारक व कौनसी लेश्यावाला अल्पऋद्धिका धारक होता है ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या से नील लेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, नील लेश्या से कापोत लेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, कापोत से तेजो लेश्यावाला अधिक ऋद्धि का धारक होता है, तेजोसे पद्मलेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, और पद्म से शुक्ल लेश्यावाला

हुवे अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे भा० कहना म० मनुष्य कि० क्रिया में स० सरागी वी० वीतरागी अ० अप्रमत्त प० प्रमत्त भा० कहना का० कापुतलेशी ए० ऐसे ण० विशेष, णे० नारकी ज० जैसे ओ० औधिक दं० दण्डक त० तैसे भा० कहना ते० तेजु लेशी प० पद्मलेशी ज० जिनको अ० है ज० जैसे ओ० औधिक त० तैसे भा० कहना ण० विशेष म० मनुष्य स० सरागी वी० वीतरागी भा० कहना दु० दुःख आ० आयुष्य उ० उदीरणा आ० आहार क० कर्म व० वर्ण ल० लेश्या स०

सुक्कलेस्साण एएसिण तिण्ह एक्कोगमो कण्हलेसणीललेस्साणपि एगोगमो ॥ णवर वेदणाए मायीमिच्छद्दिट्ठीउववण्णगाय, अमायीसम्मद्दिट्ठी उववण्णगाय भाणियव्वा मणुस्सा किरियासु सराग वीतराग अपमत्ता पमत्ताण भाणियव्वा ॥ काउलेस्साणवि एवमेवगमो णवर णेरइए जहा ओहिए दडए तहा भाणियव्वा तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा जस्स अत्थि जहा ओहिओ तहा भाणियव्वा णवर मणुस्सा सराग वीतरागा ण भा-

अप्रमत्त व प्रमत्त कहा है, परंतु कृष्ण नीललेश्यावाले मनुष्य में यह कहना नहीं, क्योंकि दोनों लेश्यावाले को संयम का अभाव होता है कापुत लेश्या में वैसा जानना परंतु नारकी को औधिक दंडक जैसे कहना तेजो लेश्या व पद्मलेश्या जिन को हैं, उन को औधिक दंडक जैसे कहना मनुष्य सराग वीतराग कहे हुवे हैं वे यहांपर कहना नहीं, क्यों की तीनों लेश्यावालों को वीतरागपने का अभाव होता है अब उद्देश के प्रारंभ से जो अधिकार आयासो गाथासे बताते हैं एक वचन व बहुवचन आश्रित क्या दु ख व आयुष्य

ति० तीन प्रकार का सु० शून्य काल अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल ति० तिर्यंच का स० ससार स० सचिठण काल पु० पृच्छा गो० गौतम दु० दोप्रकार का अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल म० मनुष्य

ससार सचिट्ठण काले, देव समार सचिट्ठण काल॥ णेरइय ससार सचिट्ठण कालेण भते कइविहे प०? गोयमा! तिविहे प०त० सुण्णकाले, असुण्णकाले, मिस्सकाले। तिरिक्ख

संचिठन काल ३ मनुष्य के भव में रहे सो मनुष्य ससार संचिठन काल ४ देवता के भव में रहे सो देव ससार सचिठन काल अहो भगवन् ! नारकी ससार सचिठन काल के कितने भेद ? अहो गौतम ! नारक समार संचिठन काल के तीन भेद कहे हैं १ शून्यकाल २ अशून्यकाल और ३ मिश्रकाल * अहो भगवन् ! तिर्यंच ससार सचिठन कालके कितने भेद ? अहो गौतम ! दो भेद अशून्यकाल

---

* वर्तमान कालमें सातों नरकमें जो नारकी विद्यमानहैं उनमेंसे कोई उद्वर्तेनहीं, और उसमें कोई नविन उत्पन्न होवे नहीं, जितने हैं उतने ही रहे सो नरक गति आश्रित अशून्यकाल जैसे कहा है आइह समइयाण नेरइयाणं न जाव एक्को वि उवट्टइ अण्णोवा उववज्जइ सो असुण्णोउ ॥१॥ उन सातों नरक के नारकी में से जो उद्वर्त वाले होवे उस में एक शेष रहे सो मिश्रकाल और सब उद्वर्ते सो शून्यकाल जैसे उव्वट्टे एक्कंमिवि तामीसो धरइ जाव एक्कोवि णिल्लेवएहिं सव्वेहिं वट्टमाणेहिं सुण्णोउ ॥ १ ॥ यहांपर मिश्र नारक ससारा वस्थान काल सूत्र वर्तमान भव आश्रित नहीं ग्रहण किया है परन्तु वर्तमान काल के नारकी अन्य गति में

यावत् इ० ऋद्धि ॥ १५ ॥ जी० जीव का ती० अतीत काल आ० कहा हुवा क० कितना सं० ससार सं० संचिठण काल प० प्ररूपा गो० गौतम च० चार प्रकार का सं० संसार संचिठन काल णे० नारकी स० ससार संचिठन काल ति० तिर्यंच ससार स० संचिठन काल म० मनुष्य संसार स० संचिठण काल दे० देवसंसार स० संचिठण काल णे० नारकी म० संसार संचिठण काल क० कितना प्रकार का गो० गौतम

देसओ भाणेयव्वो जाव इड्डी ॥ १६ ॥ जीवस्सण भंते तीयद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे ससार संचिट्ठण काले पण्णत्ते ? गोयमा! चउव्विहे ससार संचिट्ठण काले पण्णत्ते, तंजहा णेरइए ससार संचिट्ठण काले, तिरिक्ख जोणिय ससार संचिट्ठण काले, मणुस्स

अधिक ऋद्धि का धारक होता है ॥ १६ ॥ सलेशी जीव ससार में रहते हैं इसलिये संसार में रहनका प्रश्न करते हैं + अहो भगवन् ! नारकी आदि जीवों को अतीत काल में कितने प्रकार के ससार संचिठनकाल कहे हैं ? अहो गौतम ! उपभिभेद से एक भव से भवान्तर[1] में रहने की क्रिया का काल के चार भेद कहे हैं १ नारकी के भव में जीव रहे सो नरक संसार संचिठनकाल २ तिर्यंच के भव में रहे सो तिर्यंच संसार

+ कितनेक की ऐसी मान्यता होती है कि मनुष्य मरकर मनुष्य व पशु मरकर पशु ही होता है इसका निर्णय यहांपर किया गया है

१ एक भवसे दूसरे भव में रहने की क्रिया का काम

ति० तीन प्रकार का सु० शून्य काल अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल ति० तिर्यंच का स० संसार सं० संचिठण काल पु० पृच्छा गो० गौतम दु० दोप्रकार का अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल म० मनुष्य

संसारसंचिट्ठण काले, देव संसार संचिट्ठण काले॥ णेरइय संसार संचिट्ठण कालेणं भंते कइविहे प०? गोयमा! तिविहे प०त० सुण्णकाले, असुण्णकाले, मिस्सकाले। तिरिक्ख

संचिठन काल ३ मनुष्य के भव में रहे सो मनुष्य संसार संचिठन काल ४ देवता के भव में रहे सो देव संसार संचिठन काल अहो भगवन् ! नारकी संसार संचिठन काल के कितने भेद ? अहो गौतम ! नारक संसार संचिठन काल के तीन भेद कहे हैं १ शून्यकाल २ अशून्यकाल और ३ मिश्रकाल * अहो भगवन् ! तिर्यंच संसार संचिठन कालके कितने भेद ? अहो गौतम ! दो भेद अशून्यकाल

---

* वर्तमान कालमें सातों नरकमें जो नारकी विद्यमानहैं उनमेंसे कोई उद्वर्तेनहीं, और उसमें कोई नविन उत्पन्न होवे नहीं, जितने हैं उतने ही रहे सो नरक गति आश्रित अशून्यकाल जैसे कहा है आइड समइयाणं नेरइयाणं न जाव एक्को वि उवट्टइ अण्णोवा उववज्जइ सो असुण्णोउ ॥१॥ उन सातों नरक के नारकी में से जो उद्वर्त वाले होवे उस में एक शेष रहे सो मिश्रकाल और सब उद्वर्ते सो शून्यकाल जैसे उव्वट्टे एक्कंमिवि वामीसो धरइ जाव एक्कोवि णिल्लेवएहिं सव्वेहिं वट्टमाणेहिं सुण्णोउ ॥ १ ॥ यहांपर मिश्र नारक संसार अवस्थान काल सूत्र वर्तमान भव आश्रित नहीं ग्रहण किया है परंतु वर्तमान काल के नारकी अन्य गति में

जोणिय ससार सचिट्ठण काल पुच्छा ? गोयमा ! दुविहे प० त० असुण्णकालेय, मिस्सकालेय मणुस्साणय देवाणय जहा णेरइयाण । एयस्सण भते णेरइय ससार सचिट्ठण कालस्स सुण्णकालस्स, असुण्णकालस्स मीसकालस्स, कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा, तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुण्णकाले, मीसकाल अणतगुणे,

दे० देवता को न० जैसे णे० नारकी ए० यह भ० भगवन् णे नारकी का स० ससार सचिठण काल सु० शून्य अ० अशून्य मि० मिश्र क० कौन क० किससे अ० अल्प ब० बहुत तु० तुल्य वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सब से थोडा अ० अशून्य काल मी० मिश्रकाल अ० अनत गुणा सु० शून्य काल अ० अनतगुणा ति० तिर्यंच का स० सर्व से थोडा अ० अशून्य काल मी० मिश्रकाल अनतगुणा म० मनुष्य

व मिश्रकाल मनुष्य व देवता में तीनों काल जानना अहो भगवन् ! इस नरक ससार सचिठन काल के शून्य, अशून्य व मिश्रकाल में से कौन किससे अल्प, बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ! अहो गौतम सब से

जाकर पुन नरक गति में उत्पन्न होवे उन जीवों आश्रित लिया गया है यदि उसी नरक भव आश्रित कहा जावे तो अल्प बहुत्व सूत्र में अशून्य कालकी अपेक्षा से मीश्र काल को अनत गुना कहा है वह नहीं हो सक्ता है जैसे एय पुण ते जीवे पडुच्च सुत्त न तब्भव चेव। जइ होज्जंत भवंतो अणतकालो न सभवइ ॥ १ ॥

दे० देव ज० जैसे नारकी भ० भगवन् णे० नारकी का स० ससार सचिठण काल जा० यावत् दे० देव ससार सचिठण काल का जा० यावत् वि० विशेपाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा म० मनुष्य ससार सचिठण काल णे० नारकी ससार सचिठण काल अ० असख्यातगुणा दे० देव ससार सचिठण काल अ० असंख्यात गुणा ति० तिर्यच ससार सचिठण काल अ० अनतगुणा ॥ १७ ॥ जी० जीव भ०

सुण्णकाले अणतगुणे, ॥ तिरिक्ख जाणियाण सव्वत्थोवे असुण्णकाले, मीसकाले अणतगुणे, ॥ मणुस्साणय, देवाणय जहा णेरइयाण एयस्सण भते णेरइय ससार सचिट्ठण कालस्स जाव देव ससार सचिट्ठण कालस्स जाव विसेसाहिएवा गोयमा ? सव्वत्थोवे मणुस्स ससार सचिट्ठण काले, णेरइय ससार सचिट्ठण काले असखेज्जगुणे, देव

थोडा अशून्यकाल है, क्योंकि उत्पात व उद्वर्तना काल का विरह बारह मुहूर्त का है, उस से मीश्रकाल अनत गुना, और उस से शून्यकाल अनंत गुना कहा है तिर्यच में सब मे थोडा अशून्यकाल उस से मीश्रकाल अनंत गुना मनुष्य व देवता का नारकी जैसे कहना अहो भगवन् ! चारों ससारसचिठन कालमें से कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य व विशेपाधिक है अहो ? गौतम ! सब से थोडा मनुष्य ससार सचिठन काल, उस से नारकी ससार सचिठन काल असख्यात गुना, उस से देव ससार सचिठन काल असख्यात

मगवन् अं० अंतक्रिया क० करे गो० गौतम अ० कितनेक क० करे अ० कितनेक णो० नहीं करे अ० अंतक्रिया पद् णे० जानना ॥ १८ ॥ अ० अहो मं० भगवन् अ० असयति भ० भविद्रव्य देव अ० अविराधिक सं० सयति वि० विराधिक सयति अ० अविराधिक सयतासयति वि० विराधिक स० सयता सयति अ० असंज्ञी ता० तापस कं० कदर्पिक च० चरक परिव्राजक कि० अशुभ परिणाम वाले ति०

ससार सचिट्ठण काले असखेज्जगुणे, तिरिक्ख जोणिय ससार सचिट्ठण काले अणत-गुणे ॥ १७ ॥ जीवेण भते अत किरिय करेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए णो करेज्जा अंतकिरिया पद णेतव्व ॥ १८ ॥ अहमत असजय भविय दव्व देवाण, अविराहिय संजमाण, विराहिय सजमाण, अविराहिय संजमासजमाण, विराहिय सजमासजमाण, असण्णीण, तावसाण, कदप्पियाण, चरगपरिव्वायगाणं,

गुना उस से तिर्यंच ससार संचिठन काल अनत गुना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जीव अंतक्रिया करे ? अहो गौतम ! कितनेक जीव अंतक्रिया करे और कितनेक अतक्रिया करे नहीं इस का विशेष अधिकार पन्नवणा के वीस वे अतक्रिया पद में जानना ॥ १८ ॥ अतक्रियाके अभावसे कोई जीव देवलोक में उत्पन्न होवे इसलिये उस का विषय स्वरूप बताते हैं अहो भगवन् ! चारित्र परिणाम से शून्य मिथ्यादृष्टि,

तिर्यच आ० आजीविक आ० आभियोगिक स०स्वलिंगी द०दर्शन से भ्रष्ट ए० इनकी दे० देवलोक में उ० उपजते क० किसका क० कहां उ० उपपात प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असयाति भविद्रव्यदेव ज० जघन्य भ० भवनपति में उ० उपरकी गे० ग्रैवेयक में अ० अविराधिक स० सयति ज० जघन्य सो० सौधर्म देवलोक उ० उत्कृष्ट स० सर्वार्थसिद्ध विमान में वि० विराधिक सयाति ज० जघन्य भवनपति में उ० उत्कृष्ट सो० सौधर्म देवलोक अ० अविराधिक सं० संयतासयति ज० जघन्य सो० सौधर्म देवलोक उ०उत्कृष्ट अ० अच्युत

किव्विसियाण, तिरिच्छियाण, आजीवियाण, आभिओगियाण, सलिंगीदसणवावण्णगाणं, एएसिणं देवलोएसु उववज्जमाणाण कस्स कहिं उववाए प० ? गोयमा ! असजय भविय दव्व देवाण जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण उवरिम गेवेज्जएसु, अविराहिय सजमाण जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेण सव्वट्ठसिद्धे विमाण, विराहिय

मात्र क्रिया के करने वाले, मवज्र्या काल से निरतिचार पूर्वक पूर्ण चारित्र पालने वाले, अविराधिक संयमी

---

१ इसका कितनेक भावि में होनेवाला देव सो भाविद्रव्य देव, चरणपरिणाम शून्य सो असंयति, असयतिभविद्रव्य देव अर्थात् असंयति सम्यक्दृष्ट्य ऐसा अर्थ करते हैं परंतु यह अर्थ यहांपर योग्य नहीं है क्योंकि इन की उत्कृष्ट उपरकी ग्रैवेयक में उत्पत्ति बतलाइ है और सम्यग् दृष्टि देश विरति की तो मात्र अच्युत देवलोक तककी ली है इसलिये यहां मिथ्यादृष्टी असंयति भव्य अभव्य जीव ग्रहण किये हैं

देवलोक वि० विराधिक स० सयतासयति ज० जघन्य भवनपति उ० उत्कृष्ट जो० ज्योतिषी अ० असज्ञी ज० जघन्य भ० भवनपति उ० उत्कृष्ट वा० वाणव्यंतर अ० बाकी के स० सब ज० जघन्य भ० भवनपति में उत्कृष्ट ता० तापस जो० ज्योतिषी में कं० कदर्पिक सो० सौधर्म देवलोक में च० चरक परिव्राजिक ब० ब्रह्मदेवलोक में कि० क्लिष्टपरिणामी ल० लतक देवलोक में ति० तिर्यंच स० सहस्त्रार देवलोक में आ० आजी

मजमाण जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण सोहम्मेकप्पे, अविराहिय सजमासजमाण जहण्णेण सोहम्मेकप्प, उक्कोसेण अच्चुएकप्पे, विराहिय सजमासजमाण जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण जोइसिएसु असण्णीण जहण्णेण भवणवासीसु उक्कोसेण वाणमतरेसु अवसेसा सव्वे जहण्णण भवणवासीसु उक्कोसेण वोच्छामि—तावसाण जोइसिएसु, कदप्पियाण सोहम्मे कप्पे, चरग परिव्वायगाण बभलोए कप्पे, किव्विसि-

विराधिक सयमी, अविराधिक सयमासयमी विराधिक सयमासयमी, असज्ञी, तापस, कदर्प कथा करने वाले, त्रिदडिये, कपिल मुनि के सतानिये, ज्ञानादिक के अवर्णवाद बोलने वाले, तिर्यंच, आजीविक धर्म वाले व्यवहार में चारित्रवंत होते हुवे भत्र यत्रादिक के करने वाले आभियोगिक, और साधु वेप होने पर सम्यक्त्व से भ्रष्ट निन्हव देवलोक में उत्पन्न होवे किस २ स्थान पर उत्पन्न होवे ? अहो गौतम असंयति भवि द्रव्य देव जघन्य भवनपति में उत्कृष्ट उपर की ग्रैवेयक में. अविराधिक साधु जघन्य सौधर्म देवलोक में

त्रिक अ० अच्युत देवलोक आ० आभियोगिक अ० अच्युत देवलोक में स० सलिंगी दर्शन भ्रष्ट उ० उपर की गे० ग्रैवेयक में ॥ १९ ॥ क० कितने प्रकार का भं० भगवन् अ० असंज्ञी आ० आयुष्य गो० गौतम च० चार प्रकार का अ० असंज्ञी आयुष्य ण० नारकी अ० असंज्ञी आयुष्य ति० तिर्यंच अ० असंज्ञी आयुष्य म० मनुष्य अ० असंज्ञी आयुष्य दे० देव असंज्ञी आयुष्य अ० असंज्ञी भं० भगवन्

याण लतगे कप्पे, तिरिच्छियाण सहस्सारे कप्पे, आजीवियाण अच्चुएकप्पे, आभि-ओगिया अच्चुए कप्पे, सलिंगीदसणवावण्णगा उवरिमगेविज्जएसु ॥ १९ ॥ कइविहे-ण भंते असण्णियाउए, पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे असण्णियाउए प० त० णेरइय असण्णियाउए तिरिक्खजोणिय असण्णियाउए, मणुस्स असण्णियाउए, दे-व असण्णियाउए ॥ असण्णीण भंते ! जीवे किं णेरइयाउय पकरेइ, तिरिक्ख

उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्ध विमान में, विराधिक साधु जघन्य भवनपति में उत्कृष्ट सौधर्म देवलोक में अविराधिक श्रावक जघन्य सौधर्म देवलोक में, उत्कृष्ट अच्युत देवलोक में, विराधिक श्रावक जघन्य भवन-पति, उत्कृष्ट ज्योतिषि में, असंज्ञी जघन्य भवनपति, उत्कृष्ट वाणव्यंतरमें शेप सब जघन्य भवनपति में उत्पन्न होवे और उत्कृष्ट तापस ज्योतिषीमें, कंदर्पकी कथा करनेवाले सौधर्म देवलोकमें, चरक परिव्राजिक ब्रह्मदेवलोक में ज्ञानादि के अवर्णवाद बोलनेवाले लांतक देवलोकमें तिर्यंच सहस्रार देवलोकमें आजीविक मतानुसारी अच्युत देवलोक में आभियोगिक अच्युत देवलोकमें और दर्शन से भ्रष्ट सलिंगी उपर की ग्रैवेयकमें उत्पन्न होते हैं ॥ १९ ॥ अब असंज्ञी का आयुष्य कहते हैं अहो भगवन् ! असंज्ञी परभव योग्य कितने प्रकार का आयुष्य

भी जीव भ० भगवान् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म क० करे हं० हां क० करे से० वह भं० भगवन् कि० क्या दे० देशने दे० देश क० करे दे० देश से स० सर्व क० करे स० सर्व से दे० देश क० करे स० सर्व से स० सर्व क० करे गो० गौतम णो० नहीं दे० देशने दे० देश क० करे णो० नहीं दे० देशसे स० सर्व क० करे णो० नहीं स०

जीवाण भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे से भंते ! किं देसेण देसे कडे देसेण सव्वे कडे सव्वेण देसे कडे सव्वेण सव्वे कडे ? गोयमा! णो देसेणदेसेकडे णो

द्वितीय उद्देशे में आयुष्य का स्वरूप कहा वह मोहनीय कर्म से होवे इसलिये आगे मोहनीय कर्म का स्वरूप कहते हैं अहो भगवन् ! क्या जीव कांक्षा मोहनीय कर्म (मिथ्यात्व मोहनीय कर्म) करे ? हां गौतम! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करे अहो भगवन्! जैसे १ हस्तादि देश से किसी वस्तु का देश आच्छादे, २ हस्तादि देशसे समस्त वस्तु आच्छादे, ३ समस्त शरीर से वस्तु का देश आच्छादे, ४ समस्त शरीर से समस्त वस्तु का आच्छादन करे, वैसे ही क्या जीव का देश कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, जीव का एक देश सब कांक्षा मोहनीय कर्म करे संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, अथवा संपूर्ण जीव संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे? अहो गौतम! जीव का एक देश कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, जीव का एक देश संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म नहीं करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, परंतु संपूर्ण जीव

सर्व म दे० देश क० करे स० सर्व मे स० सर्व क० करे ॥ १ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् क० कांक्षा मोहनीय कर्म क० करे ह० हां क० करे जा० यावत् स० सर्व मे स० सर्व क० करे ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक द० दंडक भा० कहना॥ २ ॥ जी० जीवने भ० भगवन् क० कांक्षा मोहनीय कर्म क० किया हं० हां क० किया त० उन को भ० भगवन् कि० क्या दे० देश से दे० देश क० किया ए० यह अ०

देसेण सव्वेकडे णो।सव्वेण देसेकडे, सव्वेण सव्वे कडे॥ १ ॥णेरइयाण भते ! कंखा मोहणिज्जे कम्मेकडे? हताकडे, जाव सव्वेण सव्वेकडे । एव जाव वेमाणियाण दंडओ भाणियव्वो॥ २॥ जीवाण भते ! कंखा मोहणिज्ज कम्म करिंसु? हताकरिंसु । त भते ! किं देसेण देस करिंसु, ? एएण अभिलावेण दंडओ जाव वेमाणियाण । एवंकराति, एत्थवि दंडओ जाव वेमाणियाण । एव करिस्सति, एत्थवि दंडओ जाव वेमाणियाण ॥ एव चिए, चिणिंसु, चिणाति, चिणिस्सति । उवचिए, उवचिणिंसु, उवचिणति, उवचिणिस्सति

संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे ॥ १ ॥अहो भगवन् ! क्या नारकी कांक्षा (मिथ्यात्व) मोहनीय कर्म करे ? हां गौतम! नारकी कांक्षा मोहनीय कर्मकरे, यावत् सर्व से सर्व कांक्षा मोहनीय कर्म करे वैसेही चौवीस दंडक का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जीव ने क्या अतीत काल में कांक्षा मोहनीय कर्म किया ? हां गौतम किया देश से देश यावत् सर्व से सर्व किया वगैरह वैमानिक तक जानना और वैसे ही वर्तमान काल

भी जीव भं० भगवान् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म क० करे हं० हां क० करे से० वह भं० भगवन् कि० क्या दे० देशसे दे० देश क० करे दे० देश से स० सर्व क० करे स० सर्व से दे० देश क० करे स० सर्व से स० सर्व क० करे गो० गौतम णो० नहीं दे० देशसे दे० देश क० करे णो० नहीं दे० देशसे स० सर्व क० करे णो० नहीं स०

जीवाण भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे से भंते ! किं देसेण देसे कडे देसेण सव्वे कडे सव्वेणं देसे कडे सव्वेण सव्वे कडे ? गोयमा ! णो देसेण देसे कडे णो

द्वितीय उद्देशे में आयुष्य का स्वरूप कहा यह मोहनीय कर्म से होवे इसलिये आगे मोहनीय कर्म का स्वरूप कहते हैं अहो भगवन् ! क्या जीव कांक्षा मोहनीय कर्म (मिथ्यात्व मोहनीय कर्म) करे ? हां गौतम ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करे अहो भगवन् ! जैसे १ हस्तादि देश से किसी वस्तु का देश आच्छादे, २ हस्तादि देशसे समस्त वस्तु आच्छादे, ३ समस्त शरीर से वस्तु का देश आच्छादे, ४ समस्त शरीर से समस्त वस्तु का आच्छादन करे, वैसे ही क्या जीव का देश कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, जीव का एक देश सब कांक्षा मोहनीय कर्म करे संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, अथवा संपूर्ण जीव संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे ? अहो गौतम ! जीव का एक देश कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, जीव का एक देश संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म नहीं करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, परंतु संपूर्ण जीव

हनीय कर्म वे० वेदते हैं ह० हां वे० वेदते हैं क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदते हैं गो० गौतम ते० उस २ का० कारनसे सं० शंकित कं० कांक्षा सहित वि० फल में सदेह सहित भ० भेदका भास क० सक्लिष्ट परिणामी जी० जीव कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ ४ ॥ ते० वहही स० सत्य णी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा हं० हां गो० गौतम त० वहही स० सत्य णी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा ॥५॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् ए० ऐसा

वेदेंति । कहण भंते ! जीवा कखा मोहणिज्ज कम्म वेदेंति ? गोयमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं संकिया, कंखिया, वितिगिच्छिया, भेदसमावण्णगा, कलुससमावण्णगा, एव खलु जीवा कखामोहणिज्जं कम्म वेदेंति ॥ ४ ॥ सेणूण भंते ! तमेवसच्च, णीसक, जं जिणेहिं पवेइय ? हता गोयमा ! तमेव सच्च णीसक ज जिणेहिं पवेइय

पदार्थ में देश से या सर्व से शंका उत्पन्न होवे, अन्य दर्शन ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न होवे, कृत कार्य के फल में सदेह उत्पन्न होवे, द्वैधीभाव उत्पन्न होवे, अथवा मतिभ्रम होवे, इस तरह से जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवान्ने कहा है वह क्या निःशंक सत्य है ? हां गौतम ! जो जिन भगवान् ने कहा है वह ही निःशंक सत्य है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इस तरह मन में धारता हुवा, ऐसे करता हुवा, ऐसे रहता हुवा ऐसे ही प्राणातिपातादिक से आत्मा को संवरता हुवा

अभिलाप से द० दंडक जा० यावत् वै० वैमानिक को ए० ऐसे क० करता है ए० इस का दं० दंडक जा० यावत् वै० वैमानिक ए० ऐसे क० करेंगे ए० यह दं० दंडक जा० यावत् वै० वैमानिक ए० ऐसे क० किरे चि० इकठे किरे उ० विशेष इकठे किरे उ० उदीरे वे० वेदे नि० निर्जरे आ० आदिके ति० तीनके च० चारभेद ति० तीनभेद प० पीछेके ति० तीन के ॥३॥ जी० जीव भ० भगवन् कं० कांक्षा मो-

उदीरेंसु, उदीरति, उदीरिस्सति, वेदेंसु, वेदेंति, वेदिस्सति । णिज्जरेंसु, णिज्जरेंति, णिज्जरिस्सति गाहा॥ कडे चिए य उवचिए, उदीरिया वेदियाय णिज्जिण्णा॥आदितिए चउभेया, तियभेया पच्छिमातिण्णि ॥ १ ॥ ३ ॥ जीवाण भते ! कखा मोहणिज्ज कम्म वेदेंति ? हता-

आश्रित जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करता है, और भविष्यकाल आश्रित जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करेगा, वगैरह चौवीस दंडक में मानना ऐसे ही चिय, उपचिय, का सामान्य, भूत भविष्य व वर्तमान काल आश्रित जानना और उदीरणा, वेद व निर्जरा इन तीन बोल को भूत, भविष्य व वर्तमान काल आश्रित चौवीस दंडक पर उतारना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? हां गौतम ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है अहो भगवन् ! किस तरह से जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम ! मिथ्यात्व की संगति से या परदर्शन के वचन श्रवण से श्री वीतराग प्ररूपित

परिणमे ण० नास्तित्व ण० नास्तिरूप प० परिणमे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० परिणमे जं० जो भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ अस्तिरूप पने प० परिणमे न० नास्तित्व न० नास्तिरूप पने प परिणमे त० उस को० किं क्या प० प्रयोग से वी० स्वभाव से गो० गौतम प० प्रयोग से वी० स्वभावसे ॥ ७ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने ग० प्रकाशने योग्य ज० जैसे प०

नत्थित्ते परिणमइ तं किं पओगसा वीससा? गोयमा! पओगसावि तं वीससावि तं। जहाते भंते! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहाते णत्थित्त णत्थित्ते परिणमइ, जहाते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहाते अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ? हंता गोयमा! जहामे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ तहामे नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ जहामे नत्थित्त, नत्थित्ते परिणमइ तहामे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ॥ ७ ॥ सेणूण भंते! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज जहा

वैसे ही क्या आपके मत में नास्तिपना नास्ति पने परिणमता है ? और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है वैसे ही क्या अस्तिपना अस्तिपने परिणमता है ? हां गौतम ! जैसे हमारे मत में अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है वैसेही नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है वैसेही अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है ॥७॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिपने गमनीय

म०मनमें ध० धारता प० करता चि० रहता स० समरता आ० आज्ञा आ०आराधक भ० होवे ह०हां गो० गौतम ए०ऐसा म०मनमें ध० धारता जा० यावत् भ०होवे ॥५॥ से० वह भं०भगवन् अ० अस्तिरूप पने प०

॥ ५ ॥ सेणूण भंते ! एवं मणे धारेमाणे एवं पकरेमाणे, एवं चिट्ठेमाणे, एवं संवरे माणे, आणाए आराहए भवइ ? हंता गोयमा ! एवं मणे धारमाणे जाव भवइ ॥ ६ ॥ सेणूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, णात्थित्तं णात्थिते परिणमइ ? हंता गोयमा ! जाव परिणमइ ॥ जतंभंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्तं

क्या आज्ञा का आराधक होता है ? हां गौतम ! एसा करने वाला आज्ञा का आराधक होवे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिरूपपने (वस्तु का पर्यायान्तर होने पर जो मूल गुण है वह होना) परिणमे ? जैसे अंगुली ऋजुता, वक्रता, धारन करे तो भी अंगुलीपने परिणमे और नास्तित्व सो नास्ति-रूपपने परिणमे ? हां गौतम ! जो अस्ति रूप वस्तु है वह अस्तिपने परिणमती है, जैसे अंगुली को अंगुली ही कही जाति है और अछती वस्तु नास्तित्व पने परिणमति है जैसे जो पट नहीं है वह कदापि पट नहीं है अहो भगवन् ! क्या वह प्रयोग सो जीव का व्यापारसे या स्वभाव से परिणमे ? हां गौतम ! प्रयोग से भी परिणमें जैसे कुंभकार मृत्तिका का घट बनावे और स्वभाव से भी परिणमें जैसे आकाश में बद्दल होवे अहो भगवन् ! जैसे आपके मत में प्रयोग या स्वाभाव से अस्तिपना अस्तिपने परिणमता है

परिणमे ण० नास्तित्व ण० नास्तिरूप प० परिणमे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० परिणमे जे० जो भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने प० परिणमे न० नास्तित्व न० नास्तिरूप पने प० परिणमे त० उस को० किं क्या प० प्रयोग से वी० स्वभाव से गो० गौतम प० प्रयोगसे वी० स्वभावसे ॥ ७ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने ग० प्रकाशने योग्य ज० जैसे प०

नत्थित्ते परिणमइ तं किं पओगसा वीससा? गोयमा ! पओगसावि तं वीससावि तं। जहाते भंते! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहाते णत्थित्त णत्थित्ते परिणमइ, जहाते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहाते अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ? हंता गोयमा ! जहामे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ तहामे नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ जहामे नत्थित्त, नत्थित्ते परिणमइ तहामे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ॥ ७ ॥ सेणूण भंते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज जहा

वैसे ही क्या आपके मत में नास्तिपना नास्ति पने परिणमता है ? और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है वैसे ही क्या अस्तिपना अस्तिपने परिणमता है ? हां गौतम ! जैसे हमारे मत में अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है वैसेही नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है वैसेही अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है ॥७॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिपने गमनीय

परिणमे में दो० दोआलापक त० तैसे ग० प्रकाशने में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ॥ ८ ॥ जी० जीव भ० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय कर्म बं० बांधे हं० हां गो० गौतम बं० बांध क० कैसे भ० भगवन् जी० जीव कं० कांक्षा मोहनीय कर्म बं० बांधे गो० गौतम प० प्रमाद प्रत्यय जो० जोगनिमित्त से० वह

परिणमइ दो आलावगा,तहा गमणिज्जेणवि दो आलावगा भाणियव्वा,जाव तहामे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज जहा ते भंते! एत्थ गमणिज्ज तहाते इह गमणिज्ज जहाते इह गमणिज्ज तहाते इत्थ गमणिज्ज?हंता गोयमा!जहामे इत्थ गमणिज्ज तहामे इहंगमणिज्ज॥८॥ जीवाणं भंते कंखा मोहणिज्ज कम्म बंधति ? हंता गोयमा ! बंधति । कहण्णं भंते ! जीवा कंखा

अर्थात छती वस्तु छतेपने ही प्रकाशने योग्य है अन्य को जनाने योग्य है ? यहां पर जैसे परिणमते के दो आलापक कहे वैसे ही प्रकाशन के हमारे मतमें अस्तित्व अस्तिपने प्रकाशने योग्य है यहां तक दो आलापक कहना और भी अहो भगवन् ! जैसे आप के मत में मेरे जैसे सुशिष्य को वस्तु प्ररूपी वैसेही क्या आपके मत में पाखंडी गृहस्थादिक को प्ररूपी ? और जैसे पाखंडी गृहस्थादिक का वस्तु प्ररूपी वैसेही क्या मेरे जैसे सुशिष्य को वस्तु प्ररूपी ? हां गौतम ! जैसे मेरे मत में सुशिष्यादिक को वस्तु स्वरूप प्ररूपा वैसे ही पाखंडी गृहस्थादिक को वस्तु स्वरूप प्ररूपा और जैसे पाखंडी का वस्तु स्वरूप प्ररूपा वैसेही सुशिष्य को वस्तु स्वरूप प्ररूपा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! जीव कांक्षा

भं० भगवन् प०प्रमाद किं० किससे प० उत्पन्न होवे गो० गौतम जो० जोगसे प० उत्पन्न होवे जो०जोग किं० किससे प०उत्पन्नहोवे गो०गौतम वी०वीर्यसे प०उत्पन्नहोवे वी०वीर्य किं०किससे प०उत्पन्न होवे स०शरीर से

मोहणिज्ज कम्म बंधति ? गोयमा ! पमाद पच्चय, जोगा निमित्तंच ॥ सेण भंते ! पमादे किंपवहे ? गोयमा ! जोगप्पवहे । सेण भंते ! जोए किंपवहे ? गोयमा ! वीरियप्पवहे। सेण भंते ! वीरिए किंपवहे ? गोयमा ! सरीरप्पवहे । सेणं भंते सरीरे किंपवहे !

मोहनीय कर्म बांधता है ? हां गौतम ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म बांधता है अहो भगवन्! जीव कैसे कांक्षा (मिथ्यात्व) मोहनीय कर्म बांधता है ? अहो गौतम ! प्रमाद प्रत्ययिक व योग निमित्त से अहो भगवन् ! प्रमाद किस कारन से प्रवर्ते अर्थात् कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! मन प्रमुख योग के व्यापार से प्रमाद उत्पन्न होवे अहो भगवन् ! योग कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न हुवा जो जीव परिणाम उन से योग उत्पन्न होवे अहो भगवन् ! वीर्य कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वीर्य के दो भेद सकरण वीर्य और अकरण वीर्य उस में अलेशी केवली समस्त पदार्थ जानते व देखते को वैसेही केवल ज्ञान केवल दर्शन प्रयुंजते को जो अप्रतिघाती परिणाम विशेष भाव होवे उसे अकरण वीर्य कहते हैं उस का यहांपर अधिकार नहीं है परन्तु यहां पर मन वचन करण साधन सलेशीजीव प्रदेशात्मक व्यापार सो सकरण वीर्य ग्रहण कीया है और

प०उत्पन्नहोवे स०शरीर किं०किममे प०उत्पन्न होवे जी०जीवमे प०उत्पन्नहोव ए०ऐसे स०होते अ० है उ० उस्थान क०कर्म ब० बल वी०वीय पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भ० भगवन् अ० आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे स० संवरे हं० हा गो० गौतम आ० आत्मा स त० तैने ही उ० कहना

गोयमा! जीवप्पवहे एवंसइ अत्थि उट्ठाणेइवा, कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ ९ ॥ सेणूण भंते, अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा ! अप्पणा चेव उदीरेयव्व ॥ जंतभंते ! अप्पणा चेव उदीरेइ,

वह शरीर के व्यापार से होता है अहो भगवन् ! शरीर कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उत्थान–कार्य साधन के लिये खडे होना, कर्म–गमनादि कर्म करना, बल– शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य–उत्साह, पुरुषात्कार–पुरुषका अभिमान, व पराक्रम–कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है ॥२॥ अहो भगवन् ! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दा करे और स्वयंही संवर, अर्थात् कर्म करे नहीं ? हां गौतम, स्वयंही कर्मकी उदीरणा कर यावत् स्वयं कर्म करे नहीं अहो भगवन जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है निष्केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है

ज० जो भं० भगवन् आ०आत्माने उ०उदीरे ग०निन्दे स० सवरे तें०उन को कि०क्या उ०उदे आया उ० उदीरे अ०उदे नहीं आया अ०उदीरे उ०उदे नहीं आया उ०उदीरणा योग्य उ०उदीरे उ०उदयान्तर प०पीछे क०कीया कर्म उ० उदीरे गो० गौतम णो० नहीं उ०उदे आया उ०उदीरे णो० नहीं अ०उदे नहीं आया

अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणाचेव सवरइ, तकिं उदिण्ण उदीरेइ, अणुदिन्न उदीरेइ अणुदिन्न उदीरणा भविय कम्म उदीरेइ, उदयाणतर पच्छाकड कम्म उदीरेइ ? गोयमा ! नो उदिण्ण उदीरेइ णो अनुदिण्ण उदीरेइ, अनुदिण्ण उदीरणा भविय कम्म उदीरेइ, नो उदयाणतर पच्छाकड कम्म उदीरेइ ॥ जतभते ! अणुदिन्न उदीरणा

उदय आया हुवा उदीरता है, उदय नहीं आया हुवा उदीरता है, उदय में नहीं आया है परतु उदीरणा के योग्य जो बने है उदीरता है, अथवा उदय के अनतर समय में पश्चात् कृत कर्म को उदीरता है ? अहो गौतम! जो कर्म उदयमें आये हैं उनकी उदीरणा करे नहीं क्योंकी उदयमें आये हुवे कर्मों की उदीरणा नहीं होती है, जो उदय में नहीं आये हैं उन की भी उदीरणा नहीं होती है क्यों की वे बहुत काल में उदय में आवेंगे इस लिये वर्तमान काल में उन की उदीरणा का अभाव है, जो उदय में नहीं आये हैं परतु उदीरणा के योग्य हुवे हैं उन को उदीरते हैं और उदयांतर कृत कर्म को नहीं उदीरते हैं अहो भगवन् ! जो उदय में नहीं आये हैं और उदीरणा के योग्य बने हुवे उन को उदीरते हैं तो क्या

प० उत्पन्नहोवे स० शरीर किं० किससे प० उत्पन्न होवे जी० जीवसे प० उत्पन्नहोवे ए० ऐसे स० होते अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भ० भगवन् अ० आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हा गो० गौतम आ० आत्मा स त० तैसे ही उ० कहना

गोयमा! जीवप्पवहे एवसइ अत्थि उट्ठाणेइवा, कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १ ॥ सेणूण भंते, अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा ! अप्पणा चेव उच्चारेयव्व ॥ जंतमंते । अप्पणा चेव उदीरेइ,

यह शरीर के व्यापार से होता है अहो भगवन् ! शरीर कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उत्थान—कार्य साधन के लिये खड़े होना, कर्म—गमनादि कर्म करना, बल-शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य—उत्साह, पुरुषात्कार—पुरुषका अभिमान व पराक्रम—कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है ॥२॥ अहो भगवन् ! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयंही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दा करे और स्वयंही संवर, अर्थात् कर्म करे नहीं ? हां गौतम, स्वयंही कर्मकी उदीरणा कर यावत् स्वयं कर्म करे नहीं अहो भगवन् जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है निष्केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है

अ० अवल अ० वीर्यरहित अ० पुरुषात्कार पराक्रम रहित ॥ १० ॥ से० वह भ० भगवन् अ० आत्मा से उ० उपशमावे ग० निन्दे स० संवरे हं० हां ए० यहां त० तैसे भा० कहना ण० विशेष अ० उदे नहीं आया उ० उपशमावे से० शेष प० वर्जना ति० तीन जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उपशमावे त० उन को किं० क्या

अपुरिसक्कार परक्कमेण अणुदिन्न उदीरणा भाविय कम्म उदीरति एव सइ आत्थि उट्ठाणेइवा, कम्मेइवा बलेइवा, वीरिएइवा, पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १० ॥ सेणूण भंते अप्पणाचेव उवसामेइ, अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणाचेव संवरइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि तहेव भाणियव्वं, णवर अणुदिन्न उवसामेइ, सेसा पडिसेहियव्वा तिण्णि ॥ ज त भंते! अणुदिन्न उवसामेइ तंकिं उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा

अनुदित कर्म को उदीरता है ॥ १० ॥ अब कांक्षा मोहनीय का उपशम कहते हैं अहो भगवन् ! क्या जीव स्वयं कांक्षा मोहनीय कर्म उपशमावे, गर्हे, व संवरे ? हां गौतम ! जीव स्वयं ही कांक्षा मोहनीय कर्म उपशमावे यावत् संवरे यहांपर पूर्वोक्त उदीरणा जैसे कहना, परतु यहां अनुदित कर्म का उपशम करते हैं और शेष तीन को छोडना जो उदय में आया है वह अवश्यही वेदाता है इस लिये अनुदित कर्म का उपशम कहा है अहो भगवन् ! जो अनुदित कर्म का उपशम करता है वह क्या उत्थान, कर्म यावत पराक्रम से करता है या उत्थानादि बिना उपशम करता है ? वगैरह आधिकार पहिले जैसे

उ० उदीरे अ० उद नहीं आया उ० उदीरणा योग्य क० कर्म उ० उदीरे नो० नहीं उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया कर्म उ० उदीरे जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उदीरना योग्य क० कर्म उ० उदीरे थ० उन को उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम से अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य उ० उदीरे उ० अथवा तं० उन को अ० अनुत्थान अ० अकर्म

भविय कम्म उदीरेइ तंकिं उट्ठाणेणं, कम्मेण, बलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार परक्कमेण अणुदिन्न उदरिणा भविय कम्म उदीरेति उाहहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण अवीरिएण, अपुरिसक्कार परक्कमेण, अणुदिण्ण उदीरणा भाविय कम्म उदीरेइ ? गोयमा ! त उट्ठाणेणवि, कम्मणवि, बलेणवि, वीरिएणवि, पुरिसक्कार परक्कमेणवि, अणुदिन्न उदीरणा भाविय कम्म उदीरेइ नो, त अणुट्ठाणेण अकम्मेण अबलेण अवीरिएण

उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम से उदीरता है ? अथवा उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम विना उदीरता है ? अहो गौतम ! उत्थान यावत् पराक्रम से उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म उदीरता है परंतु उत्थान यावत् पराक्रम विना उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म को नहीं उदीरता है इस लिये उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम में अस्ति है जिस से उदीरणा योग्य

जा० यावत् प० पराक्रम ॥ १३ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदे ज० जैसे ओ० औधिक जीव त० तैसे ने० नारकी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार ॥ १४ ॥ पु० पृथ्वी-काया भं० भगवन् क० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वदे ह० हां वे० वेदे क० कैसे भं० भगवन् पु० पृथ्वीकाया क० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे गो० गौतम ते० उन जी० जीवों को णो० नहीं है ए० ऐसा

णिज्जेग्इ एव जाव परक्कमेइत्रा ॥ १३ ॥ णेरइयाण भते! कखा मोहणिज्ज कम्म वेद-ति ? जहा ओहिया जीवा तहा णेरइया जाव थाणिय कुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि-काइयाण भते! कखा मोहणिज्ज कम्म वेदति ? हता वेदति । कहण भते! पुढवि-काइया कखा मोहणिज्ज कम्म वेदति ? गोयमा! तेसिण जीवाण णो एव तक्काइवा,

शेप पुरुषात्कार पराक्रम तक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! क्या नारकी कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम! जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही नारकी का जानना और वैसे ही स्तनित कुमार तक का जानना ॥ १४ ॥ पचेन्द्रिय को शंकितादि दोप होवे इस से कांक्षा मोहनीय कर्मकी वेदनादि होवे परतु एकेन्द्रियादिकको शंकितादि दोप नहीं होने से कांक्षा मोहनीय की वेदना होवे नहीं इस लिये एकेन्द्रिय को विशेषता से कांक्षा मोहनीय का स्वरूप बताते हैं अहो भगवन्! पृथ्वी काय कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? हां गौतम! पृथ्वी कायिक जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे

उ० उस्थान जा० यावत् पु पुरुषात्कार पराक्रमसे ॥ ११ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से वे० वेदे ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां स० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदेआया वे० वेदे णो० नहीं अ० उदे नहीं आया वे० वेदे ए० ऐसे जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ॥ १२ ॥ से० वह भ० भगवन् अ० आत्मा से णि० निर्जरे अ० आत्मा से ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां स० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया क० कर्म नि० निर्जरे ए० ऐसे

॥ ११ ॥ सेणूण भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ, अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सव्वेवि परिवाडी, णवर उदिण्ण वेदेइ, णो अणुदिन्न वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १२ ॥ सेणूण भंते ! अप्पणा चेव णिज्जरेइ अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सव्वेवि परिवाडी, णवर उदयाणतर पच्छा कड कम्म

कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जीव स्वयं वेदता है, स्वयं गर्हता है ? हां गौतम ! यहांपर सब परिपाटी पहिले जैसे कहना इस में उदय आये हुवे कर्म वेदते हैं इतना ही विशेष है और पुरुषात्कार पराक्रमतक पहिले जैसे कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या स्वयं कर्म की निर्जरा करता है व गर्हा करता है ! हां गौतम ! यहांपर उदयान्तर समय पश्चात् कृतकर्म निर्जरे इतना विशेष जानना

जा० यावत् प० पराक्रम ॥ १३ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदे ज० जैसे ओ० औधिक जीव त० तैसे ने० नारकी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार ॥ १४ ॥ पु० पृथ्वी-काया भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वदे हं० हां वे० वेदे क० कैसे भं० भगवन् पु० पृथ्वीकाया क० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वदे गो० गौतम ते० उन जी० जीवों को णो० नहीं हैं ए० ऐसा

णिज्जेग्इ एव जाव परक्कमेइत्ता ॥ १३ ॥ णेरइयाण भते! कखा मोहणिज्ज कम्म वेद-ति ? जहा ओहिया जीवा तहा णेरइया जाव थणिय कुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि-काइयाण भते! कखा मोहणिज्ज कम्म वेदति ? हंता वेदति । कहण भते ! पुढवि-काइया कखा मोहणिज्ज कम्म वेदति ? गोयमा ! तेसिण जीवाण णो एव तक्काइत्ता,

शेप पुरुपात्कार पराक्रम तक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम ! जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही नारकी का जानना और वैसे ही स्तनित कुमार तक का जानना ॥ १४ ॥ पचेन्द्रिय को शंकितादि दोप होवे इस से कांक्षा मोहनीय कर्मकी वेदनादि होवे परतु एकेन्द्रियादिकको शंकितादि दोप नहीं होने से कांक्षा मोहनीय की वेदना होवे नहीं इस लिये एकेन्द्रिय को विशेपता से कांक्षा मोहनीय का स्वरूप बताते हैं अहो भगवन् ! पृथ्वी काय कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? हां गौतम ! पृथ्वी कायिक जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे

... ..., ..., अन्नाण कम्मा माहणिज कम्म वेदेंमो वे-
ति । पुणते सेणूणभंते ! तमेवसच्च णीसंकजंजिणेहिं पवेइय सेस तचेव जाव परिक्क-
परक्कमइवा एव जाव चउरिंदियाणं ॥ १५ ॥ पचिंदिय तिरिक्खजोणिया जाव
णणिया जहा ओहिया जीवा ॥ १६ ॥ अत्थिण भंते ! समणा निग्गंथा कंखा

भगवन् ! वे कैसे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? अहो गौतम ! उन जीवोंको तर्क, संज्ञा,
प्रज्ञा, मन, वचन व मैं कांक्षा मोहनीय कर्म वदता हूं ऐसा ज्ञान नहीं हैं तथापि वे कांक्षा
मोहनीय कर्म वदे इस कारन से ऐसे स्थान में साधु को ऐसा कहना कि जो जिन भगवान्ने
प्ररूपा है वहही निश्शंक सत्य है शेष पुरुषात्कार पराक्रम तकका सब अधिकार पूर्ववत् जानना और
ऐसे ही अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय तक कहना ॥ १७ ॥ पंचेन्द्रिय
तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यतर, ज्योतिषी व वैमानिक का औधिक (समुच्चय) जीव जैसे कहना ॥ १८ ॥ सब

निर्ग्रंथ क० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ह० हा क० कैसे भ० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ क० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे गो० गौतम ते० उस का० कारन से ना० ज्ञानांतरसे द० दर्शनांतर मे च०

मोहणिज्ज कम वेदाति ? हता अत्थि । कहण भते ? समणा निग्गथा कखामोहणिज्ज कम वेदाति ? गोतमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं, नाणतरेहिं, दसणतरेहिं, चरित्तरेहिं

जीवोंको मिथ्यात्व मोहनीय कर्म वेदना कहा परतु वह निर्ग्रंथ को नहीं होता है क्यों कि जिनागम जानने-वाले को निर्मल बुद्धि रहती है, इस लिये निर्ग्रंथ संबंधी पृच्छा करते हैं अहो भगवन् ! बाह्या भ्यंतर परिग्रह रहित श्रमण तपस्वी कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ? हां गौतम ! व वेदते हैं अहो भगवन् ! वे श्रमण निर्ग्रंथ किस प्रकार से कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ? अहो गौतम ! इस का कारण मैं बताता हूं १ ज्ञानांतर से - एक ज्ञान से दूसरे ज्ञान में शंका उत्पन्न होवे जैसे अवधि ज्ञानवाला परमाणु वगैरह सकल रूपी द्रव्य अवधि ज्ञान से जाने और मन.पर्यव ज्ञानी अढाइद्वीप में रहे हुवे सन्नी के मन का भाव जाने इस में मन द्रव्य रूपी होने से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान से मन का भाव जाने जब मन. पर्यव ज्ञान में क्या विशेषता ! ऐसी शंका करे २ दर्शनांतर से अर्थात् एक दर्शन से दूसरे दर्शन में शंका उत्पन्न होवे जैसे चक्षुदर्शन व अचक्षुदर्शन को भिन्न क्यों कहा ? अथवा सम्यक् दर्शन में शंका उत्पन्न होवे ३ चारित्रांतरसे अर्थात् एक चारित्र से दूसरे चारित्र में शंका उत्पन्न होवे जैसे सामायिक चारित्र

त• तर्क स० संज्ञा प० प्रज्ञा म० मन व० वचन अ० अम्हे कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदते हैं वे० जानते हैं पु० फीर त० वहही स० सत्य नी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा से० शेष तं० तैसे जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ए० ऐसे जा० यावत् च० चतुरेन्द्रिय ॥ १८ ॥ पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच जा० यावत् वे० वैमानिक ज• जैसे ओ० औधिक जीव ॥ १६ ॥ मं० भगवन् स० श्रमण नि०

सण्णाइवा, पण्णाइवा, मणेइवा, वइइवा, अम्हेण कखा मोहणिज्ज कम्म वेदेमो वेदेंति । पुणते सेणूणभते ! तमेवसच्च णीसकजजिणेहिं पवेइय सेस तचेव जाव परिसक्कार परक्कमेइवा एवं जाव चउरिंदियाण ॥ १५ ॥ पचिंदिय तिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा ओहिया जीवा ॥ १६ ॥ अत्थिण भते ! समणा निग्गथा कखा

भगवन् ! वे कैसे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? अहो गौतम ! उन जीवोंको तर्क, संज्ञा, प्रज्ञा, मन, वचन व मैं कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता हूं ऐसा ज्ञान नहीं हैं तथापि वे कांक्षा मोहनीय कर्म वदे इस कारन से ऐसे स्थान में साधु को ऐसा कहना कि जो जिन भगवानने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है शेष पुरुषात्कार पराक्रम तकका सब अधिकार पूर्ववत् जानना और ऐसे ही अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय तक कहना ॥ १८ ॥ पचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का औधिक (समुच्चय) जीव जैसे कहना ॥ १६ ॥ सब

मतांतरसे भ० भंगोकेअंतरसे ण० नयांतर से णि० नियमांतरसे प० प्रमाणांतरसे सं० शंकित कं० वांच्छा वाला वि० संदेह वाला क० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ १७ ॥ भं० भगवन् त० वही स० सत्य नी० शंकारहित जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम स० वह ए० ऐसे भ० भगवन् ॥१॥३॥ *

णयतरेहिं, णियमतरेहिं, पमाणतरेहिं, सकिया कखिया, वितिगिच्छिया, भेदसमावण्णा, क्लुससमावण्णा, एव खलु समणा निग्गथा कखा मोहणिज्ज कम्म वेदति ॥ १७ ॥ सेणूण भते ! तमेव सच्च नीसक ज जिणेहिं पवेइय? हता गोयमा तमेव सच्च नीसक एव जाव पुरिसक्कार परक्कमइवा ॥ सेवभते भते ! त्ति पढमसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ३ ॥ × +

पिकादिक का प्रत्याख्यान है तो पहरसी वगैरह की क्या विशेषता है ऐसी शंका करे १३ प्रमाणान्तर से-प्रत्यक्ष प्रमाण व आगम प्रमाणमें भेद क्यों ? आगम प्रमाण मे सूर्य ८०० योजन ऊंचे उदित होता है और चक्षु दृष्टि से जमीन में से नीकलता हुवा दीखता है इस में शंका उत्पन्न होवे इस तरह तेरह प्रकार की शंका उत्पन्न होवे, मिथ्या दर्शन की वांच्छा होवे, धर्म करणी में फलका संदेह लावे, सत्य असत्यका भेद करे, मतिभ्रम होने से कालुष्यतावाले बने, इसी कारण से श्रमण निर्ग्रंथ कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वह सत्य है ? हां गौतम ! जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वही निःशंक सत्य है ऐसे ही पुरुषात्कार पराक्रमतक कहना श्री गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! जैसे आप प्ररूपते हैं वह सब सत्य है यह पहिला शतकका तीसरा उद्देशा

चारित्रांतरसे लि० लिंगांतरसे प० प्रवचनांतरसे पा० प्रावचनांतरसे क० कल्पांतरसे म० मार्गांतरसे म०

लिंगतरेहिं, पवयणतरेहिं पावयणतरेहिं कप्पतरेहिं, मग्गतरेहिं, मयतरेहिं, भगतरेहिं,

में सब सावद्यका प्रत्याख्यान है और छेदोपस्थापनीय में पचमहाव्रत का आरोपण किया है ४ लिंगांतर से लिंग जो साधु का वेष उस में शंका उत्पन्न होवे जैसे बावीस तीर्थंकर के साधु जैसे शुद्ध वस्त्र मीले वैसा ग्रहण करे और प्रथम व अन्तिम तीर्थंकर के साधु प्रमाण युक्त वस्त्र धारन करे इस तरह जो भिन्नता है वह क्यों होवे ऐसी शका होवे ५ प्रवचनान्तर से प्रवचन सो आगम इस में भिन्नता होने से शका उत्पन्न होवे जैसे बावीस तीर्थंकर के साधुओंको चार महाव्रत और प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के साधुओं को पांच महाव्रत ऐसी भिन्नता ६ प्रावचनान्तर से - अर्थात् गीतार्थ के वचन में भिन्नता होने से शका करे जैसे एक आचार्य थोडी क्रिया करते हैं और दूसरे विशेष क्रिया करते होवे ७ कल्पान्तर से - अर्थात् कल्प २ में भिन्नता देखकर शका होवे जैसे जिन कल्पी नग्नत्वपना वगैरह अतिकष्ट सहन करते हैं और स्थविर कल्पी वस्त्रादि सहित प्रवर्ते ये दोनों किस प्रकार से कर्मक्षय करे वैसी शका उत्पन्न होवे ८ मार्गान्तर से अर्थात् पूर्वापर समाचारी में भिन्नता होने से शका उत्पन्न होवे ९ मतांतर से - आचार्य के अभिप्राय में भिन्नता होने से शका उत्पन्न होवे १० भगान्तरसे अर्थात् द्वीभंगी चौभंगी की विचारना उस में भिन्नता की समझ नहीं होने से शंका उत्पन्न होवे ११ नयांतर से द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक नय में नित्यानित्य वस्तु का स्वरूप जानकर शंका उत्पन्न होवे १२ नियमान्तर से - जब यावज्जीव पर्यंत सामा-

मतांतरसे भं० भंगोकेअंतरमे ण० नयांतर से णि० नियमांतरसे प० प्रमाणांतरसे स० शंकित क० वाञ्छा वाला वि० संदेह वाला क० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ १७ ॥ से० भगवन् तं० वही स० सत्य नी० शंकारहित जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम स० यह ए० ऐसे भ० भगवन् ॥१॥३॥ ※

णयतरहिं, णियमतरेहिं, पमाणतरेहिं, सकिया कखिया, वितिगिच्छिया, भेदसमावण्णा, कलुससमावण्णा, एव खलु समणा निग्गथा कखा मोहणिज कम्म वेदति ॥ १७ ॥ सेणूण भते ! तमव सच्च नीसक ज जिणेहिं पवेइय? हता गोयमा तमव सच्च नीसक एव जाव पुरिसक्कार परक्कमइवा ॥ सेवमते भते ! त्ति पढमसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ३ ॥ × +

पिकादिक का प्रत्याख्यान है तो महरसी वगैरह की क्या विशेषता है ऐसी शंका करे १३ प्रमाणान्तर से-प्रत्यक्ष प्रमाण व आगम प्रमाणमें भेद क्यों ? आगम प्रमाण मे सूर्य ८०० योजन ऊंचे उदित होता है और चक्षु दृष्टि से जमीन में से नीकलता हुवा दीखता है इस में शंका उत्पन्न होवे इस तरह तेरह प्रकार की शंका उत्पन्न होवे, मिथ्या दर्शन की वांच्छा होवे, धर्म करणी में फलका संदेह लावे, सत्य असत्यका भेद करे, मतिभ्रम होने से कालुष्यतावाले बने, इसी कारण से श्रमण निर्ग्रंथ कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवानने प्ररूपा है वह सत्य है ? हां गौतम ! जो जिन भगवानने प्ररूपा है वही नि शंक सत्य है ऐसे ही पुरुषात्कार पराक्रमतक कहना श्री गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! जैसे आप प्ररूपते हैं वह सब सत्य है यह पहिला शतकका तीसरा उद्देशा

क० कितनी भ० भगवन् क० कर्म प्रकृति प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ कर्म प्रकृति प० प्ररूपी क० कर्म प्रकृतिका प० पहिला उद्देशा ने० जानना जा० यावत् अ० अनुभाग क० कितनी क० कर्म प्रकृति क० कैसे बं० बांध क० कितने ठा० स्थानमें ब० बांधे प० प्रकृति क० कितनी वे० वेदे प० प्रकृति अ० अनुभाग क० कितना प्रकारका क० किसका ॥ १ ॥ जी० जीव भ० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये

कतिण भंते ! कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ, । कम्म पयडीए पढमोउद्देसो नेयव्वो ॥ जाव अणुभागो सम्मत्तो ॥ गाहा—कति पगडी कहिं बंधइ । कतिहिं ठाणेहिं बंधए पगडी ॥ कइ वेदेइ च पगडी । अणुभागो कतिविहो कस्स ॥ १ ॥ १ ॥ जीवेण भंते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उदिण्णे-

गत उद्देशे में कर्म की वेदना उदीरणा आदिका कथन किया है अब इस उद्देशे में कर्म का स्वरूप बताते हैं अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृतियों कही ? अहो गौतम ! कर्म की मूल आठ प्रकृति कही इन का विस्तार पूर्वक कथन पन्नवणा सूत्र के तेवीसवा पद के प्रथम उद्देशे में कहा है उस में से अनुभाग तक का जानना उस का संक्षेप में अर्थ बतानेवाली संग्रह गाथा कहते हैं १ कितनी कर्म प्रकृतियों २ प्रकृति कैसे बांधे ३ कितने स्थानक में प्रकृति बांधे, ४ कितनी प्रकृति वेदे और ५ कितने प्रकार का अनुभाग होवे ऐसे पांच द्वार कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व मोहनीय से कराये हुवे

क०कर्म उ०उदय से के उ०अगीकारकरे ह०हां गो०गौतम उ०अंगीकारकरे से०वह भ०भगवन् किं०क्या वी० वीर्यपने उ० अगीकार करे अ० अवीर्यपने उ०अगीकार करे गो०गौतम वी० वीर्यपने उ० अंगीकार करे णा० नहीं अ० अवीर्यपने उ० अंगीकार कर ज० यदि वी० वीर्यपने उ० अंगीकार करे किं० क्या बा० बाल वीर्यपने उ० अंगीकार करे पं० पंडितवीर्य पने उ० अगीकार करे बा० बाल पडित वीर्यपने उ०

ण उवट्ठाएज्जा ? हता गोयमा ! उवट्ठाएज्जा । से भंते! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, णो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, किं बाल वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, पडित वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, बालपडित वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! बाल वी-

कर्मों के उदय से क्या जीव परलोक क्रिया अगीकार करे अर्थात् अन्य दर्शनी बने ? हां गौतम ! अन्य दर्शनी बने अहो भगवन् ! जीव वीर्य सहित अन्य दर्शन अगीकार करे अथवा वीर्य रहित अगीकार करे ? अहो गौतम ! जीव वीर्य से परलोक क्रिया अगीकार करे परतु वीर्य रहितपने अगीकार करे नहीं अहो भगवन् ! यदि वीर्य से परलोक क्रिया अगीकारकरे तो क्या बल वीर्य से, पडित वीर्य से अथवा बालपडित वीर्य से परलोक क्रिया अंगीकार करे ? अहो गौतम ! मिथ्यात्व के उदय से मिथ्या-दृष्टिपना से जीव को जो बाल वीर्य स्थिर रहता है उस से ही अन्य दर्शन अगीकार करता है, पंडित

क० कितनी भ० भगवन् क० कर्म प्रकृति प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ कर्म प्रकृति प० प्ररूपी क० कर्म प्रकृतिका प० पहिला उद्देशा ने० जानना जा० यावत् अ० अनुभाग क० कितनी क० कर्म प्रकृति क० कैसे ब० बांध क० कितने ठा० स्थानमें ब० बांधे प० प्रकृति क० कितनी वे० वेदे प० प्रकृति अ० अनुभाग क० कितना प्रकारका क० किसका ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये

कतिण भंते ! कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ, । कम्म पयडीए पढमोउद्देसो नेयव्वो ॥ जाव अणुभागो सम्मत्तो ॥ गाहा—कति पगडी कहिं बंधइ । कतिहिं ठाणेहिं बंधए पगडी ॥ कइ वेदेइ च पगडी । अणुभागो कतिविहो कस्स ॥ १ ॥ १ ॥ जीवेण भंते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उदिण्णे-

गत उद्देशे में कर्म की वेदना उदीरणा आदिका कथन किया है अब इस उद्देशे में कर्म का स्वरूप बताते हैं अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृतियों कही ? अहो गौतम ! कर्म की मूल आठ प्रकृति कही इन का विस्तार पूर्वक कथन पन्नवणा सूत्र के तेवीसवा पद के प्रथम उद्देशे में कहा है उस में से अनुभाग तक का जानना उस का संक्षेप में अर्थ बतानेवाली संग्रह गाथा कहते हैं १ कितनी कर्म प्रकृतियों २ प्रकृति कैसे बांधे ३ कितने स्थानक में प्रकृति बांधे, ४ कितनी प्रकृति वेदे और ५ कितने प्रकार का अनुभाग होवे ऐसे पांच द्वार कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व मोहनीय से कराये हुवे

सि० कदाचित् बा० बालपंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे ॥ ३ ॥ ज० जैसे उ० उदयमें दो० दोआलापक त० तैसे उ० उपशांत में दो० दोआलापक मा० कहना ण० विशेष उ० अंगीकार करे प० पंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे बा० बालपंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे ॥ ४ ॥ से वह भ० भगवन् किं० क्या आ० आ-

वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, ॥ ३ ॥ जहा उदिन्नेण दो आलावगा, तहा उवसतेणवि दो आलावगा भाणियव्वा, णवरं उवट्ठाएज्जा, पडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, बाल पडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, ॥ ४ ॥ से भंते ! किं आयाए अवक्कमइ, अणायाए

वीर्य से अपक्रमे अर्थात् बाल पंडित वीर्य से देशविरति (श्रावक) होता है पाठान्तर ऐसा भी है कि मात्र बालवीर्यपने मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उदयसे अपक्रमे परतु अन्य दो वीर्य सहित अपक्रमे नहीं ॥ ३ ॥ जैसे उदय का दो आलापक कहा वैसेही उपशान्तका दो आलापक जानना इन में विशेष इतना कि पहिला आलापक में क्रिया करते सर्वथा मोहनीय उपशान्त रहे इसलिये उपशान्त मोह अवस्था में पंडित वीर्य का भाव है और अन्य दो का अभाव है दूसरा आलापक मे संयतपना से मोह-नीय कर्म उपशमा और बाल पंडित वीर्य से पीछा पडकर देश विरति हुवा उनको मोहनीय कर्म के उप-शम का सद्भाव है परतु मिथ्यात्वी नहीं हुवा है क्यों कि मोह के उदय से ही मिथ्यात्वी होवे परंतु यहां पर मोह मिथ्यात्व के उपशम का अधिकार है ॥ ४ ॥ अब सामान्य से अपक्रम का अधिकार चलता

अंगीकार करे गो० गौतम बा० बालवीर्य पने उ० अंगीकार करे णो० नहीं प० पंडित वीर्यपने नो० नहीं बा० बाल पंडित वीर्यपने ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये क० कर्म के उ० उदयसे अ० अतिक्रमे हं० हां अ० अतिक्रमे से० वह भं० भगवन् जा० यावत् बा० बाल पंडित वीर्य पने अ० अतिक्रमे

रियत्ताए उवट्ठाएज्जा णो पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, णो बाल पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥ २ ॥ जीवेण भंते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उदिन्नेण अवक्कमेज्जा? हंता अवक्कमेज्जा से भंते ! जाव बालपंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? गोयमा ! बाल वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, नो पंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा सिय बाल पंडिय

वीर्य व बाल पंडित वीर्य से अंगीकार नहीं करता है ॥ २ ॥ अब अपक्रमण सो पीछा पडना उस संबंध में प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! जीव मोहनीय कर्म के उदय से अपक्रमता है, उपर के गुणस्थान पर गया हुवा पीछा पडता है ? हां गौतम! जीव मोहनीय कर्म के उदय से उत्तम गुणस्थान से हीन गुणस्थान को जाता है अहो भगवन् ! क्या वीर्य सहित जाता है या वीर्य रहित जाता है ? अहो गौतम ! वीर्य सहित जाता है यदि वीर्य सहित जाता है तो क्या बाल वीर्य से, पंडित वीर्य से या बाल पंडित वीर्य से जाता है ? अहो गौतम ! बाल वीर्य से अपक्रमे परंतु पंडित वीर्य से अपक्रमे नहीं कदाचित् बाल पंडित

की ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव जे० जो क० किये पा० पापकर्म ण० नहीं हैं त० उनका अ० विना-भोगवा मो० मोक्ष हं० हां गो० गोतम ने० नारकी ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव को जा० यावत् मो० मोक्ष से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० एसे वु० कहाजाता है न० नारकी जा० यावत् मो०

णियस्सवा, मणुस्सस्सवा, देवस्सवा जे कडे पावे कम्म णत्थि तस्स अवेइयत्ता मो-क्खो ? हंता गोयमा ! णेरइयस्सवा, तिरिक्ख मणुस्स देवस्सवा जाव मोक्खो। सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ, नेरइयस्सवा जाव मोक्खो ? एव खलुमए गोयमा !

सामान्य कर्म की चिन्तवना कहते हैं अहो भगवन् ! नरक, तिर्यंच, मनुष्य, व देवताने अशुभाचरण से जो पापकर्म किये हैं उन को वेदे विना क्या वे मुक्त नहीं हो सकते हैं ? हां गोतम ! नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवताने जो पापकर्म किये हैं उन को विना वेदे वे मुक्त नहीं हो सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी तिर्यंच, मनुष्य व देवता किय हुवे कर्मों से विना वेदे नहीं छूट सकते हैं ? अहो गोतम ! कर्म के दो भेद मैंने कहे हैं प्रदेश कर्म व अनुभाग कर्म उस में से जो प्रदेश कर्म हैं वे निश्चय ही जैसे किये वैसे ही वेदते हैं, और अनुभाग कर्म को कितनेक वेदते हैं, और कितनेक नहीं वेदते हैं जैसे मि-थ्यात्व क्षयोपशम काल में प्रदेश कर्म वेदे परंतु अनुभाग कर्म वेदे नहीं कर्म वेदने के प्रकार अरिहंत देखने ही जाने हैं, अरिहंतने उपदेशे हैं, उन्होंने ही उन का चिन्तवन किया है, य द्रव्य क्षेत्र काल भा-

त्मा से भ० अतिक्रमे अ० परात्मा से अतिक्रमे गो० गौतम आ० आत्मासे अ० अतिक्रमे णो० नहीं प० परात्मासे अ० अतिक्रमे मो० मोहनीय क० कर्म वे० वेदता से० वह क० कैसे ए० यह भ० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम पु० पहिले से० वह ए० यह ए० ऐसा रो० रुचे इ० पीछे से० वह ए० यह ए० ऐसा णो० नहीं रो० रुचे ए० ऐसे ख० निश्चय ए० यह ॥८॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् ने० नार-

अवक्कमइ ? गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, णो अणायाए अवक्कमइ । मोहणिज्ज कम्म वेदेमाणे । सेकहमेय भंते ! एवं ? गोयमा ! पुव्वि से एयं एवं रोयइ, इयाणिं से एय एवं नो रोयइ, एवं खलु एय एवं ॥ ९ ॥ सेणूण भंते ! नेरइयस्सवा, तिरिक्ख जो-

अहो भगवन् ! जीव अपनी आत्मासे अपक्रमता है या अन्य की आत्मा से अपक्रमता है. अहो गौतम ! जीव मिथ्यात्व मोहनीय व चारित्र मोहनीय वेदता हुवा अपनी आत्मा से अपक्रमे परतु अन्यकी आत्मा से अपक्रमे नहीं अहो भगवन् ! मोहनीय कर्म वेदनेवाले को पहिले पंडितपने की रुचि थी और फीर मिथ्यात्व की रुचि हुई वह कैसे ? अहो गौतम ! अपक्रमण से पहिले अपक्रमणकारी जीव इस जीवादि पदार्थ अथवा अहिंसादि वस्तु को जैसे जिनेश्वर भगवान्ने कहीं वैसे ही श्रद्धता था; अब मोहनीय कर्म के उदय से जीवादि पदार्थ व अहिंसादिक वस्तु को जैसे तीर्थंकरने कही वैसे श्रद्धे नहीं इसलिये निश्चय में उक्त प्रकार से मोहनीय कर्म वेदते हुवे जीव स्वात्मा से अपक्रमे ॥ ८ ॥ मोहनीय कर्म के अधिकार से

लिये गो० गौतम ने० नारकी जा० यावत् मो० मोक्ष ॥ ५ ॥ ए० यह भं० भगवन् पो० पुद्गल ती० अ-
तीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल भु० हुवा इ० ऐसे व० कहना हं० हां गो० गौतम ए०
यह पो० पुद्गल ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल भु० हुवा इ० ऐसा व० कहना
ए० यह भ० भगवन् पो० पुद्गल प० वर्तमान काल में सा० शाश्वत स० काल भ० है इ० ऐसा व० कहना

गरणं, जहा जहा त भगवया दिट्ठ तहा तहा तंविपरिणमिस्सतीति सेतेणट्ठेणं
गोयमा ! नेरइयस्सवा जाव मोक्खो ॥ ६ ॥ एसणं भंते ! पोग्गले तीतमणंत सासयं
समयं भुवीति वत्तव्वंसिया ? हंता गोयमा ! एसणं पोग्गले तीतमणंतं सासयं
समयं भुवीति वत्तव्वं सिया । एसणं भंते ! पोग्गले पडुप्पण्णसासयं समयं
भवतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! तचेव उच्चारेयव्वं । एसणं भंते ! पोग्गले

नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता किये हुवे कर्मों से मुक्त नहीं हो सकते हैं ॥ ५ ॥ उपर कर्म की चिन्त-
वना की यह कर्म पुद्गल रूप हैं इस लिये परमाणु आदि पुद्गल की चिन्तवना कहते हैं अथवा परि-
णाम अधिकार से पुद्गल परिणाम कहते हैं अहो भगवन् ! अतीत काल में सब पुद्गल अनंत, शाश्वत थे
ऐसा कहना ? हां गौतम ! परमाणु पुद्गल अतीत काल में सदा थे ऐसा कदापि नहीं हुवा कि अतीत
काल में शून्य समय [काल] हुवा अहो भगवन् ! वर्तमान काल में सब पुद्गल क्या शाश्वत है ऐसा

मोरा प० ऐसे म० मैंने दु० दोप्रकारे क० कर्म प० प्रदेशप०प्रदेश कर्म अ० अनुभाग कर्म त० तहां जं० जो प० प्रदेश कर्म तं० उस को णि० निश्चय वे० वेदे जं० जो अ० अनुभाग कर्म तं० उस को अ० कित नेक वे० वेदे अ० कितनेक नो० नहीं वे० वेदे णा० जाना अ० अरिहंतने सु० सुना अ० अरिहंतने वि० विशेषजाना अ० अरिहंतने इ० इस कर्म को अ० यह जीव उ० उदय आये वे० वेदना वे० वेदेगा अ० जैसे कर्म अ० बांधे हैं अ० वैसे त० उनको भ० भगवन्तने दि० देखे त० तैसे प० परिणमेंगे से० इस

दुविहे कम्मे पण्णत्ते तजहा, पएसकम्मेय, अणुभागकम्मेय । तत्थण जं तं पएसकम्मं त नियमा वेदेइ, तत्थण जं तं अणुभागकंमं त अत्थेगइय वेदेइ अत्थेगइय नो वेदेइ णायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, विण्णायमयं अरहया, इमं कम्म अयजीवे अब्भोवगमियाए वेयणाए वेयइस्सइ, इमकम्म अय जीवे उवक्कमियाए वेयणाए वेयइस्सइ, अहाकम्म अहाणि

शादिक अनेक प्रकार से भिन्न प्रकार के विभाग करके जाने हैं, अरिहंत को 'यह कर्म है, यह जीव है' ऐसा प्रत्यक्ष है प्रव्रज्या काल से लेकर ब्रह्मचर्य भूमिशयन, केशलोचनादिक का अंगीकार से निवर्तना सो अभ्युपगमिकी वेदना उस को यह जीव वेदेगा स्वयमेव उदय में आये हुवे अथवा उदीरणा से उदय में लाये हुवे कर्मों को वेदना सो औपक्रमिकी वेदना, उस को यह जीव वेदेगा जैसे कर्म बांधे हैं, वैसे कर्म के देश कालादि है और जैसे २ भगवन्तने कर्म देखे वैसे २ परिणमेंगे इसलिये अहो गौतम!

स०काल के०संपूर्ण संयम से के०संपूर्ण संवर से के०संपूर्ण ब्रह्मचर्य स के०संपूर्ण प्रवचन माता से सि० सिझे बु० बुझे जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख का अ० अंतक्रिया गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है जा० यावत् अ० अंत क० किया गो० गौतम जे० जो के० काइ अ० अंत करने वाले अ० चरम शरीरी स० सर्व दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे स० सब ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं बु० बुझते हैं मु० मुक्त होते हैं प० निर्वाणपाने

केवलेणं सवरेण, केवलेणं बमचेरवासेण, केवलीहिं पवयणमायाहिं, सिज्झिसु, बुज्झिसु जाव सव्वदुक्खाणमंत करिंसु ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। सेकेणट्ठेण भंते ! एववुच्चइ, तचेव जाव अंत करिंसु ? गोयमा ! जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाणमंत करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा, सव्वे

केवल संवर से, केवल ब्रह्मचर्य से व केवल आठ प्रवचन माता से सिझे, बुझे, यावत् सब दुःखों का अंत किया ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से छद्मस्थ मनुष्य सिझे, बुझे नहीं यावत् सब दुःखों का अंत किया नहीं ? अहो गौतम ! संसार के अंत करनेवाले व चरम शरीरी ने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं, व करेंगे वे सब केवलज्ञान, केवलदर्शन के

ए० हां गो० गौतम तं० तैसे व० कहना ए० यह भं० भगवन् पो० पुद्गल अ० अनागत में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल भ० होगा इ० ऐसा व० कहना ह० हां गो० गौतम त० तैसे ही उ० कहना ए० ऐसे ख० स्कन्ध में ति० तीन आ० आलापक ॥ ७ ॥ ए० ऐसे जी० जीव में ति० तीन आ० आलापक भा० कहना ॥ ८ ॥ छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य अ० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत

अणागयमणंत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया? हंता गोयमा ! तंचेव उच्चारेयव्वं ॥ एवं खंधेणवितिण्णि आलावगा ॥ ७ ॥ एवं जीवेणवि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ॥ ८ ॥ छउमत्थेण भंते ! मणूसे तीतमणंत सासयं समयं केवलेणं संजमेणं,

कहना ? हां गौतम ! वर्तमान काल में सब पुद्गल शाश्वत है अहो भगवन् ! अनागत काल में सब पुद्गल अनंतपना से शाश्वत रहेंगे ? हां गौतम ! सब पुद्गल शाश्वत रहेंगे (परमाणु पुद्गल का संयोग मीलने से स्कंध होता है उन पर भी तीन आलापक जानना ॥ ७ ॥ पुद्गल का प्रतिपक्षी जीव है इस लिये जीव का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! अतीत काल में जीव था ? अहो गौतम ! जैसे तीन काल के तीन आलापक पुद्गल के कहे वैसे ही भूत, भविष्य व वर्तमान काल की अपेक्षा से जीव के भी तीन आलापक जानना ॥ ८ ॥ अब जीव के अधिकार से उद्देशा के अंत तक यथोत्तर प्रधान जीव की वक्तव्यता करते हैं अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य अतीत, अनंत व शाश्वत काल में संपूर्ण शुद्ध संयम से,

१ इसमें केवल ज्ञान व अवधिज्ञान ऐसे दोनोंज्ञान रहितको लेना क्योंकि अवधिज्ञानका अधिकार आगे आवेगा

स०काल के०सपूर्ण संयम से के०सपूर्ण संवर से के०संपूर्ण ब्रह्मचर्य से के०सपूर्ण प्रवचन माता से सि० सिझे बु० बुझे जा० यावत् स० सर्व दु० दु'ख का अ० अंतक्रिया गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे बु० कहा जाता है जा० यावत् अ० अंत क० किया गो० गौतम जे० जो के० कोइ अ० अंत करने वाले अ० चरम शरीरी स० सर्व दु० दु'खों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे भ० सब ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं बु० बुझते हैं मु० मुक्त होते हैं प० निर्वाणपाते

केवलेणं संवरेण, केवलेण बंभचेरवासेण, केवलीहिं पवयणमायाहिं, सिज्झिसु, बुज्झिंसु जाव सव्वदुक्खाणमंत करिंसु ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ! सेकेणट्ठेणं भंते ! एवमुच्चइ, तच्चेव जाव अंत करिंसु ? गोयमा ! जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाणमंत करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा, सव्वे

केवल संवर से, केवल ब्रह्मचर्य से व केवल आठ प्रवचन माता से सिझे, बुझे, यावत् सब दुःखों का अंत किया ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से छद्मस्थ मनुष्य सिझे, बुझे नहीं यावत् सब दुःखों का अंत किया नहीं ? अहो गौतम ! संसार के अंत करनेवाले व चरम शरीरी ने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं, व करेंगे वे सब केवलज्ञान, केवलदर्शन के

है जा० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम जा० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंतक्रिया प० वर्तमान में ए० एसे न० विशेष सि० सिझते हैं भा० कहना अ० अनागत में ए० ऐसे न० विशेष सि० सिझेंगे भा० कहना ॥ ९ ॥ ज० जैसे छ० छद्मस्थ त० तैसे अ० अवधि त० तैसे प० परमावधि ति० तीन २ आ० आलापक भा० कहना ॥ १० ॥ के० केवली भ० भगवन् म० मनुष्य ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स०

ते उप्पन्न नाणदसणधरा अरहा जिणे केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायति, जाव सव्वदुक्खाणमतं करिंसुवा करितिवा करिस्सतिवा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव सव्व दुक्खाणमत करिंसु । पडुपन्नेवि एव चेव, नवर सिज्झति भाणियव्वं अणागएवि एवचेव, नवर सिज्झिस्सति भाणियव्व ॥ ९ ॥ जहा छउमत्थो तहा आहोहिओवि, तहा परमोहिओवि तिन्नितिन्नि आलावगा भाणियव्वा ॥ १० ॥ केवलीणं भते ! मणूसे तीतमणत सासयं समय जाव अंत करिंसु ? हता

धारक जिन हुवे पीछे सिझते हैं, बुझते हैं व निर्वाण को प्राप्त होते हैं यावत् सब दुःखों का अत किया, करते हैं व करेंगे इसलिये अहो गौतम ! सब दुःखों का अत किया यहां वर्तमान काल में सिझते हैं व भविष्य काल में सिझेंगे कहना शेष सब पहिले जैसे कहना ॥ ९ ॥ जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही अवधि व परम अवधिज्ञानी का जानना ॥ १० ॥ अब केवल ज्ञानी की पृच्छा करते हैं अहो

काल जा॰ यावत् अं॰ अंत किया हं॰ हां गो॰ गौतम जा॰ यावत् अ॰ अंतक्रिया ए॰ ये ति॰ तीन आ॰ भालापक मा॰ कहना छ॰ छद्मस्थ को ज॰ जैसे ण॰ विशेष सि॰ सिझे सि॰ सिझते हैं सि॰ सिझेंगे ॥ ११ ॥ से॰ वह भं॰ भगवन् ती॰ अतीत काल में अ॰ अनंत सा॰ शाश्वत स॰ काल प॰ वर्तमान सा॰ शाश्वत स॰ समय अ॰ अनागत अ॰ अनंत सा॰ शाश्वत स॰ समय जे॰ जो के॰ कोई अं॰ अंत करने वाले

गोयमा सिज्झिंसु जाव अंतकरिंसु एते तिन्नि आलावगा भाणियव्वा छउमत्थस्स जहा णवरं सिज्झिंसु सिज्झंति, सिज्झिस्संति ॥ ११ ॥ सेणूणं भंते ! तीतमणंतं सासयं समयं पडुप्पन्नंवा सासयसमयं अणागय मणंतंवा सासयं समयं जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाण

भगवन् ! केवली अतीत शाश्वत काल में सिझे, बुझे यावत् सब दुःखों का अंत किया ? हां गौतम ! सिझे यावत् अंत किया ऐसे अतीत, अनागत व वर्तमान के तीन २ आलापक मानना जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही केवली का जानना मात्र विशेषता यह है कि अतीत काल में सिझे, वर्तमान में सिझते हैं और आगामिक में सिझेंगे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अतीत काल में अनंत शाश्वत समय में वर्तमान का भी शाश्वत समय में, अनागत काल के अनंत शाश्वत समय में जो कोई अंत करनेवाले अन्तिम शरीरीने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं व करेंगे वे क्या सब उत्पन्न केवल ज्ञान, केवल दर्शन के धारक अरिहंत केवली हुवे पीछे सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ? हां गौतम ! अतीत

अ० चरिम शरीरी स० सर्व दु ख का अ० अंतक्रिया क० करता है क० करेगा स० सर्व ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं जा० यावत् अ० अंत क० करेंगे हं० हां गो० गौतम ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए इतना व० कहना हं० हां गो० गौतम उ० उत्पन्न

मत करिंसुवा करिंतिवा, करिस्सतिवा ॥ सव्वेते उप्पण्ण नाण दसण धरा अरहा जिणे केवली भवित्ता, तओ पच्छा सिज्झति जाव अंत करिस्सातिवा ? हंता गोयमा! तीत मणत सासयं जाव अतकरिस्सतिवा ॥ १२ ॥ सेणूण भंते ! उप्पण्ण नाण दसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्व सिया ? हंता गोयमा ! उप्पण्ण

काल के अनत शाश्वत समय में सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अत करते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक, अरिहंत जिन केवली ही सपूर्ण ज्ञानवाले हुवे उन से अधिक ज्ञान प्राप्त करने को अन्य कोई भी समर्थ नहीं है ? हां गोतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक अरिहंत जिन केवली ही सपूर्ण ज्ञानवाले हैं अन्य कोई इस से अधिक ज्ञानी नहीं है अहो भगवन् ! आपने कहा

नाण दसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया सेवं भंते भंतेत्ति पढमसए चउत्थोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ४ ॥ * *

ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उतना व० कहना से० ऐसे ही भं० भगवन् ॥ १ ॥ ४ ॥ + + +

कहणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—रयणप्पभा जाव तमतमा । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कइ निरयावास

क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात पु० पृथ्वी प० प्ररूपी र० रत्न प्रभा जा० यावत् त० तमतम इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पृथ्वी में क० कितने नि० नरकावास

वह वैसे ही है अन्यथा नहीं है यह पहिला शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ४ ॥ ×

पहिले उद्देशे के अंत में अरहतादिक कहे वे पृथ्वी पर हुवे इस लिये इस उद्देशे में पृथ्वी संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! कितनी पृथ्वी कहीं ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कहीं उन के नाम १ रत्नप्रभा इस में रत्नों की प्रभा २ शर्कर प्रभा इस में कंकरों की प्रभा ३ बालु प्रभा जिस में बालु की कान्ति ४ पंक प्रभा जिस में अशुचि रूप कर्दम की कान्ति ५ धूम प्रभा जिस में धूम्र सरिसी कान्ति ६ अंधकार की प्रभा सो तम प्रभा और ७ महा अंधकार की प्रभा सो तमतम प्रभा अहो भगवन् !

अ० चरिम शरीरी स० सर्व दुःख का अ० अंतक्रिया क० करता है क० करेगा स० सर्व ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं जा० यावत् अ० अंत क० करेंगे हं० हां गो० गौतम ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १२ ॥ से० वह भ० भगवन् उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उतना व० कहना हं० हां गो० गौतम उ० उत्पन्न

मत करिंसुवा करिंतिवा, करिस्सतिवा ॥ सव्वेते उप्पण्ण नाण दसण धरा अरहा जिणे केवली भविचा, तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंत करिस्सातिवा ? हंता गोयमा! तीत मणत सासय जाव अतकरिस्सतिवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भते ! उप्पण्ण नाण दसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्व सिया ? हंता गोयमा ! उप्पण्ण

काल के अनत शाश्वत समय में सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक, अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हुवे? उन से अधिक ज्ञान प्राप्त करने को अन्य कोई भी समर्थ नहीं है ? हां गौतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हैं अन्य कोई इस से अधिक ज्ञानी नहीं है अहो भगवन् ! आपने कहा

तीन स० सात वि० विमान स० शत च० चार क० देवलोक में ए० अग्यारह उ०उत्तर हे० नीचे की स० सात उ० उत्तर म० मध्यकी स० शत उ० उपर की प० पांच अ० अनुत्तर विमान में ॥ ३ ॥ पु० पृथ्वी ठि० स्थिति ओ० अवगाहना स० शरीर स० संघयण स० सठाण ले० लेश्या दि० दृष्टि णा० ज्ञान जो० जोग उ० उपयोग द० दश स्थान इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के ती०

एक्कारसुत्तरहेट्ठिमए सत्तुत्तरच माज्झिमए ॥ सयमेय उवरिमए ॥ पचेवय अणुत्तर-विमाणा ॥ ३ ॥ १ ॥ पुढवि ठिइ ओगाहण सरीर सघयण मेव सठाणे ॥ लेस्सा दिट्ठी णाणे, जोगुवओगे य दसठाणा ॥ १ ॥ इमीसेणं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए

अच्युत इन दोनों में तीनसो नवग्रैवेयक की प्रथम त्रिक में १११, दूसरी त्रिक में १०७, तीसरी त्रिक में १०० और उपर पांच अनुत्तर विमान के पांच सब मीलकर ८४९७०२३ विमान हुवे ॥ ३ ॥ अब आगे उद्देशा के लीये द्वार गाथामें बताते हैं १ स्थिति २ अवगाहना ३ शरीर ४ संघयण ५ संठान ६ लेश्या ७ दृष्टि ८ ज्ञान ९ जोग १० उपयोग, इस में प्रथम स्थिति द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में तीस लाख नरकावासमें से प्रत्येक नरकावास में नारकी के कितने स्थिति स्थान कहे हैं ? अहो गौतम ! प्रत्येक नरकावास में असंख्याते स्थिति स्थान कहे हैं क्योंकी प्रथम पृथ्वी की अपेक्षासे नारकी की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति है और एक २ समय बढाते उत्कृष्ट एक सागरोपम की

जो॰ ज्योतिषी वि॰ विमान वास स॰ शत सहस्र सो॰ सौधर्म में भं॰ भगवन् क॰ कितने वि॰ विमान वास स॰ शतसहस्र गो॰ गौतम ब॰ बत्तीस विमानवास स॰ शतसहस्र ए॰ ऐसे ब॰ बत्तीस अ॰ अट्ठा-वीस ब॰ बारह अ॰ आठ च॰ चार स॰ शतसहस्र प॰ पचास च॰ चालीस छ॰ छ स॰ सहस्र स॰ सहस्रार में आ॰ आनत पा॰ प्राणत क॰ देवलोक च॰ चार स॰ शत आ॰ आरण अ॰ अच्युत में ति॰

प॰ ॥ सोहम्मेणं भंते ! कइविमाणा वास सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीस विमाणावास सयसहस्सा प॰ । एव (गाथा) बत्तीसट्ठावीसा, बारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा ॥ पण्णा चत्तालीसाछच्चसहस्सा सहस्सारे ॥१॥ आणय पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ॥ सत्त विमाण सयाइ, चउसुवि एएसु कप्पेसु ॥ २ ॥

अपू, तेऊ, वायु, वनस्पतिकायिक जीव द्वीन्द्रिय, त्रेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, तिर्यंच पचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यंतर व ज्योतिषी के असंख्यात स्थान कहे हैं अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में कितने वास कहे हैं ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख विमान वास कहे हैं दूसरे ईशान देवलोक में अट्ठावीस लाख विमान कहे हैं तीसरे सनत्कुमार में बारह लाख विमान कहे हैं, चौथे माहेन्द्र देवलोक में आठ लाख पांचवे ब्रह्म देवलोक में चार लाख छठे लांतक में ५० हजार, सातवे महाशुक्र में ४० हजार, आठवे सहस्रार में छ हजार नववे आनत दशवे प्राणत में इन दानों देवलोक में चारसो इग्यारवे आरण बारवे

वास स० शत सहस्र में ए० एकेक नि० नरका वास में ज० जघन्य ठि० स्थिति वाले व० वर्तते ने०

सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठिइए वट्टमाणा नेरइया किं को-होवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज. कोहोवउत्ता, अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ताय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्तेय, । अहवा कोहो-वउत्ताय मायोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय लोभोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, लोभोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय, । कोहोवउत्ताय,

प्रकार का है ॥ ८ ॥ अब इन स्थिति स्थान में क्रोधादि विषय का विभाग कर बताते हैं अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासमें से प्रत्येक नरकावास में जघन्य स्थितिवाले नारकीयों हैं उनमें से क्या क्रोधवाले ज्यादा हैं, ? मानवाले ज्यादा हैं ? मायावाले ज्यादा हैं ? अथवा लोभवाले ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! प्रत्येक नरक में जघन्य स्थिति वाले नारकी सदैव रहते हैं उन में क्रोध युक्त विशेष रहते हैं इस से उन के २७ भांगे किये हैं और एकादि से संख्यात समयाधिक जघन्य स्थितिवाले नार की हैं वे कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं भी हैं इसलिये उसमें क्रोध सहित एक भी होवे अनेकभी होवे इससे

वैप न० -रकावास म० मा सहस्र में ए० एकेक नि० नरकावास में ने० नारकी क० कितने ठि० ठि यो में स्थान गो० गौतम अ० असंख्यात ठि० स्थिति स्थान प० प्ररूपे त० वह ज० जघन्य ठि० स्थिति स० समयाधिक न० जघन्य स्थिति दु० दो समयाधिक जा० यावत् अ० असंख्यात समयाधिक ज० जघन्य स्थिति त० उस योग्य उ० उत्कृष्ट ठि० स्थिति ॥४॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी में ती० तीस नि० नरका

तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाण केवइया ठिइ-ट्ठाणा प० ? गोयमा ! असंखेज्जा ठिइट्ठाणा प० त० जहण्णिया ठिई समयाहिया, जहण्णिया ठिई दुसमयाहिया, जाव असंखेज्ज समयाहिया जहण्णिया ठिई तप्पाउ-ग्गुक्कोसिया ठिइ ॥ ४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास

स्थिति होती है उन में असंख्यात समय होते हैं इसलिये असंख्यात स्थिति स्थान होवे वैसेही प्रत्येक नरकावास की अपेक्षासे भी असंख्याते स्थिति स्थान होवे जो रत्नप्रभा के पहिले पाथडे में जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की स्थिति है वह एक स्थिति स्थान वह भी प्रत्येक नरक में भिन्न है उन से एक समय अधिक सो दूसरा जघन्य स्थिति स्थान वह भी अनेक प्रकार का है ऐसेही असंख्यात समय अधिक जघन्य स्थिति स्थान वह भी अनेक प्रकार का है स्थिति स्थानक प्रत्येक नरक व प्रत्येक पाथडे में भिन्न है ऐसेही निरुक्त नरकावास को योग्य उत्कृष्ट स्थिति स्थानक भी अनेक

वास स० शत सहस्र में ए० एकेक नि० नरका वास में ज० जघन्य ठि० स्थिति वाले व० वर्तते ने०

सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि जहण्णियाए ठिईए वट्टमाणा नेरइया किं को-
होवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज.
कोहोवउत्ता, अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय,
माणोवउत्ताय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्तेय, । अहवा कोहो-
वउत्ताय मायोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय लोभोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय,
लोभोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय, । कोहोवउत्ताय,

प्रकार का है ॥ ८ ॥ अब इन स्थिति स्थान में क्रोधादि विषय का विभाग कर बताते हैं अहो भगवन् !
रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासमें स प्रत्येक नरकावास में जघन्य स्थितिवाले नारकीरहे हैं
उनमें से क्या क्रोधवाले ज्यादा हैं, ? मानवाले ज्यादा हैं ? मायावाले ज्यादा हैं ? अथवा लोभवाले ज्यादा
हैं ? अहो गौतम ! प्रत्येक नरक में जघन्य स्थिति वाले नारकी सदैव रहते हैं उन में क्रोध युक्त विशेष
रहते हैं इस से उन के २७ भांगे किये हैं और एकादि से संख्यात समयाधिक जघन्य स्थितिवाले नार-
की हैं वे कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं भी हैं इसलिये उसमें क्रोध सहित एक भी होवे अनेकभी होवे इससे

नारकी किं० क्या को० क्रोधयुक्त म० मा युक्त मा० मायायुक्त लो० लोभयुक्त स० सर्व ता० तैसा

माणोवउत्तेय मायोवउत्ता । कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्तेय । कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता ॥ एवं कोहेणमाणेण लोभेण चत्तारि भगा ॥ अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते मायोवउत्ते, लोभोवउत्ते । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते, मायोवउत्ते लोभोवउत्ता । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ते अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ते, लोभोवउत्ते । अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते, लोभोवउत्ता

इसमें अस्सी भांगे होते हैं एकेन्द्रिय में चारों कषायवाले बहुत हैं इस से इन में भांगा नहीं होता है × अब भांगे के भेद ० ते हैं १ क्रोधवाले बहुत २ क्रोधके बहुत मान के एक ३ क्रोध के बहुत मान के बहुत ४ क्रोध के बहुत माया के एक ५ क्रोध के बहुत माया के बहुत ६ क्रोध के बहुत लोभ के एक ७ क्रोध के बहुत लोभ के बहुत (असंयोगी एक व द्वीसंयोगी ६ मील ७ हुवे) ८ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक मायावंत एक ९ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक व मायावंत बहुत १० क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व

+ जहां विरह है वहां अस्सीभांगे और जहां विरह नहीं है वहां सत्ताइस भांगे होते हैं यह विरह उत्पाद की अपेक्षा से नहीं ग्रहण किया है क्यों की यहांपर चौविस मुहूर्त का उत्पाद विरह कहा है और भांगे भी सत्ताविस ही कहे हैं

हो० होवे ए० ऐसे स० सत्तावीस भं० भागा ने० जानना॥५॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पु०पृथ्वी में ती०तीस

अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्तो अहवा कोहोव-
उत्ता माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता, एव सत्तावीस भगा नेयव्वा ॥ ५ ॥

मायावत एक ११ क्रोधवत बहुत मानवत बहुत व मायावत बहुत १२ बहुत मानवत एक व लोभवत एक १३ क्रोधवत बहुत मानवत एक व लोभवत बहुत १४ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व लोभवत एक १५ क्रोधवत बहुत मानवत बहुत व लोभवत बहुत १६ क्रोधवत बहुत मायावंत एक व लोभवत एक १७ क्रोधवत बहुत मायावत एक व लोभवत बहुत १८ क्रोधवत बहुत मायावत बहुत व लोभवत एक १९ क्रोधवंत बहुत मायावत बहुत व लोभवत बहुत २० क्रोधवत बहुत मानवत एक, मायावंत एक व लोभवत एक २१ क्रोधवंत बहुत मानवत एक मायावंत एक व लोभवंत बहुत २२ क्रोधवत बहुत मानवंत एक मायावत बहुत व लोभवंत एक २३ क्रोधवत बहुत मानवंत बहुत मायावत एक व लोभवत एक २४ क्रोधवत बहुत मानवंत बहुत मायावत एक व लोभवत एक २५ क्रोधवंत बहुत मानवत बहुत मायावत एक व लोभवंत बहुत २६ क्रोधवत बहुत मानवत बहुत मायावंत बहुत व लोभवत एक २७ क्रोधवत बहुत, मानवत बहुत मायावत बहुत व लोभवत बहुत ये सब मीलकर २७ भागे जघन्य स्थिति वाले नारकी में होते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! एक समय से आधिक समय

नि० नरका वास स० शत सहस्र में ए० एकेक नि०नरका षास में स० समयाधिक ज० जघन्य ठि० स्थिति में व० वर्तते ने० नारकी कि० क्या को० क्रोधयुक्त मा० मानयुक्त मा० मायायुक्त लो० लोभयुक्त गो०

इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि समयाहियाए जहण्णट्ठिईए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता ? गोयमा ! कोहोवउत्तेय माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय, लोभोवउत्तेय । कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ताय, मायोवउत्ताय, लोभोवउत्ताय ॥ अहवा

की जघन्य स्थितिवाले नारकी क्या क्रोधवाले ज्यादा हैं मानवाले ज्यादे हैं मायावाले ज्यादा हैं या लोभवाले ज्यादा है ? अहो गौतम ! एक समय से अधिक समय की व संख्यात समय से अधिक समय की जघन्य स्थिति वाले नारकी होवे और नभी होवे इसलिये इन में अस्सी भांग होते हैं उस में असंयोगी आठ भांग १ क्रोध का एक २ मान का एक ३ माया का एक ४ लोभ का एक ५ क्रोध का बहुत ६ मान का बहुत ७ माया का बहुत व ८ लोभ का बहुत द्विसंयोगी भांगे २४ १ क्रोधवंत एक मानवंत एक २ क्रोधवंत एक मानवंत बहुत ३ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक ४ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत ५ क्रोधवंत एक मायावंत एक ६ क्रोधवंत एक मायावंत बहुत ७ क्रोधवंत बहुत मायावंत एक ८ क्रोधवंत बहुत मायावंत बहुत ९ क्रोधवंत एक लोभवंत एक १० क्रोधवंत एक लोभवंत बहुत ११ क्रोधवंत बहुत लोभवंत

गौतम को• क्रोधयुक्त मा० मानयुक्त मा• मायायुक्त लो० लोभयुक्त ए• ऐसे अ० अस्सी भं० भांगा ने० जानना ए० ऐसे जा० यावत् सं० संख्यात स० समयाधिक ठि० स्थिति वाले अ० असख्यात स० समयाधिक स्थिति वाले त० तस्योग्य उ० उत्कृष्ट ठि० स्थिति वाले स० सत्ताबीस भं० भांगे भा० कहना ॥६॥

कोहोवउत्तेय, माणोवउत्तेय अहवा कोहोवउत्तेय माणोवउत्ताय एवं असीइ भगा नेयव्वा ॥ एवं जाव संखेज्ज समयाहिया ठिई, असंखेज्ज समयाहिया ठिईए, तप्पाउग्गुक्कोसियाए ठिईए सत्तावीस भगा भाणियव्वा॥६॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास

एक १२ क्रोधवंत बहुत लोभवंत बहुत १३ मानवंत एक मायावंत एक १४ मानवंत एक मायावंत बहुत १५ मानवंत बहुत मायावंत एक १६ मानवंत बहुत मायावंत बहुत १७ मानवंत एक लोभवंत एक १८ मानवंत एक लोभवंत बहुत १९ मानवंत बहुत लोभवंत एक २० मानवंत बहुत व लोभवंत बहुत २१ मायावंत एक लोभवंत एक २२ मायावंत एक लोभवंत बहुत २३ मायावंत बहुत लोभवंत एक २४ मायावंत बहुत व लोभवंत बहुत त्रिसंयोगी भांगे ३२ व क्रोधवंत, मानवंत मायावंत एक, अनेक ऐसे मीलकर ३२ भांगे होते हैं और चतु संयोग के १६ भांगे होते हैं यों सब मील कर जघन्य स्थिति के नारकी में एक से अस्सी पर्यंत भांग होते हैं और संख्यात समय से अधिक समय तक के जघन्य स्थिति वाले नारकी से लगाकर उत्कृष्ट स्थिति वाले तक सत्ताबीस भांगे होते हैं यह प्रथमद्वार हुआ

द्० दंडकी भां० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अवि ग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भ० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

भाणियव्वं ॥ एवं णाणत्त, एव सव्वेवि सोलसदंडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सियविग्गह गइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एव जाव वेमाणिए॥ जीवाण भंते ! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाण भंते ! किं विग्गहगइ

प चवण प्राय गति पूर्वक होता है इसलिये आगे गति का वर्णन करते हैं अहो भगवन् ! गति करते जीव क्या विग्रह गति से जाता है या अविग्रह गति से जाता है ? अहो गौतम ! किसी समय जीव विग्रह गति से जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं ? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी विग्रह

गति स० मात्र अ० अविग्रहगति स०मात्र गो०गातम स० मर्व ता० तैसे हा० होवे ए० एसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भांग ॥ ८ ॥ दे० देव भ० भगवन् म० महर्द्धिक म०ज्योतिवंत म०बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म०महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुगं

समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि तावहोज्जा अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भगो ॥ ८ ॥ देवेण भंते , महड्ढिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविवक्कतिय चयमाणे किंचिकाल हिरवत्तिय दुग-

गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले है ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेप होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है इस के तीन भांगे होते हैं १ नारकी में सब जीव अविग्रहगति सयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगति वंत बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

च्छा प० परीषह आ० आहार नो० नहीं आ० आहार करे आ० आहारकरे आ० आहार करता आ० आहार करे प० परिणमता प०परिणमे प० क्षीण आ० आयुष्य वाला भ० होवे ज० जहां उ० उपजे त० उस आ० आयुष्य प०अनुभवे त० उस ति०तिर्यंच आयुष्य म०मनुष्य आयुष्य गो० गौतम दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० मनुष्य आ० आयुष्य ॥ ९ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में व०

छावत्तिय, परिसह वत्तिय, आहार नो आहारेइ, अहेण आहारेइ आहारेज्जमाणे आहारिए,परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणेय आउए भवइ, जत्थ उववज्जइ, तमाउयं पडिसंवेदेइ तिरिक्ख जोणियाउयवा, मणुस्साउयवा ? हंता गोयमा ! देवेणं महड्डिए जाव मणुस्साउय वा ॥९॥ जीवेण भंते ! गब्भ वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ,

सुखवाले, व महानुभाव देवों चवन होने का समय पास आया हुवा जानकर माता पिता का क्रीडा स्थान देख लज्जा आने से, शुक्र शोणित का आहार की दुर्गच्छा आने से व पुद्गल ग्रहणरूप अरति परिषह से कितनेक कालतक आहार करे नहीं परंतु पीछे क्षुधा वेदनीय के उदय से आहार करे ऐसा आहार किये हुवे, परिणमाये हुवे व प्रक्षीण आयुष्यवाले देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य क्या वेदे ? हां गौतम ! ऐसा महर्द्धिक देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य वेदे ॥ ९ ॥ गर्भ में उत्पन्न होने के कारन से गर्भ की अव

उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित् अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेण ॥ १० ॥ जीवेण भंते ! गब्भ वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षु व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुये पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती हैं इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ॥ १० ॥ इन्द्रिय

च्छा प० परिषह आ० आहार नो० नहीं आ० आहार करे आ० आहारकरे आ० आहार करता आ० आहार करे प० परिणमता प० परिणमे प० क्षीण आ० आयुष्य वाला भ० होवे ज० जहां उ० उपजे त० उस आ० आयुष्य प० अनुभवे त० उस ति० तिर्यंच आयुष्य म० मनुष्य आयुष्य गो० गौतम दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० मनुष्य आ० आयुष्य ॥ ९ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में व०

छावत्तिय, परिसह वत्तिय, आहार नो आहारेइ, अहेण आहारेइ आहारेज्जमाणे आहारिए परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणेय आउए भवइ, जत्थ उववज्जइ, तमाउय पडिसंवेदेइ तिरिक्ख जोणियाउयंवा, मणुस्साउयंवा ? हंता गोयमा ! देवेण महड्डिए जाव मणुस्साउय वा ॥९॥ जीवेण भंते ! गब्भ वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ,

सुखवाले, व महानुभाव देवों चवन होने का समय पास आया हुवा जानकर माता पिता का क्रीडा स्थान देख लज्जा आने से, शुक्र शोणित का आहार की दुर्गच्छा आने से व पुद्गल ग्रहणरूप अराति परिषह से किंचि कालतक आहार करे नहीं परन्तु सबे पीछे क्षुधा वेदनीय के उदय से आहार करे ऐसा आहार किये हुवे, परिणमाये हुवे व प्रक्षीण आयुष्यवाले देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य क्या वेदे ? हां गौतम ! ऐसा महर्द्धिक देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य वेदे ॥ ९ ॥ गर्भ में उत्पन्न होने के कारन से गर्भ की अव-

माहार आ० आहारकरे गा० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम ज० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३॥ जी० जीव का भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओय पिउसुक्क त तदुभय ससिट्ठ क्लुस किब्विस, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेण भते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! ज स माया णाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सण भते ! गब्भगयस्स

है ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिले क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ! गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

क्या स० सशरीरी व० उपजे अ० अशरीरी व० उपजे गो० गौतम सि० कदाचित् स० सशरीरी व० उपजे सि० कदाचित् अ० अशरीरी व० उपजे से० वह के० कैसे गो० गौतम ओ० उदारीक वे० वैक्रेय आ० आहारक प० प्रत्यय अ० अशरीरी ते० तेजस क० कार्माण प० प्रत्यय स० सशरीरी व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ ११ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता प० प्रथम क० कौनसा आ-

असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ, सिय असरीरी वक्कमइ । सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! ओरालिय वेउव्विय आहारयाइ पडुच्च असरीरी वक्कमइ ! तेया कम्माइ पडुच्च ससरीरी वक्कमइ, से तेणट्ठेण गोयमा ॥ ११ ॥ जीवेण भंते ! गब्भ

शरीर को होती है इसलिये शरीर का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या जीव शरीरी उत्पन्न होता है अथवा अशरीरी उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! जीव क्वचित् शरीरी उत्पन्न होता है और क्वचित् अशरीरी उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! किस कारण से ? अहो गौतम ! उदारिक वैक्रेय व आहारक इन तीनों शरीर की अपेक्षा से अशरीरी क्यों की ये तीनों शरीर एक स्थान से चवकर अन्य स्थान में उत्पन्न हुवे पीछे जीव को पाते हैं गमन करते मार्ग में इन तीनों शरीर का अभाव है तेजस व कार्माण शरीर की अपेक्षा से सशरीरी उत्पन्न होते हैं क्यों कि ये दोनों शरीर जीव को संसार अवस्था में सदैव रहते हैं इसलिये ऐसा कहा गया है कि कदाचित् शरीर सहित और कदाचित् शरीर रहित उत्पन्न होता

आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम ज० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३ ॥ जी० जीव का भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

है ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिले क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

वडीनीत पा० लघुनीत खे० थूक सिं श्लेष्म व० वमन पि० पित्त गो० गौतम नो- नहीं इ० यह अर्थ स०
समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गयाहुवा ज० जो आ० आहार करता
है त० उसको चि० इकठा करता है तं० उसको सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ०
हड्डि अ० हड्डिकीमिंजी के० केश म० श्मश्रु रो० रोम न० नखपने से० वह ते० इसलिये ॥ १८ ॥ जी० जीव भ०

समाणस्स अत्थि उच्चारेइवा, पासवणेइवा, खेलेइवा, सिंघाणेइवा, वंतेइवा, पित्तेइवा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जमाहारेइ त चिणाइ, त सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए, अट्ठि अट्ठिमिंज केस मंसुरोम नहत्ताए से तेणट्ठेणं ॥ १४ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे पभूमुहेणं

का भोज आहार करता है ॥ १३ ॥ जहां आहार होता है वहां निहार होता है इसलिये निहार सम्बंधि
प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव को वडीनीत, लघुनीत खेंकार, श्लेष्म, वमन
व पित्त क्या होता है ? अहो गौतम ! गर्भ में रहे हुवे जीव को यह नहीं होता है अहो भगवन् ! ऐसा
नहीं होने का क्या कारण है ? अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव जो आहार करता है वह सब आहार
श्रोत्रेन्द्रियादि पांचों इन्द्रियपने, हड्डी हड्डी की मिंजी, केश, श्मश्रु रोम व नखपने परिणमता है इस लिये
उन जीवों को लघुनीत वडीनीत वगैरह नहीं होते हैं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या

भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

कावलिय आहार आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण ? गोयमा- जीवेण गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ अभिक्खण आहारेइ अभिक्खण परिणामेइ अभिक्खण उस्ससइ अभिक्खण निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा क्वचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है वह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है उस से वह जीव

जीव प० प्रतिबद्ध पु० पुत्रका जीर फु० स्पर्शा हुवा त० इसलिये आ० आहार करे प० परिणमे अ० अथ वा पु० पुत्रका जीव प० प्रतिबद्ध मा०माता का जीव से फु० स्पर्शा हुवा त० इस लिये चि०चिने उ० उप-चेने से० वह ते- इसलिये जा० यावत् नो० नहीं मु० मुख से का० कवल आ० आहार आ० आहार करे ॥ १५ ॥ क० कितने भं० भगवन् मा० माता के अंग गो० गौतम त० तीन मा० माता के अंग प० मरूपे मं० मांस सो० रुधिर म० मस्तक ॥ १६ ॥ क० कितने भं० भगवन् पे० पिता के

फुडा, तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ, अविराविंयण पुत्तजीव पडिबद्धा माउजीव फुडा तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ से तेणट्ठेण जाव नो पभू मुहेण कावलिय आहारं आहारित्तए ॥ १५ ॥ कइण भंते ! माइअंगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ माइयगा पण्णत्ता तजहा मससोणिए मत्थुलुंग ॥ १६ ॥ कइण भंते ! पेइयगा प-

आहार करता है और शरीर में परिणमाता है. दूसरी पुत्रजीवरसहरणी नाडी पुत्रके जीव की साथ बंधी हुई व माता की साथ स्पर्शी हुई है इस से गर्भस्थ जीव के शरीर की वृद्धि होती है इसीसे अहो गौतम ! कवल आहार लेने को गर्भस्थ जीव नहीं समर्थ होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! माता के कितने अंग कहे हैं ? अहो गौतम ! माता के तीन अंग कहे हैं मांस, रुधिर व मस्तक की मींजी फेफसा अथवा कलेजा ऐसा भी अर्थ कितनेक करते हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पिता के कितने अंग हैं ? अहो गौतम !

अंग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अग अ० हाड्ड अ०हड्डिकीभिंज के०केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नख॥१७॥ अ० माता पिता का भ०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल सं० रहे गो गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पावे ए० इतना का० काल स० रहे अ० अब स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

ण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयगा पण्णत्ता तजहा आट्ठि, आट्ठिमिंजा, केसमसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएण भते ! सरीरए केवइय काल सचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइय से काल भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतिय कालं संचिट्ठइ अहेण समए समए वोयसिज्जमाणे चरिम काल समयसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेण

शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्तिसे प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिसे वे० वैक्रेयलब्धिसे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० अवधारकर प० प्रदेश नि० बाहार निकाले वे० वैक्रेय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

भते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! सेण सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणिय आगय सोच्चा निसम्म पएसे नि-

नष्ट होजाते हैं॥ १८ ॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित् गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् राजपुत्र होवे वहां उन को पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्ता हुवे पीछे पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रेय लब्धि की प्राप्ति होवे

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु सैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वा ग म०

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएण सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्रो की सेना साथ संग्राम करे द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बना हुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्तिसे प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिसे वे० वैक्रेयलब्धिसे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० मनधारकर प० प्रदेश नि० बाहार निकाले वे० वैक्रेय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

भते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणिय आगय सोच्चा निसम्म पएसे नि-

नए होजाते हैं. ॥ १८ ॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित् गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् राजपुत्र होवे वहां उन को पूर्ण पर्याप्त बांधकर पर्याप्ता हुए पीछे पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रेय लब्धि की प्राप्ति होवे

कैसे गो० गौतम स० सज्ञी प० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अ० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव धारकर त० पीछे भ० होवे स० वैराग्य मे उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म को कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! सेणं सण्णी पचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अतिए एगमवि आरिय धाम्मिय सुवयण सोच्चा, निसम्म तओ भवइ सवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए, मोक्खकामए, धम्मकंखिए,

कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव गर्भिणी स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

अर्थयुक्त अ० रहाहुवा करण भा० भावना भं० भावता ए० इन अं० अतर में का० काल क० करे ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे से० यह ते० इस लिये गो० गौतम जा० यावत् अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे ॥ १९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० रहाहुवा दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के०

कखिए, अत्थ पिवासिए, रज्जपिवासिए भोगपिवासिए काम पिवासिए, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेस्से, तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते, तदप्पिय करणे तब्भावणा भाविए एयसिण अतरंसि काल करेज्जा नेरइएसु उववज्जइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥ १९ ॥ जीवेण भंते ! गब्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उव-

बनाहुवा, तीन अशुद्ध लेश्या से ध्यानयुक्त, काम भोगों की भावना भावता हुवा व करण करावण व अनुमोदन रूप अध्यवसाय की प्रबलता करता हुवा वह जीव यदि उसी समय काल कर जावे अर्थात् आयुष्य पूर्ण कर के चवे तो वह नरक गतिमें उत्पन्न होवे इसलिये अहो गौतम! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं होते हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव यदि आयुष्य पूर्ण कर जावे तो क्या देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और

फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवें सु० सोवे जा० जगती होवें जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे ह० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवस आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिच्छा आ०

अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठज्जवा, निसीएज्जवा, तुयटेज्जवा, माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा। जीवेण गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकल पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है यह बतलाते हैं अहो भगवन्! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

का कांक्षी पु० पुन्य का कांक्षी स० स्वर्ग का कांक्षी मो० मोक्ष का कांक्षी ध० धर्म पि० पिपासु पु० पुन्य पिपासु स० स्वर्ग पिपासु मो० मोक्ष पिपासु त० उस में चित्त वाला म० मनवाला ले० लेश्या वाला अ० अध्यवसाय वाला अ० अर्थयुक्त अ० अर्पित करण वाला त० उस भा० भावना से भा० भावता ए० इस अ० अंतर में का० काल क० करे दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम ॥ १० ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० गया हुवा उ० उत्पन्न होवे पा० पसली जैसे अ० आम्र

पुण्णकंखिए, सग्गकंखिए, मोक्खकंखिए, धम्मपिवासिए, पुण्णपिवासिए, सग्गपिवासिए, मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेसे तदज्झवसिए, तदट्ठोवउत्ते, तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसिणं अंतरंसि कालं करेज्जा देवलोएसु उववज्जइ सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥ २० ॥ जीवेणं भंते गब्भगए समाणे उत्ताणएवा, पासल्लएवा

कामी, स्वर्ग का कामी व मोक्ष का कामी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्षका कांक्षी, धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्ष का पिपासु, धर्मादिमें तथा प्रकारका चित्तवाला, तन्मय, तीनशुभ लेश्यावन्त, वैसेही अध्यवसाय युक्त, उस अर्थ प्रयोजन युक्त, उसी अर्थ में आत्मा को अर्पण करनेवाला व वैसा भाव को चिन्तवनेवाला यदि उसी समय काल कर जावे तो देवलोक में देवतापने उत्पन्न होता है इस कारन से अहो गौतम ! कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ॥ २० ॥ अब

अवखुज्जएवा, अम्बखुज्जएवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा, माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेण गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवें सु० सोवे जा० जगती होवे जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दु:खी होती दु० दु:खी होवे ह० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दु:खी होवे दु० दु:खी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिर्च्छा आ०

जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकल पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पड़ा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खड़ा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

च्छइ, त्तिणिहाय मावज्जइ, वण्णवज्झाणिय से कम्माइ बद्धाइ, पुट्ठाइ, णिहित्ताइ, कडाइ, पट्ठवियाइ, अभिनिविट्ठाइ, अभिसमण्णगयाइ उदिण्णाइ णोउवसंताइ भवति, तओ भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गधे, दुरसे, दुफासे, अणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, असुभे, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सर अणिट्ठस्सरे, अकंतस्सरे अप्पियस्सरे, असुभस्सरे,

आवे वि० विनाश आ० पावे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म ब० बांधे हुवे पु० स्पर्शे हुवे णि० निकाचित बांधे क० कीये प० स्थापे अ० तीव्र स्थापे अ० सन्मुख आये उ० उदय आये णो० नहीं उ० उपशांत हुवे दु० कुरूप दु० खराबवर्ण वाला दु० दुर्गंधी दु० खराबरस वाला दु० खराब स्पर्श वाला अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ही० हीनस्वर वाला दी० दीनस्वर

प्राप्त होता है तब कितनेक जीव मस्तक से नीकलते हैं, और कितनेक पांव से नीकलते हैं, अथवा माता व जीव दोनों की घात न होवे वैसे नीकलते हैं और अशुभ कर्मोदय से कदाचित् तिर्च्छा होजाता है तो नीकलने व नीकालने के अभाव से मृत्यु को प्राप्त होजाता है अब गर्भ से नीकले बाद जो होता है सो कहते हैं जिनोंने पूर्व भव में पापाचरण व अयोग्य कर्तव्य से निकाचित कर्मों का बंध किया है वैसही जिन को मनुष्य तिर्यंचादि गति, पचेंद्रियादि जाति, त्रसादि नामकर्म से व्यवस्थापित किये, तीव्र अनुभाव से स्थापित किये, उदय सन्मुख हुवे, स्वत की उदीरना से उदय में आये और उपशान्त न हुवे, उन को अशुभ वर्ण, गंध,

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० बध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० यह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयण, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइ नोवद्धाइ पसत्थ णेयव्व जाव आदेज्जवयण पच्चायाएवि भवइ ॥ सेव भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

रस, स्पर्श होवे उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं यह अशुभ कर्म का फलका और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वे शुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे यह सब पुण्य फल जानना अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × × +

च्छइ, विणिहाय मावज्जइ, वण्णवज्झाणिय से कम्माइ बद्धाइ, पुट्ठाइ, णिहिचाइ, कडाइ, पट्ठवियाइ, आभिनिविट्ठाइ, आभिसमण्णगयाइ उदिण्णाइ णोउवसताइ भवति, तओ भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गंधे, दुरसे, दुफासे, आणिट्ठे, अकते, अप्पिए, असुभे, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सर आणिट्ठस्सरे, अकतस्सरे आप्पियस्सरे, असुभस्सरे,

आवे वि० विनाश आ० पावे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म व० बांधे हुवे पु० स्पर्शे हुवे णि० निकाचित बांधे क० कीये प० स्थापे अ० तीव्र स्थापे अ० सन्मुख आये उ० उदय आये णो० नहीं उ० उपशांत हुवे दु० कुरूप दु० खराबवर्ण वाला दु० दुर्गंधी दु० खराबरस वाला दु० खराब स्पर्श वाला अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ही० हीनस्वर वाला दी० दीनस्वर

प्राप्त होता है तब कितनेक जीव मस्तक से नीकलते हैं, और कितनेक पांव से नीकलते हैं, अथवा माता व जीव दोनों की घात न होवे वैसे नीकलते हैं और अशुभ कर्मोदय से कदाचित् तिर्च्छा होजाता है तो नीकलने व नीकालने के अभाव से मृत्यु को प्राप्त होजाता है अब गर्भ से नीकले बाद जो होता है सो कहते हैं जिनोंने पूर्व भव में पापाचरण व अयोग्य कर्तव्य से निकाचित कर्मों का बंध किया है वैसही जिन को मनुष्य तिर्यंचादि गति, पंचेंद्रियादि जाति प्रसादि नामकर्म से व्यवस्थापित किये, तीव्र अनुभाव से स्थापित किये, उदय सन्मुख हुवे, स्वतः की उदीरना से उदय में आये और उपशान्त न हुवे, उन को अशुभ वर्ण, गंध,

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य नि करके ने० रक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त प० पंडित भ० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त प० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत बालेणं मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिमणु-देवाउयपि पकरेइ, । नेरइयाउयपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगत पंडिएण भते ! मणुस्से किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत पंडिएण मणुस्से आउ-

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

प० एकान्त बा० अज्ञानी म० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच का आ०आयुष्य प०बांधे म०मनुष्य का आ०आयुष्य प०बांधे दे०देव का आ० आयुष्य प०बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उपजे ति० तिर्यंच का आ० आयुष्य कि० करके ति० तिर्यंच में उ० उपजे म० मनुष्य का आ० आयुष्य कि० करके म० मनुष्य में उ० उपजे दे० देव का आ० आयुष्य कि०करके दे०देवलोक में उ०उपजे गो० गौतम ए०एकान्त बा०अज्ञानी म० मनुष्य

एगत बालेणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउय पकरेइ, तिरिआउय पकरेइ, मणुआउय पकरेइ, देवाउय पकरेइ, नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जइ, मणुयाउयं किच्चा मणुएसु उववज्जइ, देवाउयं किच्चा देव-

सातवे उद्देशे में गर्भ की वक्तव्यता कही गर्भ आयुष्य से होता है इसलिये आगे आयुष्य संबंधि प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! एकान्त बाल (मिथ्यात्वी) मनुष्य क्या नरक के आयुष्य का बंध करता है, मनुष्य के आयुष्य का बंध करता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध करता है, या देव के आयुष्य का बंध करता है ! और नरक के आयुष्य का बंध कर के क्या नरक में उत्पन्न होता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध कर के तिर्यंच में उत्पन्न होता है, मनुष्य के आयुष्य का बंधकर के मनुष्य में उत्पन्न होता है या देव

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि करके ने० रक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त प० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त प० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

मि० कदाचित् प० बांधे मि० कदाचित् नो० नहीं प० बांधे ज० यदि प० बांधे नो० नहीं णे० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे नो० नहीं ति० तिर्यंच का आ० आयुष्य प० बांधे नो० नहीं म० मनुष्य का आ० आयुष्य प० बांधे दे० देवता का आ० आयुष्य प० बांधे णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे णो० नहीं ति० तिर्यंच नो० नहीं म० मनुष्य दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे जा० यावत् दे० देवका

य सिय पकरेइ सिय णो पकरेइ। जइ पकरेइ णो णेरइयाउय पकरेइ णो तिरियाउय पकरेइ णो मणुयाउय पकरेइ देवाउय पकरेइ णो नेरइयाउय किच्चा णेरइएसु उववज्जइ, णो तिरि नो मणु देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ। सेकेणट्ठेणं जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ? गोयमा! एगत पंडियस्सण मणुस्सस्स केवलमेव दोगईओ पण्णायति तजहा—अत-

पंडित मनुष्य किसी समय आयुष्य का बंध करता है और किसी समय आयुष्य का बंध नहीं करता है जब आयुष्य का बंध करता है, तब नरक तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य नहीं बांधता है और वहां नहीं उत्पन्न होता है परंतु मात्र एक देवगति का आयुष्य बांधता है और वहां उत्पन्न होता है अहो भगवन्! किस कारन से एकान्त पंडित नरक तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य नहीं बांधता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है? अहो गौतम! एकान्त पंडित मनुष्य को केवल दो गति कही? सब कर्मों का अंत करना सो अंतक्रिया और समस्त कर्म क्षय नहीं होने से व पुण्य की वृद्धि होने से

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त प० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अ० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा० बाल पंडित म० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पडिएण भंते ! मणूसे किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेण जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

मे० वह के० कैसे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम बा० श्रावक त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० सुवचन सो० सुनकर नि० अवधारकर दे० देशसे उविरमे दे० देशसे नो० नहीं उविरमे दे० देश प० प्रत्याख्यान करे दे० देश नो० नहीं प० प्रत्याख्यान करे से० इस लिये दे० देश विरति से दे० देश प्रत्याख्यान मे नो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् क० कच्छ द०

पडिएण मणुस्से तहारूवस्स समणस्सवा,माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धम्मिय सुव-यणं सोच्चा निसम्म देस उवरमइ, देस णो उवरमइ, देस पच्चक्खाइ, देस णो पच्चक्खाइ, से तेण देसोवरमइ, देसपच्चक्खाणेण णो णेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ । से तेणट्टेणं जाव देवेसु उववज्जइ ॥ ३ ॥ पुरिसेण भते ! कच्छसि-

बांधे नहीं परंतु देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे अहो भगवन् ! किस कारन से बाल पंडित मनुष्य देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य तथारूप श्रमण माहण की पास से एकान्त आर्यधर्म श्रवणकर अवधारकर देश से निवर्ते, देशसे निवर्ते नहीं, देशसे प्रत्याख्यान करे, देश से प्रत्याख्यान करे नहीं; इस तरह देश से निवर्तने से व प्रत्याख्यान करने से

द्रह उ० पानी द० द्रव्य व० वलय णू० गुप्तस्थान ग० गहन वि० विषम प० पर्वत प० पर्वत वि० विषम स्थान व० वन व० वनविषम स्थान मि० मृगवृत्ति वाला मि० मृगसंकल्प वाला मि० मृगकेवध का अध्यवसायी मि० मृग व० वधकरने को गं० गया हुवा मि० मृग त्ति० ऐसा का० करके अ० अन्य कोई मि० मृग व० मारने को कू० कूटपाश उ० बनावे त० तब भ० भगवन् से० उस पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया च० चारक्रिया प० पांचक्रिया से० वह के० कैसे भ०

वा दहसिवा, उदगसिवा, दवियसिवा, वलयंसिवा, णूमसिवा, गहणसिवा, गहण विदुग्गसिवा, पव्वयसिवा, पव्वय विदुग्गसिवा, वणंसिवा वणविदुग्गसिवा, मियवित्तीए मियसकप्पे, मियपणिहाणे, मियवहाए गंताए एमिएत्ति काओ, अण्णयरस्सामियवहाए, कूडपास उद्दाइ। तओणं भंते! से पुरिसे कइकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए,

नारकी, तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य बांधे नहीं परंतु देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ आयुष्य बंध के कारन भूत क्रियाओं हैं इसलिये क्रिया के संबंध में प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! कच्छ, द्रह, उदक, द्रव्य, वलय, नूम, गहन, गहनविदुर्ग, पर्वत, पर्वत विदुर्ग, वन; व वनविदुर्ग में मृग की वृत्तिवाला, मृग के वध का अध्यवसायवाला, मृग को मारने के लिये एकाग्र चित्त करनेवाला

१ नदी का पानी व वृक्षादि से घेराया हुवा भूमिभाग २ तडागादि में कुंड ३ अल्पजल ४ तृणादिसमुदाय ५ वर्तुलाकार नदी के जल की कुटिलगति वाला प्रदेश ६ गुफाआदिगुप्त स्थान

भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया पं० पांचक्रिया गो० गौतम जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से णो० नहीं ब० बंधन करने से णो० नहीं मा० मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरणी की पा० प्रद्वेषिकी ति० तीन कि० क्रिया प० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने मे बं० बंधन करने से नो० नहीं म०

सिय चउकिरिए, सियपचाकिरिए। से केणट्ठेण भंते? एवं वुच्चइ सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए? गोयमा! जे भविए उद्दवणयाए णो बंधणयाए, णो मारणयाए, ताव चण से पुरिसे काइयाए अहिगरणिणाए, पाउसियाए, तिहिं कि-रियाहिं पुट्ठे। जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, णोमारणयाए तावचण

कोई पुरुष मृग को मारने के लिये कूटपाश करे; तब अहो भगवन्! उस मृगपाश करनेवाले पुरुष को कितनी क्रिया लगती हैं? अहो गौतम! उस मृगपाश बनानेवाले को तीन, चार व पांच क्रिया लगती हैं अहो भगवन्! किस कारन से तीन चार व पांच क्रिया उस पुरुष को लगती हैं? अहो गौतम! जिस को जितने कालतक कूटपाश करने का भाव है परंतु बंधन करने का व मारने का भाव नहीं है उस पुरुष को उतने कालतक तीन क्रियाओं लगती हैं १ गमनादि रूप सो कायिकी क्रिया, कूटपाशा-दिक को उत्पन्न करना सो अधिकरणकी और मृग में दुष्ट भाव रखना सो प्रद्वेषिकी जिस पुरुष को

मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरण की प० प्रद्वेषिकी प० परितापनिकी च० चार कि० क्रिया पु० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से ब० बधन करने से मा० मारने से ता० वहांलग से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी प० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये जा० यावत प० पांच कि० क्रिया ॥ ८ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत व० वन वि० विषम त० तृण ऊ० ऊंचा करके अ० अग्निकाय

से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावचणसे पुरिसे काइ याए जाव पाणाइवाय किरियाए पचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेण जाव पचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेण भते ! कच्छसिवा, जाव वणविदुग्गासिवा, तणाइ ऊसविय २ अ-

जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारने का भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया बढी जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रियाओं लगती हैं कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को कदाचित् तीन, कदाचित चार व कदाचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया प० पांचक्रिया गो० गौतम जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से णो० नहीं ब० बंधन करने से णो० नहीं मा० मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरणी की पा० प्रद्वेषिकी ति० तीन कि० क्रिया प० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने में बं० बंधन करने से नो० नहीं म०

सिय चउकिरिए, सियपचाकिरिए। से केणट्ठेण भंते? एवं वुच्चइ सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए? गोयमा! जे भविए उद्दवणयाए णो बंधणयाए, णो मारणयाए, ताव चणं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए, पाउसियाए, तिहिं कि-रियाहिं पुट्ठे। जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, णोमारणयाए तावंचणं

कोई पुरुष मृग को मारने के लिये कूटपाश करे; तब अहो भगवन्! उस मृगपाश करनेवाले पुरुष को कितनी क्रिया लगती हैं? अहो गौतम! उस मृगपाश बनानेवाले को तीन, चार व पांच क्रिया लगती हैं अहो भगवन्! किस कारन से तीन चार व पांच क्रिया उस पुरुष को लगती हैं? अहो गौतम! जिस का जितने कालतक कूटपाश करने का भाव है परंतु बंधन करने का व मारने का भाव नहीं है उस पुरुष को उतने कालतक तीन क्रियाओं लगती हैं १ गमनादि रूप सो कायिकी क्रिया, कूटपाशा-दिक को उत्पन्न करना सो अधिकरणकी और मृग में दुष्ट भाव रखना सो प्रद्वेषिकी जिस पुरुष को

पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिय गो० गौतम ॥ ५ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत् व० वन वि० विषम मि० मृगवृत्ति वाला मि० मृगसंकल्प वाला मि० मृग मारने का अध्यवसाय वाला मि० मृगवध केलिये ग० गया हुवा मि० मृग ति० ऐसे का० करके अ० किसी एक मि० मृग का व० वधकेलिये उ० बाण नि० निकाले त० तब भ० भगवन् क०

उस्सवणयाएवि, निस्सिरणयाएवि, दहणयाएवि, तावचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! ॥ ५ ॥ पुरिसेणं कच्छंसिवा जाव वणविदुग्गंसिवा मियवित्तीए मियसंकप्पे मिय पणिहाणे, मियवहाए गंताए, एमिए-त्तिकाउं अन्नयरस्स मियस्स वहाए उसु निसिरइ ततोणं भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सियचउकिरिए, सियपंचकिरिए । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा !

इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहागया है कि उक्त पुरुष को कदाचित् तीन चार, व पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! कच्छ यावत् वनदुर्ग में मृगकी वृत्तिवाला, मृगवध का संकल्पवाला, मृग-वध का चिन्तवन करनेवाला, यह मृग है ऐसा कहकर मृग मारने के लिये निकलाहुवा किसी पुरुषने किसी एक मृग को मारने के लिये बाण छोडा उस समय अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं

नि० डाले ता० तब भं० भगवन् से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया सि० कदाचित् प० पांचक्रिया से० यह के० कैसे गो० गौतम जे० जो भ० योग्य उ० ऊंचा करने से ति० तीन उ० ऊंचा करने से नि० डालने से नो० नहीं द० जलाने से च० चार जे० जो० भ० योग्य उ० ऊंचा करने से नि० फेंकने से द० जलाने से से० उस

गणिकायासि निसिरइ तावचण भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए । से केणट्ठेण ? गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि नोदहणयाए चउहिं, जेभविए

अहो भगवन् ! कोई पुरुष कच्छ में यावत् वनदुर्ग में तृणका ढग करके उस में अग्निकाय का प्रक्षेप करे तो उन को कितनी क्रिया लगती हैं ? अहो गौतम ! उन को तीन, चार व पांच क्रियाओं लगती हैं अहो भगवन् ! किस कारन से उन को तीन, चार, व पांच क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! जितना काल पर्यंत तृणका समुदाय एकत्रित करता है उतना कालतक उन को कायिकी अधिकरणकी व प्रद्वेषिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं और तृण एकत्रित कर अग्नि में डाले परंतु जले नहीं वहांतक कायिकी, अधिकरण की, प्रद्वेषिकी, व परितापनिकी ऐसी चार क्रियाओं लगती हैं, और जो तृण एकत्रित करके अग्नि में डालता है और उस में जलता है उसको कायिकी आदि पांचों क्रियाओं लगती हैं

कानतक उ० बाण को आ० खींचकर चि० खडारहे अ० अन्य कोई पु० पुरुष म० पीछेसे आ० आकर स० अपने पा० हस्त से अ० आसिसे सी० शीर्ष छि० छेदे से० वह उ० बाण ता० उस पु० पूर्वाकर्षण से त० उस मि० मृगको वि० विंधे से० वह भ० भगवन् पु० पुरुष किं मि० मृग वैरसे पु० स्पर्शा पु० पुरुष वे० वैरसे पु० स्पर्शा गो० गौतम जे० जो मि० मृगको मा० हने से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शा जे० जो पु० पुरुष को मा० हने से० वह पु० पुरुष वैरसे पु० स्पर्शा से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा

आयय कण्णायय उसु आयामेत्ता चिट्ठिज्जा अन्नयरे पुरिसे मग्गओ आगम्म सय-पाणिणा असिणा सीस छिंदेज्जा, सेय उसू ताएचेव पव्वायामणयाए तमिय विंधेज्जा। सेण भंते ! पुरिसे किं मियवेरेण पुट्ठे पुरिसवेरेण पुट्ठे ? गोयमा ! जेमिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे, जे पुरिस मारेइ से पुरिसवेरेण पुट्ठे। सेकेणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ

अहो भगवन् ! कच्छ यावत् वनदुर्ग में मृग का वध के लिये कोई पुरुष धनुष्य में बाण रखकर कान पर्यंत प्रत्यचा खींच कर खडारहे, उतने में पीछे से अन्य कोई पुरुष आकर अपने हस्त में खड्गलेकर उस मृग वधक का मस्तक छेदे उस समय उस मृग को लक्षकर खींचा हुवा बाण उस पुरुष के हस्त में से छुटकर उसी मृग को भेदे अत्र अहो भगवन् ! उस मस्तक छेदनेवाला पुरुष को क्या मृग का वैर हुआ अथवा पुरुष का वैर हुआ ? अहो गौतम ! जिसने पुरुष को मारा उस को पुरुष का वैर हुवा और जिसने

कितनी कि० क्रिया गो० गौतम सि० कदाचित् ति० तीन क्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया सि० कदाचित् प० पांचक्रिया जे० जो भ० योग्य नि०निकालनेसे ति० तीन जे० जो भ० योग्य नि० निकालनेसे वि० विध्वंस करने से नो० नहीं मा० मारने से च० चार जे० जो भ० योग्य नि० निकालने से वि० विध्वस करने से मा० मारने से से० उस पु० पुरुष को जा० यावत् प० पांचक्रिया ॥ ५ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् क० कच्छ जा० यावत अ० किसी एक मि० मृग का व० वधकेलिय आ०

जे भविए निसिरणयाए तिहिं, जेभविए निसिरणयाएवि, विद्धसणयाएवि, णोमारणयाए चउहिं, जे भविए निसिरणयाएवि, विद्धसणयाएवि, मारणयाएवि, तावचण सेपुरिसे जाव पचकिरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेण गोयमा ! सियतिकिरिए, सिय चउकिरिए, सियपच किरिए ॥ ६ ॥ पुरिसेण भंते ! कच्छसिवा जाव अन्नयरस्सामियस्स वहाए

कही ? अहो गौतम ! क्वचित तीन क्रिया क्वचित चार क्रिया व क्वचित् पांच क्रिया कही हैं अहो भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा ? अहो गौतम ! जो बाण छोडता है उस को कायिकादि तीन क्रिया वहांलग जो बाण छोडकर उस मृग को दुःखी करता है वहांलग उस को चार क्रिया और जो पुरुष बाण छोडता है, मृग को दुःखी करता है, और मार डालता है वहांलग उस पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं इसलिये अहो गौतम ! उक्त पुरुष को क्वचित् तीन चार व पांच क्रिया ओं लगती हैं ॥ ६ ॥

अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् प० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पु० पुरुष भ० भगवन् पु० पुरुष को स० भाला से म० नाभे म स्तत के पा० हस्त मे अ० आसिमे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तब से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष त० उस पु० पुरुष को स-

काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे बाहिं छण्ह मासाणं मरइ, काइयाए जाव पा-
रियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेण भंते ! पुरिस सत्तीए समभि-
सधेज्जा सयपाणिणावा से असिणा सीस छिंदेज्जा । तओण भंते ! से पुरिसे कइकि-

मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है वह मृग यदि छ मास की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति [illegible] से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

---

*यह उपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदेश बतानेको कहा है अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी पांच क्रिया लगती हैं

माता है जा० यावत् से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा से० वह गो० गौतम क० करते को क० किया स० सांधते को स० सांधा नि० खींचते को नि० खींचा नि० निकलते को नि० निकला व० कहना हं० हां भं० भगवन् क० करते का किया जा० यावत् नि० निकला म० जो मि० मृगको मा० हन से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शे जे० जो पु० पुरुष का मा० हने से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शे अ०

जाव से पुरिसवेरेण पुट्ठे । सेणूण गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिए, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाण निसिट्ठेत्ति वत्तव्वसिया । हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठेत्ति वत्तव्वसिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियमारेइ से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेण पुट्ठे, अतो छण्हं मासाणं मरइ-

मृग को मारा उस को मृग का वैर हुआ अहो भगवन् ! यह अर्थ किस तरह से है ? अहो गौतम ! 'कज्जमाणे कडे' करते हुवे को किया अर्थात् धनुष्य बाण करने लगा सो किया, 'संधिज्जमाण संधिए' धनुष्य बाण सांधनेलगा सो संधा, 'निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए' धनुष्य खींचने लगा सो खींचा व 'निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे' धनुष्य में से बाण नीकलनेलगा सो नीकला ऐसा कहा जा सकता है हां भगवन् ! करते को किया हुवा यावत् नीकलते को निकला हुवा कहा जा सकता है इसी से अहो गौतम ! जो मृग मारता है वह मृग का वैर से स्पर्शाता है अर्थात् उन मृग मारनेवाले को मृग का वैर लगता है और पुरुष

अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् प० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पु० पुरुष भ० भगवन् पु० पुरुष को स० भाला से सं० सांधे म० स्वतः के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तब से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष त० उस पु० पुरुष को स-

काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे बाहिं छण्ह मासाणं मरइ, काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेण भंते ! पुरिस सत्तीए समभिसंधेज्जा सयपाणिणावा से असिणा सीस छिंदेज्जा । तओणं भंते ! से पुरिसे कइकि-

मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है वह मृग यदि छ मास की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति भाला से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

* यहांपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदेश बतानेको कहाहै अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी पांच क्रिया लगती हैं

सर्वकाल ए० ऐसे उ० उपर का ए० एकेक को सं० जोडना ओ० जो है० निचे का तं० उन को छ० छोडना ने० मानना जा० यावत् अ० अतीत अ० अनागतकाल प० पीछे स० सर्वकाल जा० यावत् अ० अननुक्रम से सा० वह रो० रोहा से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥१४॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार की भ० भगवन्

एक्केक्कं सजोय, तेण जो जो हेट्ठिल्लो त त छड्डेतेण नेयव्वं जाव अतीय अणागयद्धा, पच्छासव्वद्धा जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेव भंते २ जाव विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समण जाव एव वयासी कइविहाणं भंते ! लोयट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, तंजहा — आगासपइट्ठिए वाए

भी वैसे ही कहना इस में कोई पहिले पीछे नहीं, सब अनुक्रम रहित बराबर हैं सदा शाश्वत है फीर रोहक अनगार बोले की अहो भगवन् ! आपने जो कहा वह वैसे ही है यों कहकर तप संयम से आत्माको भावते हुवे विचरने लगे ॥ १५ ॥ श्री गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! लोक स्थिति कितने प्रकार की है ? अहो गौतम ! लोक स्थिति आठ प्रकार की है १ आकाश प्रतिष्ठित वायु अर्थात् आकाश के आधार से घनवात तनुवात ऐसे दोनों वायु रहे हैं २ वायु के आधार से उदधि है ३ उदधि प्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित त्रस स्थावर प्राणी ५ जीव के आधार से अजीव रहे हैं ६ कर्म के आ-

लो० लोकस्थिति गो० गौतम अ० आठ मकार की लो० लोकस्थिति आ० आकाश प० मतिष्ठित वा० वायु वा० वायु प०मतिष्ठित पु० पृथ्वी पु० पृथ्वी प० मतिष्ठित त० त्रस था० स्थावर माणी अ० अजीव जी० जीव मातिष्ठित जी० जीव क० कर्म प० मतिष्ठित अ० अजीव जी० जीव स० सग्राहित जी० जीव क० कर्म स० सग्राहित ॥ १८ ॥ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० आठ मकार की जा० यावत् जी० जीव क० कर्म सं० सग्राहित गो० गौतम से० वह ज० जैसे के० कोइ पुरुष

वाय पइट्ठिइए उदही, उदहि पइट्ठिया पुढवी, पुढवी पइट्ठिया तसा, थावरा पाणा, अजीवा जीव पइट्ठिया, जीवा कम्मपइट्ठिया, अजीवा जीव सगाहिया, जीवा कम्म सगाहिया ॥ १५ ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ, अट्ठविहा जाव जीवा कम्म सगाहिया ? गोयमा ! सेजहा नामए केइपुरिसे वत्थिमाडोवेइ २ त्ता उप्पिं सिइ

धार से जीव है ७ जीवने अजीव ग्रहण किया, मन भाषा के पुद्गलों जीवने ग्रहण किये ८ कर्म स ग्रहीत ससारी जीव हैं उदय में आये हुवे कर्मों के वश से जो मवर्तते हैं, जो जिस में रहते हैं, वे उस में मतिष्ठित हैं जैसे घटादि में रूप रहने से घटादि मतिष्ठित रूप कहाजाता है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! किस कारन से आठ मकार की लोक स्थिति कही ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष चमडे की मशक में वायु भरे और फीर उस का उपर का मुख बंध कर देवे मुख बंधकर उस मशकके मध्य भाग में

व० मशक को भ्रो० भरेकर उ० उपर सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य में गं० गांठ बं० बांधे उ० उपर की गं० गांठ को मु० छोडे उ० उपर के दे० भाग की वा० नीकाले उ० उपला दे० भाग में आ० पानी पू० भरे उ० उपर का सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य की गं० गांठ को मु० छोडे से० वह गो० गौतम आ० पानी वा० वायु की उ० उपर चि० रहे ह० हां चि० रहे से० वह

बंधइ २ त्ता, मज्झे गंठिं बंधइ २ त्ता, उवरिल्लं गंठिं मुयइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं वामेइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं आउयायस्स पूरेइ २ त्ता, उप्पिं सियं बंधइ २ त्ता, मज्झिल्लं गंठिं मुयइ ॥ सेणूण गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पिं उवरितले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ । से तेणट्ठेण जाव जीवा कम्मसंगहिया, । ॥ (से

दूसरा बंध बांधे, मध्य में बंध बांधकर उपर का मुख खोलकर वायु नीकाल देवे और पानी भरे फीर उस का मुख बांधकर बीच का बंध छोड देवे तो क्या गौतम ! उस मशक में रहे हुवे नीचे के वायु से पानी रह सकता है ? हां भगवन् ! उपर के विभाग में वायु के आधार से पानी रह सकता है तब भगवन्तने कहा कि ऐसे वायु के आधार से मशक में पानी रहा वैसे ही आकाश के आधार से वायु, वायु के आधार से पानी यावत् कर्म संग्रहीत जीव है दूसरा दृष्टान्त ऐसे कोई पुरुष वायु से पूरित चमडे की मशक को कटि से बांधकर पुरुष प्रमाण से अधिक अगाध पानीवाले द्रह में प्रवेश

ते० तैसे जा० यावत् जी० जीव क० कर्म संग्रहित से० वह ज० जैसे के० कोइ पुरुष व० मशक को आ० भरे क० कटि से बं० बांधे अ० अगाध म० तल अ० बहुत पु० पुरुषप्रमाण उ० पानी में ओ० प्रवेश करे से० वह णू० निश्चय गो० गौतम मे० वह पु० पुरुष त० उस आ० पानी की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे ए० ऐसे अ० आठ प्रकार की लो० लोकस्थिति प० प्ररूपी जा० यावत् जी० जीव क० कर्म संग्रहित ॥ १६ ॥ अ० है भ० भगवन् जी० जीव पो० पुद्गल अ० अन्योन्य ब० बंधाये हुवे अ० अन्योन्य

जहावा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ २ त्ता कडीए बधइ अत्थाह मतारम पोरिसिय उदगासि ओग्गाहेज्जा ॥ सेणूण गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ? हता चिट्ठइ ॥ एव वा अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, जाव जीवा कम्म सगहिया ॥१६॥ अत्थिण भते ! जीवा य पोग्गला य अण्णमण्ण वद्धा, अण्णमण्ण

करके आगे जावे तो क्या गौतम ! वह पुरुष पानी पर तीरता हुवा रहता है ? गौतम स्वामी कहते हैं कि वह पुरुष पानी पर ही तीरता हुवा रहता है जैसे वह पानी पर ही तीरता हुवा रहता है वैसे ही अहो गौतम ! आकाश प्रतिष्ठित वायु वगैरह आठ प्रकार की लोक स्थिति कही है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जीव व पुद्गल परस्पर क्या बंधे हुवे हैं ! परस्पर एक २ को स्पर्शे हुवे हैं ? परस्पर चिकनाइ से लगे

पु० स्पर्शाये अ० अन्योन्य ओ० अवगाहे हुवे अ० अन्योन्य सि० स्निग्ध प० बंधाये अ० अन्योन्य घ० घटापने चि० रहते हैं ह० हां अ० है से० वह के० कैसे भ० भगवन् जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम से० वह ज० जैसे ह० द्रह सि० होवे पु० पूर्ण प० प्रतिपूर्ण वो० उछलता वो० विकसता स० सम घ० घटापने चि० रहे अ० अब के० कोइ पु० पुरुष त० उस ह० द्रहमें ए० एक अ० बडा ना० नाव स०

पुट्ठा, अण्णमण्ण मोगाढा, अण्णमण्ण सिणेह पडिबद्धा, अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहा नामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभर घडत्ताए चिट्ठइ ॥ अहेण केइपुरिसे तंसि हरदंसि एग महं नावं सदासवं सयच्छिदं ओगाहेज्जा, सेणूणं गोयमा । सानावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा

हुवे हैं ? भगवन्त कहते हैं कि हां गौतम ! जीव पुद्गल परस्पर बन्धे हुवे रहते हैं यावत् लोली भूत रहते हैं अहो भगवन् ! किस प्रकार से जीव अजीव दोनों बंधे हुवे हैं यावत् लोलीभूत हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई द्रह पानी से परिपूर्ण होवे किंचिन्मात्र खाली न होवे, उस में पानी उछलता होवे, और बहुत सुशोभित होवे, वैसे द्रह में कोई पुरुष एक बडी छिद्रवाली नाव सहित प्रवेश करे अब अहो गौतम ! छिद्रों से आता हुवा पानी से भरकर वह नावा भरे हुवे घडे समान क्या नीचे बैठे ? हां

सदा आश्रव स० शतच्छद् ओ० प्रवेशकरे गो० गौतम मा० मह ना० वो० उछलता वो० वीकसता स०मम घ० घराणपने चि० रहे ह० हां चि० रहे से० वह ते० ऐसे गो० गौतम अ० है जी०जीव जा० यावत् चि० रहे ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० सदैव सु० सुक्ष्म सि० अप्काय प० गीरता है ह० हां अ० है से० वह भं० भगवन् किं० क्या उ० ऊर्ध्व प० गीरे अ० अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प० गीरे गो०

वोसट्टमाणा समभर घडत्ताए चिट्ठइ' हंता चिट्ठइ। से तेणट्ठेण गोयमा! अत्थिण जीवाय जाव चिट्ठति ॥ १७ ॥ अत्थिण भंते सदासमिय सुहुम सिणेहकाये पवडइ ? हंता अत्थि। से भंते ! किंउड्ढं पवडइ, अहेपवडइ, तिरिए पवडइ ? गोयमा उड्ढंवि पवडइ, अहेवि पडवइ, तिरिएवि पवडइ, ॥ १८ ॥ जहा से बादरे आउयाए अण्णमण्ण

भगवन् ! यह नावा पानी भराने से नीचे बैठे ऐसे ही अहो गौतम ! जीव व पुद्गल परस्पर बंधे हुवे, मीले हुवे, यावत् लोलीभूत बने हुवे हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सदैव सूक्ष्म पानी पडता है ? हां गौतम ! सदैव सूक्ष्म अप्काय पडती है अहो भगवन् ! क्या वह ऊपर पडती है, नीचे पडती है, या तिर्यक पडती है ! अहो गौतम ! ऊर्ध्व लोक में वाटलादि पर्वत पर पडती है, अधो लोक में अधोगामिनी विजय में पडती है और तिर्यक् लोक में भी पडती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जैसे बादर पानी की वर्षा होने से वह पानी तडागादि में एकत्रित होकर बहुत काल पर्यंत टिकता है वैसे ही क्या सूक्ष्म अपकाय

पु० स्पर्शाये अ० अन्योन्य ओ० अवगाहे हुवे अ० अन्योन्य सि० स्निग्ध प० बंधाये अ० अन्योन्य घ० घटापने चि० रहते हैं ह० हां अ० है से० वह के० कैसे भ० भगवन् जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम से० वह ज० जैसे ह० द्रह भि० होवे पु० पूर्ण प० प्रतिपूर्ण वो० उछलता वो० विकसता स० सम घ० घटापने चि० रहे अ० अब के० कोइ पु० पुरुष त० उस ह० द्रहमें ए० एक म० बडा ना० नाव स०

पुट्ठा, अण्णमण्ण मोगाढा, अण्णमण्ण सिणेह पडिबद्धा, अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहा नामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभर घडत्ताए चिट्ठइ ॥ अहेण केइपुरिसे तंसि हरदंसि एगं महं नावं सदासवं सयच्छिद्दं ओगाहेज्जा, सेणूणं गोयमा ! सानावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा

हुवे हैं ? भगवन्त कहते हैं कि हां गौतम ! जीव पुद्गल परस्पर बन्धे हुवे रहते हैं यावत् लोली भूत रहते हैं अहो भगवन् ! किस प्रकार से जीव अजीव दोनों बंधे हुवे हैं यावत् लोलीभूत हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई द्रह पानी से परिपूर्ण होवे किंचिन्मात्र खाली न होवे, उस में पानी उछलता होवे, और बहुत सुशोभित होवे, वैसे द्रह में कोई पुरुष एक बडी छिद्रवाली नाव सहित प्रवेश करे अब अहो गौतम ! छिद्रों से आता हुवा पानी से भरकर वह नावा भरे हुवे घडे समान क्या नीचे बैठे ? हां

सदा आश्रव ध० अतच्छद् ओ० मवेशकरे गो० गौतम मा० वह ना० वो० उछलता वो० वीकसता स०मम घ० घडापने चि० रहे ह० हां चि० रहे से० वह ते० ऐसे गो० गौतम अ० है जी०जीव जा० यावत् चि० रहे ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० सदैव सु० सुक्ष्म सि० अप्काय प० गीरता है ह० हां अ० है से० वह भं० भगवन् किं० क्या उ० ऊर्ध्व प० गीरे अ० अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प० गीरे गो०

वोसट्टमाणासभमर घडत्ताए चिट्ठइ' हता चिट्ठइ। से तेणट्ठेण गोयमा!अत्थिण जीवाय जाव चिट्ठति ॥ १७ ॥ अत्थिण भंते सदासमिय सुहुम सिणहकाये पवडइ ? हता अत्थि। से भंते ! किंउड्ढे पवडइ, अहेपवडइ, तिरिए पवडइ ? गोयमा उड्ढेवि पवडइ, अहेवि पडवइ, तिरिएवि पवडइ, ॥ १८ ॥ जहा से बादरे आउयाए अण्णमण्ण

भगवन् ! वह नावा पानी भराने से नीचे बैठे ऐसे ही अहो गौतम ! जीव व पुद्गल परस्पर बंधे हुवे, मीले हुवे, यावत् लोलीभूत बने हुवे हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सदैव सूक्ष्म पानी पडता है ? हां गौतम ! सदैव सूक्ष्म अप्काय पडती है अहो भगवन् ! क्या वह उपर पडती है, नीचे पडती है, या तिर्यक पडती है ? अहो गौतम ! ऊर्ध्व लोक में वाटलादि पर्वत पर पडती है, अधो लोक में अधोगामिनी विजय में पडती है और तिर्यक् लोक में भी पडती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जैसे बादर पानी की वर्षा होने से वह पानी तडागादि में एकत्रित होकर बहुत काल पर्यंत टिकता है वैसे ही क्या सूक्ष्म अपकाय

गौतम उ० ऊर्ध्व प०गीरे अ०अधो प० गीरे तिं० तिर्यक् प०गीरे॥१८॥ ज० जैसे से०वह बा० बादर आ० अपूकाय अ० अन्योन्य स० रहता चि० चिरकाल दी० दीर्घकाल चि० रहे त० तैसे से० वह नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह खि० शीघ्र वि० विध्वंस आ० आता है से० ऐसे भं०भगवन्॥१॥६॥
ने० नारकी भं० भगवन् ने०नरकमें उ० उपजता किं०क्या दे०देशने दे० देश उ० उपजे दे०देश से स० सर्व उ० उपजे स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे गो० गौतम नो० नहीं

समाउत्ते चिरपि दीहकालं चिट्ठइ, तहाण सेवि? णोइणट्ठे समट्ठे। सेण खिप्पामेव वि-द्धंसमागच्छइ ॥ सेव भंते भंतेत्ति पढमे सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१॥६॥
नेरइएण भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेण देसं उववज्जइ, देसेणं सव्वं उवव-ज्जइ, सव्वेण देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ? गोयमा ! नो देसेण देसं उव

भी बहुत काल तक टिकती है? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों की सूक्ष्म अपूकाय बहुत काल पर्यंत नहीं टिकती है अल्प समय में नष्ट होती है गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन्! आपका वचन सत्य है अन्यथा नहीं है यह पहिले शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१॥६॥
छठे उद्देशे में विध्वंस की कथा कही अब सातवे उद्देशे में इससे विपरीत उत्पन्न होने की वक्तव्यता करते

दे० देश से दे० देश उ० उपजे नो० नहीं दे० देशसे स० सर्व उ० उपजे नो० नहीं स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स०सर्व उ०उपजे ज० जैसे ने० नारकी ए० ऐसे जा० यावत् वे०वैमानिक ॥१॥

वज्जइ, नोदेसेण सव्व उववज्जइ, णोसव्वेण देस उववज्जइ, सव्वेण सव्व उववज्जइ ॥ जहा नेरइए, एव जाव वेमाणिए॥ १ ॥ नेरइएण भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे

हे अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न होता * हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न होता है ? क्या अपना एक देश से नारकीका सर्वांगपने उत्पन्न होता है ? क्या अपना सर्वांग से नारकी का एक देशपने उत्पन्न होता है ? अथवा क्या अपना सर्वांग से नारकी का सर्वांगपने उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! नारकी में उत्पन्न होता जीव देश से देश नहीं उत्पन्न होता है, देश से सर्व नहीं उत्पन्न होता है, सर्व से देश नहीं उत्पन्न होता है, परंतु सर्व से सर्व उत्पन्न होता है अर्थात् संपूर्ण जीव नारकी के सर्वांगपने उत्पन्न होता है जैसे नरकका कहा है वैसे ही असुर कुमारादिक से वैमानिक तक के सब दंडक का कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न होता जीव क्या अपना देश से देश का

---

* यहांपर उत्पन्न होताहुवा कहनेसे उत्पन्नहुवा ऐसाही जानना क्योंकी नारकीके आयुष्यका उदय होनेसे अन्य तिर्यञ्चादिकका आयुष्यका अभावहै

गौतम उ० ऊर्ध्व प०गीरे अ०अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प०गीरे॥१८॥ ज० जैसे से वह बा० बादर आ० अप्काय अ० अन्योन्य स० रहता चि० चिरकाल दी० दीर्घकाल चि० रहे त० तैसे से० वह नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह खि० शीघ्र वि० विध्वंस आ० आता है से० ऐसे भ०भगवन्॥१॥६॥

ने० नारकी भं० भगवन् ने०नरकमें उ० उपजता किं०क्या दे०देशने दे० देश उ० उपजे दे०देश से म० सर्व उ० उपजे स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे गो० गौतम नो० नहीं

समाउत्ते चिरपि दीहकालं चिट्ठइ, तहाण सेत्ति? णोइणट्ठे समट्ठे। सेण खिप्पामेव वि-द्धंसमागच्छइ ॥ सेव भते भंतेत्ति पढमे सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१॥६॥

नेरइएण भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं देस उववज्जइ, देसेणं सव्व उवव-ज्जइ, सव्वेण देस उववज्जइ, सव्वेणं सव्व, उववज्जइ ? गोयमा ! नो देसेण देस उव

भी बहुत काल तक टिकती है? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्या की सूक्ष्म अप्काय बहुत काल पर्यंत नहीं टिकती है अल्प समय में नष्ट होती है गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है अन्यथा नहीं है यह पहिले शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१॥६॥

छठे उद्देशे में विध्वंस की कथा कही अब सातवे उद्देशे में इससे विपरीत उत्पन्न होने की वक्तव्यता करते

प० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २ ॥ ने० नारकी भ० भगवन् ने० नरक मे उ० चवता कि० क्या दे० देश से दे०देश उ० चवे ज० जैसे उ० उपजनेमें त० तैसे उ० चवने में द०दंडक भा०कहना॥३॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे० देश आ० आहार करे त०

घा देस आहारेइ, सव्वेण वा सव्व आहारेइ, एव जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ नेरइएणं भते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किं देसेण देस उव्वट्टइ? जहा उववज्जमाणे, तहेव उ-व्वट्टमाणेवि दडगो भाणियव्वो ॥ ३ ॥ नेरइएण भते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेण देस आहारेइ? तहेव जाव सव्वेण वा देस आहारेइ, सव्वेण वा सव्व आहारेइ॥

दंडक का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या अपने देश से देशकी उद्वर्तना करे, देशसे सर्व की उद्वर्तना करे, सर्व से देश की उद्वर्तना करे, या सर्व स सर्व की उद्वर्तना करे? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न आश्रित कहा वैसे ही उद्वर्तन आश्रित जानना इस में सर्व से सर्व उद्वर्तता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या देश से देश पुद्गलों का आहार करे ? देश से सर्व पुद्गलों का आहार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे ? अहो गौतम ! सर्वसे देश का आहार करे व सर्व से सर्व का आहार करे, शेष सब पहिले उपजने के समय आहार का कहा वैसे ही यहां कहना जैसे नरक का उद्वर्तन व आहार का कहा वैसे ही शेष सब

ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक में उ० उपजता किं० क्या दे० देश से दे० देश आ० आहारकरे दे० देश से स० सर्व आ० आहार करे स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं दे० देश से दे० देश आ० आहार करे नो० नहीं दे० देश से स० सर्व आ० आहारकरे स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्वने स० सर्व आ० आहार करे

किं देसेण देस आहारेइ, देसेण सव्वं आहारेइ, सव्वेण देस आहारेइ, सव्वेण सव्वं आहारेइ ? गोयमा ! णो देसेण देस आहारेइ, णो देसेण सव्वं आहारेइ, सव्वेणं

आहार करे ? देश से सर्वका आहार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे ? अहो गौतम ! जीव एक देश से देश पुद्गलों का आहार नहीं करता है, जीव एक देश से सब पुद्गलों का आहार नहीं करता है, परतु उत्पन्न होने के दूसरे समय में ही सब प्रदेश से नरक के देश पुद्गलों का आहार करता है और जीव के समस्त प्रदेश से समस्त पुद्गलों का आहार करता है जैसे उष्ण किया हुवा तेल की कडाइ में पुरी को डालते पहिले पास के तेल को चूम लेती है फीर थोडा बहुत ग्रहण करती है और थोडा बहुत छोडती है इस प्रकार उत्पन्न होने के समय में आहार के ग्रहण योग्य जितने पुद्गलों होवे उन सब को खींच लेता है फीर कितनेक पुद्गलों ग्रहण करता है और कितनेक छोडता है, इन तरह दो प्रकार से नरक के जीव आहार करते हैं जैसे नरक का कहा वैसे ही अन्य सब

प्र० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ १ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् न० नरक में उ० उपजता किं० क्या दे० देश से दे० देश उ० उपजे ज० जैसे उ० उपजने में त० तैसे उ० चवने में दं० दण्डक भा० कहना ॥३॥ ने० नारकी भं० भगवन् नं० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे० देश आ० आहार करे त०

वा देसं आहारेइ, सव्वेण वा सव्वं आहारेइ, एवं जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किं देसेण देसं उव्वट्टइ? जहा उववज्जमाणे, तहेव उ-व्वट्टमाणेवि दंडगो भाणियव्वो ॥ ३ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेण देसं आहारेइ? तहेव जाव सव्वेण वा देसं आहारेइ, सव्वेण वा सव्वं आहारेइ॥

दंडक का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या अपने देश से देशकी उद्वर्तना करे, देशसे सर्व की उद्वर्तना करे, सर्व से देश की उद्वर्तना करे, या सर्व से सर्व की उद्वर्तना करे? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न आश्रित कहा वैसे ही उद्वर्तन आश्रित जानना इस में सर्व से सर्व उद्वर्तता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या देश से देश पुद्गलों का आहार करे ? देश से सर्व पुद्गलों का आहार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे ? अहो गौतम ! सर्व से देश का आहार करे व सर्व से सर्व का आहार करे, शेष सब पहिले उपजने के समय आहार का कहा वैसे ही यहां कहना जैसे नरक का उद्वर्तन व आहार का कहा वैसे ही शेष सब

तैसे जा०यावत् स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे ए० ऐसे जा०यावत् वे० वैमानिक॥४॥ ने० नारकी भ०भगवन् ने० नरक में उ० उत्पन्न हुवा किं० क्या दे० देस से दे० देश उ० उत्पन्न हुवा ए०यह त० तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा ज० जैसे उ० उपजता उ० चवता में च० चार द० दण्डक त० तैसे उ० उत्पन्न हुवा उ० चवा च० चार द० दण्डक भा० कहना स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहारकरे ए०

एव जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेण देस उववण्णे ? एसोवि तहेव जाव सव्वेण सव्व उववण्णे जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणेय चत्तारि दंडगा तहा उववण्णे उव्वट्टणेवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, सव्वेणं सव्व उववण्णे सव्वेण वा देस आहारेइ सव्वेण सव्व

दंडक में जानना ॥ ४ ॥ अब उत्पन्न हुवा व उत्पन्न हुए का आहार संबंधी दो दण्डक कहते हैं अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न हुवा यावत् सर्व से सर्वपने उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! इस का अधिकार उत्पन्न होते हुवे में जैसा कहा वैसा यहां पर कहना उत्पन्न होते व उद्वर्तते के चार दंडक जैसे कहा वैसे ही उत्पन्न हुवे व उद्वर्ते का आहार की साथ चार दंडक भ नना इस में सव से सब उत्पन्न हुवा, उत्पन्न हुए जीव सब से देश का आहार करे, सब

यह अ० अभिलाप से उ० उत्पन्न हुवा उ० चषामें ने० जानना ॥ ५ ॥ ने०नारकी भ० भगवन् ने०नरक में उ० उपजता किं० क्या अ० अर्ध से अ० अर्ध उ० उपजे अ० अर्ध से स सर्व उ० उपजे स० सर्व से अ० अर्ध उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे ज० जैसे प० प्रथम अ० आठ द० दंडक त० तैसे अ० अर्ध में अ० आठ द० दंडक भा० कहना ण० विशेष ज० जहां दे० देश से दे० देश उ० उपजे त० तहां अ० अर्ध स अ० अर्ध उ० उपजे भा० कहना ए० ऐसे ना० नानाप्रकार स० सर्व सो० सोलह

आहारइ एएण आभिलावेणं उववण्णे उव्वट्टेवि नेयव्व ॥ ५ ॥ नेरइएणं भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं अद्धेण अद्धं उववज्जइ, अद्धेण सव्वं उववज्जइ, सव्वेणं अद्ध उववज्जइ, सव्वेण सव्वं उववज्जइ ? जहापढमिल्लेण अट्ठदंडगा तहा अद्धेणवि अट्ठ दंडगा भाणियव्वा णवर जहिं देसेण देस उववज्जइ तहिं अद्धेण अद्ध उववज्जइ त्ति-

से सब का आहार करे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! नरक में उत्पन्न होता जीव क्या अपना अर्ध से अर्ध नारकीपने उत्पन्न होता है, अर्ध से सर्व उत्पन्न होता है, सर्व से अर्ध उत्पन्न होता है, सर्व से सर्व उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! जैसे पहिले देश के आठ दंडक कहे वैसे ही यहां अर्ध के आठ दंडक जानना इतनी भिन्नता कि देश के स्थान में यहां पर अर्ध कहना * ऐसे सब मीलकर सोलह दंडक हुवे ॥ ७ ॥ उत्पन्न

---

* यहां कोई प्रश्न करे कि देश व अर्धमें क्या भिन्नता है ? देशके थोडे, बहुत ऐसे अनेक भेद होते हैं, और अर्धके दो विभागही होते हैं

तैसे जा०यावत् स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे ए० ऐसे जा०यावत् वे० वैमानिक॥ ८॥ ने० नारकी भ०भगवन् ने० नरक में उ० उत्पन्न हुवा किं० क्या दे० देश से दे० देश उ० उत्पन्न हुवा ए०यह त० तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा ज० जैसे उ० उपजता उ० चवता में च० चार दं० दंडक त० तैसे उ० उत्पन्न हुवा उ० चवा च० चार दं० दंडक भा० कहना स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहारकरे ए०

एव जाव वेमाणिया ॥ ८ ॥ नेरइएण भते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेण देस उववण्णे ? एसोवि तहेव जाव सव्वेण सव्व उववण्णे जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणेय चत्तारि दंडगा तहा उववण्णे उव्वट्टणेवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, सव्वेण सव्वं उववण्ण सव्वेण वा देस आहारेइ सव्वेण सव्व

दंडक में जानना ॥ ८ ॥ अब उत्पन्न हुवा व उत्पन्न हुए का आहार संबंधी दो दंडक कहते हैं अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न हुवा यावत् सर्व से सर्वपने उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! इस का अधिकार उत्पन्न होते हुवे में जैसा कहा वैसा यहां पर करना उत्पन्न होते व उद्वर्तते के चार दंडक जैसे कहा वैसे ही उत्पन्न हुवे व उद्वर्ते का आहार की साथ चार दंडक जानना इस में सब से सब उत्पन्न हुवा, उत्पन्न हुए जीव सब से देश का आहार करे, सब

गति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गोतम स० सर्व ता० तैसे हो० होवे ए० एसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भाग ॥ ८ ॥ दे० देव भ० भगवन् म० महर्द्धिक म० ज्योतिवंत म० बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म० महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुगं-

समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ देवेणं भंते ! महड्ढिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविउक्कंतिय चयमाणे किंचिकाल हिरिवत्तिय दुगं-

गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले है ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेष होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है इस के तीन भांगे होते हैं १ नारकी में सब जीव अविग्रहगति संयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगति वंत बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

द० दंडक भा० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भ० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

भाणियव्वं ॥ एव णाणत्त, एव सव्वेवि सोलसदडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सियविग्गह गइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एव जाव वेमाणिए॥ जीवाण भंते! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा? गोयमा! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाण भंते! किं विग्गहगइ

च्यवण प्रायःगति पूर्वक होता है इसलिये आगे गति का वर्णन करते हैं अहो भगवन्! गति करते जीव क्या विग्रह गति मे जाता है या अविग्रह गति से जाता है? अहो गौतम! किसी समय जीव विग्रह गति मे जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! क्या नारकी विग्रह

गति स० भास अ० अविग्रहगति स० भास गो० गौतम म० मर्व ता० तैसे हो० होवे ए० एसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भांग ॥ ८ ॥ दे० देव भ० भगवन् म० महर्द्धिक म० ज्योतिवत म० बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म० महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुर्गं-

समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ देवेणं भंते, महिड्ढिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविउक्कतिय चयमाणे किंचिकाल हिरिवत्तियं, दुगं-

गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेष होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है इस के तीन भांगे होते हैं १ नारकी में सब जीव अविग्रहगति संयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगति वन्त बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

वृ० इहके भा० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भ० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

भाणियव्वं ॥ एव णाणत्त, एव सव्वेवि सोलसदडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सिय विग्गहगइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एव जाव वेमाणिए॥ जीवाण भते! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा? गोयमा! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाण भते! किं विग्गहगइ

प चवण मायागति पूर्वक होता है इसलिये आगे गति का वर्णन करते हैं अहो भगवन्! गति करते जीव क्या विग्रह गति मे जाता है या अविग्रह गति मे जाता है? अहो गौतम! किसी समय जीव विग्रह गति से जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! क्या नारकी विग्रह

उपजता कि० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता कि०

अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेण भंते ! गब्भ वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! किस कारण से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुए पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ॥ १० ॥ इन्द्रिय

उपमता कि० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित अ० अनिद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता कि०

अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ। से केणट्ठेण ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेण ॥ १० ॥ जीवेण भते ! गब्भ वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण चक्षु व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुए पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ॥ १० ॥ इन्द्रिय

उपजता कि० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प मत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० मत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० यह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ। से केणट्ठेण ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइ पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेण ॥ १० ॥ जीवेण भंते ! गब्भ वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! किस कारण से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ॥ १० ॥ इन्द्रिय

उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित अ० अनिन्द्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेण ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेण ॥ १० ॥ जीवेण भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्'गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वाचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि उपकरण रूप, स्पर्शेन, रस, घ्राण, चक्षु, व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित उत्पन्न होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है इसलिये अहो गौतम ! इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ॥ १० ॥ इन्द्रिय

आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीपरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम ज० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३॥ जी० जीव का भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओय पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तंदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

है ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेही क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ! गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

आहार आ० आहारकरे गा० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम ज० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३ ॥ जी० जीव का भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउआय पिउसुक्क तं तदुभय संसिट्ठ कलुस किब्बिस, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेण भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! ज से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सण भंते ! गब्भगयस्स

है ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिले क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ! गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीपरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं०क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम ज० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३॥ जी० जीव का भ० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउआय पिउसुक्क त तदुभय ससिट्ठ कलुस किव्विस, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेण भते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! ज स माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सण भते ! गब्भगयस्स

है ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिले क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने मे किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ! गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

भगवन ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० यह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

कावलिय आहार आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा-जीवेण गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ अभिक्खण आहारेइ अभिक्खण परिणामेइ अभिक्खण उस्ससइ अभिक्खण निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारवार परिणमाता है, वारवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा कदाचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है वह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है उस से वह जीव

भगवन ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

कावलिय आहार आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठ समट्ठे । सेकेणट्ठेण ? गोयमा-जीवेण गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ अभिक्खण आहारेइ अभिक्खण परिणामेइ अभिक्खण उस्ससइ अभिक्खण निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा क्वचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है वह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है उस से वह जीव

भगवन ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

कावलिय आहार आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा-जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ ,उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ अभिक्खण आहारेइ अभिक्खण परिणामेइ अभिक्खण उस्ससइ अभिक्खण निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से ? अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा क्वचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है वह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है उस से वह जीव

अंग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अग अ० हाड्डि अ०हाड्डिकीमिंज के०केश म०स्मश्रु रो०रोम न०नम्ब॥१७॥ अ० माता पिता का भ०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल सं० र० गो गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पावे ए० इतना का० काल स० रहे अ० अथ स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भ० भगवन्

पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयगा पण्णत्ता तजहा अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केसमसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएण भंते ! सरीरए केवइय काल संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइय से काल भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतिय काल संचिट्ठइ अहेण समए समए वोयासिज्जमाणे चरिम काल समयसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेण

शरीर में पिता के तीन अग होते हैं १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश स्मश्रु रोम व नख ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

अग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अग अ० हड्डि अ०हड्डिकीमिंज के०केश म०स्मश्रु रो०रोम न०नख॥१७॥ अ० माता पिता का भ०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल स० रहे गो०गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पाम ए० इतना का० काल स० रहे अ० अथ स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

ण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयगा पण्णत्ता तजहा अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केसमसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएण भंते ! सरीरए केवइय काल संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइय से काल भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतिय कालं संचिट्ठइ अहेण समए समए वोयसिज्जमाणे चरिम काल समयसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेण

शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश स्मश्रु रोम व नख ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अग रहते हैं अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

अग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अग अ० हाड्ड अ०हाड्डकीमिंज के०केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नख॥१७॥ अ० माता पिता का भ०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल स० रहे गो गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पाम ए० इतना का० काल स० रहे अ० भव स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

ण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयगा पण्णत्ता तजहा अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केसमसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएण भंते ! सरीरए केवइय काल संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइय से काल भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतिय कालं संचिट्ठइ अहेण समए समए वोयसिज्जमाणे चरिम काल समयसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेण

शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अग रहते हैं अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु सैन्य की स०साथ स० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएण सद्धिं संगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बना हुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

घा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु सैन्य की स०साथ सं० संग्राम स० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएण सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बना हुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु सैन्य की स०साथ स० संग्राम स० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०तस्में चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वा ना म०

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिं संगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुआ धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

ा० चतुरगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरगी सं० सैन्य से प०शत्रु सैन्य की स०माथ
० मग्राम सं० सग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग
ी इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी
ांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु
०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

व्छुमइ,वेउव्विय समुग्घाएण समोहणइ,समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व
इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएण सद्धिंसंगाम संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए,
रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भैरव जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी ऐसी बात
, अवधारकर और के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों
ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की
→ ग्राम करे, अर्थ की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग
[ला], शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य,
" इच्छा से आसक्त बना हुवा, धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

कैसे गो० गौतम स० सन्नी प० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अ० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से ज० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! सेण सण्णी पचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेण जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए, मोक्खकामए, धम्मकंखिए,

कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव धर्मिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

केसे गों० गौतम स० सज्ञी प० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तयारूप स० श्रमण मा० माहण की अ० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य मे उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए, मोक्खकामए, धम्मकंखिए,

कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव गर्भिणि स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हवे पीछे तयारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव धर्मानुराग मे रक्त बनगया फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

कैसे गो० गौतम स० संज्ञी प० पंचेन्द्रिय म० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अ० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! सेण सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरिय धाम्मिय सुवयण सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेण जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए, मोक्खकामए, धम्मकंखिए,

कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होवे हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव गर्भिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

गो० गौतम स० सज्ञी प० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण
० माहण की अ० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव
रकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य मे उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त
० जीव ध० धर्म का कामी पु० पन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! सेण सण्णी पचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरिय धाम्मिय सुवयण सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेण जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए, मोक्खकामए, धम्मकंखिए,

उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में
जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव गर्भिष्ट
पने उत्पन्न हुवा वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हवे पीछे तथारूप श्रमण
धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व
. और श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

फल जैसे भ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवें जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दु'खी होती दु० दुःखी होवे ह० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दु खी होवे दु० दु'खी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवस आ० आवे स० सीधा आ० आव ति० तिर्च्छा आ०

अवखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा, माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हता गोयमा ! जीवेण गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेण पसवण काल समयसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकल पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पड़ा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खड़ा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है,माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवें जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दु:खी होती दु० दु:खी होवे ह० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दु:खी होते दु० दु:खी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांव से आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिरछा आ०

अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा, माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेण गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवे जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे ह० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दु खी होते दु० दुःखी म० होवे ॥ २१ ॥ प० मसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवस आ० आवे स० सीधा आ० आव ति० तिर्च्छा आ०

अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा, माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हता गोयमा ! जीवेण गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेण पसवण काल समयसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकल पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है यह बतलाते हैं अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुआ जीव क्या उत्तान छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण ग० मध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधहुवे प० प्रशस्त ने० जानना जा० यावत आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयण, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइ नोबद्धाइ पसत्थ णेयव्वं जाव आदेज्जवयण पच्चायाएवि भवइ ॥ सेव भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

रस, स्पर्श होवे उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वेशुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे यह सब पुण्य फल जानना अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है यह सत्य है यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × × +

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना जा० यावत आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयण, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइ नोबद्धाइ पसत्थ णेयव्वं जाव आदेज्जवयण पच्चायाएवि भवइ ॥ सेव भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

रस, स्पर्श होवे उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उत्पन्न होते वेशुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले सब म माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे यह सब पुण्य फल जानना अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × × +

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण ध० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना जा० यावत आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयण, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइ नोबद्धाइ पसत्थ णेयव्व जाव आदेज्जवयण पच्चायाएवि भवइ ॥ सेव भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

रस, स्पर्श होवे उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वे शुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले सब म माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे यह सब पुण्य फल जानना अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × × - +

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं व० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना जा० यावत आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयण, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइ नोबद्धाइ पसत्थ णेयव्व जाव आदेज्जवयण पच्चायाएवि भवइ ॥ सेव भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

रस, स्पर्श होवे उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते शुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले सब से माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे यह सब पुण्य फल जानना अहो भगवन्! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × × - +

नें० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे नें० नारकी का आ० आयुष्य वि करके नें० रक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके द० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त प० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या नें० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत बालेणं मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिमणु-देवाउयपि पकरेइ, । नेरइयाउयपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउय कि-च्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगत पंडिएण भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत पंडिएण मणुस्से आउ-

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

ने० नारकी का भा० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त प० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त प० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १ ॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत बालेण मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिमणु-
देवाउयपि पकरेइ, । नेरइयाउयपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउय कि-
च्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगत पडिएण भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउय पकरेइ,
जाव देवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत पडिएण मणुस्से आउ-

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांध ने० नारकी का आ० आयुष्य कि करके ने० रक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भ० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त प० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत बालेण मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयपि पकरेइ, । नेरइयाउयपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगत पंडिएण भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत पंडिएण मणुस्से आउ-

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके द० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त प० पंडित भ० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत बालेणं मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगत पंडिएण भते ! मणुस्से किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएण मणुस्से आउ-

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बांध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

नें० नारकी का भा० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे नें० नारकी का भा० आयुष्य भि करके ने० रक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके म० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त प० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त प० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत बालेणं मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिमणु-देवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगत पडिएण भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगत पडिएण मणुस्से आउ-

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त प० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अ० अतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ०उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा०बाल पंडित म० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएण भंते ! मणूसे किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेण जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवलोक में उ॰ उत्पन्न होवे गो॰ गौतम ए॰ एकान्त प॰ पंडित म॰ मनुष्य को के॰ मात्र दो॰ दोगति प॰ कही है अ॰ अतक्रिया क॰ कल्पोत्पन्न से॰ वह ते॰ इस लिये जा॰ यावत् दे॰ देवता का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवलोक में उ॰ उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा॰ बाल पंडित भ॰ भगवन् म॰ मनुष्य किं॰ क्या ने॰ नारकी का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे जा॰ यावत दे॰ देवता का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवता में उ॰ उत्पन्न होवे गो॰ गौतम णो॰ नहीं ने॰ नारकी का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे जा॰ यावत् दे॰ देवता का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवता में उ॰ उत्पन्न होवे

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएण भंते ! मणूसे किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेण जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त प० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अ० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह से० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा० बाल पंडित भ० भगवन् म० मनुष्य कि० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएण भंते ! मणूसे किं नेरइयाउय पकरेइ, जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेण जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

मारन से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरण की प० प्रद्वेषिकी प० परितापनिकी च० चार कि० क्रिया पु॰ स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से ब० बंधन करने से मा० मारने से ता० वहांलग से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी प० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये जा० यावत प० पांच कि॰ क्रिया ॥ ४ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत व० वन वि० विषम त० तृण ऊ० ऊंचा करके अ॰ अग्निकाय

से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावचणसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरियाए पचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेण जाव पचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेण भंते ! कच्छंसिवा, जाव वणविदुग्गंसिवा, तणाइ ऊसविय २ अ-

जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारनेका भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया बढी जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रियाओं लगती हैं कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को कदाचित् तीन, कदाचित चार व कदाचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

मारन से ता० तव से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरण की प० प्रद्वेषिकी प० परितापनिकी च० चार कि० क्रिया पु० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से ब० बंधन करने से मा० मारने से ता० वहांलग से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी प० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये जा० यावत प० पांच कि० क्रिया ॥ ४ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत व० वन वि० विषम त० तृण ऊ० ऊंचा करके अ० अग्निकाय

से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावचणसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरियाए पचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेण जाव पचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेण भंते ! कच्छंसिवा, जाव वणविदुग्गंसिवा, तणाइ ऊसविय २ अ-

जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारनेका भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया बदी जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रियाओं लगती हैं कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को कदाचित् तीन, कदाचित चार व कदाचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

माता है जा० यावत् से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा से० वह गो० गौतम क० करते को क० किया स० मांधते को स० मांधा नि० खींचते को नि० खींचा नि० निकलते को नि० निकला व० कहना है० हां भं० भगवन् क० करते का किया जा० यावत् नि० निकला जे० जो मि० मृगको मा० हन से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शे जे० जो पु० पुरुष का मा० हने से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शे अ०

जाव से पुरिसवेरेण पुट्ठे । सेणूण गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिए, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाण निसिट्ठेत्ति वत्तव्वसिया । हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठेत्ति वत्तव्वसिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियमारेइ से मियवेरेण पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेण पुट्ठे, अतो छण्हं मासाणं मरइ-

मृग को मारा उस को मृग का वैर हुआ अहो भगवन् ! यह अर्थ किस तरहसे है ? अहो गौतम ! 'कज्जमाणे कडे' करते हुवे को किया अर्थात् धनुष्य बाण करने लगा सो किया, 'संधिज्जमाणे संधिए' धनुष्य बाण सांधनेलगा सो संधा, 'निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए' धनुष्य खींचने लगा सो खींचा व 'निसरिज्जमाणे निसिट्ठे' धनुष्य में से बाण नीकलनेलगा सो नीकला ऐसा कहा जा सकता है हां भगवन् ! करते को किया हुवा यावत् निकलते को निकला हुवा कहा जा सकता है इसी से अहो गौतम ! जो मृग मारता है वह मृग का वैर से स्पर्शाता है अर्थात् उन मृग मारनेवाले को मृग का वैर लगता है और पुरुष

अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् प० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पु० पुरुष भ० भगवन् पु० पुरुष को स० भाला से सं० सांधे स० स्वतः के पा० हस्त मे अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तब से० उस पु० पुरुष का क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष त० उस पु० पुरुष को स-

काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठे बाहिं छण्ह मासाणं मरइ, काइयाए जाव पा-
रियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेण भंते ! पुरिस सत्तीए समभि-
संधेज्जा सयपाणिणावा से असिणा सीस छिंदेज्जा । तओण भंते ! से पुरिसे कइकि-

मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है वह मृग यदि छ मास की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति भाला से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

* यहांपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदश बतानेको कहीहै अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिका पांच क्रिया लगती है

शक्तिसे स० सांधे स० स्वत के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छि० छेदे ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शे आ० नजदीक व० वध करने वाला अ० आकांक्षा रहित पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा ॥ ८ ॥ दो० दो भ०भगवन् पु० पुरुष स० सरिखे स० सरिखी त्वचावाले स० सरिखी वयवाले स० सरिखे भ० भंडोपकरणवाले अ० अन्योन्य स० साथ सं० संग्राम स० करे त० तहां ए० एक पु० पुरुष प० जीते ए० एक पु० पुरुष

रिए ? गोयमा ! जावचण से पुरिसे त पुरिस सत्तीए समभिसधेइ सयपाणिणावा से असिणा सीस छिंदइ तावचण से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाए पचहिंकिरियाहिं पुट्ठे । आसण्ण वहएणय अणवकखवत्तीएण पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥ ८ ॥ दो भंते ! पुरिसा सरिसया, सरित्तया, सारिसव्वया, सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धिं संगाम संगामेइ, तत्थण एगे पुरिसे पराइणइ एगे पुरिसे पराइज्जइ, से कहमेय भंते !

अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! जितने कालतक वह पुरुष किसी अन्य पुरुष का शक्ति या खड्गसे शीर्ष का छेदन करता है उतनाकाल तक उस पुरुष को कायिकीआदि पांच क्रियाओं लगती हैं आसन्न वधक पाप की निवृत्ति के लिये निरपेक्ष वृत्ति से वैर का बंधन करता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शरीर के प्रमाण में व कुशलता में सरिखे, सरीखी वयवाले, सरीखे भंडोप

प० पराजयपामे से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम स० वीर्यवन्त प० जीते अ० अवी
र्यवन्त प० पराजयपामे वी० वीर्य व० वधयोग्य क० कर्म नो० नहीं ब० बधे नो० नहीं पु० स्पर्शे जा० यावत् नो० नहीं
अ० सन्मुख हुवे णो० नहीं उ० उदयआये उ० उपशान्तपामे से० वह प० जीतता है ज० जिस का
वी० वीर्य व० वधयोग्य क० कर्म ब० बंधे जा० यावत् उ० उदयआये नो० नहीं उ० उपशमें भ० है

एव गोयमा ! सवीरिए पराइणइ, अवीरिए पराइज्जइ । से केणट्ठेण जाव पराइज्जइ ? गोयमा ! जस्सण वीरियवज्झाइ कम्माइ णो बद्धाइ णो पुट्ठाइ जाव नो अभिसमण्णागयाइ, णो उदिण्णाइ उवसताइ भवति, सेण पराइणइ जस्सण वीरियवज्झाइ कम्माइ बद्धाइ

करणवाले दो पुरुष परस्पर संग्राम करे; उस में से एक पुरुष का जय होवे और दूसरा पुरुष का पराजय होवे अहो भगवन् ! इस तरह जय पराजय होनेका क्या कारन? अहो गौतम ! वीर्यवत पुरुष का जय हुवा और वीर्य रहित पुरुष का पराजय हुवा अहो भगवन्त ! वीर्यवन्त पुरुष का जय और वीर्य रहित पुरुष का पराजय होने का क्या कारन ? अहो गौतम ! वीर्य की घात करनेवाले कर्म पुद्गलों का बंध जिसने नहीं किया होवे, जिन को नहीं स्पर्शे होवे, यावत् उदय में नहीं आये होवे वैसे ही उदी-रणा से उदय में नहीं लाये होवे परंतु उपशान्त रहे हुवे होवे, उस को जय होता है और जिस पुरुषको वीर्य की घात करनेवाले कर्म पुद्गलों बंधे हुवे होवे यावत् उदीरणा से उदय में आये होवे उस पुरुष का पराजय

शक्तिमे स० संधे स० स्वत के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छि० छेदे ता० तब मे० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शे आ० नजदीक व० वध करने वाला अ० आकांक्षा रहित पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा ॥ ८ ॥ दो० दो भ० भगवन् पु० पुरुष स० सरिखे स० सरिखी त्वचावाले स० सरिखी वयवाले स० सरिखे भ० भंडोपकरणवाले अ० अन्योन्य स० साथ स० संग्राम स० करे त० तहां ए० एक पु० पुरुष प० जीते ए० एक पु० पुरुष

रिए ? गोयमा ! जावचण से पुरिसे त पुरिस सत्तीए समभिसधेइ सयपाणिणावा से असिणा सीस छिंदइ तावचण से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाए पचाहिंकिरियाहिं पुट्ठे । आसण्ण वहएणय अणवकखवत्तीएण पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥ ८ ॥ दो भते ! पुरिसा सरिसया, सरित्तया, सरिसव्वया, सरिसभडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धिं सगाम सगामेइ, तत्थण एगे पुरिसे पराइणइ, एगे पुरिसे पराइज्जइ, से कहमेय भते !

अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! जितने कालतक वह पुरुष किसी अन्य पुरुष का शक्ति या खड्गसे शीर्ष का छेदन करता है उतनाकाल तक उस पुरुष को कायिकीआदि पांच क्रियाओं लगती हैं आसन्न वधक पाप की निवृत्ति के लिये निरपेक्ष वृत्ति से वैर का बंधन करता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शरीर के प्रमाण में व कुशलता में सरिखे, सरीखी वयवाले, सरीखे भंडोप

ते० वे दु० दोप्रकार के से० निश्चल आत्मा वाले अ० निश्चल आत्मा रहित त० तहां जे० जो से० शैलेशी युक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य त० तहां जे० जो अ० अशैलशीयुक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य मे स० सवीर्य क० करणवीर्य मे स० सवीर्य अ० अवीर्य से०

तत्थण जे ते असंसार समावण्णगा तेण सिद्धा, सिद्धाण अवीरिया तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा सेलेसि पडिवण्णगाय, असेलेसि पडिवण्णगाय । तत्थण जे ते सेलेसि पडिवण्णगा तेण लद्धिवीरिएण स-वीरिया, करणवीरिएण अवीरिया । तत्थण जे ते असेलेसि पडिवण्णगा, तेण ल-द्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरियावि अवीरियावि सेतेणट्ठेण गोयमा

अभाव है इसलिये वे वीर्य रहित हैं और जो संसार समापन्नक हैं उन के दो भेद कहे हैं १ शैलेशी प्रतिपन्न सो चउदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली के जीव और २ अशैलेशी सो प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती जीव उस में चउदहवे गुणस्थानवर्ती शैलेशी जीव लब्धि वीर्य की अपेक्षा से वीर्य सहित और करण वीर्य की अपेक्षा से वीर्य रहित हैं प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती अशैलेशी प्रतिपन्न जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं इस कारन से अहो

१ वीर्यांतराय के क्षय से जो वीर्य होता है सो लब्धिवीर्य २ उत्थानादि क्रिया सो करण वीर्य

र्थ

से० वह पु० पुरुष प० पराजित है से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० एसा क० कहा जाता है स० वीर्यवन्त प० जीतता है अ० वीर्यरहित प० पराजय पामता है ॥९॥ जी०जीव भं०भगवन् किं०क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम स० सवीर्य अ अवीर्य से० वह के० कैसे भ०भगवन् ए०ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम जी० जीव दु० दोमकार के सं० संसार को प्राप्त अ० ससार से रहित त० तहां जे० जो अ० संसार रहित ते० वे सि० सिद्ध सि० सिद्ध अ० अवीर्य त० तहां जे० जो स० संसारो

सूत्र

जात्र उदिण्णाइ नो उवसताइं भवंति सेण पुरिसे पराइज्जइ, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ सवीरिए पराइणइ, अवीरिए पराइज्जइ ॥ ९ ॥ जीवाण भते ! किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा ! सवीरियावि, अवीरियावि । से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता तंजहा ससारसमावण्णगाय अससारसमावण्णगाय ।

र्थ

होता है इसलिये ऐसा कहागया है कि वीर्यवंत पुरुष का जय और वीर्य रहित पुरुष का पराजय होता है ॥ ९ ॥ अब वीर्य का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ? जीव क्या वीर्य सहित है या वीर्य रहित है ? अहो गौतम ? वीर्य सहित भी है और वीर्य रहित भी है अहो भगवन् ! जीव वीर्य सहित भी है और वीर्य रहित भी है यह किस तरह से ? अहो गौतम ? जीव के दो भेद कहे हैं संसार समापन्नक और असंसार समापन्नक जो असंसार समापन्नक हैं वे सिद्ध ...

ते० वे दु० दोमकार के से० निश्चल आत्मा वाले अ० निश्चल आत्मा रहित त० तहां जे० जो से० शैलेशी युक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य त० तहां जे० जो अ० अशैलशीयुक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य मे स० सवीर्य क० करणवीर्य मे स० सवीर्य अ० अवीर्य से०

तत्थण जे ते असंसार समावण्णगा तेण सिद्धा, सिद्धाण अवीरिया तत्थण जे ते संसार समावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तजहा सेलेसि पडिवण्णगाय, असेलेसि पडिवण्णगाय । तत्थण जे ते सेलेसि पडिवण्णगा तेण लद्धिवीरिएण स-वीरिया, करणवीरिएण अवीरिया । तत्थण जे ते असेलेसि पडिवण्णगा, तेण ल-द्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरियावि अवीरियावि सेतेणट्ठेण गोयमा

अभाव है इसलिये वे वीर्य रहित हैं और जो संसार समापन्नक हैं उन के दो भेद कहे हैं १ शैलेशी प्रतिपन्न सो चउदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली के जीव और २ अशैलेशी सो प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती जीव उस में चउदहवे गुणस्थानवर्ती शैलेशी जीव लब्धि वीर्य की अपेक्षा से वीर्य सहित और करण वीर्य की अपेक्षा से वीर्य रहित हैं प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती अशैलेशी प्रतिपन्न जीव लब्धि वीर्य मे वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं इस कारन से अहो

१ वीर्यांतराय के क्षय से जो वीर्य होता है सो लब्धिवीर्य २ उत्थानादि क्रिया सो करण वीर्य

वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ॥ १८ ॥ ने० नारकी भ० भगवन् किं० क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से० वह के० कैसे गो० गौतम, जे० जिस ने० नारकी को अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ते० वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य जे० जो ने० नारकी को न० नहीं है उ०

एवं वुच्चइ जीवा दुविहा प० त० सवीरियावि, अवीरियावि ॥ १० ॥ नेरइयाणं भंते किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिए-णं सवीरियाय अवीरियाय। सेकेणट्ठेण? गोयमा! जेसिणं नेरइयाणं अत्थि उट्ठाणे, कम्मे बले, वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे तेण नेरइया लद्धि वीरिएणवि सवीरिया, करणवीरिएण

गौतम ! ऐसा कहा है कि जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या नरक के जीव वीर्य सहित हैं या वीर्य रहित हैं ? अहो गौतम ! नरकके जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहागया है ! अहो गौतम ! जिन नारकियों को उत्थान, कर्म, बल, वीर्य पुरुषात्कार व पराक्रम हैं वे नारकी लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से भी वीर्य सहित हैं और जो नारकी उत्थानादि रहित हैं वे लब्धि

उत्थान जा० यावत् प० पराक्रम ते० वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य से० वह ते० इसलिये ज० जैसे ने० नारकी जा० यावत् प० पचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य ज० जैसे ओ० औधिक जीव न० विशेष सि० सिद्ध व० वर्जना भा० कहना वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे ने० नारकी से० वह ए० ऐसे भ० भगवन् ॥ २ ॥ ८ ॥

वि सवीरिया । जेसिणं नेरइयाण नत्थि उट्ठाणे जाव परक्कमे तेणं नेरइया लद्धिवी-रिएण सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया । से तेणट्ठेण जहा नेरइया एव जाव पचिं-दिय तिरिक्ख जोणिया । मणूसा जहा ओहिया जीवा नवर सिद्ध वज्जा भाणियव्वा । वाणमतर जोइस वेमाणिया जहा नेरइया ॥ सेव भते २ त्ति ॥ पढमेसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ८ ॥

* * *

वीर्य से वीर्य सहित हैं परतु करण वीर्य से वीर्य रहित हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहागया है कि नारकी के जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित है जैसा नारकी का कहा वैसे ही मनुष्य छोडकर अन्य सब दंडक का कहना मनुष्य का समुच्चय जीव जैसे कहना परंतु समुच्चय जीव के दंडक में सिद्ध है यह यहां नहीं कहना अहो भगवन् ! आपने जो कहा व सत्य है यह पहिला शतकका आठवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ ८ ॥

* *

वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ॥ १० ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से० वह के० कैसे गो० गौतम, जे० जिस ने० नारकी को अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ते० वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य जे० जो ने० नारकी को न० नहीं है उ०

एव वुच्चइ जीवा दुविहा प० त० सवीरियावि, अवीरियावि ॥ १० ॥ नेरइयाण भंते किं सवीरिया अवीरिया? गोयमा नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिए-णं सवीरियाय अवीरियाय। सेकेणट्ठेण? गोयमा! जोसिणं नेरइयाणं अत्थि उट्ठाणे, कम्मे बले, वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे तेण नेरइया लद्धि वीरिएणवि सवीरिया, करणवीरिएण

गौतम! ऐसा कहा है कि जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन्! क्या नरक के जीव वीर्य सहित हैं या वीर्य रहित हैं? अहो गौतम! नरकके जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहागया है? अहो गौतम! जिन नारकियों को उत्थान, कर्म, बल वीर्य पुरुषात्कार व पराक्रम हैं वे नारकी लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से भी वीर्य सहित हैं और जो नारकी उत्थानादि रहित हैं वे लब्धि

जा० यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के वे० निवर्तने से ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम जी०जीव ल० लघुत्व को आ० आते हैं ॥ २ ॥ ए० ऐसे स० संसार आ० बहुत क० करे प० थोडा क० करे दी० दीर्घ क० करे ह० छोटा क० करे अ० वारंवार भ्रमण करे वी० तीरे प० प्रशस्त च० चार अ० अप्रशस्त च०

गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादंसणसल्ल वेरमणेण एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ २ ॥ एवं संसारं आउली करेंति, एवं परित्ती करेंति, दीही करेंति, हस्सी करेंति, एवं अणुपरियट्टंति, एवं

अवर्णवाद बोलना १७ माया मृषा और १८ मिथ्यादर्शन शल्य देवगुरु धर्म से भी मन का मिथ्यात्व नाश नहीं होवे, इन अठारह कारनों से जीव अधोगति गमनरूप गुरुत्व धारण करता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव लघुत्व कैसे धारण करता है ? अहो गौतम ! प्राणातिपात से निवर्तना यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवर्तना इन अठारह कारनों से जीव लघुत्व प्राप्त कर सकता है ॥ २ ॥ उक्त अठारह पाप स्थानों के आचारण से जीव संसार प्रचुर करे, संसार परत्त करे, दीर्घ करे, ह्रस्व करे, संसार में वारवार परिभ्रमण करे और संसार से उत्तीर्ण होवे इन आठ में से लघुत्व, परित्त, ह्रस्वत्व व संसार का उल्लंघन ऐसे चार बोल प्रशस्त और गुरुत्व, संसार का प्रचूर करना, दीर्घ करना व संसार का उल्लंघन

क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात से मु० मृषावाद से अ० अदत्तादान मे० मैथुन प० परिग्रह को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ पे० राग दो० द्वेष क० कलह अ० कलंक चढाना पे० चुगली र० रति अ० अरति प० परपरिवाद मा० कपट मि० मिथ्यादर्शन शल्य ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं ॥ १ ॥ भ० भगवन् जी० जीव ल० लघुत्व ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात

कहण्ण भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छति ? गोयमा ! पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, अदिन्न, मेहुण, परिग्गह, कोह, माण, माया, लोह, पेज्ज, दोस, कलह, अब्भक्खाण, पेसुन्न, रति, अरति, परपरिवाए, मायामोस, मिच्छादसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छति ॥ १ ॥ कहण्ण भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छति ?

आठवे उद्देशे के अंत में वीर्य का वर्णन किया है और जीव वीर्य से भारी होता है इसलिये आगे गुरुत्व का अधिकार चलता है अहो भगवन् ! अधोगति गमनरूप गुरुत्व किस तरह से जीव प्राप्त करे? अहो गौतम ! १ प्राणातिपात-जीव का अतिपात से, २ मृषावाद असत्य बोलने से ३ अदत्तादान-चोरी करने से ४ मैथुन से ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान-कलंक चढाने से १४ पैशुन्य-चुगली करने से १५ रति अरति १६ परपरिवाद अन्य का

जा० यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के वे० निवर्तने से ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम जी०जीव ल० लघुत्व को आ० आते हैं ॥ २ ॥ ए० ऐसे स० ससार था० बहुत क० करे प० थोडा क० करे दी० दीर्घ क० करे ह० छोटा क० करे अ० वारंवार भ्रमण करे वी० तीरे प० प्रशस्त च० चार अ० अप्रशस्त च०

गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्ल वेरमणेण एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ॥ २ ॥ एव ससार आउली करेंति, एव परित्ती करेंति, दीही करेंति, हस्सी करेंति, एव अणुपरियट्टति, एव

अवर्णवाद बोलना १७ माया मृषा और १८ मिथ्यादर्शन शल्य देवगुरु धर्म से भी मन का मिथ्यात्व नाश नहीं होवे, इन अठारह कारनों से जीव अधोगति गमनरूप गुरुत्व धारण करता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव लघुत्व कैसे धारण करता है ? अहो गौतम ! प्राणातिपात से निवर्तना यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवर्तना इन अठारह कारनों से जीव लघुत्व प्राप्त कर सकता है ॥ २ ॥ उक्त अठारह पाप स्थानों के आचारण से जीव ससार प्रचुर करे, ससार परत्त करे, दीर्घ करे, ह्रस्व करे, ससार में वारवार परिभ्रमण करे और ससार से उत्तीर्ण होवे इन आठ में से लघुत्व, परित्त, ह्रस्वत्व व संसार का उल्लंघन ऐसे चार बोल प्रशस्त और गुरुत्व, ससार का प्रचूर करना, दीर्घ करना व ससार का उल्लंघन

॥ स० सातवा अ० आकाशांतर किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु
र नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गुरुलघु अ० अगुरुलघु स० सातवा त० तनुवात
। गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु ना० नहीं अगुरुलघु ए० ऐसे स० सातवा
वात स० सातवा घ० घनोदधि स० सातवी पु० पृथ्वी उ० आकाशांतर स० सब न० नरक ज० जैसे स०

वयति, पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि॥ ३॥ सत्तमेण भंते ! उवासंतरे किं गरुए, लहुए,
रुय लहुए, अगुरुय लहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, नो गरुय लहुए, अगरुय
लहुए सत्तमेणं भंते ! तणुवाए किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए?
गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, गरुय लहुए, नो अगरुय लहुए एवं सत्तमे

करना ये चार बोल अप्रशस्त कहाये गये हैं ॥ ३ ॥ जीव के गुरुत्व लघुत्व से आकाशादिक का
त्व लघुत्व कहते हैं १ अहो भगवन् ! सातवी नरककी नीचेका आकाशान्तर क्या गुरुत्व, लघुत्व, गुरुल
त्व, व अगुरुलघुत्ववाला है ? अहो गौतम ! सातवी नरक का आकाशान्तर गुरु, लघु व गुरुलघु
नहीं है परन्तु अगुरुलघु है, अहो भगवन् ! सातवी नरक की नीचे का तनुवात क्या गुरु, लघु, गुरुलघु
व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! सातवा तनुवात गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरु लघु है और अगुरु
लघु नहीं है. ऐसे ही सातवा घनवात, सातवा घनोदधि, सातवी पृथ्वी व सब आकाशान्तर को सातवा

सातवा उ० आकाशान्तर ज० जैसे त० तनुवात ए० ऐसे ग० गुरुलघु ग० घनवात घ० घनोदधि पु० पृथ्वी दी० द्वीप स० सागर वा० क्षेत्र ॥ ४ ॥ ने० नारकी भ० भगवन् किं० क्या ग० गुरु जा० यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु से० वह के०

घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी, उवासंतराइ सव्वाइ जहा सत्तमे उवासंतरे। जहा तणुवाए एव गरुयलहुए घणवाय घणउदहि, पुढवी, दीवाय, सागरा, वासा, ॥ ४ ॥ नेरइयाण भते ! किं गरुया जाव अगरुलहुया ? गोयमा ! नो गुरुया, नोलहुया, गुरुयलहुयावि, अगरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! वेउव्विय

आकाशान्तर जैसे कहना अर्थात् जैसे सातवा आकाशान्तर गुरु, लघु, व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है वैसेही इस का जानना जैसे तनुवात का कहा वैसेही घनवात, घनोदधि, पृथ्वी, द्वीप, सागर व भरतादि क्षेत्र का जानना अर्थात् जैसे तनुवात गुरुलघु है वैसे ही उक्त सब पदार्थों गुरुलघु हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या गुरु, लघु, गुरुलघु या अगुरुलघु हैं ? अहो गौतम ! गुरु भी नहीं हैं, लघु भी नहीं हैं, परतु गुरुलघु व अगुरुलघु हैं अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी गुरु व लघु नहीं हैं परतु गुरुलघु व अगुरुलघु हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय व तेजस शरीर की अपेक्षा से नारकी गुरुलघु हैं परतु

चार ॥ ३ ॥ स० सातवा उ० आकाशांतर किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गुरुलघु अ० अगुरुलघु स० सातवा त० तनुवात किं० क्या गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अगुरुलघु ए० ऐसे स० सातवा घ० घनवात स० सातवा घ० घनोदधि स० सातवी पु० पृथ्वी उ० आकाशांतर स० सर्व ज० जैसे स०

वीईवयति, पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि॥ ३ ॥सत्तमेण भते ! उवासतरे किं गरुए, लहुए, गरुय लहुए, अगुरुय लहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, नो गरुय लहुए, अगरुय लहुए सत्तमेण भते ! तणुवाए किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, गरुय लहुए, नो अगरुय लहुए एव सत्तमे

नहीं करना ये चार बोल अप्रशस्त कहाये गये हैं ॥ ३ ॥ जीव के गुरुत्व लघुत्व से आकाशादिक का गुरुत्व लघुत्व कहते हैं १ अहो भगवन् ! सातवी नरककी नीचेका आकाशान्तर क्या गुरुत्व, लघुत्व, गुरुलघुत्व, व अगुरुलघुत्ववाला है ? अहो गौतम ! सातवी नरक का आकाशान्तर गुरु, लघु व गुरुलघु नहीं है परन्तु अगुरुलघु है अहो भगवन् ! सातवी नरक की नीचे का तनुवात क्या गुरु, लघु, गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! सातवा तनुवात गुरु नहीं है, लघु नहीं है परन्तु गुरु लघु है और अगुरु लघु नहीं है. ऐसे ही सातवा घनवात, सातवा घनोदधि, सातवी पृथ्वी व सब आकाशान्तर को सातवा

॥ ५ ॥ ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् जी० जीव च० चौथापद में ॥ ३ ॥ पो० पुद्गलास्ति काया भ० भगवन् किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गु० गुरु नो० नहीं ल०लघु ग०गुरुलघु अ०अगुरुलघु से०वह के०कैसे गो० गौतम गु०गुरुलघु द०द्रव्य प० प्रत्यय नो० नहीं गुरु नो० नहीं ल०लघु गु०गुरु लघु नो०नहीं अ० अगुरुलघु अ०अगुरु लघु द०द्रव्य प०प्रत्यय नो०नहीं

त्थिकाए चउत्थपएण ॥ ६ ॥ पोग्गलत्थि काएण भंते ! किं गरुए, लहुए,ग-रुयलहुए, अगुरुयलहुए ? गोयमा! नो गुरुए, नोलहुए, गुरुयलहुएवि, अगुरुयलहुएवि सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! गुरुयलहुय दव्वाइ पडुच्च णो गरुए णो लहुए, गरुय लहुए, नो अगुरुयलहुए । अगुरुयलहुय दव्वाइ पडुच्च णो गुरुए, नोलहुए, नोगुरुयल-

अगुरुलघु जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! पुद्गलास्ति काय क्या गुरु, लघु, गुरुलघु या अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! पुद्गलास्ति काय गुरु नहीं है, लघु नहीं है परतु गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो भगवन् ! किस तरह से पुद्गलास्तिकाय गुरु नहीं है लघु नहीं है परतु गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! औदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस इन गुरुलघु द्रव्य आश्रित पुद्गलास्तिकाय गुरु नहीं है, लघु नहीं है, परंतु गुरुलघु है व अगुरुलघु नहीं है और कार्माण,मन व भाषा इन तीन अगुरुलघु द्रव्यकी अपेक्षा से पुद्गलास्तिकाय गुरु

कैसे गो० गौतम वे० वैक्रेय ते० तेजस प० प्रत्यय नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अ० अगुरुलघु जी० जीव क० कर्म प० प्रत्ययिक नो०नहीं गुरु नो०नहीं लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु से० वह ते० इसलिये जा० यावत् वे० वैमानिक न० विशेष ना० नाना प्रकार जा० जानना

तेयाइ पडुच्च नोगरुया, नोलहुया, गरुयलहुया, नो अगुरुयलहुया । जीवंच कम्मंच पडुच्च नो गुरुया नो लहुया, नो गुरुयलहुया अगुरुयलहुया । सेतेणट्ठेण, एवं जाव वेमाणिया । नवरं णाणत्तं जाणियव्वं सरीरेहिं ॥ ५ ॥ धम्मत्थिकाए जाव जीव-

गुरु, लघु व अगुरुलघु नहीं हैं और जीव व कर्म की अपेक्षा से गुरु, लघु, व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरु लघु हैं इससे नारकी गुरुलघु व अगुरुलघु हैं नारकी जैसे शेष सब दंडक के जीवों का जानना मात्र शरीर में भिन्नता रहती है अर्थात् जिनको जितने शरीर होवे उनको उतने शरीर की अपेक्षा ग्रहण करनी असुर कुमारादिक को नारकी जैसे, पृथिव्यादिक में उदारिक तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर है इसलिये यहांपर उदारिक व तेजसकी अपेक्षा ग्रहण करनी वायुकायमें वैक्रेय उदारिक व तेजसकी अपेक्षा ग्रहण करनी ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय को जानना मनुष्य को उदारिक वैक्रेय अहारक व तेजस की अपेक्षा से लेना ॥ ५ ॥ धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति काय व जीवास्ति काय में मात्र चौथापद

लेश्या ॥ ९ ॥ दि० दृष्टि दं० दर्शन ना० ज्ञान अ० अज्ञान स० संज्ञा च० चौथे पद में ने० जानना हे० नीचे के च० चार स० शरीर ना० जानना त० तीसरे पदमें क० कार्माण च० चौथा पद में० म० मनजोग व० वचनजोग च० चौथा पद में का० कायाजोग त० तीसरापद में सा० साकारोपयोग अ० अनाकारोपयोग च० चौथापद में स० सर्व द्रव्य स० सर्व प्रदेश स० सर्व पर्यव ज० जैसे पो० पुद्गलास्ति काय ती०

चउत्थपएणं । एव जाव सुक्कलेस्सा ॥ ९ ॥ दिट्ठी—दसण—नाण—अन्नाण—सण्णाओ चउत्थपएण णेयव्वाइ , हेट्ठिल्ला चत्तारि सरीरा नायव्वा तइएण पएण ॥ कम्मय चउत्थएणं पएण, ॥ मणजोगे, वइजोगे, चउत्थएण पदेण ॥ कायजोगो तइयएण पएणं ॥ सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थपदेण ॥ सव्वदव्वा, सव्वपदेसा,

कृष्ण लेश्याका कहा वैसे ही नील, कापुत, तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्या का जानना ॥ ९ ॥ दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान व संज्ञा में अगुरुलघुत्व जानना उदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस शरीर में गुरु लघुत्व और कार्माण शरीर में अगुरु लघुत्व जानना मनयोग वचन योग में अगुरु लघुत्व और काय योग में गुरुलघुत्व जानना साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त उपयोग में अगुरु लघुत्व धर्मास्तिकायादि षड्द्रव्य, उन के सब प्रदेश, व सब पर्यवको पुद्गलास्तिकाय जैसे गुरुलघु व अगुरुलघु दोनों कहना

गु० गुरु नो० नहीं छ० लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु ॥ ७ ॥ स० समय क० कार्माण वर्गणा च० चौथा प० पद में॥ ८ ॥ क० कृष्ण ले० लेश्या भ०भगवन् किं०क्या ग० गुरु जा०यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो०नहींलघु गु० गुरु लघु अ० अगुरु लघु से० वह के० कैसे द०द्रव्य लेश्या प० प्रत्यय त० तीसरापद भा० भाव लेश्या प० प्रत्यय च० चौथा पद ए० ऐसे जा०यावत् सु०शुक्ल

हुए अगुरुयलहुए ॥७॥ समया कम्माणियचउत्थपएण, ॥८॥ कण्हलेसाण भंते ! किं गरुया जाव अगुरुयलहुया ? गोयमा ! नोगुरुया, नोलहुया, गरुयलहुयावि, अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! दव्वलेस्स पडुच्च तइयपएण, भावलेस्सपडुच्च

नहीं, लघु नहीं गुरुलघु नहीं परतु अगुरुलघु है ॥ ७ ॥ काल-अमूर्त होने से और कर्मवर्गणा के पुद्गल अगुरु लघु होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या क्या गुरु, लघु यावत् अगुरु लघु है ? गौतम कृष्णलेश्या गुरुनहीं, लघुनहीं, गुरुलघु, व अगुरु लघु है अहो भगवन् किस कारन से कृष्ण लेश्या गुरु लघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षासे गुरुलघु है क्यों की द्रव्य लेश्या उदारिक शरीर के वर्ण वाली है और उदारीक शरीर गुरुलघु है इसलिये कृष्ण लेश्या द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरु लघु मानना और भाव लेश्या की अपेक्षा से अगुरुलघु मानना क्यों की भाव लेश्या जो जीव परिणाम वह अमूर्त होने से अगुरु लघु होते हैं इसलिये भाव लेश्या की अपेक्षा से कृष्ण लेश्या अगुरुलघु मानना वैसे

लेश्या ॥ ९ ॥ दि० दृष्टि दं० दर्शन ना० ज्ञान अ० अज्ञान स० संज्ञा च० चौथे पद में ने० जानना हे०
नीचे के च० चार स० शरीर ना० जानना त० तीसरे पदमें क० कार्माण च० चौथा पद में० म० मनजो-
ग व० वचनजोग च० चौथा पद में का० कायाजोग त० तीसरापद में सा० साकारोपयोग अ० अनाकारोप
योग च० चौथापद में स० सर्व द्रव्य स० सर्व प्रदेश स० सर्व पर्यव ज० जैसे पो० पुद्गलास्ति काय ती०

चउत्थपएण । एव जाव सुक्कलेस्सा ॥ ९ ॥ दिट्ठी—दसण—नाण—अन्नाण—सण्णाओ
चउत्थपएण णेयव्वाइं , हेट्ठिल्ला चत्तारि सरीरा नायव्वा तइएण पएण ॥ कम्मय
चउत्थएणं पएण, ॥ मणजोगे, वइजोगे, चउत्थएण पदेण ॥ कायजोगो तइयएण
पएण ॥ सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थपदेण ॥ सव्वदव्वा, सव्वपदेसा,

कृष्ण लेश्याका कहा वैसे ही नील, कापुत, तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्या का जानना ॥ ९ ॥
दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान व संज्ञा में अगुरुलघुत्व जानना उदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस शरीर में
गुरु लघुत्व और कार्माण शरीर में अगुरु लघुत्व जानना मनयोग वचन योग में अगुरु लघुत्व और
काय योग में गुरुलघुत्व जानना साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त उपयोग में अगुरु लघुत्व धर्मास्ति-
कायादि षट्द्रव्य, उन के सब प्रदेश, व सब पर्यवको पुद्गलास्तिकाय जैसे गुरुलघु व अगुरुलघु दोनों कहना

अतीतकाल अ० अनागत काल स० सर्वपना काल च० चौथा पद में ॥ १० ॥ से० वह भ० भगवन् ला० लघुता अ० अल्पइच्छा अ० मूर्च्छारहित अ० अगृद्धी अ० अप्रतिबन्ध स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम ला० लघुता जा० यावत् प० प्रशस्त॥ ११ ॥ भं० भगवन् अ० क्रोध रहित अ० मान रहित अ० मायारहित अ० लोभ रहित स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम अ० क्रोध रहित जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ १२ ॥ भं० भगवन् क० कांक्षा प० द्वेष खी० क्षीण स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ अ० अंत

सव्वपज्जवा, जहा पोग्गलत्थिकाओ, तीतद्धा अणागयद्धा, सव्वद्धा, चउत्थएण पएणं ॥ १० ॥ सेणूण भंते ! लाघविय, अप्पिच्छा, अमुच्छा, अगेही, अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थ ? हंता गोयमा ! लाघविय जाव पसत्थ ॥ ११ ॥ सेणूण भंते अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं णिग्गंथाणं पसत्थ ? हंता !

अतीत काल, अनागतकाल व सब काल में चौथा अगुरुलघुत्व जानना ॥ १० ॥ अब गुरुलघुपने का अन्य प्रकार से प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता, अल्प इच्छा, अमूर्च्छा, अगृद्धि, व अप्रतिबन्ध क्या प्रशस्त है ? हां गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता यावत् अप्रतिबन्ध प्रशस्त है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को क्रोध, मान, माया व लोभ रहितपना क्या श्रेष्ठ है ? हां गौतम ! क्रोध रहितपना यावत् लोभ रहितपना श्रमण निर्ग्रन्थ को श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् !

करने वाले अं० चरिम शरीरी ब० बहुत मोहवाले पु० पाहिले वि० विचरकर अ० अथ प० पीछे स० सवृत का० कालकरे त० पीछे सि० सिझे बु० बुझे मु० मुक्त होवे जा० यावत् अं० अंतकरे ह० हां गो० गौतम कं० कांक्षा प० द्वप खी० क्षीण जा० यावत् अ० अतकरे ॥ १३ ॥ अ० अन्य तीर्थिक भ० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं भा० विशेष कहते हैं प० कहते हैं प० प्ररूपते हैं ए० एक जी० जीव ए० एक

गोयमा ! अकोहत्त जाव पसत्थ ॥ १२ ॥ सेणूण भते ! कंखापदोसे खीणे समणे णिग्गथे अतकरे भवइ अतिम सारीरिएवा, बहुमोहे वि य ण पुर्व्वि विहरित्ता, अह पच्छा सवुडे काल करेइ तओ पच्छा सिज्झइ,बुज्झइ,मुच्चइ, जाव अत करेइ ? हता गोयमा ! कंखापदोसे खीणे जाव अंतकरेइ ॥ १३ ॥ अण्णउत्थियाण भते ! एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेंति, एव परूवेंति, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आ-

कांक्षा मिथ्यात्व-मोहनीय कर्मक्षय करनेवाला श्रमण क्या दुःख का अंत करनेवाला होवे ? अथवा चरिम शरीरी व पहिले मोह में रमण करके पुनः लघुभूत शुद्ध बना हुवा काल करे तो क्या सिझता, बुझता, मुक्त होता यावत् सब दुःखों का अत करता है ? हां गौतम ! कांक्षा प्रद्वेष का क्षय करनेवाला, चरिम शरीरी व मोहका क्षय करनेवाला संसार का अत करे ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं, बोलते हैं, हेतु सहित कहते हैं, व प्ररूपते हैं कि एकही जीव एक समय में दो प्रकार के आयुष्य का बंध करता है

अतीतकाल अ० अनागत काल स० सर्वपना काल च० चौथा पद में ॥ १० ॥ से० वह भं० भगवन् ला० लघुता अ० अल्पइच्छा अ० मूर्च्छारहित अ० अगृद्धी अ० अप्रतिबन्ध स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम ला० लघुता जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ ११ ॥ भं० भगवन् अ० क्रोध रहित अ० मान रहित अ० मायारहित अ० लोभ रहित स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम अ० क्रोध रहित जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ १२ ॥ भं० भगवन् कं० कांक्षा प० द्वेष खी० क्षीण स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ अ० अंत

सव्वपज्जवा, जहा पोग्गलत्थिकाओ, तीतद्धा अणागयद्धा, सव्वद्धा, चउत्थएण पएण ॥ १० ॥ सेणूण भंते ! लाघविय, अप्पिच्छा, अमुच्छा, अगेही, अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ? हंता गोयमा ! लाघविय जाव पसत्थं ॥ ११ ॥ सेणूण भंते अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं णिग्गंथाणं पसत्थं ? हंता !

अतीत काल, अनागतकाल व सब काल में चौथा अगुरुलघुत्व मानना ॥ १० ॥ अब गुरुलघुपने का अन्य प्रकार से प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता, अल्प इच्छा, अमूर्च्छा, अगृद्धि, व अप्रतिबन्ध क्या प्रशस्त है ? हां गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता यावत् अप्रतिबन्ध प्रशस्त है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को क्रोध, मान, माया व लोभ रहितपना क्या श्रेष्ठ है ? हां गौतम ! क्रोध रहितपना यावत् लोभ रहितपना श्रमण निर्ग्रन्थ को श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् !

से प० परमव का आयुष्य प० बांधे प० परभवका आयुष्य प० बांधने से इ० यह भवका आ० आयुष्य प० बांधे प० ऐसे ए० एक जीव ए० एक समय में दो० दो आयुष्य प० बांधे इ० इस भवका आ० आयुष्य प० परभवका आयुष्य से० वह क० कैसे ए० इस भ० भगवन् ए० एसे गो० गौतम ज० जो अ० अन्यती-

गोयमा ! जण्णंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव परभवियाउयच, जे ते एव माहसु मिच्छते एव माहसु ॥ अह पुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेइ तजहा—इहभवियाउयवा, परभवियाउयवा । जं समय इह भावियाउय पकरेइ णो त समय परभवियाउय पकरेइ, ज समय परभवियाउय पकरेइ णो तं समय इह भवियाउय पकरेइ, इह भविया-उयस्स पकरणयाए णो परभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स पकरणयाए णो

करता है तो अहो भगवन् ! यह किस तरह से है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थी जो ऐसा कहते हैं कि एक जीव एक समय में इस भव व परभव का आयुष्य बांधता है वगैरह जो कहते हैं सो मिथ्या है परन्तु अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक जीव एक समय में इस भवका अथवा परभव का ऐसे दोनों में से एक भवका आयुष्य बांधता है जिस समय में इस भवका आयुष्य बांधता है उस समय में परभव का आयुष्य नहीं बांधता है और जिस समय में परभव का आयुष्य बांधता है उस

स०समय में दो०दो आ०आयुष्य प०बांधे इ०इस भवका आयुष्य प०परभवका आयुष्य ज०जिस स०समयमें इ०इस भ०भवका आ० आयुष्य प०बांधे तं०उस स०समयमें प०परभवका आयुष्य प०बांधे ज०जिससमयमें प० परभवका आयुष्य प०बांधे तं०उस समयमें इ०इसभवका आयुष्य प०बांधे इ०इस भ०भवका आ०आयुष्यप०बांधने

उयाई पगरेइ तंजहा—इहभवियाउयंच, परभवियाउयंच, । जं समयं इहं भवियाउयं पकरेइ तंसमयं परभवियाउयं पकरेइ, जंसमयं परभवियाउयं पकरेइ तंसमयं इहं भवियाउयं पकरेइ, इहं भवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स पकरणयाए इहं भवियाउयं पकरेइ, एवं खलु एगे जीवे एगे समएणं दो आउयाइं पकरेइ तंजहा इहं भवियाउयंच, परं भवियाउयंच ॥ से कहमेयं भंते ! एवं ?

इस में विरोध नहीं आता है क्यों की जीव स्वपर्याय समूहात्मक है जब वह आयुष्य का बंध करता है तब दो भव का आयुष्य बांधता है इस भव का आयुष्य व परभव का आयुष्य जिस समय में इस भवका आयुष्य का बंध करता है उस समय में परभव के आयुष्य का बंध करता है, और जिस समय में परभव के आयुष्य का बंध करता है उस समय में इस भव के आयुष्य का बंध करता है इस भव के आयुष्य का बंध करते परभव के आयुष्य का बंध करता है, और परभव के आयुष्य का बंध करते इस भव के आयुष्य का बंध करता है इसी प्रकार एकही जीव एक ही समयमें दो भव के आयुष्य का बंध

उस समय में पा० पार्श्वनाथ के अ० शिष्य का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० तहां उ० आये उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व०कहा थे० स्थविर सा० सामायिक ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर सा० सामायिक का अ० अर्थ ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान का अर्थ ण०नहीं या०जानते हैं थे०स्थविर सं०संयम व संयम का अर्थ न०नहीं जानते हैं थे०स्थविर स० संवर ण०

थेरा सामाइयं ण याणति, थेरा सामाइयस्स अट्ठं णयाणति, थेरा पच्चक्खाणं नयाणति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संयमं णयाणति, थेरा संजमस्स अट्ठं णयाणति, थेरा संवरं णयाणति, थेरा संवरस्स अट्ठं नयाणति, थेरा विवेगं णयाणति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणति, थेरा विउस्सग्गं णयाणति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं नयाणति ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी, जाणामोणं

भगवन्त को ऐसा कहने लगे अहो स्थविर ! तुम समताभाव रूप सामायिक नहीं जानते हो, कर्म का अनुपादान व निर्जरारूप सामायिक का प्रयोजन को नहीं जानते हो, पोरिशी वगैरह प्रत्याख्यान तुम नहीं जानते हो, आश्रव द्वार निरोध रूप प्रत्याख्यानका प्रयोजन तुम नहीं जानते हो, पृथिव्यादि का संरक्षण रूप संयम तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संयम का अर्थ तुम नहीं जानते हो, इन्द्रिय

थिक ए० ऐसा भा० कहते हैं जा० यावत् प० परभवका आ० आयुष्य जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् प० प्ररूपता हूं ए० एक जीव ए० एक समय में ए० एक आ० आयुष्य प० बांधे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १८ ॥ ते० उसकाल ते०

इह भवियाउय पकरेइ । एव खलु एगे जीवे एगेण समएणं एग आउय पकरेइ तजहा इह भवियाउयवा परभवियाउयवा सेव भते भत्तेत्ति भगव गोयम जाव विहरइ ॥ १८ ॥ तेण कालेणं तेण समएण पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णाम अणगारे, जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, थेर भगव एव वयासी

समय में इस भवका आयुष्य नहीं बांधता है इस भव का आयुष्य बांधते परभव का आयुष्य नहीं बंधाता है और परभव का आयुष्य बांधते इस भव का आयुष्य नहीं बंधाता है इसी से एक जीव एक समय में इस भव का अथवा परभव का ऐसे एक भव का आयुष्य बांधता है अहो भगवन् ! आपने कहा सो यथा तथ्य है ऐसा गौतम स्वामी कहकर विचरने लगे ॥१८॥ उस काल उस समय में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्य कालासवेसितपुत्र नामक अनगार जहां भगवंत श्री महावीर स्वामी के शिष्यथे वहां आये और स्थविर

उस समय में पा० पार्श्वनाथ के अ० शिष्य का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० तहां उ० आये उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० कहा थे० स्थविर सा० सामायिक ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर सा० सामायिक का अ० अर्थ ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान का अर्थ ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर सं० संयम व संयम का अर्थ न० नहीं जानते हैं थे० स्थविर स० संवर ण०

थेरा सामाइय ण याणति, थेरा सामाइयस्स अट्ठ णयाणति, थेरा पच्चक्खाण नयाणति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठ णयाणंति, थेरा सयम णयाणति, थेरा सजमस्स अट्ठ णया-णति, थेरा सवर णयाणति, थेरा सवरस्स अट्ठ नयाणति, थेरा विवेगं णयाणति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणति, थेरा विउस्सग्ग णयाणति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठ नया-णति ॥ तएण ते थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वयासी, जाणामोण

भगवन्त को ऐसा कहने लगे अहो स्थविर ! तुम समताभाव रूप सामायिक नहीं जानते हो, कर्म का अनुपादान व निर्जरारूप सामायिक का प्रयोजन को नहीं जानते हो, पोरिसी वगैरह प्रत्याख्यान तुम नहीं जानते हो, आश्रव द्वार निरोध रूप प्रत्याख्यानका प्रयोजन तुम नहीं जानते हो, पृथिव्यादि का संरक्षण रूप सयम तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संयम का अर्थ तुम नहीं जानते हो, इन्द्रिय

नहीं या० जानते हैं स० सवर का अ० अर्थ न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर वे० विवेक ण० नहीं या० जानते हैं वि० विवेक का अर्थ वि० कायोत्सर्ग वि० कायोत्सर्ग का अर्थ न० नहीं या० जानते हैं त० तब ते० वे थे० स्थविर का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहे जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायक जा० जानता हू अ० आर्य सा० सामायिक का अर्थ जा०

अज्जो सामाइय, जाणामोण अज्जो सामाइयस्स अट्ठ, जाव जाणामोण अज्जो विउस्सग्ग-स्स अट्ठ । तएणसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवते एव वयासी, जइण अज्जो तुब्भे जाणह सामाइय, जाणह सामाइयस्स अट्ठ, जाव जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठ, के भे अज्जो सामाइए ? केभे सामाइयस्स अट्ठे, जाव के भे विउसग्गस्स

नोइन्द्रिय का निग्रह रूप सवर तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो सवर का अर्थ तुम नहीं जानते हो, विशिष्ट बोध रूप विवेक तुम नहीं जानते हो, त्याग व त्यागादि जो विवेक उस का अर्थ तुम नहीं जानते हो, त्यागरूप कायोत्सर्ग तुम नहीं जानते हो, और कायोत्सर्ग का अर्थ तुम नहीं जानते हो तब श्री स्थ-विर भगवंत उन कालासवेसित पुत्र अनगार को ऐसे बोले कि अहो आर्य ! मैं समपरिणाम रूप सामायिक जानता हूं कर्मका अनुपादान व निर्जरा रूप सामायिक का अर्थ मैं जानता हू यावत् कायो-त्सर्ग व कायोत्सर्ग का अर्थ मैं जानता हूं तब कालासवेसित पुत्र नामक अनगार उन स्थविर भगवंत को

यावत् जा० जानता हूं अ० आर्य वि० कायोत्सर्ग का अर्थ त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० कहा ज० यदि अ० आर्य तु० तुम जा० जानते हो सा० सामायिक जा० जानते हो सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् जा० जानते हो वि० कायोत्सर्ग का अर्थ के० क्या अ० आर्य सा० सामायिक के० क्या सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् के० क्या वि० कायोत्सर्ग का अर्थ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन् का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को

अट्ठे ? तएण ते थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वयासी—आयाणे अज्जो! सामाइए, आयाणे अज्जो सामाइयस्स अट्ठे, जाव विउस्सग्गस्स अट्ठे॥ तएण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते एव वयासी—जइ भे अज्जो ! आया सामाइए आया सामाइयस्स अट्ठे जाव आया विउस्सग्गस्स अट्ठे, अवहट्टु कोह माणमाया लोभे, किमट्ठ अज्जो गरहह ? कालासा ! सजमट्ठयाए । से भते ! किं गरहासजमे, अग-

ऐसे बोले की यदि तुम सामायिक, सामायिकका अर्थ यावत् कायोत्सर्ग का अर्थ जानते हो तो अहो आर्य ! सामायिक क्या है, सामायिक का अर्थ क्या है, यावत् कायोत्सर्ग का अर्थ क्या है ? तब स्थविर भगवत कालासवेशित पुत्र नामक अनगार को ऐसे बोले की अहो आर्य ! हमारे मतमें सामायिक गुण प्रतिपन्न जीव को ही सामायिक कही है, आत्मा को ही सामायिक का अर्थ कहा है यावत् आत्मा का ही कायो

नहीं या० जानते हैं स० सवर का अ० अर्थ न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर वे० विवेक ण० नहीं या० जानते हैं वि० विवेक का अर्थ वि० कायोत्सर्ग वि० कायोत्सर्ग का अर्थ न० नहीं या० जानते हैं स० सब ते० वे थे० स्थविर का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहे जा० जानता हू अ० आर्य सा० सामायिक जा० जानता हू अ० आर्य सा० सामायिक का अर्थ जा०

अज्जो सामाइय, जाणामोण अज्जो सामाइयस्स अट्ठ, जाव जाणामोण अज्जो विउस्सग्ग-स्स अट्ठ । तएणसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवते एव वयासी, जइण अज्जो तुब्भे जाणह सामाइय, जाणह सामाइयस्स अट्ठ, जाव जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठ, के भ अज्जो सामाइए ? केभे सामाइयस्स अट्ठे, जाव के भे विउसग्गस्स

नोइन्द्रिय का निग्रह रूप सवर तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो सवर का अर्थ तुम नहीं जानते हो, विशिष्ट बोध रूप विवेक तुम नहीं जानते हो, त्याग व त्यागादि जो विवेक उस का अर्थ तुम नहीं जानते हो, त्यागरूप कायोत्सर्ग तुम नहीं जानते हो, और कायोत्सर्ग का अर्थ तुम नहीं जानते हो तब श्री स्थविर भगवत उन कालासवेसित पुत्र अनगार को ऐसे बोले कि अहो आर्य ! मैं समपरिणाम रूप सामायिक जानता हूं कर्मका अनुपादान व निर्जरा रूप सामायिक का अर्थ मैं जानता हू यावत् कायोत्सर्ग व कायोत्सर्ग का अर्थ मैं जानता हू तब कालासवेसित पुत्र नामक अनगार उन स्थविर भगवंत को

क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ किं० क्या अ० आर्य ग० गर्हते हो का० कालासवेसित सं० संयम केलिये से० वह भ० भगवन् किं० क्या ग० गर्हा स० संयम अ० अगर्हा सं० संयम का० कालासवेसित ग० गर्हा सं० संयम नो० नहीं अ० अगर्हा स० संयम ग० गर्हा स० सब दो० दोष प० क्षपावे स० सब मि० मिथ्यात्व प० जानकर ए० ऐसे आ० आत्मा स० संयम में उ० स्थिर भ० होवे उ० पुष्ट भ० होवे उ० उपस्थित भ० होवे ए० यहां से० वह का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार स० स्वय बुद्ध थे०

अणभिगमेण, अदिट्ठाण अस्सुयाण असुयाणं, अविण्णायाण अव्वोगडाण अव्वो-
च्छिण्णाण, अणिज्जूढाण, अणुवधारियाण, एयमट्ठ णो सद्दहिए, णोपत्तिइए
णोरोइए, इयाणिं भंते ! एएसिण पयाण जाणणयाए, सवणयाए, बोहियाए,
अभिगमेण दिट्ठाण सुयाण मुयाण विण्णायाण, वोगडाण, वोच्छिण्णाण, णिज्जढाणं
उवधारियाण, एयमट्ठ सद्दहामि, पत्तियामि, रोएमि, एवमेय सेजहेय तुब्भे
वयह ॥ तएणते थेरा भगवतो कालासवेसिय पुत्त अणगार एव वयासी

अहो अनगार ! गर्हा संयम है परन्तु अगर्हा संयम नहीं है गर्हा से सब रागादि दोषों अथवा पूर्व कृत पाप क्षय होता है और सब मिथ्यात्व ज्ञान परिज्ञान से जानकर प्रत्याख्यान परिज्ञान से छूटता है इस तरह से हमारे मत में आत्मा स्थिर व पुष्ट होता है ऐसा सुनकर कालासवेसित पुत्र नामक अनगारने स्थविर भगवन्त को वंदना नमस्कार किया वंदना नमस्कार करके कहने लगे कि अहो भगवन् ! मुझे

प० ऐसा व० कहा आ० आत्मा णे० हमारे में सा० सामायिक आ० आत्मा णे० हमारे में सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् वि० कायोत्सर्ग आ अर्थ त० तब से० वह का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवन्त का ए० ऐसा व० कहा अ० आर्य आ० आत्मा सा० सामायिक आ० आत्मा सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् आ० आत्मा वि० कायोत्सर्ग का० अर्थ अ० छोडकर को

रहासजमे ? कालासा ! गरहासजमे नो अगरहा सजम, गरहानियण सव्व दोस पविणेइ सव्व बालिय परिण्णाए । एव खु णे आया सजमे उवहिए भवइ, एवखु णेआया सजमे उवचिए भवइ, एवखु णेआया सजमे उवट्ठिए भवइ । एत्थण से कालासवेसियपुत्त अणगारे सबुद्धे थरे भगवते वदइ णमसइ वदित्ता णमसइत्ता एव वयासी—एएसिण भते ! पयाण पुव्वि अण्णाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए,

त्सर्ग का अर्थ कहा है तब वह कालासवेसित पुत्र नामक अनागर बोले की अहो आर्य ! यदि तुमारे मत में आत्मा सामायिक, आत्मा सामायिक का अर्थ यावत् आत्मा कायोत्सर्ग का अर्थ है तो क्रोध, मान, माया व लोभ का त्याग कर के उसकी निन्दा क्यों करते हो ? क्यों कि निन्दा, गर्हा यह मद्वेष का कारन है, और क्रोधादि त्यागने वाला सामायिक धृतिवाला निन्दा गर्हा नहीं कर सकता है तब स्थविर भगवतने उत्तर दीया कि अहो कालासवेशित पुत्र ! अवद्य पापकी गर्हा करते सयम होता है तब पुन वह कालासवेशित अनगार बोले कि अहो भगवन् ! क्या गर्हा सयम है या अगर्हा सयम है ?

ए० यह प० पद जा० जाने त० सुने उ० अवधारे ए० यह अर्थ स० श्रद्धता हूं प० प्रतीति करताहूं ए० ऐसे ज० जैसे तु० तुम व० कहते हो त० तब थे० स्थविर भ० भगवान् का० कालासवेसित अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहा स० श्रद्धा करो अ० आर्य प० प्रतीति करो रो० रुचिकरो ज० जैसे अ० मैं व० कहता हूं त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवन्त को व० वंदनकर न० नमस्कारकर इ० इच्छता हूं तु० तुमारी अ० पास चा० चार महाव्रत ध० धर्म से पं० पांच म० महाव्रत स० प्रतिक्रमण सहित ध० धर्म उ० अंगीकार करके वि० विचरने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० नहीं

मा पडिबधं करेह, तएण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वदइ नमसइ वंदित्ता नमसइत्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइय सपडिक्कमणं धम्म उवसंप-ज्जित्ताण विहरइ ॥ तएणं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणिवासाणि सामण्ण परि-

यह अर्थ अच्छी तरह से मैंने स्वीकार किया है, अब मैं इन की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि करता हूं आपने जो कहा है वैसाही भाव है तब स्थविर भगवंत कालासवेसित पुत्र नामक अनगार को बोले की अहो आर्य! जो मैं कहताहूं उन वचनों की तुम श्रद्धा प्रतीति व रुचि करो तब कालासवेशित पुत्र नामक अनगार श्री स्थविर भगवंत को वंदना नमस्कार कर के बोले की अहो भगवन्! मैं आपकी समीप चार महाव्रत रूप धर्म से प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म अंगीकार करने को इच्छता हूं तब स्थ-

स्थविर भ० भगवन्त को व वंदनकर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० कहा ए० यह भं० भगवन् प०पद में पु०पहिले अ० जाना नहीं अ० सुना नहीं अ० बोध नहीं अ०ज्ञान नहीं अ० देखा नहीं अ० सुना नहीं अ० स्मरण नहीं किया अ० विज्ञान हुवा नहीं अ०गुरुगम नहीं हुवा अ० व्यवच्छेद नहीं हुवा अ० सुखाव बोध नहीं अ० धारा नहीं ए० यह अर्थ णो० श्रद्धे नहीं नो० प्रतीत कीये नहीं णो० रुचे नहीं इ०, अब भं० भगवन्

सद्दहामि अज्जो, पत्तियामि अज्जो, रोएमि अज्जो, सेजहेयं अम्हे वयामो ॥ तएणं से कालासवेसिय पुत्ते अणगारे थेरे भगवंतो वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता एवं वयासी—इच्छामिणं भंते ! तुब्भे अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ? । अहासुहं देवाणुप्पिया

इन पदों का इस प्रकार के अर्थ का ज्ञान नहीं था, मैंने उस का स्वरूप नहीं पहिचानाथा, मैंने पहिले किसी की पास ऐसा श्रवण नहीं कियाथा मुझे ऐसी प्रतीति नहीं हुईथी; मुझे ऐसा साक्षात्कार नहीं हुवा था, मुझे ऐसा गुरुगम नहीं हुवा था, मेरा संदेह इस प्रकार किसीने नहीं मीटाया था, मुझे ऐसा सुखाव बोध नहीं हुआ था, मैंने इस प्रकार ऐसा धारण नहीं किया था, मैं इस प्रकार इसे नहीं श्रद्धता था, मुझे ऐसा रुचिकर नहीं हुआ था, अब अहो भगवन् ! इन का अर्थ मैंने जाना है, ज्ञान से बोधित हुवा है, सम्यक्त्व से विस्तृत अर्थावबोधवाला हुआ है विशेषकर धारनकिया है, सर्वथा प्रकार से संदेह दूर हुआ है,

अहियासिज्जइ, तमट्ठ आराहेइ आराहेइत्ता चरमेहिं उस्सास नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुए सव्वदुक्खप्पहीणे भतात्ति ॥ १५ ॥ भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ वंदित्ता नमसइत्ता एव वयासी सेणूण भते ! सेट्ठिस्सय तणुयस्स,

घे आ० आराधकर च० चरम उ० श्वासोश्वास से सि० सिद्ध बु० बुद्ध मु० मुक्त प० परिनिवृत्त स० सर्व दु ख से प०मुक्त भ० भगवन् त्ति० ऐसा ॥ १५ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को व० वदना कर न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले भ० भगवन् से० शेठ त० दारिद्री कि० रक ख० क्षत्रिय स० सरिसी अ० अप्रत्याख्यान कि० क्रिया क० करे ह० हां० गो० गौतम

पना, भूमिशैय्या, काष्टशैय्या, कशलोचन ब्रह्मचर्य, परघर प्रवेश, मासि, अमासि, ऊच नीच इन्द्रियों के समूह और बावीस परिषह के उपसर्ग सहन करते थे; उसे आराधकर चरम श्वास नीश्वास में सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःखों से रहित हुवे अहो भगवन् ! यह आपका वचन सत्य है ॥ १५ ॥ क्रिया रहित होने से सिद्ध होते हैं इसलिये क्रिया का प्रश्न करते हैं गौतम स्वामीने महावीर भगवत को वदना नमस्कार करके ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! श्रेष्टि, दरिद्री, कृपण व क्षत्रिय को क्या एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है ? हां गौतम ! श्रेष्टि, दरिद्री, कृपण व क्षत्रिय को एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है अहो भगवन ! सब को एक सरिखी क्रिया लगनेका क्या कारन ? अहो गौतम !

प० प्रतिबंध क० करो त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवान् को व० वदनकर न० नमस्कारकर चा० चार महाव्रत ध० धर्म से पं० पांच महाव्रत स० प्रतिक्रमण सहित, ध० धर्म उ० अंगीकार कर वि० विचरता है का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार ब० बहुत व० वर्ष सा० साधु पर्याय पा० पाली पा० पालकर ज० जिसलिये की० करे न० नग्न भाव मु० मुंडभाव अ० स्नान करना नहीं अ० दंत प्रक्षालन नहीं अ० छत्र नहीं अ० उपानह रहित भू० भूमि शैय्या फ० पाटशैय्या क० काष्ट शैय्या के० केशलोच बं० ब्रह्मचर्य प० परगृह प्रवेश ल० मास अ० अमास उ० ऊंच नीच गा० इन्द्रिय समुह बा० बावीस प० परिषह उ० उपसर्ग अ० सहन त० इसलिये आ० आरा-

याग पाउणइ पाउणइत्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे, अन्हाणय, अदंत धुवणय, अच्छत्तयं, अणोवाहणय, भूमिसेज्जा फलहसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोओ, बंभ चेरवासो, परघरप्पवेसो, लद्धावलद्धी, उच्चावया गामकंटया, बावीस परीसहोवसग्गा

विर भगवन्त बोले की ज्यों तुम्हारा आत्मा को सुख होवे वैसे करो ऐसा कार्य में प्रतिबंध [विलंब] मत करो तब कालासवेशित पुत्र अनगारने स्थविर भगवंत को वंदना नमस्कार किया; वंदना नमस्कार करके चार महाव्रत रूप धर्म में से प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म अंगीकार कर विचरने लगे तब उन कालासवेशित पुत्र अनगारने बहुत कालतक साधु की पर्याय का पालन किया और पालन करके जिस लिये नग्नपना, मुंड भाव, स्नान नहीं करना, दंत प्रक्षालन नहीं करना, छत्र व उपानह रहित

अ० परिभ्रमण से० वह के० कैसे जा० यावत् आ० आधाकर्मी भु० भोगवता जा० यावत् अ० परिभ्रमण करे गो० गौतम आ० आधाकर्मी भु० भोगवता आ० आत्मा से ध० धर्म अ०अतिक्रमे आ०आत्मा से ध० धर्म अ०अतिक्रमता पु०पृथ्वी कायाकी ण०नहीं अ०अनुकंपाकरे जा०यावत् त०त्रसकाया की, ण०नहीं अ०

बद्धाओ धाणिय बंधण बद्धाओ पकरेइ, जाव अणुपरियट्टइ। से केणट्ठेणं जाव आहाकम्मण भुंज-माणे जाव अणुपरियट्टइ? गोयमा! आहाकम्मण भुंजमाणे आयाए धम्म अइक्कमइ आयाए धम्म अइक्कममाणे पुढविकाय णावकंखइ जाव तसकाय णावकंखइ, जेसिंपियण जावाणं

[अनुभाग की अपेक्षा से] और प्रदेश बंध की अपेक्षा से क्या उपार्जे ? अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला श्रमण निर्ग्रंथ आयुष्य कर्म वर्जकर अन्य सात कर्म प्रकृतियों यदि शिथिल बंधनवाली होवे तो दृढ बंधनवाली बनावे, अल्प काल की स्थितिवाली को दीर्घ काल की स्थितिवाली बनावे, यावत् अनंत कालतक चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण करे अहो भगवन् ! किस कारन से आधा कर्मी भोगवनेवाला साधु सात कर्म प्रकृतियों को दृढ बंधनवाली बनावे यावत् चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण करे ? अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला आत्मासे धर्म अतिक्रमता है, आत्मा से धर्म अतिक्रमते पृथ्वीकायादि षट्काया की अनुकम्पा रहित होता है और जिन जीवों के शरीर का

सं० शेठ का जा० यावत् अ० अप्रत्याख्यान क्रिया क० करे से० वह के० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम अ० अविरति प० प्रत्यय से० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है से० शेठ त० दरिद्री जा० यावत् क० करे ॥ १६ ॥ अ० आधाकर्मी भु० भोगवता स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ किं० क्या बं० बांधे प० करे चि० चिने उ० उपचिने गो० गौतम आ० आधाकर्मी भु० भोगवता आ० आयुष्य व० वर्जकर स० सात क० कर्म प्रकृति सि० सिथिल ब० बंधन ब० बंधीहुइ ध० दृढ बं० बंधन ब० बंधीहुई प० करे जा० यावत्

किवणस्सय, खत्तियस्सय समाचेव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ ? हंता गोयमा ! सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ । से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! अविरइं पडुच्च, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ सेट्ठिस्सय तणु जाव कज्जइ ॥ १६ ॥ आहाकम्मण भुंजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ किंपकरेइ, किंचिणाइ, किंउवचिणाइ ? गोयमा ! आहाकम्म भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ सिढिलबंधण

अविरति प्रत्ययिक सब को एक सरिखी क्रिया लगती है क्यों की इच्छा सब को एक सरिखी है; और उस की निवृत्ति किसी को नहीं हुइ है इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि श्रेष्ठी यावत् क्षत्रिय को एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! आधाकर्मी आहार भोगने-वाला साधु निर्ग्रंथ क्या बांधे, [प्रकृति की अपेक्षा से] क्या करे, [स्थिति की अपेक्षा से] क्या चिने

सि०शिथिल बं०बंधन ब०बंधीहुइ प०करे ज०जैसे स०संवृति ण० विशेष आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदाचित् बं० बांधे सि० कदाचित् नो० नहीं ब० बांधे से० शेष त० तैसे जा० यावत् वी० तीरे से० वह के० कैसे जा० यावत् वी० तीरे गो० गौतम फा० प्रासुक ए० शुद्ध भु० भोगनता स० श्रमण नि० निग्रंथ आ० आत्मा से ध० धर्म ना० अतिक्रमे नहीं आ० आत्मा से ध० धर्म अ० नहीं अ० अतिक्रमनेसे से पु० पृथ्वी काया की अ० अनुकंपाकरे जा० यावत् त० त्रसकाया की अ० अनुकंपाकरे जे० जिस जी०

ओ पकरेइ जहा से संवुडेण णवर आउयवज्जं कम्म सि बंधइ सिय नो बंधइ सेस तहेव जाव वीईवयइ । सेकेणट्ठेणं जाव वीईवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंज-माणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाणे पुढविकाय

छोडकर अन्यसात कर्मों यदि दृढ बंधनवाले होवे तो शिथिल बंधनवाले बनावे और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधे क्वचित् बांधे नहीं उस में यदि आयुष्य कर्म का बंध करे तो वैमानिक देवता होवे और आयुष्य का बंध नहीं करे तो मुक्तिगामी जीव होवे अहो भगवन् ! ऐसा किस तरह से होता है ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक आहार भोगनेवाला आत्मधर्म का उल्लंघन नहीं करता है इस तरह उल्लंघन नहीं करता हुवा पृथ्वीकायादि षट्कायाकी अनुकम्पावाला होता है यावत् जिन जीवों के शरीर का आहार करता है, उन जीवों की भी अनुकम्पावाला होता है इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि प्रासुक एषणिक

अनुकंपाकरे जे० जिन जी० जीव के श० शरीर का आहार आ० करे ते० उन जी० जीवों की ण० नहीं अ० अनुकंपाकरे से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है आ० आधाकर्मी भु० भोगवता आ० आयुष्य व० वर्जकर स० सात क० कर्म प्रकृति जा० यावत् अ० परिभ्रमण करे ॥ १७ ॥ फा० प्रासुक ए० शुद्ध भ० भगवन् भु० भोगवता किं० क्या ब० बांधे जा० यावत् उ० उपचिने गो० गौतम फा० प्रासुक भु० भोगवता आ० आयुष्य वर्ज कर स० सात क० कर्म प्रकृति ध० दृढ ब० बंधन ब० बंधी हुइ

सरीराइ आहारमाहारेइ तेविजीवे नावकखइ, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ, आहाकम्मण भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ जाव अणुपरियट्टइ॥ १७॥ फासुएसणिज्ज भंते ! भुंजमाणे किंबंधइ ? जाव उवचिणाइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्ज भुंजमाणे आउय वज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ धणिय बंधन बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धा

वह आहार करता है उन जीवों की भी अनुकम्पा रहित होता है इस लिये अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला आयुष्य कर्म छोडकर अन्य सात कर्मों का दृढ बंधन करता है यावत् चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण करता है ॥ १७ ॥ प्रासुक एषणिक वस्तु भोगनेवाला श्रमण निर्ग्रंथ किस का बंध करे यावत् क्या उपचिने ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक वस्तु भोगनेवाला श्रमण निर्ग्रंथ आयुष्य कर्म

सि० शिथिल ब० बंधन ब० बंधीहुइ प० करे ज० जैसे स० संवृति ण० विशेष आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदा चित् बं० बांधे सि० कदाचित् नो० नहीं ब० बांधे से० शेष त० तैसे जा० यावत् वी० तीरे से० यह के० कैसे जा० यावत् वी० तीरे गो० गौतम फा० प्रासुक ए० शुद्ध भु० भोगनता स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आत्मा से ध० धर्म ना० अतिक्रमे नहीं आ० आत्मा से ध० धर्म अ० नहीं अ० अतिक्रमनेसे से पु० पृथ्वी काया की अ० अनुकंपाकरे जा० यावत् त० त्रसकाया की अ० अनुकंपाकरे जे० जिस जी०

ओ पकरेइ जहा से संवुडेण णवर आउयवज्जं कम्म सिय बंधइ सिय नो बंधइ सेस तहेव जाव वीईवयइ । सेकेणट्ठेण जाव वीईवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्ज भुंज-माणे समणे निग्गंथे आयाए धम्म नाइक्कमइ, आयाए धम्म अणइक्कममाणे पुढविकाय

छोडकर अन्यसात कर्मों यदि दृढ बंधनवाले होवे तो शिथिल बंधनवाले बनावे और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधे क्वचित् बांधे नहीं उस में यदि आयुष्य कर्म का बंध करे तो वैमानिक देवता होवे और आयुष्य का बंध नहीं करे तो मुक्तिगामी जीव होवे अहो भगवन् ! ऐसा किस तरह से होता है ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक आहार भोगनेवाला आत्मधर्म का उल्लंघन नहीं करता है इस तरह उल्लंघन नहीं करता हुवा पृथ्वीकायादि षट्कायाकी अनुकम्पावाला होता है यावत् जिन जीवों के शरीर का आहार करता है, उन जीवों की भी अनुकम्पावाला होता है इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि प्रासुक एषणिक

जीव के स० शरीर का आ० आहार करे ते० उन जी० जीवों को अ० अनुकंपाकरे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् वी० तीरे ॥ १८ ॥ से० वह भ० भगवन् अ० अस्थिर प० परिवर्तन होवे ना० नहीं थि० स्थिर प० परिवर्तन होवे अ० अस्थिर भ० भेदावे नो० नहीं थि० स्थिर भ० भेदावे सा० शाश्वत बा०

अवकंखइ जाव तसकायं अवकंखइ, जेसिंपियण जीवाण सरीराइ आहारेइ तेवि जीवे अवकखइ, से तेणट्ठेण जाव वीईवयइ ॥ १८ ॥ सेणूण भंते ! अथिरे पलोट्टइ नोथिरे पलोट्टइ, अथिरे भज्जइ नो थिरे भज्जइ, सासए बालए बालियत्त

आहार भोगनेवाला सात कर्मका शिथिल बंधन करता है और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधता है व क्वचित् नहीं बांधता है यावत संसार का व्यतिक्रम करता है ॥ १८ ॥ इस में संसार का उल्लंघन कहा यह संसार का अस्थिरपना से होवे इस लिये स्थिर अस्थिर का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या अस्थिर पदार्थ पलटते हैं और स्थिर नहीं पलटते है ? अस्थिर का भेद होता है और स्थिर का भेद नहीं होता है ? बालक शाश्वत, बालक पना अशाश्वत, पंडित शाश्वत व पंडितपना क्या अशाश्वत है ? हां गौतम ! अस्थिर द्रव्य जो लोहादि उनका परावर्तन होता है, (आध्यात्म चिन्तवन में) अस्थिर कर्म जीव प्रदेश से समय २ में चले स्थिर सो पत्थारादि चले नहीं आध्यात्म चिन्ता में जीव का उपयोग स्थिर तृणादि

बालक बा० बालपना अ० अशाश्वत सा० शाश्वत प० पंडित पं० पंडितपना अ० अशाश्वत हं० हां गो० गौतम अ० अस्थिर प० परिवर्तन होवे जा० यावत् प० पंडितपना अ० अशाश्वत स० वह ए० ऐसा भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ ९ ॥ + ×

असासय सासए पडिए पडियत्त असासय ? हंता गोयमा ! अथिरे पलोट्टइ जाव पंडियत्त असासय सेव भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढमेसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ९ ॥ * * *

अस्थिर मेघ स्वभाव वाले हैं आध्यात्म चिन्ता में अस्थिर कर्म भेदावे, लोहकी सलाका अभेद्य स्वभाव वाली है और शाश्वतपना से जीव के टुकडे होवे नहीं व्यवहार से बालक शाश्वत है और निश्चय से जीव शाश्वत, व्यवहार से बालक भाव अशाश्वत निश्चय से असयत भाव अशाश्वत, निश्चय से पंडित तत्त्व के ज्ञान-शाश्वत, व्यवहार से सयती जीव शाश्वत व्यवहार से पंडितपना अशाश्वत और निश्चय से सयत भाव अशाश्वत होवे अहो भगवन् ! आपने कहा वह सब सत्य है अन्यथा नहीं है ऐसा कहकर वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी सयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का नववां उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ९ ॥ * * *

अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं च० चलते को अ० नहीं चला जा० यावत् नि० निर्जरते को अ० नहीं निर्जरा दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित न० नहीं सा० मीले क० कैसे दो० दो प० परमाणु पुद्गल का न० नहीं है सि० स्निग्धपना त० इसलिये दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित न० नहीं सा० मीले ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित सा० मीले क० कैसे ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित मा० मीले ति० तीन प० परमाणु पुद्गल

अण्णउत्थियाण भंते ! एव माइक्खति जाव परूवति एव खलु चलमाणे अचलिए, जाव निज्जरिज्जमाणे अनिज्जिण्णे दो परमाणु पोग्गला एगयओ न साहणति, कम्हा दो, परमाणु पोग्गलाण णात्थि सिणहकाए तम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ न साहणति ॥ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणति, कम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ

नवत्रे उद्देशे में अस्थिर कर्म का विषय कहा उस में कुतीर्थिक प्रवर्तते हैं सो आगे बतलाते हैं कितनेक अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जो कर्म जीव प्रदेश से चलने लगे उसे चले कहना नहीं यावत् निर्जरने लगे उसे निर्जरे कहना नहीं, क्यों की वर्तमान काल को अतीत काल नहीं कह सकते हैं, परतु जो सपूर्ण पुद्गल चलित हुवे होवे तब चले और निर्जरित हुवे होवे तब निर्जरे कहना और र ऐसा कहते हैं कि दो परमाणु पुद्गल एकत्रित स्कन्धपने मीले नहीं क्यों कि मीलने में जो स्निग्धपने का

को अ० है सि० स्निग्धपना त० इसलिये ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित मा० मील स० वे भि० भेदात दु० दोप्रकार से ति० तीन प्रकार से क० कर दु० दोप्रकार से कि० करते ए० एक तरफ दि० देढ प० परमाणु पुद्गल भ० होवे प० एक तरफ दि० देढ प० परमाणु पुद्गल भ० होवे ति० तीन प्रकार से क०करते ति०तीन प०परमाणु पुद्गल ह०होवे ए०ऐसे जा०यावत् च० चार प० पाच प०परमाणु पुद्गल ए०एक बाजु से सा०मीले ए०एक बाजुस मा०मीलकर दु०दु खपने क० करे दु०दु ख सा०शाश्वत स०

साहणति, तिण्णि परमाणु पोग्गलाण अत्थि सिणेह काए, तम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जति दुहा किज्जमाणा एगयओ दिवड्ढे परमाणु पोग्गले भवइ, एगयओ दिवड्ढे परमाणु पोग्गले भवइ, तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणु पोग्गला हवति एव जाव चत्तारि पच परमाणु

गुण है वह उन परमाणु पुद्गलों में नहीं है परतु तीन परमाणु पुद्गल मीलकर स्कधरूप बनजाते हैं क्यों की इसमें स्निग्धता रही हुइ है उस तीन परमाणु पुद्गल का स्कन्ध को भेदने में आवेतो इस के दो अथवा तीन विभाग होसकते हैं जब दो विभाग किया जाता है तब देढ २ परमाणु का एक २ विभाग होता है और जब तीन विभाग किया जाता है तब एक २ परमाणु का तीन विभाग होता है जैसे दो परमाणु का स्कध होता है वैसे ही तीन, चार पाच परमाणुओं का स्कध बनता है वे स्कध रूप बनकर

सदाकाल उ० चयपामे अ० अपचयपामे पु० पहिले भा० भाषा भा० भाषा भा० बोलाती हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोली हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोलीहुइ भा० भाषा किं० क्या भा० भापक को भा० भाषा अ० अभापक भा० भाषा णो० नहीं सा० वह भा० भाषक को भा० भाषा पु० पहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीत हुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख

पोग्गला एगयओ साहणति, एगयओ साहणिचा दुक्खचाए कज्जति, दुक्खेत्रियण सेसासए सयासमिय उवचिज्जइय अवचिज्जइय, पुर्व्वि भासा भासा, भासिज्जमाणी भासाअभासा, भासासमयविइक्कंतचण भासिया भासा, जा सा पुव्व भासा भासामासिज्जमाणी भासा अभासा, भासा समयविइक्कंतंचणं भासियाभासा सा किं भासओ

दुःख रूप (कर्म पने) परिणमते हैं कर्म अनादि होने से वह दुःख भी शाश्वत होता है वह सदैव सम्यक् प्रकार से चय उपचय-हानि वृद्धि को प्राप्त होता रहता है और भी वे अन्य तीर्थिक कहते हैं कि पहिले बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना, परंतु वर्तमान में बोलाती हुई भाषा को भाषा कहना नहीं, भाषा का समय अतिक्रान्त हुवे पीछे भाषा को भाषा कहना और अब बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना, बोलाती हुई भाषा को अभाषा कहना, और भाषा समय व्यतीत हुए पीछे

मा० वह पु० पहिली कि० क्रिया दु०दु स क०करते कि० क्रिया अ० अदु ख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीतहुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दु ख क० करण दु० दु ख अ० अकरण दु० दु ख० णो० नहीं सा० वह क० करण दु० दु'ख व० कहना अ० नहीं किया दु० दु ख अ० नहीं स्पर्शा अ० नहीं करते पा० प्राण भू० भूत

भासा,अभासओ?भासा अभासओण सामासा णो खलुसा भासओ भासा।पुव्विं किरिया दुक्खा,कज्जमाणी किरिया अदुक्खा,किरिया समयवीतिक्कंत चण कडा किरिया दुक्खा,जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणा किरिया अदुक्खा किरिया समय वीइक्कतंचण कडा किरिया दुक्खा । सा किं करणओ दुक्खा अकरणओ दुक्खा ? अकरणओण सा दुक्खा, णो खलु सा करणओ दुक्खा, सेव वत्तव्वं सिया, आकिच्च दुक्ख, अफुस-

बोलाइ जो भाषा उसे भाषा कहना, तब क्या वह भाषा भाषकको होती है या अभाषक को होती है ? तब अन्यतीर्थिक ऐसा उत्तर देते हैं कि भाषक को भाषा नहीं; परंतु अभाषक को भाषा होती है और भी अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि जहां तक कायिकादि क्रिया नहीं की जावे वहांतक ही वह क्रिया दुःख के हेतु भूत होती है, और क्रिया करने लगे तब वह दुःख के हेतु भूत नहीं होती है, क्रिया समय व्यतीत हुवे पीछे कराइ हुइ क्रिया दुःख के हेतु भूत है, और जो पहिले की क्रिया दुःख के हेतु भूत है, करावी हुई क्रिया दुःख के हेतु भूत नहीं है और क्रिया समय व्यतीत हुए पीछे कराइ क्रिया दुःख के हेतु

सदाकाल च० चयपामे अ० अपचयपामे पु० पहिले भा० भाषा भा० भाषा भा० बोलाती हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोली हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोलीहुइ भा० भाषा किं० क्या भा० भाषक को भा० भाषा अ० अभाषक भा० भाषा णो० नहीं सा० यह भा० भाषक को भा० भाषा पु० पहिली कि० क्रिया दु० दु'ख क० करते कि० क्रिया अ० अदु:ख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीत हुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दु'ख

पोग्गला एगयओ साहणति, एगयओ साहणिच्चा दुक्खत्ताए कज्जति, दुक्खेवियणं सेसासए सयासमियं उवचिज्जइय अवचिज्जइय, पुव्विं भासा भासा, भासिज्जमाणी भासाअभासा, भासासमयवितिक्कंतंचणं भासिया भासा, जा सा पुव्वि भासा भासाभासिज्जमाणी भासा अभासा, भासा समयवितिक्कंतंचणं भासियाभासा सा किं भासओ

दु'ख रूप (कर्म पने) परिणमते हैं कर्म अनादि होने से वह दु'ख भी शाश्वत होता है वह सदैव सम्यक् प्रकार से चय उपचय-हानि वृद्धि को प्राप्त होता रहता है और भी वे अन्य तीर्थिक कहते हैं कि पहिले बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना, परंतु वर्तमान में बोलाती हुई भाषा को भाषा कहना नहीं, भाषा का समय अतिक्रान्त हुवे पीछे भाषा को भाषा कहना और अब बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना, बोलाती हुई भाषा को अभाषा कहना, और भाषा समय व्यतीत हुए पीछे

भा॰ वह पु॰ पहिली कि॰ क्रिया दु॰दु ख क॰करते कि॰ क्रिया अ॰ अदु ख कि॰क्रिया स॰समय वी॰ व्यतीतहुवे क॰ कीहुइ कि॰ क्रिया दु॰ दु ख क॰ करण दु॰ दु ख अ॰ अकरण दु॰ दु ख॰ णो॰ नहीं सा॰ वह क॰ करण दु॰ दुःख व॰ कहना अ॰ नहीं क्रिया दु॰दु ख अ॰ नहीं स्पर्शा अ॰ नहीं करते पा॰ प्राण भू॰ भूत

भासा, अभासओ? भासा अभासओण सा भासा णो खलु सा भासओ भासा। पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणी किरिया अदुक्खा, किरिया समयवीतिक्कंत चण कडा किरिया दुक्खा, जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणा किरिया अदुक्खा किरिया समय वीइक्कंतंचण कडा किरिया दुक्खा। सा किं करणओ दुक्खा अकरणओ दुक्खा ? अकरणओण सा दुक्खा, णो खलु सा करणओ दुक्खा, सेव वत्तव्व सिया, अकिच्च दुक्ख, अफुस-

बोलाइ जो भाषा उसे भाषा कहना, तब क्या वह भाषा भाषकको होती है या अभाषक को होती है? तब अन्यतीर्थिक ऐसा उत्तर देते हैं कि भाषक को भाषा नहीं; परतु अभाषक को भाषा होती है और भी अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि जहां तक कायिकादि क्रिया नहीं की जावे वहांतक ही वह क्रिया दुःख के हेतु भूत होती है, और क्रिया करने लगे तब वह दुःख के हेतु भूत नहीं होती है, क्रिया समय व्यतीत हुवे पीछे कराइ हुइ क्रिया दुःख के हेतु भूत है, और जो पहिले की क्रिया दुःख के हेतु भूत है, करावी हुई क्रिया दुःख के हेतु भूत नहीं है और क्रिया समय व्यतीत हुए पीछे कराइ क्रिया दुःख के हेतु

जी० जीवस० सत्व वे० वेदना वे० वेदते हैं व० कहना से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा गो० गौतम ज० जो भ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् वे० वेदना वे० वेदते हैं व० कहना ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं गो० गौतम ए० ऐसा आ०

दुक्ख, अकज्जमाणकड दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणभूयजीवसत्ता वेदणं वेदतिात्ति वत्तव्व सिया ॥ से कहमेयं भंते एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव वेदण वेदति वत्तव्वसिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एव आहंसु अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि ४, एवं खलु चलमाणे चालिए जाव निज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे दो-परमाणु पोग्गला एगयओ साहणति, कम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ

भूत है वह क्रिया क्या करण आश्री दुःख के हेतु भूत है या अकरण आश्री दुःख के हेतु भूत है ? वह अकरण आश्री दुःख के हेतु भूत है परंतु करण आश्री दुःख के हेतु भूत नहीं है ऐसे ही नहीं किया हुवा दुःख, नहीं स्पर्शा हुवा दुःख, व अक्रियमाण किया हुवा दुःख किये बिना प्राण भूत, जीव व सत्व वेदना वेदते हैं अहो भगवन् ' ऐसा जो अन्य तीर्थिक कहते हैं वह किस तरह से है ? अहो गौतम ! जो अन्य तीर्थिक उक्त बातों को कहते हैं वे मिथ्या बोलते हैं अर्थात् उन का कथन मिथ्या है परंतु अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि चलने लगे कर्म पुद्गलों को चले कहना, यावत्

कहता है च० चलते को च० चला जा० यावत् नि० निर्जरते को नि० निर्जरा दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित

साहणंति? दोण्ह परमाणु पोग्गलाण अत्थि सिणेहकाए तम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति तेभिज्जमाणा दुहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओत्ति परमाणु पोग्गले एगयओ परमाणु पोग्गले भवइ, तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति? तिण्ह परमाणु पोग्गलाण अत्थि सिणेह काए तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, ते भिज्जमाणा दुहात्ति तिहात्ति कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दु पदेसिए खधे भवइ, तिहा

निर्जरने लगे को निर्जरे कहना और भी दो परमाणु पुद्गल एकत्रित होकर स्कंध रूप बनजाते हैं क्यों की उस में स्नेह का गुण रहा हुवा है एक परमाणु में शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रूक्ष ऐसे चार स्पर्श में से अविरोधी दो स्पर्श पाते हैं इसलिये दो परमाणु में स्निग्धता होने से एकत्रित मीलकर स्कन्ध रूप बन जाते हैं वैसे ही दो परमाणु को पृथक् करने से उस के एक २ परमाणु के दो विभाग होसकते हैं, वैसे ही तीन परमाणु मीलकर भी स्निग्धता के कारण से स्कन्ध होता है उस का यदि भेद किया जावे तो दो व तीन होसकते हैं दो में एक परमाणु का एक विभाग और द्विप्रदेशी स्कन्ध का दूसरा विभाग, तीन विभाग एक २ परमाणु पृथक् २ होजाने से होते हैं ऐसे ही तीन चार पांच आदि परमाणु राशिका

सा• मीलते हैं क० कैसे दो• दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित सा० मीलते हैं दो० दो-प० परमाणु

कज्जमाणा तिण्णि परमाणु पोग्गला भवति एवं जाव चत्तारि पचपरमाणु पोग्गला एगयओ साहणाति साहणित्ता खंधत्ताए कज्जति, सवेवियणं से असासए सयासमियं उवाचिज्जइय अवाचिज्जइय ॥ पुर्व्वि भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासा समय वीतिक्कतंचण भासिया भासा अभासा जासा पुर्व्वि भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा,भासा समय वीतिक्कतंचण भासिया भासा अभासा। सा किं भासओ भासा अभासओ भासा ? भासओण भासा सा, णो खलु सा अभासओ भासा ।

स्कन्ध जानना वह स्कन्ध अशाश्वत, सदा सम्यक् प्रकार से चय उपचय (हानि वृद्धि) को पाता है अब तीसरा प्रश्न का उत्तर देते हैं पहिले बोलाई हुई प्रथम की भाषा सो अभाषा होती है, बोलाती हुइ भाषा को ही भाषा कह सकते हैं क्यों की उस समय शब्द अर्थ की उत्पत्ति होती है भाषा समय व्यतीत हुवे पीछे भाषा अभाषा होजाती है, अब जो पहिले बोलाइ हुइ भाषा भाषा नहीं है, बोलाती हुइ भाषा भाषा है व भाषा समय व्यतीत हुवे पीछे भाषा को अभाषा कही जाती है ऐसा कहागया है तो क्या वह भाषा भाषक को होती है या अभाषक को होती है ? वह भाषा भाषक को ही होती है परंतु अभाषक को नहीं होती है अब चौथा प्रश्न का उत्तर देते हैं पहिले की हुई क्रिया दुःख

पुद्गल में अ० है० स्निग्धपना॥१॥अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० एक जी० जीव ए० एक स० समय में दो० दो क्रिया प० करे इ० ईर्यापथिक स० सपरायिकी ज० जिस स० समय में इ० ईर्यापथिक प० करे त० उस स० समय में स० सपरायिकी प० करे ज० जिस स० समय में स० सपरायिकी प० करे त० उस स० समय में इ० ईर्यापथिक प० करे इ० ईर्यापथिक प० करते स० सपरायिकी प० परे

पुव्विं किरिया अदुक्खा जहा भासा तहा भाणियव्वा, किरियावि जाव करणओण सा दुक्खा नो खलु सा अकरणओ दुक्खा, सेव वत्तव्व सिया, किच्च दुक्ख, फुस दुक्ख, कज्जमाणकड दुक्ख कट्टु कट्टु पाणभूयजीवसत्ता वेदण वेदाति त्ति वत्तव्व सिया ॥१॥ अण्णउत्थियाण भते ! एवमाइक्खति जाव एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेइ तजहा—इरियावहियच, सपराइयच, ज समय इरियावहिय पकरेइ

देनेवाली होती है शेष सब अधिकार भाषा जैसे कहना यावत् करण से दुःख परंतु अकरण से दुःख नहीं है किया हुवा दुःख है, स्पर्शा हुवा दुःख है करने लगा किया वही दुःख करके प्राण भूत जीव व सत्व वेदना वेदवे हैं यह चारों प्रश्नोंका उत्तर हुवा ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि एक समय में ईर्यापथिक व सांपरायिक ऐसी दो क्रियाओं जीव करता है, जिस समय में जीव ईर्यापथिक क्रिया करता है उस समय में ही सांपरायिक क्रिया करता है और जिस समय में सांपरायिक

स० सपरायिका प० करते इ० ईर्यापथिक प० करे ए० ऐसे ए० एक जीव ए० एक स० समय में दो० दो कि० क्रिया प० करे त० वह ज० जैसे इ० ईर्यापथिक स० सपरायिकी से० वह क० कैसे भ० भगवन् गो० गौतम ज० जो अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् जे० जो ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० करता हूं ए०

तसमय सपराइय पकरेइ, जंसमय सपराइय पकरेइ तसमय इरियावहिय पकरेइ। इरियावहिय पकरणयाए संपराइय पकरेइ, संपराइय पकरणयाए इरियावहिय पकरेइ। एवं खलु एगे जीवे एगेण समएणं दो किरियाओ पकरेइ तजहा—इरियावहियच सपराइयच॥ सेकहमेय भते एव ? गोयमा! जण्णंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति त चेव जाव जे ते एवमाहसु मिच्छा ते एवमाहसु॥ अह पुण गोयमा! एव माइ-

क्रिया करता है उस समय में ईर्यापथिक क्रिया करता है सांपरायिक करते क्रिया ईर्यापथिक क्रिया करता है और ईर्यापथिक क्रिया करते सांपरायिक क्रिया करता है इस तरह ईर्यापथिक व साम्परायिक ऐसी दोनों क्रियाओं जीव एक समय में करता है तब अहो भगवन्! यह कथन किस प्रकार है? अहो गौतम! अन्य तीर्थिक जो इस प्रकार कहते हैं वह मिथ्या है अर्थात् उसका कथन मिथ्या है मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में जीव एक ही क्रिया करता है क्यों कि ईर्यापथिक क्रिया

एक जी० जीव ए० एक स० समय में ए० एक कि०क्रिया प०करे स०स्वसमय व० व्यक्तव्यता ने०जानना जा० यावत् इ० ईर्यापथिक स० सपरायिकी ॥ २ ॥ नि० नरकगति में भ० भगवन् के० कितना काल वि० विरह उ० उत्पन्न होने का प० प्ररूपा ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट बा० बारह मु० मुहूर्त ए०

क्खामि ४ । एव खलु एगे जीवे एगसमए एकं किरियं पकरेइ, ससमयवत्तव्वयाए नेयव्वं ॥ जाव इरियावहियं सपराइयवा ॥ २ ॥ निरयगईण भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहु-

मात्र योग से होती है और सांपरायिक क्रिया योग व कषाय दोनों से होती है जिस समय सांपरायिक क्रिया होती है उस समय ईर्यापथिक नहीं होती है और जिस समय ईर्यापथिक होती है उस समय सांपरायिक नहीं होती है, वगैरह उक्त प्रकार से जिन शासन के कथनानुसार कहना ॥ २ ॥ यहां क्रिया कही; क्रियावंत पुरुष की उत्पत्ति होती है इसलिये उत्पात विरहका प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! नरक में उत्पन्न होने का विरह कितना कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त इस की सब वक्तव्यता पन्नवणाजी सूत्र के छट्ठे पद जैसे कहना तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य व देवता में उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का विरह इस प्रकार चवन का विरह जानना एक समय में जघन्य एक, दो, तीन का उत्पन्न होना व चवना होता है उत्कृष्ट एक समय में संख्याते असंख्याते जानना यों सब पन्नवणा सूत्र से जानना

ऐसा व० चवने का प० पद मा० कहना नि० निर्विशेष स० वह ए० ऐसा भ० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ १० ॥ × ×

त्ता, एव वक्तव्वी पय भाणियव्व निरवसेस । सेव भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढमसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १० ॥ पढमसय सम्मत्त ॥१॥ *

अहो भगवन् ! जो आपने फरमाया वह वैसा ही है, अन्यथा नहीं है ऐसा कह कर तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे यह प्रथम शतक का दसवा उद्देशा समाप्त हुवा और प्रथम शतक भी समाप्त हुवा ॥ १ ॥ १० ॥ १ ॥ + +
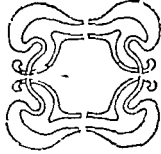
॥ द्वितीय शतकम् ॥

उ० उश्वास ख० खदक पु० पृथ्वी इ० इन्द्रिय अ० अन्यतीर्थिक भा० भाषा दे० देव च० चमर चचा स० समय ख० क्षम अ० अस्तिकाय बी० दूसरे शतक में ॥ * ॥ त० उस काल त० उस समय म

ऊसास खदए विय । पुढवींदिय अण्णउत्थिभासाय ॥ देवाय चमरचचा । समय खित्तत्थिकाय बीयसए ॥ १ ॥ * ॥ तेण कालेण, तेण समएण, रायगिहे नाम

प्रथम शतक के अंतम जीवों का उत्पन्न होने का व चवन का विरह कहा अब दूसरे शतक में उत्पन्न व चवन के मध्य का श्वासोश्वास का प्रश्न चलता है इस शतक के सब मीलकर दश उद्देशे हैं पहिले उद्देशे में उश्वास व खदक का अधिकार है, दूसरे में पृथिवी का अधिकार है तीसरे में इन्द्रिय का अधिकार है, चौथे में अन्य तीर्थियों का अधिकार है, पांचवे में भाषा का अधिकार है, छठे में देव का अधिकार, सातवे में चमर चंचाका अधिकार, आठवे में समय क्षेत्र सो अढाइ द्वीप का अधिकार, नववे में क्षेत्राधिकार और दशवे में अस्तिकाया का स्वरूप ॥*॥ उस काल सो चौथे आरे में उस समय सो महावीर स्वामी विचरने के समय में राजगृही नामक नगर अत्यंत सुशोभित था उस का वर्णन उववाइ सूत्र में जैसा चंपा नगरी का वर्णन किया है वैसा जानना राजगृही के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवन्त

रा० राजगृह न० नगर हो० था व० वर्णनयुक्त सा० स्वामी स० पधारे प० परिषदा नि० निर्गता ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प० प्रतिगता ॥ * ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में जे० ज्येष्ठ अ० अंतेवासी जा० यावत् प० पूछते ए० ऐसा व० बोले जे० जो बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय प० पंचेन्द्रिय जी० जीव ए० उनका आ० श्वास पा० विशेष श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास जा० जानते हैं पा० देखते हैं जे० जो पु० पृथ्वी काया जा० यावत् व० वनस्पति काया ए० एकेन्द्रिय जीव

नगरे होत्था, वण्णओ सामीसमोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥ * ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जइमे भंते ! बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचेंदिया जीवा एएसिणं आणामवा, पाणामवा, उस्सासवा, निस्सासवा जाणामो, पासामो जे इमे पुढविकाइया

महावीर स्वामी सब परिवार सहित पधारे, यथोचित अनुज्ञा ग्रहण कर बगीचे में विराजित हुए, परिषदा वदन को आई, और श्री भगवन्त से धर्म सुनकर पीछीगई ॥+॥ उस काल उस समय में भगवन्त श्री महावीर स्वामीके ज्येष्ठ अंतेवासी श्री गौतम स्वामी सेवा पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय इन जीवों का श्वासोश्वास मैं जानता हूं यावत् देखता हूं अर्थात् त्रस जीव का श्वासोश्वास मैं जानता हूं व देखता हूं, परंतु पृथ्वीकायादिक जीव की आगमादि

ए० उनका आ० श्वास पा० विशेष श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास ण० नहीं जा० जानते हैं ण० नहीं पा० देखते हैं ए० वे भ० भगवन् जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० बहुत श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं इ० हां गो० गौतम ए० वे जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं कि० किमका ए० ये जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं गो० गौतम द० द्रव्य से अ० अनंत प० प्रदेश

जाव वणप्फइकाइया, एगिंदिया जीवा एएसिण आणामवा, पाणामवा, उस्सास वा, निस्सासवा, ण जाणामो ण पासामो ॥ एएसिण भंते ! जीवा आणमतिवा पाणमतिवा उस्ससतिवा, निस्ससतिवा ? हंता गोयमा ! एएविण जीवा आणमतिवा पाणमतिवा उस्ससतिवा निस्ससतिवा । किण्ण भंते ! एते जीवा आणमतिवा पाण-

प्रमाण से प्रतीति है तथापि उन पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेउकायिक, वायुकायिक, व वनस्पति कायिक जीवों का श्वासोश्वास मैं नहीं जानसकता हूं नहीं देखसकता हूं तो अहो भगवन् ! क्या वे जीव श्वासोश्वास लेते हैं ? हां गौतम ! वे जीवों भी श्वासो श्वास लेते हैं अहो भगवन् ! वे किस प्रकार श्वासो श्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशी अनंत पुद्गल का श्वासोश्वास लेते हैं क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश को अवगाहकर रहनेवाले पुद्गलों का, कालसे एक समय यावत् असंख्यात

रा० राजगृह न० नगर हो० था व० वर्णनयुक्त सा० स्वामी स० पधारे प० परिषदा नि० निर्गता ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प० प्रतिगता ॥ * ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी जा० यावत् प० पूछते ए० ऐसा व० बोले जे० जो बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय प० पंचेन्द्रिय जी० जीव ए० उनका आ० श्वास पा० निश्वास श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास जा० जानते हैं पा० देखते हैं जे० जो पु० पृथ्वी काया जा० यावत् व० वनस्पति काया ए० एकेन्द्रिय जीव

नगरे होत्था, वण्णओ सामीसमोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडि-गया ॥ * ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी ज इमे भंते ! बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचेंदिया जीवा एएसिणं आणा-मवा, पाणामवा, उस्सासवा, निस्सासवा जाणामो, पासामो जे इमे पुढविकाइया

महावीर स्वामी सब परिवार सहित पधारे, यथोचित अनुज्ञा ग्रहण कर बगीचे में विराजित हुए, परिषदा वन्दन को आई, और श्री भगवन्त से धर्म सुनकर पीछीगइ ॥÷॥ उस काल उस समय में भगवन्त श्री महावीर स्वामीके ज्येष्ट अंतेवासी श्री गौतम स्वामी सेवा पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय इन जीवों का श्वासोश्वास मैं जानता हूं यावत् देखता हूं अ-र्थात् त्रस जीव का श्वासोश्वास मैं जानता हूं व देखता हूं, परंतु पृथ्वीकायादिक जीव की आगमादि

गमो ने० जानना जा० यावत् पं० पांचदिशि में कि० कैसे भ० भगवन् णे० नारकी आ० श्वासले पा० विशेष श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले त० तैसे जा० यावत् छ० छदिशा में आ० श्वासले पा० बहुत श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले ए० एकेन्द्रिय जी० जीव वा० व्याघात नि० निर्व्याघात भा० कहना से० शेष नि० निश्चय छ० छदिशा में ॥ १ ॥ वा० वायुकाय भ० भगवन् वा० वायु आ० श्वासले पा० बहुत श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले हं० हां गो० गौतम वा० वायुकाय जा० यावत नि०

नेयव्वो जाव पंचदिस ॥ किण्ण भंते ! णेरइया आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा त चेव जाव नियमा छद्दिसिं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंति वा निस्ससंतिवा । जीव एगिंदिया वाघाया निव्वाघाया भाणियव्वा सेसा नियमा छद्दिसिं ॥१॥ वाउयाएणं भंते ! वाउयाए चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा,

नरक के जीव कैसे पुद्गलों का श्वासोश्वास लेते हैं ? इस का सब अधिकार पहिले जैसे कहना यावत् निश्चय ही छ दिशिका श्वासोश्वास लेते हैं एकेन्द्रिय जीव में व्याघात निर्व्याघात कहना अन्य किसी दंडक में कहना नहीं क्योंकी वे छ दिशिका श्वासोश्वास लेते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय श्वासोश्वास ग्रहण करे ? हां गौतम ! वायुकाय श्वासोश्वास लेता है अहो भगवन् ! क्या वायुकाय के जीव अनेक

द्रव्य खि० क्षेत्र से अ० असंख्यात प० प्रदेश अ० अवगाही का० काल से अ० अन्य ठि० स्थिति वाले मा० भाव से व० वर्णवाले गं० गंधवाले र० रसवाले फा० स्पर्श वाले आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं जा० यदि भा० भाव से व० वर्ण वाले आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं ता० तो किं० क्या ए० एक व० वर्ण वाले आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं आ० आहार

मतिवा उस्ससतिवा, निस्ससतिवा ? गोयमा ! दव्वओण अणत पएसियाइ दव्वाइ, खित्तओ असंखेज्ज पएसोगाढाइ, कालओ अण्णयरठिईयाइ, भावओ, वण्णमताइ, गंधमताइ, रसमताइ, फासमताइ आणमतिवा, पाणमतिवा, उस्ससतिवा, निस्ससतिवा जाइ भावओ वण्णमताइ आणमतिवा पणमतिवा उस्ससतिवा निस्ससतिवा, ताइ किं एग वण्णाइआणमतिवा, पाणमतिवा उस्ससतिवा निस्ससतिवा, आहारगमो

समय की स्थिति वाले पुद्गल और भाव से वर्णवाले, गंधवाले रसवाले व स्पर्श वाले द्रव्य का श्वासोश्वास लेते हैं अहो भगवन् ! जब भाव से वर्ण सहित पुद्गल श्वासोश्वासपने ग्रहण करते हैं तो क्या वह एक वर्ण वाले पुद्गल का श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! इनका सब अधिकार पन्नवणा सूत्र के अठावीस में पद में कहा है वैसा व्याघात आश्री तीन चार पांच व छ दिशा के पुद्गल ग्रहण करे वहांतक कहना अहो भगवन्

नि० निकले से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम वा० वायुकायाको च० चार स० शरीर प० मरूपे उ० उदारिक वे० वैक्रेय ते० तेजस क० कार्माण उ० उदारिक वे० वैक्रेय वि० छोडकर ते० तेजस क० कार्माण सहित नि० निकले से० वह त० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहाजाता है ॥ २ ॥ म० मासुक भोजन करने वाला नि० निर्ग्रंथ नो० नहीं नि० रुंधा हुवा भ० भव नो०

एव वुच्चइ सियससरीरी निक्खमइ सियअसरीरी निक्खमइ ? गोयमा ! वाउकायस्सणं चत्तारि सरीरया प० त० उरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए । उरालिय वेउव्वि-याइ विप्पजहाय, तेय कम्मएहिं निक्खमइ सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ सियस-सरीरी, सिय असरीरी निक्खमइ ॥ २ ॥ मडाईण भते नियठे नो निरुद्ध भवे, नो

नीकलते हैं और कथचित् शरीर रहित नीकलते हैं अहो भगवन् ! वायुकाय के जीव किस तरह से कथंचित् सशरीरी व कथचित् अशरीरी नीकलते हैं ? अहो गौतम ! वायुकाय को उदारिक, वैक्रेय, तेजस और कार्माण ऐसे चार शरीर होते हैं उस में से उदारिक वैक्रेय को छोडकर नीकले इस लिये अशरीरी और तेजस, कार्माण शरीर सहित नीकले इसलिये सशरीरी, इसी से अहो गौराम ! वायु-काय के जीव कथचित् शरीर सहित नीकले और कथंचित् शरीर रहित नीकले ॥ २ ॥ अहो भगवन् !

निश्वासले वा० वायुकाय वा० वायु कायमें अ० अनेक स० शतसहस्र वार उ० मरे उ० मरकर त० तहां भु० वारंवार प० उत्पन्नहोवे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० उत्पन्नहोवे से० वह भ० भगवन् किं० क्या पु० स्पर्शी उ० मरे अ०नहीं स्पर्शी उ० मरे गो० गौतम पु० स्पर्शी उ० मरे नो० नहीं अ० अस्पर्शी उ० मरे से० वह भं० भगवन् किं० क्या स० सशरीरी नि० निकले अ० अशरीरी नि० निकले गो० गौतम सि० कदाचित स० सशरीरी नि० निकले सि० कदाचित् अ० अशरीरी

उस्ससतिवा, निस्ससतिवा ? हता गोयमा ! वाउयाएण जाव निस्ससति वा ॥ वाउयाएण भते ! वाउयाएचेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइ उद्दाइत्ता, तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइ ? हता गोयमा ! जाव पच्चायाइ से भते! किंपुट्ठे उद्दाइ अपुट्ठे उद्दाइ? गोयमा! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ। से भते ! किं ससरीरी निक्खमइ, असरीरी निक्खमइ? गोयमा ! सियससरीरी निक्खमइ, सियअसरीरी निक्खमइ । से केणट्ठेण भते !

एकवार मरकर वहांही वारंवार उत्पन्न होते हैं ? हां गौतम वायुकायके जीव अनेक वार मरकर वहांही वारंवार उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! वायुकाय के जीव क्या स्पर्श कर मरते हैं या विना स्पर्शे मरते हैं ? अहो गौतम ! सोपक्रम की अपेक्षा से स्पर्शा हुवा मरे परंतु नहीं स्पर्शा हुवा मरे नहीं अहो भगवन् ! क्या वे स्वकलेवर से शरीर सहित नीकलते हैं या शरीर रहित नीकलते हैं ? अहो गौतम! कथंचित शरीर सहित

स० सत्त्व वि० विज्ञ वे० वेदक व० कहना पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व वि० विज्ञ वे० वेदक व० कहना से० वह के० कैसे पा० प्राण जा० यावत् वे० वेदक व० कहना ज० जिसलिये आ० श्वासलेता है पा० विशेष श्वासलेता है उ० उश्वासलेता है नि० निश्वासलेता है त० इसलिये पा० प्राण व० कहना ज० जिसलिये भू० हुवा म० होता है भ० होगा त० इसलिये भू० भूत व० कहना ज० जिसलिये जी० जीव जी० जीता है जी० जीवपना आ० आयुष्य क० कर्म उ० अनुभवे त० इसलिये जी० जीव व०

सिया पाणे भूये जीवे सत्ते विण्णूवेदेति वत्तव्वसिया ॥ से केणट्ठेण पाणेतिव त्तव्व-सिया जाव वेदेतिवत्तव्वसिया? जम्हा आणमतिवा पाणमतिवा, उस्ससतिवा, निस्सस-तिवा, तम्हा पाणेतिवत्तव्वसिया। जम्हा भूए भवइ भविस्सइ, तम्हा भूएतिवत्तव्व-सिया, जम्हा जीवे जीवइ जीवत्त आउय च कम्म उवजीवइ तम्हा जीवेति वत्तव्व-

विस्तार का अंत नहीं करनेवाला यावत् अपूर्ण प्रयोजन की करणीवाला निर्ग्रंथ पुन मनुष्यादि गति में आता है अहो भगवन् ! जो ऐसा निर्ग्रंथ मनुष्यादि गति में आता है उन को क्या कहना? अहो गौतम ! उन को प्राण, भूत, जीव, सत्व, विज्ञ व वेदक कहना अहो भगवन् ! किस कारन से उन को प्राण, भूत यावत् वेदक कहना ? अहो गौतम ! वह श्वासोश्वास लेता है इस लिये प्राण कहाता है, वह अतीत काल में था, वर्तमान में है और आगामिक में होगा इस लिये भूत कहाता है, वह आत्मा जीता

नहीं नि० रुंधाहुआ भ० भव विस्तार णो० नहीं प० क्षय हुवा सं० संसार णो० नहीं प० क्षयहुआ स० संसार वे० वेदनीय नो० नहीं वो० तूटा स० संसार नो० नहीं वो० तूटा स० ससार वे० वेदनीय नो० नहीं नि० पूर्णहुआ आ० अर्थ नो० नहीं पूर्णहुआ अ० अर्थ कार्य पु० फीर इ० यहां ह० शीघ्र आ० आवे हं० हां गो० गौतम म० मासुक भोजी नि० निर्ग्रंथ जा० यावत् पु० फीर इ० यहां ह० शीघ्र आ० आवे से० उनको भं० भगवन् किं० क्या व० कहना गो० गौतम पा० माण भू० भूत जी० जीव

निरुद्धभवपवंचे, णो पहीण संसारे, णो पहीण ससार वेयणिज्जे, नो वोच्छिण्ण संसारे, णो वोच्छिण्ण ससार वेयणिज्जे, णो निट्ठियट्ठे, नोनिट्ठियट्ठ कराणिज्जे, पुणरवि इच्छत्त हव्वमागच्छइ? हता गोयमा! मडाईण नियठे जाव पुणरवि इच्छत्त हव्वमागच्छइ। सेण भते! किं वत्तव्वसिया? गोयमा! पाणेतिवत्तव्व सिया, भुतेति वत्तव्वसिया जीवेतिवत्तव्वसिया, सत्तेति वत्तव्वसिया, विन्नुयाचि वत्तव्वसिया, वेदेति वत्तव्व-

मासुक भोजन करनेवाला परंतु भव व भव विस्तार का निरुंधन नहीं करनेवाला चतुर्गति गमन रूप संसार का क्षय नहीं करनेवाला, संसार में वेदनीय कर्म का क्षय नहीं करनेवाला, चतुर्गतिक गमनानुबंध व वेदनीय कर्म को नहीं तोडनेवाला, अपूर्ण मयोजनवाला और अपूर्ण मयोजन की करणीवाला निर्ग्रंथ क्या पुन इस मनुष्यादि गति में आता है? हां गौतम! मासुक भोजन करनेवाला परंतु भव व भव के

इ० शीघ्र आ० आते हैं इ० हां गो० गौतम म० मृतभोजी नि० निर्ग्रंथ जा० यावत् नो० नहीं पु० फीर इ० यहां इ० शीघ्र आ० आते हैं से० उनको भ० भगवन् किं० क्या व० कहना सि० सिद्ध बु० बुद्ध मु० मुक्त पा० पारगत प० परंपरा तग व० कहना सि० सिद्ध मु० मुक्त प० परिनिवृत्त अ० अतकृत स० सर्व दु० दुःख से प० मुक्तहुवे व० कहना स० वह ए० ऐसा भ० भगवन् भ० भगवान्

राणिज्जे णो पुणरवि इच्छत्त हव्व मागच्छइ ? हता गोयमा ! मडाईण नियठे जाव नो पुणरवि इत्थत्त हव्व आगच्छइ ॥ सेण भते ! किं वत्तव्व सिया ? गोयमा ! सिद्धेत्ति वत्तव्वं सिया, बुद्धेत्ति वत्तव्व सिया, मुत्तेत्ति वत्तव्व सिया, पारगएत्ति वत्तव्व सिया, परपरगएत्ति वत्तव्व सिया, सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे, अतकडे सव्व दुक्खप्प

सार्थ करणीकरनेवाले निर्ग्रंथ क्या पुन मनुष्यादि गति में नहीं आते हैं ? हा गौतम ! प्रासुक भोजन करनेवाले यावत् निष्ठितार्थ करणीवाले पुन मनुष्यादि गति में नहीं आते हैं, अहो भगवन् ! उन को क्या कहना ? अहो गौतम ! उन को सब कार्य की सिद्धि होने से सिद्ध कहना, चराचर पदार्थ के ज्ञाता होने से बुद्ध कहना, समस्त कर्म से मुक्त होने से मुक्त कहना, संसार सागरको उत्तीर्ण होने से पारगत कहना, मिथ्यात्वादि गुणस्थान अथवा मनुष्यादि गति को परपरा से जानने से अर्थात् भव समुद्र के पार पहुंचने से परम्परागत कहना, कषाय से निवर्तने से परिनिवृत्त, ससार का अत करने से अतकृत

कहना ज० जिसलिये स० असक्त सु० शुभाशुभ क० कर्म से त० इसलिये स० सत्व व० कहना ज० जिस लिये ति० तिक्त क० कटुक क० कषाय अ० अम्बट म० मधुर र० रस जा० जाने त० इसलिये वि० विज्ञ व० कहना वे० वेदता है सु० सुख दु० दुःख० त० इसलिये वे० वेदक व० कहना से० वह ते० इसलिये जा० यावत् पा० प्राण जा० यावत् वे० वेद व० कहना ॥ ३ ॥ म० मृतभोजी नि० निर्ग्रंथ नि० रुधा भ० भव नि० रुधा भ० भवविस्तार जा० यावत् नि० पूरा हुवा अ० अर्थ कार्य नो० नहीं पु० फीर इ० यहां

सिया, जम्हा सत्ते सुहासुहेहिं कम्मेहिं तम्हा सत्तेवि वत्तव्व सिया, जम्हा तित्त, कडु, कसाय अंबिल महुरे रसे जाणइ, तम्हा विण्णुतत्ति वत्तव्व सिया, वेदेइय सुहदुक्ख तम्हा वेदेतिवत्तव्वं सिया, से तेणट्ठेण जाव पाणेति वत्तव्वसिया, जाव वेदेतिवत्तव्वासि-या ॥ ३ ॥ मडाईण भते ! नियठे निरुद्ध भवे निरुद्ध भवपवचे जाव निट्ठियट्ठ क-

अर्थात् प्राणों को धारन करता है और उपयोग लक्षणरूप जीवत्व वैसे ही आयु० कर्म को अनुभवता है इस लिये जीव कहाता है वह शुभाशुभ कर्म में आसक्त अथवा समर्थ है इसलिये सत्व कहाता है, वह तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट व मधुर रस को जानता है इस लिये विज्ञ कहाता है और सुख दुःख को वेदनेवाला होने से वेदक कहाता है इस लिये अहो गौतम ! वह प्राण यावत् वेदक कहाता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! प्रासुक भोजन करनेवाले वैसे ही भव व भव प्रपंच का निरुंधन करनेवाले यावत् निष्ठि

छत्तपलासए णाम चेइए होत्था, वण्णओ । तएण समणे भगवं महावीरे उप्पन्नणाण दंसणधरे जाव समोसरण परिसा निग्गया ॥ ६ ॥ तीसेण कयंगलाए नयरीए अदूर-सामंते सावत्थीणाम नयरीहोत्था वण्णओ तत्थण सावत्थीए णयरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खंदए नाम कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ रिउव्वेय, जजुव्वेय, साम-

दिशा में छ० छत्रपलाश चे० चैत्य हो० था व० वर्णन युक्त स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दर्शन युक्त जा० यावत् स० समवसरण प० परिषदा नि० निर्गता ॥६॥ ती० उस क० कयंगला न० नगरी की अ० नजदीक सा० सावत्थी ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णनयुक्त त० तहां सा० सावत्थी ण० नगरी में ग० गर्दभाली का अं० अंतेवासी ख० खंदक ना० नामका क० कात्यायन गोत्रीय प० परिव्राजक प० रहता है रि० ऋग्वेद ज० यजुर्वेद सा० सामवेद अ० अथर्ववेद इ०

में चंपा नगरी का वर्णन कहा है वैसा कहना उस कयंगला नामक नगरी के बाहिर उत्तरपूर्व-ईशान कौन में छत्र पलाश नामक यक्षका चैत्य है, उस का भी वर्णन उववाइ से जानना वहांपर केवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदन करने का आइ भगवन्त से धर्मकथा सुनकर परिषदा पीछी गई ॥ ६ ॥ उस कयंगला नगरी की पास एक सावत्थी नामकी नगरी थी उस का वर्णन भी उववाइ में से जानना उस सावत्थी नगरी में गर्दभाली नामक तापस का

गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को व० वंदना कर न० नमस्कार कर स० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ ४ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर रा० राजगृह न० नगर से गु० गुणशीलक चे० चैत्य से प० निकले प० निकलकर व० बाहिर ज० अन्यदेश में वि० विचरने लगे ॥ ५ ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में क० कयंगला ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त ती० उस क० कयंगला न० नगरी की व० बाहिर उ० ईशान

हीणेत्ति वत्तव्वं सिया सेवं भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ४ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बाहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं कयंगला णामं नयरीहोत्था, वण्णओ तीसेणं कयंगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए

और सब दुःख का क्षय करने से सर्व दुःख प्रहीन कहना अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ ४ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में से नीकल कर अन्य देश में विचरने लगे ॥ ५ ॥ उसकाल उस समय में कयंगला नामक नगरी थी उस का वर्णन उववाई सूत्र

सा० श्रवण करनेवाला अ० कोई वक्त जे० जहाँ ख० खंदक क०कात्यायन गोत्री ते०तहाँ उ० आये आ० आकर ख० खंदक क० कात्यायन गोत्री को इ० यह अ० आक्षेप से पु० पूछे मा० मागध किं०क्या स० अन्त वाला लो०लोक अ०अनतलोक स०अतसहित जी०जीव अ०अनन्त जी०जीव स०अन्त सहित सिद्धी अ० अनत सिद्धी स० अत सहित सिद्ध अ० अनंत सि० सिद्ध के० किस म० मरण से म० मरता जी० जीव व० वृद्धिपावें हा० हानीपावें ए० इतना आ० कहो वु० बोलते ए० ऐसा से० वह ख० खंदक

सावए परिवसइ , तएण से पिंगलए नाम णियंठे वेसालिय सावए अण्णया कयाई जेणेव खदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता खदय कच्चायणसगोत्त इण मक्खेव पुच्छे, मागहा ! किं सअतेलोए अणतेलोए ? सअतेजीवे, अणते जीवे ? सअतासिद्धी, अणतासिद्धी ? सअतेसिद्धे, अणतेसिद्धे ? केण वा मरणेण मरमाणे जीवे

छद निमित्त सा शब्द उत्पत्ति का शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, व अनेक ब्राह्मण सन्यासी सबधी नीति शास्त्र में निपुण थे ॥ ७ ॥ उस सावत्थी नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने में रसिक पिंगलक नामक निर्ग्रंथ रहता था महावीर भगवन्त के वचन सुनने में रसिक ऐसे पिंगलक निर्ग्रन्थ एकदा कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक की पास आये, आकर के उन को ऐसा प्रश्न पुछा कि अहो मागधे[1] ! क्या

1 मगध देश में उत्पन्न होनेवाले

इतिहास प० पांचवा नि० निगण्टु सग्रह छ० छठा च० चारवेद का स० सांगोपांग स० रहस्य सहित मा०स्मरण करनेवाला वा०शुद्धकरनेवाला धा०धारक पा०पारगामी स०छअग स०कापिलीयशास्त्र वि०पंडित स० गणित शास्त्र भि० अक्षररूप शास्त्र वा० शब्द छ० छन्द नि० शब्द उत्पत्ति का जान जो० ज्योतिषी शास्त्र अ० अन्य कोई ब० बहुत ब० ब्राह्मण प० परिव्राजक में न० नय में सु० अच्छा निश्चयार्थ का जान हो० था ॥ ७ ॥ त० तहां सा० सावत्थी न० नगरी में पिं० पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक

वेय, अहव्वणवेय, इतिहास पंचमाण, निघटुछट्ठाण, चउण्ह वेयाण संगोवगाण, सरह-
स्साण सारए, वारए, धारए, पारए, सडंगवी, सट्ठितंतविसारए, सखाणे, सिक्खाकप्पे, वाग-
रणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे, अण्णेसुय बहुसु बंभण्णएसु परिव्वायएसु नएसु सुपरि-
निट्ठिएयावि होत्था ॥ ७ ॥ तत्थणं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामनियंठे वेसालिय

शिष्य कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक रहताथा वह खंदक परिव्राजक ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास सो माचिनकाल के महापुरुषों की कथाओं, और निघन्टु सो अनेकार्थ वाची कोष ऐसे षड्शास्त्र के ज्ञाता थे और चारों वेदों के छअग और उस में कहे हुवे प्रबंध सो अंग, इनकी मयुक्ति, युक्तियों को वारवार स्मरण करनेवाले, अशुद्ध पाठ का निषेध करनेवाले, हृदय में धारन करनवाले व पारगामी थे वैसे ही छ अग व कापीलिय शास्त्र के ज्ञाताथे सख्या गणितविद्या, शिक्षाकल्प, व्याकरण,

क्या स० अतसहित लोक जा० यावत् के० किस म० मरण से म० मरता जी० जीव व० वृद्धिपामे हा० हानिपामे ए० इतना आ० कहो वु० बोलता त० तब ते० वह ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय पिं० पिंगलक निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला दो०दो त०तीन वक्त इ०यह अ०आक्षेप से पु० पूछते स० शंकित क० कांक्षित वि० संदेहवाला भे० भेद को प्राप्त क० कालुष्य वाला नो० नहीं स० शक्तिमान

तएण से पिंगलए नियठे वेसालीसावए खदय कच्चायणसगोत्त दोच्चपि इणमक्खेव पुच्छे मागहा! किं सअतेलोए जाव केणवा मरणेण मरमाणे जीवे वड्डइवा, हायइवा, एतावताव आइक्खाहि वुच्चमाणो एव तएण तेखदए कच्चायणसगोत्तं पिंगलएण नियठेण वेसालीसावएण दोच्चपि तच्चपि इणमक्खेव पुच्छिए समाणे सकिए कखिए वितिगिंछिए,

जानने की कांक्षा, अन्य को उत्तर देने में प्रतीति होवे वैसी वितिगिच्छा उत्पन्न हुई वैसे ही मैंने इस का उत्तर नहीं जाना सो मतिभग, भेद व मन में कालुष्यता हुई वैसे ही वैसालिय श्रावक पिंगलक अनगार के एक ही प्रश्नों का उत्तर देने को असमर्थ हुवा और मौन खडा रहा तब उन वैसालिय श्रावक पिंगलक निर्ग्रंथने पुनःयही प्रश्न पुछा की अहो मागध! अत सहित लोक है यावत् किस मरण से संसार की वृद्धि होती है और किस मरणसे संसार का क्षय होता है? इस तरह पिंगलक निर्ग्रंथने दो

क० कात्यायन गोत्रीय पिं० पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला इ० यह अ० आक्षेप से पु० पूछते स० संकित कं० कांक्षित वि० संदेह वाला भे० भेदको प्राप्त क० कालुष्य को स० प्राप्त णो० नहीं स० शक्तिमान है पिं० पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा०सुननेवाला किं० किंचित् प० उत्तर व० कहने को तु० तुष्णीक स० रह से० तब से० वह पिं० पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा०सुननेवाला स० सद्दक क० कात्यायन गोत्री को दो० दोबार इ० यह अ० आक्षेप से पु० पूछे मा० मागध किं०

वड्ढइ वा, हायइ वा, एतावताव आइक्खाहि, वुच्चमाणो एवं तएण से खंदए कच्चायण-सगोत्ते, पिंगलएणं नियंठेणं वेसालीसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिएसमाणे संकिए कंखिए, वितिगिंछिए, भेदसमावण्णे, कलुससमावण्णे णो संचाएइ पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचिवि पमोक्खं मक्खाइउं तुसिणीए संचिट्ठइ

प्र० लोक अंत सहित या अंत रहित है ? २ जीव अंत सहित है या अंत रहित है ? सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ? सिद्ध अंत सहित या अंत रहित है ? अथवा किस मरण से जीव संसार की वृद्धि करता है व किस मरण से जीव संसार को क्षीण करता है ? इन प्रश्नों का उत्तर कहो अनंतर इससे प्रश्न पूछता इस तरह महावीर स्वामी के वचन सुनने को रसिक पिंगलक निर्ग्रन्थने इस तरह प्रश्न पूछने पर कात्यायन गौत्रीय स्कंदक परिव्राजक को इस का क्या उत्तर होगा ऐसी शंका, अन्य की पास अर्थ

आत्मविषय चिं० स्मरणरूप प० प्रार्थनारूप म० मनोगत स० संकल्प स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसा स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर क० कयंगला न० नगरी की ब० बाहिर छ० छत्रपलास चे० चैत्य में स० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते वि० विचरते हैं त० उनकीपास ग० जाऊं स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को व० वंदनाकर न० नमस्कारकर स० सत्कारकर म० सन्मानदेकर

वीरे कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेत्ता इमाइंचणं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं वागरणाइं पु-

कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक को ऐसा चिन्तवन व मनोगत संकल्प हुवा कि कयंगला नगरी के छत्र पलाश उद्यान में संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे श्री श्रमण भगवंत महावीर विचरते हैं इसलिये उन की समीप में जाऊं और श्री श्रमण भगवन्त को वंदना नमस्कार करूं श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना, नमस्कार, सत्कार व सन्मान कर वैसे ही कल्याणकारी, मंगलकारी, देव व साक्षात् महाज्ञानके धारक ऐसे श्री श्रमण भगवंत की पर्युपासना करके जो मेरे मन में संदेह रहा हुवा है वैसे प्रश्नों पुछकर निर्णय करना मुझे श्रेय है ऐसा विचार करके जहां परिव्राजक सन्यासीओं का आश्रम था वहां आया वहां

दे पिं० पिंगलक निं० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला को किं० किंचित् प० उत्तर अ० कहने को तु० तुष्णीक सं० रहे ॥ ८ ॥ त० तब सा० सावत्थी न० नगरी से सिं० सिंघाडे जैसे जा० यावत् प० रस्ते में म० महा पुरुषों स० समर्द ज० जन समुदाय प० परिषदा नि० गइ त० तब त० उस खं० खदक क० कात्यायन गोत्रीय व० बहुत ज० मनुष्य की अ० पास स० यह अर्थ सो० सुनकर नि० अवधाकर इ० इसरूप अ०

भेदसमावन्ने, कलुससमावन्न नोसवाएइ पिंगलस्स नियठस्स वेसालिय सावयस्स किंचिवि पमोक्खमक्खाइओ तुसिणीए सचिट्ठइ ॥ ८ ॥ तएण सावत्थीए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु महयाजण सम्मद्देइवा, जण बुहेइवा निग्गइच्छइ तएण तस्स खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म इमेएयारूवे अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था एवं खलु समणे भगवं महा-

तीन वार वैसाटी प्रश्न पूछा परंतु कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक को शंका, कांक्षा, वितिगिच्छा, भेद व कालुष्पता प्राप्त होने से उन के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका और मौन खडा रहा ॥ ८ ॥ उस समय श्रावस्ती नगरी के तीन रस्ते मीलन के स्थान, चौक यावत् बहुत रस्ते मीलने के स्थान पर बहुत मनुष्यों के समुदाय की परिषदा श्री श्रमण भगवन्त को वंदना करने को नीकली और परस्पर ऐसा बोलने लगे की श्री श्रमण भगवन्त महावीर कयंगला नगरी के छत्रपलाश नामक उद्यान में पधारे हैं ऐसा बहुत मनुष्यों की पाससे श्रवण करके

म छकर छ० छत्र वा० पगरखा सं० युक्त धा० धातुरक्त व० वस्त्र प० पहनकर सा० सावत्थी न० नगरी की म० मध्य से नि० निकलकर जे० जहां क० कयंगला न० नगरी जे० जहां छ० छत्रपलास चे० चैत्य जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां पा० निश्चय किया ग० जाने को ॥ १ ॥ गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले द०

छत्तोवाहण संजुत्ते, धाउरत्त वत्थ परिहिए, सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छइत्ता जेणेव कयंगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए॥१॥ गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी दच्छिसिणं गोयमा! पुव्वसंगइयं। कं भंते? खंदयं नाम। से काहेवा, कि-

नीकलकर त्रिदंड, कमंडल, रुद्राक्षमाला, मृत्तिका का भाजन, मृत्तिका आसन विशेष, प्रमार्जन करने का कपड़ा, षड्नालिका, वृक्ष पल्लव को छेदनेवाला अंकुश, ताम्बेकी मुद्रिका व कालाचिका इत्यादि हस्त में धारन करके, सिरपर छत्र रखकर, पांव में उपानह रखकर, भगवे वस्त्र पहिन कर, सावत्थी नगरी के मध्य में से नीकलकर जहां कयंगला नामक नगरी के छत्र पलाश उद्यान में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आनेका अभिलाषी हुवा ॥ १ ॥ उस समय श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने गौतम स्वामी को बोलाकर कहा कि अहो गौतम! तू तेरा पूर्व संगतिवाला मित्र को देखेगा तब गौतम स्वामी बोले की

क० कल्याण कारी म० मंगल कारी दे० देव चे० ज्ञानरूप प० पूजते इ० इस ए० ऐसा अ० अर्थ हे० हेतु प० प्रश्न वा० व्याकरण पु० पूछना क० करके ए० ऐसा सं० आलोचकर जे०जहाँ प०परिव्राजक की व० वसति ते० तहाँ आ० आकर ति० त्रीदंड कु० कमंडल कं० रुद्राक्ष माला क० मिट्टिका भाजन भि० आसन के० चीवरखंड छ० त्रिगडी अ० अंकुश प० धातु की मुद्रिका ग० आभरण विशेष छ० छत्र वा० पगरखा पा० पावडी धा० शाटिका गे० ग्रहणकर प० परिव्राजक व० वसति से प० निकलकर ह० हस्त में

च्छित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता, जेणेव परिव्वायगा वसही तेणेव उवागच्छइ उवा-गच्छइत्ता तिदंडंच, कुंडियंच, कंचणियंच, करोडियंच, भिसियंच, केसरियंच, छण्णालियंच अंकुसयंच, पवित्तयंच, गणेत्तियंच छत्तयंच, वाहणाउय पाउयाउय धाउरत्ताउयगेण्हइ गेण्हइत्ता परिव्वायगवसहीओ परिनिक्खमइ परिनिक्खमइत्ता, तिदंड कुंडिय, कंचणिय, करोडिय, भिसियकेसरियछन्नालयअंकुसयपवित्तियगणेत्तिय हत्थगए,

आकर १ त्रिदंड,२ कमंडल ३ रुद्राक्षमाला ४ मृत्तिका का भाजन ५ मृत्तिका का आसन त्रिपोर ६ प्रमार्जने का कपडा ७ षड्नालिका-त्रिकाष्टिका ८ वृक्षपल्लव को छेदनेवाला अंकुश ९ ताम्बेकी मुद्रिका १० कलाचिका आभरण विशेष ११ शिरपर धारन करने का छत्र १२ पांव में पहिनने का उपानह १३ लकडी की पावडी १४ गेरु से रंगे हुवे भगवे वस्त्र ऐसे भाव ग्रहण कर परिव्राजककी वसति में से नीकला,

गो० गौतम स० श्रमण म० भगवान् म० महावीर को व० वंदनाकर न० नमस्कार कर व० बोले प० समर्थ भं० भगवन् ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय दे० देवानुप्रियाकी अ० पास मु० मुंड भ० होकर अ० अगारसे अ० अनगार को प० प्रव्राजित होनेको ह० हां प० प्रभु॥११॥ जा० जितना काल म० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम की पास ए० यह अर्थ प० करते हैं ता० उस वक्त में ख० खंदक

भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी पहूणं भंते ! खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू ! ॥ ११ ॥ जावंचणं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ तावंचणं खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागए तए-

स्वामी महावीर भगवंत को वंदना नमस्कार करके ऐसा पूछने लगे की अहो भगवन् ! क्या कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक आपकी पास दीक्षा ग्रहण कर मुंड होने को समर्थ है ? हां गौतम ! वह खंदक परिव्राजक दीक्षा लेने का समर्थ है ॥ ११ ॥ श्री महावीर भगवन्त गौतम स्वामी को ऐसा कह रहे थे इतने में कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक उस बगीचे के एक देश में आ पहुचे उस समय श्री गौतम स्वामी कात्यायन गोत्रीय स्कंदक मुनि को पास आये जानकर उपस्थित हुवे,* उपस्थित होकर

* श्री गौतम स्वामी स्कंदक परिव्राजक असंयतीको देखकर खडेहुवे जिसका कारन यह है कि वह आग

देखो गो० गौतम पु० पूर्व स० मित्रको कं० किनको भ० भगवन् ख० खदक को का० किसवक्त कि० किसतरह के० कितने वक्त में ए० ऐसा गो० गौतम ते० उस समय में सा० सावत्थी न० नगरी ग० गर्द-मालिका अं० अंतेवासी ख० खंदक का० कात्यायन गोत्रीय प०परिव्राजक प० रहता है उ० उनको जा० यावत् म० मेरीपास पा० निश्चय किया ग० आने को से० वह अ० नजदीक ब० बहुत नजदीक अ० मार्ग में प० रहाहुवा अ० रस्ते में व० रहा है अ० आजही दि० देखेगा ॥ १० ॥ भ० भगवान् गो०

हवा,केवचिरेणवा? एवं खलु गोयमा! तेणकालेण तेणसमएण सावत्थी णाम णयरी होत्था, वण्णओ, तत्थण सावत्थीए नगरीए गद्दमालिस्स अंतेवासी खंदए णाम कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ तंचेव जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव पाहारेच्छ गमणाए सेअदूरागए बहुसंपत्ते, अद्धाणपडिवण्णे अंतरापहे वट्टइ अज्जेवण दिच्छसि गोयमा ! ॥१०॥ भंतेत्ति

पूर्व संगतिवाला कौनसा मित्रको मैं देखूंगा ? तब श्री भगवन्त बोले की तू खंदक को देखेगा तब गौतम स्वामी बोले की किस समय, किस प्रकार व कितनी देर में मीलेगा ? तब श्री भगवन्त बोले की उस काल उस समय में श्रावस्ती नामक नगरी में गर्दभाली परिव्राजकका शिष्य कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक रहता है उन को पिंगलक निर्ग्रंथने प्रश्न किया जिस का उत्तर नहीं दे सकने से [illegible] अभी रस्ते के मध्य में है और उसे तू आज ही देखेगा ॥ १० ॥ श्री गौतम

पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० श्रवण करनेवाला इ० इस अ० आक्षेप पु० पूछा मा० मागध कि० अ० अर्थ स० समर्थ ह० हां अ० है त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० कहा से० वह के० कौन गा० गौतम त० तथारूप णा० ज्ञानी त० तपस्वी जे० जिससे त० तुमने ए० यह अर्थ म० मेरा र० रहस्य ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे तु० तुम जा० जानते हो त० तब भ० भगवान् गो० गौतम ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा

वएणं इणमक्खेव पुच्छिए मागहा ! किं सअतेलोए, एव तचेव जेणेव इह तेणेव हव्व मागए सेणूण खदया ! अट्ठे समट्ठे ? हता अत्थि ॥ तएण से खदए कच्चायणसगोत्ते भगव गोयम एव वयासी—से केसिण गोयमा ! तहारूवे णाणीवा, तवस्सीवा, जेण तव एसअट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओण तुम जाणासि तएण

होती है ? उस का उत्तर नहीं आने से तुम महावीर भगवन्त की पास से सुनने को आये हो अहो स्कंदक क्या यह सत्य है ? स्कंदकने उत्तर दिया की हां यह सत्य है तब कात्यायन गोत्रीय स्कंदकने पुछा कि अहो गौतम ! ऐसा कौन तथारूप ज्ञानी व तपस्वी है कि जिनोंने मेरे मन का रहस्य तुम को कहा ? अहो स्कंदक ! मरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्मगुरु श्री श्रमण भगवंत केवल ज्ञान केवल दर्शन के

स्कंदक क० कात्यायन गोत्रीय अ० नजदीक आ० आयाहुवा जा० जानकर खि० शीघ्र अ० उठकर खि० शीघ्र प० सन्मुख जाकर जे० जहां स्व० स्कंदक क० कात्यायन गोत्रीय ते० तहां उ० आकर ख० खदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले हे० अहो खं० खदक सा० स्वागतम् सु० सुस्वागत अ० योग्य, आगमन सा० स्वागतम् अ० योग्य आगमन मे० वह तु० तुम को स० स्वदक सा० सावत्थी न० नगरी में पिं०

ण भगव गोयमे खदय कच्चायणसगोत्त अदूरमागय जाणेत्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेइ २ त्ता, खिप्पामेव पच्चुगच्छइ पच्चुगच्छइत्ता जेणेव खदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खदय कच्चायणसगोत्त एव वयासी हेखदया ! सागय खदया ! सुसागय खंदया ! अणुरागय खदया ! सागयमणुराय खंदया ! सेणूण तुम खदया, सावत्थीए णयरीए पिंगलएण नियठेण वेसालियसा-

स्कदक परिव्राजक की सन्मुख गये, और सन्मुख जाकर स्कंदक परिव्राजक को ऐसा बोले अहो स्कदक तुम्हारा आगमन श्रेष्ट है, तुम्हारा आगमन अनुपम है, तुम्हारा आगमन शोभन व अनुपम है अहो स्कदक ! श्रावस्ती नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने को रसिक पिंगलक नामक निर्ग्रंथने क्या ऐसे प्रश्नों पूछे थे कि अत सहित लोक है, या अत रहित लोक है, यावत् किस मरण से ससार की वृद्धि व हीनता

पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० श्रवण करनेवाला इ० इस अ० आक्षेप पु० पूछा मा० मागध कि० अ० अर्थ स० समर्थ ह० हां अ० है त० तब से० वह खं० खदक क० कात्यायन गोत्रीय भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० कहा से० वह के० कौन गा० गौतम त० तथारूप णा० ज्ञानी त० तपस्वी जे० जिससे त० तुमने ए० यह अर्थ म० मेरा र० रहस्य ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे तु० तुम जा० जानते हो त० तब भ० भगवान् गो० गौतम ख० खदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा

वएणं इणमक्खेव पुच्छिए मागहा ! किं सअंतेलोए, एव तचेव जेणेव इह तेणेव हव्व मागए सेणूण खदया ; अट्ठे समट्ठे ? हंता आत्थि ॥ तएण से खदए कच्चायणसगोत्ते भगव गोयम एव वयासी—से केसिण गोयमा ! तहारूवे णाणीवा, तवस्सीवा, जेण तव एसअट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओण तुम जाणासि तएण

होती है ? उस का उत्तर नहीं आने से तुम महावीर भगवन्त की पास से सुनने को आये हो अहो स्कदक क्या यह सत्य है ? स्कदकने उत्तर दिया की हां यह सत्य है तब कात्यायन गोत्रीय स्कदकने पुछा कि अहो गौतम ! ऐसा कौन तथारूप ज्ञानी व तपस्वी है कि जिनोंने मेरे मन का रहस्य तुम को कहा ? अहो स्कदक ! मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्मगुरु श्री श्रमण भगवत केवल ज्ञान केवल दर्शन के

व० कहा ख० खदक म० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर उ० उत्पन्न णा० ज्ञान द० दर्शन युक्त अ० अरिहत जि० जिन के० केवली ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत वि० विज्ञानक स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी जे० जिनने म० मुझे ए० यह अर्थ त० तुमारा र० हृदय भाव ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे अ० मैं जा० जानताहू ख० खदक ॥ १२ ॥ त० तब खं० खदक क० कात्यायन गोत्रीय भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ग० जावे गो० गौतम

से भगव गोयमे खदय कच्चायणसगोत्त एव वयासी एव खलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए, समणे भगव महावीरे उप्पण्णणाणदसणधर अरहा जिणे केवली, तीय पच्चुप्पण्ण मणागय वियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी, जेण ममएसअट्ठे तवताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए जओण अह जाणामि खदया ? ॥ १२ ॥ तएण से खदए कच्चायणसगोत्ते भगव गायम एव वयासी गच्छामोण गोयमा ? तव धम्मायरिय

धारक श्री महावीर स्वामी है वे इन्द्रादिक के वंदनीक पूजनीक, रागादि शत्रु को जीतनेवाले सब दोष रहित, व अतीत, अनागत व वर्तमान के ज्ञानी सर्वज्ञ, सर्वदर्शी है इनोंने मुझे यह अर्थ तुम्हारे आये पहिले बतलाया उन के कथनसेही मैं यह जानता हू ॥ १२ ॥ तब स्कदक परिव्राजक बोले की अहो गौतम ! मैं तुम्हारे धर्माचाय धर्मोपदेशक श्री श्रमण भगवंत महा-

त० तुमारे ध० धर्माचार्य पास की ध० धर्मोपदेशक की पास स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वांदे न० नमस्कार कर जा० यावत् प० पुजे अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रति बंध क०करा त० तब भ० भगवान् गा० गौतम ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां प० निश्चय कीया ग० जाने को ॥ १३ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर वि० नित्य भोजी हो० थे त० तब स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर वि० नित्यभोजी का स० शरीर को उ० उदार सिं० शो

धम्मोवदेसय समण भगव महावीर वदामो नमसामो जाव पज्जुवासामो । अहासुह देवाणुप्पिया ! मापडिबधकरेह ॥ तएण भगव गोयमे खदएण कच्चायणसगोत्तेण सद्धिं जेणेव समणे भगव महावीरे तेनेव पहारेच्छ गमणाए॥१३॥तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे वियट्टभोजीयावि होत्था॥ तएण समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरय उराल सिंगार कल्लाण सिव धन्न मगल्ल अणलकिय विभू-

वीर स्वामी को वदना नमस्कार करु अहो स्कदक ! जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो, विलम्ब मत करो तब श्री गौतम स्वामी स्कदक परिव्राजक को साथ लेकर जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे वहां आये ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर नित्यभोजी थे उन का शरीर

मानन्त क० कल्याण कारी सि० श्रेयकारी ध० धन्य मं० मगलकारी अ० अलकार रहित वि० विभू-
पित ल० लक्षण व० व्यंजन गु० गुणयुक्त सि० श्री जैसे अ० अतीव उ० शोभते चि० रहते हैं ॥ १४ ॥
त० तहां से० वह स० स्कंदक क० कात्यायन गोत्रिय स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर का वि०
नित्य भोजी स० शरीर उ० उदार जा० यावत् अ० अतीव उ० शोभता पा० देखकर ह० आनद
तु० तुष्ट चि० चित्तमें आ० आनद हुवा पी० प्रीति हुइ प० उत्कृष्ट सा० अच्छा मन हुवा ह० हर्षयुक्त

सिय लक्खण वजण गुणोववेयं, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥१४॥
तएण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरय
उरालय जाव अतीव अतीव उवसोभेमाण पासइ पासइत्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिए
पीइमाणे परमसोमणासिए हरिसवसविसप्पमाणहियए, जेणेव समणे भगव महावीरे

अतिशय शोभावन्त, श्रेयकारी, उपद्रवकारी, वस्त्राभरण रहित होनेपर शोभनिक व लक्षण व्यजन युक्त था
॥ १४ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक नित्यभोजी श्री श्रमण भगवत महावीर स्वामी
का शरीर को अत्यंत शोभनिक यावत् लक्षण व्यजन युक्त देखकर हृष्ट पुष्ट चित्तवाला हुआ, बहुत सतोषित
हुआ, आनंदित चित्तवाला हुआ, मन में प्रीति उत्पन्न हुई और परम उत्कृष्ट हर्ष उत्पन्न हुआ इस तरह से

वि० विस्तार हि० हृदय वाला जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त महावीर को ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके जा० यावत् प० पूजनेलगे ॥ ८ ॥ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम को ख० खंदक सा०सावत्थी ण० नगरी में पिं०पिंगलक निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुनने वाला इ० इस अ० प्रश्न से मा० मागध किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनत

तेणेव उवागच्छइ२त्ता, समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ जाव पज्जुवासइ ॥ १५ ॥ खदयाइ समणे भगव महावीरे खदय कच्चायणसगोत्त एव वयासी सेणूणतुम खदया ! सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियठेण वेसालिसावएण इणमक्खेव, मागहा ! किं सअतेलोए, अणतेलोए एव तचेव जाव जेणेव मम अति-

हर्षित बनाहुआ जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये; आकर श्री श्रमण भगवत महावीर को तीन आदान व प्रदक्षिणा की, यावत् सेवाभक्ति की ॥ १८ ॥ तब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने कात्यायन गोत्रीय खदक को पूछा कि अहो खदक! श्रावस्ती नगरी में महावीर के वचन सुनने का रसिक पिंगल निर्ग्रन्थने ऐसा पूछा कि अहो मागध! अत सहित लोक है या अत रहित लोक है यावत किस मरण से जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है? उस का उत्तर नहीं दे सकनसे तू शीघ्र मेरी

लोक जा० यावत् म० मेरी अ० पास ह० शीघ्र आ० आया से० वह ख० खंदक अ० अर्थ स० समर्थ ह० हां अ० है ख० खंदक ए० ऐसा अ० आत्मविषय में चिं० चिंतवन प० प्रार्थनारूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुवा किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनंतलोक त० उस का अ० यह अर्थ म० मैंने ख० खंदक च० चार प्रकार का प० प्ररूपा द० द्रव्य से ख० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से द० द्रव्य से ए० एक लो० लोक स० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक अ० असंख्यात जो० योजन

ए तेणेव हव्वमागए । सेणूण खंदया! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ जेविय ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, किं सअंतेलोए अणंतेलोए तस्सावियणं अयमट्ठे, एवं खलुमए खंदया! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओणं एगेलोए सअंते,॥

पास आया है तो क्या यह बात सत्य है? खंदक बोले हां यह सत्य है अहो खंदक! तेरे मन में ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनन, व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुवा कि क्या अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है परंतु अहो स्कंदक! मैं लोक को इस प्रकार प्ररूपता हूं लोक के चार भेद कहे हैं द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे व भाव से द्रव्य से पंचास्तिकायरूप एक, वह द्रव्य तत्त्व से अंत सहित है, क्षेत्र से सब लोक का मध्य मेरुपर्वत है उससे यह ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा की लम्बाइ व चौडाइ में असंख्यात योजन का

को० क्रोडा क्रोडा आ० लंबा वि० चौडा अ० असंख्यात जो० योजन को० क्रोडा क्रोड प० परिधि में अ० है से० उस का अ० अंत का० काल से लो० लोक न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० हुवा न० नहीं कदापि न० नहीं है न० नहीं कदापि न० न होगा भु० हुवा भ० होता है भ० होगा धु० ध्रुव नि० नित्य सा० शाश्वत अ० अक्षय अ० अव्यय अ० अवस्थित णि० नित्य ण० नहीं है से० उस का अ० अंत भा० भाव से लो० लोक अ० अनंत वर्ण प० पर्यव ग० गंध र० रस फा० स्पर्श अ० अनंत स०

खेत्तओण लोए असंखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ आयामविक्खंमेण, असंखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ परिक्खवेण पण्णत्ता, अत्थि पुण सेअंते ॥ कालओण लोए न कयाइ न आसि, न कदाइ न भवइ, न कदाइ न भविस्सइ, भुविंसु य, भवतिय, भविस्सइय धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्च, णत्थिपुणसे अंते, भावओण लोए अणंतावण्ण पज्जवा, गंधरसफास अणंता सट्ठाण पज्जवा, अणंता गुरुय लहुय

है और परिधि भी उस की असंख्यात योजन की है तथापि वह लोक अंत सहित है. काल से पहिला लोक नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं, भविष्य में नहीं होगा वैसा नहीं, परंतु अतीतकाल में था, वर्तमान में है और भविष्य में होगा और भी वह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित व नित्य है इसलिये कालसे लोक का अंत नहीं है भाव से लोक के अनंत वर्ण पर्यव गंध, रस व स्पर्श

लोक जा० यावत् म० मेरी अ० पास ह० शीघ्र आ० आया से० वह ख० खंदक अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है ख० खदक ए० ऐसा म० आत्मविषय में चिं० चितवन प० प्रार्थनारूप म० मनोगत स० संकल्प स० उत्पन्न हुवा किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनतलोक त० उस का अ० यह अर्थ म० मैंने ख० खंदक च० चार प्रकार का प० प्ररूपा द० द्रव्य से ख० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से द० द्रव्य से ए० एक लो० लोक म० अतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक अ० असंख्यात जो० योजन

ए तेणेव हव्वमागए। सेणूण खदया! अट्ठे समट्ठे? हता अत्थि॥ जेविय ते खदया! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था, किं सअंतेलोए अणतेलोए तस्सावियण अयमट्ठे, एव खलुमए खदया! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तजहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओण एगेलोए सअते,॥

पास आया है तो क्या यह बात सत्य है? खदक बोले हां यह सत्य है अहो खदक! तेरे मन में ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनन, व मनोगत सकल्प उत्पन्न हुवा कि क्या अत सहित लोक है या अत रहित लोक है. परतु अहो स्कन्दक! मैं लोक को इस प्रकार प्ररूपता हूं लोक के चार भेद कहे हैं द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे व भाव से द्रव्य से पंचास्तिकायरूप एक, वह द्रव्य तत्त्व से अत सहित है, क्षेत्र से सब लोक का मध्य मेरुपर्वत है उससे यह ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा की लम्बाइ व चौडाइ में असंख्यात योजन का

अवगाहिक अ० है मे० उसका अ० अत का०काल से जी० जीव न० नहीं क०कदापि नहीं हुवा णि० नित्य न० नहीं हैं से० उसका अ० अत भा० भाव से जी० जीव अ० अनत ना० ज्ञान पर्यव अ० अनत द० दर्शन पर्यव अ० अनत च० चारित्र पर्यव अ० अनत गु० गुरुलघु पर्यव अ० अनत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अ० अत द० द्रव्य मे जी० जीव स० अतसहित खे० क्षेत्र से स० अंतसहित का० काल से अ० अनत भा० भाव से जी० जीव अ० अनत ॥ १७ ॥ जे० जो ख०

नत्थि पुणसे अंते, भावओण जीवे अणता णाणपज्जवा, अणता दसण पज्जवा, अणता चरित्तपज्जवा, अणता गुरुय लहुय पज्जवा, अणता अगुरुय लहुय पज्जवा, नत्थि पुण से अंते। सेत्त दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअते, कालओजीवे अणते, भावओ जीवे अणते ॥ १७ ॥ जेवियण तेखदया पुच्छा अतासिद्धी,

ख्यात प्रदेशात्मक है इसलिये अत सहित है, कालसे जीव पहिले नहीं था वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं व नहीं होगा वैसा नहीं, परतु अतीत कालमें था, वर्तमानमें है और आगामिकमें होगा, वैसे ही वह नित्य, शाश्वत है, इसलिये काल से जीव अत रहित है भावसे जीव को अनत ज्ञान पर्यव, अनत दर्शन पर्यव, अनत चारित्र पर्यव, अनत गुरुलघु पर्यव है, इसलिये जीव अत रहित है इस तरह द्रव्यसे जीव अत सहित है, क्षेत्र से जीव अंत सहित है, काल से व भाव से जीव अत रहित है ॥ १७ ॥ अहो खदक !

संस्थान प० पर्यव अ० अनत गु० गुरुलघुके प० पर्यव अ० अनत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उस का अं० अंत ख० खदक द० द्रव्य से लो० लोक अ० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक स० अंतसहित का० काल से लो० लोक अ० अनंत भा० भाव से लो० लोक अ० अनंत ॥ १६ ॥ खं० खदक जा० यावत् स० अंतसहित जी० जीव अ० अनंत जीव त० उस का अ० यह अर्थ जा० यावत् द० द्रव्य से ए० एक जीव स० अंतसहित ख० क्षेत्र से जी० जीव अ० असंख्यात प० प्रदेशिक अ० असंख्यात प्रदेश

पज्जवा, अणता अगुरुयलहुयपज्जवा नात्थिपुणसे अते ॥ सेत्त खदया ! दव्वओ लोगेसअते, खेत्तओलोए सअने, कालओ लोए अणते, भावओ लोए अणते ॥ १६ ॥ जेविय ते खदया ! जाव सअंतेजीवे अणतेजीवे, तस्सवियणं अयमट्ठे एव खलु जाव दव्वओण एगजीवे सअते, खेत्तओण जीवे असखेज्ज पएसिए, असखेज्ज पएसोगाढे, अत्थिपुण से अते, कालओण जीवे नकदाइ न आसि णिच्चे

पर्यव अनंत संठान पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव, व अनत अगुरुलघु पर्यव हैं इसलिये भावसे लोक अनत है इसतरह से अहो स्कदक ! द्रव्यसे लोक अत सहित, क्षेत्रसेभी अंत सहित, कालसे व भाव से लोक अनत है ॥ १६ ॥ अहो स्कंदक ! जीव अत सहित है या अंत रहित है उस प्रश्न के उत्तर में जीव के चार भेद कहे हैं द्रव्य से, क्षेत्रसे, कालसे व भावसे, द्रव्य से एकही जीव है यह द्रव्य से अत सहित है क्षेत्रसे अप

अनगारिक अ० है से० उसका अ० अंत का० काल से जी० जीव न० नहीं क० कदापि नहीं हुवा णि० नित्य न० नहीं है से० उसका अ० अंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ना० ज्ञान पर्यव अ० अनंत द० दर्शन पर्यव अ० अनंत च० चारित्र पर्यव अ० अनंत गु० गुरुलघु पर्यव अ० अनंत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अ० अंत द० द्रव्य में जी० जीव स० अंतसहित खे० क्षेत्र से स० अंतसहित का० काल से अ० अनंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ॥ १७ ॥ जे० जो ख०

नत्थि पुणसे अंत, भावओण जीवे अणंता णाणपज्जवा, अणंता दंसण पज्जवा, अणंता चरित्तपज्जवा, अणंता गुरुय लहुय पज्जवा, अणंता अगुरुय लहुय पज्जवा, नत्थि पुण से अंते। सेत्तं दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओ जीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ॥ १७ ॥ जेवियण तेखंदया पुच्छा अंतासिद्धी,

ख्यात प्रदेशात्मक है इसलिये अंत सहित है, कालसे जीव पहिले नहीं था वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं व नहीं होगा वैसा नहीं, परन्तु अतीत कालमें था, वर्तमानमें है और आगामिकमें होगा, वैसे ही वह नित्य, शाश्वत है, इसलिये काल से जीव अंत रहित है भावसे जीव को अनंत ज्ञान पर्यव, अनंत दर्शन पर्यव, अनंत चारित्र पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव है, इसलिये जीव अंत रहित है इस तरह द्रव्यसे जीव अंत सहित है, क्षेत्र से जीव अंत सहित है, काल से व भाव से जीव अंत रहित है ॥ १७ ॥ अहो खंदक !

खदक पु० पृच्छा अ० अंत साहित सि० सिद्धि अ० अनत सिद्धि त० उनका अ० यह अ० अर्थ म० मैंने च० चार प्रकार की सि०सिद्धि प० प्ररूपी द० द्रव्य से ए०एकसिद्धि स०अंतसहित खे० क्षेत्र से प० पैंतालीस जो० योजन स० लक्ष आ० लंबी वि० चौडी ए० एक जो० योजन क्रोड बा० बीयालीस स० लक्ष ती० तीस स० सहस्र दो० दो उ० इगुणपचास जो० योजन स० शत किं० किंचित वि० विशेषाधिक प० परिधि में प० प्ररूपी अ० है से०उसका अ०अंत का०काल से सि० सिद्धि न०नहीं क०कदापि न०नहीं

अणतासिद्धी, तस्सवियएण अयमट्ठे, मए चउव्विहासिद्धी प० त० दव्वओ खेत्तओ, कालओ, भावओ दव्वओण एगासिद्धी, सअंता । खेत्तओणसिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयाम विक्खभेण, एगाजोयण कोडी बायालीस सयसहस्साइ तीसच सहस्साइ दोण्णियअ उणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता, अत्थिपुणसे अंते, कालओणासिद्धी नकदाइनआसि, ॥ भावओय जहा

मुप को सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ऐसा प्रश्न पुछाया उस का भी यह अर्थ है सिद्धशिला चार प्रकार की कही है द्रव्य से सिद्धशिला एक होने से अंत साहित है, क्षेत्र से सिद्धशिला ४५ लाख योजन की लम्बी व चौडी, वैसेही १४२३०२४९ से कुच्छ अधिक परिधि होने से अंत रहित है काल से भूत भविष्य व वर्तमान ऐसे तीनों काल में शाश्वत होने

आ०थी भा०मात्र से ज० जैसे लो० लोक का त० तैसे भा० कहना त० उस में द्रव्य से सि० सिद्धि स० अतसहित खे० क्षेत्र से स०अतसहित का०काल से अ०अनत भा०भाव से अ०अनत॥१८॥ जे० जो खं० खंदक जा० यावत कि० क्या अ० अनंत सिद्ध जा० यावत् द० द्रव्य से ए० एकसिद्ध स० अतसहित खे० क्षेत्र से सि० सिद्ध अ० असख्यात प्रदेशात्मक अ० असख्यात प० प्रदेशावगाहिक अ० है अ० अत

लोयस्स तहा भाणियव्वा। तत्थ दव्वओसिद्धी सअता, खेत्तओसिद्धी सअता, कालओ सिद्धी अनता भावओ सिद्धी अणता॥ १८॥जेवियतेखदया ! जाव किं अनते सिद्धे तचेव जाव दव्व-ओण एगे सिद्धे सअते,खेत्तओण सिद्धे असखेज्ज पएसिए, असखेज्जपएसोगाढे, अत्थिपुण अते कालओण सिद्धे सादीए अपज्जवसिए नत्थिपुणसे अते, भाव

से अंतरहित है, और भाव से अनत वर्ण, गंध रस व स्पर्श के पर्यव, अनत सठानादिक अनत गुरुलघु व अनत अगुरुलघु के पर्यव होने से अत रहित है इस तरह सिद्ध शिला द्रव्यव क्षेत्रसे अंत सहित है, और काल व भाव से अत रहित है ॥ १८॥ अहो खदक सिद्ध अत सहित है या अनंत है उस के प्रश्न के उत्तर में सिद्ध के पूर्वोक्त प्रकार के द्रव्यादिचार भेद कहे हैं द्रव्य से सिद्ध एक होने से अंत सहित है, क्षेत्रसे असख्यात प्रदेशात्म सिद्ध होने से भी अत सहित है, काल से एक सिद्ध आश्री आदि सहित व अत रहित है इसलिये अनंत है और भाव से अनत

खव्क पु० पृच्छा अ० अत साहित सि० सिद्धि अ० अनत सिद्धि त० उनका अ० यह अ० अर्थ म० मैंने च० चार प्रकार की सि०सिद्धि प० प्ररूपी द० द्रव्य से ए०एकसिद्धि स०अतसहित खे० क्षेत्र से प० पैंतालीस जो० योजन स० लक्ष आ० लंबी वि० चौडी ए० एक जो० योजन क्रोड बा० बीयालीस स० लक्ष ती० तीस स० सहस्र दो० दो उ० उगुणपचास जो० योजन स० शत किं० किंचित वि० विशेषाधिक प० परिधि में प० प्ररूपी अ० है से०उसका अ०अत का०काल से सि० सिद्धि न०नहीं क०कदापि न०नहीं

अणतासिद्धी, तरसत्रियएण अयमट्ठे, मए चउव्विहासिद्धी प० त० दव्वओ खेत्तओ, कालओ, भावओ दव्वओण एगासिद्धी, सअता । खेत्तओणसिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयाम विक्खंभेण, एगाजोयण कोडी बायालीस सयसहस्साइ तीसच सहस्साइ दोण्णियअ उणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता, अत्थिपुणसे अते, कालओणासिद्धी नकदाइनआसि, ॥ भावओय जहा

तुम को सिद्ध शिला अत सहित है या अत रहित है एसा प्रश्न पुछाया उस का भी यह अर्थ है सिद्धशिला चार प्रकार की कही है द्रव्य से सिद्धशिला एक होने से अत सहित है, क्षेत्र मे सिद्धशिला ४५ लाख योजन की लम्बी व चौडी, वैसेही १४२३०२४९ से कुच्छ अधिक परिधि होने से अत रहित है काल से भूत भविष्य व वर्तमान ऐसे तीनों काल म शाश्वत होने

दु० दोप्रकार के म० मरण बा० बाल मरण प० पंडित मरण किं० कैसे बा० बाल मरण बा० बाल मरण दु० बारह प्रकारका व० क्षुधासे मरण व० इन्द्रिय वश मरण अ० अत शल्यमरण त० तद्भवमरण गि० गिरिपडन त० तरुपडन ज० जल प्रवेश ज० अग्निप्रवेश वि० विप भक्षण स० शस्त्र से मरना वे० फांसी दकर गि० गृद्ध के पृष्ट में प्रवेश करना ख० खदक दु० बारह प्रकारका बा० बालमरण से म० मरता जी०

तस्सावियण अयमट्ठे एव खलु खदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते तजहा-बालमरणेय, पडियमरणेय । से किं त बालमरणे ? बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते तजहा वलयमरणे, वसट्टमरणे, अतोसल्लमरणे, तब्भवमरणे, गिरिपडणे, तरुपडणे, जलप्पवेसे, जलणप्पवेसे विसभक्खणे, सत्थोवाडणे, वेहाणसे, गिद्धपिट्ठे । इच्चेएण खदया ? दुवालसविहेण बालमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाण सजोएइ,

तिर्यंच होना सो तद्भव मरण ५ पर्वत से पडकर मरना सो गिरिपडण मरण ६ वृक्ष से गिरकर मरना सो तरुपडण मरण ७ पानी में प्रवेश कर मरे सो जलप्रवेश मरण ८ अग्नि में प्रवेश कर मरना सो जलन प्रवेश मरण ९ विप खाकर मरना सो विप भक्षण मरण १० शस्त्रसे छेदकर मरना ११ वृक्षकी शाखादिक से फांसी खाकर मरना सो वेहानस और १२ गृद्धप्रमुख के मृतक शरीर में प्रवेश कर मरना इस तरह बारह प्रकार के व अन्य भी बाल मरण से जीव अनत बार नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव का भव ग्रहण करता

का० काल से सिद्ध सा० सादी अ० अपर्यवसित न० नहीं है पु० फीर से० उसका अ० अंत भा० भाव से सि० सिद्ध अ० अनंत णा० ज्ञान पर्यव द० दर्शन पर्यव अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अं० अंत॥१९॥ खं० खंदक ए० एतारूप अ० आत्मविषय चिं० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा के० किस म० मरण जी० जीव व० वृद्धि पावे हा० हीनपावे त० उसका अ० यह अर्थ स० सदंर्क म० मैंने

ओण सिद्धे अणता णाणपज्जवा अणता दसणपज्जवा, अणता अगुरुलहुय पज्जवा, नत्थिपुण से अते ॥ सेत्त दव्वओ सिद्धे सअते, खेत्तओ सिद्धे सअते, कालओ सिद्धे अणते, भावओ सिद्धे अणते ॥१९॥ जे विय ते खदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था केणवा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइवा, हायइवा, ।

ज्ञानपर्यव, दर्शनपर्यव, व अनत अगुरुलघु पर्यव होने से अत रहित है इस तरह सिद्ध द्रव्य क्षेत्र से अत सहित व काल भाव से अत रहित है ॥ १२ ॥ अहो खदक ! तुम को ऐसा विचार हुवा कि किस मरण से जीव ससारकी वृद्धि या हानि कर सकता है ? अहो खंदक ! मरण दो प्रकार के कहे है बाल मरण व पंडित मरण उन में से बाल मरण के बारह भेद कहे हैं १ धर्म से भ्रष्ट होकर या क्षुधा से बलबलाट करता मरन मरे सो वलय मरण २ इन्द्रियों के वश में पडकर मरे सो वसट्ट मरण ३ अंत करण में शल्य रखकर मरे सो अत शल्य मरण ४ मनुष्य मरकर मनुष्य होना व

दु० दोप्रकार के म० मरण वा० बाल मरण प० पंडित मरण कि० कैसे बा० बाल मरण वा० बाल मरण दु० बारह प्रकारका व० क्षुधासे मरण व० इन्द्रिय वश मरण अ० अंत शल्यमरण त० तद्भवमरण गि० गिरिपडन त० तरुपडन ज० जल प्रवेश ज० अग्निप्रवेश वि० विष भक्षण स० शस्त्र से मरना वे० फांसी देकर गि० गृद्ध के पृष्ट में प्रवेश करना खं० स्वंदक दु० बारह प्रकारका बा० बालमरण से म० मरता जी०

तस्सावियण अयमट्ठे एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते तंजहा-बालमरणेय, पंडियमरणेय । से किं तं बालमरणे ? बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा वलयमरणे, वसट्टमरणे, अतोसल्लमरणे, तब्भवमरणे, गिरिपडणे, तरुपडणे, जलप्पवेसे, जलणप्पवेसे विसभक्खणे, सत्थोवाडणे, वेहाणसे, गिद्धपिट्ठे । इच्चेएणं खंदया ? दुवालस-विहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ;

तिर्यंच होना सो तद्भव मरण ५ पर्वत से पडकर मरना सो गिरिपडण मरण ६ वृक्ष से गिरकर मरना सो तरुपडण मरण ७ पानी में प्रवेश कर मरे सो जलप्रवेश मरण ८ अग्नि में प्रवेश कर मरना सो जलन प्रवेश मरण ९ विष खाकर मरना सो विष भक्षण मरण १० शस्त्र छेदकर मरना ११ वृक्षकी शाखादिक से फांसी खाकर मरना सो वेहानस और १२ गृद्धप्रमुख के मृतक शरीर में प्रवेश कर मरना इस तरह बारह प्रकार के व अन्य भी बाल मरण से जीव अनंत वार नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव का भव ग्रहण करता

जीव स० अनत ने० नारकी भवग्रहण से अ० आत्मा को स० याजे ति० तिर्यच म० मनुष्य दे० देव अ० अनादि अ० अनत दी० दीर्घकाल चा० चतुर्गति स० ससार क० कतार में अ० परिभ्रमण करे से० वह किं० कैसे प० पंडित मरण प० पंडितमरण दु० दोप्रकार का पा० पादोपगमन भ० भक्तप्रत्याख्यान पा० पादोपगमन दु० दोप्रकार नी० नीहारिम अ० अनीहारीम नि० निश्चय अ० प्रतिक्रमण रहित से०

तिरिय मणुदेव अणाइयचण अणवदग्ग दीहद्ध, चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ सेत बालमरणेण मरमाणे वड्ढइ । सेत्त बालमरणे ॥ से किं त पडियमरणे ? पडिय-मरणे ! दुविहे प० त० (ग्रथ सख्या १०००) पाओवगमणेय भत्त पच्चक्खाणेय । से किं त पाओवगमणे ? पाओवगमणे ! दुविहे पण्णत्ते, तजहा नीहारिमेय, अनीहा-

है ग अनादि अनत चतुर्गतिक ससार में पर्यटन करता है इसलिये बाल मरण से ससार की वृद्धि होती है पंडित मरण क्या है ? पंडित मरण के दो भेद कहे हैं १ पादोपगमन अर्थात् वृक्ष की गिरी हुई शाखा की तरह अपने शरीर को स्थिर करे २ भक्त प्रत्याख्यान सो जीवन पर्यंत अशनादि चारों आहार का त्याग करे उसमें से प्रथम पादोपगमन के दो भेद कहे हैं १ नीहारिम सो नगरमें मरे उन के शरीर का निहारन (संस्कार) होवे और २ अनीहारिम पर्वतादिक में करे उन के शरीर का निहारन (संस्कार) होवे नहीं पादोपगमन मरण मरने वाला प्रतिक्रमण नहीं करता है क्यों कि यह हलन चलनादि क्रिया

वह पा० पादोपगमन भ० भक्त मत्याख्यान दु० दोमकार का नी० नीहारिम अ० अनीहारिम नि० निश्चय स० प्रतिक्रमण भ० भक्त मत्याख्यान ख० खदक दु० दोमकार का प० पंडित मरण से म० मरता जी० जीव अ० अनत ने० नारकी भ० भव से अ० आत्मा को वि० पृथक्करे जा० यावत् वी० तीरे इ० इन ख० खदक दु० दोमकार क म० मरण मे म० मरता जीव व० वृद्धि पावे हा० हानीपाव ॥ २० ॥ से०

रिमेय नियमा अपडिक्कमे सेत्त पाओवगमणे । से किं त भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे प० त० नीहारिमेय, अनीहारिमेय, नियमा सपडिक्कमे सेत्त भत्त पच्चक्खाणे इच्चेतेण खदया ! दुविहेण पडियमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाण विसजोएइ जाव वीयीवियइ सेत मरमाणे हायइ सेत पडियमरणे ॥ इच्चेएण खदया ! दुविहेण मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा ॥ २० ॥

नहीं करता है भक्त मत्याख्यान के दो भेद कहे हैं नीहारिम और अनीहारिम यह प्रतिक्रमण करता है क्यों कि इन को हलन चलनादि क्रिया होती है इस तरह अहो खदक! दो मकार के पंडित मरण मरने वाला नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव के भव में अनतवार उत्पन्न नहीं होता है यावत् ससार में परिभ्रमण नहीं करता है इसतरह मरण मरने वाला ससार का क्षय करता है अहो खंदक ' ऐसे दो मरण मरनेसे जीव ससार की वृद्धि व हानि करता है ॥ २० ॥ इस तरह उत्तर सुनकर कात्यायन गोत्रीय खंदक परिव्राजक

यह खं० खदक क० कात्यायन गोत्रीय स० सबुद्ध स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को व० वदन कर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भ० भगवन् तु० तुमारी अ० पास के० केवली प० प्ररूपा धर्म को नि० धारने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध करो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ख० खदक क० कात्यायन गोत्रीय सी० उस म० बडी म० महान् प०परिषदामें ध०धम प०कहा ध०धर्म कथा मा०कही॥२१॥ त०तब से०वह ख०संदक क०कात्यायन गोत्रीय

एत्थण से खदए कच्चायण सगोत्ते सबुद्धे ! समण भगव महावीर वदइ नमसइ, नमसइत्ता एव वयासी इच्छामिण भते ! तुज्झ अतिए केवली पन्नत्त धम्म निसामित्तए अहासुह देवाणुप्पिया मापडिबध ॥ तएण समणे भगव महावीरे खदयस्स कच्चायण सगोत्तस्स तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ धम्मकहा भाणियव्वा

प्रति बोध पाये और श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि अहो भगवन् ! आप की समीप केवली प्ररूपित धर्म सुनने को मैं चाहता हूं अहो देवानुप्रिय ! जैसा तुम को सुख होवे वैसा करो, विलम्ब मत करो उस समय श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने उस महती परिषदा में संदक परिव्राजक को धर्म कथा कही ॥ २१ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय संदक ने महावीर स्वामी की

स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीरकी अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधारकर ह० हृष्ट तु०तुष्ट जा० यावत् ह० हर्षहुवा हि० हृदयमें उ० स्थान से उ० खडे हुवे उ० खडे होकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा की क० करके ए० ऐसा व० बोले स० श्रद्धताहूं भं० भगवन् नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन को प० प्रतीत करता हूं रो० रुचि करता हूं अ० उद्यम- करता हूं ए० ऐसे ही भं० भगवन् त० वैसे भं० भगवन् अ० सत्य अ० सदेहरहित इ० इच्छित प०

तएणसे खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता समण भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ करेइत्ता एववयासी, सद्दहामिणं भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामिण भते निग्गंथं पावयण रोएमिण भते ! निग्गथ पावयणं, अब्भुट्ठेमिणं भते ! नि- ग्गथं पावयणं, एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेयंभते ! असदिद्धमेय भंते ! इच्छिय

प्रदीप धर्म सुनकर व अवधार कर अत्यंत हर्षित हुए और तत्काल उठकर श्रमण भगवंत महावीर को तीन आदान प्रदक्षिणा कर के ऐसा कहा कि अहो भगवन्' निर्ग्रन्थ वचन को मैं श्रद्धता हूं, उन की रुचि कर- ता हूं, उन प्रवचनों की मैं प्रतीति करता हूं, उन प्रवचनों में मैं उद्यमवन्त बना हुआ हूं, अहो भगवन्! निर्ग्रंथ प्रवचन वैसे ही यथायोग्य है, सदेह रहित, इष्ट है प्रतीप्सित है ऐसा कहकर श्री महावीर स्वामी

वह खं० खदक क० कात्यायन गोत्रीय स० सवुद्ध स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को व० वदन कर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भ० भगवन् तु० तुमारी अ० पास के० केवली प० प्ररूपा धर्म को नि० धारने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध करो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ख० खदक क० कात्यायन गोत्रीय ती० उस म० बडी म० महान् प० परिषदामें ध० धर्म प० कहा ध० धर्म कथा भा० कही॥२१॥ त० तब से० वह ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय

एत्थण से खदए कच्चायण सगोत्ते सबुद्धे ! समण भगवं महावीरं वदइ नमसइ, नमसइत्ता एवं वयासी इच्छामिण भंते! तुज्झ अंतिए केवली पन्नत्त धम्म निसामित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया! मापडिबंध ॥ तएण समणे भगवं महावीरे खदयस्स कच्चायण सगोत्तस्स तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ धम्मकहा भाणियव्वा

प्रति बोध पाये और श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि अहो भगवन्! आप की समीप केवली प्ररूपित धर्म सुनने को मैं चाहता हू अहो देवानुप्रिय! जैसा तुम को सुख होवे वैसा करो, विलम्ब मत करो उस समय श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने उस महती परिषदा में खंदक परिव्राजक को धर्म कथा कही॥ २१ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय खदक ने महावीर स्वामी की

कोई गा० गाथापति आ० गृह में जि० जलते जे० जो त० तहां भं० भंडोपकरण भ० होवे अ० अल्पभार मो० बहुमूल्यवाली त० उस को ग० ग्रहणकर आ० आत्मा से ए० एकान्त अ० अतिक्रमे ए० यह नि० निकालते प० पीछे पु० पहिले हि० हितके लिये सु० सुख के लिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिकेलिये अ० अनुगामिक भ० होगा ए० ऐसा दे०देवानुप्रिय म० मेरा आ०आत्मा ए० एकभंड इ० इष्ट कं० कान्त पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम धि० धैर्य वि० विश्वास स० स्वमत ब० बहुमत अ० अनुमत भ० आभरण क०

आलित्तेण भंते ! लोए पलित्तेण भंते ! लोए, आलित्तपलित्तेण भंते ! लोए जराए मरणेणय से जहा नामए केइ गाहावई आगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतमंत अवक्कमइ, एस मे नित्थारिए समाणे पच्छापुराए हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झवि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे धिज्जे विस्सासिए

बना हुवा देखकर उस में जो अल्प भार व बहुत मूल्यवाली वस्तु होती हैं उन्हें नीकालता है, और नीकाल कर एकान्त स्थान में रखता है और ऐसा विचारता है कि इस अग्नि में से नीकाली हुई वस्तु पीछे से हित, सुख, कल्याण की कर्ता व दारिद्य को हरनेवाली होगी इस प्रकार अहो देवानुप्रिय ! मुझे, मेरा आत्मारूप एक बहु मूल्य पदार्थ इष्टकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ, मन को गमता, धैर्यता, स्थिरता व

विशेष इच्छित से० वह ज० जैसे तु० तुम व०कहते हो त्ति०ऐसाकरके स०श्रमण भ० भगवन्त म०महावीरको व०वन्दनाकर न० नमस्कार कर उ० ईशान कोन में अ० आकर ति० त्रिदंड कुं० कमंडल जा० यावत् धा० धातु से रक्त वस्त्र ए० एकान्त में ए०रखकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते०तहां आ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीन वार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके जा० यावत् न० नमस्कार कर आ० आदीप्त हुवे लो०लोक प०प्रदीप्त हुवे ज०जरा म०मरण से ज०जैसे के०

मेयं भंते! पडिच्छियमेय भंते ! इच्छियपडिच्छियमेय भंते ! से जहेय तुज्झे वदह-त्तिकट्टु, समणंभगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसइत्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभायं अवक्कमइ, अवक्कमइत्ता तिदंडंच कुंडियंच जाव धाउरत्ताउय एगते एडेइ एडेइत्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणपयाहिणंकरेइ करेइत्ता जाव नमंसइत्ता एवं वयासी,

को वंदना नमस्कार कर के ईशान कोन में गया वहां जाकर त्रिदंड कमंडल यावत् गेरु से रंगे हुवे वस्त्रों को एकान्त में रखकर श्रमण भगवन्त महावीर की पास आया वहां आकर महावीर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा की प्रदक्षिणा कर यावत् नमस्कार कर ऐसा बोले की अहो भगवन्! यह जीवलोक जरा व मरण से ज्वलित बना हुवा है जैसे कोई गृहपति अपने घर को अग्नि में प्रज्वलित

कोई गा० गाथापति आ० गृह में जि० जलते जे० जो त० तहां भं० भंडोपकरण भ० होवे अ० अल्पभार मो० बहुमूल्यवाली त० उस को ग० ग्रहणकर आ० आत्मा से ए० एकान्त अ० अतिक्रमे ए० यह नि० निकालते प० पीछे पु० पहिले हि० हितके लिये सु० सुख के लिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिकेलिये अ० अनुगामिक भ० होगा ए० ऐसा दे०देवानुप्रिय म० मेरा आ०आत्मा ए० एकभंड इ० इष्ट क० कान्त पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम धि० धैर्य वि० विश्वास स० स्वमत ब० बहुमत अ० अनुमत भ० आभरण क०

आलित्तेण भंते ! लोए पलित्तेण भंते ! लोए, आलित्तपलित्तेण भंते ! लोए जराए मरणेणय से जहा नामए केइ गाहावई आगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ, एस मे नित्थारिए समाणे पच्छापुराए हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झावि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थिज्जे विस्सासिए

घना हुवा देखकर उस में जो अल्प भार व बहुत मूल्यवाली वस्तु होती हैं उन्हें नीकालता है, और नीकाल कर एकान्त स्थान में रखता है और ऐसा विचारता है कि इस अग्नि में से नीकाली हुई वस्तु पीछे से हित, सुख, कल्याण की कर्ता व दारिद्र को हरनेवाली होगी इस प्रकार अहो देवानुप्रिय ! मुझे, मेरा आत्मारूप एक बहु मूल्य पदार्थ इष्टकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ, मन को गमता, धैर्यता, स्थिरता व

भाजन अ० जैसे मा० मत सी० शीत उ० उष्ण खु० क्षुधा पि० तृषा चो० चोर वा० सर्प दं० दंस म० मशक वा० वात पि० पीत स० श्लेष्म स० स० सन्निपात वि० विविध रो० रोग आ० आतक प० परिषह उ० उपसर्ग फ० स्पर्शे चि० ऐसा क० करके नि० निकालते प० परलोक का हि० हितकेलिये सु० सुख केलिये ख० समाकेलिये नि० मुक्तिके हेतु अ० अनुगामिक भ० होंगे ते० उसको इ० इच्छता हूं दे० देवानुप्रिय स० स्वत प० प्रव्राजित मु० मुण्डहोकर से० शिक्षा ग्रहणकर सि० शिक्षा

समए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे माणसीय, माणउण्हं, माणखुहा माणपिवासा, माणचोरा, माणवाला, माणदसा, माणमसया माणवाइय पित्तिय—सभिय—साण्णिवाइय-विविहारोगायका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु, एस नित्थारियसमाणे परलोयस्स हियाए,सुहाए,खमाए,निस्सयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ,तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सय-

विश्वास का कर्ता है आत्मकृत कार्य के सम्मतपने से बहुमत व अनुमत है आभरण के करंडिये समान है इसे मैंने शीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा चोर, सर्प, दंश, मशक, वात, पित्त, कफ, संनिपात आदि मारणान्तिक उपसर्ग व परिषह से बचाया है इस आदीप्त प्रदीप्त से मेरा आत्मा की मैं रक्षा करूंगा वह मुझे इस लोक व परलोक में हित, सुख, कल्याण, क्षमा, निस्तार के कर्ता व अनुगामी होगा वैसे ही मुक्ति

आ० आचार गो० गोचर वि० विनय वे० करता च० चरण क० करण जा० सयम यात्रा मा० मर्यादा घ० धर्म आ० कहो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को स० स्वय ने प० प्रव्रजा दी जा० यावत् घ० धर्म आ० कहा ए० ऐसा दे० देवानुप्रिय चि० खडा रहना गं०जाना ए०ऐसे नि०बैठना तु०सोना भुं०भोजन करना भा०बोलना ए० ऐसे उ०उठकर पा०प्राण भू०भूत

मेवआयारगोयर विणय वेणयिय चरणकरण जाया मायावत्तिय धम्ममाइक्खिय तएण समणे भगव महावीरे खंदय कच्चायणसगोत्त सयमेव पव्वावेइ, जाव धम्म-माइक्खाइ एव देवाणुप्पिया ! चिट्ठियव्व, गतव्वं, एवं निसीइयव्व, एव तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एवं भासियव्व, एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं, भूतेहिं, जीवहिं, सत्तेहिं

देनेवाला होगा इसलिये अहो देवानुप्रिय ! मैं स्वय मुंडित होने को, आचार क्रिया करने को, सूत्रार्थ ग्रहण करने को, आचार, गोचर, विनय करने को, चरण, करण संयम की मर्यादा करने को और जैसे आप धर्म कहते हो वैसा अंगीकार करने को वाञ्छता हूं तब श्री श्रमण भगवन्तने दीक्षा दी यावत् सब जिन धर्म का स्वरूप कहा कि अहो देवानुप्रिय खंदक ! युग प्रमाण भूमि देखकर चलना, ऐसे ही निर्गम प्रवेश रूप स्थान देखकर खडे रहना, भूमि पूंजकर बैठना यत्नापूर्वक शयन करना, यत्नापूर्वक भोजन करना

जी० जीव स० सत्व स० संयम से स० यतना करना अ० इस अ० अर्थ केलिये णो० नहीं किं० किं चित् प० प्रमाद करना ॥ २१ ॥ त० तब से० वह ख० खदक क० कात्यायन गोत्रीय स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का ए० ऐसा ध० धर्म उ० उपदेश स० सम्यक् स० अंगीकार किया त० उन आ० आज्ञाको त० जैसे ग० जावे चि० रहे नि० बैठे तु० सोवे भु० भोजनकरे भा० बोले उ० सदाहोत पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व स० संयम म० यत्नकरे अ० इस अ० अर्थ में णो० नहीं प० प्रमादकरे

सजमेण सजमियव्वं अस्सिंचणं अट्ठे णोकिंचि पमाइयव्वं ॥ २१ ॥ तएणं से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूव धम्मियं उवएस सम्म सपडिव-ज्जइ, तमाणाए तहगच्छइ, तहचिट्ठइ, तहनिसीयइ, तहतुयट्टइ, तहभुंजइ तह भासइ, तहउट्ठा एइ तहपाणेहिं भूएहिंजीवेहिंसत्तेहिं सजमेण संजमइ, अस्सिंचणअट्ठेणोपमायइ ॥ २२ ॥

व यत्नापूर्वक बोलना ऐसे ही उद्यमवन्त बनकरके प्राण भूत जीव व सत्व स संयम पालना इस में किंचिन्मात्र प्रमाद करना नहीं ॥ २१ ॥ तब कात्यायन गोत्रीय खंदकने श्रमण भगवान् महावीर का ऐसा धार्मिक उपदेश सुनकर उसे सम्यक् प्रकारसे अंगीकार किया और उनकी आज्ञामें यत्ना पूर्वक जाना, खडे रहना, बैठना, सोना, भोजन करना, बोलना व सावध रहना ऐसे करने लगे उद्यत होकर प्राणभूत जीव व सत्व की रक्षा कर संयम पालने लगे इस में किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करने लगे ॥ २२ ॥ तब ईर्या स-

॥ २२ ॥ से० वह ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय अ० अनगार जा० हुवा इ० ईर्यासमिति भा० भाषासमिति ए० एषणा समिति आ० आदान भंड मात्र निक्षेपना समिति उ० उच्चार प्रश्रवण खेल जल ज० जल्ल परिस्थापनिक समिति म० मनसमिति व० वचन समिति का० काय समिति म० मनगुप्ति व० वचनगुप्ति का० कायगुप्ति गु० गुप्त गु० गुप्तेन्द्रिय गु० गुप्त ब्रह्मचारी च० त्याग ल० लज्जा धा० धन ख० क्षमा ख० सहनकरे जि० जितेन्द्रिय सो० मैत्रीभाव अ० निदान रहित अ० प्रार्थना रहित अ०

तएण से खदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाए इरिया समिए, भासा समिए एसणा समिए, आयाण भंडमत्त निक्खेवणा समिए, उच्चारपासवणखेल सिंघाणजल्ल पारिट्ठा-वणिया समिए, मणसमिए, वयसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्ति-

मिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान भंडमात्र निक्षेपना समिति, उच्चार प्रश्रवण खेलजल परिस्थापनीय समिति, मन समिति, वचन समिति, काय समिति, मन गुप्ति, वचन गुप्ति व काय गुप्तिवाले, गुप्त, गुप्तेन्द्रिय, गुप्त ब्रह्मचारी, त्यागी, लज्जायुक्त, धर्मरूप धन का संग्रह करनेवाला, शान्ति क्षमा के धारक, जितेन्द्रिय, नियाना नहीं करनेवाले, उत्सुकपना रहित, संयम में लेश्यावन्त, श्रामण्य साधुपना में रत व दमितेन्द्रिय कात्यायन गोत्रीय खदक अनगार जिन प्रवचन को आगे करके विचरने लगे अर्थात् जैसे

नी० जीव स० सत्व स० संयम से स० यतना करना अ० इस अ० अर्थ केलिये णो० नहीं किं० किंचित् प० प्रमाद करना ॥ २१ ॥ त० तब से० वह ख० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का ए० ऐसा ध० धर्म उ० उपदेश स० सम्यक् स० अंगीकार किया त० उन आ० आज्ञाको त० जैसे ग० जावे चि० रहे नि० बैठे तु० सोवे भुं० भोजनकरे भा० बोले उ० खडाहोवे पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व स० संयम म० यत्नकरे अ० इस अ० अर्थ में णो० नहीं प० प्रमादकरे

सजमेण सजमियव्व अस्सिंचण अट्ठे णोकिंचि पमाइयव्व ॥ २१ ॥ तएण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूव धाम्मिय उवएस सम्म संपडिव-ज्जइ, तमाणाए तहगच्छइ, तहचिट्ठइ, तहनिसीयइ, तहतुयट्टइ, तहभुजइ तह भासइ, तहउट्ठा एइ तहपाणहिं भूएहिंजीवेहिंसत्तेहिं सजमेण सजमइ, अस्सिंचणअट्ठेणोपमायइ ॥ २२ ॥

व यत्नापूर्वक बोलना ऐसे ही उद्यमवन्त बनकरके प्राणभूत जीव व सत्व स संयम पालना इस में किंचिन्मात्र प्रमाद करना नहीं ॥ २१ ॥ तब कात्यायन गोत्रीय खंदकने श्रमण भगवान् महावीर का ऐसा धार्मिक उपदेश सुनकर उसे सम्यक् प्रकारसे अंगीकार किया और उनकी आज्ञामें यत्नापूर्वक जाना, खडे रहना, बैठना, सोना, भोजन करना, बोलना व सावध रहना ऐसे करने लगे सावध होकर प्राणभूत जीव व सत्व की रक्षा कर संयम पालने लगे इस में किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करने लगे ॥ २२ ॥ तब ईर्या स-

म० महावीर ते० वहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् न० नमस्कार कर
ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भ० भगवन् तु० तुमारी अ० आज्ञामिलते दो० दोमास की भि०
भिक्षु प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरने को अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रति
बंधकरो ए० ऐसे दो० दोमास की ति० तीनमास की च० चार मास की प० पांच छ० छ स० सात

समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समण भगव जाव नमंसि
त्ता, एव वयासी इच्छामिण भंते ! तुज्झहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासिय भिक्खु-
पडिम उवसपज्जित्ताण विहरित्तए अहासुह देवाणुप्पिया। मापडिबंध तचेव एव दोमासिय,
तिमासिय, चाउम्मासिय, पचछसत्त पढम सत्तराइदिय, दोच्च सत्तराइदिय, तच्च

भगवन्त को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! आपकी आज्ञा होवे तो दो मास की
भिक्षु प्रतिमा अंगीकार कर विचरूं अहो देवानुप्रिय ' जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो विलम्ब मत
करो तब सहर्ष आज्ञा लेकर दो मास पर्यंत दो दात आहार की व दो दात पानी की ग्रहण की वैसे ही
तीसरी तीन मास की भिक्षु प्रतिमा में तीन दात आहारकी व तीन दात पानीकी ग्रहण की चार मासकी
चौथी भिक्षु प्रतिमा में चार दात आहार की व चार दात पानी की ग्रहण की वैसेही पांच छ व सात मास
की भिक्षु प्रतिमाओं में पांच, छ व सात मास तक पांच छ व सात दात आहार की व सात दात पानी की

अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव नमसित्ता मासियाभिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ ॥२५॥ तएण से सदए अणगारे मासिय भिक्खुपडिम अहासुत्त, अहाकप्प, अहा-मग्ग अहातच्च, अहासम, सम्म काएण फासेइ पालेइ, सामेइ, तीरेइ, पुरेइ, किट्टेइ अणुपालेइ, आणाए आराहेइ, सम्म काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव

हुए तु०तुष्ट जा०यावत् न०नमस्कारकर मा०एकमासकी भि०भिक्षु प्रतिमा उ०अंगीकारकर वि०विचरनेलगे ॥ २५ ॥ से० वह स० स्कंदक अ० अनगार मा० एकमास की भि० भिक्षु प्रतिमा अ० यथासूत्र अ० यथाकल्प अ० यथामार्ग अ० यथातथ्य अ० यथा सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शे पा० पाले सो० समाप्त करे ती० पारपहोंचावे पू० पूर्ण करे कि० कीर्तनकरे अ०पाले आ०आज्ञा से आ० आराधे स० सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शकर जा० यावत् आ० आराधकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त

मा अंगीकार कर विचरने लगे ॥ २५ ॥ तब श्री स्कंदक अनगार जैसी सूत्र में एक मास की भिक्षु प्रतिमा की विधि कही है वैसी भिक्षु प्रतिमा को कल्प अनुसार, मार्ग अनुसार पालने लगे वैसे ही क्षयोपशम भाव से अतिक्रमे नहीं सम्यक् प्रकार से काया से स्पर्शी, विधि से ग्रहण की, बारंबार उपयोग रखकर पाली, पूर्ण की, कीर्ति की, अनुपालना की यावत् आज्ञा पूर्वक आराधी सम्यक् प्रकार काया से स्पर्श कर यावत् आज्ञासे आराध कर जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये, आकर श्रमण

म० महावीर से० तहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भ० भगवन् तु० तुमारी अ० आज्ञामिलते दो० दोमास की भि० भिक्षु प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरने को अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंधकरो ए० ऐसे दो० दोमास की ति० तीनमास की च० चार मास की प० पांच छ० छ स० सात

समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समणं भगवं जाव नमंसित्ता, एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया। मापडिबंध तंचेव एवं दोमासियं, तिमासियं, चाउम्मासियं, पंचछसत्त पढमं सत्तराइंदियं, दोच्चं सत्तराइंदियं, तच्चं

भगवन्त को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! आपकी आज्ञा होवे तो दो मास की भिक्षु प्रतिमा अंगीकार कर विचरूं अहो देवानुप्रिय ! जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो विलम्ब मत करो तब सहर्ष आज्ञा लेकर दो मास पर्यंत दो दात आहार की व दो दात पानी की ग्रहण की वैसे ही तीसरी तीन मास की भिक्षु प्रतिमा में तीन दात आहारकी व तीन दात पानीकी ग्रहण की चार मासकी चौथी भिक्षु प्रतिमा में चार दात आहार की व चार दात पानी की ग्रहण की वैसेही पांच छ व सात मास की भिक्षु प्रतिमाओं में पांच, छ व सात मास तक पांच छ व सात दात आहार की व सात दात पानी की

हुए तु० तुष्ट आ० यावत् न० नमस्कारकर मा० एकमासकी भि० भिक्षु प्रतिमा उ० अंगीकारकर वि० विचरनेलगे ॥ २५ ॥ से० वह ख० खंदक अ० अनगार मा० एकमास की भि० भिक्षु प्रतिमा अ० यथासूत्र अ० यथाकल्प अ० यथामार्ग अ० यथातथ्य अ० यथा सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शे पा० पाले सो० सभाग करे ती० पारपाले पू० पूर्ण करे कि० कीर्तनकरे अ० पाले आ० आज्ञा से आ० आराधे स० सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शकर जा० यावत् आ० आराधकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त

अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव नमसित्ता मासियंभिक्खुपडिम उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥२५॥ तएणं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं, अहाकप्पं, अहामग्गं अहातच्चं, अहासम्मं, सम्मं काएणं फासेइ पालेइ, सोभेइ, तीरेइ, पुरेइ, किट्टेइ अणुपालेइ, आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव

या अंगीकार कर विचरने लगे ॥ २५ ॥ तब श्री खंदक अनगार जैसी सूत्र में एक मास की भिक्षु प्रतिमा की विधि कही है वैसी भिक्षु प्रतिमा को कल्प अनुसार, मार्ग अनुसार पालने लगे वैसे ही क्षयोपशम भाव से अतिक्रमे नहीं सम्यक् प्रकार से काया से स्पर्शी, विधि से ग्रहण की, वारवार उपयोग रखकर पाली, पूर्ण की, कीर्ति की, अनुपालना की यावत् आज्ञा पूर्वक आराधी सम्यक् प्रकार काया से स्पर्श कर यावत् आज्ञासे आराध कर जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये, आकर श्रमण

मास अट्ठावीसइम अट्ठवीसइमेण, चोद्दसममास तीसइम तीसइमेण, पन्नरसम मास बत्तीसइम बत्तीसइमेण, सोलसममास चउत्तीसइम चउत्तीसइमेण, अनिक्खित्तेण तवो कम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे, आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेण, ॥ तएणसे खदए अणगारे गुणरयण सवच्छर तवोकम्म अहासुत्त, अहाकप्प, जाव आराहित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ

उपवास से बा० बारवा मास में छ० बारउपवास से ते० तेरहमास में अ० तेरह उपवास से चो० चौदह मास में ती० चौदह उपवास से प० पन्नरह मास प० पन्नरह उपवास सो० सोलह मास में च० सोलह उपवास अ० निरतर त० तप कर्म से दि० दिनको ठा० स्थान उ० उत्कट सू० सूर्य की सन्मुख आ० आतापना भू० भूमि में आ० आतापना लेते हुवे र० रात्रि में वी० वीरासन अ० नग्न त० तब ख० खंदक अ० अनगार गु० गणरत्न स० सवत्सर त० तप कर्म अ० जैसा सुना अ० कल्प अनुसार जा० यावत् आ० आराध कर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर ते० वहा उ० आय उ० आकर व०

करे इस तरह सोलह मास तक आंतरा रहित तप करे दिन को उत्कट आसन कर, सूर्य की आतापना लेवे और रात्रि में वीरासन से वस्त्र रहित रहे इस तरह सूत्र व कल्प अनुसार गुणरत्न सवत्सर तप कर्म को आराधकर जहां श्रमण भगवन्त महावीर थे वहा आये वहा आकर भगवन्त महावीर

दिवस में ठा० उत्कट आसन मे सू० सूर्याभिमुख आ० आताप भू० भूमि में आ० आतापनालेते र० रात्रि को वी० वीरासन से अ० वस्त्र रहित त० तीसरा मा० मास में अ० अष्ट अ० अष्ट से च० चौथा मास मे द० चार उपवास से प० पांचवे मास में पा० पांच उपवास से छ० छठा मास में चो० छ उप वास से सा० सातवा मास में सो० सात उपवास से अ० आठवा मास में अ० आठ उपवास से न० नवमा मास में वी० नव उपवास स द० दसवा मास में वा० दशउपवास से प० इग्यारह मास में च इग्यारह

आयावणभूमीए आयावेमाण रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय, एवं तच्च मास अट्ठम अट्ठमेण, चउत्थ मास दसमदसमेणं, पचममास बारसम बारसमेण छट्ठ मास चोद्दसम चोद्दसमेण, सत्तममास सोलसम सोलसमेण, अट्ठममास अट्ठारसम अट्ठारसमेण, नवममास बीसइम बीसइमेण, दसममास बावीसइम बावीसइमेण, एक्कारसम मास चउवीसइम चउवीसइमेण, बारसम मास छव्वीसइम छव्वीसइमेण, तेरसम

दूसरे महिने में दो दो उपवास का पारना, तीसरे महिने में तीन तीन उपवास, चौथे मास में चार चार उपवास, पांचवे में पांच पांच, छठे में छ छ उपवास, सातवेमें सात सात उपवास, आठवे में आठ आठ उपवास, नववे में नव नव उपवास, दशवेमें दश दश उपवास, अग्यारहवे में अग्यारह २ बारवे में बारह २ तेरवे में तेरह २, चौदवे में चौदह २, पन्दरवे में पन्दरह २, और सोलहवे मास में सोलह २ उपवासका पारणा

आस्थि च० चमडा से अ० षधा हुवा कि० कडकडाटभूत कि० कृश ध० नाडीयों की स० सनती जा० हुइ हो० थी ॥ २७ ॥ जी० जीव से ग० जाता है चि० बैठता है भा० भाषा भा० बोलकर गि० ग्लानी पाता है भा० भाषा भा० बोलते गि० ग्लानि पाता है भा० भाषा भा० बोलूंगा गि० ग्लानि पाता है से० अथ ज० जैसे क० काष्टका स० गाडा प० पत्र का स० शकट प० पत्र ति० तील भ० भाजन का स० शकट ए० एरंड काष्ट का स० शकट इ० कोयला स० शकट उ० उष्ण दि० दिनको सु०

तवोकम्मेण, सुक्के, लुक्खे निम्मसे आट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियभूए, किसे, धमणिसतए जाए यावि होत्था॥२७॥जीव जीवेण गच्छइ,जीव जीवेण चिट्ठइ,भास भासित्ता गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ भास भासिस्सामीति गिलाइ।से जहा नामए कट्ठसगडियाइवा,पत्तस गडियाइवा, पत्तातिलभडगसगडियाइवा,एरंडकट्ठ सगडियाइवा, इंगालसगडियाइवा, उण्हे

महानुभाग तप कर्म से शुष्क, रूक्ष, मांस विना का आस्थि व चर्म से षधाया हुवा, बैठते खडे होते कटकडाट होवे वैसे, कृश, नाडियोंकी कीलियोंवाला होगया ॥२७॥ उन का शरीर इतना दुर्बल होगया कि जीव मात्र जीवकी सहायता से जाता है जीव जीव की सहायता से खडा रहता है, भाषा बोलकर ग्लानि होती, भाषा बोलते ग्लानि होती, और भाषा बोलनेका विचार आते ग्लानि होती जैसे कोई काष्ट से भरा हुवा गाडा, पलाश पत्र से भरा हुवा गाडा, पत्र सहित तील का भरा हुवा गाडा, मृत्तिका के भाजन से भरा हुवा गाडा, एरंड की

षष्ठ च० चार छ० छ अ० आठ द० दश दु० बारह मा० अर्ध मास मा० मासखमण वि० विचित्र त० तप कर्म से अ० आत्मा को भा० विचारते वि० विचरते हैं ॥२६॥ त० तब खं० खंदक ते० उस उ० उदार वि० विपुल प० गुरु की आज्ञा से कराया हुवा (प० प्रमाद रहित कराया) प० मान पूर्वक रहा हुवा क० कल्याण कारी सि० मोक्ष के हेतु भूत ध० धर्म धनशाला मं० मंगल स० सुशोभित उ० प्रतिदिन वृद्धि को मास उ० उत्तम उ० उदार म० बहुत प्रभाव वाला त० तप कर्म से सु० शुष्क लु० रूक्ष नि० मांस रहित अ०

ट्टचागच्छइत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमसइ बहुहिं चउत्थ छट्ठट्ठमदसम दु-वालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ तएणं सेखंदए अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गाहिएणं कल्लाणेणं, सिवेणं, धन्नेणं, मंगल्लेणं, सस्सिरीएणं, उदग्गेणं, उदत्तेणं, उत्तमेणं उदारेणं, महाणुभागेणं,

स्वामी को वंदना नमस्कार कर एक उपवास, दो उपवास, तीन उपवास यावत् पंदरह उपवास, मास खमण ऐसे विविध प्रकार के तप करते हुवे खंदक अनगार विचरने लगे ॥२६॥ उस समय में खंदक अणगार आशंसा रहित सो उदार, प्रधान, विपुल, गुरुका आज्ञा से कराया हुवा, बहुत मान पूर्वक कराया हुवा, कल्याण-कारी, मंगलकारी, धर्म धन करनेवाला, सुशोभनिक, उत्तरोत्तर वृद्धि करनेवाला, उत्तम, उदार प

अस्थि च० चमडा से अ० बधा हुवा कि० कडकडाटभूत कि० कृश ध० नाडीयों की स० सतती जा० हुइ हो० थी ॥ २७ ॥ जी० जीव से ग० जाता है चि० बैठता है भा० भापा भा० बोलकर गि० ग्लानी पाता है भा० भापा भा० बोलते गि० ग्लानि पाता है भा० भापा भा० बोलूगा गि० ग्लानि पाता है से० अथ ज० जैसे क० काष्टका स० गाडा प० पत्र का स० शकट प० पत्र ति० तील म० भाजन का स० शकट ए० एरड काष्ट का स० शकट इ० कोयला स० शकट उ० उष्ण दि० दिनको सु०

तवोकम्मेणं, सुक्के, लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियभूए, किसे, धमाणिसतए जाए यावि होत्था॥२७॥जीव जावेण गच्छइ,जीव जीवेण चिट्ठइ भास भासित्ता गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ भास भासिस्सामीति गिलाइ।से जहा नामए कट्ठसगडियाइवा,पत्तस गडियाइवा, पत्ततिलभडगसगडियाइवा,एरडकट्ठ सगडियाइवा, इगालसगडियाइवा, उण्हे

महानुभाग तप कर्म से शुष्क, रूक्ष, मास विना का अस्थि व चर्म से बधाया हुवा, बैठते खडे होते कटकडाट होवे वैसे, कृश, नाडियोंकी कीलियोंवाला होगया ॥२७॥ उन का शरीर इतना दुर्बल होगया कि जीव मात्र जीवकी सहायता से जाता है जीव जीव की सहायता से खडा रहता है, भापा बोलकर ग्लानि होती, भापा बोलते ग्लानि होती, और भापा बोलनेका विचार आते ग्लानि होती जैसे कोई काष्ट से भरा हुवा गाडा, पलाश पत्र से भरा हुवा गाडा, पत्र सहित तील का भरा हुवा गाडा, मृत्तिका के भाजन मे भरा हुवा गाडा, एरंड की

मुकाया हुआ स० शब्द सहित ग० जाता है स० शब्द सहित चि० खडा रहता है ए० ऐसे ख० खदक अ० अनगार स० शब्द सहित ग० जाता है स० शब्द सहित चि० बैठता है उ० पुष्ट त० तप से अ० दुर्बल मं० मांस मो० रुधिर से हु० अग्नि समान भ० भस्म में प०छुपाहुवा त० तपके ते० तेजसे त० तपतेज की सी० लक्ष्मी से अ० बहुत उ० शोभते चि० रहता है ॥ २८ ते० उसकाल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर में स० समोसरण जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगई ॥ २९ ॥ त० तब त० उस

दिण्णा सुक्कासमाणीससद्दगच्छइ, ससद्दचिट्ठइ, एवामेव खदए अणगारे ससद्दगच्छइ ससद्दचिट्ठइ । उवाचित तवेण अवाचिए मससोणिएण हुयासणेवि भासरासि पडिच्छण्णे, तवेण तेएण, तवतेय सिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ ॥ २८ ॥ तेण कालेण तेण समएण रायागिहेनयरे समोसरण जाव परिसा पडिगया ॥ २९॥ तएण

लकडी से भरा हुवा गाडा, और कोयले से भरा हुवा गाडा है उस में रही हुई वस्तु सूर्य की ऊष्णता से जब सुक जाती है और उस समय जब गाडा चलता है तब उस में जैसे कडकडाट शब्द नीकलता है ऐसा ही शब्द खंदक अनगार के रक्तमांस विना के शरीरमें से नीकलता है खदक अनगार के शरीर में रक्त मांस नहीं होने पर तपरूप तेज से उन का शरीर भस्म में ढकी हुई अग्नि समान तेजस्वी दीखता है ॥२८॥ उस काल उस समयमें श्री महावीर स्वामी राजगृह नगरमें पधारे और परिषदा वंदन करने को आई और धर्मोपदे

ख० खंदक अ० अनगार को अ० अन्यदा क० कदापि पु० पूर्व रात्रिके का० काल में ध० धर्म जा० जागरणा जा० करते इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय चि० चिन्तवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे ख० निश्चय अ० मैं इ० इस उ० उदार जा० यावत् कि० कृश ध० नाडियों की सं० सतती जा० यावत् जी० जीव जी० जीव मे ग० जाता हूं चि० खडा रहता हूं जा० यावत् गि० ग्लानि करता हूं जा० यावत् ए० ऐसे अ० मैंभी स० शब्द सहित ग० जाता हूं चि० खडा रहता हूं

तस्स खदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल समयसि धम्म जागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जेत्था, एव खलु अह इमेण एयारूवेण उरालेण जाव किसे धमाणिसतए जाव जीव जीवेण गच्छामि जीव जीवेण चिट्ठामि, जाव गिलामि एवामेव अहपि ससद्दगच्छामि, ससद्दचिट्ठामि त अत्थि तामे उट्ठाण

सुनकर पीछी गइ ॥ २९ ॥ उस समय में एकदा मध्यरात्रि में धर्म जागरणा करते स्वंदक अनगार को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिंतवन उत्पन्न हुवा कि ऐसा उदार व प्रधान तपकर्म से मैं कृश बन गया हूं मेरी सब नाडियों दीख रही है, शरीर से मुझे कुच्छ भी होता नहीं है, हलन चलनादि क्रियाओं जो होती है वे सब जीव से होती है, यावत् भाषा बोलते भी मैं खेदित होता हूं, और काष्ट का गाडा यावत्

स० इसलिये अ० है ता० उतने म० मेरे उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम त० इसलिये जा० जहांलग ता० वे मे० मेरे अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम जा० जहांलग मे० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन सु० सुस्वामी वि० विचरते हैं ता० वहांलग मे० मुझे से० श्रेय क० कल पा० प्रकट प० प्रभात में र० रात्रि को कु० विकशित उ० उत्पल क० हरिण के नेत्र को० कोमल उ० खुले

अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए कम्मेनले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे त जाव तामे आत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे जाव मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव तामे सेय कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल कोमलुमिलियमि, अहपडुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे,किंसुय सुयमुह गुजद्ध रागसरिसे,

कोयले का गाडा चलते जैसा शब्द होवे वैसे ही मेरे चलने पर शब्द होता है तथापि मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और जहां लग मेरे में उत्थान, कर्म, बल वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और जहां लग मेरे धर्माचार्य धर्म गुरु, रागद्वेष के जीतनेवाले व सुस्वामी श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी विचर रहे हैं वहां लग विकशित कोमल कमल (हरिण के नेत्र) से उन्मीलित, पांडुर

हुवे अ० अनंतर प० पाण्डुर प० प्रभात में र० रक्त अ० अशोक प० प्रकाश किं० किंशुक सु० शुकमुख गु० गुंजार्ध रा० रग स० सदृश क० कमल का आ० गृह (द्रह) स० नलिनी खंड के० बोधक उ० उदित होते सू० सूर्य स० सहस्र किरणों वाला दि० दिनकर ते० तेजस ज० ज्वलंत स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को अ० आज्ञा दते स० स्वय ५० पांच म० महाव्रत की आ० आराधना कर स० साधु स० साध्वी स खा० क्षमा याचकर त० तथारूप थे० स्थविर क० कृतयोगी की स० साथ वि०

कमालगर सडबोहए उट्ठियमि सूरे सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीर वदित्ता नमसित्ता जाव पज्जुवासेत्ता, समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पचमहव्वयाणि आरोहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सार्द्धं विपुल पव्वय सणिय २ दुरूहित्ता मेहघण सनिगास,

प्रभात में, रक्त वर्णवाले अशोककी प्रभा समान, किंशुक व शुक मुख व गुजार्ध के रंग समान, कमल का आगर सो द्रह में कमलों को विकशित करनेवाला व सहस्र किरणवाला दिनकरभाण सूर्य उदय होते श्री श्रमण भगवन्त को वदना नमस्कार कर श्रमण भगवन्त की आज्ञा मे स्वय पांच व्रत की आराधना करके, गौतम स्वामी प्रमुख सब साधु व चदन बाला प्रमुख सब साध्वीयों की क्षमा याचकर, तथारूप कृत-योगी स्थविर को साथ लेकर, बडा पर्वत पे शनै० २ चढकर, मेघ समान श्याम व देवताओं का सन्निपात

त० इसलिये अ० है ता० उतने म० मेरे उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम त० इसलिये जा० जहांलग ता० वे मे० मेरे अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम जा० जहांलग मे० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन सु० सुस्वामी वि० विचरते हैं ता० वहांलग मे० मुझे से० श्रेय क० कल्ह पा० प्रकट प० प्रभात में र० रात्रि को कु० विकशित उ० उत्पल क० हरिण के नेत्र को० कोमल उ० खुले

कम्मेत्ति वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे त जाव तामे आत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे जाव मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव तामे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल कोमलुमिलियमि, अहपडुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे,किंसुय सुयमुह गुजद्ध रागसरिसे,

कोयले का गाडा चलते जैसा शब्द होवे वैसे ही मेरे चलने पर शब्द होता है तथापि मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और जहां लग मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और जहां लग मेरे धर्माचार्य धर्म गुरु, रागद्वेष के जीतनेवाले व सुस्वामी श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी विचर रहे हैं वहां लग विकशित कोमल कमल (हरिण के नेत्र) मे उन्मीलित, पांडुर

इ० य ए० ऐसा अ० अभ्यवसाय च० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे अ० मैं इ० इस ए० ऐसा उ० उदार वि० विपुल जा० यावत् का० काल को अ० नहीं वाच्छते वि० विचरते को शि० ऐसा क० करके ए० ऐसा स० विचारकरके क० कल प० प्रकट प० प्रभात में जा० यावत् ज० ज्वलत जे० जहां म० मेरी अ० समीप ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया हुवा है से० अथ णू० शंकादर्शी ख० खंदक

तत्र खदया ! पुव्वरत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एव खलु अहइमेण एयारूवेण उरालेण विउलेण तचेव जाव काल अणवकख-माणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ २ त्ता, कल्ल पाउप्पभायाए जाव जलते जेणेव ममअतिए तगेव हव्वमागए ॥ सेणूण खदया ! अट्ठेसमट्ठे ? हताअत्थि

गार को ऐसा बोले की अहो स्कदक ! मध्य रात्रि में धर्म जागरणा करते तुम को ऐसा अध्यवसाय यावत् संकल्प हुवा कि मेरा शरीर क्षीण होगया है, यावत् मेरी सब नाडियों दीखती है, परंतु उत्थानादि होने से प्रभात में मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जाकर वदना नमस्कार कर काल की वाच्छा नहीं करता हुवा संलेखना करना मुझे श्रेय है और ऐसा विचार करके सूर्य का उदय होते ही तुम मेरी पास आये हो अहो खदक ! क्या यह वात सत्य है ? हां, भगवन् ! यह बात सत्य है अहो देवानु-

वडा प० पर्वत स० झने द० चढकर मे० मेघपन स० समान दे०देव सन्निपात पु० पृथ्वी शिलापट प० देख कर द० दर्भ का स० सथारा म० विछाकर द० दर्भके स० सथारेपर रहाहुवा स० सलेखना को झू० सेवा मे झू० सेवित म० भक्त पानका प० प्रत्याख्यान करन वाला पा० पादोपगमन का का० काल अ० नहीं वांछता वि० विचरने का तं० ऐसा क० करना ॥ ३० ॥ ए० ऐसा स० विचारता है से० विचारकर क० कल प० प्रगट प० प्रभात में र० रात्रि को जा० यावत ज० ज्वलंत जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ ३१ ॥ खदकादि त० तुम को णू० श्रकादर्शी पु० पूर्वरात्रि में अ० अरक्त जा० यावत जा० जान

देवसन्निवाय, पुढविसिलापट्टय पडिलेहेत्ता, दब्भ सथारय सथरित्ता, दब्भ सथारो-गयस्स सलेहणा झूसणा झूसियस्स, भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु ॥ ३० ॥ एव सपेहेइ एव सपेहेइत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते जेणेव समणे भगव महावीरे जाव पज्जुवासइ ॥ ३१ ॥ खदयादि समणे भगव महावीरे खदय अणगार एव वयासी सेणूण

होने स सुदर ऐसी शिलापट को देखकर दर्भ का सथारा बिछाकर दर्भ सथारा में रहा हुवा सलेखना से अपनी आत्मा को कर्म स निर्मल बना कर व भक्त पान का प्रत्याख्यान कर काल को नहीं वांछता हुवा विचरना मुझे श्रेय है ॥ ३० ॥ ऐसा विचार करके प्रभात होते जहां श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आकर वदना नमस्कार यावत पर्युपासना की ॥ ३१ ॥ श्रमण भगवत महावीर स्वदक अन

इ० य ए० ऐसा अ० अध्यवसाय च० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे अ० मैं इ० इस ए० ऐसा उ० उदार वि० विपुल जा० यावत् का० काल को अ० नहीं वाञ्छते वि० विचरते को सि० ऐसा क० करके ए० ऐसा स० विचारकरके क० कल प० प्रकट प० प्रभात में जा० यावत् ज० ज्वलंत जे० जहां म० मैं अ० समीप ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया हुवा है से० अथ णू० शकादर्शी खं० खंदक

तत्र खदया ! पुव्वरत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एव खलु अहइमेण एयारूवेण उरालेण विउलेण तचेव जाव काल अणवकख-माणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु, एव सपेहइ २ त्ता, कल्ल पाउप्पभायाए जाव जलते जेणव ममअतिए तणेव हव्वमागए ॥ सेणूण खदया ! अट्ठेसमट्ठे ? हताअत्थि

गार को ऐसा बोले की अहो स्कदक ! मध्य रात्रि में धर्म जागरणा करते तुम को ऐसा अध्यवसाय यावत् संकल्प हुवा कि मेरा शरीर क्षीण होगया है, यावत् मेरी सब नाडियों दीखती है, परंतु उत्थानादि होने से प्रभात में मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जाकर वंदना नमस्कार कर काल की वांच्छा नहीं करता हुवा संलेखना करना मुझे श्रेय है और ऐसा विचार करके सूर्य का उदय होते ही तुम मेरी पास आये हो अहो स्कदक ! क्या यह बात सत्य है ? हां, भगवन् ! यह बात सत्य है अहो देवानु-

इत भ० भगवन्त जा० यावत् सं० प्राप्त न० नमस्कार होवे स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को जा० यावत् स० प्राप्त होने का का० कामी को व० वदना करता हू भ० भगवन्त को त० वहां रहे हुवे इ० यहां रहाहुवा पा० देखो मे० मुझे भ० भगवन्त त० वहा रहेहुवे इ० यहां रहाहुवा ए० ऐसा बोले पु० पहिले म० मैंने स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० समीप स० सब पा० प्राणातिपात प० प्रत्याख्यान जा० जीवन पर्यंत मि० मिथ्यादर्शन शल्य प० प्रत्याख्यान इ० अभी स० श्रमण भ०

भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वदामिण भगवत तत्थगत इहगओ पासउ मेसे भयव तत्थगए इहगयति त्तिकट्टु वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता एव वयासी पुव्विपि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव मिच्छादसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए इदाणपि

श्रमण भगवत को वदना नमस्कार करता हू क्यों कि वहां रहे हुवे भी भगवन्त मुझे यहां पर देख सकते हैं इस तरह वदना नमस्कार कर के एसा बोले की मैंने जाव जीव तक भगवत श्री महावीर स्वामी की पास से प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान किया है और फीर भी मैं महावीर स्वामी की पास प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्यका प्रत्याख्यान करता हू अशन, पान, खादिम व

र्थ

भगवन्त म० महावीर की अ० समीप स० सव पा० प्राणातिपात का प० प्रत्याख्यान करता हू जा० जीवन पर्यंत जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन शल्य का प० प्रत्याख्यान करता हू स० सव अ० अशन पा०पान खा०खादिम सा०स्वादिम च०चार प्रकार का आ०आहार का प०प्रत्याख्यान करता हू ज०जो इ० यह स० शरीर इ० इष्ट क० कान्त पि० प्रिय जा० यावत् फु० स्पर्शा ति० ऐसा क० करके ए० इसे भी च० चरिम उ० उश्वास नि० निश्वास से वो० त्यजता ह स० सलेखना की झू० सेवाते झू० सेवित भ० भक्त पा० पान प० प्रत्याख्यान कराया हुवा पा० पादोपगम का० काल को अ० नहीं वांच्छता हुवा

यण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जाव मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्व असणपाणखाइमसाइम चउव्विहपि आहार पच्चक्खामि जावज्जीवाए, ज पिय इम सरीर इट्ठ कत पिय जाव फुसंतु त्तिकट्टु, एयपिण चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु सलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपाण पडियाइक्खिए पाओवगए काल अणवकखमाणे विहरइ

स्वादिम ऐसे चारों आहार का मैं प्रत्याख्यान करता हू इष्टकारी, कान्तकारी, और प्रियकारी ऐसा जो मेरा शरीर है उसे जीवन पर्यंत त्यजता हू और सलेखना से भक्तपान का प्रत्याख्यान करता हुवा व काल को नहीं वांच्छता हुवा विचरता हूं ॥ ३३ ॥ उस समय में खन्दक अनगारने श्री श्रमण

वि० विचरे ॥ २३ ॥ त० तब खं० खंदक अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के त० तथारूप थे० स्थविर की अं० पास सा० सामायिकादि ए० अग्यारह अं० अंग अ० अध्ययन कर ब० बहुत प० पूर्ण दु० बारह वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन से छे० छेदकर आ० आलोचते प० प्रतिक्रमण करते स० समाधि प्राप्त आ० अनुक्रम से का० कालको पहुंचे ॥ २४ ॥ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त खं० खंदक अ० अनगार को का० काल को प्राप्त जा० जानकर प० परिनिर्वाणिक

॥२३॥ तएणं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहु पडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ॥ २४ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता, परिनिव्वाणवत्तियं काउ-

भगवन्त महावीर स्वामी के तथारूप स्थविर की पास सामायिकादि छ आवश्यक व अग्यारह अंग का अध्ययन किया और बारह वर्ष तक साधुपना पालकर एक मास की संलेखना सहित आत्मा को झूसकर साठ भक्त अनशन करके आलोचना प्रतिक्रमण करते हुवे अनुक्रम से समाधि सहित काल को प्राप्त हुवे

का० कायोत्सर्ग क० करे प० पात्र ची० उपकरन गि० ग्रहण करे वि० धीरे प० पर्वत से स० शनैः २ प० उतरकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर व० बोले दे० देवानुप्रिय का अ० अंतेवासी ख० खंदक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रक प० प्रकृति उ० उपशांत प० पतला को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ मि० मृदु म० मार्दव स० युक्त अ० अलीन भ० भद्रक वि० विनीत से० वह दे० देवानुप्रिय से

सग्गं करेइ, पत्तचीवराणि गिण्हति, विपुलाओ पव्वयाओ सणियं २ पच्चोरुहति पच्चोरुहइत्ता जेणेवसमणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु-देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए णामं अणगारे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइ पयणु कोहमाण माया लोभे, मिउ मद्दव संपण्णे, अल्लीणे, भद्दए, विणीए सेणं देवाणुप्पिएहिं

॥ ३४ ॥ उस समय में उन की पास रहे हुवे स्थविर भगवन्त स्कंदक अनगार को काल प्राप्त हुए जानकर निर्वाण प्रत्ययिक[1] कायोत्सर्ग करके व स्कंदक अनगार के पात्र वस्त्रादि लेकर उस पर्वत से उतरे उतरकर श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास आये और भगवन्त को वंदना नमस्कार करके ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! आपका अंतेवासी भद्रिक प्रकृतिवाले, उपशान्त प्रकृतिवाले, स्वभाव से क्रोधादि को

१ साधु निर्वाण हुवे पीछे कायोत्सर्ग करना सो

वि० विचरे ॥ ३३ ॥ त० तब स्खं० स्कंदक अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के त० तथारूप थे० स्थविर की अं० पास सा० सामायिकादि ए० अग्यारह अं० अंग अ० अध्ययन कर ब० बहुत प० पूर्ण दु० बारह वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन से छे० छेदकर आ० आलोचते प० प्रतिक्रमण करते स० समाधि प्राप्त आ० अनुक्रम से का० कालको पहुंचे ॥ ३४ ॥ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त खं० स्कंदक अ० अनगार को का० काल को प्राप्त जा० जानकर प० परिनिर्वार्तिक

॥३३॥ तएणं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहु पडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्ण परियाग पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए काल गए ॥ ३४ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो खंदय अणगार कालगय जाणित्ता, परिनिव्वाणवत्तिय काउ-

भगवन्त महावीर स्वामी के तथारूप स्थविर की पास सामायिकादि छ आवश्यक व अग्यारह अंग का अध्ययन किया और बारह वर्ष तक साधुपना पालकर एक मास की संलेखना सहित आत्मा को झूसकर साठ भक्त अनशन करके आलोचना प्रतिक्रमण करते हुवे अनुक्रम से समाधि सहित काल को प्राप्त हुवे

गये क० कहाँ उ० उत्पन्न हुवे गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम को व० बोले गो० गौतम म० मेरा अ० अंतेवासी ख० खदक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रक जा० यावत् म० मेरी अ० आज्ञामिलते स० स्वय प० पांच महाव्रत आ० आराधकर स० सर्व अ० अव-शेष ने० जानना जा० यावत् आ० आलोचकर प० प्रतिक्रमणकर स० समाधि को प्राप्त का० काल क अवसर में का० काल करके अ० अच्युत दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवे त० तहा अ० कितनेक दे० देवताकी बा० बावीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ख० खदक दे० देव

समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी एव खलु गोयमा ! मम अंतेवासी खदए णाम अणगारे पगइभद्दए जाव सेण मए अब्भणुणाए समाणे सयमेव पचमहव्वयाइ आरा-हेत्ता तचेव सव्व अवसेसय नेयव्व जाव आलोइय पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे तत्थण अत्थेगइयाण देवाण बावीस सागरोवमाइ

देवानुप्रिय ! आपका अंतेवासी खदक अनगार काल कर कहां गये, और कहां उत्पन्न हुवे ? अहो गौतम ! मेरा अंतेवासी खदक नामक अनगार मेरी आज्ञा से पांच महाव्रत की आराधना यावत् सलेखनादि कर आलोचना प्रतिक्रम सहित काल करके अच्युत देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुवे वहांपर कितनेक देवताओं की बावीस सागरोपम की स्थिति कही उस में खंदक देवता की भी बावीस सागरोपम की

अ० आज्ञा मिलते स० स्वत प० पांच महाव्रत आ० आराधकर स० साधु स० साध्वियों को खा० क्षमाकर अ० हमारी स० साथ वि० वडा प० पर्वत को नि० निरविक्षेप जा० यावत् आ० अनुक्रम से का० काल को प्राप्त हुवे इ० यह आ० आचार भ० भंडोपकरण ॥ ३८ ॥ भं० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को व० वंदनाकर न० नमस्कार कर व० बोले दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी ख० खंदक अ० अनगार का० काल के अवसर में का० काल कर के क० कहां ग०

अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरोहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं तंचेव निरवसेसं जाव आणुपुव्वीए कालगए। इमेयसे आयारभंडए ॥ ३५ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदएणामं, अणगारे कालमासे कालंकिच्चा कहिं गए कहिं उववण्णे ? गोयमादि,

पनन्या करनेवाले, मृदुता को धारन करनेवाले, अलीन, भद्रिक व विनीत खंदक अनगार आपकी आज्ञा मीलने से पांच महाव्रत की आराधना कर और साधु साध्वी को खमाकर हमारी साथ पर्वत पर आये थे वहां संलेखनादि करके काल को प्राप्त हुवे हैं अहो भगवन्! इन के यह भंडोपकरण हैं ॥ ३८ ॥ उस समय में श्री गौतम स्वामी श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके बोले कि अहो

क० कितनी भं० भगवन् स० समुद्घात प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात स० समुद्घात प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे वे० वेदना समुद्घात ए० ऐसे स० समुद्घात प० पद छ० छद्मस्थ समुद्घात व० वर्जकर भा० कहना जा० यावत् वे० वैमानिक क० कषाय समुद्घात अ० अल्पाबहुत ॥ १ ॥ अ० अनगार

कइण भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तजहा वयणा समुग्घाए, एवं समुग्घायपय, छउमात्थिय समुग्घाय वज्ज भाणियव्व, जाव वेमाणियाण, कसाय समुग्घाया अप्पाबहुय ॥ १ ॥ अणगारस्सणं भंते ! भावि-

पहिले उद्देशे के अंत में किस मरण से मरनेवाला जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है ऐसा मरण का अधिकार कहा वह मरण मारणान्तिक समुद्घात से होता है इसलिये मरण समुद्घात का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! समुद्घात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! समुद्घात सात प्रकार की कही है १ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणान्तिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात ५ तेजस समुद्घात ६ आहारक समुद्घात और ७ केवली समुद्घात इन सातों समुद्घात में शरीर से जीव प्रदेश का निर्गम होता है कवली समुद्घात करते आठ समय लगता है और अन्य समुद्घात में अंतर्मुहूर्त काल व्यतीत होता है नरक व वायुकाय में चार समुद्घात चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय में तीन समुद्घात, देवता व तिर्यंच पंचेन्द्रिय में पांच समुद्घात, और मनुष्य व समुच्चय जीव में सात

की या० बावीस सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ ३६ ॥ भ० भगवन् ख० खदक दे० देवता में दे० देवलोक में से आ० आयुष्य क्षयसे भ० भवक्षय से अ० पीछे च० चवकर क० कहां ग० जावेंगे क०कहां उ०उत्पन्नहोंगे गो० गौतम म० महाविदेह में सि०सिझेगा बु०बुझेगा मु०मुक्तहोगा निर्वाण पामेगा स० सब दु० दुःखों का अं० अंतकरेगा ॥ २ ॥ १ ॥ + + +

ठिई पण्णत्ता तत्थण खदयस्सवि देवस्स बावीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ३६ ॥ सेणं भंते! खदए देवत्ताओ देवलोयाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएणं अणतर चयं चइत्ता कहिं गमिहिति, कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे सिज्झिहिति, बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति, सव्वदुक्खाण मत करिहिति,॥खदओ सम्मत्तो ॥३७॥ बिईय सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥१॥

स्थिति है ॥ ३६ ॥ वहां देवलोक में आयुष्य, भव व स्थिति का क्षय होने से चवकर खदक अनगार कहां उत्पन्न होवेंगे? अहो गौतम! वहां से चवकर महाविदेह क्षेत्र में उत्तम कुल में जन्म लेकर वैराग्य को प्राप्त होकर सिझेंगे, बुझेंगे, मुक्त होवेंगे, निर्वाण को प्राप्त करेंगे यावत् सब दुःख का अंत करेंगे यह खदक जीव का अधिकार समाप्त हुआ यह दूसरा शतकका पहिला उदेशा सम्पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ १ ॥

क• कितनी भं० भगवन् स० समुद्घात प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात स० समुद्घात प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे वे० वेदना समुद्घात ए० ऐसे स० समुद्घात प० पद छ० छद्मस्थ समुद्घात व० वर्जे कर भा० कहना मा० यावत् वे० वैमानिक क• कषाय समुद्घात अ० अल्पाबहुत ॥ १ ॥ अ० अनगार

कइण भते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तजहा वेयणा समुग्घाए, एव समुग्घायपय, छउमात्थिय समुग्घाय वज्ज भाणियव्व, जाव वेमाणियाण, कसाय समुग्घाया अप्पाबहुय ॥ १ ॥ अणगारस्सणं भते ! भावि-

पहिले उद्देशे के अंत में किस मरण से मरनेवाला जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है ऐसा मरण का अधिकार कहा वह मरण मारणान्तिक समुद्घात से होता है इसलिये मरण समुद्घात का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! समुद्घात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! समुद्घात सात प्रकार की कही है १ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणान्तिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात ५ तेजस समुद्घात ६ आहारक समुद्घात और ७ केवली समुद्घात इन सातों समुद्घात में शरीर से जीव प्रदेश का निर्गम होता है केवली समुद्घात करते आठ समय लगता है और अन्य समुद्घात में अंतर्मुहूर्त काल व्यतीत होता है नरक व वायुकाय में चार समुद्घात चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय में तीन समुद्घात, देवता व तिर्यंच पंचेन्द्रिय में पांच समुद्घात, और मनुष्य व समुच्चय जीव में सात

की या० बावीस सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ ३८ ॥ भं० भगवन् खं० खदक दे० देवता में दे० देवलोक में से आ० आयुष्य क्षयसे भ० भवक्षय से अ० पीछे च० चवकर क० कहां ग० जावेंगे क०कहां उ०उत्पन्नहोंगे गो० गौतम म० महाविदेह में सि०सिझेगा बु०बुझेगा मु०मुक्तहोगा निर्वाण पावेगा स० सब दु० दुःखों का अं० अंतकरेगा ॥ २ ॥ १ ॥ + + +

ठिई पण्णत्ता तत्थण खदयस्सवि देवस्स बावीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ३६ ॥ सेणं भंते ! खदए देवत्ताओ देवलोयाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिति, कहिं उववज्जिहिति? गोयमा ! महाविदहे सिज्झिहिति, बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति, सव्वदुक्खाण मंत करिहिति,॥खदओ सम्मत्तो ॥३७॥ बिईय सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥१॥

स्थिति है ॥ ३६ ॥ वहां देवलोक में आयुष्य, भव व स्थिति का क्षय होने से चवकर खदक अनगार कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! वहां से चवकर महाविदेह क्षेत्र में उत्तम कुल में जन्म लेकर वैराग्य को प्राप्त होकर सिझेंगे, बुझेंगे, मुक्त होवेंगे, निर्वाण को प्राप्त करेंगे यावत् सब दुःख का अंत करेंगे यह खदक जीव का अधिकार समाप्त हुवा यह दूसरा शतकका पहिला उद्देशा सम्पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ १ ॥

दूसरा उ० उद्देशा णे० जानना पु० पृथ्वी अ० अवगाहकर कर नि० नरकावास सं० संस्थान बा० जाडपना वि० चौडा प० परिधि व० वर्ण ग० गंध फा स्पर्श कि० क्या स० सर्व पा प्राणी उ० उत्पन्न

ऽबितीओ उद्देसो सो नेयव्वो ॥ गाहा ॥ पुढवी ओगाहित्ता निरयासठाणमेव बाहल्ल विक्खंभ परिक्खेवो, वण्णो गंधोय फासोय ॥ किं सव्वपाणा उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो पुढवी उद्देसो ॥ बीईयसए तइओ उद्देसो

लाख नरकावास रहे हुवे हैं ऐसे ही सब सातों पृथ्वी का कथन करना जो आवलिका (पंक्ति) बंध नरकावासे हैं वे वर्तुलाकार, त्र्यस, चउरस हैं और दूसरे विविध प्रकार के हैं नरक का जाडपना तीन हजार योजनका है नीचे एक हजार योजन का घन है बीच में एक हजार योजन का सुसिर है, और उपर एक हजार योजन का संकुचित है नरक का विष्कंभपना संख्यात योजनवाले नरकावास का संख्यात योजन का है, और परिधि भी संख्यात योजन की है जो असंख्यात योजन के हैं उन का विस्तार व परिधि असंख्यात योजन की है नरक के वर्ण, गंध रस व स्पर्श अनिष्ट है इस का सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र के नरक नामक द्वितीय उद्देशे में कहा है वैसा जानना रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में क्या सब प्राणी उत्पन्न हुवे हैं ? हां गौतम ! उन नरकावासों में सब प्राणी एकवार नहीं परंतु अनेक वार

को भं० भगवन् भा० भावितात्मा के० केवली समुद्घात जा० यावत् सा० शाश्वत अ० अनागतकाल चि० रहे स० समुद्घात प० पद ने० जानना ॥ २ ॥ २ ॥ * *
क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम जी० जीवाभिगम ने० नारकी को चि०

यप्पणो केवली समुग्घाय जाव सासय मणागयद्ध चिट्ठति, समुग्घायपय णेयव्व ॥ २ ॥ बिईयसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ २ ॥ *

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जीवाभिगमो नेरइयाण जो

समुद्घात इस का सब अधिकार कषाय समुद्घात की अल्पाबहुत्व तक पन्नवणा सूत्र के समुद्घात पद जैसे कहना ॥ १ ॥ भवितात्मा अनगार को केवली समुद्घात यावत् शाश्वत अनागत काल तक रहे यह समुद्घात पद जैसे जानना यह दूसरा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ २ ॥ *

गत उद्देशे में समुद्घात का कथन किया जो जीव मारणान्तिक-समुद्घात करता है वह जीव मरकर पृथ्वी में उत्पन्न होता है इसलिये पृथ्वी का अधिकार करते हैं अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही उन के नाम रत्नप्रभा यावत् तमतम प्रभा इन पृथ्वीयों को अवगाह कर कितने दूर नरकावास रहे हैं ? रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार, योजन का पृथ्वी पिंड है उस में उपर नीचे एक २ हजार छोडकर बीच में एक लाख अठ्ठत्तर हजार की पोलार है उस में तीस

दूसरा उ० उद्देशा णे० जानना पु० पृथ्वी अ० अवगाहकर कर नि० नरकावास स० संस्थान बा० जाडपना वि० चौडा प० परिधि व० वर्ण ग० गन्ध फा स्पर्श कि० क्या स० सर्व पा० प्राणी उ० उत्पन्न

"तितीओ उद्देसो सो नेयव्वो ॥ गाहा ॥ पुढवी ओगाहित्ता निरयासठाणमेव बाहल्लं विक्खंभ परिक्खेवो वण्णो गंधोय फासोय ॥ किं सव्वपाणा उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो पुढवी उद्देसो ॥ बीईयसए तइओ उद्देसो

लाख नरकावास रहे हुवे हैं ऐसे ही सब सातों पृथ्वी का कथन करना जो आवलिका (पंक्ति) बध नरकावासे हैं वे वर्तुलाकार, त्र्यस, चउरस हैं और दुसरे विविध प्रकार के हैं नरक का जाडपना तीन हजार योजनका है नीचे एक हजार योजन का घन है मध्य में एक हजार योजन का छुसिर है, और उपर एक हजार योजन का संकुचित है नरक का विष्कंभपना संख्यात योजनवाले नरकावास का संख्यात योजन का है, और परिधि भी संख्यात योजन की है जो असंख्यात योजन के हैं उन का विस्तार व परिधि असंख्यात योजन की है नरक के वर्ण, गंधरस व स्पर्श अनिष्ट है इस का सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र के नरक नामक द्वितीय उद्देशे में कहा है वैसा जानना रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में क्या सब प्राणी उत्पन्न हुवे हैं ? हां गौतम ! उन नरकावासों में सब प्राणी एकबार नहीं परंतु अनेक बार

को भं० भगवन् भा० भावितात्मा के० केवली समुद्घात जा० यावत् सा० शाश्वत अ० अनागतकाल चि० रहे स० समुद्घात प० पद ने० जानना ॥ २ ॥ २ ॥ * * क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम जी० जीवाभिगम ने० नारकी को धि०

यप्पणो केवली समुग्घाय जाव सासय मणागयद्ध चिट्ठति, समुग्घायपय णेयव्व ॥ २ ॥ बिईयसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ २ ॥ *

कइण भंत ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जीवाभिगमो नेरइयाण जो

समुद्घात इस का सब अधिकार कषाय समुद्घात की अल्पाबहुत्व तक पन्नवणा सूत्र के समुद्घात पद जैसे कहना ॥ १ ॥ भवितात्मा अनगार को केवली समुद्घात यावत् शाश्वत अनागत काल तक रहे यह समुद्घात पद जैसे जानना यह दूसरा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ २ ॥ *

गत उद्देशे में समुद्घात का कथन किया जो जीव मारणान्तिक समुद्घात करता है वह जीव मरकर पृथ्वी में उत्पन्न होता है इसलिये पृथ्वी का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही- उन के नाम रत्नप्रभा यावत् तमतम प्रभा इन पृथ्वीयों को अवगाढ कर कितने दूर नरकावास रहे हैं ? रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है उस में उपर नीचे एक २ हजार छोडकर बीच में एक लाख अठत्तर हजार की पोलार है उस में तीस

वन् ए० ऐसा गो० गौतम ज० जो अ० अन्य तीर्थिक ए० ऐसे आ० कहते हैं जा० यावत् इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद जे० जो ए० ऐसे आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हू जा० यावत् प० प्ररूपता हूं नि० निर्ग्रंथ का० काल को प्राप्त हुवे अ० अन्यतर दे० देवलोक में दे०देवपन उ०उत्पन्न भ०होवे म०महार्द्धिक जा०यावत् म०महाशक्तिवंत दु०ऊंचे देवलोक में चि० लंबी स्थिति वाले त० तहां द० देव भ० होवे म० महर्द्धिक जा० यावत् द० दशदिशा

भवन्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेयच, पुरिसवेयच ॥ से कहमेय भंते एवं ? गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवं माइक्खाति जाव इत्थिवेयच पुरिसवेयच, जे ते एवं माहसु मिच्छा ते एवं माहसु ॥ अहं पुण गोयमा ! एवं माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु नियंठे कालगए समाणे अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उव-

तीर्थिक एक समय में एक जीव दो वेद वेदने का बोलते हैं वे मिथ्या हैं अर्थात् उन का कथन असत्य है क्योंकि देवको स्त्रीरूप करने पर भी पुरुषपना होने से पुरुष वेद का ही उदय होता है परंतु स्त्री वेद का उदय नहीं होता है अहो गौतम ! मेरा कथन ऐसा है कि कोई निर्ग्रंथ काल करके किसी महर्द्धिक यावत् महानुभाग बहुत स्थितिवाले ऊपर के देवलोक में देवतापन उत्पन्न हुवा तहां पर वह देव महर्द्धिक,

निर्ग्रंथ का॰काल कियाहुवा दे॰देव हुवे अ स्वत' से॰वह त॰तहां नो॰नहीं अ॰अन्य देव नो॰नहीं अ॰अन्य दे॰ देवकी दे॰ देवीको अ॰ वशकरके प॰ परिचारणा करे णो॰ नहीं अ॰ अपनी दे॰ देवीको अ॰ वश कर के प॰ परिचारणाकरे अ॰ आत्माको वि॰ विकुर्वकर प॰ परिचारणा करे ए॰ एक जी॰ जीव ए॰ एक स॰ समय में दो॰ दोवेद वे॰ वेवे त॰ वह ज॰ जैसे इ॰ स्त्रीवेद पु॰ पुरुष वेद ए॰ ऐसे अ॰ अन्यतीर्थिक की व॰ वक्तव्यता ने॰ जानना जा॰ यावत् इ॰ स्त्रीवेद पु॰ पुरुषवेद से॰ वह क॰ कैसे ए॰ यह भं॰ भग-

देवत्ताएण अप्पाणेण सेण तत्थ णो अण्णदेवे नो अण्णेसिं देवाण देवीओ अभिजुजिय अभिजुजिय परियारेइ णो अप्पणिच्चियाओ देवीओ अभिजुजिय अभिजुजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाण विउव्विय विउव्विय परियारेइ, एगेवियणं जीवे एगेण समएण दो वेदे वेदइ तजहा—इत्थिवेयच, पुरिसवेयच ॥ एव अण्णउत्थिय-

मधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि साधु निर्ग्रंथ पाते स काल कर देव होने पर आत्मा से अन्य देव या अन्य देव की देवियों को आलिंगन कर उन की साथ परिचारणा नहीं करते हैं वैसे ही अपनी देवी की साथ भी परिचारणा नहीं करते हैं परंतु स्वत- के शरीर को वैक्रेय बनाकर उस की साथ परिचारणा करते हैं इस तरह करने से एक ही जीव एक समय में स्त्री वेद व पुरुष वेद ऐसे दो वेद वेदता है अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्य

पुरुष वेद णो० नहीं त० उस समय में इ० स्त्रीवेद वे० वेदे इ० स्त्रीवेद का उ० उदय से नो० नहीं पु० पुरुष वेद वे० वेदे पु० पुरुष वेदका उ० उदय से नो० नहीं इ० स्त्रीवेद वे० वेदे ए० ऐसे ए० एक जीव ए० एक समय में ए० एक वेद वे० वेदे इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद इ० स्त्री इ० स्त्रीवेद का उ० उदय मे पु० पुरुष की प० प्रार्थना करे पु० पुरुष पु० पुरुष वेदका उ० उदय से इ० स्त्रीकी प० प्रार्थना करे दो० दोनों अ० अन्योन्य प० प्रार्थना करे इ० स्त्री पु० पुरुष को पु० पुरुष

पुरिसवेदवा ज समय इत्थिवेद वेदेइ णो त समय पुरिसवेद वेदेइ, ज समय पुरिसवेद वेदेइ णो त समय इत्थिवेद वेएइ इत्थिवेयस्स उदएण नो पुरिसवेद वेदेइ, पुरिसवे-दस्स उदएण णो इत्थिवेद वेदेइ । एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग वेद वेदेइ तजहा-इत्थिवेदवा पुरिसवेदवा इत्थी इत्थिवेएण उदिण्णेण पुरिस पत्थेइ, पुरिसो पुरि-सवेदेण उदिण्णेण इत्थि पत्थेइ, दो वेते अण्णमण्ण पत्थेइ तजहा इत्थीवा पुरिस,

वेद वेदता है जिस समय में स्त्री वेद वेदता है उस समय में पुरुष वेद नहीं वेदता है, और जिस समय में पुरुष वेद वेदता है उस समय में स्त्री वेद नहीं वेदता है स्त्री वेद के उदय में पुरुष वेद नहीं और पुरुष वेद के उदय में स्त्री वेद नहीं इस तरह एक जीव एक समय में एक वेद वेदता है क्यों कि स्त्री वेद के उदय में पुरुष की वाञ्छा होती है और पुरुष वेद के उदय में स्त्री की वाञ्छा होती है इस तरह

में उ० उद्योतकरनेवाला प० प्रकाश करनेवाला जा० यावत् प० प्रतिरूप से० वह त० वहाँ अ० अन्यदेव अ० अन्य देव की दे० देवीको अ० वशकर प० परिचारणा करे अ० अपनी दे० देवीको अ० वशकर के प० परिचारणा करे णो० नहीं अ० आत्मा से अ० आत्मा को वि० विकुर्वकर प० परिचारणा करे ए० एक जी० जीव ए० एक स० समय में ए० एक वे० वेद वे० वेदे इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद जं० जिस समय में इ० स्त्रीवेद वे० वेदे णो० नहीं तं० उस समय में पु० पुरुष वेद वे० वेदे जं० जिससमय में पु०

च्चारो भवंति महिड्डिएसु जाव महाणुभागेसु दूरगतीसु, चिरट्ठितीसु सेणं तत्थ देवे भवइ महिड्डिए जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे जाव पडिरूवे सेणं तत्थ अण्णेदेवे अण्णेसिं देवाण देवीओ अभिजुजिय अभिजुजिय परियारेइ, अप्पणेच्चि-याओ देवीओ अभिजुजिय अभिजुजिय परियारेइ, नो अप्पणामेव अप्पाण वेउ-व्विय परियारेइ ! एगेवियण जीवे एगेण समएणं एग वेद वेदेइ तजहा इत्थिवेदवा,

यावत् दशों दिशि में प्रकाश करनेवाला, उद्योत करनेवाला यावत् प्रतिरूप हुवा वह देवता अन्य देव को अथवा अन्य देवता की देवियोंको अपने वश में करके भोगता है या अपनी देवी को आलिंगन कर उस की साथ परिचारणा करता है, परंतु स्वयं स्वतः का शरीरको वैक्रेय बनाकर उस वैक्रेय बनाहुवा शरीरसे परिचारणा नहीं करसकता है इसलिये एक जीव एक समयमें स्त्री वेद अथवा पुरुषवेद इन दोनोंमें से एक ही

जo जघन्य अo अतर्मुहूर्त उo उत्कृष्ट बाo बारह सo संवत्सर ॥ ४ ॥ काo काय भव में रहा हुवा काo कालमें केo कितना काल होo होवे गोo गौतम जo जघन्य अo अतर्मुहूर्त उo उत्कृष्ट चo चौवीस सo संवत्सर ॥ ५ ॥ मo मनुष्य पo पंचेन्द्रिय तिo तिर्यंच बीo बीज से भo भगवन् जोo योनिमें

गब्भेति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहन्न अतो मुहुत्त उक्कोस बारस सवच्छराइ ॥ ४ ॥ कायभवत्थेण भते ! कायभवत्थेति कालओ केवाचिर होइ ? गोयमा ! जहण्ण मतोमुहुत्त, उक्कोसेण चउवीस सवच्छराइ ॥ ५ ॥ मणुस्सपाचिं-दिय तिरिक्ख जोणिय बीएण भते ! जोणियब्भूए केवइय काल सचिट्ठइ ? जहन्नेण

मनुष्य का गर्भ कितने कालतक रहता है ? अहो गौतम ! मनुष्य का गर्भ जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कायभवस्थ जीव कायभवस्थ में कितना कालतक रहे ? अहो गौतम ! कायभवस्थ जीव जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चौवीस वर्ष स्त्री के गर्भ में एक जीव बारह वर्ष रहकर काल कर जावे और पुन. वहांही उत्पन्न होकर बारह वर्ष रहे अथवा उस बारह वर्ष रहकर चवाहुवा जीव के शरीर में अन्य जीव आकर बारह वर्ष रहे ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! सन्नी पंचेन्द्रिय मनुष्य व सन्नी पंचे

१ जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेह एव यो भवो जन्म स कायभव तत्र तिष्ठति य स कायभवस्थ । अर्थात् माताके उदरमें रहवाहुवा निजदेहरूप भवमे रहनेवाला सो कायभवस्थ ॥

इ० स्त्री को ॥ १ ॥ उ० पानी का ग० गर्भ का० काल मे के० कितना काल हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट छ० छमास ॥ २ ॥ ति० तिर्यच का ग० गर्भ भ० भगवन् का० काल मे के० कितनाकाल हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य अ० अंतमुहूर्त उ० उत्कृष्ट अ० आठ सं० संवत्सर ॥ ३ ॥ म० मनुष्यणी का ग० गर्भ भं० भगवन् का० कालसे के० कितना काल हो० होवे गो० गौतम

पुरिसोवा इत्थि ॥ १ ॥ उदगगब्भेण भंते ! उदग गब्भेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेण एक्कं समयं उक्कोसं छम्मासा ॥ २ ॥ तिरिक्ख जोणिय गब्भेण भंते ! तिरिक्ख जोणिय गब्भेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नं अंतो मुहुत्तं उक्कोसं अट्ठ संवच्छराइं ॥ ३ ॥ मणुस्सी गब्भेण भंते ! मणुस्सी

पुरुष स्त्री को व स्त्री पुरुष को वेद का उदय होने पर प्रार्थना करते हैं इसलिये एक समय में एक जीव एक ही वेद वेदता है ॥ १ ॥ परिचारणा से गर्भ रहता है इसलिये गर्भ का प्रश्न पुछते हैं अहो भगवन् ! पानी का गर्भ कितने कालतक रहता है ? अहो गौतम ! पानी का गर्भ जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास तक रहता है ॥२॥ अहो भगवन् ! तिर्यच योनि में तिर्यचका गर्भ कितने कालतक रहता है? अहो गौतम ! तिर्यच का गर्भ जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट आठ संवत्सर तक रहता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् !

जी० जीव पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है जा० यावत् ह० शीघ्र आ० आवे गा० गौतम इ० स्त्री पु० पुरुषका क० किये कर्म जो० योनि में मे० मैथुन संबंधि सं० संयोगमें स० उत्पन्न होवे ते० वे दु० दोनों सि० स्निग्धता चि० इकठी करे त० तहां ज० जघन्य ए० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक लक्ष जी० जीव पु० पुत्रपने ह०

इक्कोवा, दोवा, तिण्णिवा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवाण पुत्तत्ताए हव्वमाग-च्छति ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जाव हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! इत्थीएय पुरिसस्सय कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नाम सजोए समुप्पज्जइ, ते दुहओ सिणेह चि-णाति, तत्थण जहन्नेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेण सयसहस्स पुहत्त जीवाण

गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट प्रत्येक लाख [नव लाख] जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे मत्स्यादिक को एक संयोग में माछली की योनि में नव लाख जीव गर्भपने उत्पन्न होवे और निष्पन्न भी होवे मनुष्य को बहुत उत्पन्न होवे परंतु बहुत निष्पन्न नहीं होवे अहो भगवन् ! एक भव में एक ही जीव को नव लाख जीव पुत्रपने किस तरह से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नाम कर्म निवर्तित (मदनोद्दीपक व्यापारवाली) योनि में स्त्री और पुरुषका मैथुन संबंधी संयोग हुवा, उस समय उन दोनों का स्नेह एकत्रित हुवा उस में जघन्य एक दो, तीन उत्कृष्ट नवलक्ष जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे इसलिये अहो गौतम ! नवलाख जीव

रहा हुवा के० कितना काल स० रहे गो० गौतम ज० जघन्य अ० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट बा० बारह मुहूर्त॥६॥ए० एक जी० जीव भ० भगवन् ए० एक भव में के० कितनेका पु० पुत्र पने ह० शीघ्र आ० आवे गो० गौतम ज० जघन्य इ० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक सो जी० जीवों का० पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे॥ ७ ॥ ए० एक जी० जीव को भ० भगवन् ए० एक भव में के० कितने जीव पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे गो० गौतम ज० जघन्य इ० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक लक्ष

अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ ६ ॥ एग जीवेण भंते ! एग भवग्गहणेण केवइयाण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! जहण्णेण इक्कस्सवा दोण्हस्सवा, तिण्हस्सवा उक्कोस सयपुहत्तस्स जीवाण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ॥ ७ ॥ एग जीवस्सण भंते एग भवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहन्नेण

न्द्रिय तिर्यंच का बीजरूप वीर्य योनि में कितने कालतक रहे? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह मुहूर्त ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! एक जीव एक भव आश्रित कितने पिता का पुत्र होवे? अहो गौतम! जघन्य एक, दो, तीन का पुत्र होवे, उत्कृष्ट प्रत्येक (नव) सो पिताका पुत्र होवे क्योंकि बारह मुहूर्त तक योनि सचित रहती है, उस से नव सो का बीज योनि में प्रविष्ट होने से उन सब का वह पुत्र कहाता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! एक भव में एक जीव को कितने जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे? अहो

महावीर रा० राजगृह न० नगरके गु० गुणशील चे० उद्यान से प० निकलकर व० बाहिर
में वि० विचरनेलगे ॥ १० ॥ ते० उस काल ते० उस समय में तुं० तुंगीया न० नगरी हो० थी
वर्णनयुक्त ॥ ११ ॥ ती० उस तु० तुंगीया नगरीकी ब० बाहिर उ० ईशान कौन में पु० पुष्पवती चे०
उद्यान हो० था त० तहां तु० तुंगीया न० नगरी में ब० बहुत स० श्रमणोपासक प० रहते हैं अ० ऋद्धि-

समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनि
क्खमइ पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १० ॥ तेणं कालेणं
तेणं समएणं तुंगिया नाम नयरी होत्था वण्णओ, तीसेणं तुंगियाए नयरीए बहिया
उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुप्फवइए नामं चेइए होत्था वण्णओ ॥ ११ ॥
तत्थणं तुंगियाए नयरीए बहवे समणोवासया परिवसंति अड्ढा, दित्ता, विच्छिण्ण

तब श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी राजगृह नगरके गुणशील नामक उद्यान में से नीकल
कर अन्यदेशमें विचरने लगे ॥ १० ॥ उस काल उस समय में तुंगिया नाम की नगरी थी उस का
वर्णन उववाई सूत्र में चंपा नगरी का वर्णन जैसे कहना उस तुंगिया नगरी की ईशान कौन में पुष्प-
वती नामक उद्यान था उस का वर्णन उववाई में से जानना ॥ ११ ॥ उस तुंगीया नगरी में बहुत
श्रमणोपासक (श्रावक) रहते थे वे धन धान्य से परिपूर्ण, बलवंत, विस्तार युक्त बहुत भवन, शयन

पुच्चत्ताए हव्वमागच्छति से तेणट्ठेण जाव हव्वमागच्छइ ॥ ८ ॥ मेहुणंणं भंते ! सेवमाणस्स केरिसे असजमे कज्जइ ? गोयमा ! से जहानामए कइ पुरिसे रूय-नालियवा, वूरनालियवा, तत्तेण कणएण समभिधसेज्जा, एरिसएण गोयमा ! मेहुण सेवमाणस्स असजमे कज्जइ ॥ सेव भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ ९ ॥ तएण

शीघ्र आ० आवे ॥ ८ ॥ मे० मैथुन भ० भगवन् से० सेवता के० कैसे अ० असयम क० करे गो० गौतम से० वह ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष रू० रूइकी नालिका बू० वांस के बूरेकी नालिका में त तपा हुवा क० कनक से स० जलावे ए० ऐसे गो० गौतम मे० मैथुन स० सेवता अ० असयम क० करे म० यह ए० ऐसे भ० भगवन् त्ति० ऐसे जा० यावत् वि० विचरने लगे ॥ ९ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म०

एक जीव का पुत्रपने एक भव में उत्पन्न होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! मैथुन सेवने वाले को किस तरह असयम होवे ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष रूइ या सूके काष्ट के बूरे को नालीका में भरे, फीर अग्नि मे तपाकर रक्त बनाया हुवा लोह का दंड उस नाली में डाले, इस से उस में रही हुई रूइ जैसे जलजाती है वैसे ही मैथुन करते योनि में रहे हुवे जीवों नष्ट होजाते हैं और इस तरह जीव का नाश होने से असयम होता है अहो भगवन् ! आपके वचन यथातथ्य हैं ऐसा कहते श्री गौतम स्वामी विचर रहे हैं ॥ ९ ॥

आ० आश्रव स० संवर नि० निर्जरा कि० क्रिया अ० अधिकरण बं० बंध मो० मोक्ष कु० कुशल अ० सहे नहीं दे० देव अ० असुर ना० नाग सु० सुवर्ण ज० यक्ष र० राक्षस कि० किन्नर कि० किंपुरुष ग० गरुड ग० गंधर्व म० महोरगादि दे० देवगण से नि० निर्ग्रंथके पा० प्रवचन को अ० अतिक्रमे नहीं नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन में नि० शंकारहित नि० कांक्षारहित वि० संदेहरहित ल० प्राप्त-

जक्ख रक्खस किण्णर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादीएहिं देवगणेहिं निग्गथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा ॥ निग्गंथे पावयणे निस्संकिया, निक्कंखिया, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिजपम्माणुरायरत्ता ॥ अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अय परमट्ठे

पुण्य पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध व मोक्ष को जानने में बहुत कुशल थे आपत्ति काल में देव, असुर, नाग, सुवर्ण, यक्ष, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व व महोरगादिक की सहायता नहीं लेने वाले थे स्वयं कृत कर्म भोगने की मनोइच्छावाले थे, वैसे ही उक्त देवों निर्ग्रंथ के प्रवचन से चलित करने पर भी वे श्रमणोपासक चालित नहीं होते थे वैसे ही वे जीवादि तत्व है या नहीं ऐसी शंका, कांक्षा व अन्य दर्शनी की वांच्छा रहित थे वैसे ही शास्त्र के अर्थ का उन को लाभ हुवा था उनोंने अच्छी तरह सम्यक् प्रकार से ग्रहण किया था किसी प्रकार का संशय उत्पन्न होने पर

वाले दि० बलवन्त वि० विस्तीर्ण वि० बहुत भ० भवन स० शयन आ० आसन जा० यान वा० वाहन युक्त ब० बहुत ध० धन ब० बहुत जा० सुवर्ण र० रूपा आ० आयोग प० प्रयोग सं० युक्त वि० उच्छिष्ट वि० बहुत भ० आहारपानी ब० बहुत दा० दासी दा० दास गो० गौ म० महिषी ग० बकरें ब० बहुत व० बहुत ज० मनुष्य से अ० अपराजित अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव उ० ओलखे पु० पुन्य पा०

विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइण्णा, बहुधण बहुजायरूवरयया आओगप ओगसपउत्ता विच्छडियाविउल भत्त पाणा, बहुदासीदास गो महिसगवेलगप्पभूया, वहु जणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा, आसव सवर निज्जर किरियाहिगरण बंधप्पमोक्ख कुसला ॥ असहेज्ज देवासुर नाग सुवण्ण

आसन, यान, सुवर्ण व वाहन से व्याप्त, वैसे बहुत धन सुवर्ण चांदी व आयोग प्रयोगसे संयुक्त थे जिनकी भोजन शालामें इतना आहार निपजता था कि जिस को भोग कर पीछे जो बचता था उसमें से बहुत लोगोंकी आजीविका चलती थी, उन को बहुत दास दासी, गाय बैल, माहिषी, गाडर वगैरह का संग्रह था उनकी पास इतनी ऋद्धिथी कि इतनी ऋद्धि बहुत से लोगों की पास नहीं थी यह द्रव्य ऋद्धि का कथन किया अब भाव ऋद्धि का कथन चलता है जीव अजीव को जानने वाले थे

१ लागों को व्याज से देना - व्यापार में लगाना

आ॰ आश्रव स॰ संवर नि॰ निर्जरा कि॰ क्रिया अ॰ अधिकरण ध॰ बंध प॰ मोक्ष कु॰ कुशल अ॰ सहे नहीं दे॰ देव अ॰ असुर ना॰ नाग सु॰ सुवर्ण ज॰ यक्ष र॰ राक्षस कि॰ किन्नर किं॰ किंपुरुष ग॰ गरुड ग॰ गंधर्व म॰ महोरगादि दे॰ देवगण से नि॰ निर्ग्रंथके पा॰ प्रवचन को अ॰ अतिक्रमे नहीं नि॰ निर्ग्रंथ पा॰ प्रवचन में नि॰ शंकारहित नि॰ कांक्षारहित वि॰ संदेहरहित ल॰ मास-

जक्ख रक्खस किण्णर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादीएहिं देवगणेहिं निग्ग-थाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा ॥ निग्गंथे पावयणे निस्संकिया, निक्कंखि-या, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंजपम्माणुरायरत्ता ॥ अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे,

पुण्य पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध व मोक्ष को जानने में बहुत कुशल थे आपत्ति काल में देव, असुर, नाग, सुवर्ण, यक्ष, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व व महोरगादिक की सहायता नहीं लेने वाले थे स्वयं कृत कर्म भोगने की मनोवांछावाले थे, वैसे ही उक्त देवों निर्ग्रंथ के प्रवचन से चलित करने पर भी वे श्रमणोपासक चलित नहीं होते थे वैसे ही वे जीवादि तत्व है या नहीं ऐसी शंका, कांक्षा व अन्य दर्शनी की वांछा रहित थे वैसे ही शास्त्र के अर्थ का उन को लाभ हुवा था उनोंने अच्छी तरह सम्यक प्रकार से ग्रहण किया था किसी प्रकार का संशय उत्पन्न होने पर

वाले दि० बलवन्त वि० विस्तीर्ण वि० बहुत भ० भवन स० शयन आ० आसन जा० यान वा० वाहन युक्त ब० बहुत ध० धन ब० बहुत जा० सुवर्ण र० रूपा आ० आयोग प० प्रयोग सं० युक्त वि० उच्छिष्ट वि० बहुत भ० आहारपानी ब० बहुत दा० दासी दा० दास गो० गौ म० महिषी ग० बकरें प० बहुत ब० बहुत ज० मनुष्य से अ० अपराजित अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव उ० ओलखे पु० पुन्य पा०

विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइण्णा, बहुधण बहुजायरूवरयया, आओगप ओगसपउत्ता विच्छड्डियविउल भत्त पाणा, बहुदासीदास गो महिसगवेलगप्पभूया, बहु जणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा, आसव संवर निज्जर किरियाहिगरण बंधमोक्ख कुसला ॥ असहेज्ज देवासुर नाग सुवण्ण

भासन, यान, सुवर्ण व वाहन से व्याप्त, वैसे बहुत धन सुवर्ण चांदी व आयोग प्रयोगसे संयुक्त थे जिनकी भोजन शालामें इतना आहार निपजता था कि जिस को भोग कर पीछे जो बढता था उसमें से बहुत लोगोंकी आजीविका चलती थी, उन को बहुत दास दासी, गाय बैल, महिषी, गाडर वगैरह का संग्रह था उनको पास इतनी ऋद्धि थी कि इतनी ऋद्धि बहुत से लोगों की पास नहीं थी यह द्रव्य ऋद्धि का कथन किया अब भाव ऋद्धि का कथन चलता है जीव अजीव को जानने वाले थे

१ आगों को ब्याज से देना २ व्यापार में लगाना

सम्यक् अ० पालते स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ फा० प्रासुक ए० एषनिक अ० अशन पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम व० वस्त्र प० पात्र क० कम्बल पा० रजोहरण पी० आसन फ० पाट से० शैय्या स० संथारा ओ० औषध भे० भेषज प० प्रतिलाभते अ० यथा प० ग्रहण किये त० तप कर्म से आ० आत्मा को भा० भावते वि०विचरते हैं ॥ १२ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में पा० पार्श्वनाथ के शिष्य थे० स्थविर भ० भगवन्त जा० जातिसंपन्न कु० कुलसंपन्न ब० बलसंपन्न रू० रूपसंपन्न वि० विनय संपन्न

साइम साइमेण वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुछणेण, पीढफलग सेज्जा संथारएण ओसहभेसजेण पडिलाभेमाणा अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावे-माणा विहरति ॥ १२ ॥ तेण कालेण तेणसमएण पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जाइसपण्णा, कुलसपण्णा, बलसपण्णा, रूवसपण्णा, विणयसपण्णा, णाणसपण्णा

होते थे वे श्रावकों बहुत शीलव्रत, अनुव्रत, गुनव्रत, प्रत्याख्यान, पोषध उपवास वगैरह करते थे चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या व पूर्णिमा को प्रतिपूर्ण पोषध सम्यक् प्रकार से करते थे अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कंबल, रजोहरण, बाजोठ, पाटिया, शैय्या, संथारा, व औषधादि श्रमण निर्ग्रंथ को प्रतिलाभते हुवे (देते हुवे) वैसे ही जैसा ग्रहण किया वैसा तप कर्म से आत्माको चिंतवते हुवे विचरते थे ॥ १२ ॥ उस काल उस समय में जाति संपन्न, कुल सम्पन्न, बल सम्पन्न, रूप सम्पन्न

अर्थ ग० ग्रहणकिया है अर्थ पु० पूछा है अर्थ अ० जाना है अर्थ वि० विशेष जाना है अ० अर्थ अ० इड्डी पिं० मिंज पे० प्रेमानुरक्त अ० यह आ० आयुष्यमान् नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन अ० अर्थ प० परमार्थ से० शेष अ० अनर्थ उ० अच्छा फा० स्फटिक जैस अ० खुला दु० द्वार चि० प्रसन्न अं० अंत: पुर प० परगृह प० प्रवेश ब० बहुत सी० शीलव्रत गु० गुन वे० वेरमण प० प्रत्याख्यान पो० पोषध उप वास से चा० चतुर्दशी अ० अष्टमी को स० अमावास्या पु० पूर्णीमा को प० प्रतिपूर्ण पो० पोषध स०

सेसे अणट्ठे ॥ ऊसियफलिहा अवगुयदुवारा चियत्ततेउरपरघरप्पवेसा, बहूहिं सीलव्वय गुण वेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसह सम्ममणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेण असणपाण

पूछकर निर्णय किया था, निर्णय वाले अर्थ को सम्यक् प्रकार से धार रखा था, निर्ग्रंथ प्रवचन में उन की हड्डी व हड्डी की मिंजिओं प्रेमानुराग से रक्त बनी हुई थी जब किसी साथ वार्तालाप करने का प्रसग आता तब ऐसा ही कहते कि अहो आयुष्यमन्तो ! यह निर्ग्रंथ के प्रवचन मोक्ष साधन का मार्ग है यही अर्थ रूप है, परमार्थ रूप है, परमादरणीय है इन सिवाय अन्य धन पुत्रादि वैसे ही कुवचनादि अनर्थ है, मोक्ष के बाधक हैं उन श्रावकों के हृदय स्फटिक रत्न की समान निर्मल थे, उन के गृह के द्वार दान देने के लिये सदैव खुले रहते थे, प्रीति करनेवाले अंतःपुर व परगृह में प्रवेश करते अप्रतीति के पात्र नहीं

यथा आ० अनुक्रम से च० विचरते गा० ग्रामानुग्राम दु० जाते सु० सुखसे वि० विचरते जे० जहां तुं० तुंगियानगरी जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान ते० तहां उ० आकर अ० यथाप्रतिरूप उ० अवग्रह ओ० ग्रहण कर स० संयम स त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते हैं ॥ १३॥ त० तब तुं० तुंगिया न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीनरस्ता च० चार रस्ता च० बहुत म० राजमार्ग में जा० यावत् ए० एकदिशा तरफ णि० जाते हैं ॥ १४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० इस क० कथा ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत स० बोलाकर ए० ऐसे व० बोले दे० देवानुप्रिय पा०

चेइए, तेणेव उवागच्छति उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरति ॥ १३ ॥ तएणं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग-तिगचउक्कचच्चरच उम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायति, ॥ १४ ॥ तएणं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव सद्दावति

यथाक्रम से ग्रामानुग्राम सुखपूर्वक विचरते तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में आये वहां आकर यथा-योग्य अवग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ १३ ॥ तब सिंघाडे के आकारवाले रस्ते में, तीन रस्ता मिले वैसे स्थान में, चौक, बहुत रस्ते मीले वैसे स्थान व राजमार्ग में उन स्थविर भगवन्त के दर्शन केलिये एक ही दिशा में बहुत लोक जा रहे थे ॥ १४ ॥ तब वे श्रमणोपासक ऐसा

णा० ज्ञानवन्त द० दर्शनवन्त च० चारित्रवन्त ल० लज्जा ला० लाघववन्त ओ० शरीर प्रभा युक्त ते० तेजस्वी व० वर्चस्वी ज० यशस्वी जि० जिता है क्रोध जि० जिता है मान मा० माया लो० लोभ नि० निद्रा इं० इन्द्रिय प० परिषह जी० जीवित आ० वांच्छा म० मरण भ० भय सो० शोकसे वि० रहित ब० बहु श्रुत ब० बहुत परिवार वाले पं० पांच अ० अनगार स० सत स० साथ स० रहेहुवे अ०

दसणसपण्णा, चरित्तसपण्णा, लज्जा लाघव सपण्णा, ओयसी तेयसी, वच्चसी जससी, जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जियलोभा, जियनिद्दा, जियइंदिया, जियपरीसहा, जीवियासा मरण भय सोक विप्पमुक्का, बहुस्सुया, बहुपरिवारा, पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडा अहाणुपुव्विं चरमाणा, गामाणुगाम दूइज्जमाणा, सुहं सुहेण विहरमाणा जेणेव तुंगियानयरी जेणेव पुप्फवईए

विनय सम्पन्न, मतिज्ञानादि ज्ञान सहित, सम्यक्त्व सहित, सामायिकादि चारित्र सहित, लौकिक लोकोत्तर लज्जा सहित, द्रव्य से उपधि व भाव से सर्व था लघुतावाले, ओजस्वी, तेजस्वी, वचन की विशिष्टता युक्त सो वर्चस्वी, यशस्वी, क्रोध, मान, माया व लोभ को जीतनेवाले, निद्रा, इन्द्रिय, परिषह को जीतनेवाले, जीवित, मरण, भय व शोक से मुक्त, बहुत श्रुत के धारक और चारों तीर्थरूप बहुत परिवारवाले श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य स्थविर भगवंत पांचसो साधु के परिवार सहित

चेइए, तेणेव उवागच्छति उवागच्छइत्ता अहापडिरूव उग्गह ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहराति ॥ १३ ॥ तएणं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग-तिगचउक्कचच्चरच उम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायति, ॥ १४ ॥ तएणं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव सद्दावति

यथा आ० अनुक्रम से च० विचरते गा० ग्रामानुग्राम दु० जाते सु० सुखसे वि० विचरते जे० जहां तुं० तुंगियानगरी जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान ते० तहां उ० आकर अ० यथाप्रतिरूप उ० अवग्रह ओ० ग्रहण कर स० संयम स त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते हैं ॥१३॥ त० तब तुं० तुंगिया न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीनरस्ता च० चार रस्ता च० बहुत म० राजमार्ग में जा० यावत् ए० एकदिशा तरफ णि० जाते हैं ॥ १४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० इस क० कथा ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् स० बोलाकर ए० ऐसे वं० बोले दे० देवानुप्रिय पा०

यथाक्रम से ग्रामानुग्राम सुखपूर्वक विचरते तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में आये वहां आकर यथा-योग्य अवग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ १३ ॥ तब सिंघाडे के आकार वाले रस्ते में, तीन रस्ता मिले वैसे स्थान में, चौक, बहुत रस्ते मीले वैसे स्थान व राजमार्ग में उन स्थविर भगवन्त के दर्शन कोलिये एक ही दिशा में बहुत लोक जा रहे थे ॥ १४ ॥ तब वे श्रमणोपासक ऐसा

पार्श्वनाथ के सतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त जा० जातिवत जा० यावत् अ० यथाप्रतिरूप उ० अनुज्ञा ओ० लेकर स० सयम स त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं म० महाफल दे० देवानुप्रिय त० तथारूप थे० स्थविर भ० भगवन्त के ना० नाम गो० गोत्र को स० सुनने से किं० क्या अ० अभिगमन व० वंदन ण० नमस्कार प० पूछना प० पूजते जा० यावत ग० ग्रहण करते त०

सद्दाविचा एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया। पासावच्चेज्जा थेरा भगवतो जाति सपण्णा जाव अहापडिरूव उग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा- विहरति त महाफल खलु देवाणुप्पिया तहारूवाण थेराण भगवताण नामगोयस्स विसवणयाए किमगपुण अभिगमण वदण नमसण पडिपुच्छण पज्जुवास-

वातालाप सुनकर बहुत आनदित हुए और परस्पर ऐसा बोलनेलगे कि अहो देवानुप्रिय! जातिसपन्न यावत यथाप्रतिरूप श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य श्री स्थविर भगवन्त पुष्पावती उद्यान में आज्ञा मांगकर सयम व तपसे आत्माको भावते हुवे विचर रहे हैं ऐसे तथारूप स्थविर भगवन्त का नाम गोत्र सुनने से ही महा फल होता है तो फीर अभिगमन, वदन, नमस्कार, प्रतिपृच्छा, पर्युपासना यावत् अर्थादिक का ग्रहण करने का तो कहना ही क्या? इसलिये अहो देवानुप्रिय! अपन वहां जावे और स्थविर भगवन्तको वदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करे यही इस भव व परभव में अनुगामीक होगा ऐसा परस्पर वार्तालाप

उनकी पास ग० आवे दे० देवानुप्रिय थे० स्थविर भ० भगवन्त को व० वदनकरे ण० नमस्कारकरे जा० यावत् प० पूजे इ० यह भव में प० परभव में जा० यावत् आ० आनुगामिक भ० होगा ति० ऐसा करके अ० अन्यान्यकी अ०पास ए०यह अर्थ प० सूनकर जे० जहां स० अपने गे० गृह ते० तहां उ० आकर ण्हा०स्नानकीया क०पीठी लगायी क०कोगले किये पा०तिलक कीया सु०शुद्ध पो०प्रवेश करनेयोग्य म०मांगलीक व०वस्त्र प०पहिनकर अ०अल्प म०मूल्यवत आ० आभरण अ० पहिनकर स०अपने गे०गृह मे

णयाए जाव गहणयाए त गच्छामोण देवाणुप्पिया थेरे भगवते वदामो णम सामो जाव पज्जुवासामो । एयण्णे इहभवे परभवे जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु ॥ अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणति पडिसुणित्ता जेणेव सयाइ गेहाइ तेणेव उवागच्छति उवागच्छइत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमगल पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालकिय सरीरा

सुना सुनकर अपने गृह गये वहां जाकर स्नान किया, पीठी प्रमुख का विलेपन किया, अजली भरकर पानी के कोगले किये, तिलक मसादिक किये, और राजसभा में प्रवेश करने योग्य शुद्ध वस्त्र पहिने फीर अल्प भार व बहुत मूल्यवाले आभरणों से अलकृत बनकर अपने २ गृह से नीकले, और पांव से चलते हुवे तुंगिया नगरी के मध्य बजार से होकर जहां पुष्पवती नामक उद्यान था वहां आये

प० नीकलकर ए० इकठे मि० मिले पा० पांव से चलकर तु० तुंगिया न० नगरी की म० मध्य से नि० नीकलकर जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान हो० था ते० तहां उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को पं० पांच प्रकार के अ० अभिगम से अ० जाते हैं त० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य वि० त्यजकर अ० अचित द० द्रव्य अ० रखकर ए० एक पटका उ० उत्तरासन क० करके च० चक्षुदर्शन से

सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमति पडिनिक्खमइत्ता एगयओ मेलायति, पायविहार-चारेण तुंगियाए नयरीए मज्झमज्झेण निगच्छति निगच्छइत्ता, जेणेव पुप्फवईए नाम चेइए होत्था तेणेव उवागच्छति, उवागच्छइत्ता थेरे भगवते पचविहेण अभि-गमेण अभिगच्छति तजहा सचित्ताण दव्वाण विउसरणयाए, अचित्ताण दव्वाण अविउसरणयाए, एगसाडिएण उत्तरासगकरणेण, चक्खुप्फासे अजलिपग्गहेण,

स्थविर भगवत की समीप आते हैं १ तांबूलादि सचित्त द्रव्य को अलग करना, २ वस्त्रादि अचित्त द्रव्य को अलग नहीं करना, ३ बीच में नहीं सीला हुवा ऐसा एक वस्त्र का उत्तरासन करना ४ चक्षु दृष्टि में आते ही दोनों हस्त की अंजली करना, और ५ अन्य सब छोडकर मन से साधु स्थविर भगवन्त की तरफ एकाग्रता करना ऐसे पांच अभिगम किया फीर उन स्थविर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा करके तीन प्रकारसे

अ० अजलि प० जोडकर म० मनसे ए० स्थिर करके जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ०ते तहां उ० आकर ति० तीनवार अ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करे जा० यावत् ति० त्रिविध प० सेवना से प० सेवे ॥ १५ ॥ त० तब ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक को ती० उस म० बडी प० परिषदा में चा० चार या० याम ध० धर्म कहे ज० जैसे के० केशीस्वामी जा० यावत् स० श्रावकपना आ० आज्ञा आ० आराधित भ० होवे जा० यावत् ध० धर्म क० कहा ॥ १६ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त की

मणसा एगत्ती करणेण, जेणेवथेरे भगवतो तणेव उवागच्छति, उवागच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणवा करेंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥ ॥ १५ ॥ तएणं ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण तीसेय महइ महालियाए परिसाए चाउज्जाम धम्म परिकहेंति जहा केसिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए, आणाए आराहए भवइ जाव धम्मो कहिओ ॥ १६ ॥ तएण ते समणोवासया

सेवा भक्ति की ॥ १५ ॥ तब उन स्थविर भगवन्तने श्रावकों को उस महती परिषदा में चार याम वाला धर्म कहा जैसे रायप्रसेणी सूत्र में केशी अनगारने प्रदेशी राजा को धर्मोपदेश कहा था वैसे यावत् धर्म की सम्यक् प्रकार से आराधना करनेवाला श्रमणोपासक आराधक होता है वगैरह धर्मोपदेश कहा ॥ १६ ॥ तब उन स्थविर भगवन्त की पास धर्म सुनकर श्रमणोपासक हृष्ट तुष्ट चित्तवाले

प० नीकलकर ए० इकठे मि० मि० पा० पांव से चलकर तु० तुंगिया न० नगरी की म० मध्य से नि० नीकलकर जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान हो० था ते० तहां उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को पं० पांच प्रकार के अ० अभिगम मे अ० जाते हैं त० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य वि० त्यजकर अ० अचित्त द० द्रव्य अ० रखकर ए० एक पटका उ० उत्तरासन क० करके च० चक्षुदर्शन से

सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमति पडिनिक्खमइत्ता एगयओ मेलायति, पायविहार-चारेण तुंगियाए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति निग्गच्छइत्ता, जेणेव पुप्फवईए नामं चेइए होत्था तेणेव उवागच्छति, उवागच्छइत्ता थेरे भगवते पचविहेण अभि-गमेण अभिगच्छति तंजहा सचित्ताण दव्वाण विउसरणयाए, अचित्ताण दव्वाण अविउसरणयाए, एगसाडिएण उत्तरासगकरणेण, चक्खुप्फासे अजलिपग्गहेण,

स्थविर भगवंत की समीप आते हैं १ तांबूलादि सचित्त द्रव्य को अलग करना, २ वस्त्रादि अचित्त द्रव्य को अलग नहीं करना, ३ बीच में नहीं सीला हुवा ऐसा एक वस्त्र का उत्तरासन करना ४ चक्षु दृष्टि में आते ही दोनों हस्त की अंजली करना, और ५ अन्य सब छोडकर मन से साधु स्थविर भगवन्त की तरफ एकाग्रता करना ऐसे पांच अभिगम किया फीर उन स्थविर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा करके तीन प्रकारसे

अ० अजलि प० जोडकर म० मन से ए० स्थिर करके जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ०ते तहां उ० आकर ति० तीनवार अ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करे जा० यावत् ति० त्रिविध प० सेवना से प० सेवे ॥ १५ ॥ त० तव ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक को ती० उस म० बडी प० परिषदा में चा० चार या० याम ध० धर्म कहे ज० जैसे के० केशीस्वामी जा० यावत् स० श्रावकपना आ० आज्ञा आ० आराहित भ० होवे जा० यावत् ध० धर्म क० कहा ॥ १६ ॥ त० तव ते० वे स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त की

मणसा एगत्ती करणेण, जेणेवथेरे भगवतो तणेव उवागच्छति, उवागच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणवा करेंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥ ॥ १५ ॥ तएण ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण तीसेय महइ महालियाए परिसाए चाउज्जाम धम्म परिकहेंति जहा केसिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए, आणाए आराहए भवइ जाव धम्मो कहिओ ॥ १६ ॥ तएण ते समणोवासया

सेवा भक्ति की ॥ १५ ॥ तब उन स्थविर भगवन्तने श्रावकों को उस महती परिषदा में चार याम वाला धर्म कहा जैसे रायप्रसेणी सूत्र में केशी अनगारने प्रदेशी राजा को धर्मोपदेश कहा था वैसे यावत् धर्म की सम्यक् प्रकार से आराधना करनेवाला श्रमणोपासक आराधक होता है वगैरह धर्मोपदेश कहा ॥ १६ ॥ तब उन स्थविर भगवन्त की पास धर्म सुनकर श्रमणोपासक हृष्ट तुष्ट चित्तवाले

थ० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् हि० आनदपामे ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क०करके ए० ऐसा व० बोले स० संयम से भं० भगवन् किं० क्या फल त० तप से भं० भगवन् किं० क्याफल त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणो पासक को ए० ऐसा व० बोले स० संयम से अ० आर्य अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदना

थेराण भगवताण अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव हियया,तिक्खुतो आया-हिणपयाहिण करैति करेइत्ता एव वयासीसजमेण भते किं फले तवेण भते किं फले तएण थेरा भगवतो ते समणोवासए एव वायसी सजमेण अज्जो अणण्हयफले,तवे वोदाणफलेतएण

हुवे और स्थविर भगवत को तीन आदान प्रदक्षिणा करके ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! तप व संयम का क्या फल ? तब श्रमणोपासक को स्थविर भगवत ऐसा कहने लगे कि संयम से आश्रव का निरुधन होता है अर्थात् संयम पालन वाले को नविन कर्म का आगमन नहीं होता है वैसे ही पूर्व-कृत कर्मों को छेदन करना यह तपका फल है तब श्रमणोपासक बोले कि अहो भगवन् ! यदि संयम का आश्रव निरोध रूप व तपका कर्मक्षयरूप फल है तो संयम व तपके आराधन करने वाले किस कारन से देव होते हैं ? तब उन स्थविर भगवत की पास रहने वाले स्थविरों ने इस प्रश्न का उत्तर

का फल त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले ज० यदि भ० भगवन् स० संयम से अ अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदना फल किं० क्या प० प्रत्येक अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक उ० उत्पन्न होवे त० तहां का० कालिक पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर तं० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले पु० पूर्व तप से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे त० तहां म० महिल थे० स्थविर स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले पु० पूर्व

ते समणोवासया थेरे भगवंत एवं वयासी जइण भंते! संजमे अणण्हयफले तवे वोदाणफले किंपत्तियं भंते देवा देवलोएसु उववज्जंति ? तत्थणं कालियं पुत्तेनाम अनगारे थेरे समणोवासए एवं वयासी पुव्वतवेणं अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं महिलेनाम थेरे ते समणोवासए एवं वयासी पुव्वसंजमेणं अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं आणंदरक्खिए नाम थेरे ते समणोवासए एवं वयासी

अलग २ दिया उन में से कालिक पुत्र नामक अनगारने कहा कि अहो श्रमणोपासकों! * पूर्व तप से देवता में देवपने उत्पन्न होते हैं २ मेहल नामक स्थविर बोले की पूर्व संयम सराग संयम से

* यहां पूर्व शब्द वीतराग अवस्था की अपेक्षा से लिया है अर्थात् पूर्व तप सो सरागभाव से तप करना क्यों कि वीतराग अवस्था से सराग अवस्था पूर्व होती है इससे उसमें कराया हुवा तप सो पूर्वतप

संयम से आ० आनंद रक्षित थे० स्थविर ब० बोले क० कर्म से का० काश्यप थे० स्थविर ब० बोले स० संगत से दे० देवलोक में उ० उपजते हैं पु० पूर्वतप से पु० पूर्वसंयम से क० कर्म से सं० संगत से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता त० तब स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त से ए० ऐसा वा० प्रश्नोत्तर वा० कहते ह० हृष्ट

कम्मियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं कासवे नाम थेरे एवं वयासी संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ पुव्व तवेण, पुव्वसंजमेण, कम्मियाए, संगियाए, अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति सच्चेणं एसअट्ठे नो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ तएणं ते समणोवासया थेरेहिं भगवंतेहिं इमाइं एयारूवाइं

देवलोक में देवताओ होते हैं ३ आनन्दरक्षित नामक स्थविर बोले कि कर्म के विकार से देवलोक में उत्पन्न होते हैं क्योंकि समस्त कर्म का क्षय नहीं किया है परंतु थोडे बहुत दोष रहेहुवे हैं काश्यप नामक स्थविर बोले कि संगति से देवलोक में देव होते हैं अर्थात् मनुष्यादि की संगति से सराग भाव रहने से या द्रव्यादि में सराग भाव रहने से तप संयम के आराधक देवलोक में देवता होते हैं इस तरह पूर्व तप, पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवलोक में संयम व तप करनेवाले देव होते हैं ऐसा जो कहा है यह सत्य है हमने हमारा अहंभाव से नहीं कहा है तब स्थविर

तु० तुष्ट हुवे स्थविर भ० भगवन्त को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर प० प्रश्न पु० पूछे अ० अर्थ उ० ग्रहण करे उ० स्थान से उ० उठकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ति०तीन वार जा०यावत् व० वदना कर न० नमस्कार कर थे० स्थविर भ० भगवन्त की अं० पास से पु० पुष्पवती चे०उद्यान से प० नीकलकर जा० जिसदिशि से पा० आये ता० उसादिशा में प० पीछे गये ॥ १६ ॥ त०तब ते०वे थे० स्थविर भ० भगवन्त अ० कोइ वक्त तु० तुगीआ न० नगरी के पु० पुष्पवती चे० उद्यान से प० नीकलकर प०

वागरणाइ वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा थेरे भगवते वदति णमसति वदइत्ता नमसइत्ता पसिणाइ पुच्छति अट्ठाइ उवाहियति, उट्ठाए उट्ठेति थेरे भगवते तिक्खुत्तो जाव वदति णमसति वदित्ता नमसइत्ता थेराण भगवताण अतियाओ पुप्फवईयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमइत्ता जामेवदिस पाउब्भूया तामेवदिस पडिगया ॥१६॥ तएण ते थेरा भगवतो अण्णयाकयाइ तुगियाओ नयरीओ पुप्फवईयाओ

भगवन्त से पूछेहुवे प्रश्नोंका उत्तर सुनकर हृष्ट, तुष्ट हुवे और स्थविर भगवत को अन्य भी प्रश्न पूछे, उन के अर्थ की धारणा की फीर उठकर तिन वार आदान प्रदाक्षिणा करके पुष्पवती उद्यान में से नीकलकर जिसदिशा में से आये थे उसी दिशा में अपने २ स्थान पीछे गये ॥ १६ ॥ स्थविर भग

पारणा में प० प्रथम पो० पोरसी में म० स्वाध्याय क० करे बी० दूसरी पो० पोरसी में झा० ध्यान करे त० तीसरी पो० पोरसी में अ० धीमे स अ० अचपल अ० असम्भ्रांत मु० मुखवस्त्रिका प० देखकर भा० भाजन व० वस्त्र प० देखकर भा० भाजन को प० पुजकर भा० भाजन उ० ग्रहणकर जे० जहां स० श्रमण म० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त को व० वन्दनकर ण० नमस्कार कर व० बोले इ० इच्छता हूं भ० भगवन् तु० तुमारी आ० आज्ञा होवेतो छ० छठ भक्त पा० पारणा में रा०

क्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, बीयाए पोरिसीए झाण झियाए, तइयाए पोरिसीए अतुरिय मचवल मसंभते, मुहपोत्तिय पडिलेहेइ पडिलेहेइत्ता, भायणाइ वत्थाइ पडिलेहेइ पडिलेहइत्ता भायणाइ पमज्जइ पमज्जइत्ता, भायणाइ उग्गाहेइ उग्गाहेइत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समण भगव महावीरं वंदइ णमसइ वंदइत्ता णमसइत्ता एव वयासी इच्छामिण भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुण्णाए समाणे

पारणे के दिन प्रथम प्रहर में भगवन्त गौतमने स्वाध्याय की, दूसरे प्रहर में ध्यान किया और तीसरे प्रहर में धैर्यता सहित व चपलता रहित मुख वस्त्रिका का प्रतिलेखन किया, भाजन वस्त्रकी प्रतिलेखना की फीर भाजन को गोच्छेसे पुंजकर ग्रहण किये और श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास आये महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! आपकी आज्ञा होवे तो इत्यादि

बाहिर ज० अन्यदेश में व० विचरने लगे ॥ १७ ॥ ते० उस काल ते० उससमय में रा० राजगृह न० नगर जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगइ ते० उसकाल ते० उससमय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का जे० ज्येष्ट अ० अंतेवासी इं० इन्द्रभूति अ० अनगार जा० यावत् स० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजोलेश्या छ० छठ छठ से अ० अतर रहित त० तपकर्म से सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते थे ॥ १८ ॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम छ० छठ भक्त का पा०

चेइयाओ पडिनिग्गच्छति पडिनिग्गच्छइत्ता बहिया जणवय विहार विहरति ॥ १७ ॥ तेणं कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे जाव परिसा पडिगया ॥ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूइणाम अणगारे जाव सखित्तविउलतेउलेस्स छट्ठं छट्ठेण आनिक्खित्तेण तवो कम्मेण संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ १८ ॥ तएण से भगव गोयमे छट्ठ-

सन्त भी तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में से नीकलकर अन्य देशमें विहार करने लगे ॥ १७ ॥ उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था वहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी आये परिषदा को भगवन्त ने धर्मोपदेश कहा धर्मोपदेश सुनकर परिषदा पीछी गई उस काल उस समय में श्री महावीर स्वामी के ज्येष्ट अंतेवासी विपुल तेजोलेश्याको संक्षिप्त करने वाले इन्द्रभूति नामक अनगार निरंतर छठ छठ (बेले बेले) का तप करते संयम व तप में मग्न होते विचरते थे ॥ १८ ॥ उस समय में छठ के

जाकर रा० राजगृह न० नगर में उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कु० कुल के घ० गृह स० समुदानकी भि० भिक्षा के लिये अ० विचरते हैं ॥२०॥ त० तब भ० भगवान् गा० गौतम रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् अ० विचरते ब० बहुत ज० मनुष्यों के स० शब्द नि० सुने ए० ऐसे ख० निश्चय दे० देवानुप्रिय तुं० तुंगिया न० नगरी की ब० बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के सतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक इ० इसरूप से वा० प्रश्न पु० पूछे स० संयम से भ० भगवन् किं० क्या

रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता, रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ परघरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ॥ २० ॥ तएणं से भगवं गोयमे रायगिहे नयरे जाव अडमाणे बहुजणसद्द निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईयाए चेइयाए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया संजमेणं भंते ! किं फले, तवे किं फले ?

नगरी में गये और वहां ऊंच नीच व मध्यम कुल के घरों में भिक्षाचरी की ॥ २० ॥ उस समय में राजगृह नगर में गोचरी करते भगवन्त गौतम स्वामीने बहुत मनुष्यों से ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी के बाहिर पुष्पवती नामक उद्यान में श्री पार्श्वनाथ भगवन्त के शिष्यानुशिष्य स्थविर भगवन्त को श्रमणोपासक (श्रावकों) ने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम का क्या फल व तप का क्या फल ? तब स्थविर भग-

राजगृह नगरमें उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कु० कुल के घ० गृहों को भि० भिक्षा के लिये अ० विचरने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध ॥ १९ ॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर से अ० आज्ञामिलते स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० पास से गु० गुणशील चे० उद्यान से प० नीकलकर अ० धीमे से अ० अचपल अ० असंभ्रांत जु० धूसरा प्रमाण प० प्रलोकना दि० दृष्टि से पु० आगे रि० जाते सो० शोधते जे० जहां रा० राजगृह न० नगर ते० तहां उ०

छट्ठक्खमण पारणयसि रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ, घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंध ॥ १९ ॥ तएणं भगवं गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ गुणासिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता अतुरिय मचवलमसंभंते जुगमंतर पलोयणाए दिट्ठीए पुरओरिय सोहेमाणे २ जेणेव

ऊंच, मध्यम व क्षुद्र नीच कुल के गृहों में से छठ का पारणा के लिये भिक्षा लाने को मैं इच्छता हूं अहो देवानुप्रिय ! जैसे को तुम सुख होवे वैसा करो विलम्ब मत करो ॥ १९ ॥ इस तरह भगवन्त की आज्ञा मीलनेस गौतम स्वामी भगवन्त श्री महावीर स्वामी की पासमे गुणशील नामक उद्यान में से नीकलकर शीघ्रता व मंदता रहित असंभ्रान्त बने हुवे युग प्रमाण आगे जमीन का दृष्टि से देखते राजगृही

कथा का ल० प्राप्त होते अर्थ जा० श्रद्धा उत्पन्न हुइ जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा को० कुतुहल अ० यथा पर्याप्त स० भिक्षा गि०ग्रहणकर रा०राजगृह न०नगरसे प०नीकलकर अ०शीघ्रता रहित से जा०यावत् सो० शोधते जे० जहां गु० गुणशील चे० उद्यान जे० जहा स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां

जाव समुप्पन्न कोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाण गिण्हइ गिण्हइत्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ अतुरिय जाव सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणागमणाए पडिक्कमइ एसण मणेसण आलोएइ, भत्तपाण पडिदंसेइ २ त्ता समण भगव महावीर जाव एव वयासी एव खलु भते ! अह तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहे नयरे उच्चनीय मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे

होने पर यथापर्याप्त [चाहिये उतना] आहार ग्रहण करके शीघ्रता व मंदता रहित युगप्रमाण आगे भूमि देखते राजगृह नगर, की बाहिर गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवन्त महावीर की पास आये वहां आकर महावीर स्वामी की पास गमन, आगमन में जो कोई जीव की विराधना हुई होवे उसकी निवृत्यर्थ कायोत्सर्ग करके जो आहार लाये थे उस के शुद्धाशुद्ध ऐसे दोनों को विचार कर भक्त पान बतलाया बतलाकर श्री श्रमण भगवन्त महावीर को ऐसा कहा अहो भगवन् ! आपकी

फ० फल त० तप से किं० क्या फल त० तब ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले स० संयम से अ० आर्य अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदन फल सं० सैसे जा० यावत् पु० पूर्वतप से पु० पूर्व संयम से क० कर्म से स० मग से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता से० वह क० कैसे ए० यह म० मानाजावे ए० ऐसे ॥ २१ ॥ त० तब भ० भगवान गो० गौतम इ० इस क०

तएण ते थेरा भगवतो समणोवासए एव वयासी संजमेण अज्जो अणण्हय फले, तवे वोदाणफले, त चेव जाव पुव्वतवेण, पुव्वसंजमेण, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति सच्चेण एसमट्ठे णो चेवण आयभाववत्तव्वयाए से कहमेय मन्ने एव ? ॥ २१ ॥ तएण भगव गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठेसमाणे जायसड्ढे

वन्तने उत्तर दिया कि संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्मों के क्षय का फल है जब ऐसा है तो तपस्वी व संयमी देव क्यों होते हैं ? पूर्व सो सराग तप से, पूर्व संयम से, कर्म विकार से व संगाति से देवलोक में देव होते हैं यह सत्य है यह अहंभावबुद्धि से नहीं कहते हैं परंतु परमार्थ से कहते हैं ऐसा स्थविर का वचन कैसे माननीय होवे ? ॥ २१ ॥ इस तरह नगर में वार्ता सुनकर श्रद्धा व कौतुक उत्पन्न

विचरता व० बहुत म० मनुष्यों का म० शब्द नि० सुने दे० देवानुप्रिय तु० तुंगिया न० नगरी की ग०
बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के भतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणो
पासक ए० एसे वा० प्रश्न पु० पूछे स० संयम से किं० क्या फ० फल त० तप से किं० क्या फ० फल
त० तैसे जा० यावत् स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता प०

तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए उदाहु असमिया? आउज्जि-
याण भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइ वागरणाइ वागरित्तए
उदाहु अणाउज्जिया? पलिउज्जियाण भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ
एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए उदाहु अपलिउज्जिया? पुव्वतवेण अज्जो! देवा देवलोएसु
उववज्जंति, पुव्वसंजमेण, कम्मियाए, संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति

भगवन्! उन श्रावकोंने पूछे हुवे प्रश्नों का शास्त्र विधि से उत्तर देने को क्या वे समर्थ हैं या असमर्थ
हैं? अथवा वे स्थविर भगवन्त उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने में सम्यक् प्रकार से अभ्यासवाले हैं
या अभ्यासवाले नहीं है? अथवा उन श्रावकों के प्रश्नों कहने को वे स्थविर भगवन्त क्या ज्ञानवन्त हैं या
ज्ञानवन्त नहीं हैं? अथवा उन के प्रश्नों के उत्तर देने में वे स्थविर भगवन्त क्या परिज्ञानवाले हैं या परिज्ञान

उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० नजदीक ग० गमनागमनका प० प्रतिक्रमणकर ए- शुद्धाशुद्ध आ० आलोचकर भ० भक्त पानी प० देखादकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे भ० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी अ० आज्ञा मिल्ते रा० राज गृह न० नगर मे उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षा कोलिये अ०

नहुजणसद्द निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया, संजमेणं भंते ! किं फले ? तवे किं फले? तंचेव जाव सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आय भाववत्तव्वयाए ॥ तं पभूणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अप्पभू ? समियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो

भाक्षा से राजगृह नगर में ऊंच नीच व मध्यम कुल में भिक्षा ग्रहण करने के लिये परिभ्रमण करते बहुत मनुष्यों से मैंने ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी की बाहिर पुष्पवती उद्यान में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के स्थविर भगवन्त को श्रमणोपासकोंने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम से क्या फल, तप से क्या फल? वे स्थविर भगवन्तने संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्म क्षय का फल कहा यावत् सरागता से देवलोकमें देवतापने उत्पन्न होते हैं यह सत्य है, और उसे हम हमारी बुद्धि से नहीं कहते हैं ऐसा कहा तो अहो

विचरता ब० बहुत म० मनुष्यों का स० शब्द नि० सुने दे० देवानुप्रिय तु० तुंगिया न० नगरी की ब० बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के मतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणो पासक ए० ऐसे वा० प्रश्न पु० पूछे स० संयम से किं० क्या फ० फल त० तप से किं० क्या फ० फल त० तैसे जा० यावत् स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता प०

तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए उदाहु असमिया ? आउज्जि- याण भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरित्तए उदाहु अणाउज्जिया ? पलिउज्जियाण भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए उदाहु अपलिउज्जिया ? पुव्वतवेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेण, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति

भगवन् ! उन श्रावकोंने पूछे हुवे प्रश्नों का शास्त्र विधि से उत्तर देने को क्या वे समर्थ हैं या असमर्थ हैं ? अथवा वे स्थविर भगवन्त उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने में सम्यक् प्रकार से अभ्यासवाले हैं या अभ्यासवाले नहीं है ? अथवा उन श्रावकों के प्रश्नों कहने को वे स्थविर भगवन्त क्या ज्ञानवन्त हैं या ज्ञानवन्त नहीं हैं ? अथवा उन के प्रश्नों के उत्तर देने में वे स्थविर भगवन्त क्या परिज्ञानवाले हैं या परिज्ञान

उ० आकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० नजदीक ग० गमनागमनका प० प्रतिक्रमणकर ए-शुद्धाशुद्ध आ० आलोचकर भ० भक्त पानी प० देखादकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे भ० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी अ० आज्ञा मिलते रा० राज गृह न० नगर मे उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षा कोलिये अ०

बहुजणसद्द निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया, संजमेणं भंते! किं फले? तवे किं फले? तंचेव जाव सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आय भाववत्तव्वयाए ॥ तं पभूणं भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अप्पभू? समियाणं भंते! ते थेरा भगवंतो

आज्ञा से राजगृह नगर में ऊंच नीच व मध्यम कुल में भिक्षा ग्रहण करने के लिये परिभ्रमण करते बहुत मनुष्यों से मैंने ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी की बाहिर पुष्पवती उद्यान में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के स्थविर भगवन्त को श्रमणोपासकोंने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम से क्या फल, तप से क्या फल? वे स्थविर भगवन्तने संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्म क्षय का फल कहा यावत् संगति से देवलोकमें देवतापने उत्पन्न होते हैं यह सत्य है, और उसे हम हमारी बुद्धि से नहीं कहते हैं ऐसा कहा तो अहो

त॰तपसे अ॰ असमर्थ स॰तैसे ने॰जानना अ॰अवशेष जा॰यावत् प॰ समर्थ स॰ सम्यक अ॰ अभ्यास वाले जा॰ यावत् स॰सत्य ए॰यह अर्थ णा॰नहीं आ॰आत्मभाव व॰वक्तव्यता ॥ २३ ॥ अ॰मैं गो॰गौतम ए॰ ऐसा आ॰ कहताहूं भा॰ बोलताहूं प॰ विशेष कहताहूं प॰ प्ररूपताहूं पु॰ पूर्व त तप से पु॰ पूर्व संयम से दे॰ देव दे॰ देवलोकमें उ॰ उत्पन्न होवे क॰ कर्म से स॰ सगसे दे॰ देव दे॰ देवलोक में उ॰ उत्पन्न होवे हैं स॰ सत्य ए॰ यह अर्थ णो॰ नहीं आ॰ आत्मभाव व॰ वक्तव्यता ॥ २४ ॥ त॰ तथारूप

सच्चेण एसमट्ठे, णो चेवण आयभाव वत्तव्वयाए ॥ २३ ॥ अहंपिण गोयमा ! एव माइक्खामि, भासेमि, पन्नवेमि, परूवेमि पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जति, पुव्वसजमेण देवा देवलोएसु उववज्जति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जति, सगियाए देवा देवलोएसु उववज्जति पुव्वतवेण, पुव्वसजमेण कम्मियाए, सगियाए अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जति सच्चेण एसमट्ठे णो चेवण आयभाव वत्तव्वयाए

यह अर्थ सत्य है आत्म कल्पित नहीं है ॥ २४ ॥ यह सुनकर गौतम स्वामी साधु की सेवा से क्या फल होता है ऐसा प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! तथारूप श्रमण की सेवा करने वाले को क्याफल होवे ? अहो गौतम ! तथारूप श्रमण की सेवा करने से शास्त्र श्रवण का फल होवे अहो भगवन् ! शास्त्र श्रवण से क्या फल होवे ? अहो गौतम ! शास्त्र श्रवण से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है अहो भगवन् ! ज्ञान से

समथ भ० भगवन् ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न वा० कहने को अ० नहीं समर्थ अ० अभ्यास वाले उ० अथवा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवत अ० ज्ञानरहित प० विज्ञानवत अ० विज्ञानरहित पु०पूर्वतपसे अ०आर्य दे०देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे पु० पूर्व सयम से क० कर्म से स० सगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्म भाव व० वक्तव्यता ॥ २२ ॥ प० समर्थ गो० गौतम ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसे वा० प्रश्न को वा० कहने को णो० नहीं

सच्चेण एसमट्ठे णोचेवण आयभाववत्तव्वयाए ॥ २२ ॥ पभूण गोयमा ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए णो अप्पभू तहचेव नेयव्व, अवसेसिय जाव पभू समिय आउज्जिय पलिउज्जिय जाव

समर्थ नहीं है ? ॥ २२ ॥ अहो गौतम ! उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने को वे स्थविर भगवन्त समर्थ, अभ्यासवाले, ज्ञानवन्त व परिज्ञानवन्त हैं परंतु असमर्थ, अनभ्यासवाले, अज्ञानवन्त व अपरिज्ञानवन्त नहीं है ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! मैं भी ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि पूर्व-सराग-तप से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं वैसे ही पूर्व सयम, कर्म विकार व सगति से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं

त०तपसे अ० असमर्थ त०तैसे ने०जानना अ०अवशेष जा०यावत् प० समर्थ स० सम्यक् अ० अभ्यास वाले जा० यावत् स०सत्य ए०यह अर्थ णो०नहीं आ०आत्मभाव व०वक्तव्यता ॥ २३ ॥ अ०मैं गो०गौतम ए० ऐसा आ० कहताहूं भा० बोलताहूं प० विशेष कहताहूं प० प्ररूपताहूं पु० पूर्व रा तप से पु० पूर्व सयम से दे० देव दे० देवलोकमें उ० उत्पन्न होवे क० कर्म मे स० सगमे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होते हैं स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता ॥ २४ ॥ त० तथारूप

रुच्चेण एममट्ठे, णो चेवण आयमाव वत्तव्वयाए ॥ २३ ॥ अहंपिण गोयमा ! एव माइक्खामि, भासेमि, पन्नवेमि, परूवेमि पुव्वतवेण देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसजमेण देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, सगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति पुव्वतवेण, पुव्वसजमेण कम्मियाए, सगियाए अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति सच्चेण एसमट्ठे णो चेवण आयमाव वत्तव्वयाए

यह अर्थ सत्य है आत्म कल्पित नहीं है ॥ २४ ॥ यह सुनकर गौतम स्वामी साधु की सेवा से क्या फल होता है ऐसा प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! तथारूप श्रमण की सेवा करने वाले को क्याफल होवे ? अहो गौतम ! तथारूप श्रमण की सेवा करने से शास्त्र श्रवण का फल होवे अहो भगवन् ! शास्त्र श्रवण से क्या फल होवे ? अहो गौतम ! शास्त्र श्रवण से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है अहो भगवन् ! ज्ञान से

रामथ भ० भगवन् ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न वा० कहने को अ० नहीं समर्थ स० अभ्यास वाले उ० अथवा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवत अ० ज्ञानरहित प० विज्ञानवत अ० विज्ञानरहित पु०पूर्वतपसे अ०आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे पु० पूर्व संयम से क० कर्म से स० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्म भाव व० वक्तव्यता ॥ २२ ॥ प० समर्थ गो० गौतम ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसे वा० प्रश्न को वा० कहने को णो० नहीं

सच्चेण एसमट्ठे णोचेवण आयभाववत्तव्वयाए ॥ २२ ॥ पभूण गोयमा! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए णो अप्पभू तहचेव नेयव्वं, अवसेसियं जाव पभू समियं आउज्जियं पलिउज्जियं जाव

नाम नहीं है? ॥ २२ ॥ अहो गौतम! उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने को वे स्थविर भगवन्त समर्थ, अभ्यासवाले, ज्ञानवन्त व परिज्ञानवन्त हैं परंतु असमर्थ, अनभ्यासवाले, अज्ञानवन्त व अपरिज्ञानवन्त नहीं हैं ॥ २३ ॥ अहो गौतम! मैं भी ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि पूर्व सराग तप से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं वैसे ही पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं

वो० कर्म छेदनफल वो० कर्म छेदनसे अ० अक्रिया फल भं० भगवन् अ० अक्रिया से किं० क्याफल सि० सिद्धि पर्यवसान फल प० प्ररूपा ॥ २८ ॥ अ० अन्यतीर्थिक भ० भगवन् ए० एसे आ० कहते हैं प० प्ररूपते हैं रा० राजगृह न० नगरकी व० बाहिर वे० वेभार प० पर्वत की अ० नीचे ए० तहां म० बडा ए० एकद्रह अ० पानीका अं० अनेक जो० योजन का आ० लम्बा वि० चौडा ना० नानाप्रकार

सिद्धिपज्जवसाण फला पण्णत्ता गोयमा ! ॥ गाथा ॥ सवणे णाणेय विण्णाणे पच्च-क्खाणेय संजमे ॥ अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥ १ ॥ २५ ॥ अण्णउत्थियाण भंते ! एव माइक्खाति भासाति पण्णवाति परूवाति एव खलु रायगिहस्स नयरस्स बाहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्थण महं एगे हरए अप्पे पण्णत्ते अणेगाइं

कर्मों का क्षय होने से अक्रिया का फल होवे अर्थात् योग निरुंधन रूप फल होवे अक्रिया से क्या फल? अहो गौतम ! अक्रिया से समस्त फल में सर्वोत्कृष्ट कर्मक्षयरूप मोक्षफल होवे यों अनुक्रम से श्रवण, ज्ञान, विज्ञान, प्रत्याख्यान, संयम, आश्रवनिरोध तप, निर्जरा, अक्रिया, व मुक्ति का फल होता है ॥ २८ ॥ अब साधु सेवा नहीं करने से विपरीत भाषी होते हैं सो बताते हैं ? अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि राजगृह नगर की बाहिर वेभार नामक पर्वत है उस की नीचे एक महान द्रह अनेक योजन की लम्बाइ व चौडाइ वाला है विविध प्रकार के वृक्ष, व वनखंड

भं०भगवन् स०श्रमण की प पर्युपासना करते किं०क्या फ फल पु०पर्युपासना का गो०गौतम स० श्रवण फल स०श्रवण से णा०ज्ञानफल णा० ज्ञानसे किं०क्याफल वि०विज्ञानफल वि० विज्ञानसे किं०क्याफल प० प्रत्याख्यान फल प०प्रत्याख्यानसे स०संयमफल स०संयम से अ०अनाश्रवफल अ० अनाश्रवसे त०तपफल

॥ २४ ॥ तहारूवेण भंते ! समण वा पज्जुवासमाणस्स किं फला पज्जुवासणा? गोयमा ! सवणफला। से ण भंते ! सवणे किं फले? गोयमा ! णाणफले। सेण भंते ! णाणे किं फले? गोयमा ! विण्णाणफले। से ण भंते ! विण्णाणे किं फले? गोयमा ! पच्चक्खाण फले। सेण भंते ! पच्चक्खाणे किं फले? संजम फले। सेण भंते ! संजमे किं फले? अणण्हय फले। एवं अणण्हए तव फले। तवे वोदाण फले। वोदाणे अकिरिया फले। से ण भंते ! अकिरिया किं फले?

क्या फल? अहो गौतम ! ज्ञान से हेय ज्ञेय उपादेय जानने रूप विज्ञान फल होवे अहो भगवन् ! विज्ञान से क्या फल? अहो गौतम ! विज्ञान से पापकर्म क प्रत्याख्यान का फल होवे ? अहो भगवन् ! प्रत्याख्यान से क्या फल? अहो गौतम ! पाप का प्रत्याख्यान करने से संयम का फल होता है अहो भगवन् ! संयम से क्या फल होवे? अहो गौतम ! संयम से नविन कर्मों के आश्रव द्वारों का रुधन करने का फल होवे और इस तरह लघु कर्म होने से तपस्यावंत होवे तप से पूर्वकृत कर्मों का क्षय होवे और पूर्वकृत

अ० नजदीक ए० तहां म० महातपोपतीरप्रभव पा० झरण प० प्ररूपा प०पांच सो धनुष्य आ० लंबा वि० चौडा ना० नाना प्रकार दु० वृक्षवन खंड से म०मंडित दे०प्रदेश स० शोभायमान पा०प्रसन्न चित्त करने वाला द० देखने योग्य अ० अभिरूप प० प्रतिरूप त० तहां ब० बहुत उ० ऊष्ण जो० योनिवाले जी० जीव पो० पुद्गल उ० पानीपने व० उत्पन्न होते हैं वि०विणसते हैं च०चवते हैं उ० पुष्ट होते हैं त० भरा

णयरस्स बहिया वेभारपव्वयस्स अदूरसामते एत्थण महातवो वतीरप्पभवे नमं पासवणे पण्णत्ते पंच धणुसयाइं आयाम विक्खंभेण नाणा दुमखंडमंडिउद्देसे, सस्सिरिए पासादीए दरिसणिज्जे, अभिरूवे पडिरूवे। तत्थण बहवे उसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति, चयंति उवचयंति । तव्वतिरित्तेवियण सयासमियं उसिणे उसिणे आउआए अभिनिस्सवइ, एसण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे पासवणे, एसण

मिथ्या है मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि राजगृह नगर की बाहिर वैभार पर्वत की पास अति ऊष्ण क्षेत्र है उस की समीप एक महातपोपतीरप्रभव नामक ऊष्ण पानी का झरणा है पांचसो धनुष्य का लम्बा व चौडा है विविध प्रकार के वृक्ष, वनखंड से सुशोभित, प्रासादीक, दर्शनीय, अभिरूप यावत् प्रतिरूप है उस में बहुत ऊष्ण योनिवाले जीव पानीपने उत्पन्न होते हैं चवते हैं उस में पानी भराये पीछे जो अधिक होता है वह ऊष्ण अप्कायपने झरता है अहो गौतम ! यह महातपोपतीर

दू० वृक्षकेवनखंड से म० शोभित दे० प्रदेश स० शोभायमान जा० यावत् प० प्रतिरूप त० तहां ब० बहुत उ० विस्तीर्ण ब० बादल स० सन्मुख होते हैं उ० उपजते हैं वा० वर्षते हैं त० भरा हुआ स० सदैव उ० ऊष्ण आ० पानी अ० झरता है से० वह क० कैसे भ० भगवन् गो० गौतम ज० जो अ० अन्य तीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ते० वे ए० ऐसा अ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर ए० ऐसा आ० कहता हूं रा० राजगृह न० नगर की ब० बाहिर वे० वेभार प० पर्वत की

जोयणाइ आयाम विक्खंभेण नाणादुम खडमाडिउद्देसे सस्सिरीए जाव पडिरूवे, तत्थणबहवे उदारा बलाहया ससेयति समुच्छियति वासति तव्वतिरित्तेवियण सयासमिउ उसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ, से कहमेय भंते एव ? गोयमा ! जण्णते अणउत्थिया एवमाइक्खति जाव जेते एव माइक्खति मिच्छते एवमाइक्खति ॥ अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि एव खलु रायगिहस्स

वगैरह से सुशोभित यावत् प्रतिरूप है इस द्रह में बहुत बद्दल उत्पन्न सन्मुख होते हैं, उत्पन्न होते हैं और वर्षते हैं वह द्रह भरजाने से जो अधिक पानी नीकलता है वह पानी सदैव ऊष्ण योनिवाला रहता है अर्थात् जो पानी द्रह मे बाहिर नीकलता है वह सदैव ऊष्ण रहता है अहो भगवन् ! यह किस तरह से है ? अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं वे मिथ्या ...

क० कितने भ० भगवन् दे० देव प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार प्रकार के दे० देव प० प्ररूप भ० भुवनपति वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक क० कहां भ० भगवन् भ० भुवनपति दे० देव के ठा० स्थान प० कहे गो० गौतम इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की ज० जैसे ठा० स्थान पद में

कइविहाण भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता तंजहा—भवणवइ, वाणमंतर, जोइस, वेमाणिया, । कहिण भंते ! भवणवासीण देवाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे देवाण वत्तव्वया,

विशुद्ध भाषा बोलने से देव होवे इसलिये देवता का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! देवता के कितने भेद कहे हैं ? देवताओं के चार भेद कहे हैं १ भुवनपति २ वाणव्यंतर ३ ज्योतिषी और ४ वैमानिक अहो भगवन् ! भुवनपति देवों के स्थान कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा के दूसरे स्थान पद में इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड कहा है उसमें एक२ हजार उपर व नीचे छोडने से एक लाख अठत्तर हजार योजन की पोलार है उस में बारह आंतरे व तेरह पाथडे हैं इस के आंतरे में भवनपति देवता के सात क्रोड बहोत्तर लाख भुवन कहे हैं भवनपति देवलोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होते हैं मारणान्तिक समुद्घातवर्ती लोक के असंख्यातवे भाग में भवनपति वर्तते हैं स्वस्थान आश्री सात क्रोड बहोत्तर लाख भवन कहे हैं वे भी लोक के असंख्यातवे

हुआ स० सदा उ० उदग आ० अप्कायपने अ० झरता है गो० गौतम म० महातपोपतीर प्रभव पा० झरण का अ० अर्थ प० प्ररूपा से० ऐसा भ० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भगवान् म० महावीर को वं० वन्दना करते हैं न० नमस्कार करते हैं ॥ २ ॥ ५ ॥ *

से० वह भ० भगवन् म० मानता हूं ओ० अवधारणी भाषा भा० भाषापद भा० कहना ॥२॥६॥

गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥ सेवं भंते भंतेत्ति, भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ ॥ बिईय सए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ५ ॥ * * *

सेणूणं भंते ! मण्णामीति ओहारणी भासा भासापदं भाणियव्वं ॥ बिईयसए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ६ ॥ * * *

प्रभव नामक झरणा व उस का अर्थ कहा अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है ऐसा कहकर भगवन्त गौतमने श्रमण भगवन्त को वन्दना नमस्कार किया यह दूसरा शतकका पांचवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥२॥५॥

गत उद्देश में मिथ्याभाषी कहे इसलिये भाषा का स्वरूप कहते हैं अहो भगवन् ! मैं ऐसा मानता हूं कि अवधारिणी भाषा इस सूत्रानुक्रम से श्री पन्नवणा सूत्रका अग्यारहवा भाषापद कहना भाषा को द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव ऐसे अनेक भेदों से विचारना यह दूसरा शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुआ॥२॥६॥

वे० वैमानिक उ० उद्देशा भा० कहना ॥ २ ॥ ७ ॥ * *

क० कहां भ० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार राजा की स० सुधर्मा सभा गो० गौतम ज० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में ति० तिर्च्छा अ० असख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० उलंघ कर अ० अरुणवर द्वीप की बा० बाहिर की वे० वेदिका से अ० अरुणोदय स० समुद्र में बा० बीयालीस जो० योजन सहस्र ओ० अवगाह कर च० चमर का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का ति० तिगिच्छकूट

उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ७ ॥ * * *

कहिण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण तिरियमसंखेज्ज दीव समुद्द विईवइत्ता अरुणवर दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयअताओ अरुणोदय समुद्द

उद्देशे से जानना यह दूसरा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ ७ ॥ × +

सातवे उद्देशे में देवता का अधिकार कहा इसलिये प्रथम भवनपति देवता संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार के राजा चमर नामक असुरेन्द्र की सुधर्मा सभा कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण दिशा में तिर्च्छा असंख्याते द्वीप समुद्र उल्लंघ कर आवे तो वहां अरुण वर द्वीप आता है उस की बाहिर की वेदिकासे बेतालीस हजार योजन अवगाह कर अरुणोदय समुद्र

दे० देव की व० वक्तव्यता सा०वह भा० कहना न० विशेष भ० भवन प० प्ररूपे उ० उपपात से लो० लोक का अ० असख्यात का भाग ए० एसे स० सर्व भा० कहना जा० यावत् सि० सिद्धि स्थान स० संपूर्ण क० कल्प प० प्रतिस्थान बा० जाडपना उ० ऊचा सं० संस्थान जी० जीवाभिगम में जा० यावत्

सा भाणियव्वा नवर भवणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइ भागे, एव सव्व भाणियव्व, जाव सिद्धगडिय सम्मत्ता ॥ कप्पाण पइट्ठाण, बाहुल्लुच्चत्तमेव सठाण जीवाभिगमे जाव वेमाणि उद्देसो भाणियव्वो ॥ बिईयसए सत्तमो

भाग में वर्तते हैं, उत्तर दक्षिण में रहनेवाले सब भुवनपति, वाणव्यतर ज्योतिषी, व वैमानिकके स्थानक का वर्णन यावत् सिद्ध स्थान प्रतिपादक प्रकरणतक का सब वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना उस का किंचित् विस्तार यह है १ कल्प में विमानों का आधार सौधर्म ईशान देवलोक में विमानों घनोदधि प्रतिष्ठित हैं २ विमान का पिंड-सौधर्म ईशान देवलोक में २७०० योजन का पिण्ड है ३ ऊंचाइ-सौधर्म ईशान देवलोक में पांचसो योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ४ संस्थान-सौधर्म ईशान देवलोक में आवलिका प्रविष्ट त्र्यंस, चउरंस व वर्तुलाकार विमानों हैं, और आवलिका बाहिर विविध प्रकार के संस्थान वाले हैं इस सिवाय और भी विमानका आवलिका परिमाण, वर्ण, प्रभा, गंधादि जीवाभिगम सूत्रके वैमानिक

वे० वैमानिक उ० उद्देशा भा० कहना ॥ २ ॥ ७ ॥ * *

क० कहां भ० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार राजा की स० सुधर्मा सभा गो० गौतम ज० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दाक्षिण में ति० तिर्च्छी अ० असख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० उलंघ कर अ० अरुणवर द्वीप की बा० बाहिर की वे० वेदिका से अ० अरुणोदय स० समुद्र में बा० बीयालीस जो० योजन सहस्र ओ० अवगाह कर च० चमर का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का ति० तिगिच्छकूट

उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ७ ॥ * * *

कहिण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्ज दीव समुद्द विईवइत्ता अरुणवर दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयअंताओ अरुणोदय समुद्द

उद्देशे से जानना यह दूसरा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ ७ ॥ × +

८ सातवे उद्देशे में देवता का अधिकार कहा इसलिये प्रथम भवनपति देवता संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार के राजा चमर नामक असुरेन्द्र की सुधर्मा सभा कहां है ? अहो गौतम ! जंम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दाक्षिण दिशा में तिर्च्छी असंख्याते द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे तो वहां अरुण वर द्वीप आता है उस की बाहिर की वेदिकासे बेतालीस हजार योजन अवगाह कर अरुणोदय समुद्र

दे० देव की व० वक्तव्यता सा०वह भा० कहना न० विशेष भ० भवन प० प्ररूपे उ० उपपात से लो० लोक का अ० असख्यात का भाग ए० एसे स० सर्व भा० कहना जा० यावत् सि० सिद्धि स्थान स० संपूर्ण क० कल्प प० प्रतिस्थान बा० जाडपना उ० ऊंचा स० संस्थान जी० जीवाभिगम में जा० यावत्

सा भाणियव्वा नवर भवणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइ भागे, एव सव्व भाणियव्व, जाव सिद्धगडिया सम्मत्ता ॥ कप्पाण पइट्ठाण, बाहल्लुच्चत्तमेव सठाण जीवाभिगमे जाव वेमाणि उद्देसो भाणियव्वो ॥ विईयसए सत्तमो

भाग में वर्तते हैं, उत्तर दक्षिण में रहनेवाले सब भुवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी, व वैमानिकके स्थानक का वर्णन यावत् सिद्ध स्थान प्रतिपादक प्रकरणतक का सब वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना उस का किंचित् विस्तार यह है १ कल्प में विमानों का आधार सौधर्म ईशान देवलोक में विमानों घनोदधि प्रतिष्ठित हैं २ विमान का पिंड सौधर्म ईशान देवलोक में २७०० योजन का पिण्ड है ३ ऊंचाइ-सौधर्म ईशान देवलोक में पांचसो योजन के ऊचे विमान कहे हैं ४ संस्थान-सौधर्म ईशान देवलोक में आवलिका प्रविष्ट त्र्यंस, चउरंस व वर्तुलाकार विमानों हैं, और आवलिका बाहिर विविध प्रकार के संस्थान वाले हैं इस सिवाय और भी विमानका आवलिका परिमाण, वर्ण, प्रभा, गंधादि जीवाभिगम सूत्रके वैमानिक

तीन जो० योजन स० सहस्र दो० दो छ० छत्तीस जो० योजनशत किं० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि म० मध्य में ए० एक जो० योजन स० सहस्र ति० तीन इ० इकतालीस जो० योजनशत किं० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि उ० उपर दो०दो जो० योजन स० सहस्र दो० दो छ० छियासी जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि जा० यावत् मू० मूल में वि० विस्तार म० मध्य में स० संक्षिप्त उ० उपर वि० विशाल म० मध्य में व० प्रधान व० वज्र वि० आकार म० महा मु० मृदंग

क्खंभेण, मज्झे चत्तारि चउव्वीसे जोयणसए विक्खंभेण, उवरिं सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खंभेण, मूले तिण्णि जोयण सहस्साइं दोण्णिय छत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण, मज्झे एग जोयणसहस्सं तिण्णियइएयाल जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण, उवरिं दोण्णिय जोयण सहस्साइं दोण्णिय छलसीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण जावमूले वित्थेड मज्झे संक्खित्ते

जानना उस की परिधि मूलमें ३२३६ योजन से कुच्छ कम, मध्य में १३४१ योजन से कुच्छ कम, और उपर २२८६ योजन से किंचित् विशेष जानना मूलमें विस्तार वाला, मध्य में संकुचित और उपर फीर विस्तार वाला है बीचमें श्रेष्ठवज्रके आकार वाला है महामुकुंद डमरु के आकार वाला सब रत्नमय शोभनिक यावत् प्रतिरूप है उस पर्वत को एक पद्मवरवेदिका और एक वनखंड है वह

ना॰ नाम का उ॰ उत्पात प॰ पर्वत प॰ परूपा स॰ सत्तरह ए॰ इक्कीस जो॰ योजन शत उ॰ ऊंचा उ॰ ऊंचपने च॰ चार ती॰ तीस जो॰ योजन शत को॰ कोश उ॰ ऊंडे गो॰ गौस्तूभ आवास पर्वत का प॰ प्रमाण से ने॰ जानना न॰ विशेष उ॰ उपर प॰ प्रमाण म॰ मध्य में मा॰ कहना मू॰ मूल में द॰ दश बा॰ बावीस जो॰ योजन स॰ शत वि॰ चौडा म॰ मध्य में च॰ चार च॰ चौतीस जो॰ योजन शत वि॰ चौडा उ॰ उपर स॰ सात ते॰ तेवीस जो॰ योजन शत वि॰ चौडा मू॰ मूल में ति॰

बायालीस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थण चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तिगिच्छिकुडे नाम उप्पाय पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए उद्धं उच्चत्ते-ण, चत्तारितीसे जोयणसए कोसच उव्वेहेण, गोथुभस आवासपव्वयस्स पमाणेण णेयव्व, नवर उवरिल्ल पमाण मज्झे भाणियव्व, मूले दस बावीस जोयणसए वि-

में जावे तो वहां चमर नामक असुरेन्द्र का तिगिच्छ कूट नामका उत्पात पर्वत कहा है वह सत्तरह सो इक्कीस (१७२१) योजन का ऊंचा है और ४३० योजन और एक कोसका ऊंडा जमीन में है जैसे लवण समुद्र में नागराजा का गौस्तूभ नामक आवास पर्वत है वैसे ही यहां जानना विशेष इतना कि गोस्तूभ नीचे १०२२ योजन का, मध्यमें ७२३ योजन व उपर ४२४ योजन का चौडा कहा है परंतु तिगिच्छकूट पर्वत नीचे १०२२ योजन, मध्यमें ४२४ और उपर ७२३ योजन का चौडा है ऐसा

जो० योजन स० शत वि० चौडा पा० देखने योग्य व० वर्णन युक्त उ० ऊपर की भू० भूमि व० वर्णन युक्त अ० आठ जो० योजन की म० मणिपीठिका च० चमर का सी० सिंहासन स० परिवार सहित मा० कहना ॥ २ ॥ त० उस ति० तिगिच्छकूट की दा० दक्षिण में छ० छसो क्रोड प० पचावन क्रोड प० पेंतीस लक्ष प० पचास सहस्र जो० योजन अ० अरुणोदय स० समुद्र में ति० तिर्च्छा वी० अतिक्रम से अ० अधो र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में च० चालीस जो० योजन स० सहस्र आ० अवगाहकर कर

पण्णत्ते, अड्ढाइज्जाइ जोयण सयाइ उड्ढुउच्चत्तेण, पणत्तीस जोयण सयाइ विक्खंभेण पासायवन्नओ उल्लोय भूमिवन्नओ, अट्ठजोयणाणि मणिपेढिया चमरस्स सीहासण सपरिवार भाणियव्व ॥ २ ॥ तस्सण तिगिच्छि कूडस्स दाहिणेण छक्कोडिसए पणवण्णच कोडीओ पणतीसच सयसहस्साइ पण्णासच सहस्साइ जोयणाइ अरु-णोदए समुद्दे तिरिय वीतिवइत्ता अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीस जोयण

में सब प्रासादो में श्रेष्ठ ऐसा एक प्रासाद है वह २५० योजन का ऊंचा है १२५योजन का चौडा है, और बहुत ऊंचा है उस प्रासाद के मध्य में आठ योजन की मणिपिठिका है उसमें चमरेन्द्र का सिंहासन व अन्य देव देवियों के सिंहासन रहे हुवे हैं ॥ २ ॥ उस तिगिच्छ कूट से दक्षिण दिशामें छसो पचावन क्रोड पेंतीस लाख पचास हजार (६५५,३५,५०,०००) योजन अरुणोदय समुद्र में तिर्च्छा जावे चालिस हजार

स० सस्थान मे स० सस्थित स सर्व र० रत्नमय अ० स्वच्छ जा० यावत् प० प्रतिरूप से० उस ए० एक प० पद्मवर वे० वेदिका व० वनखंड स० सर्व बाजु स० रहाहुवा प० पद्मवर व० वेदिका व० वनखंड का व० वर्णन ॥ १ ॥ त० उस ति० तिगिच्छ कूटक उ० उत्पात प० पर्वत की उ० उपर ब० बहुत र० रमणिक भू० भूमि भाग प० प्ररूपा व० वर्णन युक्त त० उस ब० बहुत म० मध्य दे० देश भाग में म० बडा ए० एक पा० प्रासाद प० प्ररूपा अ० अढाइ सो योजन उ० ऊंचा उ० ऊंचपने प० पचीस

उप्पिं विसाले मज्झे वरवइरविग्गहे, महामउद सठाण सठिए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ सेण एगाए पउमवरवेइयाए वणखडेणय सव्वओ समता सपरिक्खित्ते पउमवर वेइयाए वणखडस्स य वण्णओ ॥ १ ॥ तस्सणं तिगिच्छिकूडस्स उप्पाय पव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, वन्नओ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स बहु मज्झ देसभाए एत्थण महं एगे पासायवर्डिसए

पद्मवर वेदिका अर्ध योजन की ऊंची व पांचसो धनुष्य की चौडी कही है सब रत्नमय है वह वेदिका तिगिच्छ कूट पर्वत के उपर के तल को चारो तरफ परिधि समान घेर कर रही है उस वेदिका के चारों तरफ चार वनखण्ड दोकोश मे कम के चोडे कहे हैं ॥ १ ॥ उस तिगिच्छकूट पर्वत पर एक बहुत रमणिक भूमिभाग है जैसे नगार का उपर का तल बराबर रहता है वैसाही उस का भूमिभाग है मध्य

अर्धयोजन उ० उचे उ० उच्चपने ए० परस्पर बा० बाजु प० पांच दा० द्वार स० शत अ० अढाइसो जो० योजन उ० उचे उ० उच्चपने ए० एक प० पच्चहस जो० योजन वि० चौडे उ० उपर त० तलमें सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा प० पचास जो० योजन स० सहस्र प० पांच स० सत्तानव जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेष ऊन प० परिधि स० सर्व प्रमाण वे० वैमानिक का प० प्रमाण का अ० अर्ध ने० जानना ॥ २ ॥ ८ ॥

एग पणहत्तरी जोयणाइ विक्खभेण, उवरियतलेण सोलस जोयण सहस्साइ आयाम विक्खभेण, पन्नास जोयण सहस्साइ पचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण सव्वप्पमाण वेमाणियस्स पमाणस्स अद्ध नेयव्व ॥ इइ विईयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ८ ॥

के चौड कहे हैं घरके पीठ सोलह हजार योजन के चौडे कहे हैं उसकी परिधि५०५९७योजन में कुछ कम की जानना सब प्रमाण सौधर्मादि वैमानिक से आधा जानना यह दूसरे शतक का आठवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ८ ॥

गत उद्देशे में देवता का अधिकार कहा अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! समय क्षेत्र क्यों कहता है ? अहो गौतम ! अढाइ द्वीप व दो समुद्र को समय क्षेत्र कहते हैं समय का अर्थ काल

त० तहां च चमरकी अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के च० चमरचचा रा० राज्यधानी प० प्ररूपी प० एक योजन स० लक्ष आ० लम्बी वि० चौडी ज० जम्बूद्वीप प्रमाण दि० द्वीपार्द्ध जो० योजन सत उ० ऊचापने मू० मूल में प० पचास जो० योजन वि० चौडी उ० उपर स० साडीबारह जो० योजन क० कोसीसा कांगडा अ० अर्द्ध जो० योजन आ० लंबे को० कोश वि० चौडा दे० देसऊणा अ०

सहस्साइ उग्गाहित्ता तत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचचानाम राय- हाणी पण्णत्ता । एग जोयण सय सहस्स आयाम विक्खंभेण, जबूदीवप्पमाणा दीवड्ढ जोयण सय उड्ढ उच्चत्तेण मूले पण्णास जोयणाइ विक्खंभेण उवरिं अद्धतेरस जोय- णाइ कविसीसगा अद्धजोयण आयामेणं, कोस विक्खंभेण देसूण अद्धजोयणं उड्ढ उच्चत्तेण एग मेगाए बाहाए पंच २ दार सया अढाइ जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण

योजन रत्नप्रभा पृथ्वी को अवगाहकर चमर नामक असुरेन्द्र की चमरचचा नामक राज्यधानी कही यह राज्यधानी जंम्बूद्वीप प्रमाण एक लाख योजन की लम्बी चौडी कही उस के कोट एक सो पचास योजनके ऊंचे कहे,मूलमें पचास योजनकी चौडी कही उपर साडी बारह योजन की चौडी कही उस उपर कोटके कांगरे आधे कोशके लम्बे, एक कोश के चौडे व कुच्छकम आधेकोशके ऊंचे कहे उस को- ट की एक २ बाजु पांचसो २ दरवज्जे हैं प्रेद्वार अढाइसो योजन के ऊचे व एकसो पचहत्तर योजन

अर्धयोजन उ० ऊचे उ० उंचपने प० परस्पर बा० बाजु प० पांच दा० द्वार स० शत अ० अढाइसो जो० योजन उ० ऊचे उ० ऊंचपने ए० एक प० पचहत्त जो० योजन वि० चौडे उ० उपर त० तलमें सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा प० पचास जो०योजन स०सहस्र प० पांच स०सत्तानव जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेष ऊन प० परिधि स० सर्व प्रमाण वे० वैमानिक का प० प्रमाण का अ० अर्ध ने० जानना ॥ २ ॥ ८ ॥

एग पणहत्तरी जोयणाइ विक्खभेण, उवरियतलेण सोलस जोयण सहस्साइ आयाम विक्खभेण, पन्नास जोयण सहस्साइ पचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण सव्वप्पमाण वेमाणियस्स पमाणस्स अद्ध नेयव्व ॥ इह बिईयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ८ ॥

के चौडे कहे हैं घरके पीठ सोलह हजार योजन के चौडे कहे हैं उसकी परिधि ५०५९७योजन में कुछ कम की जानना सब प्रमाण सौधर्मादि वैमानिक से आधा जानना यह दूसरे शतक का आठवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ८ ॥

गत उद्देशे में देवता का अधिकार कहा अब मनुष्य का आधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! समय-क्षेत्र क्यों कहता है ? अहो गौतम ! अढाइ द्वीप व दो समुद्र को समय क्षेत्र कहते हैं समय का अर्थ काल

कि० यथा इ० इमे भ० भगवन् स० समय क्षेत्र प० कहना गो० गौतम अ० अढाइ दी० द्वीप दो० दो समुद्र प० उपलक्षित स० समय क्षेत्र प० कहा है त० तहां अ० यह जं० जंबूद्वीप स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्र की स० मध्य में ए० ऐसे जी० जीवाभिगम व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध जो० ज्योतिषी वि० छोडकर ॥ २ ॥ ९ ॥ = =

किमिद भते ! समयक्खेत्तेति पवुच्चइ ? गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा दोय समुद्दा एसण पवइए समयक्खेत्तेत्ति पवुच्चइ, तत्थण अय जबूदीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाण स-व्वाब्भिंतरे , एव जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा, जाव अब्भिंतर पुक्खरद्ध जोइस विहूण ॥ इइ बिईयसए नवमा उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ९ ॥ *

होता है अर्थात् जिस क्षेत्र में दिन, पक्ष, मास, वर्ष वगैरह काल उपलक्षित होवे-सूर्य की गति से जाना जावे उसे समय क्षेत्र कहा है अढाई द्वीप की बाहिर सूर्यादि ज्योतिषी के विमानोंका हलन चलन नहीं होता है अढाई द्वीप में सब द्वीप समुद्रों में छोटा प्रथम जम्बूद्वीप नामक द्वीप है वगैरह अढाइ द्वीप की वक्तव्यता जैसी जीवाभिगम में कही है वैसी यहां पर कहना मात्र ज्योतिषी की वक्तव्यता नहीं कहना यह दूसरे शतकका नववा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ९ ॥ + + +

क० कितनी भं० भगवन् अ० अस्तिकाय गो० गौतम प० पांच अ० अस्तिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्ति काय आ० आकाशास्ति काय जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्ति काय ॥ १ ॥ ध० धर्मा

कइण भंते ! आत्थिकाया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच आत्थिकाया पण्णत्ता तंजहा धम्मात्थिकाए, अधम्मात्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवात्थिकाए पोग्गलात्थि काए

गत उद्देशे में क्षेत्रका स्वरूप कहा है, उस में आस्तिकाय होने से आस्तिकाया का स्वरूप कहते हैं अहो भगवन् ! अस्तिकाय कितनी कही ? अहो गौतम ! अस्तिकाय पांच कही अस्ति शब्द से प्रदेश ग्रहण करना और कायशब्द से राशि अर्थात् प्रदेशों की राशि—समुदाय सो अस्तिकाय अथवा अस्ति शब्द काल त्रय वाची अव्यय है इस से जो प्रदेश अतीत काल में थे, वर्तमान में हैं और आगामिक में होंगे सो अस्तिकाय उस के नाम धर्मास्तिकाय * अधर्मास्ति काय, आकाशास्तिकाय, जीवास्ति काय

* धर्मास्तिकाय पद मांगलीक होने से प्रथम ग्रहण किया है, तत्पश्चात् धर्मास्तिकाय का विपरीत स्वभाव वाला अधर्मास्तिकाय, इन को आधार भूत आकाशास्तिकाय, अनंत अमूर्तत्व का साधर्म्य स्वभाव होने से जीवास्ति काय, और उस का उपष्टंभ करने वाला पुद्गल होने से पुद्गलास्ति काय ऐसा क्रम रक्खा गया है

कि० क्या इ० इसे भ० भगवन् स० समय क्षेत्र प० कहना गो० गौतम अ० अढाइ द्वी०द्वीप द्वो० दो समुद्र प० उपलक्षित स० समय क्षेत्र प० कहा है त० तहां अ० यह जं० जंबूद्वीप स० सर्व द्वी० द्वीप स० समुद्र की स० मध्य में ए० एसे जी० जीवाभिगम व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् अ० आभ्यतर पु० पुष्करार्ध जो० ज्योतिषी वि० छोडकर ॥ २ ॥ ९ ॥ = =

किमिदं भंते ! समयक्खेत्तेति पवुच्चइ ? गोयमा ! अड्डाइज्जा दीवा दोय समुद्दा एसणं एवइए समयक्खेत्तेत्ति पवुच्चइ, तत्थणं अयं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भितरे, एवं जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा, जाव आब्भितर पुक्खरद्धं जोइस विहूणं ॥ इइ बिईयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ९ ॥ ✽

होता है अर्थात् जिस क्षेत्र में दिन, पक्ष, मास, वर्ष वगैरह काल उपलक्षित होवे सूर्य की गति से जाना जावे उसे समय क्षेत्र कहा है अढाई द्वीप की बाहिर सूर्यादि ज्योतिषी के विमानोंका हलन चलन नहीं होता है अढाई द्वीप में सब द्वीप समुद्रों में छोटा प्रथम जम्बूद्वीप नामक द्वीप है वगैरह अढाइ द्वीप की वक्तव्यता जैसी जीवाभिगम में कही है वैसी यहां पर कहना मात्र ज्योतिषी की वक्तव्यता नहीं कहना यह दूसरे शतकका नवचा उद्देशा समाप्त हुआ ॥ २ ॥ ९ ॥ + + +

नहीं क० कदापि न० नहीं हैं जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से ग० गमन गुण अ० 'अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष गु० गुण से ठा० स्थानगुण आ० आकाशास्तिकाय ए० एसे न० विशेष खे० क्षेत्र से लो० लोकालोक प्रमाण अ० अनंत जा० यावत गु० गुण से अ० अवगाहना गुण जी० जीवास्तिकाय में भ० भगवन क० कितना व० वर्ण ग० गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम अ० अवर्ण जा० यावत् अ० अरूपी जी० जीव सा०

न आसि न कयाइ नत्थि जाव निच्चे, भावओ अवन्ने अगंधे, अरसे,अफासे, गुणओ गमणगुणे अहम्मत्थि काएवि एव चेव नवर गुणओ ठाणगुणे ॥ आगासत्थि काएवि एव चेव, नवर खेत्तआण आगासत्थिकाए, लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंतेचेव, जाव गुणओ अवगाहगुणे ॥ जीवत्थिकाएण भंते ! कइवण्णे, कइगंधे,

संपूर्ण लोक प्रमाण, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान है और अनागत में होगा यावत् नित्य रहेगा भाव से धर्मास्तिकाय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं होते हैं और गुण से धर्मास्तिकाया में गमन गुण जैसे मत्स्य को जल का आश्रय रहता है वैसे ही जीव पुद्गलको धर्मास्ति कायगति कराता है अधर्मास्ति कायाका भी वैसे ही जानना मात्र स्थिर गुण ग्रहण करना आकाशास्ति काय में भी धर्मास्ति

स्तिकाय भ० भगवन् क० कितना व० वर्ण ग० गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श अ० अरूपी अ० अजीव सा० शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से प० पांच प्रकार की द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से गु० गुणों से द०द्रव्य से ए०एकद्रव्य खे०क्षेत्र से लो०लोक प्रमाण का०कालसे न०नहीं क०कदापि न०नहीं आ० था न०

॥ १ ॥ धम्मत्थि काएणं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे ? गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे, अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ । दव्वओणं धम्मत्थिकाए एगेदव्वे, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ,

और पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाया में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाया में पांच वर्ण में से एक भी वर्ण नहीं है, दो गंध में से एक भी गंध नहीं है, पांच रस में से एक भी रस नहीं है, आठ स्पर्श में से एक भी स्पर्श नहीं है अरूपी, अजीव, शाश्वत अवस्थित व पंचास्ति कायिक लोक होने से उन का एक अंशभूत द्रव्य है उस के द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से व गुण से ऐसे पांच भेद किये हैं द्रव्य से धर्मास्तिकाय एक द्रव्य, क्षेत्र से धर्मास्तिकाय

नहीं क० कदापि न० नहीं हैं जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से ग० गमन गुण अ० अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष गु० गुण से ठा० स्थानगुण आ० आकाशास्तिकाय ए० एसे न० विशेष खे० क्षेत्र से लो० लोकालोक प्रमाण अ० अनत जा० यावत गु० गुण से अ० अवगाहना गुण जी० जीवास्तिकाय में भ० भगवन क० कितना व० वर्ण ग० गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम अ० अवर्ण जा० यावत् अ० अरूपी जी० जीव सा०

न आसि न कयाइ नत्थि जाव निच्चे, भावओ अवन्ने अगंधे, अरसे,अफासे, गुणओ गमणगुणे अहम्मत्थि काएवि एव चेव नवर गुणओ ठाणगुणे ॥ आगासत्थि काएवि एव चेव, नवर खेत्तओण आगासत्थिकाए, लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणतेचेव, जाव गुणओ अवगाहगुणे ॥ जीवत्थिकाएण भंते ! कइवण्णे, कइगंधे,

संपूर्ण लोक प्रमाण, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं, और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान है और अनागत में होगा यावत नित्य रहेगा भाव से धर्मास्तिकाय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं होते हैं और गुण से धर्मास्तिकाया में गमन गुण जैसे मत्स्य को जल का आश्रय रहता है वैसे ही जीव पुद्गलको धर्मास्ति कायगति कराता है अधर्मास्ति कायाका भी वैसे ही जानना मात्र स्थिर गुण ग्रहण करना आकाशास्ति काय में भी धर्मास्ति

शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० सक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से जा० यावत् गु० गुण से द० द्रव्य से अ० अनंत जी० जीव द्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोक प्रमाण का० कालसे न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से उ० उपयोग गुण पो० पुद्गलास्तिकाय भ० भगवन् क० कितने वर्ण क० कितने गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम प० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध अ० आठ स्पर्श रू० रूपी अ० अजीव सा०

कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी, जीवे सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे, । से समासओ पचविहे प० त० दव्वओ जाव गुणओ दव्वओण जीवत्थिकाए अणताइ जीवदव्वाइ, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे भावओ पुण अवन्ने, अगधे, अरसे अफासे, गुणओ उवओग गुणे । पोग्गलत्थि काएण भते ! कइवण्णे, कइगधरसफासे ? गोयमा ! पचवन्ने पचरसे, दुगधे,

काय जैसा परंतु क्षेत्र से आकाशास्ति काय लोकालोक प्रमाण अनत, और गुण से अवगाहन–अवकाश देने वाला–गुण है अहो भगवन् ! जीवास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! जीवास्ति काय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं है वह अरूपी, जीव, शाश्वत, अवस्थित व लोक द्रव्य है उसके पांच भेद किये गये हैं द्रव्य से यावत् गुण से द्रव्य से जीव द्रव्य अनत, क्षेत्र से लोक प्रमाण, काल से अतीत में

शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से प० पांच प्रकार का द० द्रव्य से अ० अनंत द्रव्य ख० क्षेत्र से लो० लोक प्रमाण मात्र का० काल से न० नहीं क० कदापि व० थ आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से व० वर्ण वाला ग० गंधवाला र० रसवाला फा० स्पर्श वाला गु० गुण से ग०

अट्ठफासे, रूवी, अजीवे, सासए अवट्ठिए, लोगदव्वे से समासओ पचविहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ। दव्वओणपोग्गलत्थिकाए अणताइ दव्वाइ, खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे भावओ वण्णमते,

नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं है और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान में है, और अनागत में होगा यावत नित्य है भाव से वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहित अरूपी है गुण से उपयोग लक्षण वाला है अहो भगवन् ! पुद्गलास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं? अहो गौतम! पुद्गलास्ति कायमें पांचवर्ण, पांचरस, दो गंध, और आठ स्पर्श हैं वह रूपी, अजीव, शाश्वत, अवस्थित यावत् लोक द्रव्य है उस के द्रव्य से यावत् गुण से ऐसे पांच भेद किये हैं द्रव्य से पुद्गला-स्तिकाय अनंत है, क्षेत्र से लोक प्रमाण है, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है भाव से वर्ण, गंध, रस स्पर्श सहित है, और गुण से ग्रहणगुण वाला है अर्थात् परस्पर मीलते परिण

शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से जा० यावत् गु० गुण से द० द्रव्य से अ० अनंत जी० जीव द्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोक प्रमाण का० कालसे न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से उ० उपयोग गुण पो० पुद्गलास्तिकाय भ० भगवन् क० कितने वर्ण क० कितने गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम प० पांचवर्ण प० पांचरस दु० दोगंध अ० आठस्पर्श रू० रूपी अ० अजीव सा०

कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी, जीवे सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे, । से समासओ पचविहे प० त० दव्वओ जाव गुणओ दव्वओण जीवत्थिकाए अणताइ जीवदव्वाइ, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे भावओ पुण अवन्ने, अगधे, अरसे अफासे, गुणओ उवओग गुणे । पोग्गलात्थि काएण भते ! कइवण्णे, कइगधरसफासे ? गोयमा ! पचवन्ने पचरसे, दुगधे,

काय जैसा परंतु क्षेत्र से आकाशास्ति काय लोकालोक प्रमाण अनंत, और गुण से अवगाहन-अवकाश देने वाला-गुण है अहो भगवन् ! जीवास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! जीवास्ति काय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं है यह अरूपी, जीव, शाश्वत, अवस्थित व लोक द्रव्य है उसके पांच भेद किये गये हैं द्रव्य से यावत् गुण से द्रव्य से जीव द्रव्य अनंत, क्षेत्र से लोक प्रमाण, काल से अतीत में

ऊणा को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना णो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० 'धर्मास्तिकाया के प्रदेश को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना जा० यावत् ए एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काया को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो० गौतम खं० खंडित च० चक्र स० सपूर्ण च० चक्र भ० भगवन् नो० नहीं ख० खंडित चक्र स० सपूर्ण चक्र ए०

त्रियण धम्मात्थिकाए धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया जाव एगपदे-सूणेत्रियण धम्मात्थिकाए नो धम्मात्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया, ॥ सेणूण गोयमा ! खडे चक्के सगले चक्के ? भगव ! नो खडे चक्के सगले चक्के । एव छत्ते, चम्मे, दडे,

अहो भगवन् ! किस कारनसे धर्मास्तिकाय के एक प्रदेश को धर्मास्तिकाय नहीं कहना ऐसे ही दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, सख्यात, अनख्यात यावत् एक प्रदेश कम को धर्मास्ति काय नहीं कह सकते हैं ? अहो गौतम ! चक्र के टुकडे को क्या चक्र कहना ? अहो भगवन् ! चक्र के टुकडे को चक्र नहीं कहना परन्तु पूर्ण चक्र को ही चक्र कहना और भी चमर के अमुक विभाग को क्या चमर कहना, छत्र के अमुक विभाग को क्या छत्र कहना, दंडके

ग्रहणगुण ॥२॥ ए० एक भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय का प०प्रदेश को ध० धर्मास्तिकाय व०कहना गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे दो० दो ति० तीन च० चार प० पांच छ० छ स० सात अ० आठ न० नव द० दश स० सख्याते अ० असख्याते भ० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय का प०प्रदेश को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० एक प्रदेश

गध रस फासमते, गुणओ गहणगुणे ॥ २ ॥ एगे भते ! धम्मत्थिकाय प्पदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे एव दोन्निवि तिन्निवि, चत्तारि, पच, छ, सत्त, अट्ठ,नव, दस, सखेज्जा, असखेज्जा भते ! धम्मत्थिकाय-प्पदेसा धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे एगपदेसूणे

पने हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! धर्मास्ति काय के एक प्रदेश को क्या धर्मास्ति काय कहना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय के दो, तीन चार, पांच, छ सात, आठ, नव, दश, सख्याते या असंख्याते प्रदेश को क्या धर्मास्तिकाय कहना, ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय, के समस्त प्रदेशों में से एक प्रदेश कम होवे तो क्या उसे धर्मास्तिकाया कहना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है

ऊणा को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० धर्मास्तिकाया के प्रदेश को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना जा० यावत् ए० एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काया को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो० गौतम ख० खंडित च० चक्र स० सपूर्ण च० चक्र भ० भगवन् नो० नहीं खं० खंडित चक्र स० सपूर्ण चक्र ए०

त्रियण धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया जाव एगपदे-सूणे त्रियण धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया, ॥ सेणूण गोयमा ! खडे चक्के सगले चक्के ? भगव ! नो खडे चक्के सगले चक्के। एव छत्ते, चम्मे, दडे,

अहो भगवन् ! किस कारनसे धर्मास्तिकाय के एक प्रदेश को धर्मास्तिकाय नहीं कहना ऐसे ही दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, संख्यात, असंख्यात यावत् एक प्रदेश कम को धर्मास्ति काय नहीं कह सकते है ? अहो गौतम ! चक्र के टुकडे को क्या चक्र कहना ? अहो भगवन् ! चक्र के टुकडे को चक्र नहीं कहना परन्तु पूर्ण चक्र को ही चक्र कहना और भी चमर के अमुक विभाग को क्या चमर कहना, छत्र के अमुक विभाग को क्या छत्र कहना, दडके

ऐसे छ० छत्र च० चमर द० दंड दू० वस्त्र आ० आयुध मो० मोदक मे० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० धर्मास्तिकाय प्रदेश ना० नहीं ध० धर्मास्ति काय व० कहना जा० यावत् ए० एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काय को णो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय न०कहना से०वह किं०क्या ख्या० ख्याति केलिये भ० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय व०कहना गो०गौतम अ०असख्यात ध०धर्मास्ति काय के प० प्रदेश ते०वे स० सर्व क० कृत्स्न प०प्रतिपूर्ण नि० निरवशेष ए० एक ग० ग्रहण

दूसे, आउह, मोयए, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे णो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया जाव एगपदेसूणेवियण धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया। से किं खाइएण भते ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिमा ? गोयमा ! असखेज्जा धम्मत्थि कायप्पएसा ते सव्वे कसिणा, पडिपुण्णा निरवसेसा एक्कग्गहण गहिया एसण

टुकडे को दंड कहना, वस्त्र के टुकडे को वस्त्र कहना, आयुध के टुकडे को आयुध कहना, या लड्डुके टुकडे को क्या लड्डु कहना ? अहो भगवन् ! ऐसा नहीं कहा जाता है इसी तरह अहो गौतम ! धर्मास्ति काय के एक प्रदेश यावत एक प्रदेश कम को धर्मास्तिकाय नहीं कह सकते हैं * क्यों कि

---

* यह वचन निश्चय नयकी अपेक्षासे ग्रहण कियाहै क्योंकि व्यवहार नयसे खण्डित घडेको घडा कहते हैं वैसेही धर्मास्तिकायके एक प्रदेश वगैरह को भी धर्मास्तिकाय कह सकते हैं

दार्थ

ग० ग्रहित को गो० गौतम ध० धर्मास्ति काय व० कहना ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय आ० आका शास्ति काय जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्ति ए० ऐसे ही न० विशेष ति० तीन का प०प्रदेश अ० अनत भा० कहना ॥ ३ ॥ जी० जीव भ० भगवन् स० उत्थान सहित स० कर्म सहित स० बलसहित स वीर्यसहित म० पुरुषात्कार पराक्रम सहित आ० आत्म मात्र से उ० देखावे व० कहना हं० हा गो०

मूल

गोयमा ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया एव अहम्मत्थिकाएवि, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकाय, पोग्गलत्थि काएवि एव चेव नवर तिण्हपि पएसा अणता भाणियव्वा सेस तचेव ॥ ३ ॥ जीवेण भते ! सउट्ठाणे, सकम्मे, सवले, सवीरिए, सपुरिसकार परक्कमे, आयभावेण जीवभाव उवदसेईति वत्तव्व सिया ? हता गोयमा !

भावार्थ

तब अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय किसको कहतेहैं ? असंख्यात प्रदेशात्मक धर्मास्ति काय है यह सब कृत्स्न, प्रतिपूर्ण, निरविशेष और एकही शब्द कहनेमें सब आजावे वैसे होवे उसी ही धर्मास्तिकाया कहते हैं ऐसेही अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय व पुद्गलास्ति कायका जानना विशेष इतना कि आकाशास्तिकायादिक में प्रदेश अनत होनेसे अनत कहना ॥ ३ ॥ उपयोग लक्षण वाला जीवास्ति काय पहिले कहा अब जीव के उत्थानादि गुणों बताते है अहो भगवन् ! उत्थान, कर्म, बल,

गौतम जी० जीव स० उत्थान सहित जा० यावत् उ० देखाडे व० कहना से० वह के० कैसे जा० यावत् व० कहना गो० गौतम जी० जीव अनंत आ० मतिज्ञान प० पर्यव ए० ऐसे सु० श्रुतज्ञान पर्यव ओ० अवधिज्ञान पर्यव म० मन पर्यवज्ञान पर्यव के० केवलज्ञान के पर्यव म० मतिअज्ञान के पर्यव सु० श्रुतअज्ञान के पर्यव वि० विभंगज्ञान के पर्यव च० चक्षुदर्शन के पर्यव अ० अचक्षुदर्शन के पर्यव ओ० अवदर्शन पर्यव के० केवलदर्शन के पर्यव उ० उपयोग का ग० जावे उ० उपयोग लक्षण से से० वह ते०

जीवेण सउट्ठाणे जाव उवदसेईति वत्तव्व सिया। सेकेणट्ठेण जाव वत्तव्व सिया? गोयमा! जीवेण अनंता आभिणिबोहियनाणपज्जवाण, एव सुयनाणपज्जवाण, ओहिनाण पज्जवाण, मणपज्जवनाणपज्जवाण केवलणाणपज्जवाण, मइअन्नाणपज्जवाण, सुयअन्नाण पज्जवाण विभगनाणपज्जवाण, चक्खुदसणपज्जवाण, अचक्खुदसणपज्जवाण, ओहिदसण

वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम सहित जीव आत्मपरिणाम मे से क्या चैतन्यपना बताता है! अहो गौतम! उत्थानादि सहित जीव आत्मभाव से चैतन्यपना बताता है अहो भगवन्! किस तरह से उत्थानादि सहित जीव चैतन्यपना बताता है! अहो गौतम! जीव अनंत मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान विभंग ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधि दर्शन व केवल दर्शन के पर्यायात्मक चैतना लक्षण को कहा जाता है अर्थात् आत्मभाव में वर्तता है

इतलिये ए० ऐसा वु० कहाजाता है गो० गौतम जी० जीव स० उत्थानसहित जा० यावत् व० कहना ॥ ४ ॥ क० कितना प्रकारका भ० भगवन् आ० आकाश गो० गौतम दु० दोप्रकार का आ० आकाश लो० लोक आकाश अ० अलोक आकाश लो० लोकाकाश में किं० क्या जी० जीव जी० जीवदेश जी० जीवप्रदेश अ० अजीव अ० अजीवदेश अ० अजीव प्रदेश गो० गौतम जी० जीव जी० जीवदेश जी० जीवप्रदेश अ० अजीव अ० अजीवदेश अ० अजीव प्रदेश जे० जो जी० जीव ते० वे नि० निश्चय ए० एकेन्द्रिय बे० बेइन्द्रिय

पज्जवाण, केवलदंसण पज्जवाण, उवओग गच्छइ, "उवओग लक्खणेण जीवे" सेतेणट्ठे-णं एवं वुच्चइ, गोयमा ! जीवे सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं सिया ॥ ४ ॥ कइविहेणं भंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प० त० लोयागासेय, अलोयागासेय । लोयागासेणं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि, जीवदेसावि, जीव पदेसावि, अजीवावि, अजीव-

उपयोग लक्षण वाला जीव कहाता है इससे अहो गौतम ' उत्थानादि सहित जीव आत्म-भाव से चैतन्यपना बताता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! आकाश के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आकाश के दो भेद कहे हैं १ लोकाकाश और २ अलोकाकाश अहो भगवन् ! लोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश, जीव के प्रदेश, व अजीव, अजीव के देश या अजीव के प्रदेश हैं ? अहो गौतम !

गौतम जी० जीव स० उत्थान सहित जा० यावत् उ० देखाडे व० कहना से० वह के० कैसे जा० यावत् व० कहना गो० गौतम जी० जीव अनंत आ० मतिज्ञान प० पर्यव ए० ऐसे सु० श्रुतज्ञान पर्यव ओ० अवधिज्ञान पयव म० मन पर्यवज्ञान पर्यव के० केवलज्ञान के पर्यव म० मतिअज्ञान के पर्यव सु० श्रुतअज्ञान के पर्यव वि० विभंगज्ञान के पर्यव च० चक्षुदर्शन के पर्यव अ० अचक्षुदर्शन के पर्यव ओ० अव दर्शन पर्यव के० केवलदर्शन के पर्यव उ० उपयोग का ग० जाने उ० उपयोग लक्षण से से० वह ते०

जीवेण सउट्ठाणे जाव उवदसेईति वत्तव्वं सिया। सेकेणट्ठेणं जाव वत्तव्वं सिया? गोयमा! जीवेणं अनंता आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, एवं सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाण पज्जवाणं, मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलणाणपज्जवाणं, मइअन्नाणपज्जवाणं, सुयअन्नाण पज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणं, चक्खुदंसणपज्जवाणं, अचक्खुदंसणपज्जवाणं, ओहिदंसण

वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम सहित जीव आत्मपरिणाम में से क्या चैतन्यपना बताता है? अहो गौतम? उत्थानादि सहित जीव आत्मभाव से चैतन्यपना बताता है अहो भगवन्! किस तरह से उत्थानादि सहित जीव चैतन्यपना बताता है? अहो गौतम! जीव अनंत मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान विभंग ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधि दर्शन व केवल दर्शन के पर्यायात्मक चेतना लक्षण को कहा जाता है अर्थात् आत्मभाव में वर्तता है

नहीं अ॰ अधर्मास्ति काय का देश अ॰ अधर्मास्ति काय का प्रदेश अ॰ काल ॥५॥ अ॰ अलोकाकाश में भ॰ भगवन् किं॰ क्या जी॰ जीव गो॰ गौतम नो॰ नहीं जीव जा॰ यावत् नो॰ नहीं अजीव प्रदेश ए॰ एक

पचविहा पण्णता तजहा धम्मत्थिकाए, नो धम्मात्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मात्थिकायस्स देसे, अधम्मात्थिकायस्स पदेसा । अद्धासमए ॥ ५ ॥ अलोयाकासेण भते ! किं जीवा पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नो जीवा जाव

और ७ काल * ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अलोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश व प्रदेश वगैरह हैं ? अहो गौतम ! अलोकाकाश में जीव, जीव के देश व प्रदेश यावत् अजीव के प्रदेश नहीं हैं परंतु अगुरुलघुभूत

* अजीव अरूपिके सब मीलकर दश भेद किये हैं; उसमेंसे यहां पांचही ग्रहण किये हैं उसका सबब यह है कि यहां पर आकाश आश्रित पृच्छाहै इससे आकाशास्तिकायाका स्कंध, देश व प्रदेश यह तीन नहीं ग्रहण किये हैं मात्र धर्मास्तिकाया व अधर्मास्तिकायाके स्कंध व प्रदेश ग्रहण कियेहैं धर्मास्ति काय व अधर्मास्ति कायके देश नहीं ग्रहण करनेका सबब यह है कि जब संपूर्ण वस्तुकी विवक्षा की जाती है तब धर्मास्तिकाय ऐसाही कहाजायगा और उसके अंशकी विवक्षा करे तब उसके प्रदेश ही ग्रहण किये जायेंगे क्योंकि ये दोनों अवस्थित हैं इनकी हानि वृद्धि नहीं होतीहै इससे स्कंध व प्रदेश ग्रहण किये गये हैं और देशका प्रतिषेध कियाहै

से०तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय प० पचेन्द्रिय अ० अनिन्द्रिय जे० जो जी० जीवदेश ते० वे नि०निश्चय ए० एकेन्द्रिय देश जा० यावत् अ० अनिन्द्रिय प प्रदेश जे० जो अ० अजीव ते० वे दु० दो प्रकार के प० प्ररूपे रू० रूपी अ० अरूपी जे० जो रू० रूपी ते० वे च० चार प्रकार के खं० स्कन्ध खं० स्कन्धदेश ख० स्कन्ध प्रदेश प० परमाणु पुद्गल जे० जो अ० अरूपी ते० वे प० पांच प्रकार के ध० धर्मास्तिकाय नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय का देश ध० धर्मास्तिकाय काय का प्रदेश अ० अधर्मास्ति काय नो०

देसावि,अजीव पदेसावि । जे जीवा ते नियमा एगिंदिया,बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया, अणिंदिया जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियपदेसा ॥ जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा रूवीय, अरूवीय । जेरूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा खधा, खधदेसा, खधपदेसा, परमाणु पोग्गला । जे अरूवी ते

लोकाकाश में जीव, जीव के देश, जीव के प्रदेश, अजीव, अजीव के देश व अजीव के प्रदेश हैं जो जीव हैं वे एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय व अनिन्द्रिय हैं जो जीव के देश हैं वे भी एकेन्द्रिय यावत् अनिन्द्रिय के देश हैं और वैसे ही प्रदेश हैं अजीव के दो भेद १ रूपी अजीव २ अरूपी अजीव रूपी अजीव के चार भेद स्कंध, स्कंध देश, स्कंध प्रदेश व परमाणु पुद्गल अरूपी अजीव के पांच भेद १ धर्मास्तिकाय २ धर्मास्तिकाया का प्रदेश, ३ अधर्मास्तिकाय. ४ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश

नहीं अ० अधर्मास्ति काय का देश अ० अधर्मास्ति काय का प्रदेश अ० काल ॥५॥ अ० अलोकाकाश में भ० भगवन् किं० क्या जी० जीव गो० गौतम नो० नहीं जीव जा० यावत् नो० नहीं अजीव प्रदेश ए० एक

पचविहा पण्णता तजहा धम्मात्थिकाए, नो धम्मात्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मात्थिकायस्स देसे, अधम्मात्थिकायस्स पदेसा । अद्धासमए ॥ ५ ॥ अलोयाकासेण भते ! किं जीवा पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नो जीवा जाव

और ५ काल * ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अलोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश व प्रदेश वगैरह हैं ? अहो गौतम ! अलोकाकाश में जीव, जीव के देश व प्रदेश यावत् अजीव के प्रदेश नहीं हैं परंतु अगुरुलघुभूत

* अजीव अरूपिके सब मीलकर दश भेद किये हैं, उसमेंसे यहां पांचही ग्रहण किये हैं उसका सबब यह है कि यहां पर आकाश आश्रित पृच्छाहै इससे आकाशास्तिकायाका स्कंध, देश व प्रदेश यह तीन नहीं ग्रहण कियेहैं मात्र धर्मास्तिकाया व अधर्मास्तिकायाक स्कंध व प्रदेश ग्रहण कियेहैं धर्मास्ति काय व अधर्मास्ति-कायक देश नहीं ग्रहण करनेका सबब यह है कि जब संपूर्ण वस्तुकी विवक्षा की जाती है तब धर्मास्तिकाय ऐसाही कहाजायगा और उसके अंशकी विवक्षा करे तब उसके प्रदेश ही ग्रहण किये जायेंगे क्योंकि ये दोनों अवस्थित हैं इनकी हानि वृद्धि नहीं होतीहै इससे स्कंध व प्रदेश ग्रहण किये गये हैं और देशका प्रतिषेध कियाहै

अ० अजीव द० द्रव्य देश अ० अगुरुलघु अ० अनंत अ० अगुरुलघु गु० गुण से स० युक्त स० सर्व आकाश अ० अनंत भाग ऊणा ॥ ६ ॥ ध० धर्मास्तिकाय भं० भगवन् के० कितनी बडी गो० गौतम लो० लोक में लो० लोक मात्र लो० लोक प्रमाण लो० लोक को स्पर्शी लो० लोक को फु० स्पर्श कर चि० रही है ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय लो० लोकाकाश जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्तिकाय ए०

नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदसे अगुरुयलहुए, अणतेहिं, अगुरुय लहुयगुणेहिं सजुत्ते, सव्वागासे अणतभागूणे ॥ ६ ॥ धम्मत्थिकाएण भंते ! के महालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए, लोयमेत्ते, लोयप्पमाणे, लोयफुडे, लोयचेव फासित्ताण, चिट्ठइ ॥ एवं अहम्मत्थिकाए, लोयाकासे, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए पचाविएक्काभिलावा ॥७॥

अजीव द्रव्य का एक देश है क्यों कि सपूर्ण लोकालोक का आकाश मीलकर एक स्कध होता है और अलोक में मात्र एक अलोकाकाश ही है इसलिये एक अजीव द्रव्य का देश गिना गया है यह अनत स्वपर्यायरूप अगुरुलघु स्वभाव सहित है लोकाकाश की अपेक्षा से अनंत भाग रूप है इस से सब आकाश के अनतवे भाग कम बतलाया है ॥ ६ ॥ अब धर्मास्तिकायादि के प्रमाण का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय कितनी बडी है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय पंचास्तिकायमय लोक जैसी है, लोक मात्र है, लोक प्रदेश प्रमाण है, सब लोक के प्रदेश को स्पर्श कर रही है ऐसे ही अधर्मास्तिकाय

पांच का ए० एक अ० अभिलाप ॥ ७ ॥ अ० अधो लोक में भ० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय कि० कितनी फु० स्पर्शी है सा० कुच्छ अधिक अ० अर्ध से फु० स्पर्शे ति० तिर्च्छालोक में अ० असंख्यातवे भा० भाग को फु० स्पर्शे उ० ऊर्ध्व लोक में दे० देशऊणा अ० अर्ध फु० स्पर्शे ॥ ८ ॥ र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी ध० धर्मास्तिकाय कि० क्या सं० संख्यातवे भा० भाग फु० स्पर्शे अ० असंख्यातवे भाग फु० स्पर्शे स०

अहो लोएण भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइय फुसइ ? गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसइ ॥ तिरिय लोएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! असंखज्जइ भाग फुसइ ॥ उड्डलोएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! देसूण अद्ध फुसइ ॥ ८ ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभाणं पुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भाग फुसइ, असंखेज्जइ भाग फुसइ सव्व फुसइ ? गोयमा ! णो संखेज्जे भाग फुसइ, असंखेज्जे भाग फुसइ,

व लोकाकाश का जान ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! अधोलोक में धर्मास्तिकाय कितनी स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! आधे से कुछ अधिक धर्मास्तिकाया का विभाग स्पर्श कर रहा है क्यों कि सब मीलकर चौदह राजु का लोक है, उस में से अधोलोक सात राजु से कुछ अधिक है अहो भगवन् ! तिर्च्छालोक में कितनी धर्मास्तिकाय स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! तिर्च्छा लोक में धर्मास्तिकाय असंख्यातवे भाग स्पर्श कर रही है क्यों कि १८०० योजन का तिर्च्छा लोक है ऊर्ध्व लोक में धर्मास्तिकाय आधे से कुछ कम स्पर्श कर रही है क्यों कि सात राजू से कुछ कम ऊर्ध्व लोक है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् !

अ० अजीव द० द्रव्य देश अ० अगुरुलघु अ० अनंत अ० अगुरुलघु गु० गुण से स० युक्त स० सर्व आकाश अ० अनंत भाग ऊणा ॥ ६ ॥ ध० धर्मास्तिकाय भं० भगवन् के० कितनी बडी गो० गौतम लो० लोक में लो० लोक मात्र लो० लोक प्रमाण लो० लोक को स्पर्शी लो० लोक को फु०स्पर्श कर चि० रही है ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय लो० लोकाकाश जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्तिकाय प०

नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदसे अगुरुयलहुए, अणतेहिं, अगुरुय लहुयगुणेहिं सजुत्ते, सव्वागासे अणतभागूणे ॥ ६ ॥ धम्मत्थिकाएण भंते ! के महालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए, लोयमेत्ते, लोयप्पमाणे, लोयफुडे, लोयचेव फुसित्ताण, चिट्ठइ ॥ एवं अहम्मत्थिकाए, लोयाकासे, जीवात्थिकाए, पोग्गलात्थिकाए पचावि एक्काभिलावा ॥७॥

अजीव द्रव्य का एक देश है क्यों कि सपूर्ण लोकालोक का आकाश मीलकर एक स्कध होता है और अलोक में मात्र एक अलोकाकाश ही है इसलिये एक अजीव द्रव्य का देश गिना गया है यह अनत स्वपरपर्यायरूप अगुरुलघु स्वभाव सहित है लोकाकाश की अपेक्षा से अनत भाग रूप है इस से सब आकाश के अनंतवे भाग कम बतलाया है ॥ ६ ॥ अब धर्मास्तिकायादि के प्रमाण का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय कितनी बडी है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय पंचास्तिकायमय लोक जैसी है, लोक मात्र है, लोक प्रदेश प्रमाण है, सब लोक के प्रदेश को स्पर्श कर रही है एसे ही अधर्मास्तिकाय

र० रत्नप्रभा त० तैसे घ० घनोदधि घ० घनवात त० तनुवात ॥ १० ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा का उ० आकाशांतर ध०धर्मास्तिकाया को किं०क्या गो०गौतम स० सख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे अ०असख्यात भाग को फु० स्पर्शे गो० गौतम स० सख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं सं०संख्यात भाग को नो०नहीं अ०असख्यात भाग को नो० नहीं स० सर्व को उ० आकाशान्तर स० सर्व ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की व० वक्तव्यता भ० कही ए० ऐसे जा०

तहा घणोदहिघणवायतणुवायानि ॥ १० ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवासतरे धम्मत्थिकायस्स किं सखेज्जइ भाग फुसइ, असखेज्जइ भाग फुसइ ? पुच्छा गोयमा सखेज्जइ भाग फुसइ, णो असखेज्जइ भाग फुसइ, णो सखेज्जे,नो असखेज्जे, नो सव्व फुसइ ॥ उवासतराइ सव्वाइ जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया

जानना इसी तरह घनवात व तनुवात का जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तरको धर्मास्तिकाया क्या सख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है यावत् सब स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तर को धर्मास्तिकाय सख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का आकाशान्तर कहा वैसे ही सातवी पृथ्वी तक के सब आकाशान्तर का जानना ॥ ११ ॥

सख्यात भाग फु० स्पर्शे अ० असख्यात भाग फु० स्पर्शे स० सर्व फु० स्पर्शे गो० गोतम नो-नहीं सं० संख्यातवे भाग फु० स्पर्शे अ० असख्यातवे भाग फु० स्पर्शे णो० नहीं स० सख्यात भाग फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असख्यात भाग फु० स्पर्शे नो० नहीं स० सर्व फु० स्पर्शे ॥ ९ ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी का घ० घनोदधि ध० धर्मास्ति काया को किं० क्या सं० सख्यातवे भाग फु० स्पर्शे गो० गौतम ज० जैसे

सखेज्जइ भाग फुसइ, असखेज्जइ भाग फुसइ, णो सखेज्जे भाग फुसइ, णो असखे-ज्जे भाग फुसइ, नो सव्व फुसइ, ॥ ९ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मात्थिकायस्स किं सखेज्जइ भागं फुसइ ? गोयमा ! जहा रयणप्पभाए

रत्नप्रभा पृथ्वी को धर्मास्तिकाय क्या सख्यात वे भाग से स्पर्श कर रही है, असंख्यातवे भाग मे स्पर्श कर रही है, सख्यात भाग में या असख्यात भाग में स्पर्शकर रही है या सब स्पर्शकर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी को धर्मास्तिकाय सख्यातवे भाग से स्पर्शकर नहीं रही है परंतु असख्यातवे भाग से स्पर्शकर रही है क्यों कि रत्नप्रभा का पृथ्वी पिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है सख्यात व असंख्यात भाग में अथवा सब स्पर्शकर नहीं रही है ॥९॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि को धर्मास्तिकाय क्या सख्यातवे भाग से स्पर्शकर रही है ? अहो गौतम ! जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का कहा वैसे ही

र० रत्नप्रभा त० तैसे घ० घनोदधि घ० घनवात त० तनुवात ॥ १० ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा का उ० आकाशांतर ध०धर्मास्तिकाया को किं०क्या गो०गौतम स० सख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे अ०असख्यात भाग को फु० स्पर्शे गो० गौतम स० सख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं सं०संख्यात भाग को नो०नहीं अ०असख्यात भाग को नो० नहीं स०सर्व को उ० आकाशान्तर स० सर्व ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की व० वक्तव्यता भ० कही ए० ऐसे आ०

तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि ॥ १० ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवासतरे धम्मत्थिकायस्स किं सखेज्जइ भाग फुसइ, असखेज्जइ भाग फुसइ ? पुच्छा गोयमा सखेज्जइ भाग फुसइ, णो असखेज्जइ भाग फुसइ, णो रासेज्जे,नो असखेज्जे, नो सव्व फुसइ ॥ उवासतराइ सव्वाइ जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया

जानना इसी तरह घनवात व तनुवात का जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तरको धर्मास्तिकाया क्या सख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है यावत् सब स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तर को धर्मास्तिकाय सख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का आकाशान्तर कहा वैसे ही सातवी पृथ्वी तक के सब आकाशान्तर का जानना ॥११॥

अ० अधो स० सातवी नरक ॥ ११ ॥ ज० जंबूद्वीपादि दी द्वीप ल० लवण समुद्रादि स० समुद्र ए० ऐसे सो० सौधर्म देवलोक जा० यावत् इ० ईसत्मागभार पु० पृथ्वी ते० वे अ० असख्यातवे भा० भाग को फु०

एव जाव अहेसत्तमाए॥११॥ जबूदीवाइया दीवा, लवणसमुद्दाइया समुद्दा एव सोहम्मे-कप्पे जाव इसिपब्भाए पुढवीए तेसव्वेवि असखेज्जइ भाग फुसइ । सेसा पाडिसेहे-यव्वा । एव अधम्मात्थिकाए एव लोयागासेवि ॥ गाथा ॥ पुढवीउदहिघणतणू । क-

जम्बूद्वीप आदि सब द्वीप, लवण समुद्रादि सब समुद्र, सौधर्मादि देवलोक से लेकर बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, और ईषत्प्राग्भार पृथ्वी इन सब को धर्मास्तिकाया का असख्यातवा भाग स्पर्श कर रहा है परंतु सख्यातवा भाग व सख्यात व असंख्यात भाग में, वैसे ही सब धर्मास्तिकाय स्पर्श कर नहीं रही है जैसे धर्मास्तिकाय की वक्तव्यता कही वैसे ही अधर्मास्तिकाया व लोकाकाश का जानना सात पृथ्वी, सात घनोदधि, सात घनवात, सात तनुवात, बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, सिद्धशिला इन सब में जो आकाशान्तर है उन को धर्मास्तिकायादि सख्यातवे भाग में स्पर्श कर रहे हैं पृथ्वी, घनोदधि, घनवात, तनुवात व आकाश इन एकेक के सात २ सूत्र करने से ३५ हुए बारह देवलोक के बारह, नव ग्रैवेयक के ९, पांच अनुत्तर विमान का १ और सिद्धशिलाका

स्पर्शे से० शेष प० प्रतिषेध ए० ऐसे अ० अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे लो० लोकाकाश ॥२॥ १० ॥ २ ॥

प्यागेत्वेज्जाणुत्तरासिद्धी सखेज्जइ भाग अतरेसु सेसा असखेज्जा ॥ बिईयसयस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ १० ॥ निईय सयर्य सम्मत्त ॥ २ ॥

*

एक मीलकर ८२ हुवे इन सब के आकाशान्तरको धर्मास्तिकायादिक सख्यातवे भाग से स्पर्शती है शेष सब के आकाशान्तर को असख्यातवे भाग से स्पर्शती है यह दूसरे शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ १० ॥ २ ॥

× ×

अ० अधो स० सातमी नरक ॥ ११ ॥ जं० जंबूद्वीपादि दी द्वीप ल० लवण समुद्रादि स० समुद्र ए० ऐसे सो० सौधर्म देवलोक जा० यावत् ई० ईसत्पागभार पु० पृथ्वी ते० वे अ० असंख्यातवे भा० भाग को फु०

एव जाव अहेसत्तमाए॥११॥ जबूदीवाइया दीवा, लवणसमुद्दाइया समुद्दा एव सोहम्मे-कप्पे जाव ईसिपब्भाए पुढवीए तेसव्वेवि असखेज्जइ भाग फुसइ । सेसा पडिसेहे-यव्वा । एव अधम्मत्थिकाए एव लोयागासेवि ॥ गाथा ॥ पुढवीउदहिघणतणू । क-

जम्बूद्वीप आदि सब द्वीप, लवण समुद्रादि सब समुद्र, सौधर्मादि देवलोक से लेकर बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, और ईपत्प्राग्भार पृथ्वी इन सब को धर्मास्तिकाया का असंख्यातवा भाग स्पर्श कर रहा है परंतु संख्यातवा भाग व संख्यात व असंख्यात भाग में, वैसे ही सब धर्मास्तिकाय स्पर्श कर नहीं रही है जैसे धर्मास्तिकाय की वक्तव्यता कही वैसे ही अधर्मास्तिकाया व लोकाकाश का जानना सात पृथ्वी, सात घनोदधि, सात घनवात, सात तनुवात, बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, सिद्धशिला इन सब में जो आकाशान्तर है उन को धर्मास्तिकायादि संख्यातवे भाग में स्पर्श कर रहे हैं पृथ्वी, घनोदधि, घनवात, तनुवात व आकाश इन एकेक के सात २ सूत्र करने से ३५ हुए बारह देवलोक के बारह, नव ग्रैवेयक के ३, पांच अनुत्तर विमान का १ और सिद्धशिलाका

में सा० स्वामी स० समवसरण प० परिषदा नि० निर्गता प० परिषदा प० पीछीगई ॥ २ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के दो० दूसरे अ० अंतेवासी अ० अग्निभूति अ० अनगार गो० गौतम गो० गोत्र से स० सात हाथ ऊंचे जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के० कितना म० महर्द्धिक म० महाद्युतिवन्त म०

लेणं २ सामी समोसढे परिसा निग्गच्छइ, परिसा पडिगया॥ २ ॥ तेण कालेण २ समणस्स भगवओ महावीरस्स दोचे अंतेवासी अग्गिभूईणाम अणगारे, गोयम गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी चमरेण भंते ! असुरिंदे असुरराया के महिड्ढीए, केमहज्जुईए, केमहाबले, के महायसे केमहासोक्खे, के महाणुभागे,

नाम की नगरी थी उस का वर्णन उववाइ सूत्र में चंपा नाम की नगरी जैसे कहना उस मोया नगरी की ईशान कोन में नंदन नामक उद्यान था उस का वर्णन भी उववाइ जैसे जानना उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ग्रामानुग्राम विचरते उस नंदन उद्यान में पधारे परिषदा धर्मोपदेश सुनने को आइ और सुनकर पीछीगइ ॥१॥ उस काल उस समय में भगवंत के दूसरे शिष्य गौतम गोत्रीय सात हाथ की अवगाहनावाले अग्निभूति नामक अनगार श्री भगवन्त को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करते पूछनेलगे कि अहो भगवन् ! चमर नामक असुरका राजा असुरेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला है, कितनी द्युतिवाला है, कितना

॥ तृतीय शतकम् ॥

केरिस विउव्वणा, चमर, किरिय, जाणि,त्थि, नगर, पालाय॥ आहिवइ, इंदिय,परिसा, तइयमि सए दसुद्देसा॥ १ ॥ तेण कालेण तेणं समएण मोया नाम नयरी होत्था,वण्णओ,तीसेण मोयानयरीए बाहिया उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए नंदणे नाम चेइए होत्था, वण्णओ। तेणका-

के० कैसी वि० विकुर्वणा च० चमर कि० क्रिया जा० यान त्थि० स्त्री न० नगर पा० लोकपाल अ० अधिपति इं० इन्द्रिय प० परिषदा त० तीसरा स० शतक में द० दशउद्देशा ॥ १ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में मो० मोया नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णनयुक्त ती० उस मो० मोया नगरी की ब०बाहिर उ०ईशान कोन में न०नंदन नाम का चे०उद्यान हो०था व०वर्णनयुक्त ते०उस काल ते०उस समय

दूसरे शतकके अंतिम उद्देशे में अस्तिकायाका स्वरूप कहा अब इस उद्देशे में जीवास्तिकायका विचार करते हैं इस के दश उद्देशे बताते हैं जिन के नाम १ वैक्रेय करने की शक्ति व चमरेन्द्र आदि इन्द्रों का अधिकार २ चमर उत्पात अधिकार ३ कायिकादि क्रिया का अधिकार ४ वैक्रेय समुद्घात से देवता यान विकुर्वे सो साधु जाने ५ साधु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर स्त्री आदि के रूप विकुर्वे ६ साधु वाणा-रसी में समुद्घात करके राजगृह का रूप देखे ७ सोम आदि लोकपाल ८ असुरादि देव के कितने अधि पति ९ इन्द्रिय का अधिकार १० चमर की परिषदा का अधिकार ॥ १ ॥ उस काल उस समय में मोया

से उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा वे० वैक्रय स० समुद्घात स० पूर स० पूरकर स० सख्यात जो० योजन उ० ऊंचा दं० दंड को नि० निकाले त० वह ज० जैसे र० रत्न जा० यावत् रि० रिष्ट अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल प० दूरकर अ० यथा सु० सूक्ष्म पो० पुद्गल प० ग्रहणकरे दो० दूसरी वक्त वे० वैक्रेय स० समुद्घात से स० पूरे प० समर्थ गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के० केवल कल्प जं० जम्बूद्वीप ब० बहुत अ० असुरकुमार दे०

या नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ समोहणइत्ता संखेज्जाणि जोयणाणि उड्डदंड निसिरइ तंजहा रयणाण जाव रिट्ठाण अहा बायरे पोग्गले परिसाडेइ परिसाडेइत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाइयइ, परियाइयइत्ता दोच्चंवि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ, पभूण गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं

चमर नामक असुरेन्द्र वैक्रेय समुद्घात करे वैक्रेय समुद्घात करके संख्यात योजन का ऊंचा दंड करे बहुत दलवाला व शरीर जितना चौडा, जीव प्रदेश व कर्म पुद्गलों का समुह बनावे उस में कर्केतनादि विविध

१ यद्यपि कर्केतनादिक रत्नके पुद्गल औदारिक शरीरमय हैं और वक्रेय समुद्घात वैक्रेय पुद्गल ग्रहण करनेसे होती है परंतु यहांपर रत्नसार पदार्थ होने से कर्केतनादि जैसे पुद्गलों ऐसा अर्थ लेना कितनेक ऐसाभी कहते हैं कि उदारिक पने ग्रहण किये पुद्गल वैक्रेय पने परिणमते हैं

वलवन्त म० महायशस्वी म० महानुभाग के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर अ० असुरराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग से० उन को त० तहां चो० चोत्तीस भ०भुवन स०लक्ष च०चौसठ सा०सामानिक स०सहस्र ता० तेत्तीस ता०त्रायस्त्रिंशक जा० यावत् वि० विचरते हैं ए० ऐसे म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग ॥ २ ॥ प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को से० वह ज० जैसे जु० युवति को जु० युवान ह० हाथ गे० ग्रहण करे च० चक्र की ना० नाभी अ० आरा

केवइयचण पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! चमरेण असुरराया महिड्डीए, जाव महाणुभागे सेण तत्थ चोत्तीसाए भवणावास सय सहस्साण चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीण, तायत्तीसाए तायत्तीसगाण जाव विहरइ एव महिड्डीए जाव महाणुभागे ॥ २ ॥ एवइय चण पभू विकुव्वित्तए। से जहा नामए जुवतिं जुवणे हत्थेण हत्थ गेण्हेज्जा, चक्कस्स-

वलवाला है, कितना सुखवाला है, कैसा महानुभागवाला है, और किस प्रकार कितने रूप करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाला है उन को चौतीस लाख भुवन, चौसठ हजार सामानिक, और तेत्तीस त्रायस्त्रिंशक ऐसी ऋद्धि है ॥ २ ॥ अब इन की वैक्रेय करने की शक्ति बताते हैं जैसे काम से पीडित कोई युवान पुरुष अपने हस्त से युवति का हस्त पकडे, और जैसे चक्र की नाभि को आरे से पूरे अर्थात् चक्र की नाभि के छिद्र में आरा डाले ऐसे ही अहो गौतम !

से उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा वे० वैक्रय स० समुद्घात स० पूरे स० पूरकर स० सख्यात जो० योजन उ० ऊचा दं० दंड को नि० निकाले तं० वह ज० जैसे र० रत्न मा० यावत् रि० रिष्ठ अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल प० दूरकर अ० यथा सु० सूक्ष्म पो० पुद्गल प० ग्रहणकरे दो० दूसरी वक्त वे० वैक्रय स० समुद्घात से स० पूरे प० समर्थ गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के० केवल कल्प जं० जम्बूद्वीप ब० बहुत अ० असुरकुमार दे०

या नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुररायां वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता संखेज्जाणि जोयणाणि उड्ढंदंडं निसिरइ तंजहा रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहा बायरे पोग्गले परिसाडेइ परिसाडेइत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाइयइ, परियाइयइत्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, पभूणं गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुररायां केवलकप्पं

चमर नामक असुरेन्द्र वैक्रेय समुद्घात करे वैक्रेय समुद्घात करके सख्यात योजन का ऊचा दंड करे बहुत दलवाला व शरीर जितना चौडा, जीव प्रदेश व कर्म पुद्गलों का समुह बनावे उस में कर्केतनादि विविध

१ यद्यपि कर्केतनादिक रत्नके पुद्गल औदारिक शरीरमय हैं और वैक्रेय समुद्घात वैक्रेय पुद्गल ग्रहण करनेसे होतीहै परंतु यहांपर रत्नसार पदार्थ होनेसे कर्केतनादि जैसे पुद्गलों ऐसा अर्थ लेना कितनेक ऐसाभी कहते हैं कि उदारिक पने ग्रहण किये पुद्गल वैक्रेय पने परिणमते हैं

देव दे० देवी से भा० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित स० सथरित फु० मगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे क० करे अ० अथवा गो० गौतम प० समर्थ च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र में ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० सथरित फु० मगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे

जम्बूदीव दीव बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अरगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरचण गोयमा पभूणं चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए, एसण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए । णो चेवण सपत्तीए

प्रकार के पुद्गल ग्रहण करे उन ग्रह हुवे पुद्गलों में से निःसार बादर पुद्गलों को दूर करके यथायोग्य सूक्ष्म पुद्गलों का ग्रहण करे, और वांच्छितरूप बनाने के लिये दूसरी वक्त वैक्रेय समुद्घात करे अहो गौतम ! यह चमर नामक असुरेन्द्र अपने रूप से विकुर्वणा करके सपूर्ण जम्बूद्वीप भरे और बहुत असुर कुमार के देवता, देवियों व तथा प्रकारके अन्य भी इच्छित रूप से एक लक्ष योजनका जम्बूद्वीप व्याप्त होवे, विशेष व्याप्त होवे, क्रीडा से आच्छादित, परस्पर सथरित, प्रगट, व परस्पर संश्लेषणा युक्त होवे

क० करे ए० यह गो० गौतम च०चमर अ०असुरेन्द्र अ०असुर राजा का ए०ऐसारूप नि०विषय वि०विषय मात्र वु० कहा णो० नहीं सं० संपत्ति वि० विकुर्वणा की वि० विकुर्वणा करे वि०विकुर्वणा करेगा ॥ ४ ॥ ज०यदि भ०भगवन् च०चमर अ०असुरेन्द्र अ०असुरराजा ए० इतना म० महर्द्धिक जा०यावत् ए० ऐसे प०

विकुव्विंसुवा विकुव्वतिवा, विकुव्विस्सतिवा ॥ ४ ॥ जइण भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्डीए जाव एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणियदेवा के महिड्डिया जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! चमरस्स असुररण्णो सामाणिय देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा, तेणं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं सामाणियाणं, साणं साणं अग्गमहिसीणं, जाव

और भी अहो गौतम ! बहुत असुर के देव व देवियों से तिर्च्छे असंख्याते द्वीप समुद्र को आकीर्ण करने को यावत् परस्पर संश्लेषणा युक्त बनाने को चमर नामक असुरेन्द्र समर्थ है परंतु इतना रूप बनाने की संपत्ति नहीं है मात्र चमर नामक असुरेन्द्र की इतना वैक्रेय रूप बनाने की शक्ति है इतने रूप उनोंने अतीत काल में नहीं किये हैं, वर्तमान में नहीं करते हैं और आगामिक में नहीं करेंगे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! अब चमर नामक असुरेन्द्र की इतनी ऋद्धि यावत् इतना वैक्रेय रूप करने की शक्ति है तो उनके सामानिक देवकी कितनी ऋद्धि व कितनी शक्ति है अर्थात् वे कितने वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत हैं

देव दे० देवी से भा० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित स० सथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे क० करे अ० अथवा गो० गौतम प० समर्थ च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र में ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० सथरित फु० प्रगट अ० मील्ले हुवे अ० अवगाहे हुवे

जम्बूदीव दीव बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अरगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरचण गोयमा पभूण चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए, एसण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए। णो चेवण सपत्तीए

प्रकार के पुद्गल ग्रहण करे उन ग्रह हुवे पुद्गलों में से निःसार बादर पुद्गलों को दूर करके यथायोग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण करे, और वांच्छितरूप बनाने के लिये दूसरी वक्त वैक्रेय समुद्घात करे अहो गौतम ! यह चमर नायक असुरेन्द्र अपने रूप से विकुर्वणा करके सपूर्ण जम्बूद्वीप भरे और बहुत असुर कुमार के देवता, देवियों व तथा प्रकारके अन्य भी इच्छित रूप से एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप व्याप्त होवे, विशेष व्याप्त होवे, क्रीडा से आच्छादित, परस्पर सथरित, प्रगट, व परस्पर संश्लेषणा युक्त होवे

स्वत' के भ० भुवन सा० स्वत' के सा० सामानिकदेव रा० स्वत' की अ० अग्रमहिषी जा० यावत् दि० दीव्य भा० भोग भुं० भोगवत वि० विचरते हैं ॥ ५ ॥ अ० असुरेन्द्र के ता० त्रायत्रिंशक देव ज०

केवलकप्प जंबूद्दिवदीव बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अवगाढावगाढ करेत्तए ॥ अदुत्तर च ण गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसंखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं असुर कुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए, एसण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणिय देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णोचेवण संपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वितिवा, विकुव्विस्सतिवा ॥ ५ ॥ जइण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिय

संपूर्ण जम्बूद्वीप को व्याप्त, विशेष व्याप्त, आच्छादित, यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं वैसे ही तिर्च्छे असंख्यात द्वीप समुद्र को व्याप्त यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं अहो गौतम ! चमरेन्द्र के सामानिक का मात्र यह विषय कहा परंतु उन को इतनी संपत्ति नहीं होने से उनोंने अतीत कालमें इतने वैक्रेय किया नहीं वर्तमानमें करते नहीं हैं और आगामिकमें करेंगे भी नहीं॥५॥ अहो भगवन् ! चमरेन्द्र के सामानिक इतने महर्द्धिक

सत्थं वि० विकुर्वणा करने को च० चमरेन्द्र का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का सा० सामानिक दे० देव के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर के अ० असुर राजा के सा० सामानिक देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग सा०

दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरति, एव महिड्डीया जाव एवइयंचण पभू विकुव्वित्तए। से जहा नामए जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थं गेण्हेज्जा, चक्कस्सवा नाभी अरया उत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरस्सवि असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्विय समुग्घाएण समोहणइ २ त्ता जाव दोच्चंपि वेउव्विय समुग्घाएण समोहणइ पभूण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए

अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र असुरराजा के सामानिकदेव चमरेन्द्र जैसे महाऋद्धिवंत यावत् महानुभाग वाले हैं वे अपने २ भवन, सामानिक अग्रमहिषी वगैरह के दीव्य सुख भोगवते हुवे रहते हैं और जिस प्रकार कामसे पीडित युवान पुरुष अपने हस्तसे युवती का हस्त ग्रहण करता है, अथवा जैसे चक्रकी नाभी में आरा निविड रहता है, वैसे ही चमर नामक असुरेन्द्र के सामानिक देव वैक्रय समुद्घात करे उस में से निस्सार बादर पुद्गलों को छोडकर सूक्ष्म पुद्गलों ग्रहण कर इच्छित रूप बनाने को दूसरा वैक्रेय रूप बनावे और अहो गौतम ! वे एक २ सामानिक देव असुर कुमार के बहुत देव देवियों के रूप बनाकर

स्तत के भ० भुवन सा० स्वत' के सा० सामानिकत्व सा० स्वत' की अ० अग्रमहिषी जा० यावत् दि० दीव्य भा० भोग भुं० भोगवत वि० विचरते हैं ॥ ५ ॥ अ० असुरेन्द्र के ता० त्रायस्त्रिंशक देव ज०

केवलकप्प जबूद्दिवदीव बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अरगाढावगाढ करेत्तए ॥ अदुत्तर च ण गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं असुर कुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए, एसण गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणिय देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णोचेवण सपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वितिवा, विकुव्विस्सतिवा ॥ ५ ॥ जइण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिय

सपूर्ण जम्बूद्वीप को व्याप्त, विशेष व्याप्त, आच्छादित, यावत् प्रगट करने को शक्तिवत हैं वैसे ही तिर्छे असख्यात द्वीप समुद्र को व्याप्त यावत् प्रगट करने को शक्तिवत हैं अहो गौतम ! चमरेन्द्रके सामानिक का मात्र यह विषय कहा परंतु उन को इतनी सपत्ति नहीं होने से उनोंने अतीत कालमें इतने वैक्रेय किया नहीं वर्तमानमें करते नहीं हैं और आगामिकमें करेंगे भी नहीं॥५॥ अहो भगवन्! चमरेन्द्रके सामानिक इतने महार्द्धिक

समर्थ वि० विकुर्वणा करने को च० चमरेन्द्र का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का सा० सामानिक दे० देव के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर के अ० असुर राजा के सा० सामानिक देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग सा०

दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणा विहरति, एवं महिड्ढीया जाव एवइयंचण पभू विकुव्वित्तए । से जहा नामए जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थं गेण्हेज्जा, चक्कस्सवा नाभी अरया उत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरस्सवि असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्विय समुग्घाएण समोहणइ २ त्ता जाव दोच्चपि वेउव्विय समुग्घाएण समोहणइ पभूण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए

भगवान गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र असुरराजा के सामानिकदेव चमरेन्द्र जैसे महाऋद्धिवंत यावत् महानुभाग वाले हैं वे अपने २ भवन, सामानिक अग्रमहिषी वगैरह के दीव्य सुख भोगवते हुवे रहते हैं और जिस प्रकार कामसे पीडित युवान पुरुष अपने हस्तसे युवती का हस्त ग्रहण करता है, अथवा जैसे चक्रकी नाभी में आरा निविड रहता है, वैसे ही चमर नामक असुरेन्द्र के सामानिक देव वैक्रय समुद्घात करे उस में से निस्सार बादर पुद्गलों को छोडकर सूक्ष्म पुद्गलों ग्रहण कर इच्छित रूप बनाने को दूसरा वैक्रेय रूप बनावे और अहो गौतम ! वे एक २ सामानिक देव असुर कुमार के बहुत देव देवियों के रूप बनाकर

देवी के० कितनी म० महर्द्धिक ज० जैसे लो० लोकपाल अ० अवशेष स० वह ए० ऐसे भ० भगवन् ॥ ७ ॥ भ० भगवान् दो० दूसरा गा० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को व० वंदना कर न०

असुररण्णो भते अग्गमहिसीओ देवीओ के महिड्ढीयाओ जाव केवइयच्चण पभू विउव्विचए? गोयमा! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढीयाओ जाव महाणुभागाओ, ताओण तत्थ साण साण भवणाणं, साण साण च सामाणिय साहस्सीण, साण साण महत्तरियाण, साण साण परिसाणं जाव महिड्ढीयाओ अण्ण जहा लोगपालाण, अपरिसेस ॥ सेव भते २ ! त्ति ॥७॥ भगव दोच्चे गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ वदित्ता नमसइत्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे तेणेव उवाग-

सकती हैं? अहो गौतम! चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों महा ऋद्धिवाली यावत् महानुभागवाली हैं वे अपने २ भुवन, अपने २ सामानिक देव, अपनी २ महत्तरिक देवियों, अपनी २ परिषदा की ऋद्धिवाली हैं वगैरह लोकपाल जैसे सब अधिकार कहना इतना सुनकर गौतम गोत्रीय दूसरे गणधर श्री अग्निभूति बोले कि अहो भगवन्! जो आप कहते हैं वह सत्य है जैसा आपका कथन है वैसा ही वस्तुस्वरूप है ॥७॥ इतना कहकर, श्री श्रमण भगवंतको वंदना नमस्कार करके अग्निभूतिने तीसरे गणधर गौतम गोत्रीय श्री वायुभूति की पास आकर कहा कि अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र की ऋद्धि

जैसे सा० सामानिक त० तैसे णे० जानना लो० लोकपाल त० तैसे न० विशेष स० संख्यात दी० द्वीप स० समुद्र मा० कहना ब० बहुत अ० असुर कुमार से आ० आकीर्ण जा० यावत् वि० विकुर्वणा करेंगे ॥ ६ ॥ ज० यदि च० चमर के अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजाके लो० लोकपालदेव म० महर्द्धिक अ० अग्रमहिषी

देवाए महिड्डीया जाव एवइयचण पभू विकुव्वित्तए । चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो तावत्तीसया देवा केमहिड्डीया, वत्तीसया जहा सामाणिया तहा णेयव्वा॥ लोयपाला तहेव, नवरं संखेज्जा दीवसमुद्दा भाणियव्वा, बहूहिं असुरकुमारेहिं २ आइण्णे जाव विउव्विस्संतिवा॥ ६ ॥ जइण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो लोगपाला देवाए महिड्डीए जाव एवइयचण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्सण असुरिंदस्स

यावत् महानुभागवाले वैसे ही इतने वैक्रेय करने की शक्तिवाले हैं तब चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक कितने महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय करनेवाले हैं अहो गौतम ! जैसे सामानिक का कहा वैसे ही त्रायस्त्रिंशक का जानना और इसीतरह लोकपाल का जानना मात्र इतना विशेष है की इसमें संख्याते द्वीप समुद्र लेना त्रायस्त्रिंशक व लोकपाल संख्याते द्वीप समुद्र को असुर कुमार के देव व देवियों से व्याप्त करने को समर्थ हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जब चमर नामक असुरेन्द्र के लोकपाल इतने महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय करने को शक्तिवंत हैं तब चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों कितनी ऋद्धिवाली हैं और कितने रूप वैक्रेय बना

देवी के० कितनी म० महर्द्धिक ज० जैसे लो० लोकपाल अ० अवशेष स० वह ए० ऐसे भ० भगवन् ॥ ७ ॥
भ० भगवान् दो० दूसरा गा० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को व० वंदना कर न०

असुररण्णो भते अग्गमहिसीओ देवीओ के महिड्ढीयाओ जाव केवइयचण पभू विउ-
व्वित्तए ? गोयमा ! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढीयाओ
जाव महाणुभागाओ, ताओण तत्थ साणं साण भवणाणं, साण साण च सामाणिय
साहस्सीण, साण साण महत्चरियाण, साण साण परिसाण जाव महिड्ढीयाओ अण्ण जहा लो-
गपालाण, अपरिसेस ॥ सेव भते २ ! त्ति ॥७॥ भगव दोच्चे गोयमे समण भगव महावीर
वदइ नमसइ वदित्ता नमसइत्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे तेणेव उवाग-

सकती हैं ? अहो गौतम ! चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों महा ऋद्धिवाली यावत् महानुभागवाली हैं वे
अपने २ भुवन, अपने २ सामानिक देव, अपनी २ महत्तरिक देवियों, अपनी २ परिषदा की ऋद्धि-
वाली हैं वगैरह लोकपाल जैसे सब अधिकार कहना इतना सुनकर गौतम गोत्रीय दूसरे गणधर श्री
अग्निभूति बोले कि अहो भगवन् ! जो आप कहते हैं वह सत्य है जैसा आपका कथन है वैसा ही
वस्तुस्वरूप है ॥७॥ इतना कहकर, श्री श्रमण भगवंतको वंदना नमस्कार करके अग्निभूतिने तीसरे गणधर गौतम
गोत्रीय श्री वायुभूति की पास आकर कहा कि अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र की ऋद्धि

नमस्कारकर जे जहां त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार ते० तहां उ० आकर त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहा ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक त० उसको ए० ऐसे स० सर्व अ० विना पूछे वा० कथन ने० जानना अ० संपूर्ण जा० यावत् अ० अग्रमहिषी व० वक्तव्यता स० संपूर्ण ॥ ८ ॥ त० तब से० वह त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार को दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार ए० ऐसे आ० कहतेको भा० बोलते को प० विशेष कहतेको प० प्ररूपते का ए० यह अर्थ

च्छइ २ त्ता, तच्चं गोयम वायुभूइ अणगार एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए तचेव एवं सव्वं अपुट्ठ वागरणं नेयव्वं अपरिसेसं जाव अग्गमहिसीणं वत्तव्वया सम्मत्ता ॥८॥ तएणं से तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूयस्स अणगारस्स एवं माइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ, नो रोयइ, एयमट्ठं असद्दह-

यावत् वैक्रय करनेकी इतनी शक्ति है यावत् अग्रमहिषियोंतक का सब अधिकार ऐसा है इस तरह जैसे भगवन्तने फरमाया था वैसा संपूर्ण अधिकार वायुभूति अनगारको कहा ॥ ८ ॥ इस तरह अग्निभूतिने जो कहा उस के अर्थ की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि वायुभूति अनगार को हुई नहीं और श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं होने से

नो० नहीं स० श्रद्धा नो० नहीं प० प्रतीत हुवा नो० नहीं रो० रुचा उ० स्थान से उ० उठकर जे०

माणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता, जेणेव समणे भगवं महा-
वीरे तेणेव जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम दोच्चे गोयमे अ-
ग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ परूवेइत्ता, एवं खलु गोयमा !
चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए जाव महाणुभागे सेणं तत्थ चोत्तीसाए भवणा-
वास सयसहस्साणं तचेव सव्वं अपरिसेसं भाणियव्वं जाव अग्गमहिसीओ वत्तव्वया
सम्मत्ता ॥ से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमादि समणे भगवं महावीरे तच्चं गोयमं
वाउभूई अणगारं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे

अपने स्थान से उठकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास गये वहां जाकर वंदना नमस्कार यावत्
पर्युपासना कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! मुझ दूसरे गौतम गोत्रीय अग्निभूति नामक अनगार ऐसा कहते हैं
यावत् प्ररूपते हैं कि चमर नामक असुरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले हैं चौत्तीस लाख भुवन के
मालीक हैं वगैरह अग्रमहिषियों तक सब संपूर्ण अधिकार कहा और पूछा कि अहो भगवन् ! यह किस
तरह है ? फीर श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने वायुभूति अनगार को ऐसा कहा कि अहो गौतम ! तुम को
दूसरे गौतम गोत्रीय अग्निभूति अनगारने ऐसा कहा कि चमरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले हैं यावत्

नमस्कारकर जे जहां त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार ते० तहां उ० आकर त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहा ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक त० उसको ए० ऐसे स० सर्व अ० बिना पूछे वा० कथन ने० जानना अ० सपूर्ण जा० यावत् अ० अग्रमहिषी व० वक्तव्यता स० संपूर्ण ॥ ८ ॥ त० तब से० वह त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार को दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार ए० ऐसे आ० कहतेको भा० बोलते को प० विशेष कहतेको प० प्ररूपते का ए० यह अर्थ

च्छइ २ त्ता, तच्च गोयम वायुभूइ अणगार एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए तचेव एवं सव्व अपुट्ठ वागरण नेयव्व अपरिसेस जाव अग्गमहिसीण वत्तव्वया सम्मत्ता ॥८॥ तएण से तच्चे गोयमे वायुभूई अणगार दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूयस्स अणगारस्स एवं माइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ, नो रोयइ, एयमट्ठ असद्दह-

यावत् वैक्रय करनेकी इतनी शक्ति है यावत् अग्रमहिषियोंतक का सब अधिकार ऐसा है इस तरह जैसे भगवन्तने फरमाया था वैसा संपूर्ण अधिकार वायुभूति अनगारको कहा ॥ ८ ॥ इस तरह अग्निभूतिने जो कहा उस के अर्थ की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि वायुभूति अनगार को हुई नहीं और श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं होने से

त० तब से० वह त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भ० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक जा०यावत् प०समर्थ वि०विकुर्वणा करने को ब०बलेन्द्र भं०भगवन् व० वैरोचन व०वैरोचनराजा के०कितना म० महर्द्धिक ज० जैसे च० चमर का त० तैसे ब० बलेन्द्र का ने० जानना ण० विशेष सा० अधिक के०

से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चेण गोयमेणं अग्गिभूइणा अणगारेण सर्द्धि जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी जइण भंते चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए जाव एवइय च ण पभू विकुव्वित्तए। बलीण भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए जाव केवइयंचण पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! बलीण वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए जहा चमरस्स तहा बलिस्सवि णेयव्वे

की पास गये और वदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेयरूप करने को शक्तिवंत है तो बलि नामक वैरोचनेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रय करनेको शक्तिवंत है ? अहो गौतम ! जैसा चमरेन्द्रका कहा वैसा ही बलि नामक वैरोचनेन्द्र का जानना विशेष इतना कि वह देव देवियों से कुछ अधिक जम्बूद्वीप भरे, शेष सब पूर्वोक्त जैसे

जहां भ० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले ॥ २ ॥

एवमाइक्खइ ४ । एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए सोचेव सव्व जाव अग्गमाहिसीओ। सच्चेण एसमट्ठे, अहपिण गोयमा! एव माइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए सो चेव वि- तिओ गमो भाणियव्वो । जाव अग्गमहिसीओ सच्चेणमेसअट्ठे, सेव भते भते' त्ति तच्चे गोयमे वायुभूइ अणगारे समण भगव वदइ वदइत्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गि- भूती अणगारे तणेव; उवागच्छइ उवागच्छइत्ता दोच्च गोयम अग्गिभूइ अणगार वदइ नमसइ नमसइत्ता, एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो भुज्जो खामेइ ॥ ९ ॥ तएण

अग्रमहिषियों तक का सब अधिकार ऐसा है अहो गौतम ! यह अर्थ सत्य है और मैं भी ऐसा ही कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं और यह अर्थ भी सत्य है अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है ऐसा कह कर वायुभूति अनगार भगवन्त श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर अग्निभूति नामक दूसरे गणधर की पास आये आकर दूसरे गणधर श्री अग्निभूति को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि मैंने आप के वचन सुनकर श्रद्धे नहीं यावत् आप के वचन की प्रतीति की नहीं इसलिये मैं आपकी पुन पुन क्षमा याचता हूं ॥ ९ ॥ और अग्निभूति अनगार की साथ वायुभूति अनगार श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी

त० तब से० वह त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जा० यावत् प० पूछते ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भ० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक ना०यावत् प०समर्थ वि०विकुर्वणा करने को ब०बलेन्द्र भं०भगवन् व० वैरोचन व०वैरोचनराजा के०कितना म० महर्द्धिक ज० जैसे च० चमर का त० तैसे ब० बलेन्द्र का ने० जानना ण० विशेष सा० अधिक के०

से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चेण गोयमेण अग्गिभूइणा अणगारेण सर्द्धि जेणेव समणे भगव महावीरे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी जइण भंते चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्डीए जाव एवइय च णं पभू विकुव्वित्तए । बलीण भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्डीए जाव केवइयचण पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! बलीण वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्डीए जहा चमरस्स तहा बलिस्सवि णेयव्व

की पास गये और वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! चमर नामक असु-रेन्द्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेयरूप करने को शक्तिवंत है तो बलि नामक वैरोचनेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रय करनेको शक्तिवत है ? अहो गौतम ! जैसा चमरेन्द्रका कहा वैसा ही बलि नामक वैरोचनेन्द्र का जानना विशेष इतना कि यह देव देवियों से कुछ अधिक जम्बूद्वीप भरे, शेष सब पूर्वोक्त जैसे

कनक मत्य जं० जम्बूद्वीप मा० काला से० द्वीप त० तैसे णि० निर्विशेष णे० जानना णा० नाना प्रकार
जा० जानना भ० भवन सा० सामानिक स सं० वह प० ऐसे भं० भगवन् त० तीसरे गो० गौतम वा०
वायुभूति अ० अनगार वि० विचरते हैं ॥ १० ॥ त० तब दो० दूसरे गो० गौतम अ० अग्निभूति
अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वदना कर ए० ऐसा व० बोले जं० यदि भं० यदि व० बोले

पत्तर साइरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं भणियव्वं सेसतंचेव णिरवसेसं णेयव्वं, णवरं
णाणत्तं जाणियव्वं, भवणेहिं, सामाणिएहिं सेवं भंते भंते! त्ति, तच्चे गोयमे वायुभूती
अणगारे जाव विहरइ ॥ १० ॥ तएणं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं
भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ एवं वयासी, जइणं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमाररायाइ एवं महि-

जानना बलि नामक वैरोचनन्द्र को तीस लाख भुवन व साठ सहस्र सामानिक देवता जानना अहो
भगवन् ! जैसे आप कहते हैं वैसे ही है इस तरह सुनकर वदना नमस्कार करके श्री वायुभूति अनगार
विचरने लगे ॥ १० ॥ पुनः अग्निभूति नामक अनगारने श्रमण भगवंत महावीर को वदना नमस्कार करके
ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! बलि नामक वैरोचनेन्द्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने
को समर्थ है तब अहो भगवन् ! धरणेन्द्र नामक नाग कुमारेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप

व० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन राजा म० महर्द्धिक प० समर्थ जा० यावत् वि० विकुर्वणा करने को ध० धरणेन्द्र ना० नागकुमारेन्द्र ना० नागकुमार राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गा० गौतम म० महर्द्धिक जा० यावत् त० तहां चो० चौवालीस भ० भुवन स० लाख छ० छ सा० सामानिक स० सहस्र ता० तेत्तीस ता० त्रायत्रिंशक च० चार लो० लो-

यणराया ए महिड्डीए पभू जाव विउव्वित्तए धरणेण भंते ! नागकुमारिंदे नागकुमारराया केमहिड्डीए जाव केवइय चण पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्डीए जाव सेणं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साण छण्ह सामाणिय साहस्सीण, तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण, छण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण, तिण्ह परिसाणं, सत्तण्ह आणियाण, सत्तण्ह अणीयाहिवईण, चउव्वीसाए आयरक्ख-

करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! धरण नामक नाग कुमारेन्द्र को ४४ लाख भुवन, छ हजार सामानिकदेव तेत्तीस त्रायत्रिंशक, चार लोकपाल, परिवार सहित छ अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति, चोवीस हजार आत्मरक्षक देव और अन्य भी अनेक प्रकार के देवों की ऋद्धि है और जैसे काम पीडित पुरुष युवती का निरतर हस्त ग्रहण कर रखता है या गाडे की नाभी में आरा रहता है वैसे ही नाग कुमार रत्नादिक सार पुद्गलों को ग्रहण कर वैक्रेय बनावे इस में से बादर पुद्गलों

कवल कल्प जं० जम्बूद्वीप भा० कहना से० शेष त० तैसे णि० निर्विशेष णे० जानना णा० नाना प्रकार जा० जानना भ० भवन सा० सामानिक से स० सब ए० ऐसे भ० भगवन् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार वि० विचरते हैं ॥ १० ॥ त० तब दो० दूसरे गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर ए० ऐसा व० बोले ज० यदि ब० बलि व०

णवर साइरेग केवलकप्प जंबूदीव भाणियव्व सेसतंचेव णिरवसेस णेयव्व, णवर णाणत्त जाणियव्व, भवणेहिं, सामाणिएहिं सेव भंते भंते! त्ति, तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे जाव विहरइ ॥ १० ॥ तएण से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समण भगव महावीर वंदइ वंदइत्ता एव वयासी, जइण भंते! बली वइरोयणिंदे वइरो-

जानना बलि नामक वैरोचनेन्द्र को तीस लाख भुवन व साठ सहस्र सामानिक देवता जानना अहो भगवन्! जैसे आप कहते हैं वैसे ही है इस तरह सुनकर वंदना नमस्कार करके श्री वायुभूति अनगार विचरने लगे ॥ १० ॥ पुन अग्निभूति नामक अनगारने श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार करके ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन्! बलि नामक वैरोचनेंद्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने को समर्थ है तब अहो भगवन्! धरणेन्द्र नामक नाग कुमारेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप

दक्षिण का स० सर्व अ० अग्निभूति पु० पूछे उ० उत्तर का स० सर्व वा० वायुभूति पु० पूछे ॥१२॥ भ० भगवन् ति० ऐसे भ० भगवन्त गो० गौतम दो० दूसरा अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर न० नमस्कारकर ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भं० भगवन् जो० ज्योतिषी राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देव राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को

पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥१२॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे दोच्चे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी जइ णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया ए महिड्ढीए जाव एवइयंचणं पभू विउव्वित्तए सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया के महिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! सक्केणं देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव महाणुभागे सेणं बत्तीसाए विमाणावास सय सहस्साणं, चउरासीए

अग्निभूतिने पूछा है ॥ १२ ॥ पुनः अग्निभूति नामक गणधर प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! जब ज्योतिषीका इन्द्र इतनी ऋद्धिवाला यावत् इतना वैक्रेय कर सकता है तब शक्रेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितना वैक्रय कर सके ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र को बत्तीस लाख विमान, चौरासी हजार सामानिक उस से चौगुने आत्मरक्षक, और अन्य भी परिवार कहा है वैक्रेय करने की शक्ति वगैरह चमरेन्द्र जैसे

कपाल छ० छ अ० अग्रमीहपी स० परिवार सहित ति० तीन प० परिपदा स० सात अनिक स० सात अनिक के अधिपति च० चौवीस आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र अ० अन्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ २१ ॥ ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी ण० विशेष दा०

देव साहस्सीणं, अन्नेसिंच जाव विहरइ, एवइयचणं पभू विउव्वित्तए। से जहा नामए जुवइ जुवाणे जाव पभू केवलकप्प जंबूदीव दीव जाव तिरिय संखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं नाग कुमारीहिं जाव विउव्विस्सतिवा। सामाणिय तावत्तीस लोगपाल, अग्गमहिसीओय तहेव जहा चमरस्स णवर संखेज्जे दीवसमुद्दे भाणियव्व ॥ ११ ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ वाणमंतर जोइसियावि, णवरं दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई

को छोडकर दूसरी वक्त वैक्रेय बनावे और एक लाख योजन का जम्बूद्वीप यावत् तिर्छे संख्याते द्वीप समुद्र को देव देवियों के नविनरूप बनाकर भर देवे इनके सामानिक, त्रायत्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहि- षियों का चमरेन्द्र जैसे जानना इस में संख्यात द्वीप समुद्र पूरे उतने वैक्रेय रूप बनाने की शक्ति है वैसा जानना ॥ ११ ॥ ऐसे ही शेष सब भुवनपति वाणव्यंतर व ज्योतिषि का जानना इस में इतना विशेष जानना कि उत्तर दिशाके देवता संबंधी प्रश्न वायुभूतिने पूछा है और दक्षिण दिशा संबंधी सब प्रश्न

दक्षिण का स० सर्व अ० अग्निभूति पु० पूछे उ० उत्तर का स० सर्व वा० वायुभूति पु० पूछे ॥१२॥ भ० भगवन् ति० ऐसे भ० भगवन्त गो० गौतम दो० दूसरा अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर न नमस्कारकर ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भ० भगवन् जो० ज्योतिषी राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देव राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को

पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥१२॥ भतेत्ति भगव गोयमे दोच्चे अग्गिभूई अणगारे समण भगव वदइ नमसइ नमसइत्ता, एव वयासी जइ णं भते ! जोइसिंदे जोइसराया ए महिड्ढीए जाव एवइयचण पभू विउव्वित्तए सक्केण भते ! देविंदे देवराया के महिड्ढीए जाव केवइय चण पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! सक्केण देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव महाणुभागे सेण बत्तीसाए विमाणावास सय सहस्साण, चउरासीए

अग्निभूतिने पूछा है ॥ १२ ॥ पुनः अग्निभूति नामक गणधर प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! भव ज्योतिषीका इन्द्र इतनी ऋद्धिवाला यावत् इतना वैक्रेय कर सकता है तब शक्रेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितना वैक्रय कर सके ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र को बत्तीस लाख विमान, चौरासी हजार सामानिक उस से चौगुने आत्मरक्षक, और अन्य भी परिवार कहा है वैक्रेय करने की शक्ति वगैरह चमरेन्द्र जैसे

गो० गौतम स० शक्रेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग ब० बत्तीस वि० विमान स० लक्ष च० चौरासी सा० सामानिक सा० सहस्र जा० यावत् च० चार च० चौरासी आ० आत्मरक्षक सा० सहस्र अ० अन्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १३ ॥ ज० यदि भ० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को दे० देवानुप्रिय का अ० अंतेवासी ती० तिष्यक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत छ०

सामाणिय साहस्सीण, जाव चउण्ह चउरासीणं आयरक्खदेव साहस्सीण अण्णेसिंच जाव विहरइ, ए महिड्ढीए, जाव केवइयं चण पभू विकुव्वित्तए, एव जहेव चमरस्स तहेव भाणियव्वं, णवर दोकेवलकप्पे जंबूदीवे दीवे, अवसेस तचेव एसण गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए णो चेवणं सपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वइवा, विकुव्विस्सतिवा, ॥ १२ ॥ जइणं भंते !

करना परंतु बहुत देव देवियों के रूप व अन्य अनेक प्रकार के रूप से दो जम्बूद्वीप संपूर्ण भर देवे इतनी शक्ति है परंतु संपत्ति नहीं है ऐसा किसीने किया नहीं है, करते नहीं हैं और करेंगे भी नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र ऐसी ऋद्धिवाले यावत् इतना वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत हैं तब आपका अंतेवासी प्रकृतिभद्रिक यावत् विनीत तिष्यक नामक अनगार निरंतर छठ छठ के तप से आत्मा को भावते हुवे

छठ भक्त से अ० अतर रहित त० तप कर्म से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० आठवर्ष सा० दीक्षा पर्याय पा० पालकर मा० मासकी स० सलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन छे० छेदकर आ० आलोच कर प० प्रतिक्रमणकर स० समाधि प्राप्त का० काल के अवसर में, का० काल करके सो० सौधर्म देवलोक में स० अपने वि० विमान में उ० उपपात

सक्के देविंदे देवराया ए महिड्ढीए जाव एवइय चण पभुविकुव्वित्तए एव खलु देवा-णुप्पियाण अतेवासी तीसएनाम अणगारे पगइभदए जाव विणीए छट्ठ छट्ठेण आणि-क्खित्तेण तवो कम्मेण अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ अट्ठ सवच्छराइ साम-ण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अप्पाण झूसित्ता, सठिभत्ताइ अण-सणाए छेदित्ताइ अणसणाए छेदित्ता, आलोइय पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे का-

पूर्ण आठ वर्ष तक साधु की पर्याय पालकर, एक मास की सलेखना से आत्मा को झोस कर, साठ भक्त अनशन करके, आलोचना प्रतिक्रमण करके समाधि प्राप्त हुए; और काल के अवसर में काल करके सौ-धर्म देवलोक में तिष्यक नामक विमान में उपपात सभा की देवशैय्या में देव दूष्य वस्त्र नीचे अगुल के असंख्यातवे भाग प्रमाण की अवगाहना से शक्रेन्द्र देवेन्द्र के सामानिक देवतापने उत्पन्न हुए; वहां उत्पन्न होकर आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोश्वास पर्याप्ति व भाषा मन पर्याप्ति ऐसी पांच

गो॰ गोतम स॰ शक्रेन्द्र दे॰ देवेन्द्र दे॰ देवराजा म॰ महर्द्धिक जा॰ यावत् म॰ महानुभाग व॰ बत्तीस वि॰ विमान स॰ लक्ष च॰ चौरासी सा॰ सामानिक सा॰ सहस्र जा॰ यावत् च॰ चार च॰ चौरासी आ॰ आत्मरक्षक सा॰ सहस्र अ॰ अन्य जा॰ यावत् वि॰ विचरते हैं ॥ १३ ॥ ज॰ यदि भ॰ भगवन् स॰ शक्र दे॰ देवेन्द्र दे॰ देवराजा म॰ महर्द्धिक जा॰ यावत् प॰ समर्थ वि॰ विकुर्वणा करने को दे॰ देवानुप्रिय का अ॰ अंतेवासी ती॰ तिष्यक अ॰ अनगार प॰ प्रकृति भद्रिक जा॰ यावत् वि॰ विनीत छ॰

सामाणिय साहस्सीण, जाव चउण्ह चउरासीणं आयरक्खदेव साहस्सीण अण्णेसिंच जाव विहरइ, ए महिड्डीए, जाव केवइयं चण पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव चमरस्स तहेव भाणियव्वं, णवर दोकेवलकप्पे जंबूदीवे दीवे, अवसेस तचेव एसण गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए णो चेवण संपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वइवा, विकुव्विस्सतिवा, ॥ १२ ॥ जइण भंते !

करना परंतु बहुत देव देवियों के रूप व अन्य अनेक प्रकार के रूप से दो जम्बूद्वीप संपूर्ण भर देवे इतनी शक्ति है परंतु संपत्ति नहीं है ऐसा किसीने किया नहीं है, करते नहीं हैं और करेंगे भी नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र ऐसी ऋद्धिवाले यावत् इतना वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत हैं तब आपका अंतेवासी प्रकृतिभद्रिक यावत् विनीत तिष्यक नामक अनगार निरंतर छठ छठ के तप से आत्मा को भावते हुवे

मनःपर्याप्ति त० तब ती० तिष्यकदेव को पं० पांच प्रकार की प०पर्याप्ति के प०पर्याप्तिके भाव को, ग०गये हुवे सा० सामानिक प० परिषदा में उ० उत्पन्न हुवे दे० देव क० करतल प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्षसे आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजली करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसा

दिव्वादेवजुत्ती दिव्वे देवाणुभावे, लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए जारिसाण देवाणुप्पि-एहिं दिव्वा देविड्ढी, देवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए, तारिसियाण सक्केण देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया,जारिसिण सक्केण देविंदेण देवरण्णो दिव्वादेविड्ढि जाव आभिसमण्णागया, तारिसियाण देवाणुप्पिएहिं दिव्वा-देविड्ढी जाव आभिसमण्णागया सेण भंते तीसए देवे के महिड्ढीए जाव केवइय चण पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे, सेण तत्थ सयस्स विमाणस्स चउण्ह सामाणिय साहस्सीण चउण्ह अग्गमहिसीणं तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह अणियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सीण, अण्णेसिंच बहूणं वेमाणियाण देवाणय जाव विहरइ, ए महि

वगैरह है वैसे ही आप को है अहो भगवन् ! ऐसा तीसक नामक देवता कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितने रूप वैक्रेय करने का समर्थ है ? अहो गौतम ! वह अपने विमान चार हजार सामानिक देवता, चार अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति, सोलह हजार आत्म-

सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदूष्य के अतर में अं० अंगुल के अ० असंख्यातवे भा० भाग मात्र ओ० अवगाहना स० शक्रेन्द्र के दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के सा० सामानिक दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवा त० तब ती० तिष्यकदेव अ० तुर्त का उ० उत्पन्न हुवा पं० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से प० पर्याप्ति भाव को ग० पावे आ० आहार पर्याप्ति स० शरीर इं० इन्द्रिय आ० श्वासोश्वास पर्याप्ति भा० भाषा

लकिच्चा सोहम्मे कप्पे सयसि विमाणसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिए अंगुलस्स असंखेज्ज भागमेत्तीए ओगाहणाए, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणिय देवत्ताए उववण्णे। तएणं तीसए देवे अहुणोववण्णमेत्ते समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति भावं गच्छइ तंजहा आहारपज्जत्ती सरीर इंदिय आणापाणपज्जत्तीए, भासामणपज्जत्तीए। तएणं त तीसय देव पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभाव गय समाण सामाणिय परिसोव वण्णया देवया करयल परिग्गहिय दसनह सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ वद्धावेइत्ता एव वयासी अहोणं देवाणुप्पिएहिं दिव्व देविड्ढी,

पर्याप्ति से पर्याप्त बने उन पर्याप्त बने हुवे देव को सामानिक परिषदावाले देवोंने हस्तद्वय जोडकर दश नख एकत्रित करके मस्तक को आवर्तन करके "जय-विजय" शब्दों से बधाये बधाकर ऐसा बोले अहो ! आप देवानुप्रिय को दीव्य देव ऋद्धि, देवद्युति, व देवानुभाव प्राप्त हुवा है जैसे आप को दीव्यदेव ऋद्धि, द्युति व महानुभाव है वैसे ही शक्रेन्द्र को है; और जैसे शक्रेन्द्र को दीव्य देव ऋद्धि कांति

मनःपर्याप्ति त० तब ती० तिष्यकदेव को पं० पांच प्रकार की प०पर्याप्ति के प०पर्याप्तिके भाव को, ग०गये हुवे सा० सामानिक प० परिषदा में उ० उत्पन्न हुवे दे० देव क० करतल प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्षसे आ० आवर्तन म० मस्तक से अ० अजली करके ज० जय वि० विजय मे व० वधाकर ए० ऐसा

दिव्वादेवजुत्ती दिव्वे देवाणुभावे, लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए जारिसाण देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी, देवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए, तारिसियाण सक्केण देविंदेण देवरण्णो दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया, जारिसिण सक्केण देविंदेण देवरण्णो दिव्वादेविड्ढि जाव आभिसमण्णागया, तारिसियाण देवाणुप्पिएहिं दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया सेण भंते तीसए देवे के महिड्ढीए जाव केवइय चण पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे, सेण तत्थ सयस्स विमाणस्स चउण्ह सामाणिय साहस्सीण चउण्ह अग्गमहिसीणं तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह अणियाणं, सत्तण्ह अणियाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सीण, अण्णेसिंच बहूण वेमाणियाण देवाणय जाव विहरइ, ए महि

वगैरह है वैसे ही आप को है अहो भगवन् ! ऐसा तीसक नामक देवता कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितने रूप वैक्रेय करने का समर्थ है ? अहो गौतम ! वह अपने विमान चार हजार सामानिक देवता, चार अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात आनिक के अधिपति, सोलह हजार आत्म-

सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदृष्य के अतर में अं० अंगुल के अ० असख्यातवे भा० भाग मात्र ओ० अवगाहना स० शक्रेन्द्र के दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के सा० सामानिक दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवा त० तब ती० तिष्यकदेव अ० तुर्त का उ० उत्पन्न हुवा पं० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से प० पर्याप्ति भाव को ग० गावे आ० आहार पर्याप्ति स० शरीर इं० इन्द्रिय आ० श्वासोश्वास पर्याप्ति भा० भाषा

लकिचा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणसि उववायसभाए देवसयाणिज्जंसि देवदूसंतरिए अगुलस्स असखेज्ज भागमेत्तीए ओगाहणाए, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणिय देवत्ताए उववण्णे । तएणं तीसए देवे अहुणोव वण्णमेत्ते समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति भावं गच्छइ तजहा आहारपज्जत्ती सरीर इंदिय आणापाणपज्जत्तीए, भासामणपज्जत्तीए। तएणं त तीसय देव पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभाव गय समाण सामाणिय परिसोव वण्णया देवया करयल परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ वद्धावेइत्ता एव वयासी अहोण देवाणुप्पिएहिं दिव्व देविड्ढी,

पर्याप्ति से पर्याप्त बने उन पर्याप्त बने हुवे देव को सामानिक परिषदावाले देवोंने हस्तद्वय जोडकर दश नख एकत्रित करके मस्तक को आवर्तन करके " जय विजय " शब्दों से वधाये वधाकर ऐसा बोले अहो ! आप देवानुप्रिय को दीव्य देव ऋद्धि, देवद्युति, व देवानुभाव प्राप्त हुवा है जैसे आप को दीव्यदेव ऋद्धि, द्युति व महानुभाव है वैसे ही शक्रेन्द्र को है; और जैसे शक्रेन्द्र को दीव्य देव ऋद्धि कीर्ति

समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्र के अ० अवशेष सा० सामानिक दे० देव के० कितने म० महर्द्धिक त० तैसे स० सर्व जा० यावत् ए० यह गो० गौतम स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ति० ऐसे दो० दूसरे गो० गौतम जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १५ ॥ भ० भगवान् त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ज० यदि भं० भगवन स० शक्र दे० देवेन्द्र द० देवराजा जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करनेको ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

विसए विसयमेत्ते बुइए णोचेवण सपत्तीए विकुव्विसुवा ३ तावत्तीसया, लोगपाला, अग्गमहिसीण, जहेव चमरस्स णवर दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे अण्णं तचेव ॥ सेव भंते भंते त्ति दोचे गोयमे जाव विहरइ ॥ १५ ॥ भंते त्ति भगव तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे समण भगव जाव एव वयासी जइण भंते ! सक्के देविंदे देवराया जाव महिड्डीए एवइय चण पभू विकुव्वित्तए । ईसाणेण भंते ! देविंद देव-

शक्र, लोकपाल, अग्रमहिषी का अधिकार चमरेन्द्र जैसे कहना परन्तु ये दो जम्बूद्वीप वैक्रय रूप से भरने को समर्थ हैं अहो भगवन् ! आपके वचन वैसे ही हैं ऐसा कहकर अग्निभूति अनगार विचरने लगे ॥ १५ ॥ अब वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! जब शक्रेन्द्र इतनी ऋद्धिवाले हैं यावत् इतने रूप वैक्रेय कर सकते हैं तब ईशा-

र० बोले अ० अहो दे० देवानुप्रिय दि०दीव्य दे० देवऋद्धि दे० देवद्युति दि०दीव्य देवानुभाव ल०लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुवे ॥ १८ ॥ ज० यदि भं० भगवन् ती० तिष्यकदेव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

ड्डीए जाव एवइय चण पभू विकुव्विचए, से जहानामए जुवइ जुवाणे हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव एसण गोयमा ! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुच्चइ, नो चेवण सपत्तीए विकुव्विसुवा ३ ॥ १४ ॥ जइण भंते तीसए देवे महिड्ढीए जाव एवइयचण पभू विकुव्विचए। सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा के महिड्ढीया तहेव सव्व जाव एसण गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स देवस्स इमेयारूवे

रसक देव, और बहुत अन्य देवता का स्वामी है और वैक्रेय करने की शक्ति शक्रेन्द्र जितनी है यह मात्र विषय परतु इतनी सपत्ति नहीं है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जब तिष्यक नामक देवता इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने का शक्तिवत है तब अन्य सामानिक देव कितने महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप करने को समर्थ हैं ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र के एक २ सामानिक देव तिष्यक देव जितनी ऋद्धिवाले हैं और वैक्रेय का विषय तीष्यक देव जितना है परतु इतनी सपत्ति नहीं है इतने रूप अतीत काल में किये नहीं, वर्तमान में करते नहीं हैं और आगामिक में करेंगे नहीं उन के भायार्थ

ब्रह्मदेवलोक ण० विशेष अ० आठ ए० ऐसे ल० लतक ण० विशेष सा० अधिक अ० आठ के० संपूर्ण म० महाशुक्र सो० सोलह स० सहस्रार में सा० अधिक सो० सोलह ए० ऐसे पा०

सणकुमाराओ आरद्ध उवरिल्ला, लोगपाला सव्वेवि असंखेज्जे दीवसमुद्दे विकुव्वांति एव माहिंदेवि, णवर साइरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे एव बंभलोएवि, णवर अट्ठकप्पे ॥ एव लंतएवि, णवर साइरेगे अट्ठ केवलकप्पे महासुक्के सोलस

व अन्यदेव हैं + ऐसेही इनके सामानिक देव, त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहिषियों असंख्यात द्वीप समुद्र वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ हैं माहेन्द्र चार जम्बूद्वीप से कुछ विशेष वैक्रेयरूप से भरने को समर्थ है, ब्रह्मेन्द्र आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, लांतक साधिक आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, महाशुक्र सोलह जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, सहस्रारेन्द्र साधिक सोलह जम्बूद्वीप भरने हैं आणत प्राणत बत्तीस जम्बूद्वीप और आरण अच्युत साधिक बत्तीस जम्बूद्वीप भरने का समर्थ है अन्य सब अधिकार पहिले जैसा है परन्तु प्रथक् २ ऋद्धि बताते हैं सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख, ईशान देवलोक में अठा-

---

+ सनत्कुमार नामक तीसरे देवलोकसे आगे देवियोंकि उत्पत्ति नहीं है तथापि प्रथम देवलोककी अपरिग्रही देवी एकसमयाधिक पल्योपम से दश पल्योपमकी स्थिति वाली बारह वे देवलोक के देवोंको उपभोगमें आती हैं इससे यहां उसका प्रतिषेध नहीं किया है

ता० त्रायस्त्रिंशक लो० लोकपाल अ० अग्रमहिषी जा०यावत् वि०विकुर्वणा की ॥१८॥ ए०ऐसे स०सनत्कुमार ण० विशेष च० चार के० संपूर्ण ज० जम्बूद्वीप अ० अथवा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात ए० ऐसे सा० सामानिक ता० त्रायस्त्रिंशक लो० लोकपाल अ० अग्रमहिषी अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र स० सर्व वि० विकुर्वे स० सनत्कुमार से उ० उपर के लो० लोकपाल स०सर्व अ०असंख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० विकुर्वे ए० ऐसे मा० माहेन्द्र ण० विशेष सा० अधिक च० चार के० संपूर्ण जं० जम्बूद्वीप व०

तचेव ॥ १७ ॥ एवं सामाणिय तावत्तीसग लोगपाल अग्गमहिसीण जाव एसणं गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो, एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए । णो चेवणं संपत्तीए विकुर्विसुवा ॥१८॥ एवं सणकुमारेवि णवरं चत्तारि केवल कप्पे जम्बूदीवे दीवे अदुत्तरं चणं, तिरियं मसंखेज्जे ॥ एवं सामाणिय, तावत्तीसग लोगपाल, अग्गमहिसीण, असंखेज्जे दीवे समुद्दे सव्वे विकुव्वति

त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल, व अग्रमहिषियों का जानना और वैक्रेय का विषय भी उतना ही जानना परंतु इतनी संपत्ति नहीं है ॥ १८ ॥ जैसे ईशानेन्द्र का कहा वैसे ही सनत्कुमारेन्द्र का जानना विशेष इतना कि सनत्कुमार चार जम्बूद्वीप प्रमाण वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ है असंख्यात द्वीप समुद्र भरने की शक्ति है परंतु सम्पत्ति नहीं है इस में बारह लाख विमान, बहत्तर हजार सामानिक, चौगुने आत्मरक्षक,

ब्रह्मदेवलोक ण० विशेष अ० आठ ए० ऐसे ल० लतक ण० विशेष सा० अधिक अ० आठ के० संपूर्ण म० महाशुक्र सो० सोलह स० सहस्त्रार में सा० अधिक सो० सोलह ए० ऐसे पा०

सणकुमाराओ आरद्ध उवरिल्ला, लोगपाला सव्वेवि असंखेज्जे दीवसमुद्दे विकुव्वाति एव माहिंदेवि, णवर साइरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे एव बंभलोएवि, णवर अट्ठकप्पे ॥ एव लंतएवि, णवर साइरेगे अट्ठ केवलकप्पे महासुक्के सोलस

व अन्यदेव हैं + ऐसेही इनके सामानिक देव, त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहिषियों असंख्यात द्वीप समुद्र वैक्रेय रूप स भरने को समर्थ हैं माहेन्द्र चार जम्बूद्वीप से कुछ विशेष वैक्रेयरूप से भरने को समर्थ है, ब्रह्मेन्द्र आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, लांतक साधिक आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, महाशुक्र सोलह जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, सहस्त्रारेन्द्र साधिक सोलह जम्बूद्वीप भरने हैं आणत प्राणत बत्तीस जम्बूद्वीप और आरण अच्युत साधिक बत्तीस जम्बूद्वीप भरने का समर्थ हैं अन्य सब अधिकार पहिले जैसा है परन्तु पृथक् २ ऋद्धि बताते हैं सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख, ईशान देवलोक में अठा

+ सनत्कुमार नामक तीसरे देवलोकसे आगे देवियोंकि उत्पत्ति नहीं है तथापि प्रथम देवलोककी अपरिग्रही देवी एकसमयाधिक पल्योपम से दश पल्योपमकी स्थिति वाली बारह वे देवलोक के देवोंको उपभोगमें आती हैं इससे यहां उसका प्रतिषेध नहीं किया है

प्राणत ण० विशेष व० बत्तीस के० संपूर्ण ए० ऐसे अ० अच्युत में ण० विशेष सा० अधिक व० बत्तीस के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप अ० निश्चय स० वह ए० ऐसे भ० भगवान् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर वि०

केवल सहस्सारे साइरेगे सोलस एव पाणएवि, णवर बत्तीस केवल एव अच्चुएवि, णवर साइरेगे बत्तीस केवलकप्पे जंबूद्दीवे दीवे, अण्ण त चेव ॥ सेव भंते भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वाउभूई अणगारे समण भगव महावीर वंदइ नमंसइ जाव विहरइ

दस लाख, सनत्कुमार में बारह लाख, माहेन्द्र में आठ लाख, ब्रह्मदेवलोक में चार लाख, लांतक में पचास हजार, महाशुक्रमें चालीस हजार सहस्रार में छ हजार, आणत प्राणत में चारसो, आरण अच्युत में तीनसो अब सामानिक देव कहते हैं सौधर्मेन्द्र को चौरासी हजार, ईशानेन्द्र को अस्सी हजार, सनत्कुमारेन्द्र को बहत्तर हजार, माहेन्द्र को सीत्तर हजार, ब्रह्मेन्द्र को साठ हजार, लांतकेन्द्र को पचास हजार, महाशुक्रेन्द्रको चालिस हजार, सहस्रारेन्द्र को तीस हजार, प्राणतेन्द्र को बीस हजार, और अच्युतेन्द्र को दश हजार सामानिक जानना सामानिक देवता से आत्मरक्षक चौगुने जानना। अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर विचरने

विचरने लगे ॥ १९ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर अ० कोई वक्त मो० मोया न० नगरी के न० नंदन चे० उद्यान से प० निकलकर ब० बाहिर ज० अन्य देश में वि० विचरने लगे॥२०॥ ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर हो०था व० वर्णनवाला जा० यावत् प० परिषदा प० पूजते ते० उस काल ते० उस समय में ई० ईशान द० देवेन्द्र दे० देवराजा सू० सूल पा० हस्त में व० वृषभ वा० वाहन वाले उ० उत्तरार्ध लोक के अ० अधिपति अ० अठावीस वि० विमान स० लक्ष के

॥ १९ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ नगरीओ नदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवय विहार विहरइ ॥ २० ॥ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे होत्था वण्णओ जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ तेण कालेण तेण समएण ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी, वसहवाहणे, उत्तरड्ढ-

लगे ॥ १९ ॥ एकदा श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी मोया नामक नगरी के नदन नामक उद्यान में से विचरने लगे ॥ २० ॥ अब ईशानेन्द्र के पूर्व भव का तामली तापसका अधिकार कहते हैं उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था वहां श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदन करने को आई उस काल उस समय में हस्त में सूलका आयुध धारन करनेवाले, वृषभ का वाहन वाले, उत्तर के ऊर्ध्व दिशा के स्वामी, अठाइस लाख विमान के अधिपति, रजरहित वस्त्र धारन करनेवाले,

माणत ण० विशेष ब० बत्तीस के० संपूर्ण ए० ऐसे अ० अच्युत में ण० विशेष सा० अधिक ब० बत्तीस के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप अ० निश्चय स० वह ए० ऐसे भ० भगवान् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर वि०

केवल सहस्सारे साइरेगे सोलस एव पाणएवि, णवर बत्तीस केवल एव अच्चुएवि, णवर साइरेगे बत्तीस केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे, अण्ण त चेव ॥ सेव भंते भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वाउभूई अणगारे समण भगव महावीर वंदइ नमसइ जाव विहरइ

इस भरत, सनत्कुमार में बारह लाख, माहेन्द्र में आठ लाख, ब्रह्मदेवलोक में चार लाख, लांतक में पचास हजार, महाशुक्र में चालीस हजार सहस्रार में छ हजार, आणत प्राणत में चारसो, आरण अच्युत में तीनसो अब सामानिक देव कहते हैं सौधर्मेन्द्र को चौरासी हजार, ईशानेन्द्र को अस्सी हजार, सनत्कुमारेन्द्र को बहत्तर हजार, माहेन्द्र को सीत्तर हजार, ब्रह्मेन्द्र को साठ हजार, लांतकेन्द्र को पचास हजार, महाशुक्रेन्द्रको चालिस हजार, सहस्रारेन्द्र को तीस हजार, प्राणतेन्द्र को बीस हजार, और अच्युतेन्द्र को दश हजार सामानिक जानना सामानिक देवता से आत्मरक्षक चौगुने जानना अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर विचरने

मगवन्त म० महावीर को व० वदनाकर व० बोले अ० अहो भ० भगवन् ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक ई० ईशान की भ० भगवन् सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि क० कहा ग० गइ कु० कहां अ० प्रवेश हुइ गो० गौतम स० शरीर में ग० गइ से० यह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है स० शरीर में ग० गइ से० वह ज० जैसे कू० कूटागार सा० शाला सि० होवे दु० दोनो बाजु लि० लिप्त गु० गुप्त गु० गुप्तद्वार णि० वायुविना की नि० वायुरहित गंभीर ती० उस कु०

त्ति भगवं गोयमे समण भगवं महावीर वदइ नमसइ २ त्ता एवं वयासी अहोणं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्डीए, ईसाणस्सणं भंते ! सा दिव्वा देविड्डी कहिं गते कहिं अणुप्पविट्ठे? गोयमा! सरीरगए ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सरीरगए? गोयमा ! से जहा नामए कूडागार साला सिया, दुहओ लित्ता, गुत्ता, गुत्तदुवारा णिवाया,

वदना नमस्कार कर ऐसा पूछा कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र देवताने जो ऐसी महा ऋद्धि बताई थी वह ऋद्धि पीछी कहां गई ? अहो गौतम ! शरीर में गइ अहो भगवन् ! किस तरह से यह ऋद्धि शरीरमें गई ? अहो भगवन् ! जैसे कोई कूटागारशाला होवे इस के दोनों पास लीपा हुवा होवे और उस के द्वार भी गुप्त होवे वायु का संचार इस में नहीं हो सकता होवे ऐसी कूटागार शाला की बाहिर बहुत जन समुदाय एकत्रित हुवा होवे और मेघममुख होता देखकर सब मनुष्यों उस कूटशाला में चले जाने से

अ० अधिपति अ० रंगरहित व० श्रेष्ट व० वस्त्र ध० पहिनने वाले आ० रहाहुई मा० माला म० मुकुट न० नया हे० सुवर्ण चा० सुंदर चि० चित्त च० चचल कु० कुंडल वि० अंकित होते गं० गंडस्थल जा० यावत् द० दशदिशा में उ० उद्योत करते प० प्रकाश करते ई० ईशान देवलोक ई० ईशान व० वडिंशक वि० विमान ज० जहां रायप्रसेणी में जा० यावत् दी० दिव्य दे० देव ऋद्धि जा० यावत् जा० जिस दि० दिशिसे पा० आये ता० उसदिशि में प० गये ॥ २१ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ०

लोगाहिवई, अट्ठावीस विमाण वास सयसहस्साहिवई, अरयवरवत्थधरे, आलईय माल मउडे नवहेम चारु चित्तचल चचल कुडल विलिहिज्जमाणगंडे जाव दसदिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे, ईसाणेकप्पे, ईसाणवर्डिसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव दिव्व देविर्ड्ढि जाव जामेव दिसि पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए॥ २१ ॥ भंते !

यथायोग्य स्थान पर माला, मुकुटवाले, नविन सुवर्ण के मनोहर व चित्त समान चंचलकुंडल की रेसायुक्त गंडस्थल वालेयावत् दशोंदिशि में उद्योत करनेवाले ईशानेन्द्र ईशान देवलोक के ईशान वर्डिसक नामक विमा न में रहते हुवे वगैरह सब अधिकार रायप्रसेणि सूत्र में जैसे सूर्याभ देवता का कहा, वैसे ही यहां कहना ऐसी सब ऋद्धि सहित भगवंत को वंदना नमस्कार करने को आये मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, कान्ति,प्रभाव वगैरह गौतमादि साधुओं को बताकर पीछे गये ॥ २१ ॥ उस समय में गौतम स्वामीने श्री भगवन्त को

कूटागार सा० यावत् कू० कूटागार सा० शाला दि० दृष्टान्त मा० कहना ॥ २२ ॥ ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजाको सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि दे० देवद्युति दे० देवानुभाव कि० किससे ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुई के० कौन ए० यह आ० था पु० पूर्व भव में कि० कौनसा ना० नाम कि० कौनसा गो० गोत्र क० कौनसे गा० गाव में न० नगर जा० यावत् स० सन्निवेश में कि० क्या द० देकर भो० भोगवकर कि० करके कि० क्या स० समाचर क० किस त० तथारूप स० श्रमण

णिवाय गभीरा, तीसेण कूडागार जाव कूडागार सालादिट्ठंतो भाणियव्वो ॥२२॥ ईसाणेण भंते ! देविंदे देवरण्णो सा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वादेवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे किण्णा पत्ते किण्णा अभिसमण्णागए, केवा एस आसि पुव्वभवे, किंणामएवा, किंगोत्तेवा, कयरंसि गामंसिवा नयरंसिवा जाव सण्णिवेसंसिवा, किंवा दच्चा, किंवा भोच्चा, किंवा किच्चा, किंवा समायरित्ता, कस्सवा तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्स वा

बाहिर कोई नहीं दीखते हैं इसी दृष्टांत से अहो गौतम ! सब ऋद्धि ईशानेन्द्र के शरीरमें चली गई॥२२॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र को ऐसी दीव्य देव ऋद्धि देव कान्ति व ऐसा महानुभाव कैसे प्राप्त हुवा ? वे पूर्व भव में कौन थे, उन का पूर्व भव में नाम क्या था, गोत्र क्या था, किस ग्राम, नगर व सन्निवेश में रहते थे, इनोंने क्या दान दिया, क्या अंत प्रांतादि आहार भोगवा, क्या तप किया, क्या प्राप्ति

मा० माहण की अ० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० सुवचन सो० सुनकर नि० अवधारकर ज० जिससे ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुइ ॥ २३ ॥ गो० गौतम ते० उस समय में इ० इस ज० जम्बूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त त० तहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में ता० तामली ना० नाम का मो० मौर्यपुत्र गा० गाथापति हो० था अ० ऋद्धिवंत दि० दिप्त जा० यावत् ब० बहुत मनुष्यों

अतिए एगमवि आयरिय धम्मियं सुवयण सोच्चा, निसम्म जण्ण ईसाणेण देविंदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया ? ॥ २३ ॥ एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बूद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलि-चीनाम णयरी होत्था, वण्णओ । तत्थण तामलिचीए नयरीए तामलीनाम मोरिय-

लेखनादि समाचारी की, अथवा कौनसे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धर्म श्रवण कर अवधारकर ऐसी ईशानेन्द्र की दीव्य ऋद्धि द्युति वगैरह प्राप्त की ? ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! उस काल उस समय में जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी थी उस नगरी में मौर्य पुत्र तामली नामक गाथापति रहता था वह गाथापति बहुत ऋद्धिवंत, दीप्त यावत् अन्य जनों से अपराभूत

से अ० अपराजित हो० था० ॥ २४ ॥ त० तब त० उस मो० मौर्यपुत्र ता० तामलि गा० गाथापति अ० कोइ वक्त पु० पुर्वरात्रि अ० अपरात्रि का० वक्त में कु० कुटुम्ब जा० चिंता जा० करते ए० इसरूप अ० आत्मचिंतवन मा० यावत् म० उत्पन्न हुवा अ० है पु० पूर्व के पो० पुराणा सु० सुचरितरूप सु० अच्छा पराक्रम रूप सु० शुभ क० कल्याणरूप क० किये क० कर्म के क० कल्याण कारी फ० फल वि० विशेष मे० जिन से अ० मैं हि० चांदी से सु० सुवर्ण से ध० धन से ध० धान्य से पु० पुत्र से प० पशु

पुत्ते गाहावई होत्था, अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥ २४ ॥ तएण तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि, कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेएयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पण्णे, अत्थि तामे पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुप्परिक्कंताण सुभाण, कल्लाणाण, कडाण कम्माण, कल्लाणफलवित्तिविसेसो, जेणाहं हिरण्णेण वड्ढामि, सुवण्णेण वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहिंच, पसूहिंच वड्ढामि, विउल, धण, कणग

या ॥ २५ ॥ एकदा तामली गाथापति को मध्यरात्रि में कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मैंने गतकाल में पूर्व जन्म में दानादि सुकृत किये हैं, तपश्चरणादि किये हैं, इस से ऐसे शुभ कल्याणकारी कर्म के अच्छे फल मुझे हो रहे हैं और इस से मेरे हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान्य बढ रहे हैं

से व० वृद्धिपाता हू वि० विपुल ध० धन क० कनक र० रत्न म० मणि मो० मौक्तिक स० शख सि० शिला प० प्रवाल र० रक्त र० रत्न स० विद्यमान सा० अच्छा सा० द्रव्य से अ० अतीव अ० वृद्धिपाता हू जा० जहांलग मे० मुझे मि० मित्र ना० ज्ञाति नि० स्वजाति स० सबधि प० परिवार आ० आदर करते हैं प० अच्छा जाने स० सत्कारकरे म० सन्मानदेवे क० कल्याण कारी मं० मागलीक दे० देव वि० विनय से चे० ज्ञानवन्त प० पूजते हैं ता० वहांलग मे० मुझ से० श्रेय क० काल पा० प्रभात में र० रजनी

रयण, माणि, मोत्तिय सख, सिलप्पवाल, रत्त, रयण, सतसारसावएज्जेण अईव अईव आभिवड्ढामि त किण अह पुरा पोराणाण सुचिण्णाण जाव कडाण कम्माण एगत सोक्खय उवेहमाणे विहरामि त जाव अह हिरण्णेण वड्ढामि, जाव अईव २ आभिवड्ढामि, जाव च मे मित्तनाइ नियग सबधि परियणो आढाइ परियाणाइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, कल्लाण, मगल, देवय, विणएण, चेइय पज्जुवासेइ, ताव तामे सेय कल्ल

वैसे ही पुत्र पशु वगैरह से मैं वढरहा हू और विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मौक्तिक, शख, शिला, वगैरह श्रेष्ट द्रव्य मुझे वहुत २ वढरहा है इस से मैं पूर्व के सचित किये हुवे शुभ कर्मों को एकान्त क्षय करता हुवा विचरता हू अब जहांलग मुझे मेरे मित्र, ज्ञाति सबंधि परिजन आदर देते हैं, स्वामी तरीके मानते हैं, सत्कार करते हैं, सन्मान देते हैं, कल्याणकारी, मांगलीक, देवता समान पूजा करते हैं वहांलग

से अ० अपराजित हो० था० ॥ २८ ॥ त० तब स० उस मो० मौर्यपुत्र ता० तामलि गा० गाथापति अ० कोइ वक्त पु० पुर्वरात्रि अ० अपरात्रि का० वक्त में कु० कुटुंब जा० चिंता जा० करते ए० इसरूप अ० आत्मचिंतवन जा० यावत् म० उत्पन्न हुवा अ० है पु० पूर्व के पो० पुराणा सु० सुचरितरूप सु० अच्छा पराक्रम रूप सु० शुभ क० कल्याणरूप क० किये क० कर्म के क० कल्याण कारी फ० फल वि० विशेष मे० जिस से अ० मैं हि० चांदी से सु० सुवर्ण से ध० धन से ध० धान्य से पु० पुत्र से प० पशु

पुत्ते गाहावई होत्था, अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥ २८ ॥ तएण तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि, कुटुंबजागरिय जागरमाणस्स इमेएयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पण्णे, अत्थि तामे पुरा पेराणाण सुचिण्णाण सुप्परिक्कताण सुभाण, कल्लाणाण, कडाण कम्माण, कल्लाणफलवित्तिविसेसो, जेणाहं हिरण्णेण वड्ढामि, सुवण्णेण वड्ढामि, धणेण वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहिंच, पसूहिंच वड्ढामि, विउल, धण, कणग

था ॥ २४ ॥ एकदा तामली गाथापति को मध्यरात्रि में कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मैंने गतकाल में पूर्व जन्म में दानादि सुकृत किये हैं, तपश्चरणादि किये हैं, इस से ऐसे शुभ कल्याणकारी कर्म के अच्छे फल मुझे हो रहे हैं और इस से मेरे हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान्य बढ रहे हैं

पा० प्रणाम प० प्रव्रज्यामें प० प्रवर्तनेको प० प्रवर्तता हुआ ए० इसरूप अ० अभिग्रह अ०ग्रहण करूंगा क० कल्पता है मे० मुझे जा० यावज्जीव छ० छठ भक्त से अ० अंतर रहित त० तप कर्म से उ० ऊर्ध्व बा० बाहु प० करके सू० सूर्याभिमुख आ० आतापनाभूमि में आ० आतापनालेता वि० विचरने को छ० छठ के पारणे में आ० आतापना भूमि से उ० नीकलकर स० स्वय दा० काष्ट के प० पात्र ग०ग्रहण कर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में ऊच नी० नीच म० मध्यम कु० कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षाचरी के

आपुच्छित्ता सयमेव दारुमय पडिग्गह गहाय मुंडे भवित्ता, पाणामाए पव्वज्जाए, पव्वइत्तए, पव्वइएवियण समाणे इम एयारूव आभिग्गह आभिगिण्हिस्सामि कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेण अनिक्खित्तेण तवो कम्मेण, उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए, आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्सवियण पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहित्ता, सयमेव दारुमय पडिग्गह गहाय तामलित्तीए णयरीए उच्चणीयमज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडेत्ता

मुझे श्रेय है इस तरह प्रव्रज्या अंगीकार किये पीछे छठ २ का निरंतर तप करके ऊंचे बाहु से आतापना भूमि में आतापना लेना मुझे श्रेय है वैसे ही छठ भक्त के पारणे के दिन उस आतापना भूमि से नीकलकर काष्टमय पात्र लेकर ताम्रलिप्ती नगरीमें उच्च, नीच, मध्यम कुलमें बहुत घरोंके समुदाय में फीरकर

जा॰ यावत् ज॰ सूर्य उदित होते स॰ स्वय दा॰ काष्ट के प॰ पात्र क॰ करके वि॰ विपुल अ॰ अशन पा॰ पान खा॰ खादिम सा॰ स्वादिम उ॰ नीपजाकर मि॰ मित्र णा॰ ज्ञाति नि॰ स्वजन स॰ सबधि प॰ परिवार को आ॰ आमंत्रणकर तं॰ उन को अ॰ अशन पा॰ पान खा॰ खाइम सा॰ स्वादिम व॰ वस्त्र ग॰ गंध अ॰ अलंकार से स॰ सत्कारकर स॰ सन्मानदेकर त॰ उन की पु॰ आगे जे॰ ज्येष्ठ पुत्र को कु॰ कुटुम्ब में ठा॰ स्थापकर तं॰ उन को आ॰ पूछकर स॰ स्वय दा॰ काष्ट के प॰ पात्र ग॰ ग्रहणकर मु॰ मुंड होकर

पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते सयमेव दारुमय पडिग्गह करेत्ता, विउलं असण, पाण, खाइम, साइम उवक्खडावेत्ता, मित्त, णाइ, नियग, सयण, सबधि, परियण आमतेत्ता, तं मित्त, णाइ नियग, सयण, सबधि, परियण विउलेण असण पाणखाइम साइमेण वत्थगध मल्लालंकारेणय सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ नियग सबधि परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुबे ठावित्ता, तं मित्त,नाइ, नियग, सबधि, परियण, जेट्ठपुत्तच

प्रभात में सूर्य का उदय होते स्वयं काष्टमय एक पात्र बनाकर, बहुत अशन, पान, खादिम स्वादिम बनाकर मित्र, ज्ञाति, सगे सबधी को आमंत्रणा करके और उन मित्रादि वर्ग को अशन, पान, खादिम, स्वादिम वस्त्र, गंध, माला अलंकार वगैरह वस्तु से सत्कार करके उन की सन्मुख ज्येष्ठ पुत्र का कुटुम्ब में स्थाप कर और उन मित्र ज्ञाति स्वजन तथा ज्येष्ठ पुत्र को पूछकर पीछे स्वयमेव काष्ट मय पात्र को ग्रहण कर मुंड बनकर प्रणाम करने योग्य नाम की प्रवर्ज्या अंगीकार करना

कर अ० अल्प म० मोंघे अ० अलंकृतकर स० शरीर भो० भोजन वक्त में भो० भोजन का मडप में सु० शुभासन पे ग० बैठे त० तब मि० मित्र णा० ज्ञाति नि० स्वजन स० संबंधि प० परिवार स० साथ

कियसरीरे, भोयणवेलाए भोयणमडवंसि सुहासणवरगए तएण मित्तनाइ नियग सयण संबंधि परियणेण सर्द्धि त विउल असण पाण खाइम साइम आसाएमाणे वीसाएमाणे परिसाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥ जेमिय भुतुत्तरागएवियण समाणे आयते चोक्खे परमसुइभूए त मित्त जाव परियण विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणय सक्कारेइ, सक्कारेइत्ता तस्सेवमित्तनाइ जाव परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुंबे ठावेइ २ त्ता त मित्तनाइ जाव परियण जेट्ठपुत्त च आपुच्छइ २त्ता मुंडे भवित्ता, पाणामाए

अल्पभार व बहुत मूल्यवाले आभूषणों से शरीर अलंकृत किया, भोजन तैयार होने पर स्वजन मित्रजन की साथ भोजन मंडप में प्रवेश कर शुभसिंहासनपे बैठकर मित्रादि सब की साथ विपुल निपजाये हुए अशनादि स्वय आस्वादते व अन्य को परुसते विचर रहे हैं इस प्रकार जीमकर उपर जो कुच्छ भोगवना था उसे भोगवकर पानी के कुल्ले कर शुद्ध बने फीर बहुत वस्त्र गंध व मालाअलंकार से आये हुए स्वजनादि का सत्कार सन्मान किया और सब स्वजन मित्र ज्ञाति प्रमुख की सन्मुख ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित किया फीर ज्ञाति स्वजन व ज्येष्ठ पुत्र को पूछकर मुंड बनकर प्रणाम नाम की प्रव्रर्या अंगीकार कर

लिये अ० विचरना सु० शुद्ध ओदन प० ग्रहणकर ति० तीन स० सात वक्त उ० पानी से प० धोकर त० पीछे आ० आहार करने को त्ति० ऐसा क० करके स० विचार करे ॥ २५ ॥ स० विचारकर क० काल पा० प्रभात में जा० यावत् ज० सूर्य उदित होते स० स्वयं दा० काष्ट का प० पात्र का० कराके वि० विपुल अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० नीपजाकर त० पीछे ण्हा० स्नान किया क० पीठीलगाइ क० कोगले किये पा० तीलमसादि किये सु० शुद्ध म० मांगलीक व० वस्त्र प० पहन

सुद्धोदण पडिग्गहेत्ता, त तिसत्तक्खुत्तो उदएण पक्खालेत्ता, तओपच्छा आहार आहारित्तए त्तिकट्टु, एव्र सपेहइ ॥ २५ ॥ सपेहेइत्ता कल्ल पाउप्पाभायाए जाव्र जलते सयमेव्र दारुमय पडिग्गहय कारेइ कारेइत्ता विउल असण पाण खाइम साइम उव्रक्खडावेइ, उव्रक्खडावेइत्ता, तओ पच्छा ण्हाए कयबालिकम्मे, कयकोउयमगल पायच्छित्ते, सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पव्र परिहिए, अप्पमहग्घाभरणाल-

घृत शाकादि रहित शुद्ध ओदन ग्रहण करके फीर उसे इक्कीस वक्त पानी से धोकर उस का आहार करना मुझे श्रेय है ॥ २५ ॥ इस प्रकार का विचार करके सूर्योदय होते काष्टमय पात्र बनवाया और अशन, पान, खादिम व स्वादिम ऐसे चारों आहार निपजाये पीछे स्नान किया, पीठी प्रमुख का विलेपन किया, पानी के कोगले किये, तिलमसादि शुभ चिन्ह किये और शुद्ध मंगलिक वस्त्र पहिने

कर अ० अल्प म० मोंघे अ० अलंकृतकर स० शरीर भो० भोजन वक्त में भो० भोजन का मंडप में सु० शुभासन पे ग० बैठे त० तब मि० मित्र णा० ज्ञाति नि० स्वजन स० सबंधि प० परिवार स० साथ

कियसरीरे, भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तएणं मित्तनाइ नियग सयण संबंधि परियणेण सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिसाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥ जेमिय भुतुत्तरागएवियणं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त जाव परियणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणय सक्कारेइ, सक्कारेइत्ता तस्सेवमित्तनाइ जाव परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेइ २ त्ता तं मित्तनाइ जाव परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ २ त्ता मुंडे भवित्ता, पाणामाए

अल्पभार व बहुत मूल्यवाले आभूषणों से शरीर अलंकृत किया, भोजन तैयार होने पर स्वजन मित्रजन की साथ भोजन मंडप में प्रवेश कर शुभसिंहासनपे बैठकर मित्रादि सब की साथ विपुल निपजाये हुए असनादि स्वय आस्वादते व अन्य को परुसते विचर रहे हैं इस प्रकार जीमकर उपर जो कुच्छ भोगवना था उसे भोगवकर पानी के कुल्ले कर शुद्ध बने फीर बहुत वस्त्र गंध व मालाअलंकार से आये हुए स्वजनादि का सत्कार सन्मान किया और सब स्वजन मित्र ज्ञाति प्रमुख की सन्मुख ज्येष्ट पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित किया फीर ज्ञाति स्वजन व ज्येष्ट पुत्र को पूछकर मुंड बनकर प्रणाम नाम की प्रव्रज्या अंगीकार कर

वि० विपुल अ० असन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम आ० आस्वादते वी० भोगवने प० परुसते प० जीमते वि० विचरते हैं जे० जीमकर मु० जीमे पीछे आ० आचमन किया चो० शुद्ध हुवे प० बहुत शुद्ध हुवे

पव्वज्जाए पव्वइएवियण समाणे इम एयारूव आभिग्गह आभिगिण्हइ, कप्पइ मे जाव-ज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण जाव आहारित्तए त्तिकट्टु इम एयारूव आभिग्गह आभिगिण्हइ, आभिगिण्हइत्ता, जावज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण अनिक्खित्तेण तवो कम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावण भूमीए आयावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ छट्ठस्स वियण पारणयसि, आयावण भूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता, सयमेव दारुमय पडिग्गहय गहाय, तामलित्तीए नयरीए उच्चनीय मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुयाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडइत्ता सुद्धोयण पडिग्गहेइ २ त्ता तिसत्तखुत्तो उदएण पक्खालेइ,

एसा अभिग्रह किया कि मुझे निरंतर छठ छठ का तप करना कल्पता है इसतरह अभिग्रह ग्रहण करके ऊंचे बाहु रखकर सूर्याभिमुख आतापना भूमि में आतापना लेते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ छठ के पारण के दिन आतापना भूमि से आकर स्वयमेव काष्ट पात्र लेकर ताम्रलिप्ती नगरी में ऊंच नीच व मध्यम कुल के घर समुदाय में भिक्षाचरी के लिये परिभ्रमण करते हैं और शुद्धोदन (पकेहुवे चांवल) लेकर इक्कीस बार

॥ ७६ ॥ २७ ॥ से० वह क० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाते हैं पा० प्रणाम प० प्रवर्ज्या गो० गौतम पा० प्रणाम प्रवर्ज्या से प० दीक्षित हुवा जं० जिसको ज० जहां पा० देखे त० उनको इ० इन्द्र खं० कार्तिकेय रु० महादेव सि० व्यंतर वे० वैश्रमण अ० चंडिका को० कोटिक रा० राजा जा० यावत स० सार्थवाह का० काक सा० श्वान पा० चंडाल उ० ऊंच को पा० देख उ० ऊंचको प० प्रणामकरे नी० नीच को पा० देखे नी० नीचको प० प्रणामकरे ज० जिसको ज० जैसा पा० देखे उ० उसको त०

पक्खालेइत्ता तओ पच्छा आहार आहारेइ ॥ २७ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ पाणामाए पव्वज्जा ? गोयमा ! पाणामाएण पव्वज्जाए पव्वइए समाणे जं जत्थ पासइ तं इंदवा, खंदवा, रुद्दवा, सिववा, वेसमणवा, अज्जवा, कोट्टकिरियवा, रायवा जाव सत्थवाहवा, काकवा, साणवा, पाणवा, उच्चं पासइ, उच्चं पणामं करेइ, नीयं पासइ नीयं पणाम करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणाम करेइ से तेणट्ठेण जाव

पानी से धोकर उस का आहार करते हैं ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! तामली तापसकी प्रणाम प्रवर्ज्या कैसे कही ? अहो गौतम ! प्रणाम प्रवर्ज्या अंगीकार करनेवाला इन्द्र, स्कंध, रुद्र, शिव, वैश्रमण, चंडिका, कोटिकादि, राजा को, श्रेठ को, सेनापति, सार्थवाह, काकपक्षी, श्वान, चांडाल को, ऊंचको देखकर ऊंचको प्रणाम करे, नीचको देखकर नीचको प्रणाम करे जिसे जहां देखे उसे वहां प्रणाम करे इस से अहो गौतम !

वि० विपुल अ० असन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम आ० आस्वादते वी० भोगवने प० परुसते प० भीमते वि०विचरते हैं जे० जीमकर मु० जीमे पीछे आ०आचमन किया चो० शुद्ध हुवे प०बहुत शुद्ध हुवे

पव्वज्जाए पव्वइएवियण समाणे इम एयारूव आभिग्गह आभिगिण्हइ, कप्पइ मे जाव-ज्जीवाए छट्ठं छट्ठेण जाव आहारित्तए त्तिकट्टु इम एयारूव आभिग्गह आभिगिण्हइ, आभिगिण्हइत्ता, जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेण आनिक्खित्तेण तवो कम्मेण उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावण भूमीए आयावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ छट्ठस्स वियण पारणयसि, आयावण भूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता, सयमेव दारुमय पडिग्गहय गहाय, तामलित्तीए नयरीए उच्चनीय मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुयाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडइत्ता सुद्धोयण पडिग्गहेइ २ त्ता तिसत्तखुत्तो उदएण पक्खालेइ,

एसा अभिग्रह किया कि मुझे निरंतर छठ छठ का तप करना कल्पता है इसतरह अभिग्रह ग्रहण करके ऊचे बाहु रखकर सूर्याभिमुख आतापना भूमि में आतापना लेते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ छठ के पारणे के दिन आतापना भूमि से आकर स्वयमेव काष्ट पात्र लेकर ताम्रलिप्ती नगरी में ऊच नीच व मध्यम कुल के घर समुदाय में भिक्षाचरी के लिये परिभ्रमण करते हैं और शुद्धोदन (पकेहुवे चांवल) लेकर इक्कीस बार

उ० उदात्त उ० उत्तम म० महानुभाग त० तपकर्म से सु० सुका भु० भुखा जा० यावत् ध० धमनी नाडी जा० हुई अ० है जा० जितना मे० मेरा उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ता० तहां लग म० मुझे से० श्रेय क० कल्याण जा यावत् ज० सूर्य उदीर होते ता० ताम लिप्ती न० नगरी दि० देखकर भ० बोलाकर प० परिचित गि० गृहस्थ पु० पूर्व संगति प० पीछे के संगति प० दीक्षा के संगति को आ० पुछकर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी की म० मध्य से नि० निकलकर पा०

कम्मेण सुक्के भुक्खे जाव धमणिसतए जाए, त अत्थि जामे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ताव तामे सेय कल्लं जाव जलते तामलित्तीए णगरीए दिट्ठा भट्ठेय पासडत्थेय, गिहत्थेय, पुव्वसंगतिएय, पच्छासंगतिएय, परियायसंगतिएय आपुच्छित्ता तामलित्तीए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता पाओगकुंडियमादीय उवगरण दारुमयंच

मांस रहित नाडियोंवाला हुवा हूं। अब जहां लग मेरे में उत्थान कर्म, बल, वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है वहां लग सूर्योदय होते ताम्रलिप्ती नगरी में रहनेवाले कि जिन को देखने का बहुत मनग पडा है, जो मेरे भक्त है, पाखण्ड धर्म के आचरण करनेवाले हैं परंतु मेरे परिचय में आये हुवे है, जो गृहस्थ हैं, जो दर्शनाभिलाषी हैं, दीक्षा लीये पहिले जिन की संगति में रहा सो पूर्व संगतिवाले और दीक्षा लिये पीछे जिन की संगति में रहा सो पश्चात् संगतिवाले और अ प तापसादि कि जो मेरे परिचित हैं उन

वैसे प० प्रणामकरे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् प० प्रव्रज्या ॥ २८ ॥ त० तब से० वह ता० तामलि मो० मोर्यपुत्र ते० उस उ० उदार वि०विपुल दि०अनुज्ञा प० ग्रहीहुई बा० अज्ञान त० तप कर्म से सु०सुका भु० भुखा जा० यावत् ध० नाडी दीखी ज० हुइ हो० था ॥ २९ ॥ त० तब त० उस ता० तामली बा० अज्ञान त०तपस्वी को अ०कोई वक्त पु०रात्रिको अ०अनित्य जा०जागरण जा०जागते को ए०इसरूप अ० आत्मिक चिं० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा अ० मैं इ० इस उ० उदार वि० विपुल जा० यावत्

पव्वज्जा॥२८॥तएणं से तामली मोरियपुत्ते तेण उरालेण विपुलेण पयत्तेण पग्गहिएण बालतवो कम्मेण सुक्के भुक्खे जाव धमणिसतए, जाएयावि होत्था ॥ २९ ॥ तएण तस्स तामलिस्स बाल तवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल समयसि सि आणिच्च जागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था एव खलु अहं इमेण उरालेण विपुलेण जाव उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण महाणुभागेण तवो

प्रणाम प्रवर्ज्या करी है ॥ २८ ॥ तब वह तामली मौर्य पुत्र उदार, विपुल, गुरुकी आज्ञा से कराया हुवा, बहुत मान पूर्वक कराया हुवा बाल तप कर्म से शुष्क यावत् रक्त मांस रहित नसोंवाला हुवा ॥ २९ ॥ एकदा मध्यरात्रि में उन तामली मौर्य पुत्र तपस्वी को अनित्य जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय चिन्तवन उत्पन्न हुवा कि ऐसे उदार, विपुल, उदात्त, उत्तम, व महानुभाग तप कर्म से शुष्क यावत् रक्त

उ० उदात्त उ० उत्तम म० महानुभाग त० तपकर्म से सु० सुक्का भु० भुक्खा जा० यावत् ध० हड्डी नाडी जा० हुई अ० है जा० जितना मे० मेरा उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ता० तहां लग म० मुझे से० श्रेय क० कल्याण जा० यावत् ज० सूर्य उदीर होत ता० ताम लिप्ती न० नगरी दि० देखकर भ० बोलाकर पा०परिचित गि० गृहस्थ पु० पूर्व सगति प०पीछे के सगति प० दीक्षाके सगाते को अ० पुछकर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी की म० मध्य से नि० निकलकर पा०

कम्मेण सुक्के भुक्खे जाव धमणिसतए जाए, त अत्थि जामे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ताव तामे सेय कल्लं जाव जलते तामलित्तीए णगरीए दिट्ठा भट्ठेय पासहत्थेय, गिहत्थेय, पुव्वसगतिएय, पच्छासगतिएय, परियायसगतिएय आपुच्छित्ता तामलित्तीए णयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता पाओगकुडियमादीय उवगरण दारुमयच

मांस रहित नाडियोंवाला हुवा हू। अब जहा लग मेरे में उत्थान कर्म, बल, वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है वहां लग सूर्योदय होते ताम्रलिप्ती नगरी में रहनेवाले कि जिन को देखने का बहुत प्रसंग पडा है, जो मेरे भक्त है, पाखण्ड धर्म के आचरण करनेवाले हैं परन्तु मेरे परिचय में आये हुवे है, जो गृहस्थ हैं, जो दर्शनाभिलाषी हैं, दीक्षा लीये पहिले जिन की सगति में रहा सो पूर्व सगतिवाले और दीक्षा लिये पीछे जिन की सगति में रहा सो पश्चात् संगतिवाले और अन्य तापसादि कि जो मेरे परिचित हैं उन

पादुका कुं० कर्मडल आ० वगैरह उ० उपकरण दा० काष्ट के प० पात्र ए० एकान्त में ए० रखकर ता० ताम्रलिप्ती नगरी की उ० ईशान कोन में णि० प्रमाण मात्र भूमि आ० देखकर स० संलेखना झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्याकर पा० पादोपगमन का० काल को अ० नहीं वांछता वि० विचरने को त्ति० ऐसा करके स० सकल्पकर ॥ ३० ॥ क० काल जा० यावत् ज० सूर्य उदीत होते जा० यावत् आ० पूछकर ता० तामली ए० एकान्त में ए० रखे जा० यावत् भ० भक्त

पडिग्गहय एगते एडेत्ता तामलित्तीए णगरीए उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए णियत्तणियमडल आलिहित्ता सलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाण पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए, त्तिकट्टु एव सपेहेइ सपेहेइत्ता ॥ ३० ॥ कल्ल जाव जलते जाव आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता तामली एगते एडेइ,

सब से मीलकर व उन को पूछकर ताम्रलिप्ती नगरी की मध्य में से नीकलकर मेरी पादुका, कर्मडल, काष्टमय पात्र वगैरह सब को एकान्त में डालकर इस नगरी की ईशान कौन में मेरे शरीर प्रमाण क्षेत्र की मर्यादा करके शरीर दुर्बल होवे वैसी सलेखना झूसणा युक्त भक्त पानी का प्रत्याख्यान करके कालको नहीं वांच्छता हुवा विचरुंगा ॥ ३० ॥ एसा विचार कर सूर्योदय होते सब को पूछकर व भडोपकरण एका-

पा० पानी के प० प्रत्याख्यान कर पा० पादोपगमन से नि० रहा ॥३१॥ ते० उस काल ते० उस समय में ब०बलीचचा रा०राज्यधानि अ०इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हा०थी ॥३२॥ त० तत्र से उस ब०बली चचा रा० राज्यधानि में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामली बा० बाल तपस्वी को आ० अवधिज्ञान से आ० देखकर अ० अन्योन्य स० तेडाकर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय ब० बलिचचा रा० राज्यधानी अ० इन्द्र बिना की अ० पुरोहित बिना की भ० अहो

जाव भत्तपाण पडियाइक्खिए, पाओवगमण निवण्णे ॥ ३१ ॥ तेण कालेण तेण समएण बलिचचारायहाणी आणिंदा अपुरोहिया याविहोत्था ॥ ३२ ॥ तएण तेबलिच-चारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिं बालतवस्सिं ओ-हिणा आहोयति आहोयातित्ता अण्णमण्ण सद्दावेंति, सद्दावेंतित्ता, एवं वयासी एवं

न्तमें रखकर आहार पानीका प्रत्याख्यान कर काल को नहीं वांच्छता हुवा पादोपगमन संथारा ग्रहण किया ॥ ३१ ॥ उस काल उस समय में बलीचचा राज्यधानी में इन्द्र काल कर जाने से इन्द्र रहित बनी हुई थी ॥ ३२ ॥ तब बलीचचा राज्यधानी में रहनेवाले बहुत देव व देवियोंने तामली तापस को संलेखना करते हुवे देखे और परस्पर बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! बलीचचा राज्यधानी इन्द्र रहित, पुरोहित रहित है और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्टित व इन्द्र के आधीन कार्य करनेवाले हैं और अहो देवानुप्रिय ! ता-

पादुका कु० कमंडल आ० वगैरह उ० उपकरण दा० काष्ट के प० पात्र ए० एकान्त में ए० रखकर ता० ताम्रलिप्ती नगरी की उ० ईशान कोन में णि० प्रमाण मात्र भूमि आ० देखकर स० सलेखना झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्याकर पा० पादोपगमन का० काल को अ० नहीं वांछता वि० विचरने को त्ति० ऐसा करक स० सकल्पकर ॥ ३० ॥ क० काल जा० यावत् ज० सूर्य उदीत होवे आ० यावत् आ० पूछकर ता० तामली ए० एकान्त में ए० रखे जा० यावत् भ० भक्त

पडिग्गहय एगते एडेत्ता तामलित्तीए णगरीए उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए णियत्तणियमंडल आलिहित्ता सलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाण पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए, त्तिकट्टु एव सपेहेइ सपेहेइत्ता ॥ ३० ॥ कल्ल जाव जलते जाव आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता तामली एगते एडेइ,

सब से मीलकर व उन को पूछकर ताम्रलिप्ती नगरी की मध्य में से नीकलकर मेरी पादुका, कमंडल, काष्टमय पात्र वगैरह सब को एकान्त में डालकर इस नगरी की ईशान कौन में मेरे शरीर प्रमाण क्षेत्र की मर्यादा करके शरीर दुर्बल होवे वैसी सलेखना झूसणा युक्त भक्त पानी का प्रत्याख्यान करके कालको नहीं वांछता हुवा विचरगा ॥ ३० ॥ ऐसा विचार कर सूर्योदय होते सब को पूछकर व सर्वोपकरण एका-

रा० राज्यधानी में ठि० स्थिति प० संकल्प प० करानेको ॥ ३३ ॥ अ० अन्योन्य की अ० पास ए० यह अर्थ प० सूनकर ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० निकले जे० जहां रु० रुचकेन्द्र उ० उत्पातपर्वत ते० तहां उ० आये वे० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रू० रूप वि० विकुर्वणाकर ता० उस उ० उत्कृष्ट तु० त्वरासे च० रौद्रगति से ज० अन्यगति से छे०

ठिइप्पकप्प पकरावेत्तए त्तिकट्टु,॥ ३ ३॥ अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठ पडिसुणंति पडिसुणित्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छंति २ त्ता, जेणेव रुयइंद उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणंति २ त्ता जाव उत्तर वेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए, चवलाए, चंडाए, जयणाए, छेयाए, सीहाए, सिग्घाए, दिव्वाए, उद्धुयाए, देवगईए, तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूद्दीवे दीवे, जेणेव भारहेवासे, जेणेव तामलित्तीए णगरीए,

चपलतावाली, क्रोध में आकर चले ऐसी रौद्र, अन्य गति का जय करे वैसी, निपुणतावाली, शीघ्रतावाली, दीव्य, और वस्त्रादिक के उद्धूनपने की देवगति से तिच्छी असंख्यात द्वीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी में तामली मौर्य पुत्र की पास आये वहां आकर तामली तपस्वी की उपर, व दिशी विदिशी में खडे रहकर मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, मनोज्ञकान्ति, दीव्य

दे० देवानुप्रिय इं० इन्द्राधीन इं० इन्द्राधिष्ठित इं० इन्द्राधीन क० कार्य भ० इसलिये दे० देवानुप्रिय ता० तामली बा० बालतपस्वी ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी की ब० बाहिर उ० ईशान कोन में नि० प्रमाण माथ भूमि आ० देखकर सं० संलेखना झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्यान कर पा० पादोप गम से णि० रहा तं० उन को से० श्रेय दे० देवानुप्रिय ता० तामलि बा० बालतपस्वी को ब० बलिचंचा

खलु देवाणुप्पिया ! बलिचचारायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हेण देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा, इंदाहिट्ठिया, इंदाहीण कज्जा, अयचण देवाणुप्पिया ! तामली बालतव-स्सी तामलित्तीए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिम दिसीभाए नियत्तणियमंडलं आ-लिहित्ता संलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे ॥ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तामलिं बालतवस्सिं बलिचंचाए रायहाणीए

भन्नी तपस्वीने ताम्रलिप्ती नगरी की बाहिर ईशान कोनमें शरीर प्रमाण क्षेत्र मंडल आलेख कर संलेखना से झूसित भक्तपान का प्रत्याख्यान करके पादोपगमन अनशन किया है इसलिये तामली तपस्वी को बलि चंचा राज्यधानी में रहनेका संकल्प कराना श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥ परस्पर ऐसे वार्तालाप सुनकर बलिचंचा राज्यधानी की मध्य में से नीकलकर रुचकेन्द्र नाम का उत्पात पर्वत पर आये वहां आकर वैक्रेय समुद् घात प्रदेश बाहिर नीकालकर उत्तर वैक्रेय रूप बनाये वैक्रेय रूप बनाकर उत्कृष्ट, आकुलतावाली,

रा० राज्यधानी में ठि० स्थिति प० सकल्प प० करानेको ॥ ३३ ॥ अ० अन्योन्य की अ० पास ए० यह अर्थ प० सूनकर ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० निकले जे० जहां रु० रुचकेन्द्र उ० उत्पातपर्वत ते० तहां उ० आये वे० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रू० रूप वि० विकुर्वणाकर ता० उस उ० उत्कृष्ट तु० त्वरासे च० रौद्रगति से ज० अन्यगति स छे०

ठिइप्पकप्प पकरावेत्तए त्तिकट्टु,॥ ३ ३॥अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणति पडिसुणतित्ता बलिचचाए रायहाणीए मज्झ मज्झेण निग्गच्छति २ त्ता, जेणेव रुयइद उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छाति, वेउव्विय समुग्घाएण समोहणति २त्ता जाव उत्तर वेउव्वियाइ रूवाइ विकुव्वति, विकुव्वातित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए, चवलाए, चडाए, जयणाए, छेयाए, सीहाए, सिग्घाए, दिव्वाए, उद्धुयाए, देवगईए, तिरिय असखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झ मज्झेण जेणेव जबूद्दीवे दीवे, जेणेव भारहेवासे, जेणेव तामलित्तीए णगरीए,

चपलतावाली, क्रोध में आकर चले ऐसी रौद्र, अन्य गति का जय करे वैसी, निपुणतावाली, शीघ्रतावाली, दीव्य, और वस्त्रादिक के उद्धूतपने की देवगति से तिर्च्छी असंख्यात द्वीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी में तामली मौर्य पुत्र की पास आये वहां आकर तामली तपस्वी की उपर, व दिशी विदिशी में खडे रहकर मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, मनोज्ञकान्ति, दीव्य

निपुनगति सी० सिंहगति सि० शीघ्रगति मे दि० दीव्यगति मे उ० उद्धूत दे० देवगति से ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र म० मध्य में जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि मो० मौर्यपुत्र ते० तहां उ० आकर ता० तामलि बा-लतपस्वी की उ० उपर स० सपक्ष में स० प्रतिदिशा में ठि० रहकर दि० दीव्य दे० देवऋद्धि

जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छतित्ता तामलिस्स बालतव-सिस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा, दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुत्तिं, दिव्वं देवाणु-भावं दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसति, उवदंसतित्ता, तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति वंदति नमंसति, नमंसतित्ता, एवं वयासी एवं देवाणुप्पिया ? अम्हे बलिचचारायहाणिवत्थव्वया, बहवे असुर कुमारा देवाय देवीओ य देवाणुप्पिया ! वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो । अम्हाणं देवाणुप्पिया !

व और देवता के बत्तीस प्रकार के नाटक बतलाये बतलाकर तामली तापस को तीन बार प्रद-क्षिणा करके वंदना नमस्कार किया और ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! हम बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव व देवियों तुम को वांदते हैं यावत् तुम्हारी पर्युपासना करते हैं अहो देवानुप्रिय हमारी बलिचंचा राज्यधानी इन्द्र रहित व पुरोहित रहित है और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्टित, व इन्द्राधीन कार्य करने

दे० देवद्युति दे० देवानुभाव दि० दीव्य ब० बत्तीस प्रकार के न० नाटकविधि उ० बताकर ता० तामलि बा० बालतपस्वी को ति० तीनवार आदान प० प्रदक्षिणा क० करे व० वांदे न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० हम ब० बलिचचा रा० राजधानी व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी वं० वंदन करते हैं न० नमस्कार करते हैं प० पर्युपासना करते हैं ॥ ३१ ॥ त० तब से० वह ता० तामलि बालतपस्वी से० उन ब० बलिचचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब०

बलिचचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हेण देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा, इंदाहिट्ठिया, इंदाहीणकज्जा त तुब्भेण देवाणुप्पिया बलिचचा रायहाणिं आढह, परियाणह, सुमरह, अट्ठबंधह, निहाण पकरेह, ठिइप्पकप्प पकरेह, तएण तुब्भे कालमासे काल किच्चा बलिचचा रायहाणीए उववाज्जिस्सह, तएण तुब्भे अम्ह इंदा भविस्सइ तएण तुब्भे अम्हेहिं सद्धिं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणा विहरिस्सह॥ ३ २॥ तएण से ता-

वाले हैं इसलिये अहो देवानुप्रिय ! तुम बलिचंचा राज्यधानी का आदर करो, अच्छी जानो, उस का मन में स्मरण करो, वहां उत्पन्न होने का निदान (नियाणा) करो और वहां रहने का संकल्प करो इस से तुम यहां से काल के अवसर में काल कर के बलिचचा राज्यधानी में उत्पन्न होवोगे और हमारी साथ दीव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरोगे ॥३२॥ इस तरह बलिचचा राज्यधानी के रहने वाले बहुत असुर

निपुनगति सो० सिंहगति सि० शीघ्रगति से दि० दीव्यगति मे उ० उद्धृत दे० देवगति मे ति० तिर्च्छा अ० असख्यात दी० द्वीप स० समुद्र म० मध्य में जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि मो० मौर्यपुत्र ते० तहां उ० आकर ता० तामलि बालतपस्वी की उ० उपर स० सपादिशा में स० प्रतिदिशा में ठि० रहकर दि० दीव्य दे० देवऋद्धि

जेणेव तामली मोरियपुत्ते तणेव उवागच्छति, उवागच्छतित्ता तामलिस्स बालतव-सिस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा, दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं, दिव्वं देवाणु-भावं, दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदसति, उवदसतित्ता, तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करति वदति नमसति, नमसतित्ता, एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ? अम्हे बलिचचारायहाणिवत्थव्वया, बहवे असुर कुमारा देवाय देवीओय देवाणुप्पिया ! वदामो नमसामो जाव पज्जुवासामो । अम्हाणं देवाणुप्पिया !

महानुभाव और देवता के बत्तीस प्रकार के नाटक बतलाये बतलाकर तामली तापस को तीन वार प्रद-क्षिणा करके वन्ना नमस्कार किया और ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! हम बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव व देवियों तुम को वंदते हैं यावत् तुम्हारी पर्युपासना करते हैं अहो देवानुप्रिय हमारी बलिचंचा राज्यधानी इन्द्र रहित व पुरोहित रहित है और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्टित, व इन्द्राधीन कार्य करने

बा० बालतपस्वी से अ० अनादर कराये हुवे अ० अच्छा नहीं जाने हुवे जा० जिस दि० दिशिसे पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ३६ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में ई० ईशान देवलोक अ० इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हो० था ॥ ३७ ॥ त० तब से० वह ता० तामली बा० बालतपस्वी ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण स० साठ सहस्रवर्ष प० पर्याय पा० पालकर दो० दोमास की स० सलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० वीससहित भ० भक्त शत अ० अनशन छे० छेदकर का० काल के अवसर में का०

रायहाणि वत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाइज्जमाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया॥३६॥तेण कालेण तेण समएण ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिए यावि होत्था, ॥३७॥ तएण से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइ सट्ठिं वास सहस्साइ परियाग पाउणित्ता दो मासियाए सले-हणाए अत्ताणझूसित्ता, सवीस भत्तसय अणसणाए छेदित्ता, कालमासे काल किच्चा

इस तरह बलिचंचा राज्यधानी में रहने वाले देवता देवियों का कहना तामली तापस ने सुना नहीं वैसे ही अच्छा माना नहीं इस से वे जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥ ३६ ॥ उस काल उस समय में ईशान नामक देवलोक में इन्द्र चवने से वह भी इन्द्र रहित पुरोहित रहित हुवा ॥ ३७ ॥ तामली तापस साठ हजार वर्ष पर्यंत प्रवर्ज्या पालकर, दो मास की संलेखना से आत्मा को झूसकर, एकसो बीस भक्त अनशन

बहुत अ० असुर कुमार के दे० देव देवी से ए० ऐसे वु० कहते हुवे ए० इस अर्थ को नो० नहीं आ० आदरकर नो० नहीं प० अच्छा माने तु० तुष्णित स० रहे ॥ ३४ ॥ त० तब ते० वे ब० बलिचचा रा० राज्यधानि में व० रहते ब० बहुत अ० असुर कुमार द० देव दे० देवी ता० तामलि मो० मोर्यपुत्र को दो० दूसरीवक्त त० तीसरी वक्त ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके ॥ ३५ ॥ ता० तामलि

मली बालतवस्सी तेहिं बलिचचारायराणि वत्थव्वेहिं बहुहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय, एव वुच्चेसमाणे, एयमट्ठ णो आढाइ, णो परियाणइ, तुसिणीए साचिट्ठइ ॥ ॥ ३४ ॥ तएण ते बालिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिं मोरियपुत्त दोच्चपि तच्चपि तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ करेइत्ता, जाव अम्ह चण देवाणुप्पिया ! बलिचचारायहाणी आणिंदा जाव ठिइप्पकप्प पकरेह जाव दोच्चपि तच्चपि एव वुच्चेसमाणे जाव तुसिणीए सचिट्ठइ॥३५॥तएण ते बालिचचा-

कुमार देवत देवियोंने जो कहा उस का अज्ञान तपस्या करने वाला तामली तापस ने आदर नहीं किया अच्छा नहीं जाना परंतु मौन रहा ॥ ३४ ॥ पुन वे असुर कुमार देवताओंने तीन वक्त प्रद- क्षिणा कर दो तीन बार ऐसा ही कहा कि अहो देवानुप्रिय हम इस बलिचचा राज्यधानी में रहने वाले देव दे यावत् तुम यहां उत्पन्न होने का नियाना करो परन्तु तामली तापस मौन खडा रहा. ॥ ३५ ॥

में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामलि बा० बालतपस्वी को का० काल को प्राप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में दे० देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा पा० देखकर आ० आसुरक्त कु० कुपित हुये चं० रौद्ररूप वाले हुवे मि० देदीप्यमान होते ब० बलिचचा रा० राज्यधानी के म० मध्य से नि० नीकलकर ता० उस उ० उत्कृष्टगति से जा० यावत् जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि बा० बालतपस्वी का स० शरीर तं० तहां उ० आकर

देवीओय तामलिं बालतवस्सिं कालगयं जाणित्ता ईसाणेय कप्पे देविंदत्ताए उववण्णं पासित्ता, आसुरुत्ता कुविया चंडिक्किया, मिसिमिसेमाणा बलिचचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निगच्छंति, निगच्छतित्ता, ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव भारहेवासे जेणेव तामलित्ती णयरी, जेणेव तामलिस्स बाल तवसिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-

देव देवियोंने तामली तपस्वी को काल प्राप्त हुवा जानकर व ईशान देवलोक में इन्द्र बना हुवा देख कर क्रोध में आसुरक्त हुए, कोप म धमधमायमान हुए, अत्यंत द्वेष भाव प्रगट हुवा, और मीसमीस दांत पीसने लगे फीर बलिचचा राज्यधानी में स नीकलकर उत्कृष्ट चंडा, चपला, शीघ्र, दीव्य देवगति से ताम्रलिप्ती नगरी के बाहिर तामली तापसका शरीर था वहां आये और उस का बायां पांव रस्सी से बांधकर तीन

काल करके ई० ईशान क० देवलोक में ई० ईशान वर्डिंसक विमान में उ० उपपात सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदूष्य वस्त्र के अं० अतर में अ० अंगुलका अं० असंख्यातवा भाग ओ० अवगाहना ई० ईशान दे० देवेन्द्र वि० विरह काल में ई० ईशान देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा ॥ ३८ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा अ० तुर्त का उत्पन्न प० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त भाव को ग० जावे त० वह ज० जैसे आ० आहार पर्याप्ति जा० यावत् भा० भाषामन पर्याप्ति ॥ ३९ ॥ त० तब ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी

ईसाणे कप्पे ईसाणवडिंसए विमाणे उववाय सभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिय अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणे देविंदे विरहिय कालसमयंसि ईसाण देविंदत्ताए उववण्णे ॥ ३८ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया अहुणो ववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ तंजहा आहार पज्जत्तीए, जाव भासामन पज्जत्तीए ॥ ३९ ॥ तएणं बलिचंचा रायहाणि वत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय

करके काल के अवसर में काल कर ईशान देवलोक के ईशान वर्डिंसक नामक विमान की उपपात सभा में देवशैय्या में देवदूष्य वस्त्र की नीचे अंगुल के असंख्यात भाग की अवगाहना से ईशान देवेन्द्र के विरह काल में ईशानेन्द्रपने उत्पन्न हुवे ॥ ३८ ॥ वह तत्काल का उत्पन्न हुवा ईशानेन्द्र आहार पर्याप्ति आदि पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्त हुवा ॥ ३९ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले बहुत

में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामलि बा० बालतपस्वी को का० काल को प्राप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में दे० देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा पा० देखकर आ० आसुरक्त कु० कुपित हुवे चं० रौद्ररूप वाले हुवे मि० देदीप्यमान होते ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी के म० मध्य से नि० नीकलकर ता० उस उ० उत्कृष्टगति से जा० यावत् जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि बा० बालतपस्वी का स० शरीर तं० तहां उ० आकर

देवीओय तामलिं बालतवस्सिं कालगयं जाणित्ता ईसाणेय कप्पे देविंदत्ताए उववण्णं पासित्ता, आसुरुत्ता कुविया चंडिक्किया, मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निगच्छंति, निगच्छित्ता, ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव भारहेवासे जेणेव ताम- लित्ती णयरी, जेणेव तामलिस्स बाल तवसिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-

देव देवियोंने तामली तपस्वी को काल प्राप्त हुवा जानकर व ईशान देवलोक में इन्द्र बना हुवा देख कर क्रोध में आसुरक्त हुए, कोप में धमधमायमान हुए, अत्यंत द्वेष भाव प्रगट हुवा, और मीसमीस दांत पीसने लगे फीर बलिचंचा राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट, चपला, शीघ्र, दीव्य देवगति से ताम्रलिप्ती नगरी के बाहिर तामली तापसका शरीर था वहां आये और उस का बाया पांव रस्सी से बांधकर तीन

बा० बाये पांव सु० रस्सी से ब० बांधे बं० बांधकर ति० तीनवार मु० मुख में उ० थुके उ० थुककर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीन च० चार च० चत्वर च० चतुर्मुख म० महा रस्तापर आ० इधर उधर क० करते म० मोटे मोटे स० शब्द से उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोले से० वह के० कौन ता० तामली बा० बाल तपस्वी स० स्वय ग० लीया हुवा पा० प्रणाम प्रव्रज्यासे प० दीक्षित के० कौन से० वह ई० ईशान देवलोक में ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा ति० ऐसा करके ता० तामली बा० बालतपस्वी का स० शरीर की ही० हीलना करे निं० निंदाकरे खिं० विशेष निंदाकरे ग० गर्हा करे

च्छइत्ता, वामे पाए सुंबेण बंधति बंधइत्ता, तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुहति २ त्ता तामलि-त्तीए णयरीए सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह पहेसु आकड्ढविकढ्ढि करेमाणा महया महया सद्देण उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासी सेकेण भो तामला बालतवस्सी सय गहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए, के सण से ईसाणे कप्प ईसाणे देविंदे देवरायातिकट्टु, तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरय हीलेंति, निंदंति

थूक उस के मुंह में थुंके थुंककर उस नगरी के सिंघाडे के आकारवाले यावत् बहुत रस्तेवाले चौक में रस्सी से उस के शरीर को घसीटते हुवे लाये और उद्घोषणा करने लगे कि अहो लोको! स्वयं मनः कल्पित प्रणाम प्रव्रज्या अंगीकार करनेवाला ऐसा तामली तापस कौन? ईशान देवलोक में देवतापने

अ० अवज्ञाकरे ग० तर्जनाकरे ता० ताडनकरे प० कदर्थनाकरे प० दु खदे आ० इधर उधर क० करे हॉ० हीलनाकर जा० यावत् आ० इधर उधर क० करके ए० एकान्त में ए० रखकर द्दा० जिसदिशि से पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ४० ॥ त० तब ई० ईशान देवलोक में रहने वाले वे० वेमानिक दे० देव दे० देवी ब० बलीचचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से ता० तामलि बा० बालतपस्वी का स० शरीर को ही० हीलना करते नि० निंदाकरते जा० यावत् आ० इधर उधर की करते पा० देखकर आ० शीघ्र आसुरक्त जा० यावत मि० दैदीप्यमान होते ज० जहां

खिंसति, गरहंति, अवमण्णति, तज्जिंति, तालेंति, परिवहेंति, पव्वहंति, आकड्ड विकड्डिं करंति, हीलेत्ता जाव आकड्ड विकड्डिं करेत्ता, एगंते एडंति २ त्ता, जामेवदिसिं पाउब्भूया, तामेवदिसिं पडिगया ॥ ४० ॥ तएण ते ईसाण कप्पवासी बहवे वेमाणिया देवाय देवीओय बलिचचा रायहाणि वत्थव्वएहिं, बहूहिं असुरकुमारेहिं, देवेहिय देवीहिय तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरय हीलिज्जमाण, निंदिज्जमाण, खिंसिज्जमाण जाव

उत्पन्न हुवा सो कौन ? इस तरह तामली तापस के शरीर की हिलना, निंदा तिरस्कार व गर्हा करनेलगे अवगणना करने लगे, हस्तादि से ताडना करने लगे, और जात्यादिक की हिलना, विशेष हिलना करने लगे ऐसा करके उस के शरीर को एकान्त में डालकर जहां से आये थे वहां पीछे चलेगये ॥ ४० ॥ उस समय में ईशान देवलोक में रहनेवाले बहुत देव व देवियोंने बलिचचा राजधानी में रहनेवाले देव देवी को

वा० बाये पांव सु० रस्सी से ब० बांधे बं० बांधकर ति० तीनवार मु० मुख में उ० थुंके उ० थुंककर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीन च० चार च० चत्वर च० चतुर्मुख म० महा रस्तापर आ० इधर उधर क० करते म० मोटे मोटे स० शब्द से उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोले से० वह के० कौन ता० तामली बा० बाल तपस्वी स० स्वय ग० लीया हुवा पा० प्रणाम प्रव्रज्यासे प० दीक्षित के० कौन से० वह ई० ईशान देवलोक में ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा ति० ऐसा करके ता० तामली बा० बालतपस्वी का स० शरीर की ही० हीलना करे नि० निंदाकरे खि० विशेष निंदाकरे ग० गर्हा करे

च्छइत्ता, वामे पाए सुंबेण बधति बधइत्ता, तिक्खुत्तो मुहे उट्ठहति २ त्ता तामलि-त्तीए णयरीए सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह पहेसु आकड्ढविकड्ढि करेमाणा महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासी सेकेण भो तामली बालतवस्सी सय गहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए, के सण से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवरायातिकट्टु, तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलेंति, निंदति

बाद उस के मुख में थुंके थुंककर उस नगरी के सिंघाडे के आकारवाले यावत् बहुत रस्तेवाले चौक में रस्सी से उस के शरीर को घसीटते हुवे लाये और उद्घोषणा करने लगे कि अहो लोको ! स्वय मनः कल्पित प्रणाम प्रव्रज्या अंगीकार करनेवाला ऐसा तामली तापस कौन ? ईशान देवलोक में देवतापने

पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ८१ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ते० उन ई० ईशान देवलोक निवासी ब० बहुत वै० वैमानिक दे० देव दे० देवी अ० पास ए० यह अर्थ सो०सूनकर नि० अवधार कर आ० असुरक्त जा० यावत् मि० देदीप्यमान त० तहाँ स० शैयापे ग० गये हुवे ति० त्रिवली भि० भृकुटी सा० चढाकर ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी अ० अधो स० दिशा म० विदिशा को स० देखे ॥ ८२ ॥ त० तब सा० वह ब० बलिचंचा रा० राज्धानी ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

जाव एगते एडंति एडतिचा जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ४१ ॥ तएण से ईसाणे देविंदे देवराया, तेसिं ईसाणकप्पवासीण बहूण वेमाणियाण देवाणय देवी-णय अतिए एयमट्ठ सोच्चानिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलीय भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचचा रायहाणिं अहे सपक्खि सपडिदिसिं समभिलोएइ॥४२॥ तएण सा बलिचचा रायहाणी ईसाणेण देविंदेण देवरण्णा अहे सपक्खि

लना, निंदा की फीर आप के शरीर को एकान्त में डालकर अपने २ स्थान पीछे गये ॥ ८१ ॥ फीर ईशान देवलोक में रहनेवाले देव देवियों से ऐसा सुननेसे ईशानेन्द्रने क्रोधित बनकर वहां ईशान देवलोक में शैय्या पर बैठे हुए ललाट में भृकुटि चढाकर बलिचचा राज्यधानी की नीचे, उपर सब दिशा व विदि-शिओं में अवलोकन किया ॥ ४२ ॥ इस तरह बलिचचा राज्यधानी की ऊपर, नीचे, दिशी विदिशिओं में

ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा जे० जहां उ० जाकर क० करके तल प०इकठेकर द०दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अ० अजलि करके ज० जयविजय व० वधाकर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय ब० बलिचचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी दे० देवानुप्रिय का० काल को प्राप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में इं० इंद्रपने उ० उत्पन्न हुवे पा०देखकर आ० शीघ्रअसुरक्त जा० यावत् ए० एकान्त में ए०रखकर जा० यावत् जा० जिसदिशि से

आकड्ढ निकड्ढि कारमाण पासाति, पासइत्ता आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छति उवागच्छइत्ता, करयल परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिंकट्टु जएण विजएण वद्धावेंति, वद्धावइत्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! बलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय देवाणुप्पिए कालगए जाणेत्ता, ईसाणेयकप्पे इदत्ताए उववण्णे पासेत्ता, आसुरुत्ता

तामली तापस के शरीर की हीलना, निन्दा, खिसना करते और उन के शरीर को मार्ग में घसीटते हुवे देखा इस से बहुत क्रोधित बनकर ईशानेन्द्र की पास आये और हस्तद्वय से मस्तक को आवर्तना करके जय विजय शब्द से बधाये वधाकर ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! आप को काल प्राप्त हुवे व ईशानेन्द्र बने हुवे जानकर बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव देवियोंने आपका मृतक शरीर की हिं

पा० आये ता० उसदिशि म प० पीछेगये ॥ ४१ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ते० उन ई० ईशान देवलोक निवासी ब० बहुत वे० वैमानिक दे० देव दे० देवी अ० पास ए० यह अर्थ सो०सूनकर नि० अवधार कर आ० असुरक्त जा० यावत् मि० देदीप्यमान त० तहां स० शैयापे ग० गये हुवे ति० त्रिवली भि० भृकुटी सा० चढाकर ब० बलिचचा रा० राज्यधानी अ० अधो स० दिशा म० विदिशा को स० देखे ॥ ४२ ॥ त० तब सा० वह ब० बलिचचा रा० राज्धानी ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

जाव एगंते एडाति एडतित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ४१ ॥ तएण से ईसाणे देविंदे देवराया, तेसिं ईसाणकप्पवासीण बहूण वेमाणियाण देवाणय देवीणय अंतिए एयमट्ठ सोच्चानिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलीय भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचचा रायहाणिं अहे सपक्खि सपडिदिसिं समभिलोएइ॥ ४२॥ तएण सा बलिचचा रायहाणी ईसाणेण देविंदेण देवरण्णा अहे सपक्खि

लना, निंदा की फीर आप के शरीर को एकान्त में डालकर अपने २ स्थान पीछ गये ॥ ४१ ॥ फीर ईशान देवलोक में रहनेवाले देव देवियों से ऐसा सुननेसे इशानेन्द्रने क्रोधित बनकर वहां ईशान देवलोक में शैय्या पर बैठे हुए ललाट में भृकुटि चढाकर बलिचचा राज्यधानी की नीचे, उपर सब दिशा व विदिशिओं में अवलोकन किया ॥ ४२ ॥ इस तरह बलिचचा राज्यधानी की ऊपर, नीचे, दिशी विदिशिओं में

देवराजा अ० अधो स० दिशा स० प्रतिदिशा को स० देखते ते० उस दि० दिव्य प्रभाव से इं० अ गार सरिसा मु०मुर्मुरभूत त०तप्त वेलुकण त०तप्त अभिसरिखी जा०उत्पन्न हुइ॥४१॥त० तत्र ते० वे ब०बलि चंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी त० उस ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी को इं० अंगिभूत जा० यावत् स० समज्योति भूत पा० देखकर भी० डरेहुवे उ० कंपहुवे त्रा० त्रासहुवे उ० उद्वेग पायेहुवे स० भयसे व्याप्त स० सबबाजु आ० दौडे प० विशेष दौडे अ० अन्योन्य

सपहिंदिसिं समभिलोइया समाणा तेण दिव्वप्पभावेण, इंगालभूया, मुम्मुरभूया छारिभूया, तत्त कवेल्लयभूया, तत्तासमजोइभूया जाया यावि होत्था ॥ ४३ ॥ तएणते बलिचंचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तं बलिचंचा रायहाणिं इंगालभूय जाव समजोइभूय पासति पासतित्ता भीया उतत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया सव्वओ समता आधावति परिधावति परिधावतित्ता अण्णमण्णस्सकाय समतुरगेमाणा चिट्ठति

देखने से उन के दीव्य प्रभाव से वह राज्यधानी अग्नि के अंगार समान, मुमुरे समान, राख समान, तप्तरेती समान व अति उष्ण अग्नि समान हुई ॥ ४३ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनवाले देवों नगरी को अंगारे समान यावत् अग्नि समान देखकर भयभीत हुवे, कंपनेलगे, उद्वेग करने लगे इस तरह भयभीत बने हुवे चारों तरफ दौडने लगे और एक २ की काया में प्रवेश करने लगे ॥ ४४ ॥

की का० काय को स० प्रवश करते चि० रहते हैं ॥ ४४ ॥ त० तब से० वे ब० बलिचचा रा० राज्य धानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ई० ईशान दे० देवेन्द्र को प० कुपित हुवे जा० जानकर ई० ईशान दे० देवेन्द्र दि० दीव्य दे० देवऋद्धि द० देवद्युति दे० देवानुभाग ते० तेजोलेश्या अ० नहीं सहते हुवे स० सब स० सर्वदिशा में स० प्रतिदिशा में ठि० रहकर क० करके तल द० दसनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अ० अजलि क० करके ज० जयतिजय से व०

॥ ४९ ॥ तएण ते बलिचचा रायहाणि वत्थव्वा बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाण देविंद देवराय परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तदिव्वं देविड्ढिं दिव्वदेवजुत्तिं, दिव्व देवाणुभाग, दिव्व तेयलेस्स असहमाणा सव्वे सपक्खि सपडि दिसिं ठिच्चा करयल परिग्गहिय दसनह सिरसा वत्त मत्थए अजलिंकट्टु जएण विजएण

उस समय में बलिचचा राज्यधानी में रहनेवाले असुर कुमार जाति के बहुत देव देवियोंने ईशानेन्द्र को कुपित जानकर उन की एसी दीव्य देवर्द्धि, देवद्युति, देवमहानुभाग, और दीव्य तेजोलेश्या नहीं सहन करने से सब दिशी विदिशी में रहकर हस्तद्वय के दश नखों को एकत्रित कर मस्तक से आवर्तना करके जय विजय शब्द से वधाये और ऐसा बोले-अहो देवानुप्रिय ! आपको प्राप्त

देवराजा अ० अधो स० दिशा स० प्रतिदिशा को स० देखते ते० उस दि० दिव्य प्रभाव से इं० अंगार सरिखा मु० मुर्मुरभूत स० तप्त वेलुकण त० तप्त अग्निसरिखी जा० उत्पन्न हुई॥४३॥त० तब ते० वे ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी तं० उस ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी को इं० अग्निभूत जा० यावत् स० समज्योति भूत पा० देखकर भी० डरेहुवे उ० कंपेहुवे ता० त्रासेहुवे उ० उद्वेग पायेहुवे स० भयसे व्याप्त स० सबबाजु आ० दौडे प० विशेष दौडे अ० अन्योन्य

सपडिंदिसिं समभिलोइया समाणा तेण दिव्वप्पभावेण, इंगालभूया, मुम्मुरभूया छारिभूया, तत्त फवेल्लयभूया, तत्तासमजोइभूया जाया यावि होत्था ॥ ४३ ॥ तएणते बलिचंचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तं बलिचंचा रायहाणिं इंगालभूय जाव समजोइभूय पासति पासतित्ता भीया उत्तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समता आधावंति परिधावंति परिधावंतित्ता अण्णमण्णस्सकाय समतुरंगेमाणा चिट्ठति

देखने से उन के दीव्य प्रभाव से यह राज्यधानी अग्नि के अंगार समान, मुमुरे समान, राख समान, तप्तरेती समान व अति उष्ण अग्नि समान हुई ॥ ४३ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देवों नगरी को अंगारे समान यावत् अग्नि समान देखकर भयभीत हुवे, कंपनेलगे, उद्वेग करने लगे इस तरह भयभीत बने हुवे चारों तरफ दौडने लगे और एक २ की काया में प्रवेश करने लगे ॥ ४४ ॥

कुमार दे० देव देवी के ए० इस अर्थ स० सम्यक् वि० विनय से मु० वारवार खा० खमाते त० उस दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ते० तेजोलेश्या प० साहरण करे॥४६॥ त० उस दिन गो० गौतम ते० वे ब० बलिचचा रा० राज्यधानी में व रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी ई० ईशान दे० देवेन्द्र को आ० आदरकरे जा०यावत् प०पर्युपासना करे ई० ईशान दे० देवेन्द्र की आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे गो० गौतम ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा०

असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो भुज्जो खामिएसमाणे त दिव्व देविड्ढिं जाव तेयलेस्स पडिसाहरइ ॥४६॥ तप्पाभिइंचण गोयमा ! ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वा बहव असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाण देविंद देवराय आढति जाव पज्जुवासति ईसाणस्सयरस देविंदस्स देवरण्णो आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठति ॥ एवखलु गोयमा ईसाणेण देविंदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव

ईशानेन्द्रने अपनी दीव्य देवर्द्धि यावत् तेजोलेश्या पीछी ले ली ॥ ४६ ॥ उस दिन से बलिचचा राज्यधानी के असुर कुमार देव ईशानेन्द्रका आदर सत्कार करते हैं यावत् उन की पर्युपासना करते हैं और उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहते हैं अहो गौतम ! ईशानेन्द्रने ऐसी दीव्य देवर्द्धि

यथाकर ए० ऐसा व० बोले अ० अहो दे० देवानुप्रिय दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुई दि० देखी दे० देवानुप्रिय की दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ल० लब्ध प०प्राप्त स० सन्मुखहुइ खा० खमाते हैं दे० देवानुप्रिय ख० क्षमाकरो तु० तुम्हे ण० नहीं मु० वारवार ए० ऐसा क० करने को ए० एमे स० सम्यक् वि० विनय से मु० वारवार खा० खमाते हैं ॥ ४५ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र से० उन ब० बलिचचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर

वद्धवति वद्धावतिचा एव वयासी अहोण देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्डी जाव अभि समण्णागया त दिट्ठाण देवाणुप्पियाण दिव्वा देविड्डा जावलद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, खामेमोण देवाणुप्पिया ? खम तुम देवाणुप्पिया ! खमतुमरिहतुण देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो भुज्जो एव करणयाएचिकट्टु, एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो भुज्जो खामति ॥ ४५ ॥ तएण से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचचारायहाणि वत्थव्वेहिं बहूहिं

हुई यावत् सन्मुख ऋद्धि हमने देखी हुई है अहो देवानुप्रिय ! हम आपका अपराध खमाते हैं तुम हमारा अपराध की क्षमा करो अहो देवानुप्रिय ! तुम हमारा अपराध क्षमा करने योग्य हो हम ऐसा कार्य वारवार नहीं करेंगे इस तरह सममावसे विनय नम्रता सहित क्षमा मांगने लगे॥४५॥ जब बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देवों इस तरह बहुत विनय व नम्रता सहित समभाव से वारवार खमानेलगे तब

कुमार ८० देव देवी के ए० इस अर्थ स० सम्यक् वि० विनय से भु० वारवार खा० खमाते त० उस दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ते० तेजोलेश्या प० साहरण करे॥४६॥ त० उस दिन गो० गौतम ते० व ब० बलिचचा रा० राज्यधानी में व रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी ई ईशान दे० देवेन्द्र को आ० आदरकरे जा०यावत् प०पर्युपासना करे ई० ईशान दे० देवेन्द्र की आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे गो० गौतम ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा०

असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो भुज्जो खामिएसमाणे त दिव्व देविड्ढि जाव तेयलेस्स पडिसाहरइ ॥४६॥ तप्पाभिइंचण गोयमा ! ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वा बहव असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाण देविंद देवराय आढंति जाव पज्जुवासति ईसाणस्सयस्स देविंदस्स देवरण्णो आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठति ॥ एवखलु गोयमा ईसाणेण देविंदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव

ईशानेन्द्रने अपनी दीव्य देवर्द्धि यावत् तेजोलेश्या पीछी ले ली ॥ ४६ ॥ उस दिन से बलिचचा राज्यधानी के असुर कुमार देव ईशानेन्द्रका आदर सत्कार करते हैं यावत् उन की पर्युपासना करते हैं और उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहते हैं अहो गौतम ! ईशानेन्द्रने ऐसी दीव्य देवर्द्धि

यह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० मनुष्य हुइ ॥ ४७ ॥ ई० ईशान भ० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति गो० गौतम सा० अधिक दो० दोसागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ४८ ॥ ई० ईशान भ० भगवन् दे० देवेन्द्र देवराजा ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उपजेंगे गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेंगे जा० यावत अ० अतकरेंगे ॥ ४९ ॥ स० शक्रेन्द्र भ० भगवन् दे० देवेन्द्र का वि० विमान से ई० ईशान का

अभिसमण्णागए ॥ ४७ ॥ ईसाणस्स भते देविंदस्स देवरण्णो केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! साइरेगाइ दोसागरोवमाणि ठिई प० ॥४८॥ ईसाणेण भते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव कहिं गच्छहिति कहिं उववज्जिहिति गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अत काहिति ॥ ४९ ॥ सक्करसण भते!

यावत् महानुभाव ऐसे प्राप्त किया॥४७॥अहो भगवन्! ईशानेन्द्रकी कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! ईशानेन्द्र की दो सागरोपमसे अधिक स्थिति कही ॥४८॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र आयुष्य का क्षय होने पर कहा उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्र महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सीझेंगे बुझेंगे यावत् मब दुःखों का अत करेंगे ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र के विमान से ईशानेन्द्रके विमान क्या ऊंचे व

वि० विमान ई० थोडे उ० ऊचे ई० थोड उ० उन्नत ई० ईशान दे० देवेन्द्र के विमान से म० शक्र दे० देवेन्द्र के वि० विमान ई० थोडे नी० नीच णि० न्यून हं० हां गो० गौतम स० शक्र का म० सर्व ने० जानना से० वह के० कैसे गो० गौतम ज० जैसे क० हथेली सि० होवे दे० देश म उ० ऊची उ० उन्नत णी० नीची णि० न्यून से० वह ते० इसलिये ॥ ५० ॥ प० समर्थ भ० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे०

देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चयरा ईसिं उण्णयराचेव, ईसाणस्सवा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं णीययराचेव, ईसिं णिण्णयराचेव ? हंता गोयमा ! सक्कस्स तचेव सव्वं नेयव्वं । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहा नामए करयले सिया देसे उच्चे, देसे उण्णए, देसे णीए, देसे णिण्णे से तेणट्ठेणं ॥ ५० ॥ पभूणं भंते ! सक्के

उन्नत (गुण में अधिक) हैं ? अथवा ईशानेन्द्र के विमान से शक्रेन्द्र के विमान क्या नीचे या न्युन हैं ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र से ईशानेन्द्र के विमान ऊचे व उन्नत हैं अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जैसे हस्त का तला क्वचित् देश से ऊंचा, क्वचित् देश से उन्नत, क्वचित् देश से नीचा व क्वचित् देश से न्युन होता है वैसे ही अहो गौतम ! शक्रेन्द्र देवेन्द्र के विमान हैं ॥ ५० ॥ अहो

वह दि० दीप्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुइ ॥ ४७ ॥ ई० ईशान भ० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति गो० गौतम सा० अधिक दो० दोसागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ४८ ॥ ई० ईशान भ० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उपजेंगे गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेंगे जा० यावत अ० अतकरेंगे ॥ ४९ ॥ स० शक्रेन्द्र भ० भगवन् दे० देवेन्द्र का वि० विमान से ई० ईशान का

अभिसमण्णागए ॥ ४७ ॥ ईसाणस्स भते देविंदस्स देवरण्णो केवइय काल ठिई प० ? गोयमा ! साइरेगाइ दोसागरोवमाणि ठिई प० ॥४८॥ ईसाणेण भते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अत काहिंति ॥ ४९ ॥ सक्करसण भते!

यावत् महानुभाव ऐसे प्राप्त कीया॥४७॥अहो भगवन्! ईशानेन्द्रकी कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! ईशानेन्द्र की दो सागरोपमसे अधिक स्थिति कही ॥४८॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र आयुष्य का क्षय होने पर कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्र महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सीझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अत करेंगे ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र के विमान से ईशानेन्द्रके विमान क्या ऊंचे व

कि० क्या आ० बोलाया अ० विना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया अ० विना बोलाया ॥ ५२ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्रेंद्र दे० देवेंद्र ई० ईशान दे० देवेंद्र को स० सब दिशा स० विदिशागें स० देखने को ज० जैसे पा० आने में त० तैसे दो० दो आ० आलापक ने० जानना ॥ ५३ ॥ प० समर्थ स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की स० साथ आ० आलाप स० सलाप क० करने को ह० हां प० समर्थ ॥ ५४ ॥ अ० है भं० भगवन् तें० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र को कि० कार्य क०

गोयमा ! आढामाणेवि पभू, अणाढामाणेवि पभु ॥ ५२ ॥ पभूणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाण देविंद देवराय सपक्खि सपडिदिसिं समभिलोएत्तए? जहा पाउब्भवणा तहा दोवि आलावगा णेयव्वा ॥ ५३ ॥ पभूण भंते! सक्के देविंदे देवराया ईसा- णेण देविंदेण सद्धिं आलावंवा सलावंवा करेत्तए ? हंता पभू, जहा पाउब्भवणा॥५४॥

और विना बोलाये हुए भी आने को समर्थ है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की बाजु पर या उस की दिशी विदिशी में देखने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जैसे आने के दो आलापक कहे वैसे ही देखने के दो आलापक जानना ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को समर्थ है वगैरह आने के दो आलापक जैसे कहना ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! क्या उन शक्र ईशानेन्द्र देवों को करने

देवेन्द्र की अ० पास पा० आने को हं० हां प० समर्थ से० वह भ० भगवन् किं० क्या आ० बोलाया अ० विना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया णो० नहीं अ० विना बोलाया ॥ ५१ ॥ प० समर्थ ई० ईशान दे० देवेंद्र स० शक्र दे० देवराजा की अ० पास पा० आने को हं० हां प० समर्थ से० वह भ० भगवन्

देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अतिय पाउब्भावित्तए ? हता पभू । से भंते किं आढामाणे पभू अणाढामाणे पभू ? गोयमा ! आढामाणे पभू, णो अणाढामाणे पभू ॥ ५१ ॥ पभूण भंते ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देवरण्णो अतिय पाउब्भवित्तए ? हता पभू । से भंते ! किं आढामाणे पभू, अणाढामाणे पभू ?

भगवन् ! शक देवेन्द्र ईशान देवेन्द्र की पास प्रगट होने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास आन का समर्थ है तब अहो भगवन् ! क्या वह बोलाये हुवे या विना बोलाये हुए आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्रकी पास शक्रेन्द्र बोलानेपर आने को समर्थ है परतु विना बोलाये आन को समर्थ नहीं है ॥ ५१ ॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास आने का समर्थ है ? हां गौतम ! ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास आने को समर्थ है. अहो भगवन् ! वह क्या बोलाये हुए आने को समर्थ है या विना बोलाये हुए आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! बोलाये हुए भी आने को समर्थ है

कि० क्या आ० बोलाया अ० बिना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया अ० बिना बोलाया ॥ ५२ ॥
प० समर्थ म० भगवन् स० शक्रेंद्र दे० देवेंद्र ई० ईशान दे० देवेंद्र को स० सब दिशा स० विदिशाओं स०
देखने को ज० जैसे पा० आने में त० तैसे दो० दो आ० आलापक न० जानना ॥ ५३ ॥ प० समर्थ
स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की स० साथ आ० आलाप स० सलाप क० करने को ह० हां
प० समर्थ ॥ ५४ ॥ अ० है भ० भगवन् तें० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र को कि० कार्य क०

गोयमा ! आढामाणेवि पभू, अणाढामाणेवि पभू ॥ ५२ ॥ पभूणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाण देविंद देवराए सपक्खि सपडिदिसिं समभिलोएत्तए? जहा पाउब्भवणा तहा दोवि आलावगा णेयव्वा ॥ ५३ ॥ पभूणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेण देविंदेण सद्धिं आलावंवा सलावंवा करेत्तए ? हंता पभू, जहा पाउब्भवणा ॥ ५४ ॥

और बिना बोलाये हुए भी आने को समर्थ है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की बाजु पर या उस की दिशी विदिशी में देखने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जैसे आने के दो आलापक कहे वैसे ही देखने के दो आलापक जानना ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को समर्थ है वगैरह आने के दो आलापक जैसे कहना ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! क्या उन शक्र ईशानेन्द्र देवों को करने

करने का ई० हां अ० है से० वह क० क्या प० करे गो० गौतम से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की अ० पास पा० आवे ई० ईशान द० देवेन्द्र स० शक्र दे० देवेन्द्र की अ० पास पा० जावे स० शक्र दे० देवेन्द्र दा० दक्षिणार्ध लोक के अ० आधिपति ई० ईशान दे० देवेन्द्र उ० उत्तरार्ध लोकके अ० आधिपति ते० वे अ० अन्योन्य के कि० कार्य क० करने योग्य प० करते हुवे वि० विचरते हैं ॥ ५५ ॥

अत्थिण भंते! तेसिं सक्कीसाणाण देविंदाण देवराईण किच्चाइ करणिज्जाइ ? हंता अत्थि, । से कहमियाणि पकरेइ ? गोयमा ! ताहे चेवण से सक्के देविंदे देवराया, ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवइ । ईसाणेवा देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवइ । इति भो सक्का देविंदा देवराया दाहिणड्ढलो-गाहिवई । इति भो ईसाणा देविंदा देवराया उत्तरड्ढ लोगाहिवई । इति भो इति भोत्ति, ते अण्णमण्णस्स किच्चाइ करणिज्जाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति ॥ ५५ ॥

योग्य कार्य है ? हां गौतम! उन को कार्य है अहो भगवन्! वे कैसे करते हैं ? अहो गौतम! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास प्रगट होवे ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास प्रगट होवे और भी शक्रेन्द्र दक्षिणार्ध लोक का अधिपति है और ईशानेन्द्र उत्तरार्ध लोक का अधिपति है इति भो इति भो ऐसे परस्पर वार्तालाप करते परस्पर के कार्य करते हुवे विचरते हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र व ईशानेन्द्र को

अ० है भं० भगवन् ते उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्रको वि० विवाद स० उत्पन्न होता है ह० हां अ० है से० वह क० क्या इ० उमवक्त प करे गो० गौतम स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र म० सनत्कुमार दे० देवेन्द्रको म० मनसे चिन्तवना क० करे त० तब से० वह म० सनत्कुमार त० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र से म० चिन्तवन क० कराये खि० शीघ्र स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र की अ० पास पा० जावे ज० जो से० वह व० कहे स० उन को आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देशमें चि० रहे ॥ ५६ ॥ स० सनत्कु

अत्थिण भते ! तेसिं सक्कीसाणाण देविंदाण देवराइणं विवादा समुप्पज्जति? हता अत्थि। से कहमिदाणिं पकरेइ ? गोयमा ! ताहेचेवण सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणकुमार देविंद देवराय मणसी करेइ, । तएण से सणकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसी कएसमाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाण देविंदाण देवराईण अतिय पाउब्भवति ! जसे वयइ तस्स आणाउववायवयणणिद्देसे चिट्ठति॥ ५६॥ सणकुमा

क्या विवाद उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! उन को विवाद उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! विवाद के अवसर में वे क्या करे ? अहो गौतम ! वे दोनों सनत्कुमारेन्द्रकी मनसे चिन्तवना करे इस तरह उनको चिन्तवना करते हुवे जानकर सनत्कुमारेन्द्र शीघ्र शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास आवे और जो वह कहे वैसे उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहे ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! सनत्कुमारेन्द्र क्या भवसिद्धिक है

मार भ० भगवन् किं० क्या भ० भवसिद्धिक अ० अभवसिद्धिक स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि प० परत संसारी अ० अनंत संसारी सु० सुलभबोधि दु० दुर्लभ बोधि आ० आराधिक वि० विराधिक च० चरम अ० अचरम गो० गौतम स० सनत्कुमार दे० देवेन्द्र भ० भवसिद्धिक णो० नहीं अ० अभवसिद्धिक ए० ऐसे स० समदृष्टि प० परत सु० सुलभ बोधि आ० आराधिक च० चरम प० प्रशस्त ने० मानना से० वह के० कैसे भ० भगवन् गो० गौतम स० सनत्कुमार दे० देवेन्द्र ब० बहुत स० साधु स० साध्वी सा०

रेण भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए, अभवसिद्धिए, सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी परित्तससारिए, अणतससारिए, सुलहबोहिए, दुल्लभबोहिए, आराहए, विराहए, चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सणकुमारेण देविंदे देवराया भवसिद्धिए णो अभवसिद्धिए, एवं सम्ममिच्छ, परित्त अणत, सुलहबोहिए दुल्लभबोहिए, आराहए विराहिए चरिमे पसत्थ नेयव्व ॥ से केणट्ठेण भंते ? गोयमा ! सणकुमारे देविंदे देवराया बहूण सम-

या अभवसिद्धिक है सम्यग् दृष्टि है या मिथ्यादृष्टि है, परत संसारी है या अनंत संसारी है, सुलभ बोधी है या दुर्लभ बोधी है, आराधक है या विराधक है और चरिम या अचरिम है ? अहो गौतम ! सनत्कुमारेन्द्र भव सिद्धिक, सम्यग् दृष्टि, परत संसारी, सुलभ बोधी, आराधक व चरिम शरीरी है अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! सनत्कुमारेन्द्र बहुत साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका के

श्रावक सा० श्राविका का हि० हितका इच्छक सु० सुख का इच्छक प० पथ्य का इच्छक अ० अनुकंपा सहित नि० मोक्ष हि० हित सुख नि० मोक्ष का इच्छक ते० इसलिये गो० गौतम स० सनत्कुमार भ० भवसिद्धिक जा० यावत् नो० नहीं अ० अचरिम ॥ ५७ ॥ स० सनत्कुमार भ० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति प० प्ररूपी स० सात सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ५८ ॥ से० वह भ०

णाण, बहूण समणीण, बहूण सावयाण, बहूण साविंयाण हियकामए, सुहकामए, पत्थ-कामए, आणुकंपिए, निस्सेयासिए, हिय, सुह, निस्सेसकामए, से तेणट्ठेणं गोयमा! सणकुमारेण भवसिद्धिए जाव णो अचरिमे ॥ ५७ ॥ सणकुमारस्स भंते! देविंदस्स देवरण्णो केवइय काल ठिई पण्णत्ता? गोयमा! सत्तसागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥५८॥ सेण भंते! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव कहिं उववज्जिहिंति? गोयमा!

हित के कामी, सुख के कामी, पथ्य के कामी, अनुकम्पावाले, मोक्षके वांच्छक वैसे ही हित, सुख, व मोक्ष के कामी है, इसलिये अहो गौतम! वे समदृष्टि यावत् चरिम शरीरी हैं ॥५७॥ अहो भगवन् सनत्कुमारेन्द्र की कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! सनत्कुमारेन्द्र की स्थिति सात सागरोपम की कही ॥ ५८ ॥ अहो भगवन्! वह सनत्कुमारेन्द्र आयुष्य का क्षय हुवे पीछे वहां से कहां उत्पन्न होवेंगे? अहो गौतम! महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होवेंगे सिझेंगे, बुझेंगे यावत सब दुःखों का अंत करेंगे अब इस उद्देशे में जो आधि

भगवन् ता० उस दे० देवलोक मे आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उपजेगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अं० अंतकरेगा स० वह ए० ऐसे भ० भगवन् त्ति ऐसे ॥ ३ ॥ १ ॥ * * *

महाविदेह वासे सिज्झिहिइ जाव अन्त करेहिइ सेवं भंते भंते त्ति ॥ गाहाओ छट्ठट्ठममासोअद्धअद्ध, मासो वासाइ अट्ठ छम्मासा, तीसग कुरुदत्ताण, तव भत्त परित्त परियाओ ॥ १ ॥ उच्चत्त विमाणाण पाउब्भव पेच्छणाय सलावे ॥ किच्चावि वादुप्पत्ती, सणकुमारेय भवियत्त ॥२॥ मोया सम्मत्तो ॥ इति तइए सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १ ॥ * * * *

कार कहा है उस का संक्षेप से गाथा द्वारा बतलाते हैं तिष्यक अनगारने बेले २ पारणे किये, कुरुदत्त अनगारने तेले तेले पारने किये, तिष्यक अनगार का एक मासका संथारा और कुरुदत्त को १५ दिन का संथारा तिष्यक अनगार को आठ वर्ष की दीक्षा और कुरुदत्त को छ मास की दीक्षा विमानों की ऊंचाई इन्द्रों का मीलना, इन्द्रों का अवलोकन, इन्द्रों का संभाषण, इन्द्रों का कार्य, इन्द्रों का विवाद, सनत्कुमारेन्द्र द्वारा समाधान और भव्य अभव्य का प्रश्न कहा यह मोया नामक नगरी का अधिकार समाप्त हुवा यह तीसरे शतकका प्रथम उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १ ॥ +

ते० उस काल त० उस समय में रा० राजगृह न० नगर हो० था जा० यावत् प०परिषदा प० पर्युपासना करते ॥ * ॥ ते० उस काल ते० उस समय में च० चमर अ० असुरेन्द्र च० चमर चचा रा० राज्यधानी स० सभा सु० सुधर्मा के च०चमर सी० सिंहासन च० चौसठ सा० सामानिक सा०सहस्र जा०यावत् न० नाट्यविधि उ० बताकर जा० जिसदिशि स पा० आया ता० उसदिशि में प० पीछागया ॥ १ ॥

तेण कालेण, तेण समएण रायगिहे नयरे होत्था, जाव परिसा पज्जुवासइ, ॥ * ॥ तेण कालेण, तेण समएण चमरे असुरिंदे असुरराया चमर चचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरसि सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव नट्टविहि उवदंसेत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ १ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे

प्रथम उद्देशे में देवता की विकुर्वणा का स्वरूप कहा अब दूसरे उद्देशे में देव की शक्ति का प्रश्न पूछते हैं उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था उस के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा आकर सेवा भक्ति करने लगी ॥*॥ उस काल उस समय में चमर नामक असुरेन्द्र असुरदेव के राजा चमर चंचा राज्यधानि में सुधर्मा सभा के चमर नामक सिंहासन पर चौसठ हजार सामानिक देव साहित बैठे हुए थे श्री श्रमण भगवन्त को राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में बैठे हुवे अवधि ज्ञान से देखकर सब परिवार साहित वंदन करने को आये, यावत

भगवन् ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उपजेगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अ० अंतकरेगा स० वह ए० ऐसे भ० भगवन् सि० एमे ॥ ३ ॥ १ ॥ * * *

महाविदेह वासे सिज्झिहिइ जाव अंत करेहिइ सेव भंते भंतेत्ति ॥ गाहाओ छट्ठट्ठमम्मासोअद्धअद्ध, मासो वासाइ अट्ठ छम्मासा, तीसग कुरुदत्ताण, तव भत्त परित्त परियाओ ॥ १ ॥ उच्चत्त विमाणाण पाउब्भव पेच्छणाय सलावे ॥ किच्चवि वादुप्पत्ती, सणकुमारेय भवियत्त ॥२॥ मोया सम्मत्तो ॥ इति तइए सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १ ॥ * * * *

कार कहा है उस का संक्षेप से गाथा द्वारा बतलाते हैं तिष्यक अनगारने बेले २ पारणे किये, कुरुदत्त अनगारने तेले तेले पारने किये, तिष्यक अनगार का एक मासका संथारा और कुरुदत्त को १५ दिन का संथारा तिष्यक अनगार को आठ वर्ष की दीक्षा और कुरुदत्त को छ मास की दीक्षा विमानों की ऊंचाई इन्द्रों का मीलना, इन्द्रों का अवलोकन, इन्द्रों का समापण, इन्द्रों का कार्य, इन्द्रों का विवाद, सनत्कुमारेन्द्र द्वारा समाधान और भव्य अभव्य का प्रश्न कहा यह मोया नामक नगरी का अधिकार समाप्त हुवा यह तीसरे शतकका प्रथम उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १ ॥ +

ते॰ उस काल त॰ उस समय में रा॰ राजगृह न॰ नगर हो॰ था जा॰ यावत् प॰ परिषदा प॰ पर्युपासना करते ॥ * ॥ ते॰ उस काल ते॰ उस समय में च॰ चमर अ॰ असुरेन्द्र च॰ चमर चंचा रा॰ राजधानी स॰ सभा सु॰ सुधर्मा के च॰ चमर सी॰ सिंहासन च॰ चौसठ सा॰ सामानिक सा॰ सहस्र जा॰ यावत् न॰ नाट्यविधि उ॰ बताकर जा॰ जिसदिशि से पा॰ आया ता॰ उसदिशि में प॰ पीछागया ॥ १ ॥

तेण कालेण, तेण समएण रायगिह नयरे होत्था, जाव परिसा पज्जुवासइ, ॥ * ॥ तेण कालेण, तेण समएण चमरे असुरिंदे असुरराया चमर चचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरसि सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव नट्टविहं उवदंसेत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ १ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे

प्रथम उद्देशे में देवता की विकुर्वणा का स्वरूप कहा अब दूसरे उद्देश में देव की शक्ति का प्रश्न पूछते हैं उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था उस के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा आकर सेवा भक्ति करने लगी ॥*॥ उस काल उस समय में चमर नामक असुरेन्द्र असुरदेव के राजा चमर चंचा राज्यधानी में सुधर्मा सभा के चमर नामक सिंहासन पर चौसठ हजार सामानिक देव साहित बैठे हुए थे श्री श्रमण भगवन्त को राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में बैठे हुवे अवधि ज्ञान से देखकर सब परिवार साहित वंदन करने को आये, यावत्

भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को व० वंदनाकर न० नमस्कारकर ए० एसे व० बोले अ० है भ० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी की अ० नीचे अ० असुर कुमार देव प० रहते हैं गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे जा० यावत् अ० नीचे स० सातवी पु० पृथ्वी की सो० सौधर्म क० देवलोक की अ० नीचे जा० यावत् ई० ईषत्प्राग्भार पृ० पृथ्वी की अ० असुर कुमार दे० देव प० रहते हैं णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ २ ॥ से० वे क० किस

समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंते, ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव अत्थिणं भंते ! इसिप्पभाए पुढवीए असुरकुमारा देवा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥२॥ से काहिं

बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥ १ ॥ उस समय में श्री गौतम स्वामीने श्रमण भगवंत श्रीमहावीर को वंदना नमस्कारकर ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! असुर कुमार जाति के देव क्या रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे रहते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! क्या वे दूसरी, तीसरी यावत् सातवी पृथ्वी की नीचे रहते हैं अथवा सौधर्म देवलोक यावत् ईषत् प्राग्भार पृथ्वी की नीचे रहते हैं ! अहो गौतम ? यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ २ ॥ अब अहो

स्थान भ० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव प० रहते हैं गो० गौतम इ० इस र०रत्नप्रभा पु०पृथ्वी का अ० अस्सी उ० उत्तर जो० योजन स० लाख बा० जाडपने ए० ऐसे अ० असुर कुमारदेव व० वक्तव्यता जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगते वि० विचरते हैं ॥ ३ ॥ अ० है भ० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव अ० अधोगति में वि० विषय इ० हा अ० है के० कितना भ० भगवन् अ०

खाइण भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स, बाहल्लाए, एवं असुर देव वत्तव्वयाए, जाव दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहरति ॥३॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गति

भगवन् ! व असुर कुमार कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है इस में एक हजार ऊपर व एक हजार नीचे छोड कर एक लाख अठ्ठत्तर हजार योजन की पोलार है जिस में प्रथम नरक के बारह आंतरे व तेरह पाथडे हैं जिस में ऊपर का एक व नीचे का एक ऐसे दो आंतरे छोडकर शेष दश आंतरे में दश जातिके भुवन पति देव के सात क्रोड बहत्तर लाख विमान हैं प्रथम अंतर में असुरकुमार जाति के देवता के ६४००००० भवन हैं वहां असुरकुमार देवता दीव्य ऋद्धि व उत्तम भोग भोगवते हुए विचरते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार जाति के देवों को नीचे जाने की क्या शक्ति है?

अमुर कुमार दे० देवका अ० अधो ग० गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी त० तीसरी पु० पृथ्वी का गय ग० जावेंगे ॥४॥ किं० क्या प० प्रयोजनसे भं० भगवन् अ० अमुर कुमार दे० देव त० तीसरी पु० पृथ्वी में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम पु० पूर्व वैरी की वे० वेदना उ० उदीरना करने को पु० पूर्वगति की वे० वेदना उ० उपशमाने को ॥ ५ ॥ अ० है

विसए? हंता अत्थि केवयाण भंते! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए पण्णत्ते? गोयमा! जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, तच्च पुण पुढविं गयाय गमिस्सतिय, ॥ ४ ॥ किं पत्तियण भंते! असुरकुमारा देवा तच्च पुढविं गयाय, गमिस्सतिय? गोयमा! पुव्ववेरियस्सवा, वेयणउदीरणयाए, पुव्वसंगइयस्स वेयण उवसामण्णयाए, एवंखलु असुरकुमारा देवा तच्च पुढविं गयाय गमिस्सतिय ॥ ५ ॥ अत्थिण भंते! असुरकुमाराण

हां गौतम! वे नीचे सातवी नरक तक जासकते हैं परंतु तीसरी पृथ्वी तक गये हैं और जावेंगे ॥४॥ अहो भगवन्! किस कारनसे देवता नीचे तीसरी पृथ्वी तक गये हैं और जावेंगे? अहो गौतम! पूर्व जन्म का वैरी नरक में उत्पन्न हुआ होवे तो उन की वेदना की उदीरणा करने के लिये अथवा पूर्व जन्म का मित्र नरक में उत्पन्न हुआ होवे उन की वेदना उपशमाने के लिये असुरकुमार जाति के देव तीसरी नरक तक गये हैं और जावेंगे ॥ ५ ॥ अहो भगवन्? असुरकुमार देव तिर्च्छा गमन कर सकते हैं? हां गौतम!

भ० भगवन् अ० असुरकुमार दे० देवका ति० तिर्यक् गति में वि० विषय हं० हा अ० है के० कितना भ० भगवन् अ० असुरकुमार देवोंका ति० तिर्यक् गति म वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० असख्यात दी० द्वीप स० समुद्र न० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे किं० क्या प० कारन से भ० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त का ज० जन्म महोत्सव नि० दीक्षा महोत्सव णा० ज्ञान उत्पात महोत्सव प० निर्वाण महोत्सव में

देवाणं तिरियगति विसए पण्णत्ते ! हता अत्थि। केवइयाण भंते असुरकुमाराण देवाण तिरियगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जाव असंखेज्जा दीव समुद्दा नंदिस्सरवर पुण दीव गयाय गमिस्सतिय ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवर दीव गयाय, गमिस्संतिय? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवतो एएसिणं जमणमहेसुवा, निक्खमण महेसुवा, णाणुप्पायमहिमासुवा, परिनिव्वाण महिमासुवा, एवंखलु असुर

असुरकुमार देव तिर्छे जाते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार देव तिर्छे कहांतक जाते हैं ? अहो गौतम ! उन की जाने की शक्ति असंख्यात द्वीप समुद्र तक की है परंतु आठवा नंदीश्वर द्वीप तक गये हैं और जावेंगे अहो भगवन् ! वे असुर कुमार देव किस कारनसे नंदीश्वर द्वीप में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! अरिहंत भगवन्त के जन्म महोत्सव, दीक्षा महोत्सव, ज्ञान का उत्पन्न होने का

असुर कुमार दे० देवका अ० अधो ग० गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी त० तीसरी पु० पृथ्वी का गय ग० जावेंगे ॥४॥ किं० क्या प० प्रयोजनसे भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव त० तीसरी पु० पृथ्वी में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम पु० पूर्व वैरी की वे० वेदना उ० उदीरना करने को पु० पूर्वसंगाति की वे० वेदना उ० उपशमाने को ॥५॥ अ० है

विसए? हंता अत्थि केवइयाणं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए पण्णत्ते? गोयमा! जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, तच्चं पुण पुढविं गयाय गमिस्संतिय, ॥ ४ ॥ किं पत्तियणं भंते! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय, गमिस्संतिय? गोयमा! पुव्ववेरियस्सवा, वेयणउदीरणयाए, पुव्वसंगइयस्स वेयण उवसामणयाए, एवंखलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय गमिस्संतिय ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते! असुरकुमाराणं

हां गौतम! वे नीचे सातवी नरक तक जासकते हैं परन्तु तीसरी पृथ्वी तक गये हैं और जावेंगे ॥४॥ अहो भगवन्! किस कारनसे देवता नीचे तीसरी पृथ्वी तक गये हैं और जावेंगे? अहो गौतम! पूर्व जन्म का वैरी नरक में उत्पन्न हुआ होवे तो उन की वेदना की उदीरणा करने के लिये अथवा पूर्व जन्म का मित्र नरक में उत्पन्न हुआ होवे उन की वेदना उपशमाने के लिये असुरकुमार जाति के देव तीसरी नरक तक गये हैं और जावेंगे ॥५॥ अहो भगवन्? असुरकुमार देव तिर्च्छी गमन कर सकते हैं? हां गौतम!

भ० भगवन अ० असुरकुमार दे० देवका ति० तिर्यक् गति में वि० विषय ह० हा अ० है कं० कितना भ० भगवन् अ० असुरकुमार देवोंका ति० तिर्यक् गति म वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० असस्पात दी० द्वीप स० समुद्र न० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे किं० क्या प० कारन से भ० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त का ज० जन्म महोत्सव नि० दीक्षा महोत्सव णा० ज्ञान उत्पात महोत्सव प० निर्वाण महोत्सव में

देवाण तिरियगति विसए पण्णत्ते ! हंता अत्थि। केवइयाण भंते असुरकुमाराण देवाण तिरियगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जाव असंखेज्जा दीव समुद्दा नंदिस्सरवर पुण दीवं गयाय गमिस्संतिय ॥ किं पत्तियण भंते ! असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवर दीवं गयाय, गमिस्संतिय? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो एएसिण जम्मणमहेसुवा, निक्खमण महेसुवा, णाणुप्पायमहिमासुवा, परिनिव्वाण महिमासुवा, एवंखलु असुर

असुरकुमार देव तिर्छे जाते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार देव तिर्छे कहांतक जाते हैं ? अहो गौतम ! उन की जाने की शक्ति असंख्यात द्वीप समुद्र तक की है परंतु आठवा नंदीश्वर द्वीप तक गये हैं और जावेंगे अहो भगवन् ! वे असुर कुमार देव किस कारनसे नंदीश्वर द्वीप में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! आरिहंत भगवन्त के जन्म महोत्सव, दीक्षा महोत्सव, ज्ञान का उत्पन्न होने का

भ० असुर कुमार देव न० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे ॥ ६ ॥ अ० है भ० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देवका ऊ० ऊर्ध्वगति विषय ह० हां अ० है के० कितनी भ० भगवन् अ० असुर कुमार देवका ऊ० ऊर्ध्वगति विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अच्युत देवलोक सो० सौधर्म देवलोक ग० गये ग० जावेंगे कि० किस प० प्रयोजन से भ० भगवन अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक को ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम ते० उन दे० देवों का भ० भवप्रत्यय का वे० वैरसे ते० वे दे० देव वि०

कुमारा देवा नदिस्सरवर दीव गयाय गमिस्सतिय ॥ ६ ॥ अत्थिण भंते ! असुर कुमाराण देवाण उड्ढगइविसए ? हंता अत्थि । केवइय चण भंते ! असुरकुमाराण देवाण उड्ढ गतिविसए ? गोयमा ! जाव अच्चुएकप्पे सोहम्म पुणकप्प गयाय गमिस्सातिय, । किं पत्तियण भंते ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्पं गयाय गमिस्संतिय ?

महोत्सव और निर्वाण का महोत्सव इन चार कारन से नंदीश्वर द्वीप को असुर कुमार देवता गतकाल में गये और भविष्य में जावेंगे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देवों को ऊपर जाने की शक्ति का विषय है ? हां गौतम! असुर कुमार देवों को ऊपर जाने की शक्ति है अहो भगवन् ! वे ऊर्ध्व लोकमें कहां तक जा सकते हैं ? अहो गौतम ! उन में अच्युत देवलोक तक जाने की शक्ति है किन्तु सौधर्म देवलोक तक गये हैं और जावेंगे अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस कारन से सौधर्म देवलोक में

विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते आ० आत्मरक्षकदेव को वि० त्रास उपजावे अ० यथा ल० लघु र० रत्न ग० ग्रहणकर आ० स्वतः ए० एकान्त में अ० जावे ॥ ७ ॥ अ० है भ० भगवन् ते० उन दे० देवोंको अ० यथा ल० लघु र० रत्न हं० हां अ० है से० वह क० क्या इ० इनको प० करे त० पीछे का० काया को प० पीडा उपजावे ॥ ८ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् अ० असुर कुमार देव त० तहां

गोयमा ! तेसिणं देवाणं भवपच्चइय वेराणुबंधे तेणं देवा विकुव्वमाणा परियारमाणावा, आयरक्खे देवे वित्तासेंति, अहा लहुसगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमंति ॥७॥ अत्थिणं भंते ! तेसिं देवाणं अहा लहुसगाइं रयणाइं ? हंता अत्थि। से कहमिदाणिं पकरेइ, तओसे पच्छाकायं पव्वहंति ॥ ८ ॥ पभूणं भंते ! तेसिं अ-

गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! भवप्रत्ययिक वैरसे वे देव विकुर्वणा करते हुए या अन्य देवी की साथ परिचारणा करने की वांच्छा करते हुए आत्म रक्षक देवको त्रास उत्पन्न करते हैं अथवा बहुत छोटे रत्नों ग्रहण करके एकान्त में चलेजाते है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! उन वैमानिक देवों को क्या यथा-योग्य छोटे रत्न है ? हां गौतम ! उन का छोटे रत्नों रहे हुवे हैं फीर उन रत्नों की चौरी करनेवाले को क्या करते हैं ? अहो गौतम ! उन लेनेवाले को रत्नका मालिक देवता प्रहार करता है जिस से उन को महावेदना होती वह जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट छमास तक रहती है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार

अ० असुर कुमार देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे ॥ ६ ॥ अ० है भ० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय ह० हां अ० है के० कितनी भ० भगवन् अ० असुर कुमार देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अच्युत देवलोक सो० सौधर्म देवलोक ग० गये ग० जावेंगे कि० किस प० प्रयोजन से भ० भगवन अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक को ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम ते० उन दे० देवों का भ० भवप्रत्यय का वे० वैरसे ते० वे दे० देव नि०

कुमारा देवा नदिस्सरवर दीवं गयाय गामिस्सातिय ॥ ६ ॥ अत्थिण भंते ! असुर कुमाराण देवाण उड्डगइविसए ? हंता अत्थि । केवइय चण भंते ! असुरकुमाराण देवाण उड्ढ गतिविसए ? गोयमा ! जाव अच्चुएकप्पे सोहम्म पुणकप्प गयाय गामिस्सातिय, । किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्प गयाय गामिस्सातिय ?

महोत्सव और निर्वाण का महोत्सव इन चार कारन से नंदीश्वर द्वीप को असुर कुमार देवता गतकाल में गये और भविष्य में जावेंगे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देवों को ऊपर जाने की शक्ति का विषय है ? हां गौतम! असुर कुमार देवों को ऊपर जाने की शक्ति है अहो भगवन् ! वे ऊर्ध्व लोकमें कहां तक जा सकते हैं ! अहो गौतम ! उन मे अच्युत देवलोक तक जाने की शक्ति है किन्तु सौधर्म देवलोक तक गये हैं और जावेंगे अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस कारन से सौधर्म देवलोक में

कुमारदेव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दीव्य भो० भोग भु० भोगवते वि० विचरने को ए० एसे गो० गौतम अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे ॥ ० ॥ के० कितने काल में अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० उड जा० यावत् सो० सौधर्म दे० देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम अ० अनत ओ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी स० समय व्यतीत हुवे अ० है ए० ऐसे लो०

१५ ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणा वि- हरित्तए ॥ एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्प गयाय गमिस्सति ॥१॥ केवइयकालस्सण भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्म कप्प गयाय गमिस्सतिय ? गोयमा ! अणताहिं ऊसप्पिणीहिं अणताहिं अवसप्पिणीहिं समइक्कताहिं । अत्थिणं एस भत्ते लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ, जण्ण असुरकुमारा देवा

समर्थ हैं परंतु यदि वे अप्सराओं उन को आदर करे नहीं या उन को स्वामीपने जाने नहीं तो उन की साथ भोग भोगने का वे समर्थ नहीं हैं, अहो गौतम ! इस कारन से असुर कुमार देव सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ ० ॥ अहो भगवन् ! कितने काल म असुर कुमार देव ऊंचे जावे यावत् सौधर्म देवलोक न गये या जावेंगे ? अहो गौतम ! अनत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हुए पीछे ऐसा होता

ग० गये हुवे ता० उन अ० अप्सरा की स० साथ दि० दीव्य भो० भोगोपभोग मुं० भोगवते वि० विचरने को णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ त० तहां से प० नीकलकर इ० यहां आ० आकर ज० जो अ० देवियों आ० आदर करती हैं प० परिचारणा इच्छे प० समर्थ ते० वे अ० असुर कुमार दे० देव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दिव्य भा० भाग भुं० भोगते वि० विचरने को अ० अथवा ता० वे अ० देवियों नो० नहीं आ० आदर कर नो० नहीं प० परिचारणा इच्छे णो० नहीं प० समर्थ ते० वे अ० असुर

सुरकुमारा देवा तत्थगया चेव समाणा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे । तेण तओ पडिनियत्तांति पडिनियत्त इत्ता इहमागच्छइ इहमागच्छइत्ता, जइण ताओ अच्छराओ आढायंति परि-याणंति पभूण ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ॥ अहण ताओ अच्छराओ नो आढायंति नो परियाणंति णोण

देव वैमानिक में रही हुई अप्सराओं की साथ भोग भोगवने को क्या समर्थ हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् वे वैमानिक देवलोक में यहां की अप्सराओं की साथ भोग भोगवने को समर्थ नहीं हैं वे असुर कुमार देव वहां से अप्सराओं को लेकर पीछे अपने विमान में आते हैं, विमान में आये पीछे यदि वे अप्सराओं उन को आलिंगन करे या स्वामीपने माने तो वे उन की साथ भोग भोगने को

कुमारदेव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दीव्य भो० भोग भु० भोगवते वि० विचरने को ए० ऐसे गो० गौतम अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे ॥ ० ॥ के० कितने काल में अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊंचे जा० यावत् सो० सौधर्म दे० देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम अ० अनत ओ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी म० समय व्यतीत हुवे अ० है ए० ऐसे लो०

पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणा वि-हरित्तए ॥ एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्प गयाय गमिस्सति ॥ १ ॥ केवइयकालस्सण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्म कप्प गयाय गमिस्सतिय ? गोयमा ! अणताहिं उसप्पिणीहिं अणताहिं अवसप्पिणीहिं समइक्कताहिं । अत्थिण एस भंते लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ, जण्ण असुरकुमारा देवा

समर्थ हैं परंतु यदि वे अप्सराओं उन को आदर करे नहीं या उन को स्वामीपने जाने नहीं तो उन की साथ भोग भोगने को वे समर्थ नहीं हैं अहो गौतम ! इस कारन से असुर कुमार देव सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ ० ॥ अहो भगवन् ! कितने काल में असुर कुमार देव ऊंचे जावे यावत् सौधर्म देवलोक में गये या जावेंगे ? अहो गौतम ! अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हुए पीछे ऐसा होता

[illegible] सू० स० उत्पन्न होवे ज० जिसमें अ० असुर कुमारदेव उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक में॥ १० ॥ किं० किस नि० निश्राय से भं० भगवन् अ० असुरकुमार देव उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक गो० गौतम से० वह ज० जैसे इ० यहां स० अनार्य व० बर्बर के अनार्य के टं० टंकण देशके अनार्य भू० भूचुकदेश के प० भद्रदेश के पु० भिल्लादि ए० एक म० बड़ा व० वन ग० खड्डा दु० दुर्ग द० गुफा वि० विषम प० पर्वतकी णी० निश्राय सु० अतिशय अ० अश्वबल ह० हस्तिबल जो० योधबल ध० धनुष्यबल

उढ्ढ उप्पयति जाव सोहम्मेकप्पे ॥ १० ॥ किं निस्साएण भंते ! असुरकुमारा देवा उढ्ढ उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! से जहानामए इह सव्वराइवा, वव्वराइवा, टंकणाइवा, भूचुयाइवा, पण्हायाइवा, पुलिंदाइवा, एग महं वणंवा, गड्डवा, दुग्गंवा, दरिंवा, विसमंवा, पव्वयंवा, णीसाए सुमहल्लमवि, अस्सबलंवा, हत्थिबलंवा, जोहबलंवा धणुबलंवा, आगिलति, एवामेव असुरकुमारा देवा णण्णत्थ अरहंतेवा,

ं और जब ऐसा होता है तब यहां मनुष्य लोक में आश्चर्यरूप (अच्छेरा) गिना जाता है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस की नेश्राय (आश्रय) लेकर ऊपर जाते हैं ? अहो गौतम ! जैसे जंगल के निवासी भील लोक, बर्बर देश के अनार्य लोक, टंकण देश के अनार्य लोक, भूच देश के अनार्य लोक, भद्र देश के अनार्य लोक, और भील वगैरह लोकों एक बड़ा वन, खड्डा, दुर्ग, गुफा, विषम

को आ० सेविदत करें ए० ऐसे अ० असुरकुमार देव अ० अरिहंत अ० छद्मस्थ अरिहत अ० अनगार भा० भवितात्मा की नि० नेश्राय उ० ऊर्ध्व जा० यावत सौधर्म देवलोक ॥११॥ स० सब अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊड जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ म० महर्द्धिक अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥१२॥ ए० यह भ० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ०

अरहतचेइयाणिवा, अणगारे, भावियप्पणो निस्साए उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ ११ ॥ सव्वेवियण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । महिड्ढियाण, असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १२ ॥ एसवियण भंते ! चमर असुरिंदे असुरराया उड्ढ उप्प-

स्थान व पर्वत के आश्रय से बहुत बडा अश्वबल, हस्ती बल, योध बल, और मनुष्य बल को पराजित कर सकते हैं; ऐसे ही असुर कुमार देव आरिहत भगवन्त, आरिहत चैत्य सो द्रव्य आरिहत छद्मस्थ, अनगार और भावितात्मा का आश्रय लेकर ऊंचे सौधर्म देवलोक तक जाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब असुर कुमार देव ऊंचे जाने की शक्तिवाले यावत् सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है महर्द्धिक असुरकुमार देव मात्र सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ १२ ॥

आश्रय भूत स० उत्पन्न होवे ज० जिससे अ० असुर कुमारदेव उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो०सौधर्म देवलोक में॥ १० ॥ कि० किस नि० निश्राय से भं० भगवन् अ० असुरकुमार देव उ०ऊर्ध्व जा०यावत् सो०सौधर्म देवलोक गो० गौतम से० वह ज० जैसे इ० यहां स०अनार्य ब०बर्बर के अनार्य के टं० टंकण देशके अनार्य भु०भूचुकदेश क प० मल्लदेश के पु०भिल्लादि ए०एक म०बडा व० वन ग० खड्डा दु० दूर्ग द० गुफा वि० विषम प० पर्वतकी णी० निश्राय सु० अतिशय अ० अश्वबल ह० हस्तिबल जो० योधबल ध० धनुष्यबल

उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मेकप्पे ॥ १० ॥ किं निस्साएणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! से जहानामए इह सव्वराइवा, वव्व- राइवा, टंकणाइवा, भूचुयाइवा, पण्हायाइवा, पुलिंदाइवा, एग महं वणंवा, गड्डवा, दुग्गवा, दरिंवा, विसमंवा, पव्वयंवा, णीसाए सुमहल्लमवि, अस्सबलंवा, हत्थिबलंवा, जोहबलंवा धणुबलंवा आगिलंति, एवामेव असुरकुमारा देवा णण्णत्थ अरहंतेवा,

है और जब ऐसा होता है तब यहां मनुष्य लोक में आश्चर्यरूप (अच्छेरा) गिना जाता है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस की नेश्राय (आश्रय) लेकर ऊपर जाते हैं ? अहो गौतम ! जैसे जंगल के निवासी भील लोक, बबर देश के अनार्य लोक, टंकण देश के अनार्य लोक, भूच देश के अनार्य लोक, मल्ल देश के अनार्य लोक, और भील वगैरह लोकों एक बडा वन, खड्डा, दुर्ग, गुफा, विषम

को आ० सेवित करे ए० ऐसे अ० असुरकुमार देव अ० अरिहंत अ० छद्मस्थ अरिहंत अ० अनगार भा० भावितात्मा की नि० नेश्राय उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सौधर्म देवलोक ॥ ११ ॥ स० सब अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊड जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ म० महर्द्धिक अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥ १२ ॥ ए० यह भ० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ०

अरहतचेइयाणिवा, अणगारे, भावियप्पणो निस्साए उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ ११ ॥ सव्वेवियण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । महिड्ढियाण, असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १२ ॥ एसनियण भंते ! चमर असुरिंदे असुरराया उड्ढ उप्प-

स्थान व पर्वत के आश्रय से बहुत बडा अश्वबल, हस्ती बल, योध बल, और मनुष्य बल को पराजित कर सकते हैं, ऐसे ही असुर कुमार देव अरिहंत भगवन्त, अरिहंत चैत्य सो द्रव्य अरिहंत छद्मस्थ, अनगार और भावितात्मा का आश्रय लेकर ऊंचे सौधर्म देवलोक तक जाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब असुर कुमार देव ऊंचे जाने की शक्तिवाले यावत् सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है महर्द्धिक असुरकुमार देव मात्र सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ १२ ॥

असुर राजा उ० उर्ध्व जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥ १२ ॥ अ० अहो भ० भगवन् च० चमर राजा की म० महा ऋद्धि म० महाद्युति जा० यावत् क० कहां प० प्रवेश हुइ कू० कूडागार शाला दि० दृष्टान्त भा० कहना ॥ १४ ॥ च० चमर भ० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा की सा० वह दीव्य दे० देवऋद्धि कि० किमसे ल० लब्ध ए० ऐसे गो० गौतम ते० उस काल से० उस समय में इ० इस ज० जंबूद्वीप में भ० भरत क्षेत्र में विं० विंध्याचल पर्वत की प० नजदीक बे० बेभेल स० संनिवेश हो० था

इय पुव्वे जाव सोहम्मे कप्पे ? हंता गोयमा ! एसत्रियण चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइय पुव्वे जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १३ ॥ अहोण भंते चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्डीए महज्जुईए जाव कहिं पविट्ठा ? कूडागारसाला दिट्ठंतो भाणियव्वो॥ १४॥ चमरेण भंते ! असुरिंदेण असुररण्णो सा दिव्वा देवड्ढी तंचेव किण्णालद्धा ३, एव खलु

अहो भगवन् ! यह चमर नामक असुरेंद्र पहिले क्या सौधर्म देवलोक में गया ? हां गौतम ! यह चमर नामक असुरेंद्र पहिले सौधर्म देवलोक में गया ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! इस चमर नामक असुरेंद्र की महाऋद्धि महाद्युति वगैरह कहां चलीगई ? अहो गौतम ! कूटागार शाला जैसे पीछी शरीर में चलीगई ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेंद्र असुरराजाको ऐसी दीव्य देवर्द्धि कैसे प्राप्त हुई यावत् सन्मुख हुई ? अहो गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विन्ध्याचल पर्वत

प० रहता था अ० ऋद्धिवंत
ब० वर्णन युक्त त० वहां बे० बेभेल सन्निवेश में पू० पूरण गा० गाथापति प० रहता था अ० ऋद्धिवत ब० वर्णन युक्त त० वहां बे० बेभेल सन्निवेश में पू० पूरण गा० गाथापति न० जानना ण० विशेष च० चारपुट वाला दि० दिस ज० जैसे ता० तामली की व० वक्त व्यता त० तैसे

गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण, इहेव जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे विंझगिरिपायमूले बेभेले नाम सण्णिवेसे होत्था वण्णओ तत्थण बेभेले सण्णिवेसे पूरणेनाम गाहावई परि वसइ, अड्ढे दित्ते जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेयव्वा, णवर चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहय करेत्ता जाव विपुल असण पाण, खाइम, साइम, जाव सयमेव चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहय गहाय मुंडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए, पव्वइएवियण समाणे तचेव जाव आयावण भूमीए पच्चोरुहित्ता, सयमेव चउप्पुडयं दारुमय पडि-

की मूल में बेभेल नामक सन्निवेश था उस सन्निवेश में पूरण नामक गाथापति रहता था वह गाथापति ऋद्धिवंत, दीप्त यावत् सब अधिकार तामली तापस जैसे कहना अर्थात् पूरण गाथापति को कुटुम्ब जागरणा करते विचार हुवा कि मुझे पूर्व संचित पुण्य के उदय से कुटुम्ब आदि सब सुख की सामग्री मीली है इस से जहां लग मेरे पुण्य प्रबल हैं और शरीर में शक्ति है वहां लग प्रभात होते चार पुडवाला काष्टमय पात्र बनाकर अशनादि चारों आहार नीपजाकर, ज्ञाति स्वजनादि की साथ भोजन कर, सब को यथोचित् सत्कारादि कर, ज्येष्ट पुत्र को गृह के कार्य पर रखकर सब को पूछकर मुंडित बनकर दान

प० प्रथम पु० पुट में प० डाले क० कल्पता है मे० मुझे प० पथिक प० पथिक को द० देनेको ज० जो दो० दूसरे पु० पुट में प० डाले क० कल्पता है मे० मुझे का० काक सु० श्वान को द० देना ज० जो

ग्गहय गहाय बेभेल सण्णिवेसे उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खा-
यरियाए अडेत्ता जमे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे त पत्थिय पहियाण दलइत्तए,
जमे दोचे पुडए पडइ, कप्पइ मे कागसुणयाण दलायित्तए, जमे तच्चे पुडए पडइ
कप्पइ मे त मच्छ कच्छभाण दलइत्तए, ज मे चउत्थे पुडए पडइ कप्पइमे त अ-
प्पणा आहार आहरेत्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ संपेहइत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए
तं चेव निरवसेस चउत्थे पुडए पडइ त अप्पणा आहार आहारेइ ॥ १५ ॥ तएणं

नामक प्रवर्ज्या ग्रहण करना मुझे श्रेय है दान प्रवर्ज्या अंगीकार किये पीछे आतापना भूमि से पीछे आकर स्वयं ही चार पुटवाला काष्टमय पात्र लेकर बेभेल सन्निवेश में ऊंच, नीच व मध्यम कुल के गृहों की भिक्षाचरी ग्रहण करूंगा और चार पुटवाले पात्र में से प्रथम पुट में जो भिक्षा डालेंगे उसे मैं पथिक जनों को देऊंगा, दूसरे पुट में भीक्षा डालेंगे उसे मैं काग प्रमुख पक्षी व श्वान प्रमुख को डालूंगा, तीसरे पुट में जो भीक्षा डालेंगे उसे मत्स्य कच्छ वगैरह को डालूंगा और चौथे पुट में जो भीक्षा डालेंगे उस का मैं आहार करूंगा ऐसा विचार करके प्रभात होते सब क्रिया की यावत्

काल ने॰ उस समय में अ॰ मैं गो॰ गौतम छ॰ छद्मस्थ अवस्था में ए॰ अग्यारह वर्षकी प॰ दीक्षा से छ॰ छठ भक्त अ॰ अंतर रहित त॰ तपकर्म से स॰ संयम से त॰ तप से अ॰ आत्मा को भा॰ भावता पु॰ अनुक्रम से च॰ चलता गा॰ ग्रामानुग्राम दू॰ जाता जे॰ जहां सुं॰ सुंसुमार पुर न॰ नगर जे॰ जहां अ॰ शोक वनखंड उ॰ उद्यान जे॰ जहां अ॰ अशोक वृक्ष जे॰ जहां पु॰ पृथ्वी शिलापट उ॰ आकर • अशोक वृक्ष की हे॰ नीचे पु॰ पृथ्वी शिलापट पे अ॰ अठम भक्त प॰ ग्रहणकर दो॰ दोपॉव सा॰

तेणं कालेणं, तेण समएण अह गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठं छट्ठेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मेण संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे, पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे, जेणेव सुंसुमार पुरे नगरे जेणेव असोयवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणव पुढवीसिलापट्टए तेणेव उवागच्छामि उवाग-

र्ष की साधु की पर्याय पालता हुवा, निरंतर छठ के पारणे का तप कर्म व संयम से आत्मा को चिन्तवता हुवा, पूर्वानुपूर्व चलता हुवा और ग्रामानुग्राम विचरता हुवा मैं सुंसुमारपुर नगर के अशोक वनखंड नामक उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शिलापट की पास आया वहां आकर अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शीला पटपर अठम भक्त (तेला) किया दोनों पांव भहर कर (जिन मुद्रासे) लम्बी बाहु करके एक ही पुद्गल पर दृष्टिस्थापकर, अनिमेष दृष्टि रखकर, थोडासा मस्तक नमाकर यथास्थित गात्रों को

इकठेकर व०लंबा पा०हस्त ए०एक पुद्गल में नि०स्थापन की दि०दृष्टि अ०अनिमिपनेत्र ई०थोडी प०नमाकर का० काया मे अ० यथा प० स्थापित ग० गात्र स० सर्व इ० इन्द्रिय गु० गुप्त ए० एकरात्रि की म० महाप्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरता हूं ॥ १७ ॥ ते० उस काल ते० उस समय म च० चमर चंचा रा० राज्यधानी अ० इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हो० थी ॥ १८ ॥ त० तत्र मे० वह पू० पूरण बा० बालतपस्वी ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण दु० बारह वा० वर्ष प० पर्याय पा०पालकर मा०मासकी स०

च्छइत्ता असोयवर पायवस्स हेट्ठे पुढविसिला पट्टयंसि अट्ठमभत्त पगिण्हामि दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी, एगपोग्गल निविट्ठदिट्ठी, अणमिसनयणे, ईसिं पब्भार-गएण काएण अहापणिहिएहिं गत्तेहिं, सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं, एगराइय महापडिम उव-सपज्जित्ता विहरामि ॥ १७ ॥ तेण कालेण तेण समएण चमरचचा रायहाणी अणि-दा अपुरोहिया यावि होत्था, ॥ १८ ॥ तएण से पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइ दुवालसवासाइ परियाग पाउणित्ता मासियाए सलहणाए अत्ताण झूसेत्ता,सट्ठि भत्ताइ

स्थापकर सब इन्द्रियों को गोपकर एक रात्रि की महापडिमा अंगीकार करता हुवा विचरता था ॥ १७ ॥ उस काल उस समय में चमर चंचा राज्यधानी इन्द्र रहित पुरोहित रहित थी ॥ १८ ॥ उस समय में वह पूरण नामक बालतपस्वी बारह वर्ष पर्यंत दान प्रव्रज्या पालकर एक मास की संलेखना से आत्मा को

काल ने॰ उस समय में अ॰ मैं गो॰ गौतम छ॰ छद्मस्थ अवस्था में ए॰ अग्यारह वर्षकी प॰ दीक्षा से छ॰ छठ भक्त अ॰ अतर रहित त॰ तपकर्म से स॰ संयम से त॰ तप से अ॰ आत्मा को भा॰ भावता पु॰ अनुक्रम से च॰ चलता गा॰ ग्रामानुग्राम दू॰जाता जे॰ जहां सुं॰सुंसुमार पुर न॰नगर जे॰ जहां अ॰ अशोक वनखंड उ॰ उद्यान जे॰ जहां अ॰ अशोक वृक्ष जे॰ जहां पु॰ पृथ्वी शिलापट उ॰ आकर अ॰ अशोक वृक्ष की हे॰ नीचे पु॰ पृथ्वी शिलापट पे अ॰ अठम भक्त प॰ ग्रहणकर दो॰ दोपॉव सा॰

तेण कालेणं, तेण समएण अह गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठं छट्ठेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे, पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे, जेणेव सुंसुमार पुरे नगरे जेणेव असोयवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छामि उवाग-

र्ष की साधु की पर्याय पालता हुवा, निरंतर छठ्ठ के पारणे का तप कर्म व संयम से आत्मा को भावता हुवा, पूर्वानुपूर्व चलता हुवा और ग्रामानुग्राम विचरता हुवा मैं सुंसुमारपुर नगर के अशोक वनखंड नामक उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शिलापट की पास आया वहां आकर अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शीला पटपर अठम भक्त (तेला) किया दोनों पांव भेद्र कर (जिन मुद्रासे) लम्बी बाहु करके एक ही पुद्गल पर दृष्टिस्थापकर, अनिमेष दृष्टि रखकर, थोडासा मस्तक नमाकर यथास्थित गात्रों को

यावत् सो० सौधर्म देवलोक प० देखे ॥ २१ ॥ त० तहाँ स० शक्र दे० देवेन्द्र म० मघव पा० पाक शासन स० शतक्रतु स० सहस्रनेत्र वाला व० वज्र पा० हस्त में पु० पुरंदर जा० यावत् द० दशादिशा में उ० उद्योत करते प० प्रकाश करते सो० सौधर्म देवलोक सा० सौधर्म व० वडिंशक विमान सु० सुधर्मा सभा में स० शक्र के सी० सिंहासनपे जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भु० भोगते पा० देखे पा० देखकर॥२१॥ ए० इसरूप अ० आत्मिक चिं० चिन्तवन प० स्मरण रूप म० मनोगत म० संकल्प स० उत्पन्न हुवा

गए समाणे उड्ढ वीससाए ओहिणा आभोइए जाव सोहम्मे कप्पे पासइय ॥ २१ ॥ तत्थ सक्क देविंद देवराय मघव, पागसासण, सयक्कउ, सहस्सक्ख, वज्जपाणि, पुरदर, जाव दससदिसाओ उज्जोवेमाण, पभासेमाणं सोहम्मेकप्पे सोहम्म वडिंसए विमाणे समाए सुहम्माए सक्कसि सीहासणसि जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणं पासइ,

देवलोक देखने लगा ॥ २१ ॥ वहां पर मेघमाली को वश में रखनेवाला, पाक नामक बलिष्ट रिपु को पराजित करनेवाला, कार्तिक शेठ के भव में एक सो प्रतिमा का अभिग्रह करनेवाला, सहस्र नयनवाला, हस्त में वज्र धारण करनेवाला, और असुर कुमार देव का विदारन करनेवाला ऐसा शक्रेन्द्र को उद्योत करता व प्रकाशता हुवा सौधर्म देवलोक में सौधर्म वडिंसग नामक विमान की सुधर्मा सभा में सिंहासन पर दीव्य भोग भोगवता हुवा देखा॥२१॥फीर ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनोगत संकल्प हुवा कि अप्रार्थित की

संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठभक्त अ० अनशन छे० छेदकर का० काल के अवसर में का० काल करके च० चमर चंचा रा० राज्यधानी में उ० उपपात सभा में जा० यावत् इ० इन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा ॥ १९ ॥ त० तब से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र अ० तुरत का उत्पन्न प० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त भाव को ग० जावे त० वह ज० जैसे आ० आहार पर्याप्ति जा० यावत् भा० भाषा मनपर्याप्ति ॥ २० ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र प० पांच प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त भाव को ग० प्राप्त उ० ऊर्ध्व वी० स्वभाव से ओ० अवधि ज्ञान से आ० देखे आ०

अणसणाए छेदेत्ता कालमासे कालकिच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इंदत्ताए उववन्ने ॥ १९ ॥ तएण से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववन्ने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ तंजहा आहार पज्जत्तीए जाव भासामण पज्जत्तीए॥२०॥ तएण से चमेर असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव

झूसकर साठ भक्त अनशन कर व काल के अवसर में काल करके चमर चंचा राज्यधानी में उपपात सभा में देव दूष्य वस्त्र की नीचे इन्द्रपने उत्पन्न हुवा ॥ १९ ॥ वहां चमर नामक असुरेन्द्र आहारादि पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्त बना ॥ २० ॥ फीर पांच पर्याप्ति से पर्याप्त बना हुवा अवधि ज्ञान से देखते सौधर्म

विचरता है ॥ २३ ॥ त० तब मे० वे सा० सामानिक दे० देव च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसे वु० बोलाते हुवे ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् ह० आनद पामे क० करके तल प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अ० अजलि क० करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसे व० बोले ए० यह दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र जा० यावत् वि० विचरता है ॥ २४ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा ते० उन सा० सामानिक दे० देवों की अ० पास ए०

एवं सपेहेइ २ त्ता सामाणिय परिसोववण्णए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी केसण एस देवाणुप्पिया ! अप्पत्थिय पत्थए जाव भुजमाणे विहरइ ॥२३॥ तएणसे सामाणिय परिसोववण्णगा देवा चमरेण असुरिंदेण असुररण्णो एवं वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठ जाव हय-हियया करयल परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजालिंकट्टु जएण विजएण वद्धावेंति एवं वयासी एसण देवाणुप्पिया ! सक्के देविंद देवराया जाव विहरइ ॥२४॥ तएण से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाण देवाण अतिए

यह कौन है ? ॥ २३ ॥ जब चमरेन्द्रने सामानिक परिषदा के देवों को ऐसा कहा तब वे बहुत हृष्ट तुष्ट हुवे और हस्त द्वय जोडकर मस्तकों से आवर्तना देकर जय विजय शब्द से वधाये और कहा अहो देवानुप्रिय ! यह शक्रेन्द्र ऐसा भोग भोगवता हुवा विचरता है ॥ २४ ॥ तब चमरेन्द्र उन सामानिक को

क० कौन ए० यह अ० अप्रार्थित की प० प्रार्थना करता है दु० दुष्ट अंत प० अमनोज्ञ ल० लक्षण वाला हि० लज्जा सि० लक्ष्मी प० रहित ही० हीन पु० पुन्य चतुर्दशी को जन्मा जे० जिससे म० मेरा इ० यह ए० ऐसे दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् दे० देवानुभाव ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुवा उ० उपर अ० होता उ० उठना दि० दीव्य भो० भोग भु० भोगते वि० विचरता है ए० ऐसा सं० विचार कर सा० सामानिक प० परिषदा में उ० उत्पन्न दे० देवोंको स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोला के० कौन ए० यह दे० देवानुप्रिय अ० अप्रार्थित की प० प्रार्थना करता है जा० यावत् भु० भोगवता वि०

॥ २२ ॥ पासइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए, पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था केसण एस अप्पत्थिय पत्थए दुरतपतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए, हीणपुण्णचाउद्दसे जेण मम इमे एयारूवाए दिव्वाए देवड्ढीए जाव दिव्वे देवाणुभावे लद्धे, पत्ते, अभिसमण्णागए उप्पिं अप्पुस्सुए दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ

प्रार्थना करनवाला [मरण की वांच्छा करनेवाला] अमनोज्ञ लक्षणवाला, लज्जा, लक्ष्मी रहित, हीन पुण्य चतुर्दशी में उत्पन्न होनेवाला ऐसा यह कौन है, मुझ जो ऐसी दीव्य देवर्द्धि यावत् दीव्य महानुभाग प्राप्त हुवा है उनकी उपर यह अरु उत्सुक बनकर दीव्य भोग भोगवता हुआ विचरता है ऐसा विचार करके सामानिक परिषदा के देवोंको बोलाये और पूछाकि मरण की वांच्छा करनेवाला यावत् भोग भोगवता हुवा जो विचरता है

विचरता है ॥ २३ ॥ ते० तंब मे० ये सा० सामानिक दे० देव च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसे बु० बोलाते हुवे ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् ह० आनद पामे क० करके तल प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अ० अनलि क० करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसे व० बोले ए० यह दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र जा० यावत् वि० विचरता है ॥ २४ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा ते० उन सा० सामानिक दे० देवों की अ० पास ए०

एव संपेहेइ २ त्ता सामाणिय परिसोववण्णए देवे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी केसण एस देवाणुप्पिया ! अप्पत्थिय पत्थए जाव भुंजमाणे विहरइ ॥२३॥ तएणसे सामाणिय परिसोववण्णगा देवा चमरेण असुरिंदेण असुररण्णो एव वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठ जाव हय-हियया करयल परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलिकट्टु जएण विजएण वद्धावेंति एव वयासी एसण देवाणुप्पिया ! सक्के देविंद देवराया जाव विहरइ ॥२४॥ तएण से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाण देवाण अंतिए

यह कौन है ? ॥ २३ ॥ जब चमरेन्द्रने सामानिक परिषदा के देवों को ऐसा कहा तब वे बहुत हृष्ट तुष्ट हुवे और हस्त द्वय जोडकर मस्तकों से आवर्तना देकर जय विजय शब्द से वधाये और कहा अहो देवानुप्रिय ! यह शक्रेन्द्र ऐसा भोग भोगवता हुवा विचरता है ॥ २४ ॥ तब चमरेन्द्र उन सामानिक की

यह अर्थ सो० सुनकर नि० अवधार कर आ० आसुरत्व रु० रुष्ट कु० कुपित च० विशेष कुपित मि० देदीप्य मान ते उन सा० सामानिक दे० देवको ए० ऐसे व० बोले अ० अन्य से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अन्य से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अल्पऋद्धि वाला से० यह च० चमर अ० असुरेन्द्र त० उस इ० इच्छता हू दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र को म० स्वयं अ० भ्रष्ट करने को ति० ऐसा करके उ० अत्यत कुपित जा० हुवा हो० था

एयमट्ठ सोचा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चाडिकिए मिसिमिसेमाणे ते सामाणिय परिसाववण्णए देवे एव वयासी अण्ण खलु भो! से सक्के देविंदे देवराया अन्नेखलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो ! से सक्के देविंद देवराया, अप्पिड्ढिए खलुभो ! से चमरे असुरिंदे असुरराया त इच्छामिण देवाणुप्पिया ! सक्क देविंद देवराय सयमेव अच्चामाहित्तए त्तिकट्टु, उसिणे उसिणब्भूए, जाएयावि होत्था ॥२५॥

पास मे ऐसा वचन सुनकर हृदय में धारकर आसुरत्व को प्राप्त हुवा, (क्रोधित बना) रुष्ट हुवा, कुपित हुवा, रौद्र बना, दांत पीसने लगा और सामानिक देव से कहने लगा, अहो शक्र नामक देवेन्द्र देवता का राजा दूसरा है और चमर नामक असुरेन्द्र भी दूसरा है वह शक्रेन्द्र निश्चय ही महर्द्धिक है और चमरेंद्र अल्प ऋद्धिवाला है उन को शोभा से भ्रष्ट करने को मैं स्वय वहां जाऊ ऐसा करके कोप संताप से

॥ २५ ॥ त० तब से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र ओ० अवधिज्ञान को प० प्रयुजकर म० मुझे आ० देखकर ए० इसरूप अ० अयभ्स्थाय जा० यावत स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ज० जम्बूद्वीप में भ० भरत क्षेत्र में सु० सुसुमार न० नगर में अ० अशाक वनखड उ० उद्यान में अ० अशोक वृक्ष की अ० नीचे पु० पृथ्वी शिलापटपे अ० अठम भक्त प० ग्रहणकर ए० एक रात्रिकी म० महाप्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरत हैं ॥ २६ ॥ तं० वह से० श्रय मे० मुझे स० श्रमण भ०

तएण से चमरे असुरिंद असुरराया ओहिं पउजइ, पउजइत्ता मम ओहिणा आभोएइ आभोएइत्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवंखलु समणे भगव महावीरे जबूद्दीवे दीवे भारहेवासे सुसमारपुरे नगरे असोगवणसडे उज्जाणे, असोगवरपायवस्स अहे पुढवि सिला पट्टयसि, अट्ठमभत्त पगिण्हित्ता, एगराइय महापडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ ॥ २६ ॥ त सेय खलु मे समण भगव महावीर

कृष्ण हुवा ॥ २५ ॥ उस समय में चमरेन्द्रने अवधि ज्ञान प्रयुंजा और मुझे देखा मुझे देखकर ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन उत्पन्न हुवा कि श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सुंसुमारपुर नामक नगर क अशोक वन खड उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वीशीला पटपर अठम भक्त का मत्याख्यान कर एक रात्रि की महा प्रतिमा अंगीकार करते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ इस से

भगवन्त म० महावीर की नी० नेश्राय से स० शक्र दे० देवेन्द्र को म० स्वय अ० भ्रष्ट करने को त्ति० ऐसा करके म० विचारकर सी० शैय्या से अ० उठकर दे० देवदूष्य प० पहिनकर जे० जहां स० सुधर्मा सभा जे० जहां चो० चउफाल प० आयुधशाला ते० तहां उ० आकर फ० परिघ र० रत्न प० ग्रहणकर प० एक अ० अद्वितीय फ० परिघ र० रत्नमय म० महा अ० अमर्ष व० धरता च० चमर चचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० नीकलकर जे० जहां ति० तिगिच्छ कूट उ० उत्पात प० पर्वत ते० तहां

णीसाए सक्क देविंद देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्तिकट्टु, एवं सपेहेइ, सपेहेइत्ता, सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता, देवदूसं परिहेइ, परिहेइत्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता फलिहरयणं परामुसइ, परामुसइत्ता एगे अबीए फलिहरयणमयाए महया अमरिसं वहमाणे चमरचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छइत्ता, जेणेव तिगिच्छकूडे

श्री श्रमण भगवंत महावीर की नेश्राय रखकर शक्र देवेन्द्र की आसातना करना मुझे श्रेय है ऐसा विचार कर अपने भासन से उठकर देव दूष्य वस्त्र पहिना और चउफाल नामक शस्त्रों का भंडार था वहां आया वहां आकर परिघ रत्न नामक आयुध को हस्त में धारन किया परिघ रत्न को धारन करके अन्य किसी को साथ नहीं लेते हुवे अमर्षभाव धारण करके चमर चचा राज्यधानी की बीच में होकर तिगिच्छकूट

उ० आकर वे० वैक्रेय समुद्घात स० नीकालकर जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रूप वि० विकुर्वणा कर ता० उस उ० उत्कृष्ट जे० जहां पु० पृथ्वी शिलापट जे० जहां म० मेरी पास ते० तहां उ० आकर म० मुझ ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० कर जा० यावत् न० नमस्कार कर व० बोले इ० इच्छताहूं भ० भगवन् तु० तुमारी नी० नेश्राय से स० शक्र दे० देवेन्द्र को स० स्वय अ० भ्रष्ट करने को ति० ऐसा करके ॥ २७ ॥ उ० ईशान कोन का अ० अतिक्रम वे० वैक्रय समुद्घात स० नीकालकर

उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइत्ता जाव उत्तर वेउव्वियरूव विकुव्वइ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव पुढवि सिलावट्टए जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता मम तिक्खुत्तो आ-याहिण पयाहिण करेइ जाव नमंसित्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुब्भं नीसाए सक्कं देविंद देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्तिकट्टु ॥ २७ ॥ उत्तर पुरच्छिमदिसी

नामक उत्पात पर्वत पर आये वहां आकर वैक्रेय समुद्घात यावत उत्तर वैक्रेय रूप करके मेरी समीप आया और मुझे तीन आदान प्रदक्षिणा यावत् नमस्कार करके ऐसा बोला कि अहो पूज्य ! तुमारी नेश्राय से मैं स्वय शक्रेन्द्र की आसातना करने को इच्छता हूं ॥ २७ ॥ ऐसा कहकर ईशान कोन म गया वहां जाकर

ना० यावत् गो० दूसरी वक्र वे० वैक्रेय समुद्घात स० नीकालकर ए० एक म० बडा घो० घोर घो० घोराकार भी० विकराल भा० भयकर भ० भयानीत ग० गंभीर उ० उद्वेग उपजाने का० कृष्ण अर्द्ध रात्रि मा० उडद स० सरिखा जो० योजन स० लाख प० बडा शरीर को वि० विकुर्वणा कर अ० पछाडे म० टन्कार ग० गर्जना कर ह० ह्यहय कर क० करत हु० हस्तिका शब्द क० करक र० रथका घन क० हरके पा० पांव पछाड कर भू० भूमि को च० चपेटा दे० देकर सी० सिंहनाद न० करके उ० उछा

भाग अवक्कमइ अवक्कमइत्ता वेउव्विय समुग्धाएण समोहणइ समोहणइत्ता जाव

एगं महं घोरं, घोरागारं, भीमं, भीमागारं, भासुरं, भयाणीयं, गंभीरं उत्तासणयं कालड्डरत्तमासरासि सकासं जोयण सयसाहस्सीय महाबोंदि विउव्वइ, विउव्वइत्ता अप्फोडेइ, अप्फोडेइत्ता वग्गइ वग्गइत्ता गज्जइ, गज्जइत्ता हयहेसियं करेइ, करेइत्ता हत्थिगुलगुलाइयं करेइ, करइत्ता

वैक्रय समुद्घात करके प्रदेश बाहिर नीकाले यावत् दूसरी वक्र वैक्रय समुद्घात करके एक बडा, घोर, घोर आकारवाला, भीम, भीम आकारवाला, देदीप्यमान, भयजानवाला, गंभीर, उद्वेग उत्पन्न करनेवाला श्याम प्रायोरात्रि व उडद समान एक लक्ष योजन का शरीर बनाया शरीर बना करके दोनों हाथ की इथे लियां या दोनों भुजाओं को कास्फोट करता, हाथ से कूदता हुवा, जोर से गाजता हुवा, घन

ला उ० उछलकर प० पछोडा पछोडकर ति० त्रिपद छि० छेदकर वा० वायां हाथ को ऊ० ऊंचाकर दा० दक्षिण हाथ को प० नीचाकर अ० अंगुठा के नख ति० तिर्च्छा मु० मुख वि० विटम्बनाकर म० बडे बडे स० शब्द से क० कल कल अवाज क० करके ए० एक अ० अद्वितीय फ० परिघ र० रत्नमय उ० ऊर्ध्व वि० आकाश में उ० उछालता खो० क्षोभ पमाडता अ० अधोलोक को क० कपावता मे० पृथ्वी

रहघण घणाइय करेइ, करेइत्ता पायदद्दरग करेइ, करेइत्ता भूमिचवेड दलयइ, दलयइत्ता सीहनाद नदइ, नदइत्ता उच्छोलेइ, उच्छोलेइत्ता पच्छोलेइ, पच्छोलेइत्ता तिवर्ति छिंदइ, तिवर्ति छिंदइत्ता वाम भुय ऊसवेइ, ऊसवेइत्ता दाहिण हत्थपएसिणीए अगुट्ठनहेणय, वितिरिच्छ मुह विडवइ, विडवइत्ता महया महया सद्देण कलकलरव

गर्जारव समान शब्द करता हुवा, घोडे के हेंसार समान हेंकार करता हुवा, हाथी की समान गुलगुलाट करता हुवा, रथ की समान घणघणाट करता हुवा, भूमि पर पांव आस्फालता हुवा, हाथों के चपेटे भूमि पर मारता हुवा, सिंहसमान नाद करता हुवा, मर्कट की तरह उछल उछल कर जाता हुवा, मल्ल की माफक रगभूमि में त्रिपद छेद करता हुवा, बांयी भुजा को उपर ऊंची रखता हुवा, दक्षिण भुजा के पांव की अंगुलीयों मरोडता हुवा, मुच्छों को वल घालता हुवा, अत्यत जोर से कल कलाट करता हुआ, मात्र परिघ रत्न नामक आयुध को धारण करता हुआ, ऊर्ध्व आकाश में ऊछाला खाता हुआ, क्षोभ उत्पन्न करता

मात्मरक्षक देव सा० सहस्र क० कहाँ ता० उन की अ० अनेक अ० अप्सरा को० क्रोडी अ० आज ह० हनता हूं म० मन्थन करता हूं व० वधकरता हूं अ० आज म० मुझे अ० अवश अ० अप्सरा व० वशमें व० नमस्कार करो ति० ऐसा करके त० उन को अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम फ० कठोर गि० भाषा नि० कही ॥२८॥ त० तब स० शक्र दे० देवेन्द्र त० उस अ० अनिष्ट जा० यावत्

चउरासीइ सामाणिय साहस्सीओ, जाव कहिण ताओ चत्तारिचउरासीओ आयरक्ख-देवसाहस्सीओ, कहिण ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्जवहेमि, अज्जमम अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमतु त्तिकट्टु, त आणिट्ठं, अकंतं, अप्पियं, असुभ, अमणुण्ण, अमणाम, फरुसगिर निसिरइ ॥ २८ ॥ तएण

मारा और बडे बडे शब्द से बोलने लगा अरे शक्र देवेन्द्र देवराजा कहाँ है? उसके चौरासी हजार सामानिक यावत् तीन लाख छत्तीस हजार आत्म रक्षक देव और अनेक क्रोड अप्सरा का परिवार कहाँ है ? आज मैं उन को मारूंगा, इन सब का मैं वध करूंगा, आज मैं दधि समान मन्थन करूंगा, आजदिन तक तू मेरे वश में नहीं था अब देवियों सहित वश होकर मुझे नमस्कार करो ऐसा अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम यावत् कठोर वचन निकालने लगा ॥ २८ ॥ उस समय में ऐसी अनिष्ट

अ० अमनाम अ० नहीं सुनी फ० कठोर गि० भाषा सो० सुनकर नि० अवधारकर आ० आसुरत्व जा० यावत् मि० देदीप्यमान ति० तीनरेखा रूप भि० भृकुटी नि० कपाल में सा० चढाकर च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व० बोले च० चमर अ० असुरेंद्र अ० अप्रार्थितका प० प्रार्थित जा० यावत् ही० हीन पु० पुन्य चतुर्दशी वाला अ० आज न० नहीं भ० है ना० नहीं त० तुझे सु० सुख अ० है त्ति० ऐसा करके सी० सिंहासन पे ग० बैठे हुवे व० वज्र प० ग्रहणकर त० उस को ज० जलता फु० फुट फुट शब्द

से सक्के देविंदे देवराया त आणिट्ठं जाव अमणाम अस्सुयपुव्व फरुस गिर सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडिं निलाडे साहट्टु चमर असुरिंद असुरराय एव वयासी हं भो चमरा असुरिंदा असुरराया अप्पत्थियपत्थिया जाव हीणपुण्णचाउद्दसा ! अज्ज न भवसि, नाहि ते सुहमत्थि त्तिकट्टु तत्थेव सीहासणवरगए वज्ज परामुसइ परामुसइत्ता, त जलत, फुडत, तयतडत उक्कासहस्साइ

यावत् अमनोज्ञ, पहिले कदापि नहीं सुनी वैसी कठोर भाषा सुनकर शक्रेन्द्र क्रोधित हुवा, और दांत पीसता हुवा भृकुटी चढाकर चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा को ऐसा कहा अरे असुरेन्द्र, असुर का राजा चमर ! तू अप्रार्थित की प्रार्थना करनेवाला यावत् हीन पुण्यचतुर्दशी में उत्पन्न होनेवाला है आज तुझे सुख नहीं होगा ऐसा कहकर सिंहासन पर बैठे हुवे शक्रेदेवेन्द्र देवराजाने वज्र उठाया उठाकर

करता त० त्रट त्रट अवाज करता उ० उल्का सहस्र मु० मूकता हुआ ज्वा० ज्वाला सहस्र मु० मूकता इं० अंगार म० शत सहस्र प० विखरता फु० अग्नि कण ज्वा० ज्वाला मा० माल्य स० सहस्र च० चक्षु वि० विसेष दृष्टि का प० प्रतिघात प० करता हु० अग्नि ब० बहुत ते० तेज दि० देदीप्यमान वे० वेगवन्त फु० फुल्ग हुवा किं० किंशुक समान म० महाभयकर च० चमर अ० असुरेंद्र का व०, वध केलिये व० वज्र नि० नीकाला ॥ ५१ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र त० उस ज० जलता जा० यावत् भ० भयकर

निंफि मुयमाण २ जाला सहस्साइ मुयमाण इगाल सय सहस्साइ पविक्खिरमाण, पविक्खिरमाण, फुलिंग जाला माला सहस्सेहिं चक्खु विक्खेवदिट्ठिपडिघाय त्रि पकरे माणे हुयवहुयतिरगतेयदिप्पत, जइणवेग, फुल्लकिसुयसमाण महब्भय भयंकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्ज निसिरइ, ॥ २१ ॥ तएण से चमरे असुरिंद असुरराया तं जलत जाव भयकर वज्जमभिमुह आवयमाणं पासइ, पासइत्ता

अग्नि समान जलता हुआ, फुट फुट शब्द करताहुवा, और भट भट करता हुवा सहस्र विद्युत समान भलभलाट करता हुवा, ज्वाला को छोडता हुवा, हजारों अगार की वर्षा वर्षाता हुवा, बहुत प्रकाश करता हुवा, अग्निसे अधिक तेजवाला, किंशुक कुसुम समानफुल्ला हुआ, और महाभय उत्पन्न करता हुवा एसा भयं कर वज्र चमर असुरेन्द्र के वध के लिये छोडा ॥ ७१ ॥ फीर ऐसा जलता हुवा यावत् महाभय करने-

व० वज्र अ० सन्मुख आ० आता पा० देखकर झि० चिन्तवनकर पि० इच्छकर त० तैसे म० मग्ना हुआ म० मुकुट वि० विस्तार सा० आलंबन सहित ह० हस्त आ० आभरण उ० ऊंचे पांव अ० नीचाशिर क० कक्षा ग० रहा हुआ से० स्वेद मु० मुक्ता ता० तस उ० उत्कृष्ट जा० यावत् ति० तिर्च्छी अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य में वी० अतिक्रमता जे० जहां जं० जंबूद्वीप जा० यावत् म० मेरी अ०

झियाइ, पिहाइ, झियाइत्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्ग मउड विडए, साले-बहत्थाभरणे उड्डूपाए अहो सिरं कक्खागयसेयंपिव विणिं मुयमाणे मुयमाणे ताए उ-क्किट्ठाए जावतिरिय मसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं वीईवयमाणे २ जेणेव जं-बुद्दीवे दीवे जाव जेणेव असोगवर पायवे, जेणेव ममअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवा-

वाला वज्र को सामने आता हुआ देखकर वह चमरेन्द्र यह क्या होगा ऐसा चिन्तवन करने लगा, यह मुझे होवे ऐसी इच्छा करने लगा, अपने स्थान जाने की वांच्छा करने लगा, और वज्र का आताप नहीं सहन होने से चक्षु भय करता हुआ व्याकुल होने लगा इस तरह चिन्तवन करके पीछा फीरा, सिर का मुकुट नीचे पडने लगा, आभरणों हस्त से पकडे, अधो गमन होने से ऊंचे पांव नीचा सिर हुआ और जैसे मनुष्य के शरीर में से स्वेद छूटता है वैसे ही चमरेन्द्र के शरीर में से स्वेद रूप पुद्गल टपकनेलगा फीर देव की शीघ्र गति से यावत् असंख्यात द्वीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सुंसुमार नगर के

व॰ वज्र दो॰ दो मे म॰ जिस को व॰ वज्र गो॰ दो मे ते॰उसको च॰चमर ति॰तीन मे स॰सर्व मे थोरा स॰ शक्र दे॰ देवेन्द्र का ऊ॰ ऊर्ध्व लोक क॰ कंड अ॰ अधोलोक क॰कंड स॰संख्यात गुणा जा॰जितना खि॰ क्षेत्र च॰ चमर अ॰ अधो उ॰ जावे ए॰ एक समय में तं॰ उस को स॰ शक्र दो॰ दो मे व॰ वज्र ति॰तीन से स॰सर्वसे थोडा च॰चमर अ॰असुरेंद्र का अ॰ अधोलोक कं॰ कंड उ॰ऊर्ध्व लोक का कंड स॰

वं वज्जे दोहिं, तं चमरं तिहिं ॥ सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकंडए अहेलोय कंडए संखेज्जगुणे जावइयखेत्त चमरे असुरिंदे असुरराया अहे उवयइ एक्केण समएण, त सक्के दोहिं, त वज्जे तिहिं, ॥ सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्ढलोयकंडए संखेज्जगुणे, एवं खलु गोयमा ! सक्केण

मय में जाता है और चमरेन्द्र तीन समय में जाता है शक्र देवेन्द्रको उपर जाने में सब मे थोडा काल लगता है उस से अधो लोक में जाने में सख्यात गुना (द्विगुना) काल लगता है * एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे उतरता है उतना शक्रेंद्र दो समय में उतरता है और वज्र तीन समय में उतरता है

* यहां पर द्विगुना काल लेनका मतलब यह है कि शक्रेंद्रको ऊंचा जानेका व चमरेंद्र को नीचा जाने में दोनों बराबर हैं एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे जाता है उतनाही क्षेत्र नीचे जाने में शक्र को दो समय लगते हैं

व० वज्र अ० सन्मुख आ० आता पा० देखकर झि० चिन्तवनकर पि० इच्छकर त० तैसे स० भगा हुवा म० मुकुट वि० बिस्तार सा० आलंबन सहित ह० हस्त आ० आभरण उ० उर्ध्व पांव अ० नीचाशिर क० कक्षा ग० रहा हुवा से० स्वेद मु० मूकता ता० त्रस उ० उत्कृष्ट जा० यावत् ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य से वी० अतिक्रमता जे० जहां जं० जंबूद्वीप जा० यावत् म० मेरी अ०

झियाइ, पिहाइ, झियाइत्ता पिहाइत्ता तहेव सभग्ग मउड विडए, साल-बहत्थाभरणे उद्धपाए अहो सिरे कक्खागयसेयपिव विणि मुयमाणे मुयमाणे ताए उ-क्किट्ठाए जाव तिरिय मसखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झ मज्झेण वीईवयमाणे २ जेणेव ज-बूदीवे दीवे जाव जेणेव असोगवर पायवे, जेणेव ममअतिए तेणेव उवागच्छइ उवा-

वाला वज्र को सामने आता हुवा देखकर वह चमरेन्द्र यह क्या होगा ऐसा चिन्तवन करने लगा, यह मुझे होवे ऐसी इच्छा करने लगा, अपने स्थान जाने को वांच्छने लगा, और वज्र का आताप नहीं सहन होने से चक्षु बंध करता हुवा व्याकुल होने लगा इस तरह चिन्तवन करके पीछा फीरा, सिर का मुकुट नीचे पडने लगा, आभरणों हस्त से पकडे, अधो गमन होने से ऊंचे पांव नीचा सिर हुवा और जैसे मनुष्य के शरीर में से स्वेद छूटता है वैसे ही चमरेन्द्र के शरीर में से स्वेद रूप पुद्गल टपकनेलगा फीर देव की दीव्य गति से यावत् असख्यात दीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में संसुमार नगर के

पाग उ० आकर भी० डरा हुवा भ० भय से ग० घर्धर स्वर भ० भगवन् स० सरण मे० मुझे त्ति० एसो वू० कहता म० मेरे दो० दोनों पा० पांव के अं० अंतर में वे० त्वरासे स० पडा ॥ ३० ॥ त० तब त० उस स० शक्र दे० देवेन्द्र को ए० इसरूप अ० अध्यसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं ख० निश्चय प० शक्ति मत च० चमर अ० असुरेंद्र णो० नहीं० स० समर्थ च० चमर असुरेंद्र नो० नहीं वि० विषय च० चमर अ० असुरेंद्र का आ० स्वत की णि० नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडकर जा० यावत् सो० सौधर्म देव-

गच्छइत्ता, भीए भयगग्गरसरे भगव सरणं मेत्ति वूयमाणे मम दोण्हवि पायाण अं-तरंसि झत्तिवेगेण समोवाडिए ॥ ३० ॥ तएणं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया णोखलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, णो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो णिस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मेकप्पे णण्णत्थ अरिहंतेवा,

अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शिला पट्टपर जहां मैं ध्यानस्थ था वहां वह चमरेन्द्र आया आकरके डरता हुवा मम स्वर से अहो भगवन् ! आपका मुझ शरण हो ऐसे बोलता हुवा मेरे दोनों पांवों की बीच में शीघ्र वेग से गिरपडा ॥ ३० ॥ फीर शक्रेन्द्र को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि स्वय चमरेंद्र यहां आने को समर्थ नहीं है वैसे ही अन्य किसी की नेश्राय बिना ऊंचे सौधर्म देवलोक में

लोक ण० नहीं अ० अन्यथा अ० अरिहत अ० छद्मस्थ अरिहत अ० अनगार भा० भवितात्मा णि०नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक त० वह म० महा दु ख त० तथारूप भ० अरिहत भ० भगवन्त अ० अनगारकी अ० आशातनाकरे॥३१॥ त्ति० ऐसा करके ओ० अवधिज्ञान को प०प्रयुजकर म०मुझे ओ०अवधि ज्ञान से आ०देखकर हा०हाहा अ० अहो ह०हणाया अ०मैं अ०हू त्ति०ऐसा करके ता० उस उ०उत्कृष्ट जा०यावत् दि०दीव्य दे०देवगति से व०वज्र की वी० रस्ते अ०पीछ जाना ति०तिर्च्छा अ०

अरिहतचेइयाणिवा, अणगारेवा भावियप्पाणो णिस्साए उड्ढ उप्पइत्ता जाव सोहम्मे कप्पे त महादुक्ख खलु तहारूवाण अरहताण भगवताण अणगाराणय अच्चासा- यणयाए ॥ ३१ ॥ त्तिकट्टु, ओहिं पउजइ, पउजइत्ता मम ओहिणा आभोएइ२ त्ता, हाहा अहो हतो अहमासि त्तिकट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देव गईए वज्जस्स

आने का विषय नहीं है आरिहंत, आरिहत चैत्य सो छद्मस्थ, अनगार और भवितात्मा की नेश्राय विना ऊचे उडने को यावत् सौधर्म देवलोक में आने को समर्थ नहीं है इस से आरिहंत भगवत यावत् अनगार को आसातना से महा दुःख होगा ॥ ३१ ॥ ऐसा करके अवधि ज्ञान प्रयुजा (लगाया) और अवधि ज्ञान से मुझे देखकर हा हा अरे अरे ऐसा खेद करके उस उत्कृष्ट यावत देव की दीव्य गति से वज्र के

पास उ० आकर भी० डरा हुवा भ० भय से ग० घर्घर स्वर भ० भगवन् स० सरण मे० मुझे त्ति० एसो बू० करता प० मेरे दो० दोनों पा० पांव के अं० अंतर में वे० त्वरासे स० पडा ॥ २० ॥ त० तब त० उस स० शक्र दे० देवेन्द्र को ए० इसरूप अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं खलु निश्चय प० शक्ति म० मेरे ... वि० विषय च० चमर अ० असुरेंद्र को ... स० समर्थ च० चमर असुरेंद्र नो० नहीं वि० विषय च० चमर अ० असुरेंद्र का आ० स्वत की णि० नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडकर जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक गच्छइत्ता, भीए भयगग्गरसरे भगवं सरणं मेत्ति बूयमाणे मम दोण्हवि पायाण अंतरंसि झत्तिवेगेण समोवडिए ॥ २० ॥ तएणं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया णोखलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, णो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो णिस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मेकप्पे णण्णत्थ अरिहंतेवा,

अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शिला पट्टपर जहां मैं ध्यानस्थ था वहां वह चमरेन्द्र आया आकरके डरता हुवा मन्द स्वर से अहो भगवन्! आपका मुझे शरण हो ऐसे बोलता हुवा मेरे दोनों पांवों की बीच में शीघ्र वेग से गिरपडा ॥ २० ॥ फीर शक्रेन्द्र को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि स्वयं चमरेंद्र यहां आने को समर्थ नहीं है वैसे ही अन्य किसी की नेश्राय बिना ऊंचे सौधर्म देवलोक में

तब कु० कुपित होते च० चमर अ० असुरेंद्र का व० वध केलिये व० वज्र नि० नीकाला त० तब म० मुझे ए० इसरूप अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं प० समर्थ च० चमर अ० असुरेंद्र त० तैसे जा० यावत ओ० अवधि ज्ञान को प० प्रयुंजता हूं दे० देवानुप्रिय को ओ० अवधिज्ञान से आ० देखे जा० यावत् जे० जहां दे० देवानुप्रिय ते० तहां उ० आया दे० देवानुप्रिय को च० चार अगुल अ० अप्राप्त व० वज्र प० ग्रहण करता हूं व० वज्र को प० ग्रहण करने केलिये आ० आया इ० यहां

अह तुब्भ नीसाए चमरेण असुरिंदेण असुररण्णो सयमेव अच्चासाइए, तएणं मए कुविएणं समाणेण चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्जे निसिट्ठे, तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तहेव जाव ओहिं पउंजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, हाहा जाव जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरामि वज्ज पडिसाहरणट्ठयाएणं इह मागए,

का शरण लेकरके चमरेन्द्रने मेरी आसातना की इस से बहुत क्रोधित होकर मैंने असुरेन्द्र का वध के लिये वज्र फेंका फीर मुझ ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि चमर असुरेन्द्र ऊर्ध्व सौधर्म देवलोक में आने को समर्थ नहीं है, आरिहंत यावत् अनगार का शरण लिये विना नहीं आसकता है इस से मैंने अवधि ज्ञान प्रयुंजा और अवधि ज्ञान से आप को देखे फीर खेद करता हुवा आपकी समीप आया

असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य से जा० यावत् जे० जहाँ अशोक पा० वृक्ष म० मेरी अ० पास ते० वहां उ० आकर म० मुझ च० चार अंगुल अ० असमाप्त व० वज्र प० संहरन करे मु० मुष्टिकेवात मे के० केशाग्र वी० चलित हुवे ॥ ३२ ॥ त० तब से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र व० वज्र को प० संहरन कर म० मुझे ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले भ० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी नी० नेश्राय से च० चमर अ० असुरेंद्र स० स्वय अ० भ्रष्टकरने को त०

वीहिं अणुगच्छमाणे तिरिय मसंखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झं मज्झेणं जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, ममचण चउ-रंगुलमसपत्त वज्ज पडिसारइ अन्नियाइमे गोयमा ! मुट्ठिवाएण केसग्गे वीइत्था ॥ ३२ ॥ तएण से सक्के देविंदे देवराया वज्ज पडिसाहरित्ता, ममं तिक्खुत्तो आया-हिण पयाहिण करेइ करेइत्ता वदइ नमसइ नमसइत्ता एव वयासी एव खलुभते !

रस्ते को अनुसरता हुवा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जम्बूद्वीप क भरत क्षेत्र में सुंसुमार नामक नगर के अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे मेरी समीप आया और मेरे से चार अंगुल दूर रहते वज्र पीछा खींच लिया वज्र खींचने के लिये जो मुष्टिबध की, उस के वायु से मेरे केशाग्र चले ॥ ३२ ॥ वज्र खींचे पीछे मुझे तीन आदान प्रदक्षिणाकर वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला अहो भगवन् ! आप

कहा मु० मुक्त अ० है भो० भो च० चमर अ० असुरेंद्र स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के प० प्रभाव से न० नहीं ते० तुझे इ० अब म० मुझ से भ० भय अ० है त्ति० ऐसा करके ज० जिस दिशि स पा० आये ता० उसदिशा में प० पीछे गये ॥ ३३ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को न० नमस्कार कर व० बोले दे० देव भ० भगवन्त म० महाऋद्धि म० महाद्युति जा० यावत् म० महानुभाग पु० पहिले पो० पुद्गल खि० फेंक कर प० समर्थ त० उसको अ० पीछे जाकर गे०

असुरिंद असुरराय एव वयासी-मुक्कोसि णं भो चमरा असुरिंदा असुरराया । समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेण, नाहिं तेदाणिं ममाओ भयमत्थि त्तिकट्टु, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ३३ ॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी देवेणं भंते ? महिड्ढीए महज्जुईए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए

अरे असुरेन्द्र असुरका राजा चमर ! श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के प्रभाव से मेरी तर्फ से तुझ भय नहीं है ऐसा करके जहां से आया था वहां पीछा गया ॥ ३३ ॥ यहां पर प्रस्तरादि [पत्थर] पुद्गल फेंके पीछे मनुष्य पीछा लेने को समर्थ नहीं होता है तो देव क्या समर्थ होवे शक्रने वज्र फेंका और पीछा वज्र ले लिया इसलिये उस का यहां पर प्रश्न करते हैं श्री गौतम स्वामी महावीर

म० मास इ० यहाँ अ० आज उ० उपशम को प्राप्त होकर वि० विचरता हूं खा० क्षमाता हूं दे० देवानुप्रिय ख० क्षमाकरो म० मुझे ख० क्षमाकरने अ० योग्य दे० देवानुप्रिय न० नहीं भु० वारवार ए० ऐसा क० करने को त्ति० ऐसा करके म० मुझे व० वंदना कर न० नमस्कार कर उ० ईशान कोन में अ० अतिक्रम, वा० बांया पा० पांव से ति० तीनवक्त भू० भूमि का दा० विदार च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व०

इह समोसढे, इह सपत्ते, इहेव अज्ज उवसपज्जित्ताण विहरामि ॥ त खामेमिण देवाणुप्पिया ? खम तुम देवाणुप्पिया ? खतुमरिहतुण देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो २ एव करणयाए त्तिकट्टु ममं वदइ नमसइ, नमसइत्ता उत्तर पुरच्छिम दिसीभाग अवक्कमइ अवक्कमइत्ता, वामेणं पादेण तिक्खुत्तो भूमिं दालेइ चमर अ-

और आप से चार अंगुल प्रमाण वज्र दूर रहते मैंने पीछा खींच लीया वज्र पीछा खींचने के लिये मैं यहां पर आया हुआ हूं यहां समोसर्या, व प्राप्त हुवा हूं यहां पर इस उद्यान में आज पाप को उपशमाता हुवा विचरता हूं इस से अहो देवानुप्रिय ! मैं आप की क्षमा याचता हूं, आप मुझे क्षमा करें आप क्षमा करने योग्य हो अब मैं वारवार ऐसा नहीं करूंगा ऐसा कहकर वंदना नमस्कार करके ईशान कोन में गया और बायें पांव से भूमि को तीन वक्त विदार कर चमरेन्द्र को ऐसा कहने लगा कि

कहा मु० मुक्त भ० है मो० मो च० चमर अ० असुरेंद्र स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के प० प्रभाव से न० नहीं ते० तुझे इ० अब भ० मुझ से भ० भय अ० है त्ति० ऐसा करके ज० जिस दिशि स पा० आये ता० उसदिशा में प० पीछे गये ॥ ३२ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को न० नमस्कार कर व० बोले दे० देव भ० भगवन्त म० महाऋद्धि म० महाद्युति जा० यावत् म० महानुभाग पु० पहिले पो० पुद्गल खि० फेंक कर प० समर्थ त० उसको अ० पीछे जाकर गे०

असुरिंद असुरराय एवं वयासी-मुक्कोसि ण भो चमरा असुरिंदा असुररायो । समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेण, नाहिं तेदाणिं ममाओ भयमत्थि त्तिकट्टु, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ३२ ॥ भंतेत्ति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वंदइ नमसइ नमसइत्ता, एवं वयासी देवेण भंते ? महिड्ढीए महज्जुईए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गल खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताण गेण्हित्तए

अरे असुरेन्द्र असुरका राजा चमर ! श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के प्रभाव से मेरी तर्फ से तुझे भय नहीं है ऐसा करके जहा से आया था वहां पीछा गया ॥ ३३ ॥ यहां पर प्रस्तरादि [पत्थर] पुद्गल फेंके पीछे मनुष्य पीछा लेने को समर्थ नहीं होता है तो देव क्या समर्थ होवे शक्रने वज्र फेंका और पीछा वज्र ले लिया इसलिये उस का यहां पर प्रश्न करते हैं श्री गौतम स्वामी महावीर

स० प्राप्त हु० यहां अ० आज उ० उपशम को प्राप्त होकर वि० विचरता हू स्वा० क्षमाता हू दे० देवानुप्रिय ख०क्षमाकरो म०मुझे ख०क्षमाकरने अ० योग्य दे०देवानुप्रिय न०नहीं पु०वारवार ए०ऐसा क० करने को त्ति० ऐसा करके म० मुझे व० वंदना कर न० नमस्कार कर उ० ईशान कोन में अ० अतिक्रम, वा० बांया पा० पांव से ति० तीनवक्त भू० भूमि का दा० विदार च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व०

इह समोसढे, इह सपत्ते, इहेव अज्ज उवसपज्जित्ताण विहरामि ॥ तं खामेमिण देवाणुप्पिया ? खम तुम देवाणुप्पिया ? खतुमरिहतुण देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो २ एव करणयाए त्तिकट्टु मम वदइ नमसइ, नमसइत्ता उत्तर पुरच्छिम दिसीभाग अवक्कमइ अवक्कमइत्ता, वामेण पादेण तिक्खुत्तो भूमिं दालेइ चमर अ-

अर्थ

और आप से चार अंगुल प्रमाण वज्र दूर रहते मैंने पीछा खींच लीया वज्र पीछा खींचने के लिये मैं यहां पर आया हुआ हू यहां समोसर्या, व प्राप्त हुवा हू यहां पर इस उद्यान में आज पाप को उपशमाता हुवा विचरता हू इस से अहो देवानुप्रिय ! मैं आप की क्षमा याचता हू, आप मुझे क्षमा करें आप क्षमा करने योग्य हो अब मैं वारवार ऐसा नहीं करूंगा ऐसा कहकर वंदना नमस्कार करके ईशान कोन में गया और बायें पांव से भूमि को तीन वक्त विदार कर चमरेन्द्र को ऐसा कहने लगा कि

सख्यात गुणा ए० ऐसे ॥ ३५ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्च्छा ग० गति विषय क० कितना क० किससे अ० अल्प ब० बहुत तु० तुल्य वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा ख० क्षेत्र स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अधो उ० जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा स० सख्यातवा भागमें ग०

देविंदेण देवरण्णो चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाएइ साहत्थिं गेण्हित्तए ॥ ३५ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उड्ढं अहेतिरियंच गइविसयस्स कयरे कयरे- हिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्त सक्के दे- विंदे देवराया अहे उवयइ, एक्केण समएण तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ, उड्ढं संखे-

चमर असुरेंद्र को नीचें आने में सब मे थोडा काल लगता है उस से ऊर्ध्व जाने में सख्यात गुना काल लगता है इस से अहो गौतम ! शक्रन्द्र असुरेन्द्र को हाथ से पकडने को समर्थ नहीं है ॥ ३५ ॥ अब शक्रेंद्र, चमरेंद्र व वज्र इन की गति का अल्पाबहुत्व करते हैं अहो भगवन् ! शक्र देवेंद्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति विषय में से कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा क्षेत्र शक्र देवेंद्र नीचे उतरता है, इस से सख्यात भाग अधिक तिर्च्छी दिशा के क्षेत्रका आक्रमण करता है उस से ऊर्ध्व दिशा का क्षेत्र सख्यात भाग अधिक जाता है जैसे शक्र नामक देवेन्द्र एक समय में एक योजन नीचे आवे, उस के दो भाग करके उस में का एक भाग उक्त योजन में मीलाने से

श० शक्र दो० दो मे वं० जिस को व० वज्र दो० दो मे ते०उसको च०चमर ति०तीन से स०सर्व से थोडा स० शक्र दे० देवेन्द्र का उ० ऊर्ध्व लोक क० कंड अ० अधोलोक कं०कंड स०सख्यात गुणा जा०जितना खि० क्षेत्र च० चमर अ० अधो उ० जावे ए० एक समय में तं० उस को स० शक्र दो० दो से व० वज्र ति०तीन से स०सर्वसे थोडा च०चमर अ०असुरेंद्र का अ० अधोलोक कं० कंड उ०ऊर्ध्व लोक का कंड स०

वे वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं ॥ सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकंडए अहेलोय कंडए संखेज्जगुणे जावइयखेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे उवयइ एक्केणं समएणं, तं सक्के दोहिं, तं वज्जे तिहिं, ॥ सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्ढलोयकंडए संखेज्जगुणे, एवं खलु गोयमा ! सक्केणं

दो समय में जाता है और चमरेन्द्र तीन समय में जाता है शक्र देवेन्द्रको ऊपर जाने में सब से थोडा काल लगता है उस से अधो लोक में जाने में सख्यात गुना (द्विगुना) काल लगता है * एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे उतरता है उतना शक्रेंद्र दो समय में उतरता है और वज्र तीन समय में उतरता है

---

* यहां पर द्विगुना काल लेनका मतलब यह है कि शक्रेंद्रको ऊंचा जानेका व चमरेंद्र को नीचा आने का काल में दोनों बराबर हैं एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे जाता है उतनाही क्षेत्र नीचे आने में शक्रेंद्र को दो समय लगते हैं

अधो ति० तिर्च्छा ग० गति विषय क० कितना क० किस से अ० अल्प ब० बहुत तु० तुल्य वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा खे० क्षेत्र च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व उ जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा स० संख्यातवा भाग में अ० अधो सं० संख्यातवा भाग में स० शक्र दे० देवेन्द्र

रियच गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयइ एक्केण समएण, तिरिय संखेज्जेभागे गच्छइ, अहे संखेज्जेभागे गच्छइ । सक्के देविंदे देवराया उड्ढं

भाग ऊना तीन गाउ, इस प्रकार एकेक गाउ के तीन भाग करने से एक योजन के बारह और दो योजन के चौवीस भाग होते हैं इस से यहां विचारते हैं तीन भाग कम तीन गाउ तब आठ भाग रहे इतना एक समय में ऊंचे जावे, उस से तिर्च्छा उक्त आठ भाग से दुगुने करे इतना क्षेत्र अधिक जावे इतना तिर्च्छा गति का विषय शीघ्र कहा है उक्त दो विभाग कम छ गाऊ है उस में एक विभाग कम तीन गाऊ मीलाने से अर्थात् दो योजन पूर्ण होवे उतना अधिक अधो लोक में जावे अहो भगवन् ! वज्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति में ज्यादा, कमी, बराबर किस प्रकार कहा है ? अहो गौतम ! जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही वज्र का जानना वज्र सब से थोडा अधो गति में जावे, क्यों कि अधो गति में जाने में उन की गति की मंदता है तिर्च्छा विशेषाधिक जावे और ऊर्ध्व गति में विशेषाधिक जावे यहां

जावे ऊ० ऊर्ध्व स० संख्यातवा भाग में म० जावे ॥ ३८ ॥ च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व अ०

डिभागे गच्छइ ॥ ३९ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो उड्ढं अहे ति-

देढ योजन होवे इसलिये तीन संख्यात भाग तिच्छा लोक में जावे - तिच्छा लोक में योजन का आधा विभाग रहा था वह आधा विभाग उक्त देढ योजन में मीलाने से पूरे चार भाग संख्यात गुने होते हैं + ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र का ऊर्ध्व अधो व तिर्यक् गति का विषय में कौन किससे अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! एक समय में चमर असुरेन्द्र सब से थोडा ऊर्ध्व लोक में जाता है इस से तिच्छा लोक में संख्यात गुणा अधिक क्षेत्र जाता है और उस से अधो लोक में संख्यात भाग अधिक जाता है एक समय ऊर्ध्व गति के विषय में उस के मंदपने की कल्पना से तीन

+ यहां कोई प्रश्न करे कि सूत्र में संख्यात भाग मात्र ही ग्रहण किया है और यह नियमित भाग कैसे बना सकते हो ? जितना क्षेत्र चमरेन्द्र नीची दिशामें एक समय में जाता है उतना क्षेत्र जाने को शक्रेन्द्र को दो समय लगता है वैसे ही शक्रेन्द्र का ऊर्ध्व गमन काल और चमरेन्द्र का अधो गमन काल तुल्य है इस से निश्चय होता है कि दो समय में जितना क्षेत्र शक्रेन्द्र नीचे आता है उतना क्षेत्र ऊपर एक समय में जाता है इस से अधो क्षेत्र दुगुना कहा और बीच का तीर्च्छा क्षेत्र देढ गुना कहा वैसे ही चूर्णिकाकार भी कहते हैं कि एगे समएणं तिरियं दिवड्ढं गच्छइ दुई दो ओयणाणि सकोपि ॥

अधो ति० तिर्च्छा ग० गति विषय क० कितना क० किस से अ० अल्प ब० बहुत तु० तुल्य वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा खे० क्षेत्र च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व उ जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा स० संख्यातवा भाग में अ० अधो स० संख्यातवा भाग में स० शक्र दे० देवेन्द्र

रियच्च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं, तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ, अहे संखेज्जेभागे गच्छइ । सक्के देविंदे देवराया उड्ढं

भाग ऊना तीन गाउ, इस प्रकार एकेक गाउ के तीन भाग करने से एक योजन के बारह और दो योजन के चौवीस भाग होते हैं इस से यहां विचारते हैं तीन भाग कम तीन गाउ तब आठ भाग रहे इतना एक समय में ऊंचे जावे, उस से तिर्च्छा उक्त आठ भाग से दुगुने करे इतना क्षेत्र अधिक जावे इतना तिर्च्छा गति का विषय शीघ्र कहा है उक्त दो विभाग कम छ गाऊ है उस में एक विभाग कम तीन गाऊ मीलाने से अर्थात् दो योजन पूर्ण होवे उतना अधिक अधो लोक में जावे अहो भगवन् ! वज्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति में ज्यादा, कमी, बराबर किस प्रकार कहा है ? अहो गौतम ! जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही वज्र का जानना वज्र सब से थोडा अधो गति में जावे, क्यों कि अधो गति में जाने में उन की गति की मंदता है तिर्च्छा विशेषाधिक जावे और ऊर्ध्व गति में विशेषाधिक जावे यहां

उ० ऊंचे उ० जावे ए० एक स० समय में त० उस को व० वज्र दो० दो से च० चपर ति० तीन से न० विशेष वि० विशेषाधिक का०कहना ॥ ३७ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० नीचे आनेका उ० ऊपर जानेका का० काल क० कितना क० किससे अ० अल्प गो० गौतम स० सर्व थोडा स० शक्र दे० देवेंद्र

उप्पयइ एक्केणं समएणं त वज्जे दोहिं, त चमरे तीहिं, वज्जं जहा सक्कस्स तहेव, नवर विसेसाहिय कायव्वं ॥ ३७ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उव्वयण-कालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ?

कल्पना से तीसरा भाग कम एक योजन अधोलोक में जावे उक्त आठ भाग में से एक गाऊ का तीन भाग करे ऐसे दो भाग अधिक तिर्च्छालोक में जाने से विशेषाधिक, ऊर्ध्व गति में एक योजन पूर्ण जावे इस से विशेषाधिक यहां कोई प्रश्न करे कि सामान्य से विशेषाधिकपना कहा है तब उस के नियमित भाग कैसे हो सकते हैं ? एक समय में जितना क्षेत्र चमरेन्द्र अधो गति में उल्लंघता है उतना क्षेत्र शक्रेन्द्र दो समय में उल्लंघता है और वज्र तीन समय में उल्लंघता है इस तरह शक्रेन्द्र की अधोगति की अपेक्षा से वज्र के तीन भाग कम अधोगति हुई शक्र का नीचे जानेका काल और वज्र का ऊंचा जाने का काल बराबर है इस से जाना जाता है कि जितने समय में शक्रेन्द्र नीचे जाता है उतने समय में वज्र ऊंचे जाता है ऊर्ध्व व अधोगति के बीच में तिर्च्छी गति है इन दोनों के बीच में तिर्च्छीगति रही हुई है इन दोनों के बीच में एक गाऊ के तीन भाग करे ऐसे दश भागवाला तिर्च्छीगति का प्रमाण कहा ॥३७॥

का उ० ऊर्ध्व उ० चढने का काल उ० उतरने का काल स० सख्यात गुणा च० चमर का ज० जैसे स० शक्र का ण० विशेष स० सर्व से थोडा उ० उतरने का काल उ० उपर जाने का स० सख्यात गणा व० वज्र की पु० पृच्छा गो० गौतम स० सर्व से थोडा उ० उपर जाने का उ० नीचे आने का वि० विशेषाधिक ॥ ३८ ॥ ए० इस व० वज्र का व० वज्र के अधिपति का च० चमर अ० असुरेंद्र का उ०

गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढ उप्पयण काले, उवयणकाले सखज्जगुणे, ॥ चमरस्सवि जहा सक्कस्स णवर सव्वत्थोवे उवयणकाले, उप्पयणकाले सखेज्जगुणे ॥ वज्जस्स पुच्छा गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, उवयणकाल विसेसाहिए, ॥ ३८ ॥ एयस्सण भते ! वज्जस्स वज्जाहिवइस्स, चमरस्सय, असुरिंदस्स

स्वामी	शक्र	वज्र	चमर
ऊर्ध्व	२४	१२	८
तिर्च्छी	१८	१०	१६
अधो	१२	८	२४

अब काल की अल्पाबहुत्व करते हैं अहो भगवन् ! शक्रेंद्र को नीचे उतरने के काल में, उचे चढने के काल में कोनसा अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ? अहो गोतम ! शक्रेंद्र को ऊचे जाने में सब से थोडा काल लगता है, क्यों की शक्र की ऊर्ध्व गति शीघ्र है इस से नीचे उतरने का काल सख्यात गुना चमरेंद्र को सब से थोडा नीचे उतरने का काल और उस से उपर जाने का काल सख्यात गुना वज्र को सब से थोडा काल ऊंचे जाने में लगता है उस से नीचे आने में विशेपाधिक काल लगता है ॥ ३८ ॥ अब

उ० ऊर्ध्व उ० जाने ए० एक स० समय में त० उस को व० वज्र दो० दो से च० चमर ति० तीन से न० विशेष वि० विशेषाधिक का०करना ॥ ३७ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० नीचे आनेका उ० उपर जानेका का० काल क० कितना क० किससे अ० अल्प गो० गौतम स० सर्व थोडा स० शक्र दे० देवेंद्र

उप्पयइ एक्केणं समएण तं वज्जे दोहिं, त चमरे तिहिं, वज्ज जहा सक्कस्स तहेव, नवरं विसेसाहिय कायव्वं ॥ ३७ ॥ सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उत्रयण-कालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ?

कल्पना से तीसरा भाग कम एक योजन अधोलोक में जावे उक्त आठ भाग में से एक गाऊ का तीन भाग करे ऐसे दो भाग अधिक तिर्च्छालोक में जाने से विशेषाधिक, ऊर्ध्व गति में एक योजन पूर्ण जावे इस से विशेषाधिक यहां कोई प्रश्न करे कि सामान्य से विशेषाधिकपना कहा है तब इस के नियमित भाग कैसे हो सकते हैं ? एक समय में जितना क्षेत्र चमरेन्द्र अधो गति में उल्लंघता है उतना क्षेत्र शक्रेन्द्र दो समय में उल्लंघता है और वज्र तीन समय में उल्लंघता है इस तरह शक्रेन्द्र की अधोगति की अपेक्षा से वज्र के तीन भाग कम अधोगति हुई शक्र का नीचे जानेका काल और वज्र का ऊंचा जाने का काल बराबर है इस से जाना जाता है कि जितने समय में शक्रेन्द्र नीचे जाता है उतने समय में वज्र ऊंचे जाता है ऊर्ध्व व अधोगति के बीच में तिर्च्छी गति है इन दोनों के बीच में तिर्च्छीगति रही हुई है इन दोनों के बीच में एक गाऊ के तीन भाग करे ऐसे दश भागवाला तिर्च्छीगति का प्रमाण कहा ॥३७॥

हणाया म० मनसकल्प चि० चिंताशोक सा० सागर में सं० प्रविष्ट क० करतल में प० रहा हुवा मु० मुख अ० आर्तध्यान उ० ध्याते भू० भूमि में दि० दृष्टि झि० ध्यानकरे ॥४०॥ त० तब त० उन च० चमर अ० असुरेंद्र को सा० सामानिक देव ओ० हणाया म० मनसकल्प जा० यावत् झि० ध्यानकरते पा० देखकर क० करतल जा० यावत व० बोले कि० क्या दे० देवानुप्रिय उ० हणाया म० मनसंकल्प जा० यावत् झि०

सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि उवहयमणसकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करयल पल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए, भूमिगयदिट्ठीए झियाइ ॥ ४० ॥ तएणं तं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसकप्पं जाव झियाइ-माणं पासइ पासइत्ता करयल जाव एवं वयासी किण्हं देवाणुप्पिया उवहयमणस-कप्पा जाव झियायह ॥ ४१ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया ते सामाणिय-

असुरेंद्र वज्र भयसे मुक्त हुवा, और शक्रेंद्र देवेंद्र से अपमान कराया हुवा, चमर चंचा राज्यधानी में सुधर्मा सभा में चमर नामक सिंहासन पर बैठा हुवा व मन का अभिमान हणाने से शोक सागर में डुबा हुवा गटस्थलपर हथेली रखकर व भूमि पर दृष्टि रखकर आर्तध्यान करने लगा ॥४०॥ तब चमर असुरेंद्र की परिषदा के सामानिक देवोंने चमरेन्द्रको ऐसा आर्तध्यान करता हुवा देखकर पूछा कि अहो देवानुप्रिय! आप क्यों ऐसा आर्तध्यान करते हो ? ॥४१॥ उस समय में चमर नामक असुरेंद्रने उन सामानिक परिषदा के

नीचे आने का उ० उपर जाने का क० कितना क० किस से अ० अल्प ॥ ३१ ॥ त० तब च० चमर भ० असुरेन्द्र व० वज्र का भ० भय से वि० मुक्त स० शक्र दे० देवेंद्र से ब० बहुत अ० अपमान से अ० अपमानित हुवा च० चमर चचा रा० रज्यधानी की स० सुधर्मा सभा में चं० चमर सी० सिंहासनपे उ०

असुररण्णो उवयणकालस्सय, उप्पयणकालस्सय, कयरे कयरहिंतो अप्पेवा ४, ? गोयमा ! सक्कस्सय उप्पयणकाले चमरस्सय उवयणकाले एसण दोण्हवि तुल्ले, सव्वत्थोवे सक्कस्सय उवयण काले, वज्जस्सय उप्पयणकाले एसण दोण्हवि तुल्ले संखेज्जगुणे, चमरस्सय उप्पयणकाले वज्जस्सय उवयणकाले एसणं दोण्हवि तुल्ले विसेसाहिए ॥ ३१ ॥ तएण से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के सक्केण देविंदेण देवरण्णो महया अवमाणेण अवमाणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए

तीनों की परस्पर अल्पाबहुत्व करते हैं अहो भगवन् ! वज्र, वज्राधिपति जो शक्र और चमर इन तीनों को उपर, नीचे जाने का काल में अल्प, बहुत तुल्य या विशेषाधिक यह किस प्रकार है ? अहो गौतम ! शक्र को उपर जाने का काल और चमर को नीचे जानेका काल परस्पर तुल्य व सब से थोडा, इस से शक्र का नीचे उतरने का और वज्र का उपर जाने का काल परस्पर तुल्य और संख्यात गुना इस से चमर का उपर जाने का और वज्र का नीचे आने का काल परस्पर तुल्य और विशेषाधिक ॥ ३१ ॥ अब चमर

मम तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण जाव नमसित्ता एव वयासी एव खलु भते ! मए तुब्भ नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए जाव त भद्दण भवतु देवाणुप्पियाण जस्सांमि पभावेण आकिट्ठे जाव विहरामि त खामेमि ण देवाणुप्पिया जाव उत्तरपुरच्छिम दिसीभाग अवक्कमइ अवक्कमइत्ता जाव बत्तीसइबद्ध नट्टविहिं उवदसेइ उवदसेइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए एव खलु गोयमा ! चमरेण असुरिंदेण असुररण्णो सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, ठिई सागरोवम, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अत काहिइ ॥४२॥ किं पत्तियण भते !

शोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शीला पटपर मेरी पास आया और मुझे वदना नमस्कार कर ऐसा कहा अहो भगवन् ! आपकी नेश्राय से मैं शक्र देवेन्द्र की आसातना करने को गया यावत् आपका कल्याण होवो कि आप के प्रसाद से मैं बाधा पीडा रहित फीरता हू इस से अहो देवानुप्रिय ! आप की मैं क्षमा चाहता हू यावत् ईशान कोन में गया और बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा में गया इस तरह अहो गौतम ! चमर असुरेन्द्र को ऐसी दीव्य देवर्द्धि प्राप्त हुई है स्थिति एक सागरोपम की है और महा विदेह सेत्र में उत्पन्न होवेगा यावत् सब दु,खों का अत करेगा ॥ ४२ ॥

ध्याते हो ॥ ८१ ॥ पूर्ववत् ॥ ८२ ॥ किं० किस प० प्रयोजन से भ० भगवत् अ० असुर कुमार देव उ०

पारिसोववण्णए देवे एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया मए समण भगवं महावीर नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए तएण तेण परिकुविएणं समाणेण मम वहाए वज्जे निसिट्ठे, त भद्दण भवतु देवाणुप्पिया समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्समि पभावेण अकिट्ठे अव्वाहिए अपरितावविए इह मागए, इह समोसढे, इह स-पत्ते, इहेव अज्ज उवसपज्जित्ताण विहरामि तं गच्छामोण देवाणुप्पिया समण भगव महावीर वदामो नमसामो जाव पज्जुवासामो तिकट्टु चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव सव्विड्ढीए जाव जेणेव असोगवर पायवे जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता

देवों को ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय ! मैंने श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की नेश्राय से शक्र देवेंद्र को भ्रष्ट करनेकी इच्छा की इससे उसने क्रोधित होकर मेरा वध करने को वज्र छोडा अहो देवानुप्रिय ! उन महावीर स्वामी का कल्याण होवो कि जिनके प्रभाव से मैं क्लिष्टता, बाधा, परितापना रहित यहांपर आया हुवा हूं, यहांपर समोसर्या हूं यावत् यहां पर प्रशान्त बना हुवा विचरता हूं इस से अपन श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीकी पास जावे और उन को वदना नमस्कार करे यावत् उनकी पर्युपासना करे. इस से चौसठ हजार सामानिक यावत् सब ऋद्धि सहित सुसुमार नगर के अशोक वन खंड में अ

मम तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण जाव नमसित्ता एव वयासी एव खलु भंते ! मए तुब्भ नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए जाव तं भद्दण भवतु देवाणुप्पियाण जस्सामि पभावेण आकिट्ठे जाव विहरामि त खामेमि ण देवाणुप्पिया जाव उत्तरपुरच्छिम दिसीभाग अवक्कमइ अवक्कमइत्ता जाव वत्तीसइबद्ध नट्टविहिं उवदसेइ उवदसेइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए एव खलु गोयमा ! चमरेण असुरिंदेण असुररण्णो सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, ठिई सागरोवम, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अत काहिइ ॥४२॥ किं पत्तियण भंते !

शोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शीला पटपर मेरी पास आया और मुझे वंदना नमस्कार कर ऐसा कहा अहो भगवन् ! आपकी नेश्राय से मैं शक्र देवेन्द्र की आसातना करने को गया यावत् आपका कल्याण होओ कि आप के प्रभाव से मैं बाधा पीडा रहित फीरता हूं इस से अहो देवानुप्रिय ! आप की मैं क्षमा चाहता हूं यावत् ईशान कोन में गया और बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा में गया इस तरह अहो गौतम ! चमर असुरेन्द्र को ऐसी दीव्य देवर्द्धि प्राप्त हुई है स्थिति एक सागरोपम की है और महा विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होवेगा यावत् सब दु,खों का अंत करेगा ॥ ४२ ॥

भद्रिक या० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसे व० बोले क० कितनी भ० भगवन् कि० क्रिया प० प्ररूपी म० मंडितपुत्र पं० पांच क्रिया प० प्ररूपी का० कायिकी अ० अधिकरणी की पा० प्रद्वेषिकी पा० पारितापनिकी पा० प्राणातिपात क्रिया ॥ १ ॥ का० कायिकी भ० भगवन् कि० क्रिया क० कितने

पज्जुवासमाणे एवं वयासी कइणं भंते किरियाओ पण्णत्ताओ ? मंडियपुत्ता ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया ॥ १ ॥ काइयाणं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता !

था वहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई उस समय में प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत श्री श्रमण भगवंत महावीरस्वामी का मंडितपुत्र नामक शिष्य पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्रियाओं कितनी कही हैं ? अहो मंडित पुत्र ! कर्म के हेतु रूप क्रिया के पांच भेद कहे हैं १ शरीर से होवे सो कायिकी क्रिया २ खड्ग शस्त्रादि अधिकरण से होवे सो अधिकरणिकी ३ मत्सरभाव से होवे सो प्रद्वेषिकी ४ अन्य को परितापना (दुःख) देने से होवे सो परितापनिकी और ५ प्राणों की घात करने से होवे सो प्राणातिपातिकी क्रिया ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कायिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? कायिकी क्रिया के दो भेद १ अनुपरत कायिकी क्रिया प्रत्याख्यान करके

प्रकार की मं० मंडितपुत्र दु० दोप्रकार की अ० अनुपरत कायक्रिया दु० दुःप्रयुक्त कायक्रिया ॥ १ ॥ अ० अधिकरणिकी भं० भगवन् कि० क्रिया क० कितने प्रकार की मं० मंडित पुत्र दु० दोप्रकार की स० संयोजन अधिकरण क्रिया नि० निवर्तन अधिकरण क्रिया ॥ २ ॥ पा० प्रद्वेषिकी भं० भगवन् कि० क्रिया क० कितने प्रकार की मं० मंडितपुत्र दु० दोप्रकार की जी० जीव प्रद्वेषिकी अ० अजीव प्रद्वेषिकी

दुविहा पण्णत्ता, तंजहा अणुवरयकाय किरियाय, दुप्पउत्तकाय किरियाय ॥ २ ॥ अहिगरणियाण भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संजोयणाहिगरण किरियाय, निव्वत्तणाहिगरण किरियाय ॥ ३ ॥ पाओसियाण भंते ! किरिया कइविहा प० ? मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तंजहा जीव पाओसियाय अजीव पाओसियाय ॥ ४ ॥ पारियावणियाण भंते ! किरिया कइ-

पाप से निवर्तना नहीं सो और दुःप्रयुक्त सो दुष्ट प्रयोग के सद्भाव से ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! अधिकरणिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? अहो मंडित पुत्र ! हल घर वगैरह में जो कोई यत्नादि न होवे उस का संयोग मीलाने से जो क्रिया लगे सो संयोयणाधिकरण क्रिया और खड्गादि नवीन उत्पन्न करना सो निवर्तनाधिकरण क्रिया ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! प्रद्वेषिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? अहो मंडितपुत्र ! जीव पर मत्सर भावरखे सो जीव प्रद्वेषिकी और अजीव पर मत्सर भाव रखे सो अजीव

भद्रिक जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसे व० बोले क० कितनी भ० भगवन् कि० क्रिया प० मरूपी मं० मंडितपुत्र प० पांच क्रिया प० मरूपी का० कायिकी अ० अधिकरणि की पा० प्रद्वेषिकी पा० पारितापनिकी पा० प्राणातिपात क्रिया ॥ १ ॥ का० कायिकी भ० भगवन् कि० क्रिया क० कितने

पज्जुवासमाणे एवं वयासी कइणं भंते किरियाओ पण्णत्ताओ ? मंडियपुत्ता ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया ॥ १ ॥ काइयाणं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता !

या यहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई उस समय में प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत श्री श्रमण भगवंत महावीरस्वामी का मंडितपुत्र नामक शिष्य पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्रियाओं कितनी कही हैं ? अहो मंडित पुत्र ! कर्म के हेतु रूप क्रिया के पांच भेद कहे हैं १ शरीर से होवे सो कायिकी क्रिया २ खड्ग शस्त्रादि अधिकरण से होवे सो अधिकरणिकी ३ मत्सरभाव से होवे सो प्रद्वेषिकी ४ अन्य को परितापना (दुःख) देने से होवे सो परितापनिकी और ५ प्राणों की घात करने से होवे सो प्राणातिपातिकी क्रिया ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कायिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? कायिकी क्रिया के दो भेद १ अनुपरत कायिकी क्रिया प्रत्याख्यान करके

कि० क्रिया ॥ ७ ॥ अ० है भ० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को कि० क्रिया क० करे इं० हां अ० है क० कैसे भ० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ कि० क्रिया क० करे मं० मंडितपुत्र प० प्रमाद प्रत्ययिक जो० योग निमित्त ॥ ८ ॥ जी० जीव भ० भगवन् स० सदैव ए० कम्पे वे० विशप कम्पे च० चले फ० थोडाकपे घ० सर्वदिशा में चले खु० क्षोभपावे उ० उदीरे त० उस उस भाव को प० परिण

पुव्विं किरिया पच्छा वेयणा णो पुव्विं वेयणा पच्छाकिरिया ॥७॥ अत्थिणं भंते समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ? हंता अत्थि कहिणं भंते! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ? मंडियपुत्ता! पमायपच्चया, जोगनिमित्तंच एवं खलु समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ॥८॥ जीवेणं भंते! सयासमियं एयइ, वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, खुब्भइ, उदीरेइ, तंतं

पीछे क्रिया होती है? अहो मण्डितपुत्र! पहिले कर्मबंध के कारण भूत क्रिया होती है फीर उन का उदय होने से वेदना होती है इस से पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है, परंतु पहिले वेदना और पीछे क्रिया नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! श्रमण निर्ग्रन्थ क्या क्रिया करते हैं? हां मण्डित पुत्र! श्रमण निर्ग्रन्थ क्रिया करते हैं अहो भगवन्! श्रमण निर्ग्रन्थ कैसे क्रिया करते हैं? अहो मण्डित पुत्र! प्रमाद प्रत्ययिक और योग निमित्त श्रमण निर्ग्रंथ क्रिया करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या चले, विशेष चले, एक स्थान से अन्य स्थान जावे, स्पर्श करे, क्षुब्ध होवे

॥ ४ ॥ पा० पारितापनिकी दु० दोप्रकार की स० अपने हस्त से प० दुसरे के हस्त मे ॥ ५ ॥ पा० प्राणातिपातिकी क्रिया दु० दोप्रकार की स० स्वहस्त प्राणातिपात क्रिया प० परहस्त प्राणातिपात क्रिया ॥ ६ ॥ पु० पहिली भ० भगवन् किं० क्रिया प० पीछे वे० वेदना पु० पहिली वे० वेदना प० पीछे कि० क्रिया म० मंडित पुत्र पु० पहिली क्रिया प० पीछे मं०वेदना णो० नहीं पु० पहिली वेदना प० पीछे

विहा प० ? मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तजहा सहत्थ पारियावणियाय, परहत्थ पारियावणियाय, ॥ ५ ॥ पाणाइवाय किरियाणं भंते ! पुच्छा मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तजहा सहत्थ पाणाइवायकिरिया परहत्थ पाणाइवाय किरियाय ॥ ६ ॥ पुव्विं भंते ! किरिया पच्छा वेयणा, पुव्विं वेयणा पच्छा किरिया ? मंडियपुत्ता !

प्रद्वेषिकी ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! परितापनिकी क्रिया के कितने भेद ? अहो मण्डित पुत्र ! परितापनिकी क्रिया के दो भेद ? स्वहस्त से स्वतः को तथा अन्य को परितापना उत्पन्न करे और २ पर हस्त से स्वतः को तथा अन्य को परितापना उत्पन्न करे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! प्राणातिपातिकी क्रिया के कितने भेद ? प्राणातिपातिकी क्रिया के दो भेद? स्वहस्त से स्वतः की तथा अन्य की घात करे सो और २ पर हस्त से स्वतः की तथा अन्य की घात करे ॥ ६ ॥ क्रिया से वेदना होती है इस से वेदना का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है अथवा पहिले वेदना होती है और

कि० क्रिया ॥ ७ ॥ अ० है भ० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को कि० क्रिया क० करे ह० हाँ अ० है क० कैसे भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ कि० क्रिया क० करे म० मंडितपुत्र म० प्रमाद प्रत्ययिक जो० योग निमित्त ॥ ८ ॥ जी० जीव भ० भगवन् स० सदैव ए० कम्पे वे० विशेष कम्पे च० चले फ० थोडाकंपे घ सर्वदिशा में चले खु० क्षोभपावे उ० उदीरे त० उस उस भाव को प० परिण

पुव्विं किरिया पच्छा वेयणा णो पुव्विं वेयणा पच्छाकिरिया ॥७॥ अत्थिणं भंते समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि कहिणं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? मंडियपुत्ता ! पमायपच्चया, जोगनिमित्तंच एवं खलु समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ॥८॥ जीवेणं भंते ! सयासमियं एयइ, वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, खुब्भइ, उदीरेइ, तंतं

पीछे क्रिया होती है ? अहो मण्डितपुत्र ! पहिले कर्मबंध के कारण भूत क्रिया होती है फीर उन का उदय होने से वेदना होती है इस से पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है परंतु पहिले वेदना और पीछे क्रिया नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्या क्रिया करते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्रिया करते हैं अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ कैसे क्रिया करते हैं ! अहो मण्डित पुत्र ! प्रमाद प्रत्ययिक और योग निमित्त श्रमण निर्ग्रंथ क्रिया करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या चले, विशेष चले, एक स्थान से अन्य स्थान जावे, स्पर्श करे, क्षुब्ध होवे

में ई० हां मं० मंडितपुत्र जी० जीव स० सदैव ए० कंपे जा० यावत् प० परिणमे ॥ १ ॥ जा० जितना भ० भगवन् जी०जीव स०सदैव जा०यावत् प०परिणमता ता० उतना त० उस जीव की अ० अंत में अं० अंक्रिया भ० होवे णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भ० भगवन् म० मंडितपुत्र जा० जितना से० वह जी० जीव स० सदैव जा० यावत् प० परिणमे ता० उतना से० वह जी० जीव आ० आरंभ करे सा० सारंभ कर स० समारंभ करे आ० आरंभ में व० वर्ते सा० सारंभ में व० वर्ते

भाव परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता ! जीवेणं सयासमियं एयइ जाव तंतं भावं परिणमइ ॥ १ ॥ जावंचणं भंते ! से जीवे सयासमियं जाव परिणमइ तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, जावंचणं से जीवे सयासमियं जाव अंते अंतकिरिया न भवइ ? मंडियपुत्ता ! जावंचणं से जीवे सयासमियं जाव परिणमइ तावंचणं से जीवे आरंभइ, सारंभइ, समा-

उदीरे वगैरह पूर्वोक्त भावों में परिणमे ? हां मण्डित पुत्र ! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त चलता है यावत् पूर्वोक्त भावों में परिणमता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जहां लग सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त चलता है यावत् पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहां लग क्या उन को अंत क्रिया होती है ? यह अर्थ योग्य नहीं है किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो मण्डित पुत्र ! जहां लग सयोगी जीव

स० समारंभ में व० वर्ते आ० आरम करता सा० सारम करता स० समारम्भ करता आ० आरम में सा० सारम में स० समारभ में व० वर्तता ब० बहुत पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व के दु ख देने से सो० शोचकराने से जू० जूरणा कराने से ति० आक्रंद कराने से पि० मारने से प० परितापना उपजाने से व० वर्ते से० वह ते० इसलिये मं० मंडित पुत्र ॥ १० ॥ से० वह ज० जैसे के० कोई

रमइ, आरभे वट्टइ, सारभेवट्टइ, समारभेवट्टइ, आरभमाणे, सारभमाणे, समारभमाणे, आरभेवट्टमाणे, सारभेवट्टमाणे, सामारभेवट्टमाणे, बहूण पाणाण, भूयाण, जीवाण, सत्ताण दुक्खावणताए, सोयावणताए, जूरावणताए, तिप्पावणताए, पिट्टावणताए, परियावणताए वट्टइ से तेणट्ठेण मडियपुत्ता ! एव वुच्चइ, जावचण से जीवे सयासमिय एयइ जाव परिणमइ, तावचण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया न भवइ ॥ १० ॥

सदैव चलता है यावत् उन पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहां लग वह जीवों का आरंभ, सारम व समारंभ करता है, आरभ, सारम व समारभ में वर्तता है इस तरह आरंभ, सारभ व समारभ करता हुवा यावत् उन में प्रवर्तता हुवा प्राण, भूत, जीव व सत्वोंको दुःख, शोक, झुरणा, वेदना, पिटना व परितापना करने में प्रवर्तता है इस से अहो मण्डित पुत्र ! ऐसा कहा गया है कि सयोगी जीव जहां लग चलता है यावत् उन पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहांलग उन को अत क्रिया नहीं होती है ॥ १० ॥ अहो

पुरुष सु० सुका तु० तृण कापूला जा० अग्नि में प० डाले से० वह म० महितपुत्र सु०० शुष्क त० तृणका पुला आ० अग्नि में प० डालते खि० शीघ्र म० जल जावे ह० हा म० जल जाव, ज० जैसे के० कोई पुरुष त० तप्त अ० लोहके गोलेपे उ० पानी का बिंदु प० डाले से० वह मं० मंडितपुत्र उ० पानी का बिन्दु त०

जीवेण भंते ! सयासमिय णो एयइ जाव णो तत भाव परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता ! जीवेण सयासमिय जाव णो परिणमइ जावचण भंते ! से जीवे नो एयइ जाव नो तत भाव परिणमइ, तावचण तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? हंता जाव भवइ ॥ से केणट्ठेण जाव भवइ ? मंडियपुत्ता ! जावचण च से जीवे सयासमिय णोएयइ जाव परिणमइ, तावचण से जीवे णो आरभइ, णोसारभइ, णोसमारभइ, णो आरंभेवट्टइ, णो सारंभेवट्टइ णो समारंभेवट्टइ, अणारंभमाणे, असारंभमाणे,

भगवन् ! अयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या नहीं चलते हैं यावत् उक्त भावों में नहीं परिणमते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! वे अयोगी जीव नहीं चलते हैं यावत् पूर्वोक्त भावों में नहीं परिणमते हैं अहो भगवन् ! जहांलग वे जीवों नहीं चलते हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग उन को क्या अंत क्रिया होती है ? हां मण्डित पुत्र ! उन को अंत क्रिया होती है किस तरह उन को अंत क्रिया होती है ? अहो मण्डित पुत्र ! जहांलग वे जीव चलते नहीं हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग वे आरंभ, सारंभ

तप्त अ० लोहे के कडे पे प० डाला हुवा खि० शीघ्र वि० नाशपावे हं० हां वि० विनाश पावे ज० जैसे ह० द्रह पु० पूर्ण पु० पूर्ण प्रमाण वो० उछलता वो० उल्लास पामता स० भरा हुवा चि० होवे अ० अब के० कोइ पुरुष त० उस ह० द्रह में ए० एक बडा ना० नाव स० शतछिद्रवाली ओ० रखे मं० मंडितपुत्र सा०

असमारभमाणे, आरभ अवट्टमाणे, सारभे अवट्टमाणे, समारभे अवट्टमाणे वहुण पाणा-ण भूयाण जीवाण सत्ताण अदुक्खावणत्ताए, जाव अपरियावणत्ताए वट्टइ, से जहा नामए केइपुरिसे सुक्कतणहत्थय जायतेयसि पक्खिवेज्जा, सेणूण मंडियपुत्ता! से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसा विज्जइ ? हता मसमसा विज्जइ ॥ सेजहा नामए केइपुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा ? सेनूण मंडियपुत्ता ! से उदयबिन्दु तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव

व समारंभ नहीं करते हैं यावत् उन में नहीं परिणमते हैं इस तरह आरभ, सारभ व समारभ नहीं करने वाला यावत् उस में नहीं प्रवर्तनेवाला प्राण, भूत, जीव व सत्वों को दुःख यावत् परितापना नहीं करता है परन्तु योग निरुंधन रूप शुक्ल ध्यान से सकल कर्म भस्म रूप अंत क्रिया करता है उस के उपर तीन दृष्टांत कहते हैं १ जैसे सूखा हुवा घास अग्नि में डालने से क्या भस्म होता है ! हां भगवन् ! वह भस्म होता है. अहो मण्डित पुत्र ! तप्त कडे पर पानी का बिन्दु पडने से क्या वह शीघ्र नष्ट होता है ? हां भग-

पुरुष पु० मुका तु० तृण कापूला जा० अग्नि में प० डाले से० वह म० मंडितपुत्र सु०० शुष्क त० तृणका पुल्ला आ० अग्नि में प० डालते खि० शीघ्र म० जल जावे ह० हां म० जल जावे ज० जैसे के० कोई पुरुष त० तप्त अ० लोहके गोले प उ० पानी का बिंदु प० डाले से० यह मं० मंडितपुत्र उ० पानी का बिन्दु त०

जीवेणं भंते। सयासमियं णो एयइ जाव णो तंतं भावं परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता!

जीवेण सयासमियं जाव णो परिणमइ जावंचणं भंते। से जीवे नो एयइ जाव नो तंतं भावं परिणमइ, तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? हंता जाव भवइ॥ से केणट्ठेणं जाव भवइ ? मंडियपुत्ता! जावंचणं च से जीवे सयासमियं णोएयइ जाव परिणमइ, तावंचणं से जीवे णो आरंभइ, णोसारंभइ, णोसमारंभइ, णो आरंभेवट्टइ, णो सारंभेवट्टइ णो समारंभेवट्टइ, अणारंभमाणे, असारंभमाणे,

भगवन्! अयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या नहीं चलते हैं यावत् उक्त भावों में नहीं परिणमते हैं ? हां मण्डित पुत्र! वे अयोगी जीव नहीं चलते हैं यावत् पूर्वोक्त भावों में नहीं परिणमते हैं अहो भगवन्! जहांलग वे जीवों नहीं चलते हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग उन को क्या अंत क्रिया होती है ? हां मण्डित पुत्र! उन को अंत क्रिया होती है किस तरह उन को अंत क्रिया होती है ? अहो मण्डित पुत्र! जहांलग वे जीव चलते नहीं हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग वे आरंभ, सारंभ

पानी में उ० नीकालते खि० शीघ्र उ० उपर उ० आवे हं० हा उ० आवे ए० ऐसे म० मंडितपुत्र अ० अत्मा से संवृत अ० अनगार इ० ईर्या समिति वाले जा० यावत् ब० गुप्तब्रह्मचारी आ० उपयोग पूर्वक ग० जाते चि० खडा रहते नि० बैठते तु० सोते व० वस्त्र प० पात्र क० कंबल पा० रजोहरण गे० ग्रहण करते नि० रखते जा० यावत् च० चक्षु पक्ष नि० निपात वे० वेमात्रा सु० सूक्ष्म इ० ईर्या पथिक क्रिया क० करे सा० वह प० प्रथम समय में ब० बंधी पु० स्पर्शी बि० दूसरा समय में वे० वेदी त०

अत्तचा संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स जाव बंभगुत्तयारिस्स आउत्त गच्छ-माणस्स, चिट्ठमाणस्स निसियमाणस्स, तुयट्टमाणस्स, आउत्त वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुछण गेण्हमाणस्स निक्खेवमाणस्स जाव चक्खुपम्ह निवायमवि वेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ, सा पढमसमय बद्धा पुट्ठा, बितिय समय वेइया, तइय समय निज्जरिया सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेदिया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्म-

साफ करनो क्या वह नावा शीघ्र पानीपर आती है ? हां भगवन् खाली नावा पानीपर आती है वैसही अहो मंडित पुत्र ! आत्मा को संवरने वाले, ईर्यासमिति यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य पालने वाले, यत्ना पूर्वक चलने वाले, खडे रहने वाले, बैठने वाले, सोने वाले, वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण ग्रहण करने वालेव, रखने वाले अनगार को उन्मेष निमेष मात्र ईर्या पथिक क्रिया लगती है उसक्रिया का प्रथम समयमें बंध होता है

वह नाव उ० उस आ० आश्रव द्वार से आ० भरी हुई पु० पूर्ण वो० उछलती वो० उल्लास पामती स० भरी हुई चि० रहे ह० हां चि० रहे के० कोई पुरुष ता० उस नाव को स० सब बाजु आ० आश्रव द्वार पि० ढांक कर ना० नाव का ऊ० बरतन से उ० पानी उ० नीकाले सा० वह ना० नाव त० उस उ०

विद्धंसमागच्छइ ? हता विद्धसमागच्छइ ॥ से जहा नामए हरएसिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठइ, अहेण केइपुरिसे तसि हरयसि एगमह णाव सयायसयच्छिद्द उग्गहेज्जा ? सेनूण मडियपुत्ता । सा नावा तिहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठइ ? हता चिट्ठइ ॥ अहेण केइपुरिसे तीसे नावाए सव्वओ समंता आसवदाराइ पिहेइ २ त्ता नावा उस्सिचणएण उदय उस्सिचेज्जा ? सेणूण मडियपुत्ता । सा नावा तसि उदयसि उस्सित्तंसि समाणसि खिप्पामेव उड्ढ उदाइ ? हता उदाइ, एवामेव मडिय पुत्ता !

वन्द ! यह बिन्दु शीघ्र नष्ट होता है और जैसे बहुत परिपूर्ण घट समान एक द्रह है पानी बाहिर नीकल रहा है ऐसा वह भराहुवा है अब कोई पुरुष छिद्रवाली नावा इस मे डाले तो छिद्रसे नावा में पानी आने ? क्या वह नावा पानी के तल में जाकर बैठती है ? हां वह नावा छिद्रों से पानी भर जाने मे तलेपर जाकर बैठती है यदि कोई पुरुष उस के छिद्रों बंधकर के उस में रहा हुवा पानी नीकालकर

पानी में उ० नीकालते खि० शीघ्र उ० उपर उ० आवे हं० हां उ० आवे ए० ऐसे म० मंडितपुत्र अ० अत्मा से संवृत अ० अनगार इ० ईर्या समिति वाले जा० यावत् ग० गुप्तब्रह्मचारी आ० उपयोग पूर्वक ग० जाते चि० खडा रहते नि० बैठते तु० सोते व० वस्त्र प० पात्र क० कम्बल पा० रजोहरण गे० ग्रहण करते नि० रखते जा० यावत् च० चक्षु पक्ष नि० निपात वे० वेमात्रा सु० सूक्ष्म इ० ईर्या पथिक क्रिया क० करे सा० वह प० प्रथम समय मे ब० बंधी पु० स्पर्शी बि० दूसरा समय मे वे० वेदी त०

अवत्ता संवुडस्स अणगारस्स इरियासामियस्स जाव बमगुत्तयारिस्स आउत्त गच्छ-माणस्स, चिट्ठमाणस्स निसियमाणस्स, तुयट्टमाणस्स, आउत्त वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुछण गेण्हमाणस्स निक्खेवमाणस्स जाव चक्खुपम्ह निवायमवि वेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ, सा पढमसमय बद्धा पुट्ठा, बितिय समय वेइया, तइय समय निज्जरिया, सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेदिया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्म-

साफ करनो क्या वह नावा शीघ्र पानीपर आती है ? हां भगवन्! खाली नावा पानीपर आती है वैसही अहो मंडित पुत्र ! आत्मा को संवरने वाले, ईर्यासमिति यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य पालने वाले, यत्ना पूर्वक चलने वाले, खडे रहने वाले, बैठने वाले, सोने वाले, वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण ग्रहण करने वालेव, रखने वाले अनगार को उन्मेष निमेष मात्र ईर्या पथिक क्रिया लगती है उसक्रिया का प्रथम समयमें बंध होता है

वे० वेदी नि० निर्जरी से० आगा तीसरा समय नि० निर्जरी सा० वह य० बन्धी पु० स्पर्शी उ० उदीरी मिक काल में अ० अकर्म म० होवे से० वह त० इसलिये ॥ ११ ॥ प प्रमत्त संयति भ० भगवन् प० प्रमत्त संयम में व० वर्तता स० सर्व प० प्रमत्त अ० काल से के० कितना हो० होवे म० मंडितपुत्र ए० एक जीव प० आश्री ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट दे० देशऊणा पु० पूर्वक्रोड णा० विविध जीव प० आश्री स० सर्व काल ॥ १२ ॥ अ० अप्रमत्त संयति भ० भगवन् अ० अप्रमत्त स० संयम में व०

ताव भवइ । से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चइ जाव चणं से जीवे सयासमियं नो एयइ जाव अंते अंतकिरिया ॥ ११ ॥ पमत्त संजयस्सणं भंते ! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वावियणं पमत्तद्धाकालओ केवचिरं होइ ? मंडिया ! एग जीवं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२ ॥

दूसरे समय में वेदना होती है और तीसरे समय में निर्जरा होती है. इस तरह बंध, स्पर्श, उदीरणा, वेदना, व निर्जरा होने से अनागत काल में कर्म रहित जीव होता है इस से अहो मंडित पुत्र ? अयोगी जीव नहीं चलता है यावत् उन का अंतक्रिया होती है ऐसा कहा है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रमत्त संयत गुण स्थान में रहने वाला प्रमत्त संयतीकी सब काल आश्रित कितनी स्थिति है ? अहो मंडित पुत्र ? एक जीव आश्रित जघन्य एक समय उत्कृष्ट देशऊणी क्रोडपूर्व और बहुत जीव आश्री सदा काल रहते हैं क्यों कि इस का विरह नहीं होता है वे सदा विदेह क्षेत्र में सदैव रहते हैं. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! अप्रमत्त संयम

वर्तता अ० अप्रमत्त काल से के० कितना हो० होवे म० मंडित ए० एक जीव प० आश्री ज० जघन्य अ० अतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट पु० पूर्वक्रोड दे० देशऊणा णा० विविध जीव प० आश्री स० सर्व काल ॥ १३ ॥ भ० भगवान् मं० मंडितपुत्र अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को न० नमस्कार कर स० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ १४ ॥ भं० भगवान् गो० गौतम स०

अप्पमत्त संजयस्सणं भते ! अप्पमत्त सजमे वट्टमाणस्स सव्वावियणं अप्पमत्तद्धाकालओ केवचिर होइ ? मडिया ! एग जीव पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पुव्वकोडी- देसूणा णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं ॥ १३ ॥ सेवं भते, भतेत्ति भयव मडियपुत्ते अणगारे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, नमसइत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ १४ ॥ भतेत्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नम-

में रहनेवाला अप्रमत्त संयमि सब काल आश्री कितने काल तक रहता है ? अहो मण्डितपुत्र ! एक जीव आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट देश ऊना पूर्व क्रोड, क्यों कि अप्रमत्त अवस्था में रहनेवाला जीव अंतर्मुहूर्त से पहिले काल नहीं करता है और आठ वर्ष कम क्रोड पूर्व सो केवल ज्ञान आश्री जानना बहुत जीव आश्री निरंतर सब काल जानना क्योंकि अप्रमत्त संयति सदैव पाते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! आप के वचन तथ्य हैं ऐसा कहकर श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार कर मण्डित

तीसरा समय नि० निर्जरी मा० वह ब० बंधी पु० स्पर्शी उ० उदीरी वे० वेदी नि० निर्जरी से० आगा
मिक काल में अ० अकर्म म० होवे से० वह त० इसलिये ॥ ११ ॥ प० प्रमत्त सयति भ० भगवन् प०
ममत्त मयम में व० वर्तता स० सर्व प० ममत्त अ० काल से के० कितना हो० होवे म० मंडितपुत्र ए० एक
जीव प० आश्री ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट दे० देशऊणा पु० पूर्वक्रोड णा० विविध जीव
प० आश्री स० सर्व काल ॥ १२ ॥ अ० अप्रमत्त सयति भ० भगवन् अ० अप्रमत्त स० सयम में व०

चाि भवइ । से तेणट्ठेण मडियपुत्ता ! एवं वुच्चइ जाव चण से जीवे सयासमिय
नो एयइ जाव अते अतकिरिया ॥ ११ ॥ पमत्त सजयस्सण भते ! पमत्तसजमे वट्टमा-
णस्स सव्वावियण पमत्तद्धाकालओ केवचिर होइ ? मडिया ! एग जीव पडुच्च जह-
ण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ णाणाजीव पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२ ॥

दूसरे समय में वेदना होती है और तीसरे समय में नीर्जरा होती है इस तरह बंध, स्पर्श, उदीरणा, वेदना, व
निर्जरा होने से अनागत काल में कर्म रहित जीव होता है इस से अहो मंडित पुत्र ? अयोगी जीव नहीं
चलता है यावत् उन को अंतक्रिया होती है ऐसा कहा है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रमत्त संयत गुण
स्थान में रहने वाला प्रमत्त संयतीको सब काल आश्रित कितनी स्थिति है ? अहो मंडित पुत्र ? एक जीव
आश्रित जघन्य एक समय उत्कृष्ट देशऊणी क्रोडपूर्व और बहुत जीव आश्री सदा काल रहते हैं क्यों कि
इस का विरह नहीं होता है वे महा विदेह क्षेत्र में सदैव रहते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन ! अप्रमत्त संयम

लोकस्थिति लो० लोकानुभाव ॥ १ ॥ ३ ॥

अ० अनगार भ० भगवन् भा० भावितात्मा दे० देव को वे० वैक्रय स० समुद्घात से स० नीकालता जा० यानरूप से जा० जाते को जा०जाने पा० देखे गो० गौतम अ०कितनेक दे० देवको पा० देखे नो० नहीं जा० यान को पा० देखे अ० कितनक नो० नहीं दे० देवको नो० नहीं जा० यान को पा० देखे

रिया सम्मत्ता ॥ तइयसयस्स तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ३ ॥ * ॥

अणगारेणं भंते भावियप्पा देव वेउव्विय समुग्घाएण समोहय जाणरूवेण जाय-माण जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देव पासइ नो जाण पासइ, अत्थेगइएण जाण पासइ नो देव पासइ, अत्थेगइए देवंपि जाणंपि पासइ, अत्थे-

जानना अहो भगवन् ! आप जो कहते हैं वह सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे यह क्रिया का अधिकार संपूर्ण हुवा यह तीसरे शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ३ ॥

तीसरे उद्देशे में क्रिया का अधिकार कहा वह ज्ञानवंत को प्रत्यक्ष होती है सो बताते हैं श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके विमानादि रूप बना कर जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानते हैं और दर्शन से देखते हैं ? यहां पर अवधिज्ञान की विचित्रता से चौभंगी जानना १ कितनेक देव को देखते हैं परंतु विमान को नहीं देखते हैं २ कितनक विमान को देखते हैं परंतु देव को नहीं देखते हैं ३ कितनेक देव व विमान दोनों

श्रमण भगवंते म० महावीर को न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले क० कैसे भं० भगवन् ल० लवण समुद्र चा० चतुर्दशी उ० अमावास्या पु० पूर्णिमा को अ० अपेक्षा से व० वृद्धिपावे हा० हानिपावे ज० जैसे जी० जीवा भिगम में ल० लवण समुद्र की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् लो०

सइ, नमसइत्ता एवं वयासी-कम्हाण भंते ! लवणसमुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ पुण्णमासिणीसु अइरेग वड्ढइवा हायइवा ? जहा जीवाभिगमे लवण समुद्द वत्तव्वया नेयव्वा ॥ जाव लोयट्ठिइ । लोयाणुभावे ॥१४॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ कि-

पुत्र संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ १४ ॥ भगवान् गौतम श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अन्य तिथी की अपेक्षासे चतुर्दशी अमावास्या व पूर्णिमाको लवण समुद्र में पानी क्यों अधिक बढता है व क्षीण होता है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की चारों दिशी में चार महा पाताल कलश एक २ लक्ष योजन के ऊंडे कहे हैं उनको तीन २ कांड है उन चारों कलश की बीच में एक २ हजार योजन के छोटे कलश की ९ लटों कही है उन को भी तीन २ काण्ड हैं उन के नीचे के काण्ड में वायु है, बीच के काण्ड में वायु और हवा है व उपर के काण्ड में पानी है नीचे के काण्ड का वायु गुंजायमान होने से सोलह हजार योजन की दगमाले पर दो कोश पानी बढता है इस से इन तिथियों में पानी भमरता है वगैरह अधिकार जीवाभिगम सूत्र से

लोकास्थिति लो० लोकानुभाव ॥ ३ ॥ ३ ॥

अ० अनगार भ० भगवन् भा० भावितात्मा दे० देव को वे० वैक्रय स० समुद्घात से स० नीकालता जा० यानरूप से जा० जाते को जा०जाने पा० देखे गो० गौतम अ०कितनेक दे० देवको पा० देखे नो० नहीं जा० यान को पा० देखे अ० कितनक नो० नहीं दे० देवको नो० नहीं जा० यान को पा० देखे

रिया सम्मत्ता ॥ तइयसयस्स तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ३ ॥ * ॥

अणगारेण भंते भावियप्पा देवं वेउव्विय समुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जाय-माणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं पासइ नो जाणं पासइ, अत्थेगइएणं जाणं पासइ नो देवं पासइ, अत्थेगइए देवंपि जाणंपि पासइ, अत्थे-

जानना अहो भगवन् ! आप जो कहते हैं वह सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे यह क्रिया का अधिकार संपूर्ण हुवा यह तीसरे शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ३ ॥

तीसरे उद्देशे में क्रिया का आधिकार कहा वह ज्ञानवंत को प्रत्यक्ष होती है सो बताते हैं श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके विमानादि रूप बना कर जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानते हैं और दर्शन से देखते हैं ? यहां पर अवधिज्ञान की विचित्रता से चौभंगी जानना १ कितनेक देव को देखते हैं परंतु विमान को नहीं देखते हैं २ कितनेक विमान को देखते हैं परंतु देव को नहीं देखते हैं ३ कितनेक देव व विमान दोनों

॥ १ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा दे० देवी को वि० वैक्रेय स० समुद्घात से स० किया हुवा यानरूप से जा० जाती जा० जान पा० देखे गो० गौतम ए० ऐसे ही ॥ २ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा रु० वृक्ष की अं० अन्दर पा० देखे बा० बाहिर पा० देखे

गइए नो देव पासइ नो जाणं पासइ ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा देविं विउव्विय समुग्घाएण समोहिय जाणरूवेण जायमाणिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! एव चेव ॥ २ ॥ अणगारेण भंते ! भावियप्पा देव सदेवीय विउव्विय समुग्घाएणं समोहय जाणरूवेण जायमाण जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देव सदेवीय पासइ, नो जाण पासइ, एएण अभिलावेण चत्तारिभंगा ॥ ३ ॥ अणगारेण भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ बाहिं पासइ चउभंगो, ॥ एव किं मूल पासइ,

को देखते हैं और ४ कितनेक देव व विमान दोनों को नहीं देखते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके यानरूप जाती हुई देवी को क्या भावितात्मा अनगार ज्ञान से जानते हैं व दर्शन से देखते हैं ? अहो गौतम ! देव जैसे यहां पर चौभंगी जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके यान रूप से देवी सहित जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानता है व दर्शन से देखता है ? अहो गौतम ! देव जैसे इस के भी चार भांगे जानना ॥ ३ ॥

च० चारभांगे ए० ऐसे किं० क्या मू० मूल को पा० देखे कं० कंदको पा० देखे च० चारभांगे पु० मूल को पा० देखे खं० स्कन्ध को पा० देखे च० चारभांगे ए० ऐसे मू० मूल से बी० बीज को स० जोडना कं० कंद से स० सम्यक् स० जोडना जा० यावत् बी० बीज को ए० ऐसे पु० पुष्प से बी० बीज को स०

कंदं पासइ चउभंगो, मूलं पासइ खंधं पासइ चउभंगो, एवं मूलेणं बीजं संजोएयव्वं एवं कंदेणवि समं संजोएयव्वं जाव बीयं। एवं जाव पुप्फेणं समं बीयं संजोएयव्वं

अहो भगवन्! भावितात्मा अनगार अवधिज्ञानादि लब्धि ने क्या वृक्षको अंदरसे देखे या बाहिरसे? अहो गौतम! अवधि ज्ञान की विचित्रता से इसके चार भांगे होते हैं १ कितनेक वृक्ष को अंदर से देखते हैं और बाहिर से नहीं देखते हैं २ कितनेक बाहिर से देखे परंतु अंदर से नहीं देखे ३ कितनेक अंदर से व बाहिर से देखे और ४ कितनेक अंदर से व बाहिर से नहीं देखे ऐसे ही मूल और कंद के चार भांगे, मूल और स्कंध के चार भांग, मूल और बीज के चार भांगे जानना वैसे ही कंद और स्कंध, कंद और बीज, ऐसे ही पुष्प और बीज का जानना ॥ ४ ॥ १ मूल २ कन्द ३ स्कन्ध ४ त्वचा ५ शाखा ६ प्रवाल ७ पत्र ८ पुष्प ९ फल और १० बीज यह दश प्रकार की वनस्पति कही है इन की द्विसंयोगी ४५ चौभंगी होती हैं १ मूल और कंद २ मूल स्कंध ३ मूल त्वचा ४ मूल शाखा ५ मूल प्रवाल ६ मूल पत्र ७ मूल पुष्प ८ मूल फल और ९ मूल बीज ये नव भांगे मूल के साथ वैसे ही कंद के

जोडना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० घूसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शीबिका स० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

॥ ४ ॥ अणगारेण भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, घुसरे का, हस्ती की अंबारीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ' यह अर्थ

म० बडा प० पताका का स० सस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० बडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को ह० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएण विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियरूवं वि-कुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूण भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठिय रूवं विउव्वित्ता अणे-गाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए ग-च्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

योग्य नहीं है वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का सस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है अहो भगवन् ! वह क्या स्वत की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वत की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है ऐसे ही स्वत के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वत. के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

जोडना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० घूसरा गि० अवाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शीबिका स० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

॥ ४ ॥ अणगारेण भते भावियप्पा रुक्खस्स किं फल पासइ बीय पासइ चउभगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूण भते ! वाउकाएण एग मह इत्थिरूववा, पुरिसरूववा, हत्थि रूववा जाणरूववा, एव जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसदमाणियरूववा विउव्वित्तए ?

८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभगी बताते हैं अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुसरे का, हस्ती की अंबारीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैल्गाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

म० बडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ५ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायु काय प० एक म० बडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को ह० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएण विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियरूवं विकुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूण भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

योग्य नहीं है वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है अहो भगवन् ! वह क्या स्वत की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वत की ऋद्धि से जा सकती है परतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वत. के प्रयोग से जा सकती है परतु अन्य के प्रयोग से नहीं

जोडना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ०-स्त्रीरूप पु० पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० धूसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शीविका स० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यहअर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

॥ ४ ॥ अणगारेण भते भावियप्पा रुक्खस्स किं फल पासइ बीय पासइ चउभगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूण भते ! वाउकाएण एग मह इत्थिरूववा, पुरिसरूववा, हत्थि रूववा जाणरूववा, एव जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसदमाणियरूववा विउव्वित्तए ?

८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इन में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिविका का, बैल्गाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

म० वडा प० पताका का स० सस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० वडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को इ० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएण विकुव्वमाणा एग मह पडागा सठियरूव वि-कुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूण भते ! वाउकाए एग मह पडागासठिय रूव विउव्वित्ता अणे-गाइ जोयणाइ गमित्तए ? हता पभू । से भते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए ग-च्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एव चेव

योग्य नहीं है वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का सस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप सठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है अहो भगवन् ! वह क्या स्वत की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वत की ऋद्धि से जा सकती है परतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वत. के प्रयोग से जा सकती है परतु अन्य के प्रयोग से नहीं

जोडना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० महा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह०हस्तीरूप जा०यानरूप जु०घूसरा गि०अंबाडी थि०ऊंटकी पिल्लिका सी०शीबिका स०रथरूप वि०विकुर्वणा करने को गो०गौतम नो०नहीं इ०यहअर्थ स०समर्थ वा०वायुकाय वि०विकुर्वणा करते ए०एक

॥ ४ ॥ अणगारेण भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो

॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूववा, पुरिसरूववा, हत्थिरूववा जाणरूववा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूववा विउव्वित्तए ?

८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, घुसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

म० बडा प० पताका का स० सस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ८ ॥ प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० बडा प० पताका रूप की वि० विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग० जाने को इ० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा सठियरूवं वि- कुव्वइ ॥ ९ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागारा ठियं रूवं विउव्वित्ता अणे- गाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए ग- च्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

योग्य नहीं है वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का सस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप सठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परन्तु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

|| ४ || अणगारेण भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो
|| ५ || * || पभूणं भंते ! वाउकाएण एगं महं इत्थिरूववा, पुरिसरूववा, हत्थि रूववा जाणरूववा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसदमाणियरूववा विउव्वित्तए ?

जोड़ना || ४ || पूर्ववत् || ५ || प० समर्थ भ० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बड़ा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० घूसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शीबिका स० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

८ भंगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती है इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं || ५ || अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

वा० वायुकाय प० पताका गो० गौतम वा० वायुकाय से० वह नो० नहीं मा० वह प० पताका ॥ ८ ॥ प० समर्थ व० मेघ ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् सं० रथरूप प० परिणमाने को

से नो खलु सा पडागा ॥ ८ ॥ पभूण भते ! वलाहगे एगमह इत्थिरूववा जाव सद-माणियरूववा परिणामेत्तए ? हता पभू ॥ १२ ॥ पभूण भते ! वलाहए एग मह इत्थिरूव परिणामेत्ता अणेगाइ जोयणाइ गमित्तए ? हता पभू । से भते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? णो आयड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ एव णो आयकम्मुणा, परकम्मुण्णा नो आयप्पओगेण, परप्पओगेण, ऊसितोदयवा गच्छइ, पयोदयवा गच्छइ, । से भते किं वलाहए इत्थी ? गोयमा ! वलाहएण से णो खलु सा इत्थी। एव

उसे वायुकाया कहना परतु पताका नहीं कहना ॥ ८ ॥ अहो गोतम ! क्या मेघ एक बडा स्त्री का रूप यावत् शिविका का रूप परिणमाने में समर्थ है ? अथवा अनेक योजन तक जाने को समर्थ है ? हां भगवन् ! वह स्त्री यावत् शिबिकारूप बनाने का समर्थ है वह क्या स्वत' की ऋद्धि से या अन्य का ऋद्धि से जासकते हैं ? अहो गौतम ! वह मेघ अजीव होने से स्वत' की शक्ति से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य की शक्ति से जासकते हैं वैसे ही स्वत के कर्म से नहीं जासकते है परंतु अन्य के कर्मों से जा सकते हैं, स्वत के प्रयोग से नहीं जासकते हैं परतु अन्य के प्रयोग से जाते हैं अहो भगवन् !

ए० ऐसे आ० आत्म कम से आ० आत्म प्रयोग से भा० कहना ॥ ७ ॥ से० वह किं० क्या ऊ० ऊर्ध्व पताका जैसे ग० जावे प० नीचीपताका जैसे ग० जावे गो० गौतम ऊ० ऊर्ध्व पताका जैसे ग० जावे प० नीचीपताका जैसे ग० जावे से० वह भं० भगवन् किं० क्या ए० एक दिशा में प० पताका जैसे ग० जावे दु० दोनों दिशामें प० पताका जैसे ग० जावे गो० गौतम ए० एकदिशा में प० पताका जैसे ग० जावे नो० नहीं दु० दोनों दिशा में प० पताका जैसे ग० जावे से० वह भ० भगवन् किं० क्या

आयकम्मुणात्ति, आयप्पयोगेत्ति भाणियव्व ॥ ७ ॥ से भंते ! किं ऊसिओदय गच्छइ, पतोदय गच्छइ ? गोयमा ! ऊसिओदयपि गच्छइ पयोदयपि गच्छइ, ॥ से भंते ! किं एगओ पडाग गच्छइ, दुहओ पडागं गच्छइ ? गोयमा ! एगओ पडाग गच्छइ, नो दुहओ पडागं गच्छइ ॥ से भंते ! किंवाउकाए पडागा ? गोयमा ! वाउकाएण

भासकती है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या वह वायुकाय ऊंची पताका के आकार से जाती है या नीची पताका के आकार से जाती है ? अहो गौतम ! ऊंची पताका के आकार से भी जाती है और नीची पताका के आकार से भी जाती है अहो भगवन् ! क्या वह एक पताका या दो पताका से जाती है ? अहो गौतम ! एक पताका का रूप बनाकर जाती है परन्तु दो पताका का रूप बनाकर नहीं जाती है अहो भगवन् ! उसे क्या वायुकाय कहना या पताका कहना ? अहो गौतम !

वा० वायुकाय प० पताका गो० गौतम वा० वायुकाय से० वह नो० नहीं मा० वह प० पताका ॥ ८ ॥ प० समर्थ व० मेघ ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् स० रथरूप प० परिणमाने को

से नो खलु सा पडागा ॥ ८ ॥ पभूण भंते! बलाहगे एगमहं इत्थिरूववा जाव संद-
माणियरूववा परिणामेत्तए? हंता पभू ॥ १३ ॥ पभूण भंते! वलाहए एगं महं
इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए? हंता पभू। से भंते! किं आ-
यड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ? णो आयड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ एवं णो
आयकम्मुणा, परकम्मुणा। नो आयप्पओगेण, परप्पओगेण, ऊसितोदयंवा गच्छइ, पयोदयंवा
गच्छइ, । से भंते किं वलाहए इत्थी? गोयमा! वलाहएणं से णो खलु सा इत्थी। एवं

जैसे वायुकाया कहना परंतु पताका नहीं कहना ॥ ८ ॥ अहो गौतम! क्या मेघ एक बडा स्त्री का रूप यावत् शिबिका का रूप परिणमाने में समर्थ है? अथवा अनेक योजन तक जाने को समर्थ है? हां भगवन्! वह स्त्री यावत् शिबिकारूप बनाने का समर्थ है वह क्या स्वतः की ऋद्धि से या अन्य की ऋद्धि से जासकते हैं? अहो गौतम! वह मेघ अजीव होने से स्वत की शक्ति से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य की शक्ति से जासकते हैं वैसे ही स्वत के कर्म से नहीं जासकते है परंतु अन्य के कर्मों से जा सकते हैं, स्वत० के प्रयोग से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य के प्रयोग से जाते हैं अहो भगवन्!

हां प० समर्थ ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् जे० जो ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे से० वह भं० भगवन् किं० किस ले० लेश्या से उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ज० जिस ले० लेश्या

पुरिसे, आसे, हत्थी। पभूण भंते बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए, जहा इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं । नवरं एगओ चक्कवालंपि, दुहओ चक्कवालंपि भाणियव्वं ॥ जुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासंदमाणियाणतहेव ॥ १ ॥ जीवेणं भंते जेभविए नेरइएसु उववज्जित्तए, सेणं भंते ! किं लेस्सेसु उववज्जइ ? गो-

जब मेघ स्त्री आदि का रूप बना सकता है तब क्या उसे स्त्री वगैरह कहना अहो गौतम ! उसे मेघही कहना परंतु स्त्री पुरुष वगैरह नहीं कहना. अहो भगवन् ! मेघ बद्दल विमान का रूप बनाकर अनेक योजन तक क्या जा सकते हैं ? हां गौतम ! वे जा सकते हैं वगैरह जैसा स्त्री का अधिकार कहा वैसे ही यहां कहना विशेष इसपर जो यान का रूप बनाकर विमान की गति का कथन किया सो एक चक्र से भी जासकते हैं, और दो चक्र से भी जासकते हैं इसी प्रकार झूंसरा, अंबाडी, थिल्ली शिबिका, व सदमनी वगैरह का कथन जानना ॥ २ ॥ गमन के अधिकार से गति गमनका प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! जो जीव नारकी में उत्पन्न होनेवाला है वह कृष्ण लेश्यादि छ लेश्या में से कौनसी लेश्या सहित उत्पन्न

के द० द्रव्य को प० ग्रहणकर का० काल करे त० उस लेश्या में उ० उत्पन्न होवे त० वह ज० जैसे क० कृष्ण लेश्या नी० नीललेश्या का० कापोत लेश्या ए० ऐसे ज० जिसको जा० जो लेश्या सा० वह भा० कहना जा० यावत् जी० जीव भ० भगवन् जे० जो भ० ज्योतिषी में उ० उत्पन्न होने की

यमा ! ज लेसाइ दव्वाई परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेसेसु उववज्जइ तजहा कण्हलेसेसुवा, नीललेसेसुवा, काउलेसेसुवा, एव जस्स जा लेसा सा तस्स भाणियव्वा, जाव जीवेण भते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए पुच्छा ? गोयमा ! जल्लेसाइ दव्वाइ परियाइत्ता काल करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तजहा तेउलेस्सेसु । जीवेण भते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए सेण भते ! किं लेस्सेसु उववज्जइ ? गोयमा ! जल्ले-

होता है ? अहो गौतम ! जिस लेश्या के द्रव्य एकत्रित कर काल करता है उसी लेश्या में उत्पन्न होता है नरक में तीन लेश्या सहित जीव जाता है कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या यावत् कृष्ण, नील कापोत और तेजोलेश्यावाले दश प्रकार के भवनपति में उत्पन्न होते हैं इनही चार लेश्यावाले पृथ्वी पानी व वनस्पति में उत्पन्न होते हैं कृष्ण, नील और कापोतवाले तेउ वायु और विकलेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म, और शुक्ल लेश्यावाले मनुष्य तीर्यंच में उत्पन्न होते हैं पहिली चार लेश्यावाले वाणव्यंतर में, मात्र एक तेजो लेश्यावाले ज्योतिषी और प्रथम द्वितीय देवलोक में

भ० भव्य पु० पृच्छा गो० गौतम ज० जिस ले० लेश्या द० द्रव्य भाव से प० ग्रहणकर का० काल करे त० उस ले० लेश्या में उ० उत्पन्न होवे ते० तेजो लेश्या ॥ १० ॥ पूर्ववत् ॥ ११ ॥ अ० अनगार भ० भगवन् भा० भावितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण करे प० समर्थ वे० वैभार प० पर्वत को

साइ दव्वाइ परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तंजहा तेउ लेसेसुवा, पम्ह-लेसेसुवा, सुक्कलेससुवा ॥ १०—११ ॥ अणगारेण भंते ! भावियप्पा बाहिरए पो-ग्गल अपरियाइत्ता पभू वेभार पव्वय उल्लंघेत्तएवा, पल्लंघेत्तएवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । अणगारेण भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभारपव्वय

उत्पन्न होते हैं पद्म लेश्यावाले तीसरे, चौथे, पांचवे देवलोक में, शुक्ल लेश्यावाले छठे देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तक में उत्पन्न होते हैं अर्थात् वैमानिक देवों में तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले है ॥ १०—११ ॥ शुभ लेश्यावाले साधु लब्धिवंत होते हैं इस से लब्धि आश्री प्रश्न पुछते हैं अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय शरीर के पुद्गल ग्रहण किये विना राजगृही नगरी की पास का वैभार पर्वत उल्लंघने को समर्थ होते हैं। अहो गौतम ये बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना वैभार पर्वत उल्लंघने को समर्थ नहीं होसकते हैं अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण

उ० उल्लंघन करने को प० विशेष उल्लंघन करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥१२॥ अ० अनगार भ० भगवन् भा० भावितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० बिना ग्रहण कर जा० यावत् इ० इतने रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप वि० विकुर्वणा कर वे० वेमार पर्वत की अं० अंदर अ० प्रवेश कर प० समर्थ स० सम को वि० विषम क० करने को वि० विषम को स० सम क० करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे वि० दूसरा आ० आलापक ण० विशेष प० ग्रहणकर

उल्लंघेत्तएवा पल्लंघेत्तएवा ? हंता पभू ॥ १२ ॥ अणगारेण भंते ! भावियप्पा बाहिरएपोग्गले अपरियाइत्ता जाव इयाइ रायगिहे नयरे रूवाइ एवइयाइं विउव्वित्ता वेभार पव्वय अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समवा विसमवा करेत्तए विसमवा समं करेत्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ एव चेव बितीओवि आलावगो णवर परियाइ-

कर क्या वेभार पर्वत उल्लंघ सकते हैं? हां गौतम! वे भावितात्मा अनगार बाहिर के पुद्गलग्रहण कर वेभार पर्वत का उल्लंघन कर सकते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा लब्धिवंत साधु बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये बिना राजगृही नगरी में जितने मनुष्य पशु हैं उतने रूप बनाकर वेभार पर्वत में प्रवेश कर सम को विषम व विषम को सम करने क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् लब्धिवन्त साधु बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये बिना उक्त कार्य करने को समर्थ नहीं होते हैं परंतु

प० समर्थ ॥ १३ ॥ से० वह भ० भगवन् कि० क्या मा० मायी वि० विकुर्वणा करे अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे गो० गौतम मा० मायी वि० विकुर्वणा करे नो० नहीं अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे से० वह के० कैसे गो० गौतम मा० मायी प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन भो० भोगवकर वा० वमनकरे त० उन को से० उस प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन से अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज ब० पुष्ट

पा पभू ॥ १३ ॥ से भंते ! किं माई विकुव्वइ अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! माई विकुव्वइ, णो अमाई विकुव्वइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो अमाई विकुव्वई ? गोयमा ! माईण पणीयं पाणभोयणं भोच्चा भोच्चा वामेइ, तस्सणं तेणं पणीएणं पाणं भोयणेणं अट्ठि अट्ठिमिंजा बहुली भवंति, पयणुए मंससोणिए भवइ, जेवियसे अहाबायरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति ॥ सोइंदियत्ताए जाव फा-

शरीर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर राजगृही में रहहुवे मनुष्य व पशु जितने रूप बनाकर वैभार पर्वत में प्रवेश करके सम की विषम भूमि और विषम की सम भूमि कर सकते हैं ॥ १३ ॥ अब वैक्रेय रूप कौन बनाते हैं सो कहते हैं अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायी माया कपट रहित पुरुष बनाते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार के रूप मायी प्रमादी साधु करते हैं परंतु अमायी नहीं करते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से मायी विकुर्वणा करता है और अमायी नहीं करता है ?

म० होवे प० पतला म० मास सो० रुधिर भ० होवे जे० जो अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल ते० वे प० परिणमे सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज के० केश म० दाढी रो० रोम न० नखपने सु० शुक्रपने सो० रुधिरपने अ० अमायी लू० रूक्ष पा० पानी

सिंदियत्ताए, अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमसुरोमनहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए। अमाईण लूह पाण-भोयण भोच्चा भोच्चा णो वामेइ, तस्सण तेण लूहेण पाण भोयणेण अट्ठि अट्ठिमिंजा पयणु भवति, बहले मस सोणिए जेवियसे अहाबादरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति, तंजहा-उच्चारत्ताए, जाव सोणियत्ताए से तेणट्ठेण जाव नो अमाई विकुव्वइ॥ माईण तस्स ठाणस्स

अहो गौतम ! जो मायावी साधु होते हैं वे स्निग्ध सरस आहार पानी का भोजन करते हैं बलवृद्धि के लिये वमन विरेचनादिक क्रियाओं करते हैं एसे स्निग्ध पान भोजन से उन की हड्डीव हड्डीकी मिंजी बढती है मांस शोणित पतले होते हैं यथाबादर पुद्गल श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय, अस्थी, अस्थि की मिंजी, केश, श्मश्रु, रोम, नख, शुक्र व रुधिरपने परिणमते हैं और इस से वैक्रय रूप बना सकते हैं जो अमायी होते हैं वे रूक्ष निरस आहार करते हैं और वमन विरेचनादि क्रियाओं नहीं करते हैं उन को रूक्ष आहार से हड्डी और हड्डी की मींजी पतली होती है मांस व लोही सघन होता है उन को पानी व आहार रूप मे ग्रहण किये हुवे पुद्गल बडीनीत, लघुनीत, श्लेष्म, खेंकार, वमन, पित्त, यावत् रुधिरपने

प० समर्थ ॥ १३ ॥ से० वह भ० भगवन् कि० क्या मा० मायी वि० विकुर्वणा करे अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे गो० गौतम मा० मायी वि० विकुर्वणा करे नो० नहीं अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे से० वह के० कैसे गो० गौतम मा० मायी प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन भो० भोगवकर वा० वमनकरे त० उन को से० उस प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन से अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज ब० पुष्ट

पा पम ॥ १३ ॥ से भंते ! किं माई विकुव्वइ अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! माई विकुव्वइ, णो अमाइ विकुव्वइ । स केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो अमाई विकुव्वई ? गोयमा ! माईण पणीय पाणभोयण भोच्चा भोच्चा वामेइ, तस्सण तेणं पणीएण पाण भोयणेण अट्ठि अट्ठिमिंजा बहुली भवंति, पयणुए मससोणिए भवइ, जेवियसे अहाबायरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति ॥ सोइंदियत्ताए जाव फा-

——— वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर राजगृही में रहे हुवे मनुष्य व पशु जितने रूप बनाकर वैभार पर्वत में प्रवेश [कर स]म भूमि और विषम की सम भूमि कर सकते हैं ॥ १३ ॥ अब वैक्रेय रूप कौन बनाते [हैं ?] अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायी माया कपट [रहित] बनाते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार के रूप मायी प्रमादी साधु करते हैं परंतु अमायी नहीं करते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से मायी विकुर्वणा करता है और अमायी नहीं करता है ?

म० होवे प० पतला म० मांस सो० रुधिर म० होवे जे० जो अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल ते० वे प० परिण मे सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज के० केश म० दाढी रो० रोम न० नखपने सु० शुक्रपने सो० रुधिरपने अ० अमायी लू० रूक्ष पा० पानी

सिंदियत्ताए, अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोमनहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए। अमाईण लूह पाण-भोयण भोच्चा भोच्चा णो वामेइ, तस्सण तेण लूहेण पाण भोयणेण अट्ठि अट्ठिमिंजा पयणु भवति, बहले मंस सोणिए जेवियसे अहाबादरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति, तंजहा-उच्चारत्ताए, जाव सोणियत्ताए से तेणट्ठेण जाव नो अमाई विकुव्वइ॥ माईण तस्स ठाणस्स

अहो गौतम ! जो मायावी साधु होते हैं वे स्निग्ध सरस आहार पानी का भोजन करते हैं बलवृद्धि के लिये वमन विरेचनादिक क्रियाओं करते हैं एसे स्निग्ध पान भोजन से उन की हड्डीव हड्डीकी मिंजी बढती है मांस शोणित पतले होते हैं यथाबादर पुद्गल श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय, अस्थी, अस्थि की मिंजी, केश, श्मश्रु, रोम, नख, शुक्र व रुधिरपने परिणमते हैं और इस से वैक्रय रूप बना सकते हैं जो अमायी होते हैं वे रूक्ष निरस आहार करते हैं और वमन विरेचनादि क्रियाओं नहीं करते हैं उन को रूक्ष आहार से हड्डी और हड्डी की मींजी पतली होती है मांस व लोही सघन होता है उन को पानी व आहार रूप मे ग्रहण किये हुवे पुद्गल बडीनीत, लघुनीत, श्लेष्म, सेंढार, वमन, पित्त, यावत् रुधिरपने

भो० भोजन भो० भोगव कर णो० नहीं वा० वमनकरे त० उन को तै० उस रू० रूक्ष पा० पानी भो० भोजन से० अस्थि अ० अस्थिमिंज प० पतली भ० होती है ॥ ३ ॥ ५ ॥ *

अ० अनगार भ० भगवन् भा० भावितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण किये प० समर्थ ए०

अणालोइय पडिक्कते काल करेइ, नत्थितस्स आराहणा अमाईण तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ सेव भंते भंतेत्ति तईयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ४ ॥ × × +

अणगारेण भंते ! भावियअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरू-

परिणमते हैं इस तरह शक्ति कम होने से अमायी वैक्रेयादि लब्धि नहीं करते हैं अब मायी और अमायी को फल बताते हैं मायावी प्रमादी वैक्रेय करनेमें लब्धि फोडने से अथवा सरस आहारादि के दोष लगने से यदि उस की आलोचना प्रतिक्रमण करे नहीं तो वह जिनाज्ञा का आराधक नहीं होसकता है और जो अमायी अप्रमादी होते हैं व निर्दोष आहार भोगवने से व वैक्रेयादि नहीं करने से अल्प दोषी होते हैं जो कुच्छ छद्मस्थपना मे दोष लगता है उस की गुरु की समक्ष आलोचना करने मे जिनाज्ञा का आराधक होता है अहो भगवन् ! आपके वचन तथ्य हैं आप जैसे कहते हैं वैसे ही हैं यह तीसरा शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ४ ॥ = =

एक म० महा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् स० पालखी रूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ १ ॥ अ० अनगार भ० भगवन् भ० भावितात्मा के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम ज० जैसे जु० युवतीका जु० युवान ह० हस्त से ह० हस्त में गे० ग्रहण करे च० चक्र

ता जाव सदामाणियरूवं वा विकुव्वित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । अणगारेण भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरूवं वा जाव संदामाणियरूवं वा विकुव्वित्तए ? हंता पभू ॥ १ ॥ अणगारेण भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू इत्थिरूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहानामए जुवइं जुवाणे हत्थेण

अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिरके वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना क्या एक महा स्त्री का रूप यावत् पालखी का रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वे वैसा वैक्रेय रूप नहीं बनासकते हैं तब अहो भगवन् ! क्या वह बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर एक महा स्त्रीका रूप यावत् पालखी का रूप बनाने को समर्थ है ? हां गौतम ! वह महा स्त्रीका रूप यावत् पालखी बनाने को समर्थ है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा साधु स्त्री के कितने रूप बनासकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित पुरुष अपने हस्त से स्त्री का हस्त मजबुत पकडता है अथवा जैसे गाडी के चक्र की नाभी

भो० भोजन भो० भोगव कर णो० नहीं वा० वमनकरे त० उन को ते० उस रू० रूक्ष पा० पानी भो० भोजन से० अस्थि अ० अस्थिमिंज प० पतली भ० होती है ॥ ३ ॥ ५ ॥ *

अ० अनगार भ० भगवन् भा० भावितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण किये प० समर्थ ए०

अणालोइय पडिक्कते काल करेइ, नात्थितस्स आराहणा अमाईण तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ सेव भंते भंतेत्ति तईयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ४ ॥ × × +

अणगारेण भंते ! भावियअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एग मह इत्थिरू-

परिणमते हैं इस तरह शक्ति कम होने से अमायी वैक्रेयादि लब्धि नहीं करते हैं अब मायी और अमायी को फल बताते हैं मायावी प्रमादी वैक्रेय करनेमें लब्धि फोडने से अथवा सरस आहारादि के दोष लगने से पादि उस की आलोचना प्रतिक्रमण करे नहीं तो वह जिनाज्ञा का आराधक नहीं होसकता है और जो अमायी अप्रमादी होते हैं व निर्दोष आहार भोगवने से व वैक्रेयादि नहीं करने से अल्प दोषी होते हैं जो कुच्छ छद्मस्थपना से दोष लगता है उस की गुरु की समक्ष आलोचना करने से जिनाज्ञा का आराधक होता है अहो भगवन् ! आपके वचन तथ्य हैं आप जैसे कहते हैं वैसे ही हैं यह तीसरा शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ४ ॥ = =

जैसे के० कोई पुरुष अ० खड्ग च० चर्मका पा० पात्र ग० ग्रहण कर ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा अ० म्यान पा० पात्र ह० हस्त में लेकर अ० आत्मा से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० जावे ह० हां उ० जावे ॥ ३ ॥ अ० अनगार भ० भगवन् भा० भावितात्मा ए० एकदिशि में प०

रिसे असिचम्मपाय गहाय गच्छेज्जा एवामेव अणगारेवि भावियप्पा असिचम्मपाय हत्थकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ? हंता उप्पइज्जा । अणगारेण भंते ! भावियप्पा केवइयाइ पभू असिचम्महत्थकिच्चगयाइ रूवाइ विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहा नामए जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा त चेव जाव विउव्विसुवा ३ ॥३॥ से जहा नामए केइपुरिसे एगओ पडाग काउ गच्छेज्जा एवामेव अ-

खड्ग का म्यान हस्त में लेकर कोई पुरुष जावे वैसे ही क्या गगनगामिनी क्रिया से भावितात्मा साधु खड्ग चर्म पत्र [म्यान] हस्त में लेकर आकाश में जावे ? हां गौतम ! वैसे आकाश में जावे अहो भगवन् ! हस्त में म्यान होवे वैसे कितने रूप वह भावितात्मा अनगार बनावे ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित युवान पुरुष युवती को अपने हस्त से पकडता है यावत् एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप भर यह साधु वैक्रेय का विषय है परंतु इतना रूप किसीने किया नहीं, करते नहीं, और करेंगे नहीं ॥३॥ अहो भगवन् !

की ना० नाभी अ० आरासे उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा वि० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् प० समर्थ गो० गौतम अ० अनगार भा० भावितात्मा के० संपूर्ण ज० जम्बूद्वीप को ब० बहुत इ० स्त्रीरूप से आ० आकीर्ण वि० विकीर्ण जा० यावत् ए० यह गो० गौतम अ० अनगार भा० भावितात्मा का अ० यह ए० ऐसा वि० विषय वि० विषय मात्र वु० कहा नो० नहीं स० संपत्ति वि० विकुर्वणा की ए० ऐसे प० परिपाटी ने० जानना जा० यावत् स० पालखीरूप ॥ २ ॥ ज०

हत्थंसि गेण्हेज्जा, चक्कस्सवा नाभी अरगाउत्ता सिया एवामेव अणगारेवि भावियप्पा विउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ जाव पभूणं ? गोयमा ! अणगारेणं भावियप्पा केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं बहूहिं इत्थिरूवेहिं आइण्णं वितिकिण्णं जाव एसणं गोयमा ' अणगारस्स भावियप्पणो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए नोचेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा ३, एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव संदमाणिया ॥ २ ॥ सेजहा नामए केइपु-

में थारे को भीडते हैं वैसे ही लब्धिवंत साधु वैक्रेय समुद्घात करके एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप स्त्री के रूप से भरने को समर्थ है अहो गौतम ! भावितात्मा अनगार को वैक्रेय करने का यह विषय कहा है परंतु इतने रूप किसीने गत काल में किये नहीं है, वर्तमान में नहीं करते हैं, और आगामिक में करेंगे नहीं जैसे स्त्री रूप का कहा वैसे ही पुरुष वगैरह का अनुक्रम से पालखी तक का कहना ॥ २ ॥ जैसे

ऊडे ॥ ४ ॥ से० वह ज० जैसे के० कोई पुरुष ए० एकादेशा में प० पलांठी का० करके चि० खडारहे ॥ ५ ॥ अ० अनगार भ० भगवन् बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण किये प० समर्थ ए० एक म०

॥ ४ ॥ से जहा नामए केइपुरिसे एगओ पल्हत्थिय काउ चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे भावियप्पा त चेव जाव विकुव्विसुवा ३ । एव दुहओ पल्हत्थियपि । से जहा नामए केइ पुरिसे एगओ पलियक काउ चिट्ठिज्जा त चेव विकुव्विसुवा ३ । एव दुहओ पलियकपि ॥ ५ ॥ अणगारेण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एग मह आसरूववा, हत्थिरूववा, सीहरूव वा वग्घ-वग्ग दीविय-अच्छ तरच्छ-परासर-

कार कहा वैसे ही यहां जानना ऐसे ही दो उपाविसों का जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जैसे कोई पुरुष एक तरफ पलांठी से खडा रहता है, ऐसे ही क्या भावितात्मा अनगार आकाश में गमन कर सकते हैं ? हां गौतम ! वे आकाश में गमन कर सकते हैं यावत् एक लक्ष योजन जम्बूद्वीप भर सकते हैं ऐसे दो पलहाठी से भी आकाश में जा सकते हैं ऐसे ही एक पर्यंकासन और दो तरफ पर्यंकासन से आकाश में जा सकते हैं यावत् एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप भर सकते है परतु इतना किसीने किया नहीं, करते नहीं व करेंगे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! लब्धिवत भावितात्मा अनगार बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना क्या अश्व का रूप, हस्ती का रूप, सिंह का रूप, व्याघ्र का रूप, चित्ता का

पताका जैसे ह० हस्त में लेकर अ० स्वत से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० ऊडे अ० अनगार भा० भावितात्मा ए० एकदिशा में ज० यज्ञोपवित कि० लेकर अ० स्वतः से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ०

णगारे भाविअप्पा एगओ पडागाहत्थकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढंवेहास उप्पएज्जा? हंता गोयमा! अणगारेण भंते! भावियप्पा केवइयाइ पभू एगओ पडागा हत्थकिच्चगयाइं रूवाइ विउव्वित्तए, एव जाव विकुव्विसुवा ३। एव दुहओ पडागपि। से जहानामए केइपुरिसे एगओ जणोवइ तकाउ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारेवि भावियप्पा एगओ जनोवइय किच्चगएण अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पाएज्जा? हंता उप्पाएज्जा। अणगारेण भंते! भाविअप्पा केवइयाई पभू एगओ जणोवइय किच्चगयाइ रूवाइ विउव्वित्तए त चेव जाव विकुव्विसुवा ३,। एव दुहओ जणोवइयपि

जैसे कोई पुरुष एकदिशी में पताका करके जावे वैसे ही कोई भावितात्मा अनगार वैक्रेय रूप से एकदिशा की पताका हस्त में रखकर क्या जाने को समर्थ है? हां गौतम! वह जासकते हैं वगैरह सब पहिले जैसे कहना ऐसे ही दो पताका का अधिकार जानना अहो भगवन्! जैसे कोई एक तरफ यज्ञोपवित धारन कर जावे वैसे ही क्या भावितात्मा साधु एकदिशा की उपवित का रूप धारन कर आकाश में जावे? हां गौतम! जासकते हैं अहो भगवन्! वैसे कितने रूप बना सकते हैं? अहो गौतम! जैसे स्यान का अधि

हो प० समर्थ से० वह भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे

माईण भंते ! तस्सठाणस्स अणालोइय पडिक्कते काल करेइ कहिं उववज्जइ ? गोयमा ! अण्णयरेसु अभियोगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ अमाईण तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कते काल करेइ कहिं उववज्जइ; गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ सेवमंते भंतेत्ति ॥ गाहा इत्थी, असी,

है या अन्य की ऋद्धि से जाता है ? अहो गौतम ! आत्म ऋद्धि से जाता है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जाता है आत्म कर्म से जाता है परतु अन्य के कर्म से नहीं जाता है, आत्म प्रयोग से जाता है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं जाता है, ऊर्ध्व पताका के आकार से जाता है परंतु अधो पताका के आकार से नहीं जाता है अहो भगवन् ! क्या वह अनगार अश्व कहाता है ? अहो गौतम ! अनगार अश्व नहीं कहाता है परंतु अनगार कहाता है ऐसे ही अष्टापद तक जानना अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायावी अप्रमादी बनाते हैं ? अहो गौतम ! वैसे रूप मायावी साधु बनाते हैं परंतु अमायावी नहीं बनाते हैं वगैरह सब चौथे उद्देशे जैसे जानना अहो भगवन् ! मायावी उस की आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह किये बिना यहां पर काल कर जावे तो कहां जावे ? अहो गौतम ! वैसे प्रथम देवलोक से बारहवे देवलोक तक में इन्द्रादि देवों के सेवकपने उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! अमायावी आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह करके कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वे सेवकपने नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु सामानिक देव व अहमेंद्र देवपने सर्वार्थ सिद्ध विमान तक

घदा आ० अश्वरूप ह० हस्ति सी० सिंहरूप व० व्याघ्र व० चित्ता दी० दीपदा अ० रींछ त० तरक्ष प० अष्टापद अ० वैक्रेय करने को णा० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ ७ ॥ अ० अनगार भ० भगवन् भा० भावितात्मा ए० एक म० बडा आ० अश्वरूप अ० वैक्रेयकर अ० अनेक जो० योजन ग० जाने को ह०

रूवरा अभिजुजित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अणगारेण एव बाहिरए पोग्गले परिया-इत्ता पभू ॥ ९ ॥ अणगारेण भते ! भाविअप्पा एग मह आसरूववा अभिउजित्ता अणेगाइ जोयणाइ गमित्तए ? हता पभू । से भते ! किं आयड्डीए गच्छइ परिड्डीए गच्छइ ? गोयमा ! आयड्डीए गच्छइ णो परिड्डीए एव आयकम्मुणा परकम्मुणा, आयप्पयोगेण परप्पयोगेण, उस्सिओदयवा गच्छइ, पयोदयवा गच्छइ । सेण भते ! किं अणगारे आस ? गोयमा ! अणगारेणसे नो खलु से आसे एव जाव परासररूव वा से भते किं माई विकुव्वइ, अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायीविकुव्वइ ।

रूप,दीपडीका रूप, रींछका रूप,तरक्षका रूप, अष्टापदका रूप और अन्य भी ऐसे रूप क्या बना सकते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है,अर्थात् बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये बिना वैसे रूप नहीं बना सकते हैं परतु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर ऐसे रूप बनासकते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार एक बडा अश्वका रूप बनाकर अनेक योजन तक जाने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! अश्वका रूप बनाकर अनेक योजन तक जाने को समर्थ है अहो भगवन् ! क्या वह आत्म ऋद्धि से जाता

हां प० समर्थ से० वह भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे

माइण भंते ! तस्सठाणस्स अणालोइय पडिक्कते काल करेइ कहिं उववज्जइ ? गोयमा ! अण्णयरेसु अभियोगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ अमाईण तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कते काल करेइ कहिं उववज्जइ; गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ सेवभंते भंतेत्ति ॥ गाहा इत्थी, असी,

है या अन्य की ऋद्धि से जाता है ? अहो गौतम ! आत्म ऋद्धि से जाता है परतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जाता है आत्म कर्म से जाता है परतु अन्य के कर्म से नहीं जाता है, आत्म प्रयोग से जाता है परतु अन्य के प्रयोग से नहीं जाता है, ऊर्ध्व पताका के आकार से जाता है परतु अधो पताका के आकार से नहीं जाता है अहो भगवन् ! क्या वह अनगार अश्व कहाता है ? अहो गौतम ! अनगार अश्व नहीं कहाता है परतु अनगार कहाता है ऐसे ही अष्टापद तक जानना अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायावी अप्रमादी बनाते हैं ? अहो गौतम ! वैसे रूप मायावी साधु बनाते हैं परतु अमायावी नहीं बनाते हैं वगैरह सब चौथे उद्देशे जैसे जानना अहो भगवन् ! मायावी उस की आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह किये विना वहांपर काल कर जावे तो कहां जावे ? अहो गौतम ! वैसे प्रथम देवलोक से बारहवे देवलोक तक में इन्द्रादि देवों के सेवकपने उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! अमायावी आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह करके कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वे सेवकपने नहीं उत्पन्न होते हैं परतु सामानिक देव व अहमेंद्र देवपने सर्वार्थ सिद्ध विमान तक

गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि नो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ० अनगार भ० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्या दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वि० विभग ज्ञान लब्धि से वा० वाणारसी न० नगरी में स० विकुर्वणा कर रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप जा० जाने पा०

पडागा, जण्णोवइएय होइ बोधव्वे । पल्हत्थिय पलियके, अभियोगविकुव्वणा मायी

तइयसए पचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ — — —

अणगारण भते भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभग-

उत्पन्न होते हैं अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा सक्षेप से कहते हैं स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पलहांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव-सेवकपने उत्पन्न होते हैं वैसा कहा यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा सपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + +

अब इस छठे उद्देशे में भी वैक्रेय सबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे? हां गौतम! विभग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे अहो भगवन्! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे? अहो गौतम! यथा

देखे हं० हां जा० जाने पा० देखे से० वह किं० क्या त० तथा भाव जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नहीं त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे से० वह के० कैसे ए० एसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइ जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभाव जाणइ पासइ, अण्णहा भाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभाव जाणइ पासइ अण्णहा भाव जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ णो तहाभाव जाणइ पासइ अण्णहा भाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सण एव भवइ एव खलु अह रायगिहे नयरे समोहए समोह-

तथ्य जाने नहीं व देखे नहीं परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परंतु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. जैसे

गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि नो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ० अनगार भ० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्या दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वि० विभग ज्ञान लब्धि से वा० वाणारसी न० नगरी में स० विकुर्वणा कर रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप जा० जाने पा०

पडागा, जण्णोवइएय होइ बोधव्वे । पल्हत्थिय पलियके, अभियोगविकुव्वणा मायी

तइयसए पचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ – – –

अणगारण भते भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभग-

उत्पन्न होते हैं अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है. अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा संक्षेप से कहते हैं स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पलहांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव सेवकपने उत्पन्न होते हैं वैसा कहा यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + +

अब इस छठे उद्देसे में भी वैक्रेय संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे ? हां गौतम ! विभग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे अहो भगवन् ! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे ? अहो गौतम ! यथा

देखे ई० हां जा० जाने पा० देखे से० वह किं० क्या त० तथा भाव जा० माने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नही त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे से० वह के० कैसे ए० एसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देख गो० गौतम त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइ जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभाव जाणइ पासइ, अण्णहा भाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभाव जाणइ पासइ अण्णहा भाव जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ णो तहाभाव जाणइ पासइ अण्णहा भाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सण एव भवइ एव खलु अह रायगिहे नयरे समोहए समोह-

तथ्य जाने नहीं व देखे नहीं परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परतु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. जैसे

गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि नो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ० अनगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्या दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वि० विभग ज्ञान लब्धि से वा० वाणारसी न० नगरी में स० विकुर्वणा कर रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप जा० जाने पा०

पडागा, जण्णोवइएय होइ बोधव्वे । पल्हत्थिय पलियके, अभिओगविकुव्वणा मायी तइयसए पचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ – – –

अणगारण भते भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभग-

उत्पन्न होते हैं अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा सक्षेप से कहते हैं स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पल्हांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव सत्रुपने उत्पन्न होते हैं वैसा कहा यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + +

अब इस छठे उद्देसे में भी वैक्रेय संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे? हां गौतम! विभग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे अहो भगवन्! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे? अहो गौतम! यथा

देखे है० हां जा० जाने पा० देखें से• वह किं० क्या त० तथा भाव जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नही त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा• देखे से० वह के० कैसे ए० एसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देख गो० गौतम त० उसको ए• ऐसा भ० होवे अ• मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए समोह-

तथ्य भाव नहीं व देखे नहीं परन्तु अन्यथा भाव जाने व देखे अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परन्तु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है जैसे

रूप जा० जानता हू पा० देखता हू से० वह से०उस द०दर्शन में वि० विपरीतता भ०होवे ते०इस लिये जा० यावत् पा० देखे ॥ १ ॥ पूर्ववत् ॥ २ ॥ अ० अणगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि वी०

णित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणामि पासामि, से से दसणे विवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेण जाव पासइ ॥१॥ अणगारेण भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छादिट्ठी जाव रायगिहे नयरे समोहए समोहएत्ता वाणारसाए नयरीए रूवाइ जाणइ पासइ ? हता जाणइ पासइ । तचेव जाव तस्सणं एव भवइ एव खलु अह वाणारसीए नयरीए समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइ जाणामि पासामि । से से दसणे विवच्चासे भवइ से तेणट्ठेण जाव अण्णहाभावं जाणइ पासइ ॥ २ ॥ अणगारेण भते ! भावियप्पा मायी

किसी दिशी मूढ पुरुष पूर्वादि दिशा नहीं जानसकता है, वैसे ही वह भी नहीं जान सकता है इसलिये अहो गौतम ! वैसा अनगार यथातथ्य भाव नहीं जानसकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मायी मिथ्या दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्यलब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृह नगर का वैक्रेय करके क्या वाणारसी में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता है ? हां गौतम ! वह राजगृहीकी विकुर्वणा करके वाणारसीमें मनुष्यादिक के रूप जान व देख सकता है वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना और उसे भी ऐसा विचार होवे कि मैंने वाणारसी का रूप

वीर्यलब्धि से वि० वैक्रेय लब्धिसे वि० विमगज्ञान लब्धिसे वा० वाणारसी नगरी रा० राजगृह न० नगर की अं० बीच में ए० एक म० बडा ज० देशसमुह स० त्रिकुर्वणा कर वा० वाणारसी नगरी रा० राजगृह न० नगर की अं०बीचमें ए० एक म०बडा ज०देश समुह जा०जाने पा०देखे ह०हां जा०जाने पा० देखे स०

मिच्छदिट्ठी वीरिय लद्धीए विउव्वियलद्धीए विभग णाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं रायगिहच नगरं अतरा य एग मह जणवयवग्ग समोहए समोहएत्ता वाणारसिं नगरिं रायगिह तंच अतरा एग मई जणवयवग्ग जाणइ पासइ? हता जाणइ पासइ। से भते! किं तहाभाव जाणइ पासइ, अण्णहाभाव जाणइ पासइ? गोयमा! णो तहाभाव

बनाया और राजगृही में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता हूं इस तरह दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है इस से वह यथार्थ भाव नहीं जान सकता है व देख सकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है व देख सकता है ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मायी, मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृही व वाणारसी नगरी के बीच में एक महाजनपद की विकुर्वणा करके क्या इन दोनों नगरी के बीच के जनपद को जान व देख सकता है? हां गौतम! ऐसा मायावी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार जान व देख सकता है अहो भगवन्! क्या वह तथा भाव जाने या अन्यथा भाव जाने? अहो गौतम! वह तथा भाव जाने परतु अन्यथा भाव जाने नहीं

रूप जा० जानता हू पा० देखता हू से० उस से०उस दं०दर्शन में वि० विपरीतता भ०होवे ते०इस लिये जा० यावत् पा० देखे ॥ १ ॥ पूर्ववत् ॥ २ ॥ अ० अणगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि वी०

णिचा वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दसणे विवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेण जाव पासइ ॥ १ ॥ अणगारेण भते ! भावियप्पा मायी मिच्छादिट्ठी जाव रायगिहे नयरे समोहए समोहएत्ता वाणारसाए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हता जाणइ पासइ । तचेव जाव तस्सण एव भवइ एव खलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणामि पासामि । से से दसणे विवच्चासे भवइ से तेणट्ठेण जाव अण्णहाभावं जाणइ पासइ ॥ २ ॥ अणगारेण भते ! भावियप्पा मायी

किसी दिशी मूढ पुरुष पूर्वादि दिशा नहीं जानसकता है, वैसे ही वह भी नहीं जान सकता है इसलिये अहो गौतम ! वैसा अनगार यथातथ्य भाव नहीं जानसकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मायी मिथ्या दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्यलब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृह नगर का वैक्रेय करके क्या वाणारसी में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता है ? हां गौतम ! वह राजगृहीकी विकुर्वणा करके वाणारसीमें मनुष्यादिक के रूप जान व देख सकता है वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना और उसे भी ऐसा विचार होवे कि मैंने वाणारसी का रूप

प्राप्त अ० सन्मुख हुवे से०उस से०उस दं० दर्शन की वि० विपरीतता भ०होवे से०वह ते०इसलिये जा०यावत् पा०देखे ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् अ० अमायी स० सम्यक् दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वे० वैक्रय

मिसमण्णागए से से दंसणे विवच्चा से भवइ से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ ३ ॥ अणगारेण भंते ! भावियप्पा अमायी सम्मादिट्ठी वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए, ओहि नाणलद्धीए रायगिहे नयरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । से भंते ! किं तहाभाव जाणइ पासइ अण्णहाभाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहा भाव जाणइ पासइ, णो अण्णहाभाव जाणइ पासइ से केणट्ठेण भंते एव वुच्चइ ? गोयमा ! तस्सण एव भवइ एव खलु अह रायगिहे

सम्यग् दृष्टि अनगार वीर्य लब्धि वैक्रेय लब्धि व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर की विकुर्वणा कर वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह को क्या जान व देख सके ? हां गौतम ! वे जान व देख सके अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने व देखे या अन्यथा भाव जाने व देखे ? अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं अहो भगवन् ! किस कारण से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि मैं राजगृही नगरी की विकुर्वणा करके वाणारसी नगरी में मनुष्यादिक के रूप देखता हू इस

उस को ए० ऐसा भ० होवे ए० यह वा० वाणारसी न० नगरी ए० यह रा० राजगृह न० नगर ए० यह अं० बीच में ज० देश नो० नहीं ए० यह मु० मुझे वी० वीर्य लब्धि वै० वैक्रेय लब्धि वि० विभग ज्ञान लब्धि इ० ऋद्धि जु० द्युति ज० यश ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम ल० लब्ध प०

जाणइ पासइ, अण्णहाभाव जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेण भंते जाव पासइ ? गो- यमा ! तस्स खलु एवं भवइ एस खलु वाणारसीए नयरीए एस खलु रायगिहे नयरे, एस खलु अंतरा एगं महं जणवयवग्गं, नो खलु एस महं वीरियलद्धी वेउव्विय- लद्धी, विभंगनाणलद्धी, इड्ढी, जुत्ती, जसे, बले, वीरिए, पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अ-

भहो भगवन् ! वह किस कारन से तथा भाव जाने व देखे अन्यथा भाव जाने नहीं देखे नहीं ? अहो गौतम ! उसे ऐसा विचार होवे कि यह वाणारसी नगरी है, यह राजगृही नगरी है यह इन दोनों की बीच का प्रदेश है परंतु वह ऐसा नहीं जान सकता है कि यह मुझे वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, ज्ञान लब्धि, ऋद्धि, द्युति, कान्ति, यश, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम से मीला है, प्राप्त हुवा है यावत् सन्मुख हुवा है इस तरह उसे दर्शन की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है अर्थात् ये मेरे बनाये हुवे नहीं है परंतु स्वाभाविक है यों विभंग ज्ञान से विपरीत मानता है इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि यथार्थ भाव नहीं जान व देख सकता है परन्तु अन्यथा भाव जान व देख सकता है ॥ ३ ॥ अमायी

माव अ० सन्मुख हुवे से० उस से० उस दं० दर्शन की वि० विपरीतता भ० होवे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् पा० देखे ॥ १ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् अ० अमायी स० सम्यक् दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वे० वैक्रय

अभिसमण्णागए से से दसणे विवच्चा से भवइ से तेणट्ठेण जाव पासइ ॥ २ ॥ अणगारेण भंते ! भावियप्पा अमायी सम्मादिट्ठी वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए, ओहि नाणलद्धीए रायगिहे नयरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ। से भंते ! किं तहाभाव जाणइ पासइ अण्णहाभाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहा भाव जाणइ पासइ, णो अण्णहाभाव जाणइ पासइ से केणट्ठेणं भंते एव वुच्चइ ? गोयमा ! तस्सणं एव भवइ एव खलु अह रायगिहे

सम्यग् दृष्टि अनगार वीर्य लब्धि वैक्रेय लब्धि व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर की विकुर्वणा कर वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह को क्या जान व देख सके ? हां गौतम ! वे जान व देख सके अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने व देखे या अन्यथा भाव जाने व देखे ? अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं अहो भगवन् ! किस कारण से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि मैं राजगृही नगरी की विकुर्वणा करके वाणारसी नगरी में मनुष्यादिक के रूप देखता हूं इस

ल० लब्धि से ओ० अवधि ज्ञान लब्धि से रा० राजगृह नगर में स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न०

नगरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दसणे अविवच्चा से भवइ से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ ॥ बीओवि आलावगो एव चेव, णवर वाणारसीए नयरीए समोहणा वेयव्वा ॥ रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ॥ ४ ॥ अणगारेण भते भावियप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरिय लद्धीए वेउव्विय लद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिह वाणारसिं नगरिंच अतरा एग मह जणवयवग्ग समोहए समोहएत्ता रायगिह नगर वाणारसिं च नगरिं तच अतरा एग मह जणवयवग्ग जाणइ पासइ ? हता जाणइ पासइ ॥ से भते ! किं तहाभाव जाणइ पासइ

तरह उन को दर्शन के समपने से मति की विपरीतता नहीं होती है इसलिये अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परतु अन्यथा भाव जाने व देखे नहीं। इसी तरह दुसरा आलापक जानना परंतु इस में राजगृही का वैक्रेय करके वाणारसी में मनुष्यादि के रूप देखने के स्थान वाणारसी का वैक्रेय करके राजगृही में मनुष्यादिक के रूप देखे ॥ ४ ॥ अमायी सम्यग् दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर व वाणारसी के मध्य का एक बडा जनपद देश की विकुर्वणा करके उन दोनों की बीच का जनपद को क्या जाने व देखे ? हां गौतम ! वे जाने देखे अहो भगवन् !

नगरी में रू० रूप जा० जाने पा० देखे ह० हां जा० जाने पा० देखे ॥ ८ ॥ पूर्ववत् ॥ ९ ॥ अ० अण

अण्णहाभाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहाभाव जाणइ पासइ, नो अण्णहा भाव जाणइ पासइ । सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! तस्सण एव भवइ नो खलु एस रायगिहे, णो खलु एस वाणारसी नगरी णो खलु एस अतरा एगे जणवयवग्गे, एस खलु मम वीरिय लद्धी वेउव्विय लद्धी, ओहिनाण लद्धी, इड्ढी, जुत्ती, जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, सेसे दसणे अविवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ, तहा भाव जाणइ पासइ, नो अण्हाभाव जाणइ पासइ ॥ ५ ॥ अण-

क्या वे यथातथ्य भाव जाने देखे या अन्यथा भाव जाने देखे ? अहो गौतम ! वे यथा तथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे नहीं अहो भगवन् ! किस कारन से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि यह राजगृह नगर नहीं है, यह वाणारसी नगरी नहीं है यह उन के बीचका जनपद नहीं है परतु यह वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, अवधि ज्ञान की लब्धि, ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, पुरुषात्कार पराक्रम मुझे प्राप्त हुवा है इस तरह दर्शन के समपरिणाम से मति सम होती है इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि वे यथातथ्य भाव जाने व देखे परतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो

गार भं० भगवन् भा० भवितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० बिना ग्रहणकिये प० समर्थ ए० एक म० बडा गा० ग्रामरूप न० नगर रूप जा० यावत् स० सन्निवेश वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे वि० दूसरा आ० आलापक न० विशेष बा० बाह्य पो० पुद्गल प० ग्रहण कर प० समर्थ ॥ ६ ॥ पूर्ववत् ॥ ७ ॥ च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र को क० कितने

गारेण भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूववा, नगररूववा, जाव सण्णिवेसरूववा विकुव्वित्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे, एवं बितीओवि आलावओ । नवर बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता, पभू ॥६॥ अणगारेण भंते ! केइवयाइं पभू गामरूवाइं, विकुव्वित्तए ? गोयमा ! से जहा नामए जुवइं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, तं चेव जाव विकुव्वितिवा ३, ॥ एवं जाव सण्णिवेसरूववा

भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये बिना क्या ग्राम, नगर यावत् सन्निवेश के रूप बनासकते हैं ? अहो गौतम ! वे बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये बिना ऐसे रूप नहीं बना सकते हैं परंतु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर ऐसे रूप बना सकते हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वे भावितात्मा अनगार कितने वैक्रेय रूप बना सकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित तरुण पुरुष तरुणी स्त्री को अपने हस्त मे पकडता है ऐसे ही वे अनगार एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप का ग्राम नगर यावत् सन्निवेश

आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र गो० गौतम च० चार च० चौसठ आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र ए० इस आ० आत्म रक्षक का व० वर्णन स० सर्व इं० इन्द्रका ज० जिस को ज० जितने आ० अत्मरक्षक ते० उतने भा० कहना ॥ ३ ॥ ६ ॥ = = =

रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसा व० बोले स० शक्र दे० देवेन्द्र

॥ ७ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ ? गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ एएण आय-रक्खवण्णओ ॥ एवं सव्वेसिं इंदाण जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ तईय सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ६ ॥ *

रायगिहे नयरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो

के रूप से भर देने यह मात्र विषय है इतने रूप किसीने किये नहीं, करते नहीं व करेंगे नहीं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र को कितने हजार आत्मरक्षक देव कहे हैं ? अहो गौतम ! चम-रेंद्र को दो लाख छप्पन हजार आत्म रक्षक देव कहे हैं ऐसे ही सब भुवनपति यावत् अच्युतेंद्र तक के भिन्न २ आत्म रक्षक देव जानना अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे यह तीसरा शतकका छट्ठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥३॥६॥

को क० कितने लो० लोकपाल गो० गौतम च० चार लोकपाल प० मरूपे सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ॥ १ ॥ ए० इन भं० भगवन् च० चार लो० लोकपाल के क० कितने विमान प० मरूपे गो० गौतम च० चार वि० विमान प० मरूपे सं० सध्यप्रभ व० वरशिष्ट स० स्वयजल व० वल्गु ॥ २ ॥

कइलोगपाला पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता तंजहा-सोमे, जमे, वरुण, वेसमणे ॥ १ ॥ एएसिण भते ! चउण्ह लोगपालाणं कइविमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा प० तजहा-सझप्पभे, वरसिट्ठे, सयंजले, वग्गू ॥ २ ॥

छट्ठ उद्देशे के अंत में आत्मरक्षक देव का वर्णन कहा आगे उद्देशे में लोकपालोंका वर्णन कहते हैं राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में भगवंत पधारें परिषदा वंदन करने को आइ और धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई उस समय में श्री गौतम स्वामी श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न करनेलगे कि अहो भगवन्! शक्र देवेंद्र को कितने लोकपाल कहे हैं? अहो गौतम! शक्रेंद्र को चार लोकपाल कहे हैं उन के नाम सोम, यम, वरुण और वैश्रमण ॥ १ ॥ अहो भगवन्! उन चार लोकपालों के कितने विमान कहे हैं अहो गौतम! उन के चार विमान कहे हैं १ सोम का संध्यप्रभ २ यम का वराशिष्ट ३ वरुण का स्वयजल और ४ वैश्रमण का वल्गु ॥ २ ॥ अहो भगवन्! शक्रदेवेंद्र देवराजा

क० कहां भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा का स० संध्यप्रभ म० महाविमान गो० गौतम ज० जंबूद्वीप के म० मेरु पर्वत की दा० दक्षिण में इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के ब० बहुत स० समरमणीय भूमिभाग से उ० ऊर्ध्व च० चंद्र सू० सूर्य ग० ग्रह ग० समुह न० नक्षत्र ता० तारे व० बहुत जो० योजन जा० यावत् प० पांच अ० अवतंसक अ० अशोक अवतंसक स०सप्तपर्ण अवतंसक चं० चंपक अवतंसक चू० च्युत अवतंसक म० मध्य में सो० सौधर्म अवतंसक त० उस सो० सौधर्म अव-

कहिण भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सझप्पभे णाम महावि-
माणे प० ? गोयमा ! जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए
पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारा -
रूवाणं बहूइं जोयणाइं जाव पंच वडंसया प० तंजहा-असोयवडंसए, सत्तिवण्ण वडं-
सए, चंपयवडंसए, चूयवडंसए, मज्झे सोहम्म वडंसए ॥ तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स

का सोम नामक लोकपाल का संध्यप्रभ नामक विमान किस स्थान पर है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण दिशामें रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत मध्य भाग से बहुत योजन ऊंचे चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे रहे हुवे हैं वहां से सो, हजार, क्रोड व क्रोड क्रोड योजन उपर ऊंचे सौधर्म देवलोक रहा हुवा है वह पूर्व पश्चिम लम्बा व उत्तर दक्षिण चौडा, अर्धचंद्रमा के आकार वाला महातेजवाला देदीप्यमान असंख्यात

संसक म० महाविमान की पु० पूर्व में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असंख्यात योजन वी० अतिक्रमकर ए० यहां स० शक्र दे० देवेन्द्र का सो० सोम म० महाराजा का म० सध्यप्रभ म० महाविमान अ० अर्ध ते० तेरह जो० योजन स० लाख आ० लम्बा वि० चौडा उ० गुनचालीस जो० योजन -ल० लाख बा० बावन स० सहस्र अ० आठ अ० अडतालीस जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक

महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं सोहम्मेकप्पे असंखेज्जाइं जोयणाइं वीइवइत्ता एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभेनामं महाविमाणे प० अद्धते-रस जोयण सय सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं उयालीस जोयणसयसहस्साइं बाव-ण्णचसहस्साइं अट्ठ अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥

योजन का लम्बा चौडा व असंख्यात योजन की परिधि वाला है उस में बत्तीस लाख विमान हैं वे सब रत्नमय निर्मल यावत् दर्शनीय हैं उस के बहुत मध्य भाग में पांच विमानों में मुकुट समान श्रेष्ठ पांच महा विमान हैं जिन के नाम १ अशोकावतंसक २ सप्तपर्णावतंसक ३ चम्पकावतंसक ४ चूतावतंसक और ५ मध्य में सौधर्मावतंसक विमान हैं उस सौधर्मावतंसक विमान से पूर्व में असंख्यात योजन आगे जाते वहां शक्र देवेन्द्र का सोम नामक लोकपाल का सन्ध्याप्रभ नामक विमान कहा है यह साडेबारह लाख योजन का लम्बा चौडा है उस की परिधि ३९५२८४८ योजन से कुछ अधिक की है इस का सब वर्णन

प० परिधि ज० जैसे सू० सूर्याभ वि० विमान की व० वक्तव्यता सा० वह अ० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् अ० अभिषेक न० विशेष सो० सोमदेव ॥ १ ॥ स० सध्यप्रभ म० महाविमान की अ० नीचे स० दिशा स० विदिशा में अ० असंख्यात जो० योजन स० लाख ओ० अवगाहकर स० शक्र दे० देवेन्द्र का सो० सोम म० महाराजा की सो० सोमा रा० राज्यधानी ए० एक जो० योजन स० लाख आ० लंबी वि० चौडी जं० जंबुद्वीप प्रमाण वे० वैमानिक के प० प्रमाण से अ० अर्ध ने० जानना जा०

जहेव सूरियाभ विमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अभिसेयो। नवरं सोमे देवे ॥ १ ॥ संझप्पभस्सणं महाविमाणस्स अहे सपक्खिं सपडिदिसिं असखेज्जाइं जोयण सय सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्समहारण्णो सोमानाम रायहाणी पण्णत्ता, एग जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेण जम्बूदीव

सूर्याभ देवता के विमान का अधिकार में जैसा कहा है वैसे ही कहना मात्र यहां सोम देव कहना ॥ १ ॥ इस संध्यप्रभ विमान से असंख्यात योजन नीचे अवगाहकर चारों विदिशि में जावे तो वहां शक्र देवेंद्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कही है एक लक्ष योजन की लम्बी व चौडी है इस में प्रासाद द्वारादिक के सब प्रमाण सौधर्म देवलोक के प्रासादिक से आधा है अर्थात् १५० योजन का कोट है, २५० योजन का प्रासाद ऊंचा है. चारों [illegible] —जने के हैं, इस के परिवारवाले १३

यावत् उ० चौकी पीठ सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र भा० मये वि० चौडे प० पचास स०सहस्र योजन पं० पांच स० सत्तानव जो० योजन स० शत कि० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि पा० प्रासाद की च० च्यार प० परिपाटी ने० जानना से० शेप न० नहीं है ॥४॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि०निर्देश में चि० रहे सो० सोमनिकाय मो० सोमदेव निकाय वि० विद्युत्कुमार वि० विद्युत्कुमारी अ० अग्निकुमार

प्पमाणा वेमाणियाणं पमाणस्स अद्ध नेयव्वं जाव उवगारियलेण सोलस जोयण सहस्साई आयाम विक्खंभेणं पण्णास जोयण सहस्साइं पचय सताणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणंप०।पासायाणंचत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ सेसानत्थि।४।सक्करसण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठंति तजहा सोमकाइयाइवा, सोमदेवयकाइयाइवा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा,

विमान ६२॥ योजन के हैं और परिवारवाले ६४ विमान ३१। योजन के हैं यावत् वे सोलह हजार योजन के लम्बे चौडे कहे हैं ५०५२७ योजन से कुछ अधिक की परिधि कही है इस में सौधर्म सभा, उत्पत्ति स्थान, व्यवसाय सभा वगैरह नहीं है ॥ ४ ॥ शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा की आज्ञा, उपपात व निर्देश में सोम महाराजा की जाति के देव, सोम देव की जाति के देव, विद्युत कुमार, अग्नि कुमार व

अ० अग्निकुमारी वा० वायुकुमार वा० वायुकुमारी च० चद्र सू० सूर्य ग० ग्रह न० नक्षत्र ता० तारा जे० जो अ० अन्य त० तथा प्रकार स० सर्व ते० व उ० उन के सेवक त० उन के साहायक त० उन की भार्या जैसे स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे ॥ ५ ॥ ज० जम्बूद्वीप में म० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होते हैं त० यह ज० जैसे ग० ग्रहदंड ग० ग्रहमुशल ग० ग्रह गर्जना ग० ग्रहयुद्ध ग० ग्रह शृगा-

अग्गिकुमारीओ, वायुकुमारा, वायुकुमारीओ, चदा, सूरा, गहा, नक्खत्ता, तारारूवा, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया तप्पक्खिया तब्भारिया ॥ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा उववाय वयणनिद्देसे चिट्ठंति ॥ ५ ॥ जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण जाइं इमाइं समुप्पज्जंति त० गहदडाइवा, गहमुस-

वायुकुमार जाति के देव देवियों और चद्र सूर्य, ग्रह, नक्षत्र तारे व ऐसे अन्य भी देव रहते हैं वे सोम महाराजा की भक्ति करते हैं, उन के पक्ष में रहते हैं, उन से बताया हुवा कार्य पूर्ण करते हैं इस तरह से उन की आज्ञा में प्रवर्तते हैं ॥ ५ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में जब दंड की तरह तीच्छे श्रेणी बन्ध मंगलादि तीन चार ग्रह का दंडाकार होवे, मूशल जैसे उपर नीचे श्रेणीरूप ग्रह होवे,

पावत् उ० चौकी पीठ सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लम्बे वि० चौडे प० पचास स०सहस्र योजन पं० पांच स० सत्तानव जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषक्रम प० परिधि पा० प्रासाद की च० चार प० परिपाटी ने० जानना से० शेष न० नहीं है ॥४॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि०निर्देश में चि० रहे सो० सोमनिकाय सो० सोमदेव निकाय वि० विद्युत्कुमार वि० विद्युत्कुमारी अ० अग्निकुमार

प्पमाणा वेमाणियाणं पमाणस्स अद्ध नेयव्व जाव उवगारियलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं पण्णास जोयण सहस्साइं पचय सताणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणप०।पासायाणंचत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ सेसानत्थि।४।सक्करस्सण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठति तजहा सोमकाइयाइवा, सोमदेवयकाइयाइवा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा,

विमान ६२॥ योजन के हैं और परिवारवाले ६४ विमान ३१। योजन के हैं यावत् वे सोलह हजार योजन के लम्बे चौडे कहे हैं ५०५९७ योजन से कुछ अधिक की परिधि कही है. इस में सौधर्म सभा, उत्पत्ति स्थान, व्यवसाय सभा वगैरह नहीं है ॥ ४ ॥ शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा की आज्ञा, उपपात व निर्देश में सोम महाराजा की जाति के देव, सोम देव की जाति के देव, विद्युत् कुमार, अग्नि कुमार व

अ० अमोघ पा० पूर्वका वायु प० पश्चिम का वायु अ० यावत् स० सम्वर्तक वायु गा० ग्राम में दा० अग्नि जा० यावत् स० सन्निवेश में दा० अग्नि पा० प्राणक्षय ज० जनक्षय ध० धनक्षय कु० कुलक्षय व० व्यसन भूत अ० अनार्य जे० जो अ० अन्य त० तथा प्रकार स० शक्र दे० देवेन्द्र का सो० सोम म० महाराजा का

जाव संवट्टयवायाइवा, गामदाहाइवा, जाव सन्निवेसदाहाइवा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया अणारिया जेयावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया, अदिट्ठा, असुया, अमुया, अवि-

श्वेत वर्ण से धूम्र पड़े दिशा का रजस्वलपना होवे, चंद्र ग्रहण होवे, सूर्य ग्रहण होवे, चंद्र की चारों बाजु में कुंडाला, सूर्य की चारों बाजु में कुंडाला, दो चंद्र देखने में आवे, दो सूर्य देखने में आवे, इन्द्र धनुष्य होवे, इन्द्र धनुष्य के खंड होवे, बद्दल रहित आकाश में कपिहसन समान विद्युत् होवे, सूर्य के उदय व अस्त समय में किरणों के विकार से रक्त कृष्णवर्ण वाले गाडे की धूरीके आकारवाला दंड होवे, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की वायु सम्वर्तक होवे, ग्राम दाह यावत् सन्निवेश दाह वगैरह लक्षण होवे सब प्राणियों का, बल का, मनुष्य का, धन का, कुल का क्षय होवे, आपत्ति में पड़े, अनार्य लोगों का आगमन होवे वगैरह अनेक प्रकार के उपद्रव होवे उक्त बातों शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा से अजानपने से नहीं हैं, विना देखी, विना सुनी, स्मरण विना की, या अवधि ज्ञान से नहीं देखी वैसी नहीं हैं

रक ग० ग्रहा का अ० बद्दल होवे अ० बद्दल के वृक्ष होवे स० संध्या होवे ग० गंधर्व नगर होवे उ० उल्का पात होवे दि० दिशा में दाह होवे ग० गर्जना वि०विजली होवे ध० धूलकी वु० वर्षा होवे जु०बाल चन्द्र ज० जपतर से अग्नि ध० धूमर म० मीहिका र० दिशाका रजस्वलपना चं० चंद्रका ग्रहण सू०सूर्य का उ०उपराग चं०चंद्र परिवेष सू०सूर्यपरिवेष प०प्रतिचंद्र प०प्रतिसूर्य इ०इंद्र धनुष्य उ०बहुत इन्द्रधनुष्य के खण्ड क०कपिहसन

लाइवा, गहगज्जियाइवा, एवं गहजुद्धाइवा, गहसिंघाडगाइवा गहावसव्वाइवा, अब्भ-रुक्खाइवा, अब्भाइवा, संझाइवा, गंधव्वनगराइवा, उक्कापायाइवा, दिसादाहाइवा, गज्जियाइवा, विज्जुयाइवा, पंसुवुट्ठीइवा, जुवजक्खालित्तय, धूमियमहियरउग्घाय, चंदोवरागाइवा, सूरोवरागाइवा, चंद परिवेसाइवा, सूरपरिवेसाइवा, पडिचंदयाइवा, प-डिसूराइवा, इंदधणूइवा, उदगमच्छकहसियअमोह पाईणवायाइवा, पडीण

ग्रह चलने से मेघ समान गर्जना होवे, एक नक्षत्र में दक्षिण उत्तर श्रेणि के ग्रह का रहना सो ग्रह युद्ध होवे, शृंगाटक के आकार से ग्रह होवे, ग्रह पीछे जावे, बद्दल होवे, वृक्षाकार बद्दल होवे, संध्या फूले, आकाश में व्यंतर के बनाये हुवे नगर होवे, उद्योत सहित ताराओं का पडना ऐसा उल्कापात होवे, दिशाओं में रक्त-पीत समान रंगदाका दाह होवे, मध्यान्ह की गर्जना होवे विद्युतका उद्योत होवे, रजोवृष्टि होवे, प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीयाके दिन भी चन्द्र रहे वहां तक संध्या फूली हुई रहे, व्यंतरोंने किया हुवा अग्नि आकाशमें रहे, धूमर पडे,

सो० सोम महाराजा ॥ ७ ॥ क० कहां ज० जप म० महाराजा का व० वराशिष्ठ म० महाविमान प० परूपा गो० गौतम सो० सौधर्म अवतसक म० महाविमान की दा० दक्षिण में सो० सौधर्म देवलोक की अ० असंख्यात जो० योजन वी० व्यतिक्रान्त हुवे ए० तहां स०शक्र के ज०यमका व०वराशिष्ठ वि० विमान प० परूपा अ० अर्ध ते० तेरह जो० योजन स० लाख ज० जैसे सो० सोम का वि० विमान त० तैसे

एग पलिओवमाठिई पण्णत्ता ए महिड्डीए जाव ए महाणुभागे सोमे महाराया ॥ ७ ॥ कहिण भंते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठणाम महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोहम्मवडसयस्स महाविमाणस्स दाहिणेण सोहम्मे कप्पे अ-सखेज्जाइ जोयण सहस्साइं वीईवइत्ता एत्थण सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठेनाम विमाणे पण्णत्ते अद्धतेरस्स जोयण सयसहस्साइ जहा सोमस्स

पूर्व दिशा के लोकपाल सोम की यह ऋद्धि और यह विवक्षा की है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र के यम महाराजा का वराशिष्ठ नामक महा विमान कहां कहा है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतसक नामक महा विमान से दक्षिण में असंख्यात योजन जावे तब वहां यम महाराजा का वराशिष्ठ नामक विमान कहा है यह साढे बारह योजन का लम्बा चौडा वगैरह सोम महाराजा का

अ० अजान अ० अदृष्ट अ० नहीं सुना अ० नहीं स्मरा अ० नहीं जाना ॥ ६ ॥ ते० उन सो० सोम निकाय स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा को इ० यह अ०अपत्यदेव अ० जानेहुवे हो० थे इं० अंगारक वि० वैताल लो० लोहिताक्ष स० शनैश्चर चं० चन्द्र सू० सूर्य शु० शुक्र बु० बुध ब०बृहस्पति रा० राहु स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराज की स० तीनभाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० अपत्यदेव की ए० एक प० पल्योपम की ठि० स्थिति म० महर्द्धिक जा० यावत् म०महानुभाग

ण्णाया ॥ ६ ॥ तेसिंवा सोमकाइयाण सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे अहावच्चादेवा अभिण्णाया होत्था तजहा-इंगालए, वियालए, लोहियक्खे, सणिंचरे, चदे, सूरे, सुक्के, बुहे, बहस्सई, राहु ॥ सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सइभाग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाण देवाण

अर्थात् सोम महाराजा उक्त सब बातों को जानते हैं यावत् देखते हैं ॥ ६ ॥ उन शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा को पुत्रवत् आज्ञा पालनेवाले मंगल, केतु, लोहिताक्ष, शनैश्चर, चंद्र, सूर्य, शुक्र बृहस्पति, राहु नामक देव हैं उन की स्थिति एक पल्योपम व एक पल्योपम के तीन भाग में का एक भाग अधिक की कही और उन के अपत्य स्थान जो देव हैं उन की एक पल्योपम की स्थिति कही + अहो गौतम !

+ यद्यपि चंद्र की एक लक्ष वर्ष अधिक व सूर्य की एक सहस्र वर्ष अधिक की स्थिति कही है परंतु यहां पर अधिकता की विवक्षा नहीं की गई है

इ० इसे स० उत्पन्न करते हैं डिं० विघ्नहोवे ड० राजकुमार कृत उपद्रव क० कलह बो० महाअग्नि होवे खा० मत्सर होवे म० महायुद्ध होवे म० महासंग्राम होवे म० बडे नि०पडे ए०ऐसे म० महान् पुरुषका नि० पडे म० बहुतरुधिर नि० पडे दु० दुर्भव कु० कुलरोग होवे गा० ग्रामरोग होवे मं० मंडलरोग न० नगर रोग सी० शीर्ष अ० अक्षि क० कर्ण न० नख द० दांत वे०वेदना इ० इंद्रग्रह ख० स्कन्धग्रह कु० कुमारग्रह ज० यक्षग्रह भू० भूतग्रह ए० ज्वरविशेष बे०दो दिनांतर ते० तीन दिनांतर चा० चार दिनांतर उ० उद्वेग

इमाई समुप्पज्जति, तजहा-डिम्बाइवा, डमराइवा, कलहाइवा, बोलाइवा, खाराइवा, महाजुद्धाइवा, महासंगामाइवा, महासत्थ निवडणाइवा, एव महापुरिस निवणाइवा, महारुहिर निवडणाइवा, दुब्भुयाइवा, कुलरोगाइवा, गामरोगाइवा, मडलरोगाइवा, नगररोगा सीस-अच्छि कण्ण-नह-दंत-वेयणा, इदग्गहा, खदग्गहाइवा, कुमारग्गह, जक्खग्गह, भूयग्गह एगाहियाइवा, बेहिय, तेहिय चाउत्थयाइवा, उव्वेगाइवा, का-

क्लेश वृद्धि करनेवाले शब्दोच्चार, परस्पर कुमप, महायुद्ध, महा संग्राम,महा शस्त्रका निपात, महा पुरुष का काल होना, महा रुधिर का पडना, सर्प वृश्चिकादिक की उत्पत्ति, कुल में क्षय रूप रोग, ग्राम में क्षय रूप रोग, बहुत ग्राम के मनुष्यों में क्षय रूप रोग, नगर जन में क्षय रूप रोग, मस्तक, आंख, कर्ण, नख व दांत की वेदना, इन्द्र ग्रहादिके उपद्रव, स्कंध देवादि के उपद्रव, कुमार ग्रह, यक्ष ग्रह, भूतग्रह के उपद्रव, एकान्तर

जा० यावत् अ० अभिषेक रा० राज्यधानी त० तैसे जा० यावत् पा० प्रासादपंक्ति ॥ ८ ॥ स० शक्र के ज० यम के इं०ये दे०देव आ०आज्ञा उ०उपपात जा०यावत् चि०रहे ज०यम के परिवार ज०यम के सामानिक के परिवार अ० असुर कुमार अ० असुर कुमारी क० कंदर्प नि० नरक रक्षक अ० अभियोग जे० जो अ० अन्य त० तथा प्रकार स० सर्व ते० वे ॥ ९ ॥ ज० जम्बूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में

त्रिमाणं तहा जाव अभिसेओ रायहाणी तहेव जाव पासायपतीओ ॥ ८ ॥ सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा उववाय जाव चिट्ठति, तंजहा-जमकाइयाइवा, जमदेवयकाइयाइवा, पेयकाइयाइवा, पेयदेवकाइयाइवा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कंदप्पा निरयपाला, अभियोगा, जेयावण्णे तहप्पगारा, सव्वे ते तब्भत्तिया तप्पक्खिया, तब्भारिया, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो, ॥ ९ ॥ जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं

विमान जैसे कहना ॥ ८ ॥ यम कायिक, यमदेव कायिक, प्रेत कायिक, प्रेतदेव कायिक, असुर कुमार, असुर कुमार की देवियों, कंदर्प, नरकपाल, अभियोगिक-सेवक और भी ऐसे अन्य देव यम महाराजा की आज्ञा, निर्देश व उपपात में रहते हैं, वैसे ही वे उन का पक्ष धारन करते हैं, और उन की भार्या की समान सेवा करते हैं ॥ ९ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में विघ्न, एक रामकुमारादिकृत उपद्रव,

अनार्य ॥ १० ॥ इ० ये दे० देव अ० यथा अपत्य अ० जाने हो० थे अ० अम्ब अम्बरिप सा० श्याम स० सबल रु० रुद्र वे० वैरुद्र का० काल म० महाकाल अ० असिपत्र ध० धनुष्य कुं० कुंभ वा० वालुक वे० वैतरणी ख० खर स्वर म० महाघोप प० पन्नरह आ० कहे ज० यम म० महाराजा की स० तीन भाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० यथाअपत्य की ए० एक प० पल्योपम की म० महर्द्धिक जा० यावत्

ण्णे तहप्पगारा न ते सक्कस्स दाविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया ॥१०॥ तेसिंवा जमकाइयाणं देवाणं सक्कस्स जमस्स इमेदेवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तजहा-अंबे, अंबरिसे चेव, सामे, सबलेत्तियावरे, रुद्दे, वरुद्दे, कालेय, महाकाले त्तियावरे (१) असिपत्ते, धणूकुंभे वालुया, वेयरणीतिय, खरस्सरे, महाघोसे, एमेपण्णरसाहिया। सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो जम्मस्स महारणो सति भाग पलिओवम ठिई पन्नत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाण देवाणं एग पलिओवम ठिई पन्नत्ता। ए माहिड्ढीए जाव

गुप्त नहीं होती है इन को जानते हैं, देखते हैं, व स्मरण करते हैं ॥ १० ॥ अम्ब, अम्बरिश, साम, सबल, रुद्र, वैरुद्र, काल, महाकाल, असिपत्र, धनुष्य, कुंभ, वालुक, वैतरणी, खरस्वर और महाघोप ये पंद्रह परमाधर्मी यम महाराजा को अपत्यवत् विनयवंत रहते हैं यम महाराजा की एक पल्योपम और एक पल्योपम के तीसरे भाग अधिक की स्थिति कही है उन के पुत्र स्थान कार्य करनेवाले देव की एक

का० काम खा० खासी सा० श्वास ज० ज्वर दा० दाह क० कच्छ को० कोढ अ० अजीर्ण प० पांडुरोग अ० हरसरोग भ० भगंदर हि० हृदयशूल म०मस्तकशूल जो० योनिशूल पा० पसली शूल कु० कुक्षिशूल गा० ग्राममरकी न० नगर खे० खेड क० कर्बट दो० द्रोणमुख म० मडप प० पट्टण आ० आश्रम स० सवाह स० सन्निवेश मरकी पा० प्राणक्षय ध० धनक्षय ज० मनक्षय कु० कुलक्षय व० वसनभूत अ०

साइवा, खासाइवा, जराइवा, दाहाइवा, कच्छ कोढाइवा, अजीरया, पडुरोगा, अग्साइवा, भगदलाइवा, हियय सूलाइवा मत्थय सूलाइवा, जोणिसूल, पाससुल, कुच्छिसूल, गाममारीइवा, नगर खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव पट्टण-आसमसवाह-सण्णिवेस मारीइवा, पाणक्खय, धणक्खय-जणक्खय-कुलक्खय-वसणब्भूयमणारिया जेयाव-

ज्वर, दो दिनांतर ज्वर, तीन दिनांतर ज्वर, चार दिनांतर ज्वर, इष्ट के वियोग से उद्वेग, श्वास, खांसी, ज्वर, दाह, कच्छ, कोढ, अजीर्ण, पांडुराग, हरस (मसा) भगंदर, हृदय शूल, मस्तक शूल, योनि शूल, पसली शूल, कुक्षि शूल, ग्राम की मारी, नगर, खेड, कर्बट, द्रोण मुख, मडप, पट्टण, आश्रम सवाह व सन्निवेश में मरकी, प्राणियों का क्षय, धन का क्षय, मनुष्योंका क्षय, गृहों का क्षय, वस्त्राभूषणोंका क्षय, व अनार्य म्लेच्छ लोगों का आगमन होवे वैसे, ही अन्य भी ऐसे उपद्रव होवे उक्त बातों यह महाराजा से

अनार्य ॥ १० ॥ इ० ये दे० देव अ० यथा अपत्य अ० जाने हो० थे अ० अंब अंबरिप सा० श्याम स० सबल रु० रुद्र वे० वैरुद्र का० काल म० महाकाल अ० असिपत्र ध० धनुष्य कु० कुंभ वा० वालुक वे० वैतरणी ख० खर स्वर म० महाघोप प० पन्नरह आ० कहे ज० यम म० महाराजा की स० तीन भाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० यथाअपत्य की ए० एक प० पल्योपम की म० महर्द्धिक जा० यावत्

ण्णे तहप्पगारा न ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया ॥१०॥ तेसिंवा जमकाइयाणं देवाणं सक्कस्स जमस्स इमेदेवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तजहा-अंबे, अंबरिसे चेव, सामे, सबलत्तियावरे, रुद्दे, वरुद्दे, कालेय, महाकाले त्तियावरे (१) असिपत्ते, धणूकुंभे वालुया, वेयरणीतिय, खरस्सरे, महाघोसे, एमेपण्णर साहिया। सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो जम्मस्स महारणो सति भाग पलिओवम ठिई पन्नत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाण देवाण एग पलिओवम ठिई पन्नत्ता। ए माहिड्डीए जाव

गुप्त नहीं होती है इन को जानते हैं, देखते हैं व स्मरण करते हैं ॥ १० ॥ अम्ब, अम्बारिश, साम, सबल, रुद्र, वैरुद्र, काल, महाकाल, असिपत्र, धनुष्य, कुंभ, वालुक, वैतरणी, खरस्वर और महाघोप ये पंद्रह परमाधर्मी यम महाराजा को अपत्यवत् विनयवंत रहते हैं यम महाराजा की एक पल्योपम और एक पल्योपम के तीसरे भाग अधिक की स्थिति कही है उन के पुत्र स्थान कार्य करनेवाले देव की एक

का० काम खा० खासी सा० श्वास ज० ज्वर दा० दाह क० कच्छ को० कोढ अ० अजीर्ण प० पांडुरोग भ० हरसरोग भ० भगंदर हि० हृदयशूल म० मस्तकशूल जो० योनिशूल पा० पसली शूल कु० कुक्षिशूल गा० ग्राममरकी न० नगर खे० खेड क० कर्बट दो० द्रोणमुख म० मडंप प० पाटण आ० आश्रम स० सवाह स० सन्निवेश मरकी पा० प्राणक्षय ध० धनक्षय ज० जनक्षय कु० कुलक्षय व० वसनभूत अ०

साइवा, खासाइवा, जराइवा, दाहाइवा, कच्छ कोहाइवा, अजीरया, पडुरोगा, अरसाइवा, भगदलाइवा, हियय सूलाइवा मत्थय सूलाइवा, जोणिसूल, पासमु ऊ, कुच्छिसूल, गाममारीइवा, नगर खेड-कब्बड-दोणमुह-मडब पट्टण-आसमसवाह-सण्णिवेस मारीइवा, पाणक्खय, धणक्खय-जणक्खय-कुलक्खय-वसणब्भूयमणारिया जेयाव-

ज्वर, दो दिनांतर ज्वर, तीन दिनांतर ज्वर, चार दिनांतर ज्वर, इष्ट के वियोग से उद्वेग, श्वास, खांसी, ज्वर, दाह, कच्छ, कोढ, अजीर्ण, पांडुरोग, हरस (मसा) भगंदर, हृदय शूल, मस्तक शूल, योनि शूल, पसली शूल, कुक्षि शूल, ग्राम की मारी, नगर, खेड, कर्बट, द्रोण मुख, मडंप, पट्टण, आश्रम, सवाह व सन्निवेश में मरकी, प्राणियों का क्षय, धन का क्षय, मनुष्योंका क्षय, गृहों का क्षय, वस्त्राभूषणोंका क्षय, व अनार्य म्लेच्छ लोगों का आगमन होवे वैसे, ही अन्य भी ऐसे उपद्रव होवे उक्त बातों पर महाराजा से

कुमार नां० नाग कुमारी उ० उदधिकुमार उ० उदधिकुमारी थ० स्थनित कुमार थ० स्थनित कुमारी जे० जो अ० अन्य त० तथारूप स० सर्व ते० वे उ० उन के सेवक जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १३ ॥ जं० जम्बूद्वीप के म० मेरु की दा०दक्षिण में जा०जो इ० ये स० उत्पन्न होवे अ० अतिवृष्टि म० मदवृष्टि सु० सुवृष्टि दु० खराब वृष्टि उ० पानीका उद्भेद उ० तलावादि भरावे उ० थोडा पानी वहे उ० बहुत पानी वहे प० प्रवाहचले गा० ग्राम में पानीचले जा० यावत् स० सन्निवेश में पानी चले पा० प्राणक्षय जा०

नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीओ, थणियकुमारा, थणियकुमारीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया जाव चिट्ठति ॥ १३ ॥ जंबुद्दीवेदीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण जाइ इमाइ समुप्पज्जति, तंजहा-अइवासाइवा, मदवासाइवा, सुवुट्ठीइवा, दुवुट्ठीइवा, उदुब्भेयाइवा, उदप्पीलाइवा, उदवाहाइवा, पवाहाइवा, गामवाहाइवा, जाव सन्निवेसवाहाइवा, पाणक्खया जाव तेसिं वा,

कुमार, उदधि कुमारियों स्थनित कुमार व स्थनित कुमारियों यावत् उनका भार्यासमान कार्य करते हैं ॥१३॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी दक्षिणमें अतिवृष्टि, मदवृष्टि, सुवृष्टि,दुवृष्टि,पर्वतकेतट व नदियोंमें पानीका चलना,तलावादिक भर कर पानी का चलना, थोडा पानी चलना, बहुत पानी चलना, ग्राम यावत् सन्निवेश वह जावे इतना पानी चलना वगैरह होवे इस से प्राणियों का क्षय यावत् धन वगैरह का क्षय होवे यह सब वरुण

ज० यम प० महाराजा ॥ ११ ॥ क० कहां भं० भगवन् व० वरुण म० महाराजा का स० स्वयं जल म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्म अवतमक म० महाविमान की प० पश्चिम में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असंख्यात जा० यावत् ज० जैसे सो० सोम का त० तैसे वि० विमान राज्यधानी भा० कहना जा० यावत् पा० प्रासाद अवतमक ण० विशेष ना० नाम ना० नाना प्रकार ॥ १२ ॥ व० वरुण के जा० यावत चि० रहते हैं व० वरुण का परिवार व० वरुण के० सामानिक का परिवार ना० नाग

जमे महाराया महाराया ॥११॥ कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारन्नो, सयंजले नामं महाविमाणे पन्नते ? गोयमा ! तस्सण सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सोहम्मेकप्पे असखेज्जाइं, जहा सोमस्स तहा विमाण रायहाणीओ भाणियव्वा जाव पासाय वडंसया णवरं नामं नाणत्तं ॥ १२ ॥ सक्कस्सणं वरुणस्सण जाव चिट्ठति तंजहा-वरुणकाइयाइवा, वरुणदेवकाइयाइवा,

पल्योपम की स्थिति कही है इस तरह अहो गौतम ! यह महर्द्धिक यावत् महाराजा है ॥११॥ अहो भगवन्! शक्र देवेन्द्र के वरुण नामक महाराजा का सर्वजला नामक महाविमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्मावतंसक विमान की पश्चिम में असंख्यात योजन जावे वहां वरुण महाराजा की सर्वजला नामक राज्यधानी कही उसका वर्णन सोममहाराजा जैसे करना॥१२॥वरुण कायिक,वरुणदेव कायिक,नागकुमार,नागकुमारियों, सुवर्ण

कुमार ना० नाग कुमारी व० उदधिकुमार उ० उदधिकुमारी थ० स्थनित कुमार थ० स्थनित कुमारी जे० जो अ० अन्य त० तथारूप स० सर्व ते० वे उ० उन के सेवक जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १३ ॥ जं० जंबूद्वीप के म० मेरु की दा०दक्षिण में जा०जो इ० ये स० उत्पन्न होवे अ० अतिवृष्टि म० मदवृष्टि सु० सुवृष्टि दु० खराब वृष्टि उ० पानीका उद्भेद उ० तलावादि भरावे उ० थोडा पानी वहे उ० बहुत पानी वहे प० प्रवाहचले गा० ग्राम में पानीचले जा० यावत् स सन्निवेश में पानी चले पा० माणक्षय जा०

नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीओ, थणियकुमारा, थणियकुमारीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया जाव चिट्ठति ॥ १३ ॥ जबुदीवेदीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण जाइ इमाइ समुप्पज्जति, तजहा-अइवासाइवा, मदवासाइवा, सुवुट्ठीइवा, दुवुट्ठीइवा, उदुब्भेयाइवा, उदप्पीलाइवा, उदवाहाइवा, पवाहाइवा, गामवाहाइवा, जाव सन्निवेसवाहाइवा, पाणक्खया जाव तेसिं वा,

कुमार, उदधि कुमारियों, स्थनित कुमार व स्थनित कुमारियों यावत् उनका भार्यासमान कार्य करते हैं ॥१३॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी दक्षिणमें अतिवृष्टि, मदवृष्टि, सुवृष्टि,दुवृष्टि,पर्वतकेतट व नदियोंमें पानीका चलना,तलावादिक भर कर पानी का चलना, थोडा पानी चलना, बहुत पानी चलना, ग्राम यावत् सन्निवेश वह जावे इतना पानी चलना वगैरह होवे इस से प्राणियों का क्षय यावत् धन वगैरह का क्षय होवे यह सब वरुण

ज० यम प० महाराजा ॥ ११ ॥ क० कहां भं० भगवन् व० वरुण म० महाराजा का स० स्वयं जल म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्म अवतमक म० महाविमान की प० पश्चिम में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असख्यात ना० यावत् ज० जैसे सो० सोम का त० तैसे वि० विमान राज्यधानी भा० कहना जा० यावत् पा० प्रासाद अवतमक प० विशेष ना० नाम ना० नाना प्रकार ॥ १२ ॥ व० वरुण के जा० यावत चि० रहते हैं प० वरुण का परिवार व० वरुण के० सामानिक का परिवार ना० नाग

जमे महाराया महाराया ॥११॥ कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारन्नो, सयंजले नामं महाविमाणे पन्नते ? गोयमा ! तस्सण सोहम्मवडसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सोहम्मेकप्पे असखेज्जाइं, जहा सोमस्स तहा विमाण रायहाणीओ भाणियव्वा जाव पासाय वडंसया णवरं नाम नाणत्त ॥ १२ ॥ सक्कस्सण वरुणस्सण जाव चिट्ठति तंजहा-वरुणकाइयाइवा, वरुणदेवकाइयाइवा,

पल्योपम की स्थिति कही है इस तरह अहो गौतम ! यह महर्द्धिक यावत् महाराजा है ॥११॥ अहो भगवन्! शक्र देवेन्द्र के वरुण नामक महाराजा का स्वयंजल नामक महाविमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्मावतंसक विमान की पश्चिम में असंख्यात योजन जावे वहां वरुण महाराजा की स्वयंजला नामक राज्यधानी कही इसका वर्णन सोममहाराजा जैसे करना॥१२॥वरुण कायिक,वरुणदेव कायिक नागकुमार,नागकुमारियों

के० वल्गु ना० नाम का म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्मावतसक म० महाविमान की उ० उत्तर में ज० जैसे सो० सोम वि० विमान की रा०राज्यधानी की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् पा० प्रासादावतंसक ॥ १८ ॥ स० शक्र के वे० वैश्रमण को इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहते हैं वे० वैश्रमण कायिक वे० वैश्रमण देव कायिक सु० सुवर्ण कुमार सु० सुवर्ण कुमारिका दी० द्वीपकुमार दी० द्वीप कुमारी का दि० दिशाकुमार दि० दिशा कुमारी का वा०

महाविमाणे प० ? गोयमा ! तस्सण सोहम्मवडसयस्स महाविमाणस्स उत्तरेण जहा सोमस्स विमाणस्स रायहाणियवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडसया ॥१५॥ सक्कस्सण वेसमणस्स इमे देवा आणाउववायवयणानिद्देसे चिट्ठति, तजहा-वेसमण काइयाइवा, वेसमणदेवकाइयाइवा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, दीवकुमारा,

मण महाराजा का वल्गु नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतसक महाविमान की उत्तर में असंख्यात योजन जावे वहां वल्गु नाम का महा विमान आता है उस का सब वर्णन सोम महाराजा की राज्यधानी जैसे कहना ॥ १८ ॥ वैश्रमण कायिक, वैश्रमण देवकायिक, सुवर्ण कुमार, द्वीप कुमार, दिशा कुमार व वाणव्यंतर देव व उन की देवियों वैश्रमण महाराजा की

यावत् दे० उन व० वरुण के० जा० यावत् अ० यथा अपत्य क० कर्कोटक क० कर्दम अं० अंजन स० शंखपाल पु० पुंड्र प० पलाश मो० मोज ज० जय द० दधिमुख अ० अयंपुल का० कातरिक व० वरुण की दे० देशऊणे दो० दोपल्योपम की ठि० स्थिति अ० अपत्य देव की ए० एक पल्योपम की म० महर्द्धिक प० कहे व० वरुण म० महाराजा ॥ १४ ॥ क० कहां भं० भगवन् स० शक्र के वे० वैश्रमण

वरुणकाइयाण देवाण सक्कस्सण वरुणस्स जाव अहावच्चाभिण्णाया होत्था, तंजहा-कक्कोडए, कद्दमए, अजणे, सखवालए, पुडे, पलासे, मोये, जये, दहिमुहे, अयपुले, कायरिए ॥ सक्कस्सण वरुणस्स देसूणाइ दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, अहावच्चा भिण्णायाणं देवाण एगपलिओवम ठिई पण्णत्ता, ए महिड्ढीए जाव वरुणे महाराया ॥ १४ ॥ कहिण भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गूनाम

महाराजा जानते हैं यावत याद करते हैं वरुण महाराजा को कर्कोटक, कर्दमक, अंजन, शखपाल, पुंड्र, पलाश, मोय,जय, दधिमुख, अयंपुल कातरिक नामक देवों पुत्रवत् विनयवाले आदेशमें प्रवर्तनेवाले होते हैं इन की देशऊने दो पल्योपम की स्थिति कही है, और अपत्य समान देवकी एक पल्योपम की स्थिति कही अहो गौतम ! वरुण राजा की ऐसी ऋद्धि कही है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र का वैश्र-

के० वल्गु ना० नाम का म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्मावतंसक म० महाविमान की उ० उत्तर में ज० जैसे सो० सोम वि० विमान की रा०राज्यधानी की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् पा० प्रासादावतंसक ॥ १५ ॥ स० शक्र के वे० वैश्रमण को इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहते हैं वे० वैश्रमण कायिक वे० वैश्रमण देव कायिक सु० सुवर्ण कुमार सु० सुवर्ण कुमारिका दी० द्वीपकुमार दी० द्वीप कुमारी का दि० दिशाकुमार दि० दिशा कुमारी का वा०

महाविमाणे प० ? गोयमा ! तस्सण सोहम्मवडसयस्स महाविमाणस्स उत्तरेण जहा सोमस्स विमाणस्स रायहाणियवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडसया ॥१५॥ सक्कस्सण वेसमणस्स इमे देवा आणाउववायवयणानिद्देसे चिट्ठति, तजहा-वेसमण काइयाइवा, वेसमणदेवकाइयाइवा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, दीवकुमारा,

मण महाराजा का वल्गु नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतंसक महाविमान की उत्तर में असंख्यात योजन जावे वहां वल्गु नाम का महा विमान आता है उस का सब वर्णन सोम महाराजा की राज्यधानी जैसे कहना ॥ १५ ॥ वैश्रमण कायिक, वैश्रमण देवकायिक, सुवर्ण कुमार, द्वीप कुमार, दिशा कुमार व वाणव्यंतर देव व उन की देवियों वैश्रमण महाराजा की

वाणव्यंतर वा० वाण व्यंतरी जे० जो अ० अन्य त० तैसे स० सब ए० ये त० उस की भक्तिवाले जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १८ ॥ जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होते हैं त० वह ज० जैसे अ० लोहे की खान त० चांदीकी खान त० तांबेकी खान ए० ऐसे सी० सीसे की खान हि० चांदीकी खान सु० सुवर्ण की खान र० रत्नकी खान व० वज्र रत्न की खान व० द्रव्य वृष्टि हि० चांदी सु० सुवर्ण की वर्षा र० रत्न व० वज्र आ० आभरण प० पत्र पु० पुष्प फ० फल बी० बीज म० माला व० वर्ण चु० चूर्ण ग० गंध व० वस्त्र की वा० वर्षा हि० हिरण्य की वु० वृष्टि सु० सुवर्ण

दीवकुमारीओ, दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमतरा, वाणमतरीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वेते तब्भत्तिया जाव चिट्ठति ॥१६॥ जबुद्दीवेदीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण जाइं इमाइं समुप्पज्जति तंजहा-अयागराइवा, तउयागराइवा, तबागराइवा, एव सीसागराइवा, हिरण्ण सुवण्ण रयण वइरागराइवा, वसुहाराइवा, हिरण्णवासाइवा, सुवण्णवासाइवा, रयण-वइर आभरण पत्त-पुप्फ फल-बीय मल्ल-वण्ण-चुण्ण-गध-वत्थ-

भाज्ञा, निर्देश व उपपात में रहते हैं उन की सेवा भक्ति करते हैं यावत् उनका भार्या समान कार्य करते हैं ॥ १८ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में लोहे की खान, ताम्बे की खान, सीसे की खान, हिरण्य [चांदी] की खान, सुवर्ण की खान, रत्न, वज्र, आभरण, पत्र, पुष्प, फल, बीज, माल्य, वर्ण, चूर्ण,

की र० रत्न व० वज्र आ० आभरण प० पत्र पु० पुष्प फ० फल बी० बीज म० माल्य व० वर्ण गं० गंध व० वस्त्र मा० भाजन की वु० वृष्टि खी० क्षीर की वु० वृष्टि सु० सुकाल दु० दुष्काल अ० अल्पार्घ्य म० महर्घ्य सु० सुभिक्ष दु० दुर्भिक्ष क० क्रय वि० विक्रय स० सन्निधि स० सचय नि० निधि नि० निधान चि० बहुत काल के पो० जीर्ण प० रहित सा० स्वामीवाले प० सेवक रहित प० मार्ग रहित ग० गोत्रा

वासाइवा, हिरण्णवुट्ठीइवा, सुवण्ण रयण-वइर आभरण पत्त-पुप्फ फल-बीय मल्ल-वण्ण गंध-वत्थ भायण-वुट्ठीइवा, खीरवुट्ठीइवा-सुयालाइवा, दुक्कालाइवा, अप्पुग्घाइवा, महग्घाइवा, सुभिक्खाइवा दुब्भिक्खाइवा, कयविक्कयाइवा, सन्निहीइवा, सन्निचयाइवा, निहीइवा, निहाणाइवा, चिरपोराणाइ, पहीणसामियाइवा, पहीणसेउयाइवा, पहीण-मग्गाणिवा, पहीण गोत्तागाराइवा, उच्छिण्ण सामियाइवा, उच्छिण्णसेउयाइवा, उच्छिन्नगोत्तागाराइवा, सिंघाडग तिग - चउक्क चच्चर-चउम्मुह महापह-पहेसु, नगर-

गंध व वस्त्र की वर्षा, हिरण्य, सुवर्ण, रत्न, वज्र, आभरण, यावत् वस्त्र भाजन की वृष्टि, क्षीर की वृष्टि, सुकाल, दुष्काल, अल्प मूल्य, बहु मूल्य, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, क्रयविक्रय, सचय, सग्रह, निधि, निधान, बहुत काल का संचित कियाहुवा द्रव्य, स्वामी रहित बना हुवा द्रव्य, सेवक रहित बना हुवा द्रव्य, नष्ट मार्ग, नष्ट गोत्राकार, विच्छिन्न स्वामी, विच्छिन्न सेवक, विच्छिन्न गोत्राकार वैसे ही शृंगाटक के आकार में

गार रहित उ० विछिन्न स्वामी वाले सिं० शृंगाटक ति० तीन च० चौक च० चच्चर च० चउमुख म० महापथ प० पथ में न० नगर की मोरी में सु० श्मशान में गि० पर्वत कं० गुफा स० शान्ति स्थान से० शैलोपस्थान भ० भवन गृहमें स० रखा हुवा चि० रहता है ण० नहीं ता० उसे स० शक्र दे० देवेंद्र दे० देवराजा का वे० वैश्रमण म० महाराजा अ० अज्ञात अ० अश्रुत अ० अजान अ० अविज्ञात ॥ १७ ॥ ते० उन वे० वैश्रमण कायिक दे० देवों को स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा वे० वैश्रमण को इ० ये

निद्धमणेसुवा, सुसाण गिरि कदर सति सेलोवट्ठाण भवणगिहेसु सण्णिक्खित्ताइ चिट्ठंति, ण ताइ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा, अस्सुया, अम्मुया, अविण्णाया, ॥ १७ ॥ तेसिंवा वेसमणकाइयाणं देवाण सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था,

तीन रस्ते मीले वहां, चौक, चचर, चउमुख, महापथ, राजमार्ग, नगर की नालियों में, श्मशान, गिरि, गुफा, शान्तिगृह, शैलोपस्थान, व भवनगृहमें रखा हुवा द्रव्य वगैरह होते हैं वे शक्र देवेन्द्रके वैश्रमण महाराजा से अज्ञात, अदृष्ट, अश्रुत, अविज्ञात नहीं हैं वे सब बातों जानते हैं ॥ १७ ॥ पूर्णभद्र, माणभद्र, शालिभद्र, सुवर्णभद्र, शक्ररक्ष, पूर्णरक्ष, सर्वाण, सर्वयश, सर्व कार्य समिद्ध, अमोघ असान्त वगैरह

दे०देव अ०यथाअपत्य अ०अभिज्ञात हो० हैं पु०पूर्णभद्र मा० माणिभद्र सा०शालिभद्र सु०सुमन भद्र च०चक्र रक्ष पु० पूर्णरक्ष स० सर्वाण स० सर्व यश स० सर्व कामसिद्ध अ०अमोघ अ०असान्त स०शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की व० वैश्रमण म० महाराजा की दो० दोपल्योपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी अ० यथा अपत्य अ० अभिज्ञात दे० देवों की ए० एक प० पल्योपम की ठि० स्थिति प०प्ररूपी ए० यह म०महर्द्धिक जा० यावत् वे० वैश्रमण म० महाराजा से० ऐसे ही भ० भगवन् ॥ ३ ॥ ७ ॥ =

तजहा-पुण्णभद्दे, माणिभद्दे, सालिभद्दे, सुमणभद्दे चक्करक्खे, पुण्णरक्खे, सव्वाणे, सव्वजसे, सव्वकाम समिद्धे, अमोहे, असते, ॥ सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाइ ठिई प० ॥ अहावच्चाभिण्णायाण देवाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ए महिड्ढीए जाव वेसमणे महाराया सेव भते भतेत्ति ॥ तइयसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ७ ॥ * *

वैश्रमण महाराजा को अपत्यवत् विनय करनेवाले देवों हैं उन की दो पल्योपम की स्थिति कही है और अपत्य देवों की एक पल्योपम की स्थिति कही है अहो गौतम ! यह वैश्रमण की ऋद्धि यावत् महानुभाग का वर्णन कहा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! आप जैसे फरमाते हो वैसे ही हैं यह तीसरा शतकका सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ७ ॥

रा० राजगृह न० नगर जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसे व० बोले अ० असुर कुमार भं० भगवन् दे० देव को क० कितने दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम द० दश दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं तं० वह ज० यथा च० चमर अ० असुरेन्द्र सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ब० बलि व० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन राजा ॥ १ ॥ ना० नाग

रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी- असुरकुमाराण भते देवाण कइ-देवा आहेवच्च जाव चिट्ठति ? गोयमा ! दसदेवा आहेवच्च जाव विहरंति, तजहा-चमरे असुरिंदे असुरराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥ बली वइरोयणिंदे वइरोयण-राया, सोमे, जमे वरुणे, वेसमणे ॥ १ ॥ नागकुमाराणं भते ! पुच्छा। गोयमा !

सातवे उद्देशे में लोकपालों की वक्तव्यता कही अब इस उद्देशे में देवताओं के स्वामी का कथन करते हैं राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई उस समयमें श्री श्रमण भगवत महावीर स्वामी को वदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा प्रश्न पूछने लगे कि अहो भगवन्! असुरकुमार जाति के देवों को कितने देव स्वामीपने रहते हैं? अहो गौतम ! असुर कुमार जाति के देवों को दश देव स्वामीपने रहते हैं दक्षिण दिशा के चमर नामक असुर का राजा असुरेन्द्र और सोम, यम, वरुण व वैश्रमण यह चार उन के लोकपाल उत्तर दिशा के

कुमार की पु० पृच्छा गो० गौतम द० दश दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ध० धरण ना० नागकुमारेन्द्र ना० नाग कुमार राजा का० कालवाल को० कोलवाल सं० शखवाल से० शेलवाल भू० भुतानेन्द्र ज० जैसे ना० नागकुमारेन्द्र की ए० इस व० वक्तव्यता से ए० यह ए० ऐसे इ० इनका ने० जानना ॥ २ ॥ सु० सुवर्ण कुमार का वे० वेणुदेव वे० वेणुदाल चि० चित्र वि० विचित्र

दसदेवा आहेवच्च जाव विहरति तंजहा-धरणे, नागकुमारिंदे, नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, सेलवाले, सखवाले ॥ भूयाणिंदे नागकुमारिंदे नागकुमारराया कालवाले, कोलवाले, सखवाले, सेलवाले ॥ जहा नागकुमारिंदाण एयाए वत्तव्वयाए, एत एवं इमाण नेयव्व ॥ २ ॥ सुवण्णकुमाराण वेणुदेवे, वेणुदाली, चिते, विचित्ते ।

बलि नामक वैरोचनेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक लोकपाल यह दश हुए ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नाग कुमार देव के कितने अधिपति देव कहे हैं ? अहो गौतम ! दश अधिपति देव कहे हैं दक्षिण दिशा के धरण नामक नाग कुमारेन्द्र और उन के कालवाल, कोलवाल, सखवाल व सेलवाल यह चार लोकपाल, और उत्तर दिशा के भूतानेन्द्र व उन के कालवालादि चार लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ २ ॥ सुवर्ण कुमार को दश देव अधिपतिपना करनेवाले हैं वेणुदेव और वेणुदाल ये दोनों

चि० चित्रपक्ष वि० विचित्रपक्ष वि० विद्युत्कुमार के ह० हरिकंत ह० हरिसिंह प० प्रभ सु० सुप्रभ प० प्रभकान्त सु० सुप्रभकान्त ॥ ४ ॥ अ० अग्निकुमार को अ० अग्निसिंह अ० अग्निमानव ते० तेउ ते० तेउ सिंह ते० तेउकान्त ते० तेउप्रभ ॥ ५ ॥ दी० द्वीप कुमार को पु० पूर्ण व० वसिष्ठ रू० रूप रू० रूपांश रू० रूपसिंह रू० रूपप्रभ ॥ ६ ॥ उ० उदधिकुमार को ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ज० जल ज० जल

चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे, ॥ ३ ॥ विज्जुकुमाराण-हरिकंते, हरिस्सहे पभ, सुप्पभे, पभकंते सुप्पभकंते ॥ ४ ॥ अग्गिकुमाराण-अग्गिसीहे, अग्गिमाणवे, तेउ, तेउ-सीहे, तेउकंते, तेउप्पभे ॥ ५ ॥ दीवकुमाराण-पुण्ण वसिट्ठ रूय, रूयंस, रूयसीह, रूयप्पभा ॥ ६ ॥ उदहिकुमाराण-जलकंत, जलप्पभ, जल, जलरूय, जलकंत,

इन्द्र और प्रत्येक के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष व विचित्र पक्ष ये चार लोकपाल कहे हैं ॥ ३ ॥ विद्युत् कुमार को दश देव अधिपतिपना करनेवाले हैं हरिकंत हरिसिंह ये दो इन्द्र और प्रत्येक को प्रभ, सुप्रभ, प्रभकान्त, सुप्रभकान्त ये चार २ लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ ४ ॥ अग्निकुमार को अग्निसिंह व अग्नि मानव ये दो इन्द्र और उन के तेउ, तेउसिंह, तेउ कान्त व तेउ प्रभ ऐसे चार २ लोकपाल कहे हैं ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार को पूर्ण व वशिष्ट ऐसे दो इन्द्र और उन के रूप, रूपांश, रूपसिंह व रूपप्रभ ऐसे चार २ लोकपाल ॥ ६ ॥ उदधि कुमार के जलकान्त और जलप्रभ ऐसे दो इन्द्र उन के जल, जलरूप, जलकांत व

जलप्पभा ॥ ७ ॥ दिसाकुमाराण अमियगई, अमियवाहणे, तुरियगई, खिप्पगई, सीहगई, सीहविक्कमगई ॥ ८ ॥ वाउकुमाराण वेलब, पभजण, काल, महाकाल, अजण, रिट्ठा, ॥ ९ ॥ थणियकुमाराण घोस, महाघोस, आवत्त, वियावत्त, नदियावत्त, महानदियावत्ता एव भाणियव्व ॥ जहा असुरकुमाराणं ॥ १० ॥ सोमेय

रूप ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ॥ ७ ॥ दि० दिशाकुमार को अ० अमितगति अ० अमितवाहन तु० त्वरितगति खि० क्षिप्रगति सी० सिंहगति सी० सिंह विक्रमगति ॥ ८ ॥ वा० वायुकुमार को वे० वेलम्ब प० प्रभजन का० काल म० महाकाल अं० अंजन रि० रिष्ठ ॥ ९ ॥ थ० स्थनित कुमार को घो० घोष म० महाघोष आ० आवर्त वि० व्यावर्त न० नांदियावर्त म० महानंदियावर्त ऐ० ऐसे भा० कहना ज० जैसे अ० असुरकुमार को ॥ १० ॥ पि० पिशाच की पु० पृच्छा गो० गौतम दो० दो दे० देव आ० आधि

जलप्रभ ऐसे चार २ लोकपाल कहे हैं ॥७॥ दिशा कुमार को अमितगति अमितवाहन ऐसे दो इन्द्र उन के त्वरित गति, क्षिप्रगति, सिंहगति व सिंह विक्रमगति ऐसे चार २ लोकपाल हैं ॥८॥ वायुकुमार को वेलम्ब व प्रभजन ऐसे दो इन्द्र और उन के काल, महाकाल, अंजन व रिष्ठ ऐसे चार २ लोकपाल ॥९॥ स्थनित कुमार के घोष व महाघोष ऐसे दो इन्द्र और आवर्त वियावर्त, नंदियावर्त व महानंदियावर्त ऐसे चार २ लोकपाल इन तरह भुवनपति के २० इन्द्र व ८० लोकपाल मीलकर १०० हुए ॥१०॥ सोम नामक लोकपाल का नाम कहते

चि० चित्रपक्ष वि० विचित्रपक्ष वि० विद्युत्कुमार के ह० हरिकंत ह० हरिसिंह प० प्रभ सु० सुप्रभ प० प्रभकान्त सु० सुप्रभकान्त ॥ ४ ॥ अ० अग्निकुमार को अ० अग्निसिंह अ० अग्निमानव ते० तेज ते० तेज सिंह ते० तेजकान्त ते० तेजप्रभ ॥ ५ ॥ दी० द्वीप कुमार को पु० पूर्ण व० वसिष्ठ रू० रूप रू० रूपांश रू० रूपसिंह रू० रूपप्रभ ॥ ६ ॥ उ० उदधिकुमार को ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ज० जल ज० जल

चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे, ॥ ३ ॥ विज्जुकुमाराण-हरिकते हरिस्सहे पभ, सुप्पभे, पभकते सुप्पभकते ॥ ४ ॥ अग्गिकुमाराण अग्गिसीहे, अग्गिमाणवे, तेउ, तेउ-सीहे, तेउकंते, तेउप्पभे ॥ ५ ॥ दीवकुमाराण-पुण्ण वसिट्ठ रूय, रूयस, रूयसीह, रूयप्पभा ॥ ६ ॥ उदहिकुमाराण-जलकत, जलप्पम, जल, जलरूय, जलकत,

इन्द्र और प्रत्येक के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष व विचित्र पक्ष ये चार लोकपाल कहे हैं ॥ ३ ॥ विद्युत् कुमार को दश देव अधिपतिपना करनेवाले हैं हरिकंत हरिसिंह ये दो इन्द्र और प्रत्येक को प्रभ, सुप्रभ, प्रभकान्त, सुप्रभकान्त ये चार २ लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ ४ ॥ अग्निकुमार को अग्निसिंह व अग्नि मानव ये दो इन्द्र और उन के तेज, तेजसिंह, तेज कान्त व तेज प्रभ ऐसे चार २ लोकपाल कहे हैं ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार को पूर्ण व वशिष्ट ऐसे दो इन्द्र और उन के रूप, रूपांश, रूपसिंह व रूपप्रभ ऐसे चार २ लोकपाल ॥ ६ ॥ उदधि कुमार के जलकान्त और जलप्रभ ऐसे दो इन्द्र उन के जल, जलरूप, जलकांत व

जो॰ ज्योतिषियों के दो॰ दो दे॰ देव च॰ चन्द्र सू॰ सूर्य ॥ १३ ॥ सो॰ सौधर्म ई॰ ईशान में क॰ कितने दे॰ देव आ॰ आधिपत्य वि॰ विचरते हैं गो॰ गौतम द॰ दशदेव वि॰ विचरते हैं स॰ शक्र दे॰ देवेन्द्र दे॰ देवराजा सो॰ सोम ज॰ यम व॰ वरुण वे॰ वैश्रमण ई॰ ईशान ए॰ यह व॰ वक्तव्यता स॰

वाणं दो देवा आहेवच्च जाव विहरति तजहा चदे, सूरेय ॥ १३ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु कइदेवा आहेवच्च जाव विहरति ? गोयमा ! दसदेवा जाव विहरंति, तजहा सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे वेसमणे, ईसाणे देविंदे देवराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥१४॥ एसा वत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु एएचेव

जाति के देव कहते हैं आणपन्नी, पाणपन्नी, इसीवाय, भुइवाय, क्रान्दिय, महाकान्दिय, कोहंग व पयंग देव इन आठों को दो २ देव अधिपतिपना करते हैं उन के नाम सन्निहित, सामानिक, धाइ, वधाइ, इसी, इसीवाल, ईश्वर, महेश्वर, सुवत्स, विशाल, हास, हासरति, सेय, महासेय, पयग, पयगवति यों सोलह वाणव्यंतर के ३२ देव होते हैं ॥ १२ ॥ ज्योतिषी देव को दो देव अधिपतिपना करते हैं चन्द्र व सूर्य ॥ १३ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में दश देव अधिपतिपना करते हैं शक्र देवेन्द्र, ईशान देवेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक चार २ लोकपाल ॥ १४ ॥ तीसरे चौथे देवलोक में दश देव अधिपति हैं. सनत्कुमारेन्द्र व माहेन्द्र और उन के सोमादि चार २ लोकपाल ऐसे ही पांचवे छठे

पत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं का० काल म० महाकाल सु० सुरूप प० प्रतिरूप पु० पूर्णभद्र अ० देवपति मा० माणिभद्र भी० भीम त० तैसे म० महाभीम किं० किंनर किं० किंपुरुष स० सत्पुरुष म० महापुरुष अ० अतिकाय म० महाकाय गी० गीतरति गी० गीतयश ऐ० ऐसे वा० वाणव्यंतर ॥ १२ ॥

कालवाले, चित्त, पभ, तेओ, तहरुवेचेव, जल, तहतुरियगतिया काल, आवच्च पढमाओ ॥ ११ ॥ पिसायकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! दो देवा आहेवच्च जाव विहरति, तंजहा-कालेय, महाकाले, सुरूव, पडिरूव, पुण्णभद्देय, अमरवइ, माणिभद्दे, भीमेय तहा महाभीमे ॥१॥ किंनर किंपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे। अइकाय महाकाए-गीयरई चेवगीयजसे एए वाणमतराण॥१२॥ जोइसियाण दे-

दे १ सोम, २ कालवाल ३ चित्र ४ प्रभ, ५ तेउ, ६ रूप ७ जल ८ त्वरितगति ९ काल व १० आवर्त ॥११॥ अब व्यंतर जाति के देवता का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! पिशाच जाति के देव को कितने देव अधिपति हैं ? अहो गौतम ! दो देव अधिपति हैं काल व महाकाल ऐसे ही भूत के दो देव रूप, प्रतिरूप, यक्ष के दो देव पूर्णभद्र, मान भद्र, राक्षस के दो देव भीम, महाभीम, किंनरजाति के दो देव किंनर, किंपुरुष, किं पुरुष के दो देव सत्पुरुष महापुरुष, महोरग के दो देव अतिकाय, महाकाय; गंधर्व के दो देव १ गीतरति २ गीतयश यह आठ व्यंतर जाति के देव कहे; और अन्यभी आठ व्यंतर

जो० ज्योतिषियों के दो० दो दे० देव च० चन्द्र सू० सूर्य ॥ १३ ॥ सो० सौधर्म ई० ईशान में क० कितने दे० देव आ० आधिपत्य वि० विचरते हैं गो० गौतम द० दशदेव वि० विचरते हैं स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ई० ईशान ए० यह व० वक्तव्यता स०

वाण वो देवा आहेवच्च जाव विहरति तजहा चदे, सूरेय ॥ १३ ॥ सोहम्मीसाणे-सुणं भते ! कप्पेसु कइदेवा आहेवच्च जाव विहरति ? गोयमा ! दसदेवा जाव विहरंति, तजहा सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे वेसमणे , ईसाणे देविंदे देवराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥१४॥ एसा वत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु एएचेव

जाति के देव कहते हैं आणपन्नी, पाणपन्नी, इसीवाय, भुइवाय, क्रान्दिय, महाकान्दिय, कोहंग व पयंग देव इन आठों को दो २ देव आधिपतिपना करते हैं उन के नाम सन्निहित, सामानिक, धाइ, वधाइ, इसी, इसीवाल, ईश्वर, महेश्वर, सुवत्थ, विशाल, हास, हासरति, सेय, महासेय, पयग, पयगवति यों सोलह वाणव्यंतर के ३२ देव होते हैं ॥ १२ ॥ ज्योतिषी देव को दो देव आधिपतिपना करते हैं चन्द्र व सूर्य ॥ १३ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में दश देव आधिपतिपना करते हैं शक्र देवेन्द्र, ईशान देवेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक चार २ लोकपाल ॥ १४ ॥ तीसरे चौथे देवलोक में दश देव अधिपति हैं सनत्कुमारेन्द्र व माहेन्द्र और उन के सोमादि चार २ लोकपाल ऐसे ही पांचवे छठे

सब में क० देवलोक में ए० यही भा० कहना जे० जो इ० इन्द्र तें० वे भा० कहना ॥ ३ ॥ ८ ॥

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितने भं० भगवन् इ० इन्द्रिय विषय प० कहे गो० गौतम प० पांच प्रकार के इ० इन्द्रिय विषय प० कहे त० यह ज० जैसे सो० श्रोतेन्द्रिय विषय जी०

भाणियव्वा ॥ जे य इंदा ते भाणियव्वा ॥ सेव भंते भंतेत्ति ॥ तईयसए अट्ठमोद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ८ ॥ * * *

रायगिहे जाव एवं वयासी कइविहेणं भंते ! इंदिय विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंच-विहे इंदियविषए पण्णत्ते, तंजहा सोइंदिय विसए, जीवाभिगमे जोइसियउद्देसओ

सातवे आठवे, नवये दशवे, अग्यारहवे, बारहवे तक का जानना अहो भगवन् ! आप के वचन तथ्य हैं यह तीसरा शतकका आठवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ८ ॥ + +

राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवंत पधारे परिषदा वंदने का आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर को भगवंत गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! इन्द्रिय के विषय कितने प्रकार के हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रिय के विषय पांच प्रकार के हैं १ श्रोतेन्द्रिय का विषय, चक्षुइन्द्रिय का विषय, घ्राणेन्द्रिय का विषय, रसनेन्द्रिय का विषय, व स्पर्शेन्द्रिय का विषय अहो भगवन् ! श्रोतेन्द्रिय का विषय कितने प्रकार का कहा है अहो गौतम ! श्रोतेन्द्रिय

जीवाभिगम में जो० ज्योतिषि का उ० उद्देशा ने० जानना अ० अपरिशेष ॥ ३ ॥ ९ ॥ *

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसे व० बोले च० चमर का भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर

नेयव्वो अपरिसेसो । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥३॥ ९ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तंजहा समिया, चंडा, जाया

का विषय दो प्रकार का कहा है सुशब्द व दुःशब्द, ऐसे ही पांचों इन्द्रियों के विषय जानना इस का विस्तार पूर्वक कथन जीवाभिगम सूत्र के ज्योतिषी उद्देशे में से जानना अहो भगवन् ! आप के वचन यथातथ्य हैं यह तीसरा शतकका नववा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ९ ॥ +

राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई उस समय में गौतम स्वामीने वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र की कितनी परिषदा कही हैं ? अहो गौतम ! उन को समि-या, चंडा व जाया ऐसी तीन परिषदा कही हैं समिया आभ्यंतर परिषदा है, इन के देव बोलाये आते हैं बिना बोलाये नहीं आते हैं चंडा बीचकी परिषदा है, इन के देव बोलाये, बिना बोलाये आते हैं जाया बाहिरकी परि-

राजा की क० कितनी प० परिषदा प० कही गो० गौतम त० तीन प० परिषदा प० कही तं० पद ज० जैसे स० समिता चं० चंडा जा० जाया ए० ऐसे ज० जैसे अ० अनुक्रम से जा० यावत् अ० अच्युत कल्प ॥ ३ ॥ १० ॥ ३ ॥ × +

एवं जहाणुपुव्वीए जाव अच्चुओ कप्पो । सेव भंते भंतेत्ति ॥ तईय सए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १० ॥ तईय सय सम्मत्त ॥ ३ ॥ * *

पदा है इन के देव विना बोलाये कार्य करने के अवसर पर हाजर रहते हैं समिता के चौवीस हजार, चंडा के अठावीस हजार व जाया के ३२ हजार देव कहे हैं ऐसे ही तीन प्रकार की देवी की परिषदा कही है उस में समिता की ३५० चंडा की ३०० और जाया की २५० देवियों कही हैं आभ्यंतर परिषदा की देवियों का अढाइ पल्योपम का, मध्य परिषदा की देवियों का दो पल्योपम का और बाह्य परिषदा की देवियों का १॥ पल्योपम का आयुष्य जानना जैसे असुरेन्द्र की तीन परिषदा कही वैसे ही बलेन्द्र की तीन परिषदा जानना ऐसे ही अच्युतेन्द्रतक के चौसठ इन्द्र की तीन २ परिषदाओं का अधिकार जानना उन का आयुष्य वगैरह सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र से जानना अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुए विचरने लगे यह तीसरा शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ १० ॥ तीसरा शतकका भावार्थ सम्पूर्ण हुआ ॥ ३ ॥

* चतुर्थ शतकम् *

च० चमर वि० विमान से च० चार हो० होते हैं रा० राज्यधानी में ने० नारकी ले० लेश्या से द० दश उ० उद्देशा च० चौथे शतक में ॥ १ ॥ रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को क० कितने लो० लोकपाल गो० गौतम च० चार लो० लोकपाल त० वह ज० जैसे सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ए० इन भ० भगवन् लो०लोकपालोंका क०

चत्तारि विमाणेहिं, चत्तारिय होंति रायहाणीहिं । नेरइए लेस्साहिय, दस उद्देसा चउत्थसए ॥ १ ॥ रायगिहे णगरे जाव एव वयासी- ईसाणस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कइलोगपाला पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तंजहा-

तीसरे शतक में देवता का अधिकार कहा है इस में भी देवता का अधिकार कहते हैं इस शतक के दश उद्देशे कहे हैं पहिले चार उद्देशे में ईशानेन्द्र के चार लोकपालों के चार विमानोंका कथन है पांचवे, छठे, सातवे व आठवे में उन की चार राज्यधानियों का कथन है नववे में नरक के जीवों का और दशवे में लेश्या का वर्णन है ॥ १ ॥ राजगृह नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई उस समय में श्री श्रमण भगवंत

राजा की क० कितनी प० परिषदा प० कही गो० गौतम त० तीन प० परिषदा प० कही तं० यह ज० जैसे स० समिता चं० चंडा जा० जाया ए० ऐसे अ० जैसे अ० अनुक्रम से जा० यावत् अ० अच्युत कल्प ॥ २ ॥ १० ॥ ३ ॥ × +

एवं जहाणुपुव्वीए जाव अच्चुओ कप्पो । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईय सए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १० ॥ तईय सय सम्मत्त ॥ ३ ॥ * *

पदा है इन में देव बिना बोलाये कार्य करने के अवसर पर हाजर रहते हैं सामिया के चोवीस हजार, चंडा के अठावीस हजार व जाया के ३२ हजार देव कहे हैं ऐसे ही तीन प्रकार की देवी की परिषदा कही है उस में सामिया की ३५० चंडा की ३०० और जाया की २५० देवियों कही हैं आभ्यंतर परिषदा की देवियों का अढाइ पल्योपम का, मध्य परिषदा की देवियों का दो पल्योपम का और बाह्य परिषदा की देवियों का १॥ पल्योपम का आयुष्य जानना जैसे असुरेन्द्र की तीन परिषदा कही वैसे ही बलेन्द्र की तीन परिषदा जानना ऐसे ही अच्युतेन्द्रतक के चौसठ इन्द्र की तीन २ परिषदाओं का अधिकार जानना उन का आयुष्य वगैरह सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र से जानना अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुए विचरने लगे यह तीसरा शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १० ॥ तीसरा शतकका भावार्थ संपूर्ण हुवा ॥ ३ ॥

वतंसक फ० स्फटिकावतसक र० रत्नावतसक जा० जातिरूपावतसक म०मध्य में ई०ईशनावतंसक म० महा-विमान पु० पूर्व में ति० तीच्छें अ० असख्यात जो० योजन वी० व्यतिक्रान्त होते ए० यहां ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा का सो० सोम म० महाराजा का सु० सुमन म० महाविमान अ० अर्ध तेरह जो० योजन ज० जैसे स० शक्र की व० वक्तव्यता त० तीसरे स० शतक में त० तैसे ई० ईशान की भी जा०

कवडसए, फलिह वडसए, रयण वडंसए, जाइरून वडसए, मज्झे तत्थ ईसाण वडसए ॥ तत्थण ईसाणं वडंसयस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेण तिरिय मसखेज्जाइ जोयणाइ वीइवइत्ता एत्थण ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नाम महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयण जहा सक्कस्स वत्तव्वया, तईयसए, तहा

हुवे हैं उन से क्रोड़ क्रोड योजन ऊंचे ईशान नामक दूसरा महा विमान रहा हुवा है उस में पांच अवतसक (मुकुट समान) विमान हैं १ अकावतसक, २ स्फटिकावतंसक ३ रत्नावतसक ४ जातिरूपावतसक और मध्य में ईशानावतसक उन ईशानावतसक से पूर्व में असख्यात योजन तीच्छी जावे वहां ईशानेन्द्र के सोम महाराजा का सुमन नामक महा विमान कहा है वह साढे बारह योजन का लम्बा चौडा यावत् सब वक्तव्यता शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे कहना जैसे ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की वक्तव्यता कही वैसे ही यम का स्फटिकावतसक, वरुण का रत्नावतसक, व वैश्रमण का जातरूपावतसक का जानना

कितने वि० विमान प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार वि० विमान प० प्ररूपे सु० सुमन स० सर्वतोभद्र व० वल्गु सु० सुवल्गु ॥ २ ॥ क० कहां ई० ईशान के सो० सोम म० महाराजा का सु० सुमन म० महाविमान प० प्ररूपा गो० गौतम जं० जम्बूद्वीप में म० मेरु प० पर्वत की उ० उत्तर मे इ० इस र० रत्न प्रभा पु० पृथ्वी से जा० यावत् ई० ईशान क० देवलोक में त० वहां प० पांच व० अवतंसक अं० अंका-

सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥ एएसिण भंते ! लोगपालाण कइ विमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता तंजहा-सुमणे, सव्वओभद्दे, वग्गू, सुवग्गू ॥ २ ॥ कहिण भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणेनाम महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव ईसाणे नाम कप्पे पण्णत्ते ? तत्थण जाव पंचवडंसया प० तं० अ-

महावीर स्वामी को श्री गौतम स्वामी ने प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र को कितने लोकपाल कहे हैं ? अहो गौतम ! सोम, यम, वरुण व वैश्रमण ऐसे चार लोकपाल कहे हैं अहो भगवन् ! उन के विमान कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! उन के चार विमान कहे हैं सुमन, सर्वतोभद्र, वल्गु और सुवल्गु ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! ईशान देवेन्द्र का सोम नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर में इस रत्नप्रभा पृथ्वी से अनेक सो योजन उपर चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे रहे

रा० राज्यधानी में च० चार उ० उद्देशा भा० कहना जा० यावत् व० वरुण म० महाराजा ॥४॥८॥ ने० नारकी ने० नारकी में उ० उत्पन्न होते हैं अ० नारकी से अन्य प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद

अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ८ ॥ × × ×

नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ, अनेरइएणं भते ! नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाएवि लेस्सापए तईओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइ चउत्थसए नवमो

स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! सुमन नामक महा विमान की नीचे वगैरह सब वर्णन शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे जानना यों चारों राज्यधानी अपने २ विमान नीचे तीर्च्छे लोक में रही हुई हैं यों चारों राज्यधानी के चार उद्देशे भिन्न२ कहना यह चौथा शतकका पांचवा, छठा, सातवा, व आठवा ऐसे चार उद्देशे पूर्ण हुए॥ ४॥८॥

उक्त उद्देशे में देवता का अधिकार कहा देव वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं वैसे ही नरक के जीव भी वैक्रेय शरीर करनवाले होते हैं इसलिये आगे नरक का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! नरक के आयुष्यका बंध करनेवाले नरक में उत्पन्न होते हैं या अन्य जीव नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जिनोंने नरक के आयुष्य का बंध किया है वेही नरक में उत्पन्न होते हैं; परंतु अन्य जीव नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं जो नरक में उत्पन्न हुवे हैं उन को आयुष्य बंध से छोडाने को कोई भी समर्थ नहीं है

यावत् अ० अर्चनीय स० संपूर्ण च० चारों लो० लोकपालों का वि० विमान का उ० उद्देशा च० चार वि० विमान के चा० चार उ० उद्देशे अ० अपरिशेष न० विशेष ठि० स्थिति में णा० नाना प्रकार आ० आदि दु० दो ति० तीन भाग ऊ० कम प० पल्योपम वे० वैश्रमण की हो० है दो० दो स० तीन भाग व० वरुण प० पल्योपम अ० अपसत्त् दे० देवोंकी ॥४॥४॥

ईसाणस्सवि जाव अच्चणिया सम्मत्ता चउण्हविलोगपालाण विमाणे २ उद्देसओ चउसुवि विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा णवर ठिईए नाणत्त, आइ दुय ति भागूणा पलिया धणयस्स होंति दो चेव ॥ दोसइ भाग वरुण पलिय महावच्च देवाण ॥ १ ॥ चउत्थसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ४ ॥ * *

रायहाणीसुवि चत्तारि उद्देसया भाणियव्वा । जाव वरुणे महाराया ॥ चउत्थसए

भाग स्थिति में भिन्नता है सोम व यम महाराजा की स्थिति त्रीभाग कम दो पल्योपम, वैश्रमण की दो पल्योपम की, और वरुण की स्थिति त्रीभाग अधिक दो पल्योपम जानना इन के अपत्य देवों की एक पल्योपम की स्थिति जानना यह चौथे शतक के चार उद्देशे पूर्ण हुवे ॥ ४ ॥ ४ ॥

राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम

रा० राज्यधानी में च० चार उ० उद्देशा भा० कहना जा० यावत् व० वरुण म० महाराजा ॥४॥८॥ ने० नारकी ने० नारकी में उ० उत्पन्न होते हैं अ० नारकी से, अन्य प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद

अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ८ ॥ × × ×

नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ, अनेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाएवि लेस्सापए तईओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं चउत्थसए नवमो

स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! सुमन नामक महा विमान की नीचे वगैरह सब वर्णन शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे जानना यों चारों राज्यधानी अपने २ विमान नीचे तीर्च्छे लोक में रही हुई हैं यों चारों राज्यधानी के चार उद्देशे भिन्न२ कहना यह चौथा शतकका पांचवा, छठा, सातवा, व आठवा ऐसे चार उद्देशे पूर्ण हुए॥ ४॥८॥

उक्त उद्देशे में देवता का अधिकार कहा देव वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं वैसे ही नरक के जीव भी वैक्रेय शरीर करनवाले होते हैं इसलिये आगे नरक का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! नरक के आयुष्यका बंध करनेवाले नरक में उत्पन्न होते हैं या अन्य जीव नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जिनोंने नरक के आयुष्य का बंध किया है वेही नरक में उत्पन्न होते हैं, परंतु अन्य जीव नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं जो नरक में उत्पन्न हुवे हैं उन को आयुष्य बंध से छोडाने को कोई भी समर्थ नहीं है

का त० तीसरा उ० उद्देशा मा० कहना जा० यावत् ना० ज्ञान ॥४॥९॥

से० अथ क० कृष्ण लेश्या वाला नी० नील लेश्या को प० प्राप्त कर के त० तद्रूप ता० तद्वर्णपने

उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ९ ॥ * * *

से नूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए एवं चउत्थो

यावत् कृष्ण लेश्यावाले जीव नीची दो नरक में उत्पन्न होते हैं वगैरह सब अधिकार पन्नवणा सूत्र जैसे कहना यह चौथा शतक का नवरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ४ ॥ ० ॥ * *

इस उद्देशे में लेश्याका अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला नील लेश्या के द्रव्य ग्रहण कर यदि काल करतो क्या वह नील लेश्या में उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! जिस लेश्या के पुद्गल परिणमा कर काल करता है उसी लेश्या में उत्पन्न होता है अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला नील लेश्या पने वारंवार परिणमता है वो किस प्रकार वह परिणमता है ? अहो गौतम ! जैसे दूध तकर (छाछ) रूप परिणमता है, अथवा शुद्ध श्वेत वस्त्र को जैसे रंग चढावे वैसे रूपपने परिणमता है इसी प्रकार कृष्ण लेश्या वाला नीललेश्या पन परिणमता है, नील कापोत पन, कापोत तेजोपने, तेजो पद्मपने, व पद्म शुक्ल लेश्या पने परिणमे अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का वर्ण कैसा है ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या का वर्ण मेघ की घटा समान श्याम, नील लेश्या का तोते के रंग समान, कापोत लेश्या का कबुतर जैसा,

ऐसे च० चौथा उ० उद्देशा प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद में ने० जानना जा० यावत् परिणाम व० वर्ण र० रस ग० गंध सु० शुद्ध अ० अप्रशस्त सं० संक्लिष्ट उ० उष्ण ग० गतिपरिणाम प० प्रदेश ओ० अव-

उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो । जाव परिणाम वण्ण रसगंध सुद्ध अपसत्थ संकिलिट्ठुण्हा, गइ परिणाम पएसोगाहण वग्गणाट्ठाण मप्पबहु । सेव भंते

तेजो लेश्या का उदित होता सूर्य जैसा, पद्म लेश्या का हलदी जैसा व शुक्ल लेश्या का चन्द्र जैसा श्वेत वर्ण है अब छ लेश्या के रस कहते हैं कृष्ण लेश्या का निम्ब वृक्ष जैसा कटु, नील लश्या का नागर जैसा कटु, कापोत लेश्या का कच्चे बोर जैसा कषायला तेजो लेश्या का आम्र फल जैसा खट्टामिठ पद्म लेश्या का खारक जैसा मधुर और शुक्ल लेश्या का खांड सक्कर जैसा मिष्ट अब गंध कहते हैं कृष्ण, नील व कापोत लेश्या के पुद्गलों की मृतक देहकी गंध समान गंध, और तेजो, पद्म व शुक्ल की कुसुम समान पहिली तीन लेश्या अशुभ है और पीछे की तीन लेश्या शुभ है पहिले की तीन लेश्या संक्लिष्ट हैं और पीछे की तीन लेश्या संक्लिष्ट नहीं हैं पहिले की तीन लेश्या शीत व रूक्ष हैं, और पीछे की तीन लेश्या उष्ण व स्निग्ध हैं पहिली तीन लश्या दुर्गति में लेजानेवाली हैं, और पीछे की तीन लेश्या सुगति में लेजाने वाली हैं जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम तथा उत्पातादि भेद से परिणाम विचारना सब लेश्या के अनंत प्रदेश हैं प्रत्येक प्रदेश असंख्यात प्रदेशावगाढ है कृष्ण लेश्या योग्य पुद्गल वर्गणा अनंत हैं वह उदारिक

गाहना व० वर्गणा ठा० स्थान अ० अल्पा बहुत्व ॥ ४ ॥ १० ॥ ८ ॥ + +

भंतेत्ति ॥ चउत्थसए दसमो उद्देसो ॥ ९ ॥ १० ॥ चउत्थ सय सम्मत्त ॥ ४ ॥-

जैसे जानना तारतम्यता की विचित्रता से अध्यवसाय निबन्ध कृष्णादि द्रव्य समुह असंख्यात हैं इसा लिये अध्यवसाय स्थानक असंख्यात हैं, अल्पाबहुत्व सब से थोडा जघन्य कापोत लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान, उससे जघन्य नील लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुन, उस से जघन्य कृष्ण लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने, उस से जघन्य तेजो लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से जघन्य पद्म लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से शुक्ल लेश्या के जघन्य द्रव्यार्थ स्थान, असंख्यात गुने अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं यह चौथा शतक का दसवा उद्देशा पूर्ण हुआ, यह चौथा शतक समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ पंचम शतकम् ॥

च० चपा र० सूर्य अ० वायु ग० ग्रन्थि स० शब्द छ० छद्मस्थ आ० आयुष्य ए० कंपना नि० निर्ग्रन्थ रा० राजगृह चं० चपा च० चद्र द० दश प० पांचवे स० शतक में ॥ १ ॥ तें० उस का० काल ते० उस स० समय में चं० चपा ना० नाम की न० नगरी हा० थी व० वर्णन योग्य ती० उस च०

चपाए, रवि, अनिल, गंठिय सद्दे, छउ, माउ, एयण, णियठे ॥ रायगिह चपा चदिमाय दस पचमम्मि सए ॥१॥ तेण कालेण तेण समएण चपानाम नयरी होत्था, वण्णओ ॥ तीसेणं चपाए नयरीए पुण्णभद्दे नाम चेइए होत्था, वण्णओ सामीम-

चौथे शतक के अत में लेश्या कही वह लेश्या लेश्यावन्त पुरुषों को आयुष्य का बध करती है आयुष्य का बध को क्षय करनेवाला काल है इसलिये पांचवे शतक में काल की वक्तव्यता करेंगे इस पांचवे शतक के दश उद्देशे कहे हैं प्रथम उद्देशे में चपा नगरी में सूर्य सबंधि प्रश्न पूछे हैं, दूसरे में वायु सबंधी प्रश्न पूछे हैं, तीसरे में जालग्रन्थिका निर्णय किया है, चौथे में शब्द का निर्णय, पांचवे में छद्मस्थ की वक्तव्यता, छठे में आयुष्य के बध का अधिकार, सातवे में पुद्गल चलने का अधिकार, आठवे में निग्रन्थ पुत्र के प्रश्नोत्तर, नववे में राजगृह नगर का अधिकार व दशवे में चपा में चद्रमा सबधि प्रश्न ॥१॥ उस काल उस समय में चपा नामकी नगरी थी उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना उस चपा नगरी

गाहना प० वर्गणा ठा० स्थान अ० अल्पा बहुत्व ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥

भतेत्ति ॥ चउत्थसए दसमो उद्देसो ॥ ४ ॥ १० ॥ चउत्थ सय सम्मत्तं ॥ ४ ॥–

जैसे जानना तारतम्यता की विचित्रता से अध्यवसाय निबन्ध कृष्णादि द्रव्य समुह असंख्यात हैं इसा लिये अध्यवसाय स्थानक असंख्यात हैं. अल्पाबहुत्व सब से थोडा जघन्य कापोत लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान, उससे जघन्य नील लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुन, उस से जघन्य कृष्ण लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने, उस से जघन्य तेजो लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से जघन्य पद्म लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से शुक्ल लेश्या के जघन्य द्रव्यार्थ स्थान, असंख्यात गुने अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह चौथा शतक का दशवा उद्देशा पूर्ण हुआ, यह चौथा शतक समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥

उदित होकर प० वायव्य कौन में आ० जाता है प० वायव्य कौन में उ० उदित होकर उ० ईशान कौन में आ० जाता है हं० हां गो० गौतम ज० जम्बूद्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर जा० यावत् उ० ईशान कौन में आ० जाता है ॥ ३ ॥ ज० जब भ० भगवन् ज० जम्बूद्वीप में

पाईणदाहिण मुग्गच्छ दाहिणपडीण मागच्छति, दाहिण पडीण मुग्गच्छ पडीण-उदीण मग्गच्छति, पडीणउदीण मुग्गच्छ उदीचिपाईण मागच्छति ? हता गोयमा ! जबुद्दीवेण दीवे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जाव उदीचि पाईण मागच्छति ॥ ३ ॥ जयाण भते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तयाण

वायव्य कौन में अस्त होता है ? और वायव्य कौन में उदित होकर क्या ईशान कौन में अस्त होता है ? हां गौतम ! जम्बूद्वीप में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में अस्त होता है यावत् वायव्य कौन में उदित होकर ईशान कौन में अस्त होता है * ॥ ३ ॥ यद्यपि सूर्य का सब दिशि में गमन है तथापि प्रकाशके भेद से रात्रि दिन के विभाग किये हैं अहो भगवन् ' जब जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण

---

* यहा पर सूर्य का उदय व अस्त देखनेवाले लोकों की अपेक्षा से लिया है अदृश्य सूर्य दीखने में आवे तब उदय कहाजाता है, और दृश्य सूर्य अदृश्य होवे तब अस्त कहा जाता है परंतु वास्तविक रीति से सूर्य का उदय अस्त नहीं है

चपा न० नगरी से पू० पूर्णभद्र चे० उद्यान हो० था सा० स्वामी प० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगइ ॥ २ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भगवन्त म० महावीर के जे० ज्येष्ठ अ० शिष्य इं० इन्द्रभूति अ० अनगार गो० गौतम गो० गौत्र से जा० यावत् ए० ऐसे व० बोले भं० जम्बूद्वीप में भं० भगवन् दी० द्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर पा० अग्नि कौन में आ० जाता है पा० अग्नि कौन में उ० उदित होकर दा० नैऋत्य कौन में आ० आता है दा० नैऋत्य कौन में उ०

मोसढे, जाव परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेण कालेण, तेण समएण समणस्स भगव-
ओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूईणामे अणगारे गोयम गोत्तेण जाव एवंवयासी-
जंबुद्दीवेण भंते ! दीवे सूरिया उईणपाईण मुग्गच्छ पाईणदाहिण मागच्छंति ।

की ईशान कौन में पूर्णभद्र यक्ष का उद्यान था उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना वहां पर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदन करने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई ॥ २ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अंतेवासी गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति अनगारने ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में सूर्य उत्तर पूर्व ईशान कौन में उदित होकर पूर्वदक्षिण-अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? अग्नि कोन में उदित होकर दक्षिणपश्चिम नैऋत्य कौन में क्या अस्त होता है ? नैऋत्य कौन में उदित होकर पश्चिमउत्तर

पु० पूर्व में प० पश्चिम रा० रात्रि भ० होती है ह० हां गो० गौतम ज० जब ज० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन भ० होता है जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ४ ॥ ज० जब भ० भगवन् ज० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है ज० जब

भवइ, तयाणं जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेणं दिवसे जाव राई भवइ ॥ ४ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाणं उत्तर जाव उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ जयाणं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते

व दश भाग में का छ भाग रात्रि क्षेत्र होवे यह दिन के ताप क्षेत्र व रात्रि क्षेत्र की स्थापना कही जब दिन छोटा होवे तब रात्रिक्षेत्र जितना तापक्षेत्र व तापक्षेत्र जितना रात्रिक्षेत्र जानना जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व में दिन होता है तब पश्चिम में भी दिन होता है और जब पूर्व पश्चिम में दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण में रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में रात्रि होती है ॥४॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के दक्षिण विभाग में अठारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्तर विभाग में भी अठारह मुहूर्तका दिन होता है

म० मेरु पर्वत के दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन म० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध में दि० दिन भ० होता है म० जब उ० उत्तरार्ध में दि० दिन म० होता है त० तब ज० जम्बूद्वीप के म० मेरु पर्वत की

उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ जयाण उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ तयाण जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेण राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढ दिवसे भवइ जाव राई भवइ ॥ जयाण भंते ! जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण दिवसे भवइ, तयाण पच्चच्छिमेणवि दिवस भवइ, जयाण पच्चच्छिमेण दिवसे

में दिन होता है तब मेरु से उत्तर में भी दिन होता है, और जब उत्तर दिशा में दिन होता है तब क्या मेरु पर्वत की पूर्व पश्चिम में रात्रि होती है ? हां गौतम ! मेरु पर्वत की उत्तर दिशा में जब दिन होता है तब पूर्व पश्चिम दिशा में रात्रि होती है जम्बूद्वीप में दो चंद्र व दो सूर्य फीरते हैं अब जम्बू-द्वीप के उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम ऐसे चार विभाग करना जब उत्तर दक्षिण में दोनों सूर्य रहने से दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में दोनों सूर्य के अभावस रात्रि होती है मेरु पर्वत की पास ९४०० योजन व एक योजन के दश भाग में का नव भाग इतने क्षेत्र में दिन रहता है और, लवण समुद्र की पास ९४८६८ और एक योजन के दश भाग में का चार भाग दिन रहता है मेरु पर्वत की पास ६३२४ योजन और दश के छ भाग रात्रिक्षेत्र होता है और लवण समुद्र की पास ६३२४५ योजन

पु० पूर्व में प० पश्चिम रा० रात्रि भ० होती है हं० हां० गो० गौतम ज० जब ज० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन भ० होता है जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ४ ॥ ज० जब भ० भगवन् ज० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है ज० जब

भवइ, तयाण जंबुदीवेदीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाण जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेण दिवसे जाव राई भवइ ॥ ४ ॥ जयाण भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाण उत्तर जाव उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ जयाण उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते

व दश भाग में का छ भाग रात्रि क्षेत्र होवे यह दिन के ताप क्षेत्र व रात्रि क्षेत्र की स्थापना कही जब दिन छोटा होवे तब रात्रिक्षेत्र जितना तापक्षेत्र व तापक्षेत्र जितना रात्रिक्षेत्र जानना जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व में दिन होता है तब पश्चिम में भी दिन होता है और जब पूर्व पश्चिम में दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण में रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में रात्रि होती है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के द-क्षिण विभाग में अठारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्तर विभाग में भी अठारह मुहूर्तका दिन होता है

उ० उत्तरार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब ज० जम्बूद्वीप के मे० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में ज० जघन्य दु० द्वादश मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है ह० हां गो० गौतम ज० जब जा० यावत् दु० द्वादश मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है ॥८॥

दिवसे भवइ, तयाणं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू जाव दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ॥ ५ ॥ जयाणं भंते ! जंबू मंदरस्स पुरच्छिमे उक्कोसए अट्ठारस जाव

और जब उत्तर दिशा में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब क्या पूर्व पश्चिम दिशा में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण विभाग में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब पूर्व, पश्चिम दिशा में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है = ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के

= सूर्य के सब १८४ मांडले हैं इस में से ६५ मांडले जगति सहित जम्बूद्वीप में हैं और ११९ मांडले लवण समुद्र में हैं जब सब आभ्यंतर मांडले में सूर्य आता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है और जब सब बाहिर मांडले पर सूर्य चलता है तब बारह मुहूर्त का दिन होता है, वहां से सूर्य पलटता है तब दूसरे मांडले से प्रत्येक मांडले पर एक मुहूर्त के एकसठीये दो भाग दिन बढता है ऐसे १८३ वे मांडले पर छ मुहूर्त दिन बढकर १८ मुहूर्त का दिन होता है.

जं० जब भ० भगवन् ज० जम्बू के मेरु पर्वत की पु० पूर्व में अ० अठारह जा०यावत् त० तब भ०भगवन् जं० जम्बूद्वीप के उ० उत्तर में दु० बारह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है ह० हां गो० गौतम जा० यावत् भ० होती है ॥ ३ ॥ ज० जब भ० भगवन् ज० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिणार्ध में अ० अठारह मु० मुहूर्तांतर दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध अ० अठारह मु० मुहूर्तांतर दि० दिन भ० होवे पु० पूर्व प० पश्चिम में सा० अधिक दु० बारह मु० मुहूर्त रा० रात्रि भ० होती है ह०

तयाण भते ! जबू उत्तर दुवालस जाव राई भवइ ? हता गोयमा ! जाव भवइ ॥ ६ ॥ जयाण भते ! जबू दाहिणड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तयाण उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, जयाण उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तयाण जबू मदर पुरच्छिम पच्चच्छिमेण साइरेगा दुवालस मुहुत्ता

मेरु से पूर्व दिशा में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है, तब क्या उत्तर दक्षिण में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू के मेरु की दक्षिण में अठारह मुहूर्त की अंतर में दिन होता है तब उत्तर में भी इतनाही दिन होता है जब उत्तर में अठारह मुहूर्त के अंतर में दिन है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दक्षिण

हां गो० गौतम ज० जब ज० जम्बूद्वीप जा० जावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ७ ॥ पूर्ववत् ॥ ८ ॥ ए० ऐसे इ० इस क० क्रम से उ० कहना स० सत्तरह मु० मुहूर्त का दि० दिन ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है स० सत्तरह मु० मुहूर्तान्तर दि० दिवस सा०अधिक ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा०

राई भवइ ? हता गोयमा ! जयाण जबू जाव राई भवइ ॥ ७ ॥ जयाण भते ! जबू मंदरस्स पुरच्छिमेण अट्ठारस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ तयाण पच्चच्छिमेण अट्ठारस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, जयाण पच्चच्छिमेण अट्ठारस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ तयाण जबूमदरउत्तर दाहिणेण साइरेगा दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ? हता गोयमा! जाव भवइ ॥८॥ एव एएण कमेण उच्चारेयव्व सत्तरस मुहुत्ते दिवसे, तेरस मुहुत्ता राई भवइ। सत्तरस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राई । सोलसमुहुत्ते दिवसे चोदस मुहुत्ता राई सोलस मुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेग चोद्दस मुहुत्ताराई ॥ पण्ण-

में जब अठारह मुहूर्त से कम का दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब क्या उत्तर दक्षिणमें बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बू मंदर के पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है ॥ ८ ॥ ऐसे ही अनुक्रम से सत्तरह मुहूर्त का दिन तेरह मुहूर्त की रात्रि, सत्तरह मुहूर्त से कुछ कम दिन व तेरह मुहूर्त

रात्रि स० सोलह मु० मुहूर्त का दि० दिन चो० चौदह मुहूर्त की रा० रात्रि सो० सोलह मु० मुहूर्तान्तर

रसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरस मुहुत्ताराई पण्णरस मुहुत्ताणतरे दिवसे साइरेग पण्णरस मुहूत्ता राई चोद्दसमुहुत्ते दिवसे सोलस मुहुत्ताराई। चोद्दसमुहुत्ताणतरे दिवसे साइरेगा सोलस मुहुत्ता राई॥ तेरस मुहुत्ते दिवसे सत्तरस मुहुत्ता राई। तेरस मुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरस मुहुत्ता राई॥ जयाण जबू दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवइ तयाण उत्तरड्ढेवि। जयाण उत्तरड्ढे तयाण जबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पुरच्छिम पच्चच्छिमण उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई ? हता गोयमा ! एव चेव उच्चारेयव्व जाव राई भवइ ॥ १ ॥ जयाणं भते ! जबू मदर पुरच्छिमेण जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाण

से अधिक रात्रि, सोलह मुहूर्त का दिन चौदह मुहूर्त की रात्रि, सोलह मुहूर्त से कुच्छ कम दिन, चौदह मुहूर्त से अधिक रात्रि, पन्नरह मुहूर्त का दिन, पन्नरह मुहूर्तकी रात्रि, पन्नरह मुहूर्त में कुछ कम दिन व पन्नरह मुहूर्त से अधिक रात्रि; चौदह मुहूर्त का दिन सोलह मुहूर्त की रात्रि, चौदह मुहूर्त से कम दिन सोलह मुहूर्त से अधिक रात्रि तेरह मुहूर्तका दिन सत्तरह मुहूर्तकी रात्रि तेरह मुहूर्त से कम दिन व सत्तरह मुहूर्त से अधिक रात्रि और बारह मुहूर्त का दिन व अठारह मुहूर्तकी रात्रि जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ' जब जम्बू मदर की पूर्व में जघन्य बारह मुहूर्त का दिन है तब क्या उत्तर दक्षिण में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती

हां गो० गौतम ज० जब ज० जम्बूद्वीप जा० जावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ७ ॥ पूर्ववत् ॥ ८ ॥ ए० ऐसे इ० इस क० क्रम से उ० कहना स० सत्तरह मु० मुहूर्त का दि० दिन ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है स० सत्तरह मु० मुहूर्तान्तर दि० दिवस सा०अधिक ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा०

राई भवइ ? हता गोयमा ! जयाण जबू जाव राई भवइ ॥ ७ ॥ जयाण भंते ! जंबू मदरस्स पुरच्छिमेण अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाण पच्चच्छिमेण अट्ठारस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, जयाण पच्चच्छिमेण अट्ठारस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ तयाण जबूमदरउत्तर दाहिणेण साइरेगा दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ?हता गोयमा! जाव भवइ ॥८॥ एव एएण कमेण उच्चारेयव्व सत्तरस मुहुत्ते दिवसे, तेरस मुहुत्ता राई भवइ। सत्तरस मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राई । सोलसमुहुत्ते दिवसे चोद्दस मुहुत्ता राई सोलस मुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेग चोद्दस मुहुत्ताराई ॥ पण्ण-

में जब अठारह मुहूर्त से कम का दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू मदर की पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब क्या उत्तर दक्षिणमें बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बू मदर के पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है ॥ ८ ॥ ऐसे ही अनुक्रम से सत्तरह मुहूर्त का दिन तेरह मुहूर्त की रात्रि, सत्तरह मुहूर्त से कुछ कम दिन व तेरह मुहूर्त

ज० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिण में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तैसे ही जा० यावत् प० होता है ॥ ११ ॥ ज० जब भ० भगवन् ज० जम्बूद्वीप के म मेरु की पु० पूर्व में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब प० पश्चिम में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय में प० होता है ज० जब प० पश्चिम में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब जा० यावत् म० मेरु पर्वत की उ० उत्तर दा० दक्षिण में अ० अनतर प० पश्चात् कृत स० समय में

पुरक्खकड समयसि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ? हता गोयमा ! जयाण जबू दाहिणड्ढे वासाण पढमसमए पडिवज्जइ, तहचेव जाव पडिवज्जइ ॥ ११ ॥ जयाण भते ! जबूदीवेदीवे मदरस्स पुरच्छिमेण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तयाण पच्चच्छिमेणवि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, जयाण पच्चच्छिमेण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तयाण जाव मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेण अणतर पच्छाकड

ऋतु का प्रथम समय होता है तब पूर्व पश्चिम में अनतर आगामिक वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है ॥ ११ ॥ जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व व पश्चिम दिशा में वर्षा का प्रथम समय होता है तब क्या उत्तर व दक्षिण दिशा में अनतर अतीत काल में वर्षा का प्रथम समय होता है ? हां गौतम ! जब पूर्व पश्चिम में वर्षा का प्रथम समय होता है तब उत्तर व दक्षिण में

दिवस सा० कुछ अधिक चो० चौदह मुहूर्त रा० रात्रि ५० पन्नरह शेष पूर्ववत् ॥ ९ ॥ १० ॥ ज० जब ज० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिणार्ध में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध में भी वा० वर्षा का प०प्रथम समय प०होता है ज०जब उ०उत्तरार्ध में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब जं० जम्बूद्वीप में म० मेरु की पु० पूर्व में प० पश्चिम में अ० अनतर पु० आगामिक स० समय में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है ह० हां गो० गौतम ज० जब

पच्चत्थिमेण वि जयाण पच्चत्थिमेण वि तयाण जंबू मंदर उत्तरदाहिणेण उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई ? हंता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥ १० ॥ जयाण भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तयाण उत्तरड्ढेवि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, जयाण उत्तरड्ढे वासाण पढमे समये पडिवज्जइ तयाण जंबूदीवेदीवे मंदर पुरच्छिमे पच्चच्छिमेण अणंतर

है ? हां गौतम ! जब जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त का दिन होता है तब दक्षिण में अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के मेरु की दक्षिण में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है तब उत्तर में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है जब उत्तर में वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है तब क्या जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में अनंतर आगामिक काल का वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है ? हां गौतम ! जब उत्तर दक्षिण में वर्षा

प० होता है ज० जैसे वा० वर्षा का अ० अभिलाप त० वैसे हे० हेमत का गि० ग्रीष्म का भी भा० कहना जा० यावत् उ० ऋतु ए० ऐसे ए० उन ति० तीन प० पद की साथ ती० तीस आ० आलापक भा० कहना ॥१३॥ ज० जब दा० दाक्षिण में प० प्रथम अ० अयन प० होती है त० तब उ० उत्तरार्ध में प० प्रथम अ० अयन प० होती है ज० जैसे स० समय का अ० अभिलाप त० वैसे अ० अयन से भा० कहना जा०

हेमताणं पढमे समए पडिवज्जइ, जहेव वासाण अभिलावो तहेव हेमताणवि गिम्हाणवि भाणियव्वो जाव उऊ ॥ एव एए तिण्णिवि पएसिं तीस आलावगा भाणियव्वा ॥ १३ ॥ जयाण भते ! जबू दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तयाण उत्तरड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएण अभिलावो तहेव अयणेणवि

मेरु पर्वत की उत्तर, दक्षिण में हेमन्त ऋतु का प्रथम समय होता है तब क्या पूर्व पश्चिम में अनतर अनागत काल में हेमन्त का प्रथम समय होता है ? अहो गौतम ! जैसे वर्षा ऋतु का कहा, वैसे ही हेमन्त ऋतु का जानना और ऐसे ही ग्रीष्म ऋतु का जानना इस तरह तीन ऋतु की साथ समयादिक के तीस आलापक हुए ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जब दक्षिण व उत्तर विभाग में अयन होती है तब क्या पूर्व पश्चिम में अनंतर आगामिक अयन होती है ? हां गौतम ! इस का सब कथन समय जैसे करना

त्रा॰ वर्षा का प॰ प्रथम स॰ समय प॰ हुवा भ॰ होता है ई॰ हां गो॰ गौतम ज॰ जब ज॰ जम्बू मे-
मेरु पु॰ पूर्व में ए॰ ऐसे उ॰ कहना जा॰ यावत् प॰ हुवा भ॰ होवे ए॰ ऐसे ज॰ जैसे स॰ समय से अ॰
अभिलाप भा॰ कहा व॰ वर्षा का त॰ तैसे आ॰ आवलिका से भा॰ कहना आ॰ श्वासोश्वास थो॰
थोव ल॰ लव मु॰ मुहूर्त अ॰ अहोरात्रि प॰ पक्ष मा॰ मास उ॰ ऋतु से ए॰ इन स॰ सब से ज॰ जैसे
स॰ समय का अ॰ अभिलाप त॰ तैसे भा॰ कहना ॥ १२ ॥ ज॰ जब हे॰ हेमंत का प॰ प्रथम स॰ समय

समयसि वासाण पढमे समए पडिवण्णे भवइ ? हंता गोयमा ! जयाण जबूमदर
पुरच्छिमेण एव चेव उच्चारेयव्व जाव पडिवण्णे भवइ, एव जहा समएण अभिलावो
भाणिओ वासाण तहा आवलियाएवि भाणियव्वो, आणा पाणूणवि, थोवेणवि, लवे-
णवि, मुहुत्तेणवि, अहोरत्तेणवि, पक्खेणवि, मासेणवि, उऊणावि । एएसिं सव्वेसिं
जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो ॥ १२ ॥ जयाण भंते ! जबूदीवेदीवे

अनन्तर अतीत काल में वर्षा का प्रथम समय होता है अर्थात् प्रथम दक्षिण उत्तर विभाग में वर्षा काल
होता है फीर पूर्व पश्चिम में होता है ऐसे ही जैसे समय का कहा वैसे ही आवलिका, श्वासोश्वास,
स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्रि, पक्ष, मास व ऋतुका जानना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के

द्वीप के दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० है त० तब उ० उत्तर में भी प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है ज० जब उ० उत्तर में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी ज० जम्बूद्वीप के म० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में भी ने० नहीं अ० है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी अ० अवस्थित त० वहां का० काल प० प्ररूपा स० श्रमण आ० आयुष्मन् ह० हां गो० गौतम त० वैसे ही उ० कहना जा० यावत् स० श्रमण आ० आयुष्मन् ज० जैसे ओ० अवसर्पिणी आ० आलापक मा० कहना ए० ऐसे

पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाण उत्तरढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जयाण भंते ! उत्तरढे पडिवज्जइ तयाण जबूदीवेदीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेणवि नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी अवट्ठिएण तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ? हंता गोयमा ? तचेव उच्चारेयव्व जाव समणाउसो जहा ओसप्पिणीए

दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब उत्तरविभाग में भी अवसर्पिणी होती है और जब उत्तर विभाग में अवसर्पिणी है तब क्या पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है ? क्या वहां अवस्थित काल होता है ? हां गौतम ! जब उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं होती है परंतु वहां पर अवस्थित काल होता है ऐसे उत्सर्पिणी का

यावत् अ० अनतर प० पश्चात् क० कृत स० समय में प० प्रथम अ० अयन प० प्रतिपन्न भ० होती है ज० जैसा अ० अयन का अ० अभिलाप त० तैसे सं० संवत्सर से भा० कहना जु० युग वा० शतवर्ष वा० सहस्र वर्ष से वा० वर्ष लक्ष पु० पूर्वांग से पु० पूर्व से तु० त्रुटितांग तु० तुटित ए० ऐसे पु० पूर्व तु० तुटित अ०अडड अ०अवव हू०हूहुय उ०उप्पल प०पद्म न०नलिन अ० अत्थिनिउर अ०अउय न०नउय प० पउय चू०चूलिका सी०शीर्षप्रहेलिका प०पल्योपम सा० सागरोपम भा० कहना ॥ १४ ॥ ज० जब ज०जम्बू-

भाणियव्वो, जाव अणतरपच्छाकडसमयसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ ॥ जहा अयणेण अभिलावा तहा सवच्छरेणवि भाणियव्वो ॥ जुएणवि, वाससएणवि, वाससहस्सेणवि, वाससयसहस्सेणवि, पुव्वंगेणवि, पुव्वेणवि, तुडियंगेणवि, तुडि-एणवि, एव पुव्वे, २ तुडिए २, अडडे २, अववे २, हूहुय २ उप्पले २, पउमे २, नलिणे २, अत्थिणेउरे २, अउए २,णउए २,पउए २,चूलिए २,सीसपहेलिया पलि-ओवमेणवि, सागरेणवि, भाणियव्वो ॥ १४ ॥ जयाण भते ! जबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे

जैसे अयन का कहा वैसे ही दो अयन का संवत्सर, पांच संवत्सर का युग, सो वर्ष, सहस्र वर्ष, लक्षवर्ष, चौरासी लक्ष वर्ष का एक पूर्वांग, चौरासी पूर्वांग का पूर्व, यो ही हूहुय २ उप्पल २ पद्म २ नलिण २ अत्थिणेउर २ अउय २ नउय २ पउय २ चूलिए, शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम व सागरोपम का जानना ॥१४॥ अब जम्बूद्वीप के

द्वीप के दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० है त० तब उ० उत्तर में भी प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है ज० जब उ० उत्तर में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी जं० जम्बूद्वीप के म० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में भी ने० नहीं अ० है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी अ० अवस्थित त० वहां का० काल प० प्ररूपा स० श्रमण आ० आयुष्मन् ह० हां गो० गौतम त० वैसे ही उ० कहना जा० यावत स० श्रमण आ० आयुष्मन् ज० जैसे ओ० अवसर्पिणी आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे

पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाण उत्तरड्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जया-ण भंते ! उत्तरड्ढे पडिवज्जइ तयाण जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेणवि नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी अवट्ठिएण तत्थकाले पण्णत्ते समणा उसो ? हंता गोयमा ? तचेव उच्चारेयव्व जाव समणाउसो जहा ओसप्पिणीए

दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब उत्तरविभाग में भी अवसर्पिणी होती है और जब उत्तर विभाग में अवसर्पिणी है तब क्या पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है ? क्या वहां अवस्थित काल होता है ? हां गौतम ! जब उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं होती है परंतु वहां पर अवस्थित काल होता है ऐसे उत्सर्पिणी का

उ० उत्तरार्ध भी मा० कहना ॥ १५ ॥ ल० लवण स० समुद्र में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ०उदित होकर ज० जैसी जं० जम्बूद्वीप की व० वक्तव्यता भा० कही स० वैसी ही स० सब अ० विशेषता रहित ल० लवण समुद्र की भा० कहना न० विशेष अ० अभिलाप इ० यह जा० जानना ज० जब ल० लवण समुद्र में दा० दक्षिण में दि० दिन भ० होता है तं० वैसे ही जा० यावत् त० तब ल० लवण समुद्र की पु० पूर्व पश्चिम में रा० रात्रि भ० होती है ए० इस अ० अभिलाप से ने० जानना जा० यावत् ज० जब भं० भगवन् ल० लवण समुद्र में दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है त०

आलावओ भाणियव्वो । एवं उस्सप्पिणीएवि भाणियव्वो ॥ १५ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जच्चेव जंबूदीवस्स वत्तव्वया भाणिया, सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्सवि भाणियव्वा, णवरं अभिलावो इमो जाणियव्वो जयाणं भंते ? लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तंचेव जाव तयाणं लवण समुद्दे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं राई भवइ ॥ एएणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव जयाणं भंते ?

जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? हां गौतम ! इस का सब वर्णन जम्बूद्वीप जैसे जानना यावत् लवण समुद्र में दक्षिण भाग में दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में रात्रि होती है यावत् लवण समुद्र के दक्षिण भाग में प्रथम अ-

तब उ० उत्तरार्ध में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी ज० जब उ० उत्तरार्ध में ओ० अवसर्पिणी प० है त० तब ल० लवण समुद्र में पु० पूर्व प० पश्चिम में ने० नहीं है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी स० श्रमण आ० आयुष्मन् हं० हां गो० गौतम जा० यावत् स० श्रमण आ० आयुष्मन् ॥ १६ ॥ धा० धातकी खंड में भ० भगवन् दी० द्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर ज० जैसे ज० जम्बूद्वीप की व० वक्तव्यता स० सब धा० धातकी खंडकी भा० कहना ण० विशेष इ० इस आ० अभिलाप से स० सब आ० आलापक भा० कहना ॥ १७ ॥ ज० जब भं० भगवन् धा० धातकी खंड दी० द्वीप

लवण समुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जयाणं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तयाणं लवण समुद्दे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी समणाउसो ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो ॥ १६ ॥ धायइखंडेणं भंते ! दीवे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जहेव जंबूदीवस्स वत्तव्वया, सच्चेव धायइखंडस्सवि भाणियव्वा, णवरं इमेणं अभिलावेणं सव्वे आलावगा भाणियव्वा ॥ १७ ॥ जयाणं भंते ! धायइखंडेदीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि

त्सर्पिणी है तब पूर्व पश्चिम में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं है, यगैरह अधिकार जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! धातकीखंड में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? हां गौतम ! इस का सब अधिकार जम्बूद्वीप जैसे कहना ॥ १७ ॥ जब धातकी खंड के दक्षिण विभाग

में दा० दक्षिण में दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में भी दि०दिन भ०होता है ज० जब उ० उत्तर में भी त० तब धा० धातकी खड दी० द्वीपमें म०मेरु प० पर्वतोंकी पु० पूर्व प०पश्चिम में रा० रात्रि भ० होती है ह० हां गो० गौतम जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ १८ ॥ पूर्ववत् ॥ १९ ॥ ऐ०

जयाण उत्तरड्ढेवि तयाण धायइखडे दीवे मदराण पव्वयाण पुरच्छिम पच्चच्छिमेण राई भवइ ? हता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥ १८ ॥ जयाण भते ! धायइ खडे दीवे मदराणं पव्वयाण पुरच्छिमण दिवसे भवइ, तयाण पच्चच्छिमेणवि, जयाण पच्चच्छिमेणवि तयाणं धायइ खंडे मदराण पव्वयाण उत्तर दाहिणेण राई भवइ ? हता गोयमा ! जाव भवइ ॥ १९ ॥ एव एएण अभिलावेण नेयव्व जाव जयाण भते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी तयाण उत्तरड्ढे, जयाण उत्तरड्ढे तयाण धायइ

में दिन होता है तब उत्तर विभाग में दिन होता है और जब उत्तर विभाग में दिन होता है तब पूर्व पश्चिम विभाग में रात्रि होती है ॥ १८ ॥ जब पूर्व पश्चिम विभाग मे दिन होता है तब उत्तर दक्षिण विभाग में रात्रि होती है ॥ १९ ॥ इसी तरह अवसर्पिणी उत्सर्पिणी तक जानना जब धातकी खंड के उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ

मदराण पव्वयाण पुरच्छिम पच्चच्छिमेण नेवत्थि ओसाप्पिणी जाव समणाउसो ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो ॥ २० ॥ जहा लवणसमुद्द वत्तव्वया तहा कालोदहिस्सवि भाणियव्वा, णवर कालोदहिस्स नाम भाणियव्व ॥ २१ ॥ अब्भिंतर पुक्खरद्धेण भंते ! सूरिया उदीचि पाईण मुग्गच्छ जहेव धायइ खडस्स वत्तव्वया तहेव अब्भितर पुक्खरद्धस्सवि भाणियव्वा। णवर आभिलावो जाणियव्वो, जाव तयाण अब्भितर पुक्खरद्धे मदराण पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं, णेवत्थि ओसप्पिणी, णेव-

इस अ० अभिलाप से ने० जानना शेष पूर्ववत् ॥ २० ॥ ज० जैसे ल० लवण समुद्र की व० वक्तव्यता त० तैसे का० कालोदधि की भा० कहना न० विशेष का० कालोदधि ना० नाम भा० कहना ॥ २१ ॥ अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध में भ० भगवन् सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर ज० जैसे धा० धातकी खंड की व० वक्तव्यता त० तैसे अ० आभ्यतर पु० पुष्करार्ध की भा० कहना ण० विशेष अ० अभिलाप जा० जानना जा० यावत् त० तब अ० आभ्यतर पु० पुष्करार्ध म० मेरू की पु० पूर्व में प० पश्चिम से णे० नहीं है ओ० अवसर्पिणी णे० नहीं है उ० उत्सर्पिणी, अ० अवस्थित त० वहां का० नहीं होते हैं ॥ २० ॥ जैसे लवण समुद्र की वक्तव्यता कही वैसे ही कालोदधि समुद्र की वक्तव्यता जानना इस में कालोदधि नाम कहना ॥ २१ ॥ आभ्यतर पुष्करार्ध द्वीप का घात की खंड जैसे सब

काल प० कहा स० श्रमण आ० आयुष्मन् से० वैसे ही भ० भगवन् प० पांचवा स० शतक का प्रथम उ० उद्देशा स० संपूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥

\+ \+

रा० राजगृह जा यावत् ए० ऐसा व० बोले अ० है भ० भगवन् ई० अल्प पु० मस्नेह वा० वायु प० पथ्य वायु मं० मन्दवायु म० महावायु वा० चलता है ह० हां अ० है ॥ १ ॥ अ० है

त्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिएण तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ! सेव भंते भंतेत्ति ॥

पंचमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ १ ॥

* *

रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी-अत्थिण भंते ! ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मंदावाया महावाया वायंति ? हंता अत्थि ॥ १ ॥ अत्थिण भंते ! पुरिच्छिमेण ईसिं पुरेवाया

आल्पक कहना यावत् पुष्करार्ध द्वीप में पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुछ नहीं है परतु अवस्थित काल रहा हुवा है अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह पांचवा शतकका पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ १ ॥

\+ \+

प्रथम उद्देशे में दिशि में दिवसादिक के विभाग कहे अब इस में वायु के भेद कहते हैं राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अल्प स्नेह सहित वायु, वनस्पत्यादिकको पथ्यकारी वायु, मंद वायु व महा वायु

म० भगवन् पु० पूर्व में ए० ऐसे प० पश्चिम में दा० दक्षिण में उ० उत्तर में ठ० ईशान में दा० अग्नि दा० नैऋत्य उ० वायव्य ॥ २ ॥ ज० जब भ० भगवन् पु० पूर्व में ई० थोडा पु० सस्नेह वायु प० पथ्य वायु म० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है त० तब प० पश्चिम में ह० हां गो० गौतम ए०

पत्थावाया, मदावाया, महावाया वायति ? हता अत्थि ॥ एव पच्चच्छिमेण, दाहिणेण उत्तरेण, उत्तरपुरच्छिमेण, दाहिणपुरच्छिमेण दाहिपच्चच्छिमेण, उत्तरपच्चच्छिमेण॥२॥ जयाण भते ! पुरच्छिमेण ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मदावाया, महावाया वायति,तयाण पच्चच्छिमेणावि ईसिं पुरेवाया, जयाण पच्चच्छिमेण ईसिं पुरेवाया, तयाण पुरच्छिमे-णावि ? हता गोयमा ! जयाण पुरच्छिमेणं तयाण पच्चच्छिमेणावि ईसिं) जयाण पच्च-

क्या चलते हैं ? हां गौतम ! उक्त प्रकार के वायु चलते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या पूर्व दिशा में अल्प स्नेहवाला वायु, पथ्यकारी वायु, मंद वायु व महा वायु चलते हैं ? हां गौतम ! पूर्व दिशा में उक्त प्रकार के वायु चलते हैं ऐसे ही पश्चिम, उत्तर दक्षिण, ईशान, अग्नि, नैऋत्य व वायव्य कोन में भी ऐसे चार प्रकार के वायु चलते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जब पूर्व दिशि में स्नेहमय, पथ्य, मद व महा वायु चलते हैं तब पश्चिम दिशा में क्या स्नेहमयादि वायु चलते हैं ? हां गौतम ! जब पूर्व में उक्त प्रकार के वायु चलते हैं तब पश्चिम में भी वैसे वायु चलते हैं और जब पश्चिम में वैसे वायु चलते

काल प० कहा स० श्रमण आ० आयुष्मन् से० वैसे ही भ० भगवन् प० पाचवा स० शतक का प० प्रथम उ० उद्देशा स० सपूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥

रा० राजगृह जा याक्त् ए० ऐसा व० बोले अ० है भ० भगवन् ई० अल्प पु० सस्नेह वा० वायु प० पथ्य वायु मं० मदवायु म० महावायु वा० चलता है ह० हां अ० है ॥ १ ॥ अ० है

त्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिएण तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ! सेव भंते भंतेत्ति ॥ पचमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ १ ॥

रायगिहे णगरे जाव एव वयासी-अत्थिण भंते ! ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मदावाया महावाया वायति ? हता अत्थि ॥ १ ॥ अत्थिण भंते ! पुरिच्छिमेण ईसिं पुरेवाया

आलापक कहना यावत् पुष्करार्ध द्वीप में पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुछ नहीं है परंतु अवस्थित काल रहा हुवा है अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह पांचवा शतकका पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ १ ॥

प्रथम उद्देशे में दिशि में दिवसादिक के विभाग कहे अब इस में वायु के भेद कहते हैं राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अल्प स्नेह सहित वायु, वनस्पत्यादिकको पथ्यकारी वायु मंद वायु व महा वायु

इ० यह अ० अर्थ स० योग्य से० अब के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है गो० गौतम
तें० उन वा० वायु को अ० परस्पर वि० विपरीतता से० उस से ल० लवण समुद्र में वे० शिखा ना० उल्लंघे
नहीं से० अब त० इसलिये जा० यावत् वा० वायु वा० वाते हैं ॥ ४ ॥ अ० है भं० भगवन् ई० अल्प
पु० स्नेहयम वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है ह० हां अ० है क० कब

मट्ठ । से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ, जयाण दीविच्चया ईसिं णो णतया सामुद्दिया ईसिं
जयाण सामुद्दिया ईसिं णो णतया दीविच्चया ईसिं ? गोयमा ! तेसिण वायाण
अण्णमण्ण विवच्चासेण लवणसमुद्देवेल नाइक्कमइ, से तेणट्ठेण जाव वाया वायति
॥ ४ ॥ अत्थिण भते ! ईसिं पुरेवाया पच्छावाया, मंदावाया, महावाया, वायति ? हता
अत्थि । कयाण भते ईसिं जाव वाया वायति ? गोयमा ! जयाण वाउयाए अहारिय

हजार योजन की पानी की वेल रही हुई है, उसे लोक के स्वभाव से वायु नहीं उल्लंघ सकता है इस से
अहो गौतम ! जब द्वीप के वायु चलते हैं तब लवण समुद्र के वायु नहीं चलते हैं और जब लवण समुद्र
के वायु चलते हैं तब द्वीप के वायु नहीं चलते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! स्नेहमय वायु, पथ्य वायु, मंद
वायु व महावायु चलते हैं ? हां गौतम ! चलते हैं अहो भगवन् ! ये वायु कब चलते हैं ? अहो
गौतम ! जब यथारीति से वह वायुकाय जावे या उसका गमन होवे तब वायुकाय चले अहो भगवन् ! क्या

एसे दि० दिशि वि० विदिशि में ॥ ३ ॥ अ० है मं० भगवन् दी० द्वीप मत्यीयिक ई० अल्प ह० हां अ० है अ० है भ० भगवन् सा० समुद्र सबधी ई० अल्प ह० हां अ० है ज० जब भं० भगवन् दि० द्वीप मत्यीयिक ई० अल्प पु० स्नेहमय वायु त० तब सा० समुद्र का ई० अल्प पु० स्नेहमय वा० वायु णो० नहीं

च्छिमेणावि ईसिं तयाण पुरच्छिमेणावि ईसिं ॥ एव दिसासु, विदिसासु, ॥ ३ ॥ अत्थिण भंते दीविच्चया ईसिं ? हता अत्थि ॥ अत्थिण भंते सामुद्दिया ईसिं ? हता अत्थि ॥ जयाणं भंते ! दिविच्चया ईसिं पुरेवाया, तयाण सामुद्दिया वि ईसिं पुरेवाया, जयाण सामुद्दियाईसिं तयाण दीविच्चया ईसिं ? णोइणट्ठे स-

हैं तब पूर्व में भी वैसे ही वायु चलते हैं यों चारों दिशि विदिशि का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! द्वीप सबधी स्नेहमय वायु क्या होता है ? हां गौतम ! द्वीपसंबधी स्नेहमय वायु होता है वैसे ही समुद्र संबधी भी स्नेहमय वायु होता है अहो भगवन् ! जब द्वीपसबधी स्नेहमय, पथ्य वायु, मद वायु, व महा वायु चलते हैं तब क्या लवण समुद्र सबधी उक्त प्रकार के वायु चलते हैं ? अथवा जब समुद्रके वायु चलते हैं तब क्या द्वीप के वायु चलते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! यह अर्थ किस कारन से योग्य नहीं है ? अहो गौतम ! उक्त द्वीप व समुद्र ऐसे दोनों प्रकार के वायु में परस्पर विपरीतपना है अर्थात् ऐसा उन वायुओं का स्वभाव ही रहा हुवा है अथवा लवण समुद्र में सोलह

का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जैसें ख० स्कदक त० तैसे च० चार आ० आलापक ने० जानना अ० अनेक ग० लक्ष पु० स्पर्श्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥ उ० चांवल कु० कुल्थ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ० चावल कु० कुल्थ सु० मदिरा जें० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० भाव प० कहा हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

भते ! वाउय चेव आणमतिवा, पाणमतिवा, जहा खदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भते ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएण किं सरीराति वत्तव्व सिया ? गोयमा ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएण पुव्वभाव पण्णवण पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

चत्ती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम ! स्कन्दक के आधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न होते हैं वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव सरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना॥७॥ अब अहो भगवन् ! ओदन, (चांवल) कुल्थ व सरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

भ० भगवन् ई० अल्प जा० यावत् वा० वायु वा० वाता है गो० गौतम ज० जब वा० वायु अ० यथरुछ रि० जाता है त० तब ई० अल्प जा० यावत् वा० चलता है ॥ ५ ॥ वा० वायु काय उ० उत्तर वैक्रेय वा० वायु कुमार वा० वायु कुमारी अ० स्वत के प० अन्य के उ० दोनों के अ० लिये वा० वायु काया की उ० उदीरणा करे त० तब ई० अल्प पु० स्नेहवाला वायु ॥ ६ ॥ वा० वायु काय वा० वायु

रियति तयाण ईसिं जाव वायति ॥ अत्थिण भते ईसिं ? हता अत्थि! कयाण भते! ईसिं जाव वायति ? गोयमा! जयाण वाउयाए उत्तरकिरिय रियइ, तयाण ईसिं ॥ ५ ॥ अत्थिण भते! ईसिं ? हता अत्थि। कयाण भते! ईसिं पुरेवाया पुच्छा? गोयमा! जयाण वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा, अप्पणो परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकाय उदीरति, तयाण ईसिं पुरेवाया ॥ ६ ॥ वाउयाएण

स्नेहमयादि वायु चलते हैं? हां गौतम! स्नेहमयादि वायु चलते हैं अहो भगवन्! वे वायु कब चलते हैं? अहो गौतम! वायुकाय का शरीर स्वाभाविक है, उत्तरवैक्रेय करके शरीराश्रितक्रिया से उनका जब गमन होवे तब वे चले ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! क्या स्नेहमयादि चार प्रकार के वायु हैं? हां गौतम! अहो भगवन्! वे स्नेहमयादि वायु कब चलते हैं? अहो गौतम! जब वायुकुमार स्वत के लिये, अन्य के लिये अथवा दोनों के लिये वायुकाय नीकालते हैं तब वायुकाय

का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जैसे ख० स्कदक त० तैसे च० चार आ० आलापक
ने० जानना अ० अनेक स० लक्ष पु० स्पर्श्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥
व० चांवल कु० कुलथ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन मे स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ०
चावल कु० कुलथ सु० मदिरा जें० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० माव प० कहा
हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

भंते ! वाउय चेव आणमतिवा, पाणमतिवा, जहा खदए तहा चत्तारि आलावगा
नेयव्वा अणेगसयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भंते !
उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएण किं सरीराति वत्तव्व सिया ? गोयमा ! उदण्णे,
कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएण पुव्वभाव पण्णवण पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

चकती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम ! स्कन्दक के
अधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न
होते हैं वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव
शरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना॥७॥
अब अहो भगवन् ! ओदन, (चावल) कुल्थ व सुरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

म० भगवन् ई० अल्प जा० यावत् वा० वायु वा० वाता है गो० गौतम ज० जब वा० वायु अ० यथस्छ रि० जाता है त० तब ई० अल्प जा० यावत् वा० चलता है ॥ ५ ॥ वा० वायु काय उ० उत्तर वैक्रेय वा० वायु कुमार वा० वायु कुमारी अ० स्वत के प० अन्य के उ० दोनों के अ० लिये वा० वायु काया की उ० उदीरणा करे त० तब ई० अल्प पु० स्नेहवाला वायु ॥ ६ ॥ वा० वायु काय वा० वायु

रियति तयाण ईसिं जाव वायति ॥ अत्थिण भते ईसिं ? हता अत्थि ! कयाण भते ! ईसिं जाव वायति ? गोयमा ! जयाण वाउयाए उत्तरकिरिय रियइ, तयाण ईसिं ॥ ५ ॥ अत्थिण भते ! ईसिं ? हता अत्थि । कयाण भते ! ईसिं पुरेवाया पुच्छा ? गोयमा ! जयाण वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा, अप्पणो परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकाय उदीरति, तयाण ईसिं पुरेवाया ॥ ६ ॥ वाउयाएण

स्नेहमयादि वायु चलते हैं ? हां गौतम ! स्नेहमयादि वायु चलते हैं अहो भगवन् ! वे वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! वायुकाय का शरीर उदारिक है, उत्तरवैक्रेय करके शरीराश्रितक्रिया से उनका जब गमन होवे तब वे चले ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या स्नेहमयादि चार प्रकार के वायु हैं ? हां गौतम ! अहो भगवन् ! वे स्नेहमयादि वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! जब वायुकुमार अपने स्वत के लिये, अन्य के लिये अथवा दोनों के लिये वायुकाय नीकालते हैं तब वायुकाय

का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जैसे ख० स्कदक त० तैसे च० चार आ० आलापक ने० जानना अ० अनेक ल० लक्ष पु० स्पर्श्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥ उ० चांवल कु० कुल्थ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन मे स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ० चावल कु० कुलथ सु० मदिरा जें० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० भाव प० कहा हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

भंते ! वाउय चेव आणमतिवा, पाणमतिवा, जहा खदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगलयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भंते ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएण किं सरीराति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएण पुव्वभाव पण्णवण पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

चरती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम ! स्कन्दक के अधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न होते हैं वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव शरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना॥७॥ अब अहो भगवन् ! ओदन, (चांवल) कुल्थ व सुरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थ परिणामिया, अगणिज्झामिया, अगणिज्झूसिया अगणि सेविया अगणिपरिणामिया, अगणिजीवसरीरातिवा वत्तव्वसिया। सुरा एय जे दव्वे एएण पुव्वभाव पण्णवर्ण पडुच्च आउजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरातिवत्तव्व सिया ॥८॥ अहणं भंते! अये तवे तउए सीसए उवले

हुवे श० शस्त्र से प० परिणमेहुवे अ० अग्नि से झा० जले हुवे अ० अग्नि से झु० शोषन हुवे अ० अ अग्नि से प० परिणमित अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर व० वक्तव्यता सि० होवे सु० मदिरा ए० यह जे० जो द० प्रवाही ए० यह पु० पूर्वभाव प० आश्रित प० कहा हुवा आ० अप्काय जी० जीव स० शरीर त० उस की प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे जा० यावत् अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर ॥ ८ ॥ अ० अथ भं० भगवन् अ० लोहा तं० ताम्बा त० तरूआ सा० सीसा उ० पत्थर क०

गौतम! द्रव्य के दो भेद घनद्रव्य व द्रव (प्रवाही) द्रव्य जो ओदन व कुलए घनद्रव्य हैं वे पूर्व पर्याय आश्री वनस्पतिकायिक हैं; फीर शस्त्र से अतिक्रमाये हुवे, शस्त्र से परिणमाये हुवे, अग्नि से भमित, अग्नि भमित, व अग्नि से परिणमित इस पदार्थों अग्नि के शरीरवाले कहाते हैं और सुरा (शराब) प्रवाही द्रव्य होने से पूर्व पर्याय आश्री अप्कायिक कहाता है फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि कायिक कहाता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! लोहा, ताम्बा, तरूआ, सीसा, पाषाण, दग्ध कसोटा वगैरह कौन

कसोरा ए० ये किं० कोन से स० शरीर वाले गो० गौतम पु० पृथ्वी स० शरीर वाले त० उस प० पीछे अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर वाले ॥ ९ ॥ अ० अथ भ० भगवन् अ० अस्थी अ० जलीहुई अस्थी च० चर्म च० जला हुवा चर्म रो० रोम रो० जला हुवा रोम सिं० शृग सिं०जला हुवा शृग खु०खुर खु० जलाहुवा खुर न० नख न० जला हुवा नख ए० ये किं० कोन से श० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० है गो० गौतम अ० अस्थी च० चर्म रो० रोम सिं० शृग, खु० खुर न० नख ए० ये त० त्रस प्राण जी० जीव स० शरीर वाले अ० जलीहुइ हड्डी च० जला चर्म रो० जला रोम सिं० जलाशृंग खु० जला

कसाट्ठिया एएण किं सरीराइ वत्तव्वसिया ? गोयमा! अये, तबे, तउए, सीसए, उव-
ले कसाट्ठिया एएण, पुव्वभावपण्णवण पडुच्च पुढवी जीव सरीरा, तओ पच्छा
सत्थाईया जाव अगाणि जीव सरीराइ वत्तव्वसिया ॥ ९ ॥ अह भंते ! अट्ठी,
अट्ठिज्झामे चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे सिंगे, सिंगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे,
नहे, नहज्झामे एएण किं सरीराइ वत्तव्व सिया ? गोयमा ! अट्ठी चम्मे रोमे सिंगे

से शरीरवाले हैं ? अहो गौतम ! पूर्व पर्याय आश्रित पृथ्वी शरीरवाले हैं और शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने से अग्नि शरीरी है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! हड्डी, जली हुई हड्डी, चर्म, जलाहुवा चर्म, ऐसे ही विना जलाहुवा व जलाहुवा रोम, शृंग, खुर, व नख को कौनसा शरीर कहा है ? अहो गौतम ! अस्थी,

खुर ण० जलाहुवा नख ए० ये पु० पहिले के भाव प० कहा हुवा प० आश्रित त० त्रस पा० प्राण जीव स० शरीर त० उन प० पीछे स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे जा० जावत् अ० अग्नि जीव व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १० ॥ अ० अथ भ० भगवन् इं० अंगार छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम इं० अगारे छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने पु० पूर्व भाव प० कहा हुवा ए० य ए० एकेन्द्रिय जीव स० शरीर प० प्रयोग परिणामित जा० यावत् प० पंचेन्द्रिय स० शरीर प० प्रयोग प० परिणामित त० उस प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे

खुरे नहे एएणं तसपाणजीवसरीरा । अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, सिंगखुर णहज्झामे एएण पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च तस पाण जीव सरीरा तओ पच्छा सत्थाईया जाव अगणिजीवत्ति वत्तव्व सिया ॥ १० ॥ अह भंते ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएण किं सरीराइ वत्तव्व सिया ? गोयमा ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएण पुव्वभाव पण्णवण पए एगिंदियजीवसरीरप्पयोग परिणामियावि जाव पचिंदिय जीव सरीरप्पयोग परिणामियावि, तओ पच्छा सत्थाईया

चर्म, रोम शृंग, खुर व नख त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं और जली हुई अस्थी, चर्म, रोम शृंगादि पूर्व भव आश्री त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अंगारे, राख, भूसा व गोबर को कोनसा शरीर कहा ?

जा० यावत् अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ ११ ॥ ल० लवण भं० भगवन् स० समुद्र में के० कितना च० चक्रवाल वि० विष्कम्भपना प० प्ररूपा ए० ऐसे ने० जानना जा० यावत् लो० लोकस्थिति लो० लोकानुभाव ॥ १२ ॥ से० ऐसे ही भ० भगवन् भ० भगवान जा० यावत् वि० विचरते हैं पं० पांचवे स० शतक में वी० दूसरा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ५ ॥ २ ॥

जाव अगणि जीव सरीराइ वत्तव्वसिया ॥ ११ ॥ लवणेण भंते ! समुद्दे केव इय चक्कवाल विक्खंभेण पण्णत्ते एव नेयव्व जाव लोगट्ठिई, लोयाणुभावे ॥१२॥ सेव भंते भंतेत्ति भगव जाव विहरइ ॥ पंचमसए बीईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥५॥२॥

अहो गौतम ! पूर्व पर्याय आश्रित एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय का शरीर कहा है फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणम ने से अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की परिधि कितनी कही? अहो गौतम ! लवण समुद्र दो लाख योजन का लम्बा चौडा है और १५८११३९ योजन से कुच्छ अधिक की उसकी परिधि कही है वगैरह जीवाभिगम सूत्र से अनुभाव तक कहना अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं ऐसा कहकर तप संयम मे आत्मा को भावते हुए श्री गौतम स्वामी विचरने लगे यह पांचवा शतकका दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ २ ॥

सूत्र

खुरे नहे एएणं तसपाणजीवसरीरा । अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, सिंगखुर णहज्झामे एएण पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च तस पाण जीव सरीरा तओ पच्छा सत्थाईया जाव अगणिजीवत्ति वत्तव्व सिया ॥ १० ॥ अह भंते ! ईगाले, छारिए, भुसे, गोमए एएण किं सरीराइ वत्तव्व सिया ? गोयमा ! इगाले, छारिए, भुसे, गोमए एएण पुव्वभाव पण्णवण एए एगिंदियजीवसरीरप्पयोग परिणामियावि जाव पंचिंदिय जीव सरीरप्पयोग परिणामियावि, तओ पच्छा सत्थाईया

खुर ण० नखहुवा नख ए० ये पु० पहिले के भाव प० कहा हुवा प० आश्रित त० त्रस पा० प्राण जीव स० शरीर त० उस प० पीछे स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे जा० जावत् अ० अग्नि जीव व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १० ॥ अ० अथ भं० भगवन् इं० अंगार छा० भस्म भु० भूसा गो० छाने ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम इं० अंगार छा० भस्म भु० भूसा गो० छाने पु० पूर्व भाव प० कहा हुवा ए० ये ए० एकेन्द्रिय जीव स० शरीर प० प्रयोग परिणमित जा० यावत् प० पंचेन्द्रिय स० शरीर प० प्रयोग प० परिणमित त० उस प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे

चर्म, रोम शृंग, खुर व नख त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं और जली हुई अस्थी, चर्म, रोम वगैरह पूर्व भव आश्री त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अंगारे, राख, भूसा व गोबर को कौनसा शरीर कहा ?

युण्य स० सहस्र आ० अनुक्रम से ग० गुंथा हुवा जा० यावत् चि० है ए० एक ही जी० जीव ए० एक स० समय में दो० दो आ० आयुष्य प० वेदते हैं त० वह ज० यथा इ० इस भवका प० परभवका ज० जिस स० समय में इ० इस भवका प० वेदता है त० उस स० समय में प० परभव का प० वेदता है

तंजहा इह भवियाउयं च, परभवियाउयंच, जंसमयं इह भवियाउयं पडिसंवेदेइ तं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, जाव से कहमेयं भंते! एवं? गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया तं चेव जाव परभवियाउयंच जे ते एवं माहंसु तं मिच्छा अहं पुण गोयमा! एवं माइक्खामि जाव अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स बहूहिं आजाइसहस्सेहिं बहूहिं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगठि-

हजारों आयुष्य अनुक्रम से गुन्थे हुवे, बांधे हुवे, यावत् परस्पर वीस्तीर्ण व भाँरवाले रहते हैं और इस से एक जीव एक समय में इस भव संबंधी व परभव संबंधी ऐसे दो आयुष्य वेदता है जिस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में वह जीव परभव संबंधी आयुष्य वेदता है और जिस समय में परभव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है अहो भगवन्! यह किस तरह है? अहो गौतम! अन्य तीर्थिक यावत् परभव संबंधी आयुष्य वेदते हैं वहांतक का

१ यहा कर्म पुद्गल की अपेक्षा से भारपना ग्रहण कियागया है

अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं प० प्ररूपते हैं से० अथ ज० जैसे जा० जाल ग्रंथिका आ० अनुक्रम से गं० गुथीहुई प० परपरा से गं० गुथीहुई अ० परस्पर गं० गुंथीहुई अ० परस्पर गु० विस्तार युक्त अ० परस्पर भा० वजनदार अ० परस्पर गु० विस्तीर्ण सं० वजनदार अ० परस्पर घ० रचीहुई चि० हैं ए० ऐसे ही ब० बहुत जी०जीवों के ब०बहुत आ०आजाति स०सहस्र ब०बहुत आ० आ-

अण्णउत्थियाण भंते ! एव माइक्खति भासेति पण्णवेंति, एव परूवेंति, से जहा नामए जाल गठियाइवा आणुपुव्विगठिया अणतरगठिया, परपरगठिया, अण्णमण्णगठिया, अण्णमण्ण गुरुयत्ताए, अण्णमण्णभारियत्ताए, अण्णमण्णगुरुसभारियत्ताए, अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति एवामेव बहूण जीवाण बहूसु आजाइसहस्सेसु, बहूइ आउयसहस्साइ आणुपुव्वि गठियाइ जाव चिट्ठति । एगे वियण जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पडिसवेदेइ-

दूसरे उद्देशे में समुद्रादिक का सत्यज्ञान ज्ञानियोंने कहा, अब आगे मिथ्यात्वीयोंका असत्यज्ञान कहते हैं श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को गौतम स्वामी वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पुछने लगे कि अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जैसे मत्स्य पकडने की जाली अनुक्रम से गुंथी हुई, परंपरा (एक ग्रन्थी अनतर दूसरी ग्रन्थी) से गुन्थी हुई परस्पर गुन्थी हुई, परस्पर वीस्तीर्ण परस्पर वजनवाली और वीस्तीर्ण व वजनवाली होती है वैसे ही बहुत देवतादि जन्म में अनेक जीवों के

चि० है ए० ऐसे ही ए० एक ही जी० जीव का ब० बहुत आ० आजाति स० सहस्र ब० बहुत आ० आयुष्य स० सहस्र आ० अनुक्रम से ग० ग्रथित चि० है शेष पूर्ववत् ॥ १ ॥ जी० जीव भ० भगवन् भ० योग्य ने० नारकी में उ० उपजने को से० वह किं० क्या सा० आयुष्य सहित स० जाता है नि० आयुष्य रहित स० जाता है गो० गौतम सा० आयुष्य सहित स० जाता है नो० नहीं नि० आयुष्य रहित स०जाता है से०उसने भं०भगवन् आ०आयुष्य क०कहा क०किया स० संचित किया गो० गौतम पु० पहिले भ० भव में क० किया पु० पहिले भव में सं० संचित किया ए० ऐसे जा०

खलु एगे जीवे एगेण समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा इहभवियाउयंवा, परभवियाउयंवा ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते किं साउए संकमइ निराउए संकमइ ? गोयमा साउए संकमइ नो निराउए संकमइ ॥ सेणं भंते ! आउए कहिं कडे कहिं समाइण्णे ? गोयमा ! पुरिमे

समय में इस भव के आयुष्य की वेदना नहीं होती है इसलिये जीव एक समयमें इस भव का अथवा परभव का ऐसा एक ही आयुष्य वेदता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जो जीव यहां से नरक में जाता है वह यहांपर नरक के आयुष्य का बंध करके जाता है या विना बंध किये हुए जाता है ? अहो गौतम ! नारकी में उत्पन्न होनेवाला नेरया यहांपर नरक का आयुष्य बांधकर जाता है विना बांधे नहीं जा

जा० यावत से० वह क० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम ज० जो ते० वे अ० अन्यतीर्थिक त० वैसे ही जा० यावत् प० परभव का आ० आयुष्य जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं त० वह मि० मिथ्या अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् अ० परस्पर घ० बनाने को

याइ जाव चिट्ठति ॥ एगे वियण जीवे एगेण समएण एग आउय पडिसंवेदेइ त जहा इह भवियाउयवा, परभवियाउयवा ज समय इह भवियाउय पडिसंवेदेइ नो तसमय परभवियाउय पडिसंवेदेइ, ज समय परभवियाउय पडिसंवेदेइ णो त समय इहभवियाउय पडिसंवेदेइ, इह भवियाउस्स पडिसंवेदणयाए णो परभवियाउयस्स पडिसंवेदणा, परभवियाउयस्स पडिसंवेदणयाए णो इहभवियाउयस्स पडिसंवेदणा एव

जो कथन करते हैं वह सब मिथ्या है परंतु मैं ऐसा कहता हूं कि ग्रन्थिजाल समान बहुत देवादिक जन्म में एक जीव के बहुत हजार आयुष्य अनुक्रम से गुन्थाये हुवे रहते हैं और एक जीव एक समय में इस भव संबंधी अथवा परभव संबंधी ऐसा एक ही आयुष्य वेद सकता है अर्थात् जिस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में परभव संबंधी आयुष्य नहीं वेदता है और जिस समय में परभव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में इस भव संबंधी आयुष्य नहीं वेदता है क्योंकि इस भव के आयुष्य की वेदना होते परभव के आयुष्य की वेदना नहीं होती है, और परभव के आयुष्य की वेदना के

प० करते स० सात प्रकार का प० करता है तं० वह ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के ने० नारकी का आ० आयुष्य जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी के ने० नारकी का आ० आयुष्य ति० तिर्यंच जो० योनिका आ० आयुष्य प० करते प० पांच प्रकार का प० करते हैं त० वह ज० जैसे ए० एके-न्द्रिय ति० तिर्यंच योनिका आ० आयुष्य भे० भेद स० सब भा० कहना म० मनुष्य का आ० आयुष्य दु० दोप्रकार का दे० देवका आ० आयुष्य च० चार प्रकार का प० करते हैं ॥ ५ ॥ ३ ॥

रयणप्पभापुढवी नेरइयाउयत्ता जाव अहे सत्तमा पुढवी नेरइयाउयत्ता, ॥ तिरिक्ख जोणियाउय पकरेमाणे पचविह पकरेइ तजहा एगिंदिय तिरिक्ख जोणियाउयत्ता भेदो सव्वो भाणियव्वो । मणुस्साउय दुविह पकरेइ देवाउय चउव्विह पकरेइ॥ सेव भते भतेत्ति ॥ पचमसए तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ३ ॥ *

सात प्रकार के आयुष्य का बंध करता है, रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी का आयुष्य यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी के नारकी का आयुष्य तिर्यंच योनि के आयुष्य का बंध करनेवाला एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि ऐसे पांच प्रकारके आयुष्यका बंध करता है कर्मभूमि व अकर्मभूमि ऐसे दो प्रकार के आयुष्य का बंध मनुष्य करता है और भुवनवासि, वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक ऐसे चार प्रकार के आयुष्य का बंध देवों करते हैं अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह पांचवा शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ३ ॥

यावत् वे० वैमानिक का दं० दंडक ॥ २ ॥ से० अथ णू० शंकादर्शी भं० भगवन् जे० जो ज० जिस भ० योग्य जो० योनि उ० उत्पन्न होने का से० वह त० उस आ० आयुष्य प० करता है तं० वह ज० जैसे ने० नारकी का आ०आयुष्य जा० यावत् दे० देवताका आ० आयुष्य हं० हां गो० गौतम जे० जो ज० जिस भ० योग्य जो० योनि उ० उत्पन्न होने को से० वह त० उस आ० आयुष्य प० करता है तं० वह ज० जैसे ने० नारकी का आ० आयुष्य दे० देवता का आ० आयुष्य ना० नारकी का आ०आयुष्य

भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे । एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ ॥२॥ से णूणं भंते! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ तंजहा नरइयाउयंवा, जाव देवाउयंवा ? हंता गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ, तंजहा नेरइयाउयंवा जाव देवाउयंवा । ने इयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ तंजहा

भकता है अहो भगवन् ! उस जीवने ऐसा आयुष्य कहां उपार्जित किया ? अहो गौतम ! जीवने ऐसा आयुष्य पूर्वभव में उपार्जित किया जैसे नारकीका कहा वैसे ही वैमानिक तक के चौविसही दंडक का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नरक यावत् देवयोनि में से जीव जिस योनि में उत्पन्न होने योग्य होता है उसी योनि के आयुष्य का बंध क्या वह करता है ? हां गौतम ! जिस योनि में उत्पन्न होने योग्य होता है उसी योनि के आयुष्य का बंध करता है नारकी के आयुष्य का बंध करनेवाला

भ० भगवन् कि० क्या पु० स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं गो० गौतम पु० स्पर्शे हुए सु० सुनते हैं णो० नहीं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं जा० यावत् नि० निश्चय ही छ० छदिशी सु० सुनते हैं त० तैसे भ० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य कि० क्या आ० इन्द्रिय विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं पा० इन्द्रिय विषय से दूर के स० शब्द सु० सुनते हैं गो० गौतम आ० इन्द्रिय

तजहा सखसद्दाणिवा जाव झूसिराणिवा ॥ ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ, अपुट्ठाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, णो अपुट्ठाइं सुणेइ, जाव नियमा छदिसिं सुणेइ ॥ तहाण भंते ! छउमत्थे मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, पारगयाइं सद्दाइं

मसुख का सुपिर शब्द सुन सकते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य हस्त मुख दडादि से संयोजित शंख के शब्द, यावत् सुपिर के शब्द सुन सकते हैं अहो भगवन् ! कान को स्पर्शाये हुवे शब्दों सुने जाते हैं या विना स्पर्शाये हुए शब्दों सुने जाते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शाये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु नहीं स्पर्शाये हुए शब्दों नहीं सुन सकते हैं यावत प्रथम शतक में जैसे आहार का अधिकार कहा वैसे ही यावत् छ दिशी के शब्दों सुन सकते हैं वहांतक कहना अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुए शब्दों सुन सकते हैं या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में नहीं आये हुए शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय के बाहिर

छ० छद्मस्थ मं० भगवन् म० मनुष्य आ० संयोग वाले स० शब्द सु० सुनते हैं स० शंख का शब्द सिं० भृगका शब्द स० छोटे शख का शब्द ख० खरमुखी पो० बडे बांके प० पीपी का स० शब्द प० छोटा ढोल प० बडा ढोल मं० मांकीया हो० होरमक स० शब्द भे० भेरी झ० झालर दु० दुदुमीका स० शब्द त० तत वि० वितत घ० घन झू० झुसिर हं० हां गो० गौतम छ० छद्मस्थ म० मनुष्य आ० अवघ वाले स० शब्द सु० सुनते है त० वह ज० जैसे स० शख शब्द जा० यावत् झू० झुषिर शब्द ता० उनको

छउमत्थेण भते ! मणूसे आउडिज्जमाणाइ सद्दाइ सुणेइ, तजहा सख सद्दाणिवा, सिंगसद्दाणिवा, सखिय खरमुहिय, पोया, परिपिरिया सद्दाणिवा पणव, पडह, भभा, होरभ सद्दाणिवा, भेरि- झल्लरि- दुदभि-सद्दाणिवा, तयाणि वितयाणिवा, घणाणिवा, झूसिराणिवा ? हता गोयमा ! छउमत्थेण मणूसे आउडिज्जमाणाइ सद्दाइ सुणेइ

तीसरे उद्देश में छद्मस्थ अन्यतीर्थीकी वक्तव्यता कही चौथे उद्देशे में छद्मस्थ केवली की वक्तव्यता करते हैं. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या हस्त मुख दंडादि से संयोजित शख का शब्द, भृगका शब्द, छोटे शंख का शब्द, खरमुखी (बांके) का शब्द, बडे बांके का शब्द, पीपी का शब्द, छोटे पडह का शब्द ढोल का शब्द, ढक्का का शब्द, होरंभ का शब्द, भेरी का शब्द, झालर का शब्द, दुंदुभी का शब्द, विणादि तत का शब्द, सतारादि वितत का शब्द, कांस्य तालादिक घन का शब्द, और बांसली

म० भगवन् कि० क्या पु० स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं गो० गौतम पु० स्पर्शे हुए सु० सुनते हैं णो० नहीं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं जा० यावत् नि० निश्चय ही छ० छदिशी सु० सुनते हैं त० तैसे भ० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य कि० क्या आ० इन्द्रिय विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं पा० इन्द्रिय विषय से दूर के स० शब्द सु० सुनते हैं गो० गौतम आ० इन्द्रिय

तजहा सखसद्दाणिवा जाव झूसिराणिवा ॥ ताइ भते ! किं पुट्ठाइ सुणेइ, अपुट्ठाइ सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइ सुणेइ, णो अपुट्ठाइ सुणेइ , जाव नियमा छदिसिं सुणेइ ॥ तहाण भते ! छउमत्थे मणूसे किं आरगयाइ सद्दाइ सुणेइ, पारगयाइ सद्दाइ

मनुष्य क्या झुषिर शब्द सुन सकते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य हस्त मुख दण्डादि से प्रयोजित शंख के शब्द, यावत् झुषिर के शब्द सुन सकते हैं अहो भगवन् ! कान को स्पर्शाये हुवे शब्दों सुने जाते हैं या विना स्पर्शाये हुए शब्दो सुने जाते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शाये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु नहीं स्पर्शाये हुए शब्दों नहीं सुन सकते हैं यावत प्रथम शतक में जैसे आहार का अधिकार कहा वैसे ही यावत् छ दिशी के शब्दों सुन सकते हैं वहांतक कहना अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुए शब्दों सुन सकते हैं या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में नहीं आये हुए शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय के बाहिर

विपयिक स० शब्द सु० सुनते हैं णो० नहीं पा० इन्द्रिय विपय से दूरके स० शब्द सु० सुनते हैं ॥ १ ॥ ज० जैसे भ० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली गो० गौतम आ० इन्द्रिय विपयिक पा० इन्द्रिय विपय से दूरके स० सब दू० दूर मू० पास अ० पासनहि ऐसे स० शब्द जा० जानते हैं पा० देखते हैं से० अथ के० कैसे तं० वैसे के० केवली आ० इन्द्रिय विपयिक पा० इन्द्रिय विपय से बाहिर के जा० यावत् पा० देखते हैं गो० गौतम के० केवली पु० पूर्व में मि० मर्यादा जा० जानते

सुणेइ ? गोयमा ! आरगयाइ सद्दाइ सुणेइ, णो पारगयाइ सद्दाइ सुणेइ ॥ १ ॥ जहाण भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइ सद्दाइ सुणेइ णो पारगयाइ सद्दाइ सुणेइ तहाण केवली किं आरगयाइ सद्दाइं सुणेइ पारगयाइ सद्दाइ सुणेइ ? गोयमा ! केवलीण आरगयंवा पारगयंवा सव्वदूरमूलमणतियं सद्द जाणइ पासइ, ॥ से केणट्ठेण तथेव केवलीणं आरगयवा पारगयंवा जाव पासइ ? गोयमा ! केवली पुरच्छिमेण

के शब्दों नहीं सुन सकते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब छद्मस्थ विषय के अंदर के शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय की बाहिर के शब्दों नहीं सुन सकते हैं तब क्या केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में रहे हुए शब्दों सुन सकते हैं या विषय से बाहिर के शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय के अंदर के व बाहिर के सर्वथा दूर के, पास के, व बीच के ऐसे सब शब्द जानते व देखते हैं

हैं अ० अमर्यादा जा० जानते हैं ऐ० ऐसे दा० दाक्षिण में प० पश्चिम में उ० उत्तर में उ० ऊर्ध्व अ० नीचे मि० मर्यादित जा० जानते हैं अ० अमर्यादित जा० जानते हैं स० सब जा० जानते हैं के० केवली स० सब पा० देखते हैं क० केवली स० सर्वथा स० सब काल स० सब भाव अ० अनंत णा० ज्ञान के० केवली को अ० अनंत द० दर्शन नि० प्रगट ज्ञा० ज्ञान ते० इसलिये जा० यावत् पा० देखते हैं ॥२॥

मियपि जाणइ, अमियपि जाणइ, एवं दाहिणेण, पच्चच्छिमेण, उत्तरेण, उड्ढं, अहे मियंपि जाणइ, अमियपि जाणइ, सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली, सव्वओ सव्वकालं, सव्वभावे, अणंते णाणे केवलिस्स, अणंते दसणे केवलिस्स, निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दसणे केवलिस्स, सेतेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ २ ॥

अहो भगवन् ! किस तरह केवली दूरके व नजीक, विषयवाले व विषय विनाके सब शब्दों जान व देखसकते हैं ? अहो गौतम ! केवली पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा में प्रमाण सहित गर्भज मनुष्य जीवादि वस्तु जानते हैं और प्रमाण रहित अनंत असंख्यात वनस्पति जीव तथा पृथ्वीजीवादि वस्तु जानते हैं इस तरह केवली सब जानते हैं व देखते हैं, केवली अतीत, अनागतादि सब काल, उदय उपशमादि सब भाव व उत्पाद व्यय ध्रौव्यादि सब भाव को केवल ज्ञान से जानते हैं व केवल दर्शन से देखते हैं क्योंकि केवल ज्ञानी को निरावरण शुद्ध निर्मल अनंत केवल ज्ञान व अनंत केवल दर्शन है इसलिये केवली

सुणेइ ? गोयमा ! आरगयाइ सद्दाइ सुणेइ, णो पारगयाइ सद्दाइ सुणेइ ॥ १ ॥

जहाण भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइ सद्दाइ सुणेइ णो पारगयाइं सद्दाइ सुणेइ तहाण केवली किं आरगयाइ सद्दाइं सुणेइ पारगयाइं सद्दाइ सुणेइ ? गोयमा ! केवलीण आरगयंवा पारगयंवा सव्वदूरमूलमणतिय सद्दं जाणइ पासइ, ॥ से केणट्ठेणं तथेव केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा जाव पासइ ? गोयमा ! केवली पुरच्छिमेण

विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं णो० नहीं पा० इन्द्रिय विषय से दूरके स० शब्द सु० सुनते हैं ॥ १ ॥ ज० जैसे भ० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली गो० गौतम आ० इन्द्रिय विषयिक पा० इन्द्रिय विषय से दूरके स० सब दू० दूर मू० पास अ० पासनहि ऐसे स० शब्द जा० जानते हैं पा० देखते हैं से० अथ के० कैसे त० वैसे के० केवली आ० इन्द्रिय विषयिक पा० इन्द्रिय विषय से बाहिर के जा० यावत् पा० देखते हैं गो० गौतम के० केवली पु० पूर्व में मि० मर्यादा जा० जानते

के शब्दों नहीं सुन सकते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब छद्मस्थ विषय के अंदर के शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय की बाहिर के शब्दों नहीं सुन सकते हैं तब क्या केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में रहे हुए शब्दों सुन सकते हैं या विषय से बाहिर के शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय के अंदर के व बाहिर के सर्वथा दूर के, पास के, व बीच के ऐसे सब शब्द जानते व देखते हैं

इ० हसे उ० उत्सुक होवे ॥ ३ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ह० हसते हुवे उ० उत्सुक होते हुवे क०कितनी क० कर्म प्रकृतियों ब० बांधे गो० गौतम स० सात प्रकार का ब० बंध अ० आठ प्रकार का ब० बंध ॥ ४ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् ह० हसते हुए उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों ब०

हसेज्जवाउस्सुया एज्जवा ॥३॥ जीवेण भंते ! हसमाणेवा उस्सुयमाणेवा कइकम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा ॥ ४ ॥ णेरइएण भंते ! हसमाणे उस्सुयमाणे कतिकम्म पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा एवं जाव वेमाणिए ॥ ५ ॥ जीवाण भंते ! हसमाणावा, उस्सु-यमाणावा कति कम्मप्पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावा, अट्ठविह

इसलिये केवली हसते नहीं है व उत्सुक नहीं होते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव हसताहुवा व उत्सुक होता हुवा कितने कर्म बांधे ? अहो गौतम ! जिन को आयुष्य कर्म का बंध नहीं होवे उस को सात कर्म प्रकृतियों और जिस को आयुष्य कर्म का बंध होवे उस को आठ कर्म प्रकृतियों का बंध होता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी इस तरह हसता हुवा व उत्सुक होता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सात कर्म प्रकृतियों का अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करे ऐसे ही वैमानिकतक के

छ० छद्मस्थ म० मनुष्य ह० हसे उ० उत्सुक होवे ह० हां ह० हसे उ० उत्सुक होवे ज० जैसे छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली णो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य से० वह के० किसलिये गो० गौतम ज० जिसलिये जी० जीव च० चारित्र मो० मोहनीय क० कर्म के उ० उदय मे ह० हसते हैं उ० उत्सुक होते हैं से० वह के० केवली को न० नहीं है ते० इसलिये जा० यावत् नो० नहीं त० तैसे के० केवली

छउमत्थेणं भंते! मणूसे हसेज्जवा, उस्सुयाएज्जवा? हंता हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा जहाणं भंते! छउमत्थे मणूसे हसेज्जवा उस्सुआएज्जवा, तहाणं केवलीवि हसेज्जवा, उस्सुयाएज्जवा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं, जाव नोणं तहा केवली हसेज्जवा उस्सुआएज्जवा? गोयमा! जण्णं जीवा चरित्तमोहणिज्जकम्मस्स उदएणं हसंतिवा उस्सुयायंतिवा, सेणं केवलिस्स नत्थि, से तेणट्ठेणं जाव नोणं तहा केवली

दूर के, नजीक के सब शब्दों जान व देख सकते हैं॥ २॥ अहो भगवन्! छद्मस्थ मनुष्य क्या हसते हैं व उत्सुक होते हैं? हां गौतम! छद्मस्थ मनुष्य हसते हैं व उत्सुक होते हैं अहो भगवन्! जैसे छद्मस्थ मनुष्य हसते हैं व उत्सुक होते हैं वैसे ही क्या केवली हसते हैं व उत्सुक होते हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन्! किस कारन से केवली नहीं हसते हैं यावत् उत्सुक नहीं होते हैं? अहो गौतम! चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से जीव हसते हैं व उत्सुक होते हैं वह केवली को नहीं है

ह० हसे उ० उत्सुक होवे ॥ ३ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ह० हसते हुवे उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों ब० बांधे गो० गौतम स० सात प्रकार का ब० बंध अ० आठ प्रकार का ब० बंध ॥ ४ ॥ णे० नारकी भ० भगवन् ह० हसते हुए उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों बं०

हसेज्जवाउस्सुया एज्जवा ॥३॥ जीवेण भंते ! हसमाणेवा उस्सुयमाणेवा कइकम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा ॥ ४ ॥ णेरइएण भंते ! हसमाणे उस्सुयमाणे कतिकम्म पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा एवं जाव वेमाणिए ॥ ५ ॥ जीवाण भंते ! हसमाणावा, उस्सुयमाणावा कति कम्मप्पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावा, अट्ठविह

इसलिये केवली हसते नहीं है व उत्सुक नहीं होते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव हसताहुवा व उत्सुक होता हुवा कितने कर्म बांधे ? अहो गौतम ! जिन को आयुष्य कर्म का बंध नहीं होवे उस को सात कर्म प्रकृतियों और जिस को आयुष्य कर्म का बंध होवे उस को आठ कर्म प्रकृतियों का बंध होता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी इस तरह हसता हुवा व उत्सुक होता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सात कर्म प्रकृतियों का अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करे ऐसे ही वैमानिकतक के

बांधते हैं गो० गौतम स० सात प्रकार से आ० आठ प्रकार से ब० बांधते हैं ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ५ ॥ जी० जीव भ० भगवन् ह० हसते हुवे पूर्ववत् ॥ ६ ॥ छ० छद्मस्थ भ० भगवन् नि०

वधगावा, ॥ णेरइयाण भते ! हसमाणा उस्सुयमाणा कतिकम्मप्पगडीओ वधति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज सत्तविह बधगा, अहवा सत्तविह वधगावि, अट्ठविह वधगावि, अहवा सत्तविह बधगाय अट्ठविह बधगाय, एव पोहत्तिएहिं, जीवेगिंदिय वज्जो तियभगो, ॥ ६ ॥ छउमत्थेण भते ! मणूसे निद्दाएज्जवा, पयलाएज्जवा ? हता

चौविस दंडक का जानना ॥ ५ ॥ अब बहुत जीव आश्रित पृच्छा करते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव हसते व उत्सुक होते कितनी प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! आयुष्य रहित सात का बंध करे व आयुष्य सहित आठ का बंध करे अहो भगवन् ! बहुत नारकी हसते उत्सुक होते कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सब जीव आयुष्य बिना सात का भी बंध करते हैं और आयुष्य सहित आठ का बंध करते हैं वैसे ही यहां कहना १ सब सात का बंध करनेवाले होते हैं २ सात का बंध करनेवाले अथवा आठ का बंध करनेवाले ३ सात और आठ का बंध करनेवाले ऐसे तीन भांगे एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर शेष १९ दंडक में पाते हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ जीव सुख से शयन

निद्रालेवे प० प्रचलालेवे ह० हां नि० निद्राभेवे प० प्रचलालेवे ज० जैसे ह० हसे त० तैसे ण० विशेष द० दर्शनावरणीय क० कर्म का उ० उदय से नि०निद्रालेवे प० प्रचलालेवे से० वह के० केवली को न०नहीं है अ० अनंत ॥ ७ ॥ जी० जीव भं० भगवन् नि० निद्रालेते प० प्रचलालेते क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों ब० बांधता है गो० गौतम स० सात प्रकार का अ० आठ प्रकार का ब० बंध ए० ऐसे जा० यावत् वे०

निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा, जहा हसेज्जा तहा णवर दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण, निद्दायइवा, पयलाइवा ॥ सण केवलिस्स नत्थि अणत चेव ॥ ७ ॥ जीवेण भंते ! निद्दायमाणेवा पयलायमाणेवा कतिकम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविह बधएवा अट्ठविहबधएवा, एव जाव वेमाणिए ॥ पोहत्तिएसु जीवेगिंदि-

किया जावे वैसी निद्रा या चलते, बैठते जो निद्रा आवे वैसी निद्रा क्या लेते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ उक्त प्रकार की निद्रा लेवे हैं वगैरह सब वर्णन छद्मस्थ जीव को हसने का आलापक कहा वैसे ही जानना परंतु यहां पर दर्शनावरणीय कर्म के उदय से निद्रा आती है वह कर्म केवली को नहीं होने से केवली निद्रा नहीं लेते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव निद्रा, व प्रचला करते कितनी प्रकृतियों का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! जीव निद्रा व प्रचला करते सात अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करता है ऐसे ही चौवीसही

वैमानिक में पो० बहुत जी० जीव ए० एकेन्द्रियवर्जित ति० तीन भ० भांगे ॥ ८ ॥ ह० इन्द्रका भ० भगवन् ह० हरिणगमेषी स० शक्र का दू० दूत इ० स्त्री का ग० गर्भ सा० साहरते हुवे किं० क्या ग० गर्भ से ग० गर्भ में सा० लेजाता है ग० गर्भ से जो० योनिमें सा० लेजाता है जो० योनिसे ग० गर्भ में सा० लेजाता है जो० योनिसे जो० योनि में सा० लेजाता है गो० गौतम नो० नहीं ग० गर्भ से ग०

यव्वो तिय भंगो ॥ ८ ॥ हरीण भंते ! हरिणेगमेसी सक्कदूए इत्थीगब्भ साहरमाणे किं गब्भाओ गब्भ साहरइ, गब्भाओ जोणिं साहरइ, जोणीओ गब्भ साहरइ, जोणीओ जोणिं साहरइ ? गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भ साहरइ, नो गब्भाओ जोणि

ंडक का जानना बहुत जीव आश्रित एकेन्द्रिय छोडकर शप के तीन भांगे जानना ॥ ८ ॥ अवस्थापिनी निद्रा में गर्भ का साहरण होता है, इसलिये गर्भ साहरण का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्रका दूत [पादात्यानिकका अधिपति] हरिणगमेषी स्त्रीगर्भका साहरण करते क्या जीव सहित पुद्गल पिंड रूपी गर्भ को १ एक गर्भाशय से दूसरे गर्भ में रखता है ? २ गर्भाशय से योनि में रखता है ? ३ योनि से लेकर गर्भ में रखता है ? अथवा ४ योनि से लेकर योनि में रखता है ? अहो गौतम ! शक्र देवेन्द्र का दूत हरिणगमेषी गर्भ को १ गर्भाशय से नीकालकर गर्भाशय में नहीं रखता है, २ गर्भाशय से लेकर योनिद्वार में नहीं रखता है, और ३ योनि मे लेकर योनि में नहीं रखता है परतु ४ योनि से नीका-

गर्भ में सा० लेजाता है नो० नहीं ग० गर्भ से जो० योनि में सा० लेजाता है नो० नहीं जो० योनि से जो०योनि में सा०लेजाता है प० स्पर्श कर अ०सुख पूर्वक जो०योनि से ग०गर्भ में सा०लजाता है ॥१॥ प० समर्थ भ० भगवन् ह० हरिणगमेषी स शक्र का दू० दूत इ० स्त्री का ग० गर्भ न० नखाग्र से रो० रोमकूप से सा० रखने को नी० नीकालने को ह० हां प० समर्थ नो० नहीं त० उसको ग० गर्भ की कि० कुच्छ भी आ० आबाधा वि दु ख उ० उत्पात छ० चमछेद पु० पुन क० करे ए० यह सु० सूक्ष्म

साहरइ, नो जोणीओ जोणि साहरइ, परामुसिय २ अव्वाबाहेण अव्वाबाह जोणी-
ओ गब्भ साहरइ ॥ १ ॥ पभूण भंते ! हरिणेगमेसी सक्कस्सण दूए इत्थीए गब्भ
नहसिरसिवा रोमकुवंसिवा, साहरित्तएवा, नीहरित्तएवा ? हंता पभू । णो चेवण
तस्स गब्भस्स किंचि आबाहवा, विबाहवा, उप्पाएज्ज, छविच्छेद पुण करेज्जा, ए सु-

लेकर गर्भाशय में रखता है और गर्भ साहरण करते गर्भ को किसी प्रकार की बाधा पीडा नहीं होती है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र का दूत हरिणगमेषी नखाग्र से या रोम कूप से स्त्री का गर्भ रखने को अथवा बाहिर नीकालने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! वह हरिणगमेषी देवता गर्भ को नखाग्र से रखने को व नीकालने को समर्थ है तथापि उस गर्भ को किसी प्रकारकी बाधा, पीडा उत्पात व चर्म का छेद नहीं होता है गर्भ साहरण करने का इतना सूक्ष्मपना रहा हुवा है देव शक्ति से गर्भ नीकालते व रखते

सा० रसना नी० नीकालना ॥ १० ॥ ते० उस का० काल से० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का अं० शिष्य अ० अतिमुक्तक ना० नाम के कु० छोटे स० साधु प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत त० तब से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण अ० एकदा म० बहुत वु० वृष्टि में नि० पडती हुई क० कक्षा में प० पात्र र० रजोहरण आ० लेकर ब० बाहिर स० नीकला वि० स्थंडिलकेलिय त० तत्र स० उस उ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमणने वा० प्रवाह को प० वहता हुआ

हुम च ण साहरिज्जवा, नीहरिज्जवा, ॥ १० ॥ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अइमुत्तनाम कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए तएण से अइमुत्ते णाम कुमारसमणे अण्णयाकयाइ महावुट्ठिकायसि निवयमाणसि कक्खपडिग्गहरयहरण मायाए बहिया सपट्ठिए विहाराए तएणसे अइमुत्ते कुमार समणे वाहय वहयमाण पासइ २ चा, मट्टियपालि बधइ २ णावियामे २ नाविओवि

जाना नहीं जाता है ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के भद्रिक यावत् विनीत प्रकृतिवान् अतिमुक्त (अइमंते) कुमार श्रमणे एकदा महावृष्टि हुए पीछे रजोहरण व पात्र लेकर

१ आठ वर्ष पहिले दीक्षा ग्रहण नहीं करते हैं, परंतु अतिमुक्त कुमारने छ वर्ष में ही दीक्षा ग्रहण की थी जिससे कुमार श्रमण नाम रखा था.

पा० देखकर म० मृत्तिका की पा० पाल ब० बांधकर ना० नाव मे० मेरी ना० नाविक समान णा० नावा को अ० यह प० पात्र उ० पानी में प० वहाते हुवे अ० क्रीडा करते हैं त० उसे थे० स्थविरोंने अ० देखा जे० जहां स० श्रमण भ० भगवत म० महावीर ते० वहां उ० आये ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे ख० निश्चय दे० देवानुप्रिय का अ० शिष्य अ० अतिमुक्त णा० नामके कु० कुमार श्रमण से० वह भ० भगवन् क० कितने भ० भवग्रहण में सि० सिझेंगे बु० बुझेंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे अ० आर्य स० श्रमण भं० भगवन् म० महावीर त० उन थे० स्थविर को ए० ऐसे व० बोले ए० ऐसे अ० आर्य म० मेरा अं० शिष्य

वणावमय पडिग्गहय उदगंसि पवाहमाणे अभिरमइ तंच थेरा अदक्खु जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी, अइमुत्तेनामं कुमारसमणे । सेणं भंते ! अइमुत्ते कुमारसमणे कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति जाव अंत करेहिति ? अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी एवं खलु अज्जो ! मम अतेवासी अइमुत्तेणामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए,

बाहिर भूमिका को गये वहांपर उन अतिमुक्त कुमार श्रमणने पानी का प्रवाह वहता हुवा देखकर मृत्तिका से पाल बांधकर पानी को रोका इस तरह पानी को रोककर 'यह मेरी नाव है यह मेरी नाव है' ऐसा संकल्प किया जैसे नाविक नाव को चालता है वैसे ही अतिमुक्त कुमार श्रमण नाव रूप पात्र को

सा० रसना नी० नीकालना ॥ १० ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का अं० शिष्य अ० अतिमुक्तक ना० नाम के कु० छोटे स० साधु प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत त० तब से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण अ० एकदा म० बहुत वु० वृष्टि में नि० पडती हुई क० कक्षा में प० पात्र र० रजोहरण आ० लेकर ब० बाहिर स० नीकला वि० स्थंडिलकेलिये त० तब स० उस उ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमणने बा० प्रवाह को प० बहता हुआ

हुम च ण साहरिज्जवा, नीहरिज्जवा, ॥ १० ॥ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्तेनाम कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए तएण से अइमुत्ते णामं कुमारसमणे अण्णयाकयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गहरयहरण मायाए बहिया सपट्ठिए विहाराए तएणसे अइमुत्ते कुमार समणे वाहय वहयमाण पासइ २ त्ता, मट्टियपालिं बंधइ २ णावियामे २ नाविओवि

जाना नहीं जाता है ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के भद्रिक यावत् विनीत प्रकृतिवान् अतिमुक्त (अइमुत्ते) कुमार श्रमणे एकदा महावृष्टि हुए पीछे रजोहरण व पात्र लेकर

१ आठ वर्ष पहिले दीक्षा ग्रहण नहीं करते हैं, परंतु अतिमुक्त कुमारने छ वर्ष में ही दीक्षा ग्रहण की थी जिससे कुमार श्रमण नाम रखा था.

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा बु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को व० वंदना करते हैं अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित अ० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सारीरिए चेव, ॥ तएण ते थेरा भगवंतो समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्तासमाणा समण भगव महावीर वदंति नमसंति अइमुत्त कुमारसमण अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडिय करंति ॥ ११ ॥ तेण कालेण तेण समएण महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

अंत करेंगे इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परंतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अंत करनेवाले चरिम शरीरी हैं जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवंत श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैय्यावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्री श्रमण भगवंत महावीर

अ० अतिमुक्त कु० कुमारश्रमण प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण ए० इस भ० भव में सि० सिझेंगे जा० यावत् अ० अंत करेंगे ते० इसलिये मा० मत तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण की ही० हीलना करो नि० निंदाकरो खि० खिसना करो ग० गर्हाकरो अ० तिरस्कार करो तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानि रहित स० अंगीकार करो उ० ग्रहण करो भ० भक्त पा० पान वि० विनय से वे० वैय्यावृत्य क० करो अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण अं० अंत करने वाले अ० अंतिम शरीरी त० तब ये० स्थविर भ० भगवत भ०

सेण अइमुत्ते कुमारसमणे एमेणचेव भवग्गहणेण, सिज्झिहिइ जाव अंत करेहिइ ॥ तं मा णं अज्जो ! तुब्भे अइमुत्त कुमारसमण हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह अवमण्णह, तुब्भेणं देवाणुप्पिया अइमुत्त कुमारसमण अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह अगिलाए भत्तेण, पाणेण विणएणं, वेयावडिय करेह अइमुत्तेण कुमारसमणे अंतकरे चेव, अंतिम-

पानी में भरता हुवा रसकर खेलने लगे इस तरह करते हुवे अतिमुक्त कुमार को स्थविरने देखे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आकर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! आपका अतिमुक्त नामक शिष्य कितने भव में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बोले कि अहो आर्यो मेरा शिष्य अतिमुक्त नामक कुमार साधु इसी भव में सिझेंगे यावत् सब दुःखों का

श्रमण भ० भगवत म० महावीर से ए० ऐसा बु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवत म० महावीर को व० वदना करते हैं अ० अतिमुक्त क० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित स० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सारीरिए चेव, ॥ तएण ते थेरा भगवतो समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्तासमाणा समण भगव महावीर वदति नमसाति अइमुत्त कुमारसमण अगिलाए सगिण्हाति जाव वेयावाडिय करति ॥ ११ ॥ तेण कालेण तेण समएण महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

अत करेंगे इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परंतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अत करनेवाले चरिम शरीरी हैं जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवत श्रमण भगवंत को वदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैय्यावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्रीश्रमण भगवंत महावीर

अ० अतिमुक्त कु० कुमारश्रमण प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण ए० इस भ० भव में सि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे ते० इसलिये मा० मत तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण की ही० हीलना करो निं० निंदाकरो खिं० खिसना करो ग० गर्हाकरो अ० तिरस्कार करो तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानि रहित स० अंगीकार करो उ० ग्रहण करो भ० भक्त पा० पान वि० विनय से वे० वैय्यावृत्य क० करो अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण अं० अंत करने वाले अ० अंतिम शरीरी त० तत्र थे० स्थविर भ० भगवंत भ०

सेण अइमुत्ते कुमारसमणे एमेणचेव भवग्गहणेण, सिज्झिहिइ जाव अंत करेहिइ ॥ त मा ण अज्जो ! तुब्भे अइमुत्त कुमारसमण हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह अवमण्णह, तुब्भेण देवाणुप्पिया अइमुत्त कुमारसमण अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह अगिलाए भत्तेण, पाणेण विणएणं, वेयावडिय करेह अइमुत्तेण कुमारसमणे अंतकरे चेव, अंतिम-

पानी में बहता हुवा रखकर खेलने लगे इस तरह करते हुवे अतिमुक्त कुमार को स्थविरने देखे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आकर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! आपका अतिमुक्त नामक शिष्य कितने भव में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बोले कि अहो आर्यों मेरा शिष्य अतिमुक्त नामक कुमार साधु इसी भव में सिझेंगे यावत् सब दुःखों का

श्रमण भ० भगवत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवत म० महावीर को व० वदना करते हैं अ० अतिमुक्त क० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित स० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सारीरिए चेव, ॥ तएण ते थेरा भगवतो समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्तासमाणा समण भगव महावीर वदति नमसति अइमुत्त कुमारसमण अगिलाए सगिण्हति जाव वेयावडिय करति ॥ ११ ॥ तेण कालेण तेण समएण महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

अत करेंगे इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अत करनेवाले चरिम शरीरी हैं जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवत श्रमण भगवंत को वदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैय्यावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्रीश्रमण भगवंत महावीर

महानुभाग वाले स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० समीप पा० आये त० तब ते० वे दे० देव स० श्रमण भ० भगवत म० महावीर को म० मन से वं० वदना करते हैं न० नमस्कार करते हैं न०नमस्कार करके इ० यह ए० ऐसा वा० प्रश्न पु० पुछते हैं क० कितने द०देवानुप्रिय के अ० शिष्य स० सो सि०सिझेंगे जा० यावत् अं० अत क० करेंगे त०तब स०श्रमण भ०भगवन्त म० महावीर ते० उन दे० देवों से म० मन से पु० पुछाये हुवे तं० उन दे० देवोंको म० मनसे ही इ० यह ए० ऐसा म० मेरे म० सात अ० शिष्य स० सो० सि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे त० तब ते० वे दे० देवों स० श्रमण

महावीरस्स अतिय पाउब्भूया ॥ तएण ते देवा समण भगव महावीर मणसाचेव वंदति नमसति नमसतित्ता, मणसा चेव इम एयारूव वागरण पुच्छति-कइण देवाणुप्पियाणं अतेवासिसयाइ, सिज्झिहिति जाव अत करेहिति ? ॥ तएण समणे भगव महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे, तेसिं देवाण मणसाचेव इम एयारूव वागरण वागरेइ - एव खलु देवाणुप्पिया मम सत्त अतेवासिसयाइ सिज्झिहिति

स्वामीकी पास आये और उनोंने श्रमण भगवंत महावीर स्वामीको मन से ही वदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो देवानुप्रिय ! आप के कितने सो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ? उन मन से पूछे हुवे प्रश्नोंका महावीर स्वामीने मन से ही उत्तर दिया कि मेरे सात सो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे

भगवत म० महावीर से म० मन सें पु० पुछा हुवा म० मन से ही इ० यह ए० ऐसा वा०प्रश्न वा०कहाहुवा ह० हृष्ट जा० यावत् हि० हृदय स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का व० वदना करते हैं न० नमस्कार करते हैं म० मन से ही सु० शुश्रुषा करते ण० नमस्कार करते अ० सन्मुख जा० यावत् प० पर्युपासना करते हैं ॥ १२ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवत का ज० ज्येष्ट अ० शिष्य इ० इन्द्रभूति अ० अनगार जा० यावत् अ० पास उ० ऊर्ध्व जा० जघा जा० यावत् वि०विचरते

जाव अतं करेहिंति ॥ तएण ते देवा समणेण भगवया महावीरेण मणसा पुट्ठेण मणसा चेव इमं एयारूव वागरण वागरियासमाणा, हट्ठतुट्ठ जाव हियया समण भगव महावीर वदति णमसति, मणसा चेव सुस्सूसमाणा णमसमाणा अभिमुहा जाव पज्जुवासति ॥ १२ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी, इदभूईणाम अणगारे जाव अदूरसामते उड्ढ जाणू

यावत् सब दु खों का अत करेंगे इस तरह मन से पूछे हुवे प्रश्नों का मन से ही उत्तर सुनकर उक्त देवों हृष्ट तुष्ट यावत् आनदित हुवे, श्रमण भगवत महावीर स्वामी को वदना नमस्कार किया और मन से ही शुश्रुषा व नमस्कार करते हुवे सन्मुख यावत् पर्युपासना करने लगे ॥१२॥ उस काल उस समयमें श्री श्रमण भगवत के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति अनगार पास में ऊर्ध्व जानु व अधोशिर करके ध्यान करते हुवे विचरते

हैं त० तब व० उन भ० भगवत गो० गौतम को झा० ध्यान में व० रहते हुवे इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ ए० ऐसे ख० निश्चय दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत म०महानुभाग वाले स० श्रमण भ० भगवत म० महावीर की अ० पास पा०आये त० इसलिये नो० नहीं अ० मैं ते० उन दे० देवोंको जा० जानता हू क० कितने क० देवलोक में से स० स्वर्ग में से वि० विमान में से क० किस अ० अर्थ केलिये इ० यहा इ० शीघ्र आ० आये त० इसलिये ग० जाऊ भ०

जाव विहरइ तएण तस्स भगवओ गोयमस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स इमेया रूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एव खलु दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय पाउब्भूया त नो खलु अह ते देवा जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओवा विमाणाओवा कस्सवा अत्थस्स अट्ठाए इह हव्व-मागया त गच्छामिण समण भगव महानीर जाव पज्जुवासामि इमाइ चण एयारूवाइ

र्थ

ये उस समय में भगवान् गौतम को ध्यान करते हुवे ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुआ कि श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास दो महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव आये हुवे हैं परतु ये देवों कौन से देव लोक के विमान में से किसलिये आये हुवे हैं सो मैं नहीं जानता हूं; इसलिये मैं श्री श्रमण भगवन्त की पास जाऊं और पर्युपासना करके उक्त प्रश्नों पूछूं ऐसा विचार करकेश्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीकी पास

भगवन्त म० महावीर की जा० यावत् प० पर्युपासना करु इ० यें ए० ऐसे वा० प्रश्न पु० पूछू ति० ऐसा करके ए०ऐसा स०विचार करके उ०उपस्थित होकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जा० यावत् प०पर्युपासना करते हैं गो० गौतम स०श्रमण भ० भगवत म० महावीर ए०ऐसे व०बोले से० अथ णू० शंकादर्शी त० तुम गो० गौतम झा० ध्यान में व० रहते इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् जे० जहां म० मरी अं० समीप ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया से० अथ णू० शंकादर्शी अ०

वागरणाइ पुच्छिस्सामि त्तिकट्टु। एवं संपेहेइ २ त्ता उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासइ। गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-सेणूण तव गोयमा! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए, से णूण गोयमा! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि तं गच्छाहिणं गोयमा! एए चेव देवा इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति, । तएणं

गौतम स्वामी आये श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने कहा कि अहो गौतम! तुझे ध्यान करते हुवे ऐसा अध्यवसाय यावत् सकल्प हुवा कि ये महर्द्धिक देवों कहां से व किसलिये मेरी पास आये हुवे हैं? और इसका निर्णय करने को तू मेरी पास आया हुवा है यह क्या सत्य है? हां भगवन्! यह सत्य है तब हे गौतम! तू इन देवों की पास जा और तुझे ये देवों उक्त प्रश्नों का उत्तर देवेंगे इस तरह भगवन्त की

हैं त० तब त० उन भ० भगवंत गो० गौतम को झा० ध्यान में व० रहते हुवे इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ ए० ऐसे ख० निश्चय दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०महानुभाग वाले स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अ० पास पा०आये त० इसलिय नो० नहीं अ० मैं ते० उन दे० देवोंको जा० जानता हू क० कितने क० देवलोक में से स० स्वर्ग में से वि० विमान में से क० किस अ० अर्थ केलिये इ० यहां ह० शीघ्र आ० आये त० इसलिये ग० जाऊं भ०

जाव विहरइ तएणं तस्स भगवओ गोयमस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेया रूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया तं नो खलु अहं ते देवा जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओवा विमाणाओवा कस्सवा अत्थस्स अट्ठाए इह हव्व-मागया तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं जाव पज्जुवासामि इमाइं चणं एयारूवाइं

थे उस समय में भगवान् गौतम को ध्यान करते हुवे ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास दो महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव आये हुवे हैं परंतु वे देवों कौन से देवलोक के विमान में से किसलिये आये हुवे हैं सो मैं नहीं जानता हूं; इसलिये मैं श्री श्रमण भगवन्त की पास जाऊं और पर्युपासना करके उक्त प्रश्नों पूछूं ऐसा विचार करके श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीकी पास

हुवे खि० शीघ्र प० सामने गये जे० जहाँ भ० भगवन्त गो० गौतम ते० वहाँ उ० आये जा० जावत् ण० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले ए० ऐसा ख० निश्चय भं० भगवन् अ० इम म० महाशुक्र म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो देव म०महर्द्धिक जा०यावत् पा० आये त० तब अ० हम स० श्रमण भ० भगवत म० महावीर को वं० वांदे न० नमस्कार किया म० मन से ए० ऐसा वा० प्रश्न पु० पूछे क० कितने भं० भगवन् दे० देवानुप्रिय के अं०शिष्य सि० सिझेंगे जा० यावत् अ० अतकरेंगे त०तब स०श्रमण भ०भगवन्त

हुीया जाव पाउब्भूया । तएण अम्हे समण भगव महावीर वदामो णमसामो २ मणसा चेव इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छामो कइण भते ! देवाणुप्पियाण अते-वासि सयाइ सिज्झिहिंति, जाव अत करेहिंति ! तएण समणे भगव महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्ह मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरेइ, एव खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्तअतेवासिसयाइ जाव अत करेहिंति, तएण अम्हे समणेण भगवया महा-

महर्द्धिक यावत् महानुभाग दो देव महाशुक्र देवलोक में महा स्वर्ग विमान से आये हुवे हैं और हमने श्री श्रमण भगवंत महावीर को मन से ऐसा प्रश्न पूछा कि आप के कितने सो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दु खों का अत करेंगे इस तरह मन से पूछाये हुवे प्रश्नों का श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने मन से ही ऐसा उत्तर दिया कि अहो देवानुप्रिय ! मेरे सातसो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे यावत्

अर्थ स० योग्य ह० हां अ० है त० इसलिये ग० जा गो० गौतम ए० ये दे० देव इ० इन ए० ऐसे वा० प्रश्नों वा० करेंगे त० तब भ० भगवान गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीरे की अ० आज्ञा होते स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना की ण० नमस्कार किया जे० जहां ते० वे दे० देव ते० तहां पा० नीकला ग० जाने को त० तब ते० वे दे० देव भ० भगवन्त गो० गौतम को ए० आते हुवे पा० देखा ह० हृष्ट तुष्ट जा० यावत् हि० हृदय खि० शीघ्र अ० उपस्थित

भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णेसमाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, जेणेव ते देवा तेणेव पाहारेत्थगमणाए ॥ तएण ते देवा भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ हट्ठ तुट्ठ जाव हियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेति २ त्ता, खिप्पामेव पच्चुवगच्छति, जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छति २ जाव णमंसित्ता एवं वयासी भंते ! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महि-

आज्ञा मीलने पर भगवान् गौतम स्वामी उक्त दोनों देवों की पास जाने को नीकले उस समय में उक्त देवों भगवन्त श्री गौतम स्वामी को आते हुवे देखकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित होते हुए शीघ्र उपस्थित हुवे और भगवन्त श्री गौतम स्वामी की पास गये उन को नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो पूज्य ! हम

अ० अभ्याख्यान ए० यह दे० देवों को भ० भगवन् अ० असंयति व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य णि० निष्ठुर व० वचन ए० यह दे० देवोंको दे० देवोंको भं० भगवन् स० संयतासंयति व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य अ० असद्भूत ए० यह दे० देवोंको से० अब किं० क्या खा० कहावे दे० देव गो० गौतम दे० देव नो० नोसंयमि व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १८ ॥ दे० देव भ० भगवन् क० कौनसी भा० भाषा से भा०

णो इणट्ठे समट्ठे, अब्भक्खाणमेय देवाण ॥ देवाण भंते ! असंजयाइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णिट्ठुरवयण मेय देवाण ॥ देवाण भंते ! संजयासंजयाइ वत्तव्व सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे असब्भूयमेय देवाण ॥ से किं खाइण्ण भंते ! देवाइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! देवाण नो संजयाइ वत्तव्वंसिया ॥ १४ ॥ देवाण

देवों को असंयति कहना ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि ऐसा कहने से देवों को निष्ठुर (कठोर) वचन लगता है क्या भगवन् ! देवों को संयतासंयति कहना ? यह अर्थ भी योग्य नहीं है क्यों कि देवों को यह असद्भूत (अछता भाव) होवे तब अहो भगवन् ! देवों को क्या कहना ? अहो गौतम ! 'देव नोसंयति हैं' ऐसा कहना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! देव कितनी भाषा बोलते हैं और कौनसी भाषा

म० महावीर से पु० पुछाये हुवे अ० हम को म० मनसे ही इ० यह ए० ऐसा प० प्रश्न वा० कहा ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय शेप पूर्ववत् ति० ऐसा क० करके भ० भगवन्त गो० गौतम को वं० वंदना की ण० नमस्कार किया जा० जिस दि० दिशी से पा० आये ता० उसी दि० दिशी में प० पीछे गये ॥१३॥ भ० भगवन् गो० गौतमने स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ए० ऐसा व० कहा दे० देव भं० भगवन् सं० संयति ति० ऐसी व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य

वीरेणं मणसा पुट्ठेण मणसा चेव इम एयारूव वागरणं वागरियासमाणा समण भगव महावीर वदामो नमसामो जाव पज्जुवासामो त्तिकट्टु भगव गोयम वदइ नमसइ जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ १३ ॥ भतेत्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर एव वयासी- देवाण भते ! सजयाइ वत्तव्वसिया ? गोयमा !

सब दु खों का अत करेंगे इस तरह मन से पूछे हुवे प्रश्नों का उत्तर मनद्वारा मीलने से हमने श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार किया इतना कहकर वे देवों श्री गौतम स्वामी को वंदना नमस्कार करके जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥ १३ ॥ भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! क्या 'देव संयति हैं' ऐसी वक्तव्यता होवे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्योंकि देवों को संयति कहने से अभ्याख्यान (असत्य आळ) होता है तब क्या भगवन् !

अ० अभ्याख्यान ए० यह दे० देवों को भ० भगवन् अ० असंयति व० वक्तव्यता सि० होवे गो०गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य णि० निष्ठुर व० वचन ए० यह दे० देवोंको दे० देवोंको भं० भगवन् स० सयतासयति व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य अ० असद्भूत ए० यह दे० देवोंको से० अव किं० क्या खा० कहावे दे० देव गो० गौतम दे० देव नो० नोसयति व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १४ ॥ दे० देव भ० भगवन् क० कौनसी भा० भाषा से भा०

णो इणट्ठे समट्ठे, अब्भक्खाणमेय देवाण ॥ देवाण भंते ! असजयाइ वत्तव्वसिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णिट्ठुरवयण मेय देवाण ॥ देवाण भंते ! संजयासजयाइ वत्तव्व सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे असब्भूयमेय देवाण ॥ से किं खाइण्ण भंते ! देवाइ वत्तव्वसिया ? गोयमा ! देवाण नो सजयाइ वत्तव्वसिया ॥ १४ ॥ देवाण

देवों को असयाति कहना ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि ऐसा कहने से देवों को निष्ठुर (कठोर) वचन लगता है क्या भगवन् ! देवों को सयतासंयति कहना ? यह अर्थ भी योग्य नहीं है क्यों कि देवों को यह असद्भूत (अछता भाव) होवे तब अहो भगवन् ! देवों को क्या कहना ? अहो गौतम ! 'देव नोसयति हैं' ऐसा कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! देव कितनी भाषा बोलते हैं और कौनसी भाषा

बोले क० कौनसी भा० भाषा भा० बोलाती हुई वि० विशिष्ट होवे गो० गोतम दे० देव अ० अर्ध
मागधी भा० भाषा भा० बोले स० वही अ० अर्ध मागधी भा० भाषा भा० बोलाती हुई वि० विशिष्ट होवे
॥ १८ ॥ के० केवली भं० भगवन् अं० अंतकरने वाले अ० अंतिम शरीर वाले को जा० जानते हैं पा०
देखते हैं ह० हां गो० गोतम जा० जानते हैं पा० देखते हैं ज० जैसे भं० भगवन् के० केवली अ०

मते ! कयराए भासाए भासति, कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ ? गोयमा !
देवाण अद्ध मागहाए भासाए भासति, सावियणं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी
विसिस्सइ ! केवलीण भंते ! अंतकरवा अंतिमसरीरियवा जाणइ पासइ, ? हंता
गोयमा ! जाणाति पासति ॥१५॥ जहाण भंते केवली अंतकरंवा अंतिमसरीरियंवा
जाणइ पासइ, तहाण छउमत्थवि अंतकरंवा अंतिमसरीरियंवा जाणइ पासइ ?

बोलने से विशिष्टता पाते हैं ? अहो गौतम ! देवों अर्धमागधी भाषा बोलते हैं और अर्धमागधी भाषा
बोलते हुए विशिष्टता पाते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! केवली अंतकरनेवाले अथवा अंतिम शरीरवाले
को जाने देखे ? हां गौतम ! केवली भवकरनेवाले व अंतिम शरीरवाले को जाने देखे अहो भगवन् !
जैसे केवली अंत करनेवाले व अंतिम शरीरी को जानते देखते हैं वैसे ही क्या छद्मस्थ
जानते देखते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है छद्मस्थ सुनकरके व प्रमाण से जानते

अंतकरने वाले अ० अतिम शरीर वाले को जा० जानते हैं पा०देखते हैं त० तैसे छ० छद्मस्थ भी अ० अंत करने वाले अ० अतिम शरीर वाले को जा० जानते हैं पा० देखते हैं गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ सो० सुनकर प० प्रमाण से से० अथ किं० क्या त० वह सो० सुनकर के० केवली के० केवली के श्रावक के० केवली सा० श्राविका का उ० सेवा करने वाला के० केवली की उ० सेवा करने वाली के त० स्वयं बुद्ध त० स्वय बुद्ध के सा० श्रावक सा० श्राविका उ० सेवा करने वाला उ०

गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे सोच्चा जाणइ पासइ, पमाणओवा ॥ से किंत सोच्चा ? सोच्चाण ! केवलिस्सवा, केवलिसावयस्सवा, केवलिसावियाएवा, केवलिउवासगस्सवा, केवलिउवासियाएवा, तप्पक्खियस्सवा, तप्पक्खियसावयस्सवा, तप्पक्खियसावियाएवा, तप्पक्खियउवासगस्सवा, तप्पक्खिय उवासियाएवा, सेत सोच्चा ॥ से किंत

देखते हैं सुनने का क्या अर्थ है ? केवली, केवली के श्रावक, श्राविका, सेवा करनेवाले, सेवा करनेवाली, स्वयंबुद्ध, स्वयंबुद्ध के श्रावक, श्राविका, सेवा करनेवाले व सेवा करनेवालियों के मुख से श्रवण करके छद्मस्थ मनुष्य अंत करनेवाले व अतिम शरीरी को जानते व देखते हैं अब प्रमाण का क्या अर्थ ? प्रमाण के चार भेद कहे हैं १ चक्षु वगैरह इन्द्रियों से जाना जावे सो प्रत्यक्ष २ चिन्ह संबंध स्मरण से जो जाना जावे सो अनुमान; जैसे धूम्र से अग्नि का जानना ३ उपमा से जाना जावे सो उपमा प्रमाण जैसे

सेवा करने वाली के से० अथ किं० क्या प० प्रमाण च० चार प्रकार के प० प्रत्यक्ष अ० अनुमान ओ० उपमा आ० आगम ज० जैसे अ० अनुयोग द्वार में त० तैसे णे० जानना प० प्रमाण ते० उस से प० भाग णो० नहीं अ० आत्मागम णो० नहीं अ० अनंतरागम प० परंपरागम ॥ १६ ॥ के० केवली भ० भगवन च० छद्मा कर्म च० चरिम निर्जरा जा० जाने पा० देखे इं० हां गो० गौतम जा० जाने पा० देखे

पमाणे ? पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवमे, आगमे, जहा अणुओगद्दारे तहा णेयव्वं पमाणं जाव तेण परं णो अत्तागमे, णो अनंतरागमे, परंपरागमे ॥ १६ ॥ केवलीणं भंते ! चरिमकम्मंवा, चरिमणिज्जरंवा जाणइ पासइ ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ ॥ जहाणं भंते ! केवली चरिम कम्मंवा चरिमणि-

गाय जैसा गमयं, ८ गुरु की परंपरा से आप्त वचनों को सुनकर जानना सो आगम प्रमाण इस का विशेष विवरण अनुयोगद्वार सूत्र में कहा है आत्मागम अर्थ से वीतराग को आत्मागम, गणधरों को अनंतरागम और शिष्यों को परंपरागम सूत्र से गणधरों को आत्मागम, शिष्यों को अनंतरागम व प्रशिष्यों को परंपरागम जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! क्या केवली चरिम कर्म व चरिम निर्जरा को जानते हैं व

१ धन का धनु विशेष, इसे रोझ भी कहते हैं.

म० जैसे भं० भगवन् के० केवली च० चरिम कर्म ज० जैसे अं० अंत करने वाले आ० आलापक त० तैसे च० चरिम कर्म से अ० अपरिशेष णे० जानना ॥ १७ ॥ के० केवली भ० भगवन् प० प्रकृष्ट म० मन व० वचन धा० धारण करे हं० हां धा० धारन करे ज० जो भ० भगवन् के० केवल ज्ञानी प० प्रकृष्ट म० मन व० वचन धा० धारणकर तं० उसे वे० वैमानिक देव जा० जानते हैं पा० देखते हैं गो० गौतम अ०

जरवा जाणइ पासइ ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ । जहाणं भंते ! केवली चरिमकम्मवा जहाणं अंतकरेणं आलावगो, तहा चरिम कम्मेणवि अपरिसेसिओ णेयव्वो ॥ १७ ॥ केवलीणं भंते ! पणीयं मणवा, वइवा धारेज्जा ? हंता धारेज्जा ॥ जण्णं भंते ! केवली पणीयं मणवा वइवा धारेज्जा, तं णं वेमाणिया देवा जाणति

देखते हैं ? हां गौतम ! केवली चरिम कर्म व चरिम निर्जराको जानते व देखते हैं जैसे केवली चरिम कर्म व निर्जरा को जानते हैं वैसे ही क्या छद्मस्थ जानते हैं व देखते हैं ? अहो गौतम ! इस का सब अधिकार उपर के अंतकर आलापक जैसे कहना ॥१७॥ अहो भगवन्! क्या केवली श्रेष्ठ मन वचन धारे—उन का व्यापार करे ? हां गौतम ! केवली श्रेष्ठ मन वचन का व्यापार करे अहो भगवन् ! जो मन वचन केवली धारण करते हैं उन को वैमानिक देव क्या जानते व देखते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक वैमानिक देव जानते हैं व देखते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं व नहीं देखते हैं अहो भगवन्! किस कारनसे

सेवा करने वाली के से० अथ किं० क्या प० प्रमाण च० चार प्रकार के प० प्रत्यक्ष अ० अनुमान ओ० उपमा आ० आगम ज० जैसे अ० अनुयोग द्वार में त० तैसे णे० जानना प० प्रमाण ते० उस से प० भाग णो० नहीं अ० आत्मागम णो० नहीं अ० अनंतरागम प० परंपरागम ॥ १८ ॥ के० केवली भ० भगवन च० छेल्ला कर्म च० चरिम निर्जरा जा० जाने पा० देखे ह० हां गो० गौतम जा० जाने पा० देखे

पमाणे ? पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते तजहा-पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवमे, आगमे, जहा अणुओगद्दारे तहा णेयव्व पमाण जाव तेण पर णो अत्तागमे, णो अनतरागमे, परपरागमे ॥ १८ ॥ केवलीण भते ! चरिमकम्मवा, चरिमणिज्जरवा जाणइ पासइ? हता गोयमा ! जाणइ पासइ ॥ जहाण भते ! केवली चरिम कम्मवा चरिमणि-

गाय जैसा गवये, ४ गुरु की परंपरा से आप्त वचनों को सुनकर जानना सो आगम प्रमाण इस का विशेष विवरण अनुयोगद्वार सूत्र में कहा है आत्मागम अर्थ से वीतराग को आत्मागम, गणधरों को अनतरागम और शिष्योंको परपरागम सूत्र से गणधरों को आत्मागम, शिष्यों को अनंतरागम व प्रशिष्यों को परपरागम जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! क्या केवली चरिम कर्म व चरिम निर्जरा को जानते हैं व

---

१ वन का पशु विशेष, इसे रोझ भी कहते हैं

प॰ परंपर प॰ पर्याप्त अ॰ अपर्याप्त उ॰उपयोगयुक्त उ॰ उपयोग रहित त॰उन में जे॰ जो उ॰उपयोग वाले जा॰ जानते पा॰ देखते हैं से॰ अथ ते॰ इसलिये तं॰ वैसे ही ॥ १८ ॥ प॰ समर्थ भं॰ भगवन् अ॰ अनुत्तरोपपातिक दे॰ देव त॰ वहां रहे हुवे इ॰ यहां रहे हुवे के॰ केवली की स॰ साथ आ॰ अलाप स॰ सलाप क॰ करने को हं॰ हां प॰ समर्थ कं॰ कैसे जा॰ यावत् प॰ समर्थ अ॰ अनुत्तरोपपातिक

वण्णगा ते न जाणति न पासाति । एव अणतर, परपर, पज्जत्त, अपज्जत्ताय, उवउत्ता अणुवउत्ता, ॥ तत्थणं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासाति, से तेणट्ठेण तंचेव ॥१८॥ पभूण भते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएण केवलिणा सद्धिं आलावत्रा सलावत्रा करेत्तए ? हता पभू । से केणट्ठेण जाव पभूण अणुत्तरोववाइयादेवा जाव करेत्तए ? गोयमा ! जण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया

जान सकते हैं अर्थात् उपयोगवन्त अमायी सम्यग् दृष्टि परंपरा उत्पन्न होनेवाले पर्याप्त देव जान सकते हैं व देख सकते हैं इसलिये ऐसा कहा गया है॥१८॥ अहो भगवन्! अनुत्तरोपपातिक देव वहां रहे हुवे ही यहां मनुष्य लोक में रहे हुवे केवली की साथ आलाप संलाप करने को क्या समर्थ हैं ? हां गौतम ! वे देवों यहां पर केवली की साथ आलाप संलाप करने को समर्थ हैं अहो भगवन् ! किस कारन से वे समर्थ हैं ? अहो

कितनेक जा० जानते हैं पा० देखते हैं से० अथ के० कैसे जा० यावत् ण० नहीं जा० जानते हैं गो० गौतम वे० वैमानिक दे० देव दु० दोप्रकार के प० कहे मा० मायावी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न हुवे अ० अमायावी स० सम्यग् दृष्टि उ० उत्पन्न हुए त० उन में जे० जो ते० वे मा० मायावी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न होने वाले ते० वे न० नहीं जा० जानते हैं न० नहीं पा० देखते हैं ऐ० ऐसे अ० अनन्तर

पासंति ? गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासति, अत्थेगइया णजाणति णपासति ॥ से केणट्ठेण जाव ण पासति ? गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा प० त० मायिमिच्छादिट्ठिउ-ववण्णगाय, अमायिसम्मादिट्ठिउववण्णगाय । तत्थण जे ते माइमिच्छदिट्ठिउव-

कितनेक जानते, देखते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं व नहीं देखते हैं ? अहो गौतम ! वैमानिक देव दो प्रकार के कहे हैं १ मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न हुवे और २ अमायी सम्यग् दृष्टि उत्पन्न हुवे उन में से मायी मिथ्यादृष्टि नहीं जान सकते व नहीं देख सकते हैं परंतु अमायी सम्यग् दृष्टि जान व देख सकते हैं अमायी सम्यग्दृष्टि के दो भेद अनंतर उत्पन्न होनेवाले और परंपरा उत्पन्न होनेवाले उस में से अनंतर उत्पन्न होनेवाले नहीं जान सकते हैं परंतु परंपरा उत्पन्न होनेवाले जान सकते हैं परंपरा उत्पन्न होने-वाले के दो भेद पर्याप्त व अपर्याप्त उन में अपर्याप्त नहीं जान सकते हैं परंतु पर्याप्त जान सकते हैं पर्याप्त के दो भेद उपयोग युक्त व उपयोग रहित उस में उपयोगवाले जान सकते हैं परंतु उपयोग बिना के नहीं

केवली जा० यावत् पा० देखते हैं ॥ १९ ॥ अ० अनुत्तरोपपातिक भ० भगवन् दे० देव किं० क्या उ० उदित मोहवाले उ० उपशान्त मोहवाले खी० क्षीणमोहवाले गो० गौतम नो० नहीं उ० उदितमोहवाले उ० उपशांत मोहवाले णो० नहीं खी० क्षीणमोह वाले ॥ २० ॥ के० केवली भं० भगवन् आ०

भवति, से तेणट्ठेण जण्ण इहगए केवली जाव पासइ ॥ १९ ॥ अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, खीणमोहा ? गोयमा नो उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, णो खीणमोहा ॥ २० ॥ केवलीणं भंते ! आयाणेहिं जाणइ पासइ ?

अहो गौतम ! उन को अनंत मनोद्रव्य वर्गणा विशेषपनासे प्राप्त हुई है, सामान्यपना से प्राप्त हुई है, व सन्मुख हुई है इसलिये अहो गौतम ! यहांपर केवली जो अर्थ, हेतु कहते हैं उन को अनुत्तर कल्पवासी देव यहां रहे हुवे जान सकते हैं व देख सकते हैं * ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! अनुत्तर कल्पवासी देव क्या उदित [उदय हुवा] मोहवाले हैं, उपशान्त मोहवाले हैं, या क्षीण मोहवाले हैं ? अहो गौतम ! वे उदित मोहवाले नहीं हैं वैसे ही क्षीण मोहवाले नहीं हैं परंतु उपशांत मोहवाले हैं ॥ २० ॥ अहो

* अनुत्तर कल्पवासी देवों का अवधिज्ञान संभिन्नलोकनाडीविषयवाला है जो अवधिज्ञान लोक नाडी ग्राहक होता है वह मनोद्रव्य वर्गणा का ग्राहक भी होता है और भी मात्र लोक का संख्यात भागवाला अवधिज्ञान होता है वह भी मनोद्रव्यग्राही होता है, तो लोक नाडी विषयवाला अवधिज्ञान क्यों मनोद्रव्यग्राही न होवे ? अर्थात् मनोद्रव्य वर्गणा ग्राही होवे

दे० देव जा० यावत् क० करने को गो० गौतम ज० जो अ० अनुत्तरोपपातिक दे० देव त० वहां रहे हुवे अ० अर्थ हे० हेतु प० प्रश्न का० कारन वा० व्याकरण पु० पुछते हैं त० उसे इ० यहां रहे हुए के० केवली अ० अर्थ जा० यावत् वा० कहते हैं ते० इसलिये ज० यदि भ० भगवन् गो० गौतम ते० उन दे० देवों को अ० अनंत म० मनोद्रव्य व० वर्गणा ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुखहुई ते० इसलिये के०

चेव समाणा अट्ठवा, हेउवा, पसिणंवा कारणंवा, वागरणवा पुच्छंति, तण्ण इहगए केवली अट्ठवा जाव वागरणवा वागरेइ से तेणट्ठेणं । जइण भंते ! इहगए केवली अट्ठवा जाव वागरेइ तण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणति पासति ? हंता गोयमा ! जाणति, पासति । से केणट्ठेण जाव पासति ? गोयमा ! तसिण देवाण अणताओ मणादव्व वग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ

गौतम ! * अनुत्तरकल्पवासी देव वहां रहे हुवे जो अर्थ, हेतु, प्रश्न, कारन, व्याकरण वगैरह पूछते हैं उन का उत्तर केवली यहां रहे हुवे देते हैं इसलिये व देवता समर्थ हैं अहो भगवन् ! यहां रहे हुवे केवली जो अर्थ, हेतु वगैरह कहते हैं उन को अनुत्तर कल्पवासी देव क्या वहां रहे हुवे जान व देख सकते हैं ? हां गौतम ! वे जान व देख सकते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से वे जान व देख सकते हैं ?

* बारहवा अच्युत देवलोक से उपरके देवलोक के देवताओं का मनुष्य लोक में आगमन नहीं होता है

काल में ए० इन ही अ० आकाश प्रदेश में ह० हस्त जा० यावत् उ० अवगाहकर चि० रहने को गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य के० कैसे भ० भगवन् जा० यावत् के० केवली भ० इस स० समय में जे० जिन आ० आकाश प्रदेश में जा० यावत् चि० रहते हैं णो० नहीं प० समर्थ के० केवली से० आगामिक काल में ए० इनही में ह० हस्त जा० यावत् चि० रहने को गो० गौतम के० केवली को वी० वीर्य के स० योग सहित स० विद्यमान द० द्रव्य च० अस्थिर उ० उपकरण (अंगोपांग) भ०

एसु चेव आगासपएसेसु हत्थवा जाव उग्गाहित्ताणं चिट्ठित्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेण भंते ! जाव केवलीण अस्सिं समयंसि जेसु आगासपएसेसु जाव चिट्ठइ, णो णं पभू केवली सेयकालंसिवि एसुचेव हत्थवा जाव चिट्ठित्तए ? गोयमा ! केवलिस्सणं वीरियस्स सजोगसद्दव्वयाए चलाइ उवगरणाइ भवंति, च-लोवगरणट्ठयाएण केवली अस्सिं समयंसि जेसु आगासपएसेसु हत्थवा जाव

गत काल में हस्त, पांव, बाहु व जंघा अवगाह कर रहने को क्या समर्थ हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से केवली इस वर्तमान समय में जिन प्रदेशों में हस्तादि अवगाहकर रहे हुवे हैं उन प्रदेशों में ही आगामिक काल में नहीं रह सकते हैं ? अहो गौतम ! केवली को वीर्यांत-राय के क्षय से मन वचन व काया का व्यापार सहित विद्यमान जीव द्रव्य के भाव से अस्थिर अंगोपांग

इन्द्रिय से जा० जाने पा० देखे णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ के० किसलिये जा० यावत् शेष पूर्ववत्
॥ २१ ॥ के० केवली भं० भगवन् अ० इस स० समय में जे० जिन आ० आकाश प० प्रदेश में ह० हस्त
पा० पांव बा० बाहु उ० जंघा उ० अवगाह कर चि० रहते हैं प० समर्थ के० केवली से० आगामिक

णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं जाव केवलीण आयाणेहिं न जाणइ न पासइ? गोयमा! केवलीण पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ, अमियंपि जाणइ, जाव निव्वुडे दसणे केवलिस्स से तेणट्ठेणं ॥ २१ ॥ केवलीण भंते! अस्सिं समयंसि जेसु आगासपएसेसु हत्थवा, पायवा, बाहवा, ऊरूवा उगाहित्ताण चिट्ठइ, पभूण केवली सेयकालंसिवि

भगवन्! क्या केवली आदान (ग्रहण करने योग्य सो इन्द्रियों) से जानते हैं देखते हैं? अहो गौतम!
यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारन से केवली इन्द्रियों से नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं? अहो गौतम!
केवली पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व, अधो वगैरह दिशा में मर्यादा सहित जानते हैं और मर्यादा
रहित भी जानते हैं, सब काल, सब भाव जानते देखते हैं यावत् केवली को प्रगट ज्ञान दर्शन रहा हुवा
है इसलिये वे केवली इन्द्रियों से नहीं जानते व नहीं देखते हैं॥२१॥ अहो भगवन्! इस समय में केवली जिन
आकाश प्रदेश में अपने हस्त, पांव, बाहु व जंघा अवगाहकर रहे हुवे हैं. उन ही आकाश प्रदेश में अना-

स० वैसे ही भं० भगवन् पं० पांचवा स० शतक का च० चौथा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ५ ॥ ४ ॥

छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य ती० अतीत अ० अनंत सा० शाश्वत स० समय के० संपूर्ण स०

...म् उ० बताने को गो० गौतम चो० चौदहपूर्वी को अ० अनंत द्रव्य उ० उत्कारिका भे० भेद स... ...० तोडे हुवे ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुए भ० होते हैं ते० इसलिये जा० यावत् उ० बताने

पताइ दव्वाइ उक्कारिया भेएणं भिज्जमाणाइ लद्धाइ पत्ताइ अभिसमण्णागयाइ भवंति, से तेणट्ठेण जाव उवदसित्तए ॥२४॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचम सयस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ४ ॥

* * * *

छउमत्थेण भंते ! मणूसे तीय मणंत सासय समय केवलेण संजमेण जहा पढमसए

अहो भगवन् ! किस तरह चौदह पूर्वधारी एक घडे से सहस्र घडे यावत् एक दंड से सहस्र दंड बनाकर बताने को समर्थ हैं ? अहो गौतम ! भेद पांच प्रकार के कहे हुवे हैं १ खंडादि भेद सो अनेक टुकडे हुवे लोहादि २ प्रतर भेद सो पड नीकले अभ्रपटल ३ चूर्ण भेद तिलादि चूर्णवत् ४ अनुतटिका भेद अवटतट का भेद समान और ५ उत्कारिका भेद एरण्ड बीज समान जो चौदह पूर्वधारी होते हैं उन को अनंत द्रव्य उत्कारिक भेद से भेदाये हुवे प्राप्त होते हैं, इस से वे अनेक रूप बनाकर बता सकते हैं अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह पांचवा शतक का चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ४ ॥

चतुर्थ उद्देश में चौदह पूर्वधारी का महानुभाव कहा उस से छद्मस्थ जीव सीझे ऐसी किसी को शंका

होते हैं च० अस्थिर उ० उपकरण केलिये के० केवली अ० इस स० समय में जे० जिन आ० आकाश प्रदेश में शेष पूर्ववत् ॥ २२ ॥ प०समर्थ भ०भगवन् चो०चौदहपूर्वी घ०घट से घ०घटसहस्र प०वस्त्र से प० वस्त्र सहस्र क० कट (छादडी से) क० कट सहस्र र० रथ से र० रथ सहस्र छ० छत्र से छ० छत्र सहस्र द० दंड से द० दंड सहस्र अ० करके उ० बताने को ह० हां प० समर्थ के० कैसे चो० चौदह पूर्वी जा०

चिट्ठइ, णोण पभू केवली सेयकालंसि विएसुचेत्र, जाव चिट्ठित्तए से तेणट्ठेण जाव वुच्चइ केवलीण अस्सिं समयंसि जाव चिट्ठित्तए ॥ २२ ॥ पभूण भंते ! चोद्दस-पुव्वी घडाओ घडसहस्स, पडाओ पडसहस्स, कडाओ कडसहस्स, रहाओ रहसहस्स, छत्ताओ छत्तसहस्स दडाओ दडसहस्स, अभिनिव्वट्टत्ता उवदसेत्तए ? हता पभू ! से केणट्ठेण पभू चोद्दसपुव्वी जाव उवदंसेत्तए ? गोयमा ! चोद्दसपुव्विस्सण अ-

होते हैं इस तरह अस्थिर अंगोपांग होने से केवली वर्तमान समय में जिन प्रदेशों में हस्तादि अवगाहकर रहते हैं उन प्रदेशों में अनागत काल में नहीं रहते हैं ॥ २२ ॥ अब श्रुत केवली आश्री प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! चौदह पूर्वधारी श्रुत केवली क्या लब्धि के प्रभाव से एक घट की नेश्राय से सहस्र घट, एक वस्त्र से सहस्र वस्त्र, एक कट (छादडी) से सहस्र कट, एक रथ से सहस्र रथ, एक छत्र से सहस्र छत्र और एक दंड से सहस्र दंड बनाकर बताने को क्या समर्थ हैं ? हां गौतम ! चौदह पूर्वधारी समर्थ हैं

यावत् उ० बताने को गो० गौतम चो० चौदहपूर्वी को अ० अनंत द्रव्य उ० उत्कारिका भे० भेद स मि० ताडे हुवे ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुए भ० होते हैं ते० इसलिये जा० यावत् उ० बताने को से० वैसे ही भं० भगवन् पं० पांचवा स० शतक का च० चौथा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ५ ॥ ४ ॥

छ० छद्मस्थ मं० भगवन् म० मनुष्य ती० अतीत अ० अनंत सा० शाश्वत स० समय के० संपूर्ण स०

णताइ दव्वाइ उक्कारिया भेएण भिज्जमाणाइ लद्धाइ पत्ताइ अभिसमण्णागयाइ भवति, से तेणट्ठेण जाव उवदंसित्तए ॥२४॥ सेव भंते भंतेत्ति ॥ पंचम सयस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ४ ॥ * * * *

छउमत्थेण भंते ! मणूसे तीय मणत सासय समय केवलेणं संजमेण जहा पढमसए

अहो भगवन् ! किस तरह चौदह पूर्वधारी एक घडे से सहस्र घडे यावत् एक दंड से सहस्र दंड बनाकर बताने को समर्थ हैं ? अहो गौतम ! भेद पांच प्रकार के कहे हुवे हैं १ खडादि भेद सो अनेक टुकडे हुवे लोष्टादि २ प्रतर भेद सो पड नीकले अभ्रपटल ३ चूर्ण भेद तिलादि चूर्णवत् ४ अनुतटिका भेद अवटतट का भेद समान और ५ उत्कारिका भेद एरण्ड बीज समान जो चौदह पूर्वधारी होते हैं उन को अनंत द्रव्य उत्कारिक भेद से भेदाये हुवे प्राप्त होते हैं; इस से वे अनेक रूप बनाकर बता सकते हैं अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह पांचवा शतक का चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ४ ॥

चतुर्थ उद्देशे में चौदह पूर्वधारी का महानुभाव कहा उस से छद्मस्थ जीव सीझे ऐसी किसी को शंका

सपम सं० ज० जस प० प्रथम श० शतक में च० चतुर्थ उ० उद्देशे में आ० आलापक त० तैसे ने० जानना जा० यावत् ॥ १ ॥ अ० अन्यतीर्थिक भ० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० परूपते हैं स० सब पा० प्राणी स० सब भू० भूत स० सब जी० जीव स० सब स० सत्व ए० ऐसी वे० वेदना

चउत्थ उद्देसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव अलमत्थुत्ति वत्तव्वसिया ॥ १ ॥ अ-ण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खति जाव परूवेंति सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा सव्वेसत्ता, एवंभूय वेयण वेदति से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवं माइक्खति जाव वेदंति, जे ते एवं माहंसु मिच्छाते एवं माहंसु ॥ अहं पुण गोयमा! एवं माइक्खामि जाव परूवेमि, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवं-भूयं वेयणं वेदति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूय वेयण वेदति ॥

होवे इस की निवृत्ति के लिये पांचवा उद्देशा कहते हैं अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य मात्र संयम से क्या सिझते हैं, बुझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ? अहो गौतम ! प्रथम शतक के चतुर्थ उद्देशे में जैसा कहा वैसेही यहां जानना अर्थात् छद्मस्थ मनुष्य नहीं सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत नहीं करते हैं परंतु ज्ञान दर्शन के धारक केवली ही सिझते हैं क्यों कि उस से विशेष कुच्छ नहीं है ॥ २ ॥ अहो

वेदते हैं से० अथ क० कैसा ए० यह भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम जे० जो ते० वे अ० अन्य तीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् वे० वेदते हैं जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं पु० पुन: गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं

से केणट्ठेण ! अत्थेगइया तचेव उच्चारेयव्वं ? गोयमा ! जेण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेयण वेदति तेणं पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूय वेयणं वेदति, जेण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेयण वेदति, तेणं पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूय वेयण वेदंति से तेणट्ठेण तहेव ॥२॥ नेरइयाणं भंते ! किं एवंभूय वेयण वेदेति अणेवंभूय वेयण वेदति ? गोयमा ! नेरइयाण

भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि सब प्राण भूत जीव व सत्व एवंभूत[1] वेदना वेदते हैं तो यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं वे मिथ्या हैं अर्थात् उन का कथन मिथ्या है मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि कितनेक प्राण भूत सत्व व जीव एवंभूत वेदना वेदते हैं और कितनेक प्राण भूत जीव व सत्व अनेवंभूत वेदना वेदता हैं अहो भगवन्!

---

१ जिसरीति से कर्म करना उसी रीति से उसको भोगना सो

जा० यावत प० मरूपता हूं जे० जो पा० माणी भू० भूत जी० जीव स० सत्व ज० जैसे क० किया हुवा क० कर्म त० तैसी वे०वेदना वे० वेदते हैं ते०वे पा०माण ए०एवंभूत वे०वेदना वे०वेदते हैं शेष सब पूर्ववत् ॥ २ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ज० जम्बूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में इ० इस उ० अवसर्पिणी के स० अवसर में

एवंभूयत्रि वेयणं वेदति, अणेवभूयत्रि वेयण वेदति ॥ से केणट्ठेण तचेव ? गोयमा ! जेणं नेरइयाणं जहा कडा कम्मा तहा वेयण वेदेंति तेण नेरइया एवंभूय वेयण वेदेंति जेणं नेरइया जहा कडा कम्मा णो तहा वेयण वेदेंति तेण नेरइया अणेव भूयं वेयण वेदेंति । से तेणट्ठेण जाव वेमाणिया, ससारमडल नेयव्व ॥ ३ ॥

किस तरह ? अहो गौतम ! माण भूतादि जिसरीति से कर्मों किये वैसी वेदना वेदते हैं वे माण दि एवंभूत वेदना वेदते हैं और जो माण भूत जिसरीति से कर्मों किये वैसी वेदना नहीं वेदते हैं नेवंभूत वेदना वेदते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी एवंभूत वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! नारकी एवंभूत अनेवंभूत ऐसी दोनोंप्रकार की वेदना वेदते हैं अहो भगवन् ! यह किस तरह ? गौतम ! जो नारकी जैसे कर्म किये वैसी वेदना वेदते हैं वे एवंभूत वेदना वेदते हैं और जो नारकी कर्म किये वैसी वेदना नहीं वेदते हैं वे अनेवंभूत वेदना वेदते हैं इस तरह वैमानिक तक जानना यह संसार-में परिभ्रमण करनेवाले जीवों की वक्तव्यता कही ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र

क० कितने कु० कुलकर हो० थे गो० गौतम स० सात ए० ऐसे तीर्थंकर मा० माता पि० पिता प० प्रथम सि० शिष्या च० चक्रवर्ती मा० माता इ० स्त्री रत्न ब० बल्देव वा० वासुदेव मा० माता पि० पिता प० इन के प० प्रतिशत्रु ज० जैसे स० समवायांग में ना० नाम की प० परिपाटी ने० जानना ॥ ९ ॥ ९ ॥ क० कैसे भ० भगवन् जी० जीव अ० अल्प आ० आयुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं गो०

जंबुद्दीवेण भंते ! इह भारहेवासे इमीसे उसप्पिणीए समाए कइ कुलगरा होत्था ? गोयमा ! सत्त, एवं तित्थयरा मायरो पियरो पढमा सिस्सिणीओ, चक्कवट्टी, मायरो, पियरो इत्थिरयण, बलदेववासुदेवा, वासुदेव मायरो पियरो एएसिं पडिसत्तू जहा समवाए नाम परिवाडी तहा नेयव्वा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पंचम सयस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ५ ॥ * * * *

कहण्णं भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोयमा ! पाणे अइवाइत्ता,

में इस अवसर्पिणी में कितने कुलकर होते हैं ? अहो गौतम ! सात कुलकर होते हैं ऐसे ही तीर्थंकर व उनके माता, पिता प्रथम शिष्य व शिष्या चक्रवर्ती, व उन के माता, पिता, स्त्री रत्न बल्देव वासुदेव व उन के माता, पिता व प्रतिशत्रु [प्रतिवासुदेव] का अधिकार जैसे समवायांग सूत्र में कहा है वैसे ही यहां मानना अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह पांचवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥५॥५॥

पांचवे उद्देशे के अंत में उत्तम पुरुषों के नामों कहे हैं अब उत्तमता व अधमता किस तरह से प्राप्त

आ० यावत् प० प्ररूपता हूं ने० जो पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्व ज० जैसे क० किया हुवा क० कर्म त० वैसी वे०वेदना वे० वेदते हैं ते०वे पा०प्राण ए०एवंभूत वे०वेदना वे०वेदते हैं शेष सब पूर्ववत् ॥ २ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ज० जम्बूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में इ० इस उ० अवसर्पिणी के स० अवसर में

एवंभूयवि वेयण वेदति, अणेवभूयंवि वेयण वेदति ॥ से केणट्ठेण तचेव ? गोयमा ! जेणं नेरइयाणं जहा कडा कम्मा तहा वेयण वेदेंति तेणं नेरइया एवभूय वेयण वेदेंति जेण नेरइया जहा कडा कम्मा णो तहा वेयण वेदेंति तेण नेरइया अणेव भूय वेयणं वेदेंति । से तेणट्ठेण जाव वेमाणिया, ससारमडल नेयव्व ॥ २ ॥

यह किस तरह ? अहो गौतम ! प्राण भूतादि जिसरीति से कर्मों किये वैसी वेदना वेदते हैं वे प्राण भूतादि एवंभूत वेदना वेदते हैं और जो प्राण भूत जिसरीति से कर्मों किये वैसी वेदना नहीं वेदते हैं वे अनेवंभूत वेदना वेदते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी एवंभूत वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! नारकी एवंभूत अनेवंभूत ऐसी दोनोंप्रकार की वेदना वेदते हैं अहो भगवन् ! यह किस तरह ? अहो गौतम ! जो नारकी जैसे कर्म किये वैसी वेदना वेदते हैं वे एवंभूत वेदना वेदते हैं और जो नारकी जैसे कर्म किये वैसी वेदना नहीं वेदते हैं वे अनेवंभूत वेदना वेदते हैं इस तरह वैमानिक तक जानना यह ससार-चक्र में परिभ्रमण करनेवाले जीवों की प्ररूपणा कही ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र

दी० दीर्घायुष्य का क० कर्म प० करते हैं ॥ २ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव अ० अशुभ दी० दीर्घायुष्य का क० कर्म प० करते हैं गो० गौतम पा० प्राणियों की अ० हिंसा करने से मृ० मृषा व० घ० बोलने से त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण की ही० हीलना करने स निं० नींदने से खिं० खिंसना करने से ग० गर्हा करने से अ० तीरस्कार करने से अ० अन्यतर अ० अमनोज्ञ अ० अप्रीति का० कारन से अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० देकर ए० एसे ख० निश्चय जी० जीव जा० यावत् प० करते हैं ॥ ३ ॥ क० कैसे भ० भगवन् जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घ आयुष्य का क० कर्म

पडिलाभेत्ता एव खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्म पकरंति ॥ २ ॥ कहण्ण भंते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुस वइत्ता तहारूव समणंवा माहणवा हीलित्ता, निंदित्ता, खिंसित्ता, गरहित्ता, अवमाणित्ता, अण्णयरेण अमणुण्णेण, अप्पीइ कारएण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभित्ता, एव खलु जीवा जाव पकरंति ॥ ३ ॥ कहण्ण भंते ! जीवा सुभ दीहाउयत्ताए कम्म

श्रमण माहण को प्रासुक एषणिक अशनादिक देने से जीव दीर्घ आयुष्य बांधते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! जीव कैसे अशुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध करने से, मृषा बोलने से, व तथारूप श्रमण माहण की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार करने से, वैसे ही अन्य अमनोज्ञ अप्रीति कारक अशनादि देने से जीव अशुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे शुभ

गौतम पा० प्राणियों का अ० अतिपात करके मु० मृषा व० बोल करके त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को अ० अफ्रासुक अ० अनेषणिक अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम से प० देकर ए० ऐसे जी० जीव अ० अल्प आ० आयुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं ॥ १ ॥ क० कैसे भ० भगवन् जी० जीव दी० दीर्घ आ० आयुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं गो० गौतम नो० नहीं पा० प्राणियोंका अ० अतिपात करने से नो० नहीं मु० मृषा व० बोलने से त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण को फा० फासुक ए० एषणिक अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम प० देने से ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव

मुसं वइत्ता, तहारूव समणवा माहणवा अफासुएणं अणेसणिज्जेण असण पाण खाइम साइमेण पडिलाभेत्ता एव खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्म पकरति ॥ १ ॥ कहण भते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्म पकरति ? गोयमा ! नो पाणे अइवाइत्ता, नो मुस वइत्ता, तहारूव समणवा माहणवा फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण

होती है सो बताते हैं अहो भगवन् ! किस तरह से जीव अल्पायुष्य का कर्म करते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध करने से, मृषा बोलने से, व तथारूप श्रमण माहण को अफ्रासुक अनेषणिक आहार, पानी, खादिम व स्वादिम देने से जीव अल्प आयुष्य बांधते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे दीर्घ आयुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध नहीं करने से, मृषा नहीं बोलने से व तथाभूत

दी० दीर्घायुष्य का क० कर्म प० करते हैं ॥ २ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव अ० अशुभ दी० दीर्घायुष्य का क० कर्म प० करते हैं गो० गौतम पा० प्राणियों की अ० हिंसा करने से मृ० मृषा व० व० बोलने से त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण की ही० हीलना करने से नि० नींदने से खिं० खिंसना करने से ग० गर्हा करने से अ० तीरस्कार करने से अ० अन्यतर अ० अमनोज्ञ अ० अप्रीति का० कारन से अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० देकर ए० एसे ख० निश्चय जी० जीव जा० यावत् प० करते हैं ॥ ३ ॥ क० कैसे भ० भगवन् जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घ आयुष्य का क० कर्म

पडिलाभेत्ता एव खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्म पकरति ॥ २ ॥ कहण भते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरति ? गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुस वइत्ता तहारूव समणवा माहणंवा हीलित्ता, निंदित्ता, खिंसित्ता, गरहित्ता, अवमाणित्ता, अण्णयरेण अमणुण्णेण, अप्पीइ कारएण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभित्ता, एव खलु जीवा जाव पकरति ॥ ३ ॥ कहण भते ! जीवा सुभ दीहाउयत्ताए कम्म

श्रमण माहण को फासुक एषणिक अशनादिक देने से जीव दीर्घ आयुष्य बांधते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे अशुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध करने से, मृषा बोलने से, व तथारूप श्रमण माहण की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार करने से, वैसे ही अन्य अमनोज्ञ अप्रीति कारक अशनादि देने से जीव अशुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे शुभ

गौतम पा० प्राणियों का अ० अतिपात करके मु० मृषा व० बोल करके त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को अ० अफासुक अ० अनेषणिक अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम से प० देकर ए० ऐसे जी० जीव अ० अल्प आ० आयुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं ॥ १ ॥ क० कैसे भ० भगवन् जी० जीव दी० दीर्घ आ० आयुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं गो० गौतम नो० नहीं पा० प्राणियोंका अ० अतिपात करने से नो० नहीं मु० मृषा व० बोलने से त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण को फा० फासुक ए० एषणिक अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम प० देने से ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव

मुस वइत्ता, तहारूव समणवा माहणवा अफासुएण अणेसणिज्जेण असण पाण खाइम साइमेण पडिलाभेत्ता एव खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्म पकरंति ॥ १ ॥ कहण भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्म पकरंति ? गोयमा ! नो पाणे अइवाइत्ता, नो मुस वइत्ता, तहारूव समणवा माहणवा फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण

होती है सो बताते हैं अहो भगवन् ! किस तरह से जीव अल्पायुष्य का कर्म करते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध करने से, मृषा बोलने से, व तथारूप श्रमण माहण को अफासुक अनेषणिक आहार, पानी, खादिम व स्वादिम देने से जीव अल्प आयुष्य बांधते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे दीर्घ आयुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध नहीं करने से, मृषा नहीं बोलने से व तथाभूत

अ० अमत्याख्यान मि० मिथ्यादर्शन कि० क्रिया सि० क्वचित् क० करे सि० क्वचित् नो० नहीं क० करे अ० अथ से० उन का भं० किरियाणा अ० माप्त होवे त० उस प० पीछे स० सब ता० वे प० पतली होती हैं ॥ ५ ॥ गा० गृहपतिका भ० किरियाना वि० बेचने वाला का क० मोललेनेवाला भ० किरि-

दसणवत्तिया ? गोयमा ! आरभिया किरिया कज्जइ, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, मिच्छादसणकिरिया सिय कज्जइ सिय नो कज्जइ ॥ अह से भंडे अभिसमण्णागए भवइ, तओसे पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुईभवति ॥ ५ ॥ गाहावइस्सण भते ! भंड विक्किणमाणस्स कइए भंड साइज्जेज्जा, भंडेयसे

याला गाथापति को क्या आरंभिकी क्रिया लगती है, परिग्रहिकी क्रिया लगती है, मायामत्ययिकी क्रिया लगती है, अमत्याख्यान मत्ययिकी क्रिया लगती है या मिथ्यादर्शनमत्ययिकी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! इस तरह किरियान की गवेषणा करनेवाले गाथापति को आरंभिकी, परिग्रहिकी, अमत्याख्यान मत्ययिकी व माया मत्ययिकी क्रिया लगती है, और मिथ्यादर्शन क्रिया क्वचित् लगती है व क्वचित नहीं लगती है और जब वह किरियाना गवेषणा करते हुवे माप्त हो जावे तो उक्त सब क्रियाओं पतली हो जाती हैं क्योंकि गवेषणा करनेमें वह उद्यमी बना हुवा था सो उद्यम हीन हो गया ॥ ५ ॥ किरियाने का व्यापार करनेवाले की पास से ग्राहक किरियाना अंगीकार करे परंतु उसने

प० करते हैं पूर्ववत् ॥ ४ ॥ गा० गाथापति का भ० भगवन् भ० किरियाना वि० विक्रय करने वाला का के० कोई भं० किरियाना अ० लेजावे त० उस भं० भगवन् भ० किरियाना की अ० गवेपणा करने वाले को कि० क्या आ० आरंभिकी क्रिया क० करता है प० परिग्रहिकी मा० माया प्रत्ययिकी अ० प्रत्याख्यान मि० मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी गो० गौतम आ० आरंभिकी कि० क्रिया प० परिग्रहिकी मा० माया प्रत्ययिकी

पकरति ? गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुस वइत्ता तहारूव समणत्रा, माह-णत्रा, वंदित्ता जाव पज्जुवासेत्ता, अण्णयरेण मणुण्णेण पीइकारएण असणं पाण खाइम साइम पडिलाभित्ता एव खलु जीवा जाव पकरति ॥ ४ ॥ गाहावइस्सण भंते ! भंड विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा तस्सण भंते ! भंड अणुगवेसमाणस्स किं आरंभिया किरिया कज्जइ, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणीया मिच्छा-

दीर्घायुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणातिपात नहीं करने से मृषा नहीं बोलने से, तथारूप श्रमण माहण को वंदना नमस्कार करनेसे व अन्य मनोज्ञ प्रीति उत्पन्न करनेवाले अशनादि देनेसे जीव शुभ दीर्घा-युष्य बांधते हैं ॥ ४ ॥ शुभाशुभ कर्मों की उपार्जना क्रिया से होती है इसलिये क्रिया का अधिकार करते हैं अहो भगवन् ! किरियाने का व्यापार करनेवाला गाथापति के किरियाने की कोई चोरी करे और चोरी में गया हुआ किरियाने की वह गाथापति गवेषणा करे अब उस समय में उस गवेषणा करने

करते हैं सि० क्वचित् नो० नहीं क० करते हैं क० मोललेने वाले को ता० वे स० सब प० पतली होती हैं ॥ ६ ॥ गा० गाथापति भ० भगवन् भ० किरियाना वि० खरीदने वाले को जा० यावत् भ० किरियाना स० उस की पास उ० लाये क० खरीदने वाले को शेष पूर्ववत् मि० मिथ्या दर्शन कि० क्रिया की भ०

सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ कइयस्सणं ताओ सव्वाओ पयणुईभवाति ॥ ६ ॥ गाहावइस्सण भते ! भड विक्किणमाणस्स जाव भडे से उवणीए सिया, कइयस्सण भते ! ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया कज्जइ, गाहावइस्सवा ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया ? गोयमा ! कइयस्स ताओ भडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जति, मिच्छादसणकिरिया भयणाए ॥ गाहावइस्सण ताओ सव्वाओ

हक को उक्त सब क्रियाओं पतली होती हैं ॥ ६ ॥ किरियाना वेचनेवाला गाथापति की पास से ग्राहक ने किराना खरीदा और ग्रहण भी कर लीया तब अहो भगवन् ! उस ग्राहक को क्या आरंभिकी आदि क्रियाओं लगती हैं ? और गाथापति को भी क्या आरंभिकी आदि क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! उस किराने से ग्राहक को आरंभिकी, परिग्रहिकी, मायाप्रत्यायिकी व अप्रत्याख्यान क्रियाओं लगती हैं मिथ्या दर्शन क्रिया क्वचित् लगती है व क्वचित् नहीं लगती है और गाथापति को उक्त सब क्रियाओं पतली

याना सा० ग्रहण करे भ० किरियाना भी से० उस को अ० नहीं आया हुआ सि० होवे गा० गाथापति का भं० भगवन् ता० उस भं० किरियाने से किं० क्या आ० आरंभिकी कि० क्रिया क० करता है जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन कि० क्रिया क० करता है क० मोललेने वाले को ता० उस भ० किरियाने से आ० आरंभिकी कि० क्रिया जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन कि० क्रिया गो० गौतम गा० गाथापति को ता० उस भं० किरियाने से आ० आरंभिकी कि० क्रिया क० करता है जा० यावत् अ० अप्रत्याख्यान कि० क्रिया क० करते हैं मि० मिथ्या दर्शन सि० क्वचित् क०

अणुवणीए सिया गाहावइस्सण भंते! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ? कइयस्सवा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ, जाव मिच्छादंसण किरिया कज्जइ ? गोयमा ! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ, मिच्छादंसण किरिया

किरियाना दीया नहीं है, तो अहो भगवन् ! उस गाथापति को उस किरियाने से क्या आरंभिकी यावत् मिथ्यादर्शन क्रिया लगे ? और ग्राहक को क्या उस किरियाने से आरंभिकी यावत् मिथ्यादर्शन क्रिया लगे ? अहो गौतम ! गाथापति को उस किराने से आरंभिकी यावत् अप्रत्याख्यान प्रत्ययिकी क्रिया लगती है और मिथ्यादर्शन क्रिया क्वचित् लगती है व क्वचित् नहीं लगती है खरीदनेवाला ग्रा

करते हैं सि० क्वचित् नो० नहीं क० करते हैं क० मोल लेने वाले को ता० वे स० सब प० पतली होती हैं ॥ ६ ॥ गा० गाथापति भ० भगवन् भ० किरियाना वि० खरीदने वाले को जा० यावत् भ० किरियाना स० उस की पास उ० लाये क० खरीदने वाले को शेष पूर्ववत् मि० मिथ्या दर्शन कि० क्रिया की भ०

सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ कइयस्सण ताओ सव्वाओ पयणुईभवति ॥ ६ ॥ गाहावइस्सण भते ! भड विक्किणमाणस्स जाव भडे से उवणीए सिया, कइयस्सण भते ! ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया कज्जइ, गाहावइस्सवा ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया ? गोयमा ! कइयस्स ताओ भडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जति, मिच्छादसणकिरिया भयणाए ॥ गाहावइस्सण ताओ सव्वाओ

हक को उक्त सब क्रियाओं पतली होती हैं ॥ ६ ॥ किरियाना बेचनेवाला गाथापति की पास से ग्राहक ने किराना खरीदा और ग्रहण भी कर लीया तब अहो भगवन् ! उस ग्राहक को क्या आरंभिकी आदि क्रियाओं लगती हैं ? और गाथापति को भी क्या आरंभिकी आदि क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! उस किराने से ग्राहक को आरंभिकी, परिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी व अप्रत्याख्यान क्रियाओं लगती हैं मिथ्या दर्शन क्रिया क्वचित् लगती है व क्वचित् नहीं लगती है और गाथापति को उक्त सब क्रियाओं पतली

भजना ॥ ७ ॥ गा० गाथापति को भ० भगवन् भ० किरियाणा भा० पावत घ० धन अ० नहीं दीया सि० होवे ए० इस को ज० जैसे भं० किरियाना उ० दीया हुवा त० तैसे णे० जानना च० चतुर्थ आ० आलापक ध० धन से० उसकी पास उ० लाया हुवा सि० होवे ज० जैसे प० प्रथम आ० आलापक भं० किरियाना अ० नहीं लाया हुवा सि० होवे त० तैसे ने० जानना प० प्रथम च० चतुर्थ का ए० एक ग० गमा बि० द्वितीय त० तृतीय का ए० एक ॥ ८ ॥ अ० अग्निको भ० भगवन् अ० तत्काल उ०

पयणुईभवति ॥ ७ ॥ गाहावइस्सण भते ! भड जाव धणेय से अणुवणीए सिया, एयपि जहा भडे उवणीए तहाणेयव्व चउत्थो आलावगो, धणेयसे उवणीए सिया जहा पढमो आलावगो भडेयसे अणुवणीए सिया तहा नेयव्वो पढम चउत्थाण एक्को-गमो, बितीय तईयाण एक्को ॥ ८ ॥ अगणिकाएण भते ! अहुणोज्जलिए समाणे

होती है ॥ ७ ॥ गाथापतिने किरियाना बेचदिया परतु ग्राहकने जहांलग उस के पैसे (धन) नहीं दिया है, वहांलग उस गाथापति को धन व किरियाना ऐसे दोनों की क्रिया कम लगती है और ग्राहक को विशेष क्रिया लगती है जब किरानेका धन उस गाथापति को ग्राहक दे देता है तब उस को धन की क्रिया विशेष लगती है और ग्राहक को धन की क्रिया पतली होती है यों इस क्रिया अधिकार में प्रथम व चतुर्थ आलापक का सरिखा अर्थ होता है वैसे ही दूसरा व तीसरा आलापक का एक सरिखा अर्थ होता है ॥ ८ ॥ अब अग्नि को प्रज्वालने के संबंध में प्रश्न पूछते हैं- अहो भगवन् ! कोई पुरुष

उज्जालते म० महाकर्मवाले म० महाक्रिया वाले म० महा आश्रव वाले म० महावेदना वाले भ० होवे अ० नीचे स० समय २ में वो० विखरते हुवे वो० नष्ट करते च० छेल्ले स० समय में इं० अग्निभूत मु० मुर्मुरा समान छा० भस्मीभूत त० उस पीछे अ० अल्पकर्म वाले कि० क्रिया आ० आश्रव अ० अल्प वे० वदना वाले भ० होता है हं० हां गो० गौतम अ० अग्निकाय अ० तत्काल का उ० उज्वल होती त०

महाकम्मतराए चेव, महाकिरियत्तराए चेव, महस्सवतराए चेव, महावेयणतराएचेव भवइ ! अहेण समए २ वोक्कसिज्जमाणे वोच्छिज्जमाणे चारिमकालसमयासि इंगालभूए मुम्मुरभूए, छारियभूए, तओपच्छा अप्पकम्मतराएचेव किरिया आसव अप्पवेयणतरा-ए चेव भवइ ? हंता गोयमा ! अगणिकाएण अहुणोज्जलिए समाणे त चेव ॥ १ ॥

अग्नि को तत्काल प्रज्वालित करे तो क्या वह बहुत कर्मवाला, महा क्रियावाला, महा आश्रववाला व महा वेदनावाला होवे ? और फीर नीचे समय २ में अग्नि को विखरदेते व बुझा देते अंगारे समान, मुर्मुरे समान, व भस्म समान जब वह अग्नि होती है तब क्या वह अल्प कर्म, अल्प क्रिया, अल्प आश्रव व वेदनावाला होवे ? हां गौतम ! तुर्त अग्नि प्रज्वलित करनेवाला महाकर्मी यावत् महावेदनावाला होवे और अग्नि विखेरकर अंगारे यावत् भस्म समान करनेवाला अल्प कर्मवाला यावत् अल्प वेदनावाला होवे ॥२॥ अथ

वत हा ॥ ९ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् म० मनुष्य प० ग्रहण करता है उ० बाण प० ग्रहण करता है ठा० स्थान ठा० बैठे आ० खींचा हुआ क० कर्ण पर्यंत उ० बाण क० करे उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० छोडे त० तब से० वह उ० बाण उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० छोडा हुवा जा० जो त० तहां पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व अ० हणावे व० वर्तुलाकार करे ले० मीले सं० परस्पर गात्रोंको एकत्रित करे स० थोडा स्पर्श करे प० दुःखदेवे कि० किलामना उत्पन्न करे ठा० स्थान से स० जावे जी० जीवित से व० पृथक् करे त० तब भ० भगवन् से० उस पु० पुरुष को क० कितनी

पुरिसेण भंते ! धणु परामुसइ २ उसु परामुसइ २ ठाण ठाइ २ आययकण्णायय उसु करेइ २ उड्ढ वेहास उसु उव्विहइ, तएण से उसू उड्ढ वेहास उव्विहिए समाणे जाइ तत्थ पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ अभिहणइ वत्तेइ लेस्सेइ संघाएइ संघटेइ परितावेइ किलामेइ ठाणाओ ठाण संकामेइ जीवियाओ ववरोवेइ तएण भंते ! सेपुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे धणु परामुसइ २ जाव उव्विहइ ताव चण

मनुष्य आश्री क्रिया का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! कोई पुरुष मनुष्य पर बाण रखकर आसन सहित कर्ण पर्यंत प्रत्यंचा खींचकर ऊंचे आकाश में बाण छोडे, फीर आकाश में बाण छोडते हुए प्राण नाशे, स्पर्श करे, संघट्टना करे, परिताप उत्पन्न करे, दुःख

कि० क्रिया गो० गौतम जा० जितने में से० वह पु०पुरुष ध० धनुष्य प० ग्रहण करता है जा० यावत् उ०बाण उ०छोडता है तां०उतने में से०उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा०यावत् पा० प्राणातिपाति की कि० क्रिया प०पांच कि० क्रिया से पु० स्पर्शाया जे० जिन जी०जीवों के स० शरीर से ध० धनुष्य नि० बनाया ते० वेभी जी० जीव का० कायिकी जा० यावत् प० पांच कि० क्रिया से पु० स्पर्शाये ए० ऐसे ध० धनुष्यपीठिका प० पांच क्रियाओं से जी० जीव्हा प० पांच ण्हा० तांत पं० पांच से उ० बाण प०

से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिं पियण जीवाण सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए तेवियण जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठे, एव धणुपिट्ठे पचहिं किरियाहिं, जीवा पचहिं, ण्हारु पचहिं, उसू पचहिं सरे पत्ताणे फले ण्हारु पचहिं, अहेण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए, भारियत्ताए गुरुयस

उत्पन्न करे, एक स्थान से अन्य स्थान चलावे व जीवित से पृथक् करे उस समयमें उस बाण छोडनेवाले पुरुष को अहो भगवन् ! कितनी क्रियाओं कही ? अहो गौतम ! जहांलग उस पुरुषने धनुष्य उठाया यावत् बाण छोडा वहांलग उस को पांच क्रियाओं होवे कायिकी, आधिकरणकी, प्रद्वेषिकी, परितापनिकी, व प्राणातिपातिकी और जिन जीवों के शरीर से धनुष्य बना हुवा है, उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती है ऐसे ही जिन जीवों से धनुष्यपीठिका, जिव्हा, तांता, बाण, पांखों व आगे

वैसे ही ॥ ९ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् ध० धनुष्य प० ग्रहण करता है उ० बाण प० ग्रहण करता है ठा० स्थान ठा० बैठे आ० खींचा हुआ क० कर्ण पर्यंत उ० बाण क० करे उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० छोडे त० तब से० वह उ० बाण उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० छोडा हुआ जा० जो त० तहां पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व अ० हणावे व० वर्तुलाकार करे ले० मीले स० परस्पर गात्रोंको एकत्रित करे स० थोडा स्पर्श करे प० दुःखदेवे कि० किलामना उत्पन्न करे ठा० स्थान से स० जावे जी० जीवित से व० पृथक् करे त० तब भ० भगवन् से० उस पु० पुरुष को क० कितनी

पुरिसेण भंते ! धणु परामुसइ २ उसु परामुसइ २ ठाण ठाइ २ आययकण्णायय उसु करेइ २ उड्ढ वेहास उसु उव्विहइ, तएण से उसू उड्ढ वेहास उव्विहिए समाणे जाइ तत्थ पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ अभिहणइ वत्तेइ लेस्सेइ संघाएइ संघट्टेइ परितावेइ किलामेइ ठाणाओ ठाण संकामेइ जीवियाओ ववरोवेइ तएण भंते ! सेपुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे धणु परामुसइ २ जाव उव्विहइ ताव चण

धनुष्य आश्री क्रिया का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! कोई पुरुष धनुष्य पर बाण रखकर आसन सहित कर्ण पर्यंत प्रत्यंचा खींचकर ऊंचे आकाश में बाण छोडे, फीर आकाश में बाण छोडते हुए प्राण भूत, जीव व सत्वोंको हणे, वर्तुलाकार बनावे, स्पर्श करे, संघट्टना करे, परिताप उत्पन्न करे, दुःख

क्रिया से पु० स्पर्शाये ध० धनुष्य पीठिका च० चार जी० जीव्हा च० चार ण्हा०तांत च० चार उ० बाण धं० पांच स० शर प० पत्र फ० फल ण्हा०तांत जे० जो जी०जीव अ०नीचे प० आते हुवे उ०मार्ग में चि० रहते हैं ते० वे भी जी० जीव का०कायिकी जा० यावत् प० पांच कि०क्रिया से पु० स्पर्शाये हुवे ॥१०॥ अ० अन्यतीर्थिक भ० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं से० अथ ज०जैसे जु० युवति को जु० युवान ह० हस्त को गे० ग्रहण करते हैं च० चक्र की ना० नाभी अ० आरा से उ०

जीवा चउहिं, ण्हारूचउहिं उसू पचहिं, सरे पत्ताणे फले ण्हारु पचहिं जेवियसे जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे चिट्ठति तेवियण जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठा, ॥ १० ॥ अण्णउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खाति जाव परूवेंति से जहा नामए जुवई जुवाणे हत्थेण हत्थ गेण्हेज्जा चक्कस्सवा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव

जीव्हा, व तांता बना हुवा है उन जीवों को चार क्रियाओं लगती हैं और बाण, पांखो, भाला वगैरह को पांच क्रियाओं लगती हैं बाण को आते हुए मार्ग में जो जीवों रहे हुवे हैं उन को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ १० ॥ यह सम्यक् प्ररूपना कही अब मिथ्याप्ररूपक बताते हैं अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जैसे युवान पुरुष युवति को हस्तसे हस्त में पकडता है, अथवा गाडी के चक्र की नाभि में आरा रूघन होता है वैसे ही चार सो पांच सो

पांच मे स० शर प० पत्र फ० फल ण्टा० तांत अ० सर्व से० वह उ० वाण भ० अपनी गु० गुरुताये मा० वजनपने गु० गुरुतासे वजनपने अ० नीचे वी० स्वभाव से प० पीछा आता जा० जो त० वहां पा० प्राणी जा० यावत् जी० जीव से व० पृथक् करे ता० उतने में से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जितने में से० वह उ० बाण अ० अपनी गु० गुरुताये जा० यावत् व० पृथक् करता है ता० उतने में से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् च० चार कि० क्रिया से पु० स्पर्शाया जे० जिन जी० जीवों के म० शरीर धु० धनुष्य नि० बना ते० वे जी० जीव चा० चार कि०

मारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइ तत्थपाणाइ जाव जीवियाओ ववरोवेइ, ताव च ण से पुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जावचण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव ववरोवेइ तावचण से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पिण जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते जीवा चउहिं किरियाहिं, धणुपिट्ठे चउहिं,

लगा हुवा लोहे का भाला बना हुवा है उन सब को पांच क्रियाओं लगती हैं अब अपने गुरुत्वपना से, वजनपना से, गुरुत्व व वजन पनासे स्वाभाविक वह बाण नीचे आता है इस तरह नीचे आते हुए प्राण, भूतादि यदि हणावे तो उस बाण छोडनेवाले पुरुष को अहो भगवन् ! कितनी क्रिया लगे ? अहो गौतम ! उस पुरुष को चार क्रिया लगे और जिन जीवों के शरीर से वह धनुष्य, धनुष्य पीठिका

क्रिया से पु० स्पर्शाये ध० धनुष्य पीठिका च० चार जी० जीव्हा च० चार ण्हा०तांत च० चार उ० बाण प० पांच स० सर प० पत्र फ० फल ण्हा०तांत जे० जो जी०जीव अ०नीचे प० आते हुवे उ०मार्ग में चि० रहते हैं ते० वे भी जी० जीव का०कायिकी जा० यावत् प० पांच कि०क्रिया से पु०स्पर्शाये हुवे ॥१०॥ अ० अन्यतीर्थिक भ० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प०प्ररूपते हैं से० अथ ज०जैसे जु० युवति को जु० युवान ह० हस्त को गे० ग्रहण करते हैं च० चक्र की ना० नाभी अ० आरा से उ०

जीवा चउहिं, ण्हारूचउहिं उसू पचहिं, सरे पत्ताणे फले ण्हारु पचहिं जेवियसे जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे चिट्ठति तेवियण जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठा, ॥ १० ॥ अण्णउत्थियाण भते ! एवमाइक्खति जाव परूवेंति से जहा नामए जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थ गेण्हेज्जा चक्कस्सवा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव

जीव्हा, व तांत धना हुवा है उन जीवों को चार क्रियाओं लगती हैं और बाण, पांखो, भाला वगैरह को पांच क्रियाओं लगती हैं बाण को आते हुए मार्ग में जो जीवों रहे हुवे हैं उन को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ १० ॥ यह सम्यक् प्ररूपना कही अब मिथ्याप्ररूपक बताते हैं अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जैसे युवान पुरुष युवति को हस्तसे हस्त में पकडता है, अथवा गाडी के चक्र की नाभि में आरा स्थन होता है वैसेही चार सो पांच सो

पांच से स० शर प० पत्र फ० फल-व्हा० तांत अ० सर्व से० वह उ० बाण अ० अपनी गु० गुरुतासे
भा० वजनपने गु० गुरुतासे वजनपने अ० नीचे वी० स्वभाव से प० पीछा आता आ० जो त० वहां पा०
प्राणी जा० यावत् जी० जीव से व० पृथक् करे ता० उतने में से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि०
क्रिया गो० गौतम जा० जितने में से० वह उ० बाण अ० अपनी गु० गुरुतासे जा० यावत् व० पृथक्
करता है ता० उतने में से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् च० चार कि० क्रिया से पु०
स्पर्शाया जे० जिन जी० जीवों के स० शरीर धु० धनुष्य नि० बना ते० वे जी० जीव चा० चार कि०

मारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइ तत्थपाणाइ जाव जीवियाओ ववरोवेइ, ताव च ण से पुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जावचण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव ववरोवेइ तावचण से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पिण जीवाण सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते जीवा चउहिं किरियाहिं, धणुपिट्ठे चउहिं,

लगा हुवा लोहे का भाला बना हुवा है उन सब को पांच क्रियाओं लगती हैं अब अपने गुरुत्वपना
से, वजनपना से, गुरुत्व व वजन पनासे स्वाभाविक वह बाण नीचे आता है इस तरह नीचे आते हुए
प्राण, भूतादि यावत् हणावे तो उस बाण छोडनेवाले पुरुष को अहो भगवन् ! कितनी क्रिया लगे ?
अहो गौतम ! उस पुरुष को चार क्रिया लगे और जिन जीवों के शरीर से यह धनुष्य, धनुष्य पीठिका

आकर्णि ने० नरक ने० नारकी भ० भगवन् किं०क्या ए० एक प० समर्थ वि०वैक्रेय करने को पु०अनेक ज० जैसे जी० जीवाभिगम में आ० आलापक त० तैसे णे० जानना जा० यावत् दु० खराक्रीति से सहन करे ॥ ११ ॥ आ० आधाकर्म अ० अनवद्य म० मन प० स्थापने वाला भ० होवे से० उसको त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण करते का० काल क० करे अ० है त० उसको आ० आराधना ए० इस ग० गम से ने० जानना की० मोललिया हुवा क० बनाया हुवा ठ० स्थपाया हुवा र०

बहुसमाइण्णे नेरयलोए नेरइएहिं ॥ नेरइयाण भते ! किं एगत्त पभू विउव्वित्तए, पुहत्त पभू विउव्वित्तए, जहा जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो, जाव दुरहियासे ॥ ११ ॥ आहाकम्म अणवज्जेत्ति मणंपहारेत्ता भवइ, सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कते काल करेइ, नत्थि तस्स आराहणा, सेण तस्स ठाणस्स आलोइय पडि-

वैक्रेय नहीं करते हैं ऐसे ही बहुत शरीर वैक्रेय करते हैं, महा उज्वल प्रज्वल वेदना वेदते हुए विचरते हैं इस का विस्तार पूर्वक विवेचन जीवाभिगम सूत्र से जानना ॥ ११ ॥ कोई साधु भिक्षा की गवेषणा में ...स्यवाला व रसगृद्धि बनकर आधाकर्मादि दोष युक्त आहार को निरवद्य मान कर भोगवे और ... की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना यदि वह काल कर जावे तो वह आराधक नहीं होता है और ...लोचनादि करके काल करे तो आराधक होता है ऐसे ही मोल लिया हुवा, बनाया हुवा, स्थापकर

भरी हुई ए० ऐसे ही च० चार पं० पांच जो० योजन स० सो ब० बहुत स०आकीर्ण म० मनुष्य लोक म० मनुष्य से क० कैसे ए० यह मं० भगवन् गो० गौतम ज० जो ते० वे अ० अन्यतीर्थिक जा० यावत् म० मनुष्य से मे० जो ते० वे ए० ऐसा भा० कहते हैं मि० मिथ्या अ० मैं पु० पुन: गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् ए० ऐसे ही च० चार प० पांच जो० योजन स० सो ब० बहुत स०

चत्तारि पंच जोयण सयाइ, बहु समाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं, ॥ से कह मेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया जाव मणुस्सेहिं जे ते एवं माहंसु मिच्छा । अहंपुण गोयमा ! एवं माइक्खामि जाव एवामेव चत्तारिपंच जोयण सयाइ

योजनका मनुष्यलोक मनुष्यों से भरदेते हैं तो यह किसतरह है ? अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं वे मिथ्या वैसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि जैसे काम पीडित युवान युवती को पकडता है अथवा चक्र की नाभी में जैसे आरा सघन होता है वैसे ही नरक में किसी स्थान चार सो किसी स्थान पांच सो योजन तक नारकी भरे हुवे रहते हैं अहो भगवन् ! नारकी वैक्रेय करते हुवे क्या एक रूप वैक्रेय करते हैं या अनेक रूप वैक्रेय करते हैं ? अहो गौतम ! एक रूप भी वैक्रेय करते हैं अनेक रूप भी वैक्रेय करते हैं एक रूप अनेक रूप वैक्रेय करते हुए मारने का शस्त्र जो पुद्गल है उस रूप का भी वैक्रेय करते हैं संख्यात रूप वैक्रेय करते हैं परंतु असख्यात रूप

आकीर्ण ने० नरक ने० नारकी भ० भगवन् किं०क्या ए० एक प० समर्थ वि०वैक्रेय करने को पु०अनेक ज० जैसे जी० जीवाभिगम में आ० आलापक त० तैसे णे० जानना जा० यावत् दु० खराबरीति से सहन करे ॥ ११ ॥ आ० आधाकर्म अ० अनवद्य म० मन प० स्थापने वाला भ० होवे से० उसको त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण करते का० काल क० करे अ० है त० उसको आ० अराधना ए० इस ग० गम से ने० जानना की० मोललिया हुवा क० बनाया हुवा ठ० स्थपाया हुवा र०

बहुसमाइण्णे नेरयलोए नेरइएहिं ॥ नेरइयाण भते ! किं एगत्त पभू विउव्वित्तए, पुहत्त पभू विउव्वित्तए, जहा जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो, जाव दुरहियासे ॥ ११ ॥ आहाकम्मं अणवज्जेत्ति मणपहारेत्ता भवइ, सेण तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कते काल करेइ, नत्थि तस्स आराहणा, सेण तस्स ठाणस्स आलोइय पडि-

वैक्रेय नहीं करते हैं ऐसे ही बहुत शरीर वैक्रेय करते हैं, महा उज्वल प्रज्वल वेदना वेदते हुए विचरते हैं इस का विस्तार पूर्वक विवेचन जीवाभिगम सूत्र से जानना ॥ ११ ॥ कोई साधु भिक्षा की गवेषणा में आलस्यवाला व रसगृद्धि बनकर आधाकर्मादि दोष युक्त आहार को निरवद्य मान कर भोगवे और उस की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना यदि वह काल कर जावे तो वह आराधक नहीं होता है और आलोचनादि करके काल करे तो आराधक होता है ऐसे ही मोल लिया हुवा, बनाया हुवा, स्थापकर

रचित क० अरण्य भ० भक्त दु० दुर्भिक्ष भ० भक्त ब० बद्दल का भ० भक्त गि० रोगीका भ० भक्त से० शैय्यान्तरपिंड रा० राज्यपिंड अ० आधाकर्म आ० अनवद्य ब० बहुत अ० मनुष्य की म० बीच में भा० कहकर स० स्वयमेव प० भोगवकर भ० होवे से० उसको त० उसके ठा० स्थान की अ० है त० उस को आ० आराधना ए० यह त० तैसे जा० यावत् रा० राजपिंड आ० आधाकर्म अ० अनवद्य अ० परस्पर को

कते काल करेइ अत्थितस्स आराहणा ॥ एएण गमेणं नेयव्व कीयकड ठविय, रइय, कंतारभत्त, दुब्भिक्खभत्तं, वद्दलियाभत्त, गिलाण भत्तं, सेज्जायरपिंड, रायपिंड, आहाकम्म अणवज्जेत्ति बहुजणमज्झे भासित्ता, सयमेव परिभुंजित्ता भवइ, सेणं तस्स ठाणस्स जाव अत्थि तस्स आराहणा ॥ एयपि तहचेव जाव रायपिंड ॥ आहाकम्मं

रखा हुवा, तैयार किया हुवा, अरण्य में आते हुवे लोगों के लिये बनाया हुवा, दुष्काल में दीन पुरुषों के लिये बनाया हुवा, बद्दल के लिये बनाया हुवा, रोगियों के लिये बनाया हुवा, शैय्यांतरपिंड व राज पिंड ऐसे दोष युक्त आहार को बहुत मनुष्य की बीच में यह अनवद्य है ऐसा कहकर स्वयं ही ऐसा आहार भोगवे फीर उस की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना यदि काल करे तो वह विराधक होता है और आलोचनादि करके काल करे सो आराधक होता है आधाकर्मादि दोष युक्त आहार को यह आहार निरवद्य है ऐसा कहकर परस्पर साधुओं को देवे, वैसे ही आधाकर्मादि दोष युक्त आहार को

अ० देकर भ० होवे त० उस को ए० यह त० तैसे जा० यावत् रा० राजपिंड आ० आधाकर्म अ० अनवद्य ब० बहुत ज० मनुष्य की म० बीच में प० कहने वाला भ० होने से० उस को त० उस की अ० है आ० आराधना जा० यावत् रा० राजपिंड ॥ १२ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्याय भं० भगवन् स० अपने ग० गण को अ० अग्लानपने स० ग्रहण करते अ० अग्लानपने उ० उपग्रहण करते क० कितने भ० भव में सि० सीझे जा० यावत अ० अंतकरे गो० गौतम अ० कित-

अणवज्जेत्ति अण्णमण्णस्स अणुपदावेइत्ता भवइ, सेणं तस्स एय तहचेव जाव रायपिंड, आहाकम्म ण अणवज्जेत्ति, बहुजणमज्झे पन्नावइत्ता भवइ, सेण तस्स जाव अत्थि आराहणा जाव रायपिंड ॥ १२ ॥ आयरिय उवज्झाएणं भंते ! सविसयंसि गणं अगिलाए संगिण्हमाणे, अगिलाए उवगिण्हमाणे, कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंत करेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ, अत्थेगइए दोच्चेण

सभा में निरवद्य आहार है ऐसा कहे इस तरह विपरीत प्ररूपना से ज्ञानादिक की विराधना होती है ऐसा करनेवाला यदि आलोचना प्रतिक्रमण करके काल करे तो आराधक होता है और आलोचना किये विना काल करे तो विराधक होता है, ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! आचार्य उपाध्याय अपने गणको अग्लानपने अंगीकार करते, आदरदेते कितने भव में सीझे, बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ?

नेक ते० उसी भ० भवग्रहण में सि० सीझे अ० कितनेक दो० दूसरे भ० भव में सिं० सीझे त० तीसरा पु० फीर भ० भवग्रहण ना० अतिक्रमे नहीं ॥ १३ ॥ जे० जो भं० भगवन् प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को क० कैसा क० कर्म क० करते हैं गो० गौतम जे० जो प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को त० तैसा क० कर्म क० करते हैं ज० जहां अ० आते हैं त० वहां प० अनुभवते हैं त०

भवग्गहणेण सिज्झइ, तचं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १३ ॥ जेणं भंते ! परं अलिएणं असब्भूएणं अब्भक्खाणेणंअब्भक्खाइ तस्सणं कहप्पगारा कम्मा कज्जति? गोयमा ! जेणं परं अलिएणं असतएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ, तस्सणं तहप्पगाराचेव कम्मा कज्जति । जत्थेवणं अभिसमागच्छइ तत्थेवणं पडिसंवेदेइ तओ

अहो गौतम ! कितनेक उसी भव में सीझे, कितनेक दूसरे भव में सीझे, परतु तीसरा भव नहीं उल्लंघते हैं अर्थात् तीसरे भव में निश्चयही सीझते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जो कोई अन्य महात्मा पुरुषको द्वेषबुद्धि से असद्भूत, असत्य कलंक चढावे तो उन को कैसे कर्मों का बंध होवे ? अहो गौतम ! जो पुरुष जैसा कलंक अन्य को चढाता है उस को वैसे ही कर्मों का बंध होता है और जहां वह कर्म किया होगा वहांही उदय में आवेगा और वहां ही वेदेगा अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह पांचवा शतक का छठा

उस प० पीछे वे० वेदते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ ✵ ✵

प० परमाणु पो० पुद्गल ए० चलता है वे० विशेष चलता है जा० यावत् त० उस २ भा० भाव में प० परिणमता है गो० गौतम सि० क्वचित् ए० चलता है वे० विशेष चलता है त० उस २ भा० भाव

से पच्छा वेदेइ सेव भते भतेत्ति ॥ पचमसयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥५॥६॥ +

परमाणुपोग्गलेण भते ! एयइ वेयइ जाव तत भाव परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ वेयइ जाव परिणमइ, सिय णो एयइ जाव णो परिणमइ, दुपदेसिएण भते ! खधे एयइ जाव परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ जाव परिणमइ सिय नो एयइ जाव नो परिणमइ, सिय देसेएयइ देसे णोएयइ ! तिपएसिएण भते ! खधे एयइ ?

उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ✵ ✵ ✵

छठे उद्देशे के अंत में निर्जरा का कथन किया है वह निर्जरा कर्मों को चलाती है इसलिये पुद्गलों का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! पूरण गलन स्वभाव वाले निरवयव रूप परमाणु पुद्गल क्या चलते हैं, विशेष चलते हैं यावत् उन २ भावों में परिणमते हैं ? अहो गौतम ! क्वचित् चलते हैं यावत् क्वचित् उन २ भावों में परिणमते हैं और क्वचित् नहीं चलते हैं यावत् उन २ भावों में नहीं परिणमते हैं अहो भगवन् ! क्या द्वि प्रदेशात्मक स्कंध चलता है यावत् उन २ भावों में परिणमता है ? अहो गौतम ! द्वि

नेक से० उसी भ० भवग्रहण में सि० सीझे अ० कितनेक दो० दूसरे भ० भव में सि० सीझे त० तीसरा पु० फीर भ० भवग्रहण ना० अतिक्रमे नहीं ॥ १२ ॥ जे० जो भं० भगवन् प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को क० कैसा क० कर्म क० करते हैं गो० गौतम जे० जो प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को त० तैसा क० कर्म क० करते हैं ज० जहां अ० आते हैं त० वहां प० अनुभवते हैं त०

भवग्गहणेण सिज्झइ, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ ॥ १२ ॥ जेण भंते ! पर अलिएण असब्भूएणं अब्भक्खाणेणअब्भक्खाइ तस्सण कहप्पगारा कम्मा कज्जंति? गोयमा ! जेण पर अलिएण असतएण अब्भक्खाणेण अब्भक्खाइ, तस्सण तहप्प-गाराचेव कम्मा कज्जति । जत्थेवण अभिसमागच्छइ तत्थेवण पडिसवेदेइ तओ

अहो गौतम ! कितनेक उसी भव में सीझे, कितनेक दूसरे भव में सीझे, परन्तु तीसरा भव नहीं उल्लंघते हैं अर्थात् तीसरे भव में निश्चयही सीझते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जो कोई अन्य महात्मा पुरुषको द्वेषबुद्धि से असद्भूत, असत्य कलंक चढावे तो उन को कैसे कर्मों का बंध होवे ? अहो गौतम ! जो पुरुष जैसा कलंक अन्य को लगाता है उस को वैसे ही कर्मों का बंध होता है और जहां वह कर्म किया होगा वहांही उदय में आवेगा और वहां ही वेदेगा अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह पांचवा शतक का छठा

उस प० पीछे वे० वेदते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ * *

प० परमाणु पो० पुद्गल ए० चलता है वे० विशेष चलता है जा० यावत् त० उस २ भा० भाव में प० परिणमता है गो० गौतम सि० क्वचित् ए० चलता है वे० विशेष चलता है त० उस २ भा० भाव

से पच्छा वेदेइ सेव भते भतेत्ति ॥ पचमसयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥५॥६॥ +

परमाणुपोग्गलेण भते ! एयइ वेयइ जाव तत भाव परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ वेयइ जाव परिणमइ, सिय णो एयइ जाव णो परिणमइ, दुपदेसिएण भते ! खधे एयइ जाव परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ जाव परिणमइ सिय नो एयइ जाव नो परिणमइ, सिय देसेएयइ देसे णोएयइ ! तिपएसिएण भते ! खधे एयइ ?

उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ६ ॥ * * *

छठे उद्देशे के अंत में निर्जरा का कथन किया है वह निर्जरा कर्मों को चलाती है इसलिये पुद्गलों का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! पूरण गलन स्वभाव वाले निरवयव रूप परमाणु पुद्गल क्या चलते हैं, विशेष चलते हैं यावत् उन २ भावों में परिणमते हैं ? अहो गौतम ! क्वचित् चलते हैं यावत् क्वचित् उन २ भावों में परिणमते हैं और क्वचित् नहीं चलते हैं यावत् उन २ भावों में नहीं परिणमते हैं अहो भगवन् ! क्या द्वि प्रदेशात्मक स्कंध चलता है यावत् उन २ भावों में परिणमता है ? अहो गौतम ! द्वि

नेक ते० उसी भ० भवग्रहण में सि० सीझे अ० कितनेक दो० दूसरे भ० भव में सिं० सीझे त० तीसरा पु० फीर भ० भवग्रहण ना० अतिक्रमे नहीं ॥ १३ ॥ जे० जो भ० भगवन् प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को क० कैसा क० कर्म क० करते हैं गो० गौतम जे० जो प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को त० तैसा क० कर्म क० करते हैं ज० जहां अ० आते हैं त० वहां प० अनुभवते हैं त०

भवग्गहणेण सिज्झइ, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ ॥ १३ ॥ जेणं भंते ! पर अलिएण असब्भूएणं अब्भक्खाणेणअब्भक्खाइ तस्सण कहप्पगारा कम्मा कज्जति ? गोयमा ! जेण परं अलिएणं असतएण अब्भक्खाणेण अब्भक्खाइ, तस्सण तहप्पगाराचेव कम्मा कज्जति । जत्थेवणं अभिसमागच्छइ तत्थेवण पडिसवेदेइ तओ

अहो गौतम ! कितनेक उसी भव में सीझे, कितनेक दूसरे भव में सीझे, परतु तीसरा भव नहीं उल्लंघते हैं अर्थात् तीसरे भव में निश्चयही सीझते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जो कोई अन्य महात्मा पुरुषको द्वेषबुद्धि से असद्भूत, असत्य कलंक चढावे तो उन को कैसे कर्मों का बंध होवे ? अहो गौतम ! जो पुरुष जैसा कलंक अन्य को लगाता है उस को वैसे ही कर्मों का बंध होता है और जहां वह कर्म किया होगा वहांही उदय में आवेगा और वहां ही वेदेगा अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह पांचवा शतक का छठा

स्कंध च० चार प्रदेशी स्कंध ज० जैसे च० चार प्रदेशीस्कंध त० तैसे प० पांच प्रदेशी जा० यावत् त० तैसे अ० अनत प्रदेशी ॥ १ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं०भगवन् अ० असिधारा खु० क्षुर की धारा उ० अवगाहे ह० हां उ० अवगाहे से० अथ त० वहां छि० छेदावे भि० भेदावे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ नो० नहीं त० तहां स० शस्त्र क० जावे ए० ऐसे जा० यावत् अ० असख्यात प्रदेशात्मक अ० अनत प्रदेश वाला भ० भगवन् खं० स्कंध अ० खड्ग की धारा खु० क्षुरकी धारा को उ०

दसा एयति, ॥ जहा चउप्पदेसिओ तहा पचप्पदेसिओ जाव तहा अणत पएसिओ ॥ १ ॥ परमाणु पोग्गलेण भते ! असिधारवा खुरधारवा, उग्गाहेज्जा ? हंता उग्गाहेज्जा ॥ सेण तत्थ छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थ कमइ, एव जाव असखेज्जपएसिओ ॥ अणत पएसिएण भते !

देश से चले व बहुत देश से चले नहीं जैसे चार प्रदेशात्मक स्कंध का कहा वैसे ही पांच, छ, सात, आठ नव, दश सख्यात असख्यात व अनत प्रदेशात्मक स्कंध का जानना॥१॥ अहो भगवन् ! क्या परमाणुपुद्गल खड्ग की धारा व क्षुर (उस्तरे) की धारा को अवगाह अर्थात् उस को लगे ? हां गौतम ! परमाणु पुद्गल खड्ग की धारा व क्षुरकी धारा नीचे आसकते हैं अहो भगवन् ! क्या वह परमाणु पुद्गल छेदाता भेदाता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्योंकि उसमें शस्त्र सक्रमण नहीं कर सकता है

को प० परिणमता है सि०क्वचित् णो०नहीं ए०चलता है जा०यावत् नो०नहीं त० उस २ मा०भाव में प० परिणमता है सि० क्वचित् दे० देश से ए० चलता है जा० यावत् प० परिणमता है दु० द्विप्रदेशी

गोयमा ! सिय एयइ, सिय नो एयइ, सिय देसे एयइ नो देसे एयइ, सिय देसे एयइ नो देसा एयति, सिय देसा एयति नो देसे एयइ, । चउप्पएसिएण भंते ! खंधे एयइ ? गोयमा ! सिय एयइ, सिय नो एयइ, सिय देसे एयइ णो देसे एयइ, सिय देसे एयइ णो देसा एयति सिय देसा एयति नो देसे एयइ, सिय देसा एयति नो

प्रदेशी स्कंध क्वचित् चलता है, यावत् क्वचित् उन २ भावोंमें परिणमता है, वैसे ही क्वचित् नहीं चलता है यावत् उन २ भावों में नहीं परिणमता है, और क्वचित् देश से चलता है व देश से नहीं चलता है अहो भगवन् ! तीन प्रदेशात्मक स्कंध क्या चलता है यावत् उन २ भावों में परिणमता है ? अहो गौतम! तीन प्रदेशात्मक स्कंध में पांच विकल्प कहे हुए हैं १ क्वचित् चले २ क्वचित् नचले ३ क्वचित् देश से चले व नचले ४ क्वचित् देश से एक चले दो नहीं चले और ५ क्वचित् देश से दो चले एक नहीं चले अहो भगवन् ! चार प्रदेशात्मक स्कंध क्या चले ? अहो गौतम ! चार प्रदेशात्मक स्कंध में छ विकल्प होते हैं १ क्वचित् कंपे २ क्वचित् नहीं कंपे ३ क्वचित् देशसे कंपे व कंपे नहीं ४ क्वचित् एक देश से चले बहुत देश से चले नहीं ५ क्वचित् बहुत देश से चले एक देश से चले नहीं और ६ क्वचित् बहुत

आवे त० तहाँ वि० विनाश आ० प्राप्त होवे उ० पानी का आ० आवर्त उ० पानी का विं० बिंदु उ० अवगाह कर से० अथ त० तहाँ प० नष्टहावे ॥ २ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल किं० क्या स० अर्ध सहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित उ० अथवा अ० अर्ध रहित अ० मध्य रहित अ० प्रदेश रहित गो० गौतम अ० अर्ध रहित अ० मध्य रहित अ० प्रदेश रहित नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं स० प्रदेश सहित दु० द्विप्रदेशी स्कंध किं० क्या गो० गौतम अ० अर्ध सहित अ० मध्य रहित

गच्छेज्जा, तहिं विणिहाय मावज्जेज्जा, उदगावत्तवा, उदगबिंदुवा उग्गाहेज्जा, सेण तत्थ परियावज्जेज्जा, ॥ २ ॥ परमाणु पोग्गलेण भंते ! किं सअड्ढे समज्झे सपएसे उदाहु अणड्ढे, अमज्झे, अपएसे ? गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे, नोसअड्ढे, नो समज्झे नो सपएसे। दुपएसिएण भंते ! खंधे किं सअड्ढे, समज्झे, सपएसे उदाहु

है ऐसे ही गंगा महानदी के प्रवाह में कितनेक अनंत प्रदेशी स्कंध नष्ट होते हैं कितनेक नष्ट नहीं होते हैं कितनेक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध पानी के आवर्त को या पानी के बिन्दु को अवगाह कर रहते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या परमाणु पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, प्रदेश व मध्य रहित है ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित नहीं है. क्यों की परमाणु पुद्गल अत्यंत ही सूक्ष्म है और उस का विभाग नहीं होसकता है अहो भगवन् ! द्वि

अवगाहे हं० हां उ० अवगाहे से० अथ त० तहां छि० छेदावे भि० भेदावे गो० गौतम अ० कितनेक छि० छेदावे भि० भेदावे अ० कितनेक नो० नहीं छि० छेदावे नो० नहीं भि० भेदावे ए० ऐसे अ० अग्नि काय की म० मध्य में त० तहां झि० जले भा० कहना ए० ऐसे पु० पुष्कल सवर्तक म० महामेघ की म० मध्य में त० तहां उ० द्रवित होना ए० ऐसे ग० गंगा मं० महानदी का प० प्रतिश्रोत ह० शीघ्र आ०

खधे असिधारंवा खुरधारंवा उग्गाहेज्जा ? हंता उग्गाहेज्जा । सेणं तत्थ छिज्जेज्जवा ? गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्जवा नो भिज्जेज्जवा भिज्जेजवा॥ एवं अगणिकायस्स मज्झ मज्झेण तहिं णवर झियाएज्ज भाणियव्व एव पुक्खलसवट्टस्स, महामेहस्स मज्झ मज्झेण तहिं उज्जोसिया, एव गंगाए महाणईए पडिसोय हव्वमा-

जैसे एक परमाणु शस्त्र से अछिन्न अभिन्न है वैसे ही द्वीप्रदेशी स्कंध यावत् असंख्यात, असंख्यात प्रदेशी स्कंध भी अछिन्न अभिन्न होते हैं और अनंत प्रदेशात्मक स्कंध क्वचित् छेदाते भेदाते हैं और क्वचित् छेदाते भेदाते नहीं हैं जैसे शस्त्र से छेदाते भेदाते का आलापक कहा वैसे ही अग्निकाय में जलनेका जानना अर्थात् कितनेक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध अग्निकाय में जलते हैं व कितनेक नहीं जलते हैं ऐसे ही पुष्कलावर्त महामेघ में कितनेक अनंत प्रदेशी स्कंध भींजते हैं और कितनेक नहीं भींजते

सहित पु० पृच्छा गो० गौतम सि० क्वचित् स० अर्ध सहित अ० मध्य रहित स० प्रदेश सहित सि० क्वचित् अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० जैसे स० सख्यात प्रदेशात्मक त० तैसे अ० असख्यात प्रदेशात्मक अ० अनंत प्रदेशात्मक ॥ ३ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं० भगवन् प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शे हुवे किं० क्या दे० देश से दे० देश को फु० स्पर्शता है दे० देश से दे०

खधे किं सअड्ढे पुच्छा ? गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, सिय अणड्ढे स-मज्झे, सपएसे, जहा सखेज्जपएसिओ, तहा असखेज्ज पएसिओवि, अणत पएसिओवि ॥ ३ ॥ परमाणु पोग्गलेण भते ! परमाणु पुग्गल फुस-माणे किं देसेण देस फुसइ, देसेण देसे फुसइ, देसेण सव्वफुसइ, देसेहिं देस

वगैरह जो विषम राशि है उस का तीन प्रदेशी स्कंध जैसे जानना अहो भगवन् ! सख्यात प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है ? अहो गौतम ! सख्यात प्रदेशी स्कंध क्वचित् अर्ध सहित मध्य रहित व प्रदेश सहित है और क्वचित् अर्ध रहित, मध्य सहित व प्रदेश सहित है; क्योंकि इस में सम विषम दोनों राशि होती हैं संख्यात प्रदेशी स्कंध जैसे असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशी स्कंध का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल का स्पर्श करते क्या १ अपने एक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे २ अपने एक देस से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ३ अपने एक

स० प्रदेश सहित णो० नहीं अ० अर्ध रहित णो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित ति० तीन प्रदेश की पु० पृच्छा खं० स्कंध गो० गौतम अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं अ० मध्य रहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित जैसे दु० द्विप्रदेशी त० तैसे जे० जो स० सम ते० वे भा० कहना जे० जो वि० विषम ते० वे ज० जैसे ति० तीन प्रदेशात्मक त० तैसे भा० कहना स० सख्यातप्रदेशात्मक भं० भगवन् खं० स्कंध किं० क्या स० अर्ध

अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, नो अणड्ढे, नो समज्झे, नो अपएसिए । तिपएसिएण भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे ना सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे जहा दुपएसिओ तहा जेसमा ते भाणियव्वा जे विसमा ते जहा तिपएसिओ, तहा भाणियव्वो ॥ ❀ ॥ सखेज्जपएसिएण भंते !

प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है या अर्ध मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! द्वि प्रदेशी स्कंध दो परमाणु का बनाहुआ होने से अर्ध सहित है, मध्य रहित है, व प्रदेश सहित है अहो भगवन् ! तीन प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है, अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशी स्कंध में तीन प्रदेश होने से अर्ध नहीं हैं परंतु, मध्य व प्रदेश रहे हुवे हैं इसी तरह आगे २-४-६ ८ वगैरह जो सम राशि है उस को द्वि प्रदेशी स्कंध जैसे कहना और ३-५-७ ९

सहित पु० पृच्छा गो० गौतम सि० क्वचित् स० अर्ध सहित अ० मध्य रहित स० प्रदेश सहित सि० क्वचित् अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० जैसे स० सख्यात प्रदेशात्मक त० तैसे अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० अनंत प्रदेशात्मक ॥ १ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं० भगवन् प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शे हुवे किं० क्या दे० देश से दे० देश को फु० स्पर्शता है दे० देश से दे०

खंधे किं सअड्ढे पुच्छा ? गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे, सपएसे, जहा संखेज्जपएसिओ, तहा असंखेज्ज पएसिओवि, अणंत पएसिओवि ॥ ३ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! परमाणु पुग्गल फुसमाणे किं देसेण देस फुसइ, देसेण देसे फुसइ, देसेण सव्वफुसइ, देसेहिं देस

वगैरह जो विषम राशि है उस का तीन प्रदेशी स्कंध जैसे जानना अहो भगवन् ! सख्यात प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्वचित् अर्ध सहित मध्य रहित व प्रदेश सहित है और क्वचित् अर्ध रहित, मध्य सहित व प्रदेश सहित है; क्योंकि इस में सम विषम दोनों राशि होती हैं संख्यात प्रदेशी स्कंध जैसे असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशी स्कंध का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल का स्पर्श करते क्या १ अपने एक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे २ अपने एक देश से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ३ अपने एक

स० प्रदेश सहित णो० नहीं अ० अर्ध रहित णो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित ति० तीन प्रदेश की पु० पृच्छा खं० स्कंध गो० गौतम अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं अ० मध्य रहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित जैसे दु० द्विप्रदेशी त० तैसे जे० जो स० सम ते० त्रे भा० कहना जे० जो वि० विषम ते० वे ज० जैसे ति० तीन प्रदेशात्मक त० तैसे भा० कहना स० सख्यातप्रदेशात्मक भं० भगवन् खं० स्कंध किं० क्या स० अर्ध

अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, नो अणड्ढे, नो समज्झे, नो अपएसिए । तिपएसिएण भते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे जहा दुपएसिओ तहा जेसमा ते भाणियव्वा जे विसमा ते जहा तिपएसिओ, तहा भाणियव्वो ॥ * ॥ सखेज्जपएसिएण भते !

प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है या अर्ध मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! द्वि प्रदेशी स्कंध दो परमाणु का बनाहुआ होने से अर्ध सहित है, मध्य रहित है, व प्रदेश सहित है अहो भगवन् ! तीन प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशी स्कंध में तीन प्रदेश होने से अर्ध नहीं है परंतु मध्य व प्रदेश रहे हुवे हैं इसी तरह आगे २-४-६ ८ वगैरह जो सम राशि है उस को द्वि प्रदेशी स्कंध जैसे कहना और ३-५-७ ९

सहित पु० पृच्छा गो० गौतम सि० क्वचित् स० अर्ध सहित अ० मध्य रहित स० प्रदेश सहित सि० क्वचित् अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० जैसे स० संख्यात प्रदेशात्मक त० तैसे अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० अनंत प्रदेशात्मक ॥ ३ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भ० भगवन् प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शे हुवे किं० क्या दे० देश से दे० देश को फु० स्पर्शता है दे० देश से दे०

खंधे किं सअड्ढे पुच्छा ? गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे, सपएसे, जहा सखेज्जपएसिओ, तहा असखेज्ज पएसिओवि, अणत पएसिओवि ॥ ३ ॥ परमाणु पोग्गलेण भते ! परमाणु पुग्गल फुसमाणे किं देसेण देस फुसइ, देसेण देसे फुसइ, देसेण सव्वफुसइ, देसेहिं देस

वगैरह जो विषम राशि है उस का तीन प्रदेशी स्कंध जैसे जानना अहो भगवन् ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्वचित् अर्ध सहित मध्य रहित व प्रदेश सहित है और क्वचित् अर्ध रहित, मध्य सहित व प्रदेश सहित है; क्योंकि इस में सम विषम दोनों राशि होवी हैं संख्यात प्रदेशी स्कंध जैसे असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशी स्कंध का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल का स्पर्श करते क्या १ अपने एक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे २ अपने एक देश से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ३ अपने एक

स० प्रदेश सहित णो० नहीं म० अर्ध रहित णो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित ति० तीन प्रदेश की पु० पृच्छा खं० स्कंध गो० गौतम अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहि नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं अ० मध्य रहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित जैसे दु० द्विप्रदेशी त० तैसे जे० जो स० सम ते० वे मा० कहना जे० जो वि० विषम ते० वे ज० जैसे ति० तीन प्रदेशा त्मक त० तैसे मा० कहना स० सख्यातप्रदेशात्मक भं० भगवन् स० स्कंध किं० क्या स० अर्ध

अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, नो अणड्ढे, नो समज्झे, नो अपएसिए । तिपएसिएणं भते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सप- एसे नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे जहा दुपएसिओ तहा जेसमा ते भाणियव्वा जे विसमा ते जहा तिपएसिओ, तहा भाणियव्वो ॥ * ॥ सखेज्जपएसिएण भते !

प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है या अर्ध मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! द्वि प्रदेशी स्कंध दो परमाणु का बनाहुआ होने से अर्ध सहित है, मध्य रहित है, व प्रदेश सहित है अहो भगवन् ! तीन प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशी स्कंध में तीन प्रदेश होने से अर्ध नहीं हैं परंतु, मध्य व प्रदेश रहे हुवे हैं इसी तरह आगे २-४-६ ८ वगैरह जो सम राशि है उस को द्वि प्रदेशी स्कंध जैसे कहना और ३-५-७ ९

सहित पु० पृच्छा गो० गौतम सि० क्वचित् स० अर्ध सहित अ० मध्य रहित स० प्रदेश सहित सि० क्वचित् अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० जैसे स० संख्यात प्रदेशात्मक त० तैसे अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० अनंत प्रदेशात्मक ॥ २ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं० भगवन् प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शे हुवे किं० क्या दे० देश से दे० देश को फु० स्पर्शता है दे० देश से दे०

खधे किं सअड्ढे पुच्छा ? गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे, सपएसे, जहा संखेज्जपएसिओ, तहा असंखेज्ज पएसिओवि, अणंत पएसिओवि ॥ २ ॥ परमाणु पोग्गलेण भंते ! परमाणु पुग्गलं फुसमाणे किं देसेण देस फुसइ, देसेण देसे फुसइ, देसेण सव्वफुसइ, देसेहिं देस

वगैरह जो विषम राशि है उस का तीन प्रदेशी स्कंध जैसे जानना अहो भगवन् ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्वचित् अर्ध सहित मध्य रहित व प्रदेश सहित है और क्वचित् अर्ध रहित, मध्य सहित व प्रदेश सहित है; क्योंकि इस में सम विषम दोनों राशि होती हैं संख्यात प्रदेशी स्कंध जैसे असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशी स्कंध का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल का स्पर्श करते क्या १ अपने एक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे २ अपने एक देश से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ३ अपने एक

स० प्रदेश सहित णो० नहीं अ० अर्ध रहित णो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित ति० तीन प्रदेश की पु० पृच्छा खं० स्कंध गो० गौतम अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं अ० मध्य रहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित जैसे दु० द्विप्रदेशी त० तैसे जे० जो स० सम ते० वे भा० कहना जे० जो वि० विषम ते० वे ज० जैसे ति० तीन प्रदेशात्मक त० तैसे भा० कहना स० संख्यातप्रदेशात्मक भं० भगवन् स० स्कंध किं० क्या स० अर्ध

अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, नो अणड्ढे, नो समज्झे, नो अपएसिए। तिपएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे जहा दुपएसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा जे विसमा ते जहा तिपएसिओ, तहा भाणियव्वो ॥ * ॥ संखेज्जपएसिएणं भंते !

प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है या अर्ध मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! द्वि प्रदेशी स्कंध दो परमाणु का बनाहुआ होने से अर्ध सहित है, मध्य रहित है, व प्रदेश सहित है अहो भगवन् ! तीन प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशी स्कंध में तीन प्रदेश होने से अर्ध नहीं हैं परंतु, मध्य व प्रदेश रहे हुवे हैं इसी तरह आगे २-४-६ ८ वगैरह जो सम राशि है उस को द्वि प्रदेशी स्कंध जैसे कहना और ३ ५-७ ९

स्पर्शावे जा० यावत् अ० अनंत मदेश दु० द्विपदेशात्मक भं० भगवन् ख० स्कन्ध प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शता हुवा पु० पृच्छा त० तीसरा न० नववा से फु० स्पर्शे दु० द्विपदेशात्मक दु० दो मदेशी को फु० स्पर्शते प० प्रथम त० तीसरा स० सातवा न० नववे से फु० स्पर्शे दु० दो मदेशी ति० तीन मदेश को फु० स्पर्शते आ० आदि के प० पीछे के ती० तीन से म० मध्य के ती० तीन प० प्रतिषेध करना दु०

णिप्पच्छिमएहिं तिहिं फुसइ, जहा परमाणुपोग्गले तिपएसिय फुसाविओ एव फुसावेयव्वो, जाव अणत पएसिओ। दुपएसिएण भते! खंधे परमाणु पोग्गल फुसमाणे पुच्छा तइय नवमेहिं फुसइ, दुपएसिओ दुपएसिय फुसमाणो पढमतइय सत्तमनवमेहिं फुसइ, दुपएसिओ तिपएसिय फुसमाणो आदिल्लएहिं य पच्छिल्लएहिं

पुद्गल द्वि मदेशी स्कंध को स्पर्शते सर्व से एक देश को व सर्व से सर्व को स्पर्शे ऐसे सातवे व नववे दो भांगे पाते हैं परमाणु पुद्गल तीन मदेशी स्कन्ध को स्पर्शते पीछे के तीन भांगे पाते हैं १ यदि वह तीन मदेशात्मक स्कंध तीन मदेश में रहा हुवा होवे तो उस स्कंध के एक मदेश को वह परमाणु सर्वांग से स्पर्शता है २ यदि उस त्रिमदेशी स्कन्ध के दो परमाणु एक मदेश पर रहा हुवा होवे तो सर्वांग से अनेक देशों को स्पर्शे ३ यदि उक्त तीन मदेशी स्कंध परमाणु की सूक्ष्मता से एकही परमाणु पर रहे तब सर्वांग से सर्वांग को स्पर्शे ऐसे अत्यके तीन भांगे पाते हैं जैसे तीन मदेश को परमाणु पुद्गल स्पर्शता है वैसे ही चार

देशोंको फु० स्पर्शता है दे० देश से स० सब को फु० स्पर्शता है दे० देशोंसे स० सब से गो० गौतम नो० नहीं दे० देश से दे० देशकों फु० स्पर्शे प० परमाणु पो० पुद्गल दु० द्विप्रदेशी को फु० स्पर्शते स० सात न० नव मे फु० स्पर्शे प० परमाणु पो० पुद्गल ति० तीन प्रदेश को फु० स्पर्शते नि० अन्त्य ति० तीन से फु० स्पर्शे ज० जैसे प० परमाणु पो० पुद्गल ति० तीन प्रदेश को फु० स्पर्शा हुआ ए० ऐसे फु०

फुसइ, देसेहिं देसे फुसइ, देसेहिं सव्वं फुसइ, सव्वेण देसं फुसइ, सव्वेण देसे फुसइ, सव्वेण सव्वं फुसइ ? गोयमा ! नो देसेण देसं फुसइ, णो देसेण देसे फुसइ, णो देसेणं सव्वं फुसइ, नो देसेहिं देसं फुसइ, नो देसेहिं देसे फुसइ, नो देसेहिं सव्वं फुसइ, नो सव्वेणं देसं फुसइ, णो सव्वेण देसे फुसइ, सव्वेण सव्वं फुसइ। परमाणु पोग्गल दुपएसियं फुसमाणे सत्त नवमेहिं फुसइ, परमाणुपोग्गले तिपएसिय फुसमाणे

देश मे दूसरे के सर्वांग को स्पर्शे ४ अपने अनेक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे ५ अपने अनेक देश से दूसरे के अनेक देशों का स्पर्शे ६ अपने अनेक देश से दूसरे के सर्वांग को स्पर्शे ७ अपने सर्वांग मे दूसरे के एक देश को स्पर्शे ८ अपने सर्वांग से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे और ९ अपने सर्वांग से दूसरे के क्या सर्वांग को स्पर्शे ? अहो गौतम ! इन भांग में से भांग नववां सर्वांग से सर्वांग को स्पर्शे यही भांगा मील सकता है. परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल को स्पर्शने में शेष आठ भांगे नहीं हैं परमाणु

तीन प्रदेशात्मक ति० तीन प्रदेश को फु० स्पर्शते स० सब ठा० स्थान में फु० स्पर्शते ज० जैसे ति० तीन प्रदेशात्मक को फु० स्पर्शा हुवा ए० ऐसे ति० तीन प्रदेशात्मक जा० यावत् अ० अनंत प्रदेशात्मक की साथ स० जोडना ज० जैसे ति० तीन प्रदेशात्मक ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनंत प्रदेशात्मक भा० कहना ॥ ८ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भ० भगवन् का० काल से के० कितना हो० होता है गो० गौतम ज०

सिय फुसमाणो सव्वेसुवि ठाणेसु फुसइ । जहा तिपएसिओ तिपएसिय फुसाविओ, एव तिपएसिओ जाव अणतपएसिएण संजोएयव्वो, जहा तिपएसिओ एव जाव अणतपएसिओ भाणियव्वो ॥ ४ ॥ परमाणु पोग्गलेण भंते ! कालओ केवचिरहोइ? गोयमा ! जहण्णेणं एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज कालं, एव जाव अणत पएसि-

तीन प्रदेशी स्कंध परमाणु पुद्गल को स्पर्शते हुवे तीसरा, छट्ठा व नववां भागा को स्पर्शे तीन प्रदेशी स्कंध द्वि प्रदेशी स्कंध को स्पर्शते हुए पहिला, तीसरा, चौथा, छट्ठा, सातवां व नववां को स्पर्शे और तीन प्रदेशी तीन प्रदेशी को स्पर्शते हुवे सब भांगे को स्पर्शे जैसे तीन प्रदेशी का कहा वैसे ही चार, पांच यावत संख्यात असंख्यात व अनंत प्रदेशी का जानना और जैसे तीन प्रदेशी स्कंध मे परमाणु पुद्गल यावत् अनंत प्रदेशी के भांगे कहे वैसे ही चार, पांच यावत अनंत प्रदेशी की साथ जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गलपने कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय

द्विप्रदेशात्मक ज० जैसे ति० तीन प्रदेश फु० स्पर्शाया हुवा ए० ऐसे फु० स्पर्शना जा० यावत् अ० अनंत प्रदेशात्मक ति० तीन प्रदेशात्मक भं० भगवन् ख० स्कंध प० परमाणु पो० पुद्गल फु० स्पर्शते हुवे पु० पृच्छा त० तीसरा छ० छट्ठा न० नववे से फु० स्पर्शता है ति० तीन प्रदेशात्मक दु० दो प्रदेश को फु० स्पर्शते प० प्रथम त० तीसरा च० चौथा छ० छट्ठा स० सातवा न० नववे से फु० स्पर्शता है ति०

तिहिं फुसइ, मज्झिमएहिं तिहिंवा पडिसेहेयव्व दुपएसिओ जहा तिपएसिय फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणतपएसिय तिपएसिएण भंते ! खंधे परमाणु पोग्गलं फुसमाणे पुच्छा तइयछट्ठणवमेहिं फुसइ ॥ तिपएसिओ दुपएसिय फुसमाणो पढमएण तइयएण चउत्थछट्ठसत्तमनवमेहिं फुसइ ॥ तिपएसिओ तिपए-

पांच यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत प्रदेश तक जानना अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल को स्पर्शते द्वि प्रदेशी स्कंध में कितने भांगे पावे ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल को स्पर्शते हुवे द्विप्रदेशी स्कंध में तीसरा व नवा भांगा पावे अर्थात् अपने देश से परमाणु पुद्गल के सर्वांग को स्पर्शे अथवा अपने सर्वांग से उस के सर्वांग को स्पर्शे द्वि प्रदेशी द्वि प्रदेशी को स्पर्शते हुए पहिला, तीसरा, सातवा, व नवा भांगा को स्पर्शे, तीन प्रदेशी को स्पर्शते हुए पहिले के तीन व पीछे के तीन ऐसे भांगे को स्पर्शे और इसी तरह चार, पांच यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत प्रदेशी को स्पर्शते हुवे द्विप्रदेशी स्कंध में उक्त छ भांग पावे

नि० कपन रहित ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असख्यात काल ए० एक गु० गुन काला भ० भगवन् पो० पुद्गल का० काल मे के० कितना भ० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असख्यात काल ए० ऐसे व० वर्ण ग० गंध र० रस फा० स्पर्श जा० यावत्

गाढे एग गुणकालएण भते ! पोग्गले कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण असखेज्ज काल एव जाव अणत गुणकालए, एव वण्ण गधरस फास जाव अणत लुक्खे, एव सुहुम परिणए पोग्गल, एव बादर परिणए पोग्गले सद्दपरिणएण भते ! पोग्गले कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा !

की व्याख्या नहीं होती है एक आकाश प्रदेश पर रहनेवाला परमाणु पुद्गल कम्पन रहित जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्यात काल तक रहता है ऐसे ही असख्यात प्रदेशावगाढ परमाणु पुद्गल का जानना अहो भगवन् ! एक गुन काला पुद्गल जघन्य कितना कालतक रहता है ? अहो गौतम ! एक गुन काला पुद्गल जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात कालतक रहता है जैसे एक गुन काला का कहा वैसे ही अनत गुन काला तक जानना और ऐसे ही शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श में अनत प्रदेशी रूक्ष पुद्गल तक का जानना ऐसे ही सूक्ष्म परिणत पुद्गल व बादर परिणत पुद्गल का जानना अहो भगवन् ! शब्द से परिणमे हुए पुद्गलों कितने काल तक शब्दपने रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य

जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनंत प्रदेशात्मक ए० ये प० प्रदेशावगाढी भं० भगवन् पो० पुद्गल से० कंपन सहित त० उस ठा० स्थान में अ० अन्य ठा० स्थान में का० काल से के० कितना हो० होता है गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट आ० आवलिका का अ० असंख्यातवा भा० भाग ए० ऐसे जा० यावत् अ० असंख्यात प्रदेशावगाढ

ओ॥ एगपएसोगाढेण भंते! पोग्गले सेए तम्मिवा ठाणे अण्णम्मिवा ठाणे कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्ण एगं समय उक्कोसे आवलियाए असंखेज्जइ भाग, एवं जाव असंखेज्ज पएसोगाढे॥ एग पएसोगाढेणं भंते! पोग्गले निरेए कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेण एगं समय उक्कोसेण असंखेज्जकाल एवं जाव असंखेज्ज पएसो

उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रहे तत्पश्चात् वह एक रूप में नहीं रह सकता है वैसे ही द्वि प्रदेशी स्कंध तीन प्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी स्कंध जघन्य एक समय तक रहता है उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रहता है अहो भगवन्! एक प्रदेशावगाढ (एक आकाश प्रदेश पर रहा हुवा) पुद्गल कंपन सहित अ-भिन्न स्थान में अथवा अन्य स्थान में कितना काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य एक समय तक रहे उत्कृष्ट आवलिका के असंख्यातवे भाग तक रहे जैसे एक प्रदेशावगाढ पुद्गल का कहा वैसे ही अ-संख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलतक का जानना आकाश के अनंत प्रदेश नहीं होने से अनंत प्रदेशावगाढ पुद्गल

मदेशी ॥ ६ ॥ ए० एक प० मदेशावगाढ में० भगवन् पु० पुद्गल का से० कपन सहित अं० आंतरा का० काल से के० कितना हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल

अणतकाल एव जाव अणतपएसिओ ॥ ६ ॥ एगपएसोगाढस्सण भते ! पोग्गलस्स सेयस्स अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्ण एग समय, उक्कोसेण असखेज्जंकालं ॥ एव जाव असखेज्जपएसोगाढे एग पएसोगाढस्सण भते ! निरेयस्स अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइ भाग एव जाव असखेज्जपएसागाढे ॥ वण्ण गध रस फास सुहुमपरिणयाण, एएसिं जचेव अतरपि भाणियव्व ॥ सद परिणयस्सण भते ! पोग्गलस्स अतर कालओ केवचिरहोइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण

समय उत्कृष्ट अनत काल का अंतर पडता है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! एक मदेशावगाही चालित पुद्गलों का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्यात कालका और ऐसे ही असख्यात मदेशात्मक का जानना एक मदेशावगाही स्थिर पुद्गलों का अहो भगवन् ! कितना अंतर ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असख्यात वां भाग का जानना ऐसे ही असंख्यात

अ० अनंत सु० सूक्ष्म ए० ऐसे बा० बादर परिणत पो० पुद्गल स० शब्द प० परिणत भं० भगवन् पो० पुद्गल का० काल से क० कितना हो० होवे शेष पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल का भ० भगवन् अं० आंतरा का० काल से के० कितना हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असख्यात काल दु० द्विप्रदेशी भं० भगवन् ख० स्कंध का ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनत

जहण्णेणं एग समय उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइभाग, असद्दपरिणए जहा एक गुणकालए ॥ ५ ॥ परमाणु पोग्गलस्सण भते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण असखेज्जकालं ॥ दुपएसियस्सण भते ! खंधस्स अतर कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेणं

एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असख्यातवा भाग तक रहते हैं अशब्दपरिणत पुद्गलोंको एक गुन काला जैसे कहना॥५॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल का अंतर[1] कितनेकाल का कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट असंख्यात काल का द्विप्रदेशी स्कंध यावत् अनत प्रदेशी स्कध का जघन्य एक

[1] एक परमाणु पुद्गल जितने समय में अन्य पुद्गलों की साथ मीलकर फीर उस से विच्छिन्न बनकर एक ही परमाणु पुद्गल बन जावे उतने समय का अंतर कहते हैं

मदेशी ॥ ६ ॥ ए० एक प० मदेशावगाढ भं० भगवन् पु० पुद्गल का से० कंपन सहित अ० अंतरा का० काल से के० कितना हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल

अणतकाल एव जाव अणतपएसिओ ॥ ६ ॥ एगपएसोगाढस्सण भते ! पोग्गलस्स सेयस्स अतरं कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्ण एग समय, उक्कोसेण असंखेज्जकाल ॥ एवं जाव असखेज्जपएसोगाढे एग पएसोगाढस्सण भते ! निरेयस्स अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइ भाग एव जाव असखेज्जपएसोगाढे ॥ वण्ण गध रस फास सुहुमपरिणयाणं, एएसिं जचेव अतरपि भाणियव्वं ॥ सद्द परिणयस्सण भते ! पोग्गलस्स अतर कालओ केवचिरहोइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेण

समय उत्कृष्ट अनत काल का अंतर पडता है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! एक मदेशावगाही चालित पुद्गलों का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्यात कालका और ऐसे ही असख्यात मदेशात्मक का जानना एक मदेशावगाही स्थिर पुद्गलों का अहो भगवन् ! कितना अंतर ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असख्यात वा भाग का जानना ऐसे ही असंख्यात

अ० अनंत खु० स्कंध ए० ऐसे बा० बादर परिणत पो० पुद्गल स० शब्द प० परिणत भ० भगवन् पो० पुद्गल का० काल से क० कितना हो० होवे शेष पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल का भ० भगवन् अं० आंतरा का० काल से के० कितना हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल दु० द्विप्रदेशी भं० भगवन् ख० स्कंध का ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनंत

जहण्णेणं एग समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभाग, असद्दपरिणए जहा एक गुणकालए ॥ ५ ॥ परमाणु पोग्गलस्सण भंते ! अंतर कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जकालं ॥ दुपएसियस्सणं भंते ! खंधस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं

एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यातवा भाग तक रहते हैं अशब्दपरिणत पुद्गलोंको एक गुन काला जैसे कहना॥५॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल का अंतर[1] कितनेकाल का कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट असंख्यात काल का द्विप्रदेशी स्कंध यावत् अनंत प्रदेशी स्कंध का जघन्य एक

१ एक परमाणु पुद्गल जितने समय में अन्य पुद्गलों की साथ मीलकर फीर उस से विच्छिन्न बनकर एक ही परमाणु पुद्गल बन जावे उतने समय को अंतर कहते हैं.

गौतम स० सब से थो० थोडे खे० क्षेत्र स्थान का आयुष्य ओ० अवगाहना स्थान का आयुष्य अ० असख्यात गुना द० द्रव्य स्थान असख्यात गुना भा० भाव स्थान असंख्यात गुने ॥ ८ ॥ ने० नारकी किं० क्या सा० आरभ सहित स० परिग्रह सहित उ० अथवा अ० अनारभी अ० अपरिग्रही गो० गौतम ने० नारकी सा० सारभी स० सपरिग्रही नो० नहीं अ० अनारमी अ० अपरिग्रही से० अथ के० कैसे गो०

उयस्स कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए ओगाहणट्ठाणाउए असखेज्जगुणे, दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे भावट्ठाणाउए असखेज्जगुणे ॥ खेत्तोगाहणदव्वे भावट्ठाणाउयच अप्पबहु खेत्ते सव्वत्थोवे सेसाट्ठाणा असखेज्जगुणा ॥ ८ ॥ नेरइयाण भते ! किं सारभा सपरिग्गहा, उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा ॥ सेकेणट्ठेण जाव

कौन किस से अल्प, बहुत व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा क्षेत्र स्थान का आयुष्य, उस से अवगाहना स्थान का आयुष्य असख्यात गुना, उस से द्रव्य स्थान का आयुष्य असख्यात गुना और उस से भाव स्थान का आयुष्य असख्यात गुना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी सारंभी सपरिग्रही है ? अथवा अनारंभी अपरिग्रही है ? अहो गौतम ! नारकी सारंभी व सपरिग्रही हैं अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी सारभी सपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! नारकी पृथ्वी काया का यावत् त्रस काया

शेष पूर्ववत ॥ ७ ॥ ए० कपने वाले द० द्रव्य स्थान का आ० आयुष्य खे० क्षेत्र स्थान आयुष्य ओ० अवगाहना स्थान आयुष्य भा० भाव स्थान आयुष्य में से क० कौन जा० यावत् वि० विशेषाधिक गो०

, असखेज्जकालं असद्दपरिणयस्सण भंते ! पोग्गलस्स अतरं कालओ केवचिरहोइ ? गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइ भाग, ॥ ७ ॥ एयस्स भंते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणा

प्रदेशावगाही स्थिर पुद्गल तक का जानना ऐसे ही वर्ण, गंध, रस स्पर्श व सूक्ष्म परिणत पुद्गलों का जानना शब्द परिणत का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्यात काल का और अशब्द परिणत पुद्गलों का जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असख्यात वा भाग का जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य स्थान की स्थिति, क्षेत्र स्थान की स्थिति अवगाहना स्थान की स्थिति, व भाव स्थान की स्थिति में से

---

१ द्रव्य सो पुद्गल द्रव्य, स्थान सो भेद और आयु सो स्थिति. अर्थात् पुद्गल परमाणु द्विप्रदेशी स्कंधादिक की स्थिति अथवा द्रव्यका उसी भव में अवस्थान रूप रहना सो द्रव्यस्थान आयुष्य

२ क्षेत्रस्थान आयुष्य एक आकाश प्रदेश में जितने कालतक पुद्गल अवस्थित पने रहे सो क्षेत्रस्थान आयुष्य

३ जितने आकाश प्रदेश में पुद्गल अवगाहे उतने ही पुद्गल अन्य स्थान अवगाहे इस की स्थिति सो अवगाहन स्थान आयुष्य और ४ भाव सो कालादि के भेद की स्थिति.

गौतम स० सब से थो० थोडे खें० क्षेत्र स्थान का आयुष्य ओ० अवगाहना स्थान का आयुष्य अ० असख्यात गुना द० द्रव्य स्थान असख्यात गुना भा० भाव स्थान असंख्यात गुने ॥ ८ ॥ ने० नारकी किं० क्या सा० आरम सहित स० परिग्रह सहित उ० अथवा अ० अनारंमी अ० अपरिग्रही गो० गौतम ने० नारकी सा० सारंभी स० सपरिग्रही नो० नहीं अ० अनारंमी अ० अपरिग्रही से० अथ के० कैसे गो०

उयस्स कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए ओगा-हणट्ठाणाउए असखेज्जगुणे, दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असखेज्जगुणे ॥ खेत्तोगाहणदव्वे भावट्ठाणाउयच अप्पवहुं खेत्ते सव्वत्थोवे सेसाट्ठाणा असखेज्जगुणा ॥ ८ ॥ नेरइयाण भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा, उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा ॥ सेकेणट्ठेणं जाव

कौन किस से अल्प, बहुत व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा क्षेत्र स्थान का आयुष्य, उस से अवगाहना स्थान का आयुष्य असख्यात गुना, उस से द्रव्य स्थान का आयुष्य असंख्यात गुना और उस से भाव स्थान का आयुष्य असख्यात गुना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी सारंभी सपरिग्रही हैं ? अथवा अनारंमी अपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! नारकी सारंभी व सपरिग्रही हैं अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी सारंभी सपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! नारकी पृथ्वी काया का यावत् त्रस काया

शेप पूर्ववत ॥ ७ ॥ ए० कपने वाले द० द्रव्य स्थान का आ० आयुष्य खे० क्षेत्र स्थान आयुष्य ओ० अवगाहना स्थान आयुष्य भा० भाव स्थान आयुष्य में से क० कौन जा० यावत् वि० विशेषाधिक गो०

, असखेज्जकालं असद्दपरिणयस्सणं भते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरहोइ ?

गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइ भाग, ॥ ७ ॥

एयस्स भते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणा

प्रदेशावगाही स्थिर पुद्गल वक का जानना ऐसे ही वर्ण, गंध, रस स्पर्श व सूक्ष्म परिणत पुद्गलों का जानना शब्द परिणत का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात काल का और अशब्द परिणत पुद्गलों का जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भाग का जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य स्थान की स्थिति, क्षेत्र स्थान की स्थिति अवगाहना स्थान की स्थिति, व भाव स्थान की स्थिति में से

---

१ द्रव्य सो पुद्गल द्रव्य, स्थान सो भेद और आयु सो स्थिति. अर्थात् पुद्गल परमाणु द्विप्रदेशी स्कन्धादिक की स्थिति अथवा द्रव्यका उसी भव में अवस्थान रूप रहना सो द्रव्यस्थान आयुष्य

२ क्षेत्रस्थान आयुष्य एक आकाश प्रदेश में जितने कालतक पुद्गल अवस्थित पने रहे सो क्षेत्रस्थान आयुष्य

३ जितने आकाश प्रदेश में पुद्गल अवगाहे उतने ही पुद्गल अन्य स्थान अवगाहे इस की स्थिति सो अवगाहन स्थान आयुष्य और ४ भाव सो कालादि के भेद की स्थिति.

मनुष्यणी ति० तिर्यंच ति० तिर्यंचणियों प० परिग्रहीत भ० होते हैं ए० ऐसे आ० आसन स० शयन भ० भांडे म० पात्र उ० उपकरण प० परिग्रहीत ए० एमे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार ॥१०॥ ए० एकेन्द्रिय ज० जैसे ने० नारकी ॥ ११ ॥ बे० द्विइन्द्रिय भ० भगवन् बा० बाह्य भ० भंड म० पात्र उ०

मणूसा मणूसीओ तिरिक्खजोणिया - तिरिक्खजोणिणीओ - परिग्गहियाओ भवति ॥ आसण सयण भंडमत्तोवगरणा परिग्गहिया भवति, सचित्ताचित्तमीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति से तेणट्ठेण तहेव, एवं जाव थणियकुमारा ॥ १० ॥ एगिंदिया जहा नेरइया ॥ ११ ॥ बेइंदियाण भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा तचेव जाव सरीरा परिग्गहिया भवति, बाहिरिया भंडमत्तोवगरणापरिग्गहिया

तिर्यंच, तिर्यंचणियों का परिग्रह होता है, वैसे ही आसन, शयन, भंड, पात्र, उपकरण, सचित्त अचित्त व मीश्र द्रव्य का परिग्रह होता है इसलिये वे सारंभी व सपरिग्रही कहलाते हैं ॥ १० ॥ एकेन्द्रिय का अधिकार नारकी जैसे कहना ॥११॥ द्वीन्द्रिय त्रीइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय को शरीर, कर्म व बाह्य भंड, पात्र उपकरण वैसे ही सचित्त अचित्त व मीश्र द्रव्यका परिग्रह होता है इसलिये वे सारंभी व सपरिग्रही कहाते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! क्या तिर्यंच पंचेंद्रिय सारंभी सपरिग्रही हैं ? अहो गौतम !

गोतम ने० नारकी पु० पृथ्वी काया का स० आरंभ करते हैं जा० यावत् त० त्रस काया का स० आरम करते हैं स० शरीर परिग्रही भ० होते हैं क० कर्म प० परिग्रह वाले भ० होते हैं स० सचित अ० अचित मी० मीश्र द० द्रव्य प० परिग्रहीत भ० होते हैं ते० इसलिये ॥ ९ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् भ० भवन के प० परिग्रहवाले दे० देव दे० देवियों म० मनुष्य म०

अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइयाण पुढविकाय समारभति, जाव तसकाय समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति सचित्ताचित्तमीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइं भवति । सेतेण तं चेव ॥१॥ असुरकुमाराणं भते ! कि सारभा पुच्छा ? गोयमा ! असुरकुमारा सारभा सपरिग्गहा नो अणारंभा अपरिग्गहा, से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराण पुढविकाय समारभति जाव, तसकाय समारभति ॥ सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति, भवणा परिग्गहिया भवति, देवा-देवीओ

का आरंभ करते हैं नारकी को शरीर, कर्म, सचित्त, अचित्त व मीश्र द्रव्य का परिग्रह होता है इसलिये वे सारंभी व सपरिग्रही हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के देव क्या सारंभी सपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! असुरकुमार सारंभी सपरिग्रही हैं क्योंकी असुरकुमार पृथ्वीकाय यावत् त्रसकाया का आरंभ करते हैं और उन को शरीर कर्म, भवन, देव, देवियों, मनुष्य, मनुष्याणियों,

कारी स्थान चि० क्यारे के आकार वाले स्थान अ० कूप त० तलाव द० द्रह न० नदी वा० वावि पु० पुष्करणी दी० लम्बी वावि गुं० चक्राकार वापि स० सरोवर स० सरोवर की १० पंक्ति स० छोटे तलावों की पंक्ति बि० बिल पंक्ति आ० खेलने का बगीचा उ० उद्यान का० वन व० वन व० वनखंड

ओ, परिग्गहियाओ भवति, आरामुज्जाण-काण्णा-वणा-वणखडा वणराईओ-परिग्गहिया-ओ भवति ॥ देवउल सभ-पव्व थूभ-खाइय- परिखाओ-परिग्गहियाओ भवति, पागार ट्टालग-चरिय-दार-गोपुर परिग्गहिया भवति, पासाय-घर-सरण लेण-आवण परिग्गहि-या भवति, सिंघाडग तिग चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह पहा-परिग्गहिया भवति,

तालाव, तालाव की पंक्ति, छोटे तालाव, छोटे तालाव की पंक्ति, बिलों की पंक्ति, आराम, उद्यान, कानन वन, वनखंड, वनराजी, देवालय, सभा स्थान, पर्वत, स्तूप, खाई, परिखा, कोट, कोट की उपर के अटारी, चरिका, द्वार, गोपुर, प्रासाद, गृह, तृणका गृह, आश्रय स्थान, दुकान शृंगाटकके आकार का मार्ग,

४ जिस में दंपत्यादि क्रीडा करते हैं उसे आराम कहते हैं ५ उत्सवों के प्रसंग में बहुत जनों को भोग्य पुष्पवाले वृक्षा जिस में रहे हुवे होवे ६ नगर की पास का वन ७ नगर से बहुत दूर का वन ८ एक जाति के वृक्ष समुहवाला स्थान ९ वृक्ष की पंक्ति १० ऊंचे नीचे सब स्थान सरिखी ११ गृह के कोट में हस्ती प्रमुख को आने का द्वार

उपकरण प० परिग्रहीत भ० होते हैं ए० ऐसे जा० यावत् च० चतुरिन्द्रिय ॥ १२ ॥ पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यच त० वैसे जा० यावत् क० कर्म परिग्रहीत टं० छेदेहुए पर्वत कू० शिखर से मु० मुण्ड पर्वत सि० सि० शिखर वाले पर्वत प० किंचित् नम हुवे ज० जल थ० स्थल बि० बिल गु० गुफा ले० उत्कीर्ण पर्वत गृह उ० पानी नीचे पडने का स्थान नि० झरने के स्थान चि० कीचड मीश्रित जल स्थान प० आनद

भवति सचित्ताचित्त जाव भवति, एव जाव चउरिंदिया ॥ १२ ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भते ! तचेव जाव कम्मापरिग्गाहिया भवति, टंका-कूडा सेला-सिहरी पब्भारा परिग्गाहिया भवति, जल थल-बिल गुह-लेणा परिग्गहिया भवति, उज्झर निज्झर चिल्लल पल्लल चिप्पिणा परिग्गाहिया भवति, अगड-तडाग दह-नदीओ-वावी पुक्खरिणी-दीहिया-गुजालिया सरा-सरपतियाओ सरसरपतियाओ, बिलपतिया-

तिर्यंच पंचेन्द्रिय पृथ्वीकाय यावत् त्रस काया का आरंभ करते हैं उन को शरीर, कर्म का परिग्रह रहाहुवा है टंके, कूटे, सेले, शिखर व किंचित नमे हुवे शिखर का परिग्रह रहा हुवा है जलस्थान, स्थलस्थान, बिल, गुफा व आश्रय स्थान का परिग्रह रहा हुवा है, पर्वत क झरणे, निर्झरणे, कीचड, मल्हादक स्थान व चपारे का परिग्रह रहा हुवा है कूवे, तालाव, नदी, वापि, पुष्करणी, दीर्घिका, चक्राकार वापि, बडे

१ छिन्नका टांके २ शिखपाणि हस्तपाणि व यनस्थानानिवा ३ मुण्ड पर्वत.

जैसे ति० तिर्यंच न० तैसे म० मनुष्य भा० कहना ॥ १४ ॥ वा० वाणव्यतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे भ० भवनवासी त० तैसे ने० जानना ॥ १५ ॥ प० पांच हे० हेतु प० कहा त० वह ज०

तिरिक्ख जोणिया तहा मणुस्सावि भाणियव्वा ॥ १४ ॥ वाणमतर जोइसिय वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा ॥ १५ ॥ पचहेऊ पण्णत्ता, तजहा-हेउ जाणइ, हेउ पासइ, हेउ बुज्झइ, हेउ अभिसमागच्छइ, हेउ छउमत्थमरण मरइ पचहेऊ पण्णत्ता तजहा हेउणा जाणइ जाव हेउणा छउमत्थमरण मरइ। पचहेऊ पण्णत्ता, तजहा-हेउ न जाणइ जाव हेउ अण्णाण मरण मरइ, पचहेऊ पण्णत्ता,

वाणव्यंतर, ज्योतिषी, व वैमानिक को भवनपति जैसे कहना ॥ १५ ॥ जो परिग्रही होते हैं वे छद्मस्थ होते हैं और छद्मस्थ हेतुसे जानते हैं इसलिये आगे हेतुका प्रश्न पुछते हैं हेतु पाच प्रकार के कहे हैं १ हेतु जानतेहैं अर्थात् साध्य निश्चयार्थ के लिये जानते हैं २ सामान्यता से जानते हैं ३ सम्यक प्रकारसे श्रद्धते हैं ४ हेतु में प्रवर्ते और ५ हेतु छद्मस्थ मरण मरे और पाच प्रकार के हेतु कहे हैं हेतु से जाने यावत् हेतु से छद्मस्थ मरण मरे पाच हेतु-हेतु को जाने नहीं यावत् हेतु अज्ञान मरण मरे पाच हेतुकहे-हेतुसे जाने नहीं यावत् हेतु से अज्ञान मरण मरे पांच अहेतु कहे हैं अहेतु जाने यावत् अहेतु केवली मरण मरे

सगड-रह जाण-जुग्ग गिल्लि थिल्लि-सीय संदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवति, लोही-लोहकडाह कडुच्छुया-परिग्गहिया भवति, भवणा परिग्गहिया भवति, देवा-देवीओ-मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया - तिरिक्खजोणिणीओ आसण-सयण-खम-भड-सचित्ता चित्त मीसयाइ दव्वाइं परिग्गहियाइं भवति, से तेणट्ठेण ॥ १२ ॥ जहा

वृ० वृक्ष की पंक्ति दे० देवालय स० सभा प० पर्वत थू० स्तूभ खा० खाइ प० उपर नीचे सम आकार वाली खाई पा० प्राकार अ० अटारी च० चरिका दा० द्वार गो० गोपुर पा० महेल घ० गृह स० शरण ले० स्थानक आ० दुकानों सि० शृंगाटक स्थान ति० तीन रस्ता मीले च० चौक च० चचर च० चतुर्मुख म० राजमार्ग प० मार्ग स० शकट र० रथ जा० यान ज० घोंसरु गि० अंबाडी थि० ऊटका पलाण सी० पालखी स० छोटी गाडी लो० तवा क० कडाई क० कुडछी भ० भवन शेष पूर्ववत् ॥ १३ ॥ ज०

तीन रस्ते मीले वैसा मार्ग, चौक, चत्वर, चार मुखवाला मार्ग, राज्यमार्ग, शकट, रथ, विमान धूंसरा, अंबाडी, उटका पलाण पालखी, छोटीगाडी, तवा, छोटीकडाइ, कुडछी, भुवन, देव, देवी, मनुष्य, मनुष्यणी, तिर्यंच, तिर्यंचणी, आसन, शयन, स्थभ, भंड, सचित्त, अचित्त, व मीश्र द्रव्यका परिग्रह रखा हुवा है इसीमे तिर्यंच सपरिग्रही व सारंभी कहाते हैं ॥ १३ ॥ ऐसे ही मनुष्य का जानना ॥ १४ ॥

अ० अर्थ सहित अ० मध्य रहित अ० मदेश रहित अ० आर्य ना नारद पुत्र अनगार नि० निर्ग्रन्थी

अज्जो तचेव ॥ तएण स नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार एव वयासी दव्वादेसणवि मे अज्जो सव्व पोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, णो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, खेत्ताएसेणवि, कालाएसेणवि भावाएसण ॥ तएण से नियाठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एव वयासी जइण अज्जो दव्वाएसेण सव्व पोग्गला सअड्ढा, समज्झा, सपएसा, णो अणड्ढा अमज्झा, अपएसा एव ते परमाणु पोग्गलेवि सअड्ढे समज्झे सपएसे णो अणड्ढे अमज्झे अपएसे जइण अज्जो खेत्ताएसेणवि सव्व पोग्गाला सअड्ढा समज्झा सपएसा जाव एव ते एग पएसेगाढेवि पोग्गले सअड्ढे, समज्झे, सपएसे ॥ जइण अज्जो कालाएसेण सव्व पोग्गला सअड्ढा

कि अहो आर्य ' द्रव्यादेश से, क्षेत्रा देश से, कालादेश से व भावादेश से सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित हैं फीर निर्ग्रन्थी पुत्र अनगारने नारद पुत्र अनगार को एसा कहा कि अहो आर्य ! जब द्रव्यादेश से सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले हैं तब परमाणु पुद्गल भी अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले होवे, जब क्षेत्रा देश से सब पुद्गल अर्ध मध्य व प्रदेश वाले हैं तब एक प्रदेशावगाही पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित होवे जब कालादेश से सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले हैं तब एक समय की स्थिति वाले

नारद पुत्र ते० तहां उ० आये उ० आकर ना० नारद पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहा स० सब पो० पुद्गल अ० आर्य किं० क्या स० अर्ध सहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित उ० अथवा

अणगारे जेणेव नारयपुत्ते अणगार तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, नारयपुत्त अणगार एव वयासी—सव्वे पोग्गलाचि अज्जो किं सअड्ढा समज्झा सपएसा उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपएसा ? अज्जोत्ति नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार एव वयासी सव्वे पोग्गला मे अज्जो सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा । तएण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एव वयासी जइण ते अज्जो ! सव्वे पोग्गला सअड्ढा समज्झा, सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, किं दव्वादेसेण अज्जो ! सव्व पोग्गला सअड्ढा तहेव चेव, कालादेसेण तचेव, भावादेसेण

हुए विचरते थे ॥ २ ॥ उस समय में निर्ग्रन्थी पुत्र अनगार नारदपुत्र अनगार की पास आकर ऐसा बोले की अहो आर्य ! सब पुद्गलों क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित हैं अथवा अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित हैं? नारद पुत्र अनगार निर्ग्रन्थी पुत्र अनगार को ऐसा बोले कि अहो आर्य ! सब पुद्गल मेरे अभिप्राय से अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित हैं उस समय में निर्ग्रन्थी पुत्र अनगारने नारद पुत्र को कहा कि अहो आर्य ! जब तुम्हारे अभिप्राय से सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित हैं तब क्या वे द्रव्यादेश से अर्ध मध्य व प्रदेश सहित हैं, क्षेत्रादेशसे, काला देश से या भावादेश से हैं ? तब नारद पुत्रने उत्तर दिया

रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० यदि दे० देवानुप्रिय न० नहीं गि० खेदित होवे प० कहने

ए ॥ ३ ॥ तएण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एव वयासी दव्वा
एसेणवि अज्जो ! सव्व पोग्गला सपएसावि अपएसावि अणता, खेत्ताएसेणवि एव चेव,
कालाएसेणवि भावाएसेणवि एव चेव। जे दव्वओ अपएसे, से खेत्तओ नियमा अप-

से इस का अर्थ सुनने को इच्छता हूं ॥ ३ ॥ तब निर्ग्रन्थी पुत्र अनगारने नारदपुत्र को ऐसा कहा कि अहो आर्य ! द्रव्य, क्षेत्र, काल व भावादेश से सब पुद्गलों प्रदेश सहित भी हैं व प्रदेश रहित हैं क्योंकि इसमें द्विप्रदेशात्मकादि स्कंध व परमाणु पुद्गल रहे हुवे हैं और वे अनंत हैं क्षेत्रादेश से आकाश के द्विप्रदेशी स्कंध को अवगाहकर रहनेवाले पुद्गल सप्रदेशी हैं और एक आकाश प्रदेशावगाही पुद्गल अप्रदेशी हैं काल से दो तीन वगैरह समय की स्थितिवाले पुद्गल सप्रदेशी हैं और एक समय की स्थिति वाले पुद्गल अप्रदेशी हैं, भाव से दो तीन वगैरह गुनकाले द्रव्य सप्रदेशी हैं और एक गुनकाला द्रव्य अप्रदेशी है, जो द्रव्य से अप्रदेशी होते हैं वे क्षेत्र से निश्चयही अप्रदेशी होते हैं क्यों की द्रव्य से अप्रदेशी परमाणु पुद्गल एक प्रदेशावगाही होता है काल से क्वचित् सप्रदेशी होता है, क्वचित् अप्रदेशी होता है, यदि वह परमाणु एक समय की स्थितिवाला होवे तो अप्रदेशी और अनेक समय की स्थिति वाला होवे तो सप्रदेशी भाव से भी क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी हैं क्यों कि जो एक गुनकालादि है वह

पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० बोले स० सब पो पुद्गल मे० मरे मत में अ० आर्य स० अर्ध

समज्झा सपएसा, एव तेएग समय ठिइएवि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे तचेव॥ जइण अज्जो मावाएसेण सव्व पोग्गला सअड्ढ एव एक गुणकालएवि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे तंचेव॥ अहते एव न भवति तो ज वयासि दव्वाएसेणवि सव्व पोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा नोअणड्ढा अमज्झा अपएसा एव खेत्ताएसेणवि, कालाएसेणवि, भावाएसेणवि तण्ण मिच्छा ॥ तएणसे नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्त अणगार एव वयासी नो खलु एव देवाणुप्पिया एयमट्ठ जाणामो पासामो ॥ जइण देवाणुप्पिया नो गिलायति परिकहित्तए त इच्छामिण देवाणुप्पियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जाणित्ता-

पुद्गल भी अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले होवे और जब भावादेशसे सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले हैं तब एक गुन काला पुद्गल भी अर्ध, मध्य व प्रदेश वाला होवे परतु ऐसा नहीं है इसलिये द्रव्यादेश से क्षेत्रादेश से, कालादेश से व भावा देशसे सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले हैं ऐसा जो तुम कहते हो वह मिथ्या है तब नारद पुत्र अनगार निर्ग्रन्थी पुत्र अनगार को ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! मैं इसका अर्थ नहीं जानता हू इसलिये यदि आपको कहने में किसी प्रकारका खेद न होवे तो मैं आपकी पास

सहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० यदि दे० देवानुप्रिय न० नहीं गि० खेदित होवे प० कहने

ए ॥ ३ ॥ तएण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एत्र वयासी दव्वा

एसेणात्रि अज्जो ! सव्व पोग्गला सपएसात्रि अपएसात्रि अणता, खेत्ताएसेणत्रि एत्र चेत्र,

कालाएसेणवि भावाएसेणात्रि एत्र चेत्र । जे दव्वओ अपएसे, से खेत्तओ नियमा अप-

से इस का अर्थ सुनने को इच्छता हू ॥ ३ ॥ तब निर्ग्रन्थी पुत्र अनगारने नारदपुत्र को ऐसा कहा कि अहो आर्य ! द्रव्य, क्षेत्र, काल व भावादेश स सब पुद्गलों प्रदेश सहित भी हैं व प्रदेश रहित हैं क्योंकि इसमें द्विप्रदेशात्मकादि स्कंध व परमाणु पुद्गल रहे हुवे हैं और वे अनत हैं क्षेत्रादेश से आकाश के द्विप्रदेशी स्कंध को अवगाहकर रहनेवाले पुद्गल सप्रदेशी है और एक आकाश प्रदेशावगाही पुद्गल अप्रदेशी हैं काल से दो तीन वगैरह समय की स्थितिवाले पुद्गल सप्रदेशी हैं और एक समय की स्थिति वाले पुद्गल अप्रदेशी हैं, भाव से दो तीन वगैरह गुनकाले द्रव्य सप्रदेशी हैं और एक गुनकाला द्रव्य अप्रदेशी है, जो द्रव्य से अप्रदेशी होते हैं वे क्षेत्र से निश्चयही अप्रदेशी होते हैं क्यों की द्रव्य से अप्रदेशी परमाणु पुद्गल एक प्रदेशावगाही होता है काल से क्वचित् सप्रदेशी होता है, क्वचित् अप्रदेशी होता है, यदि वह परमाणु एक समय की स्थितिवाला होवे तो अप्रदेशी और अनेक समय की स्थिति वाला होवे तो सप्रदेशी भाव से भी क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी हैं क्यों कि जो एक गुनकालादि है वह

को त० इसलिये इ० इच्छता हू दे० देवानुप्रिय की भ० पास ए० यह सो० सुनकर के नि० अवधारकर

एसे, कालओ सिय सपएसे सिय अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे ॥
जेखेत्तओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भाव
ओ भयणाए, जहा खेत्तओ एव कालओ, भावओ, ॥ जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ
सिय सपएसे सिय अपएसे, एव कालओ भावओवि, ॥ जे खेत्तओ सपएसे से

अप्रदेशी और अनेक गुनकालादि है वह सप्रदेशी है जो क्षेत्रसे अप्रदेशी है-एक आकाशप्रदेशावगाही है वह द्रव्यसे क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी है, क्योंकि एक परमाणु भी एक आकाशप्रदेशाव गाही होता है और अनेक परमाणु भी एक आकाश प्रदेशावगाही होता है वैसे ही क्षेत्र से अप्रदेशी पुद्गलों की काल से व भाव से अप्रदेशी की भजना रहती है, क्यों कि एक आकाश प्रदेशावगाही पुद्गल एक समय व अनेक समय की स्थिति वाला होवे वैसे ही एक गुनकाला व अनेक गुनकाला भी होवे जैसे क्षेत्र का आलापक कहा वैसे ही काल व भावका जानना जो द्रव्य से सप्रदेशी है वह क्षेत्र से क्वचित् सप्रदेशी व अप्रदेशी होता है क्योंकि द्विप्रदेशात्मकादि स्कंध एक प्रदेश व अनेक प्रदेशावगाही हो सकते हैं वैसे ही वे काल व भाव से भी क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी हैं जो क्षेत्र से सप्रदेशी हैं वे द्रव्य से नियमा सप्रदेशी होते हैं क्योंकि अनेक प्रदेशावगाही अनेक पुद्गलों होते हैं काल

दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए, जहा दव्वओ तहा कालओ, भावओवि॥४॥एएसिणं भंते ! पोग्गलाण दव्वादेसेण खेत्तादेसेण,कालादेसेण, भावादेसेणं सपएसाणं अपएसाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ? नारय-पुत्ता! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेण अपएसा, कालादेसेण अपएसा, असखेज्जगुणा दव्वादेसेण अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेण अपएसा असखेजगुणा, खेत्तादेसेण चेव सपएसा असखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, कालादेसेण सपए-

व भाव में भजना होती है अर्थात् क्वचित् सप्रदेशी है व क्वचित् अप्रदेशी है जैसे द्रव्य का आला-पक कहा वैसे ही काल व भाव का जानना अर्थात् जो काल से सप्रदेशी है वह द्रव्य क्षेत्र व भाव से सप्रदेशी अप्रदेशी है और जो भाव से सप्रदेशी है वह द्रव्य क्षेत्र व काल से सप्रदेशी अप्रदेशी दोनों है॥४॥ अहो पूज्य ! इन द्रव्यादेश, क्षेत्रादेश, कालादेश व भावादेश से सप्रदेश व अप्रदेश में कौन किस से अल्प, बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो नारद पुत्र ! सब से थोडे भावादेश से अप्रदेशी, कालादेशसे अप्रदेशी असख्यात गुने, द्रव्यादेश से अप्रदेशी असख्यात गुने, क्षेत्रादेश से अप्रदेशी असंख्यात गुने, क्षेत्रादेश से सप्रदेशी असख्यात गुने, द्रव्यादेश से सप्रदेशी विशेषाधिक, कालादेशसे सप्रदेशी विशेषाधिक,

को व० इसलिये इ० इच्छता हू दे० देवानुप्रिय की अ० पास ए० यह सो० सुनकर के नि० अवधारकर

एसे, कालओ सिय सपएसे सिय अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे ॥ जेखेत्तओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भाव ओ भयणाए, जहा खेत्तओ एव कालओ, भावओ, ॥ जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ सिय सपएसे सिय अपएसे, एव कालओ भावओवि, ॥ जे खेत्तओ सपएसे से

प्रदेशी और अनेक गुनकालादि है वह सप्रदेशी है जो क्षेत्रसे अप्रदेशी है-एक आकाशप्रदेशावगाही है वह द्रव्यसे क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी है, क्योंकि एक परमाणु भी एक आकाशप्रदेशाव गाही होता है और अनेक परमाणु भी एक आकाश प्रदेशावगाही होता है वैसे ही क्षेत्र से अप्रदेशी पुद्गलों की काल में व भाव से अप्रदेशी की भजना रहती है, क्यों कि एक आकाश प्रदेशावगाही पुद्गल एक समय व अनेक समय की स्थिति वाला होवे वैसे ही एक गुनकाला व अनेक गुनकाला भी होवे जैसे क्षेत्र का आलापक कहा वैसे ही काल व भावका जानना जो द्रव्य से सप्रदेशी है वह क्षेत्र से क्वचित् सप्रदेशी व अप्रदेशी होता है क्योंकि द्विप्रदेशात्मकादि स्कंध एक प्रदेश व अनेक प्रदेशावगाही हो सकते हैं वैसे ही वे काल व भाव से भी क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी हैं जो क्षेत्र से सप्रदेशी हैं वे द्रव्य से नियमा सप्रदेशी होते हैं क्योंकि अनेक प्रदेशावगाही अनेक पुद्गलों होते हैं काल

दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए, जहा दव्वओ तहा कालओ, भावओवि॥४॥एएसिणं भंते ! पोग्गलाण दव्वादेसेण खेत्तादेसेण,कालादेसेण, भावादेसेणं सपएसाणं अपएसाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ? नारय-पुत्ता! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेण अपएसा, कालादेसेण अपएसा, असखेज्जगुणा दव्वादेसेण अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेण अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेण चेव सपएसा असखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, कालादेसेण सपए-

व भाव में भजना होती है अर्थात् क्वचित् समदेशी है व क्वचित् अमदेशी है जैसे द्रव्य का आलापक कहा वैसे ही काल व भाव का जानना अर्थात् जो काल से समदेशी है वह द्रव्य क्षेत्र व भाव से समदेशी अमदेशी है और जो भाव से समदेशी है वह द्रव्य क्षेत्र व काल से समदेशी अमदेशी दोनों है॥ ४॥ अहो पूज्य ! इन द्रव्यादेश, क्षेत्रादेश, कालादेश व भावादेश से समदेश व अमदेश में कौन किस से अल्प, बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो नारद पुत्र ! सब से थोडे भावादेश से अमदेशी, कालादेशसे अमदेशी असख्यात गुने, द्रव्यादेश से अमदेशी असंख्यात गुने, क्षेत्रादेश से अमदेशी असख्यात गुने, क्षेत्रादेश से समदेशी असंख्यात गुने, द्रव्यादेश से समदेशी विशेषाधिक, कालादेशसे समदेशी विशेषाधिक,

ने० नारकी के० कितना काल व० बढते हैं गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट आ० आवलिका के अ० असख्यात भाग ए० ऐसे हा० हीन होवे हैं णे० नारकी के० कितने काल अ० अवस्थित गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट च० चौबीस मुहूर्त ए० ऐसे स० सातों पु० पृथ्वी में र० रत्नप्रभा में अ० अडतालीस मु० मुहूर्त स० शर्कर प्रभा च० चौदह रा० रात्रिदिन वा० वालु प्रभा मे मा० मास पं० पंकप्रभा में दो० दोमास धू० धूम्रप्रभा में च० चार मास त० तमप्रभा

गावुति ? गोयमा ! जहण्ण एग समय, उक्कोसेण आवालियाए असखेज्जइभाग, एव हायतिवा । नेरइयाण भते ! केवइय काल अवाट्ठिया ? गोयमा ! जंहण्ण एग समय उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता, एव सत्तसु विपुढविसु वावुति हायंति भाणियव्व णवर अवाट्ठिएसु इम णाणत्त त॰रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीस मुहुत्ता सक्करप्पभाए चउद्दस राइदि-

अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भागतक नारकी बढते रहते हैं उतने ही कालतक हीन होते रहते हैं अहो भगवन् ! नारकी कितने काल तक अवस्थित रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त सातों नारकी में वृद्धि व हीन होने का उक्त कथनानुसार जानना परतु अवस्थित में रत्न प्रभा पृथ्वी में नारकी ४८ मुहूर्ततक अवस्थित रहते हैं, शर्करप्रभा में चौदह रात्रिदिन, वालुप्रभा में एक मास, पंकप्रभा में दोमास, धूम्रप्रभा में चार मास, तमप्रभामें आठ मास

में अ० आठमास त० तमतमा में ब० बारह मास ॥ ११ ॥ अ० असुर कुमार व० बढते हैं हा० हीन होते हैं ज० जैसे ने० नारकी अ० अवस्थित ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट अ० अडतालीस मु० मुहूर्त ए० ऐसे द० दश प्रकार के भी ॥१२॥ पूर्ववत ॥ १३ ॥ बे० द्विइन्द्रिय व० बढते हैं हा० हीन होते हैं त० वैसे अ० अवस्थित ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट दो० दो अ० अंतर्मुहूर्त ए० ऐसे

याइ वालुयप्पमाए मास, पकप्पमाए दोमासा, धूमप्पमाए चत्तारिमासा तमाए अट्ठमासा तमतमाए बारसमासा ॥ ११ ॥ असुरकुमाराबि वड्ढति हायति जहा नेरइया, अवट्ठिया जहण्ण एग समय उक्कोस अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, एव दसविहावि ॥ १२ ॥ एगिंदिया वड्ढतिवि, हायतिवि, अवट्ठियावि एएहिंतिहिंवि जहण्णेण एक्क समय उक्कोस आवलियाए असखेज्ज भाग ॥ १३ ॥ बेइंदिया वड्ढति हायति तहेव । अवट्ठिया

तक, तमतमाप्रभा में बारह मास तक नारकी अवस्थित रहते हैं ॥ ११ ॥ असुरकुमार में वृद्धि होना व हीन होना नारकी जैसे जानना परंतु उनका जघन्य एकसमय उत्कृष्ट ४८ मुहूर्त तक अवस्थित काल जानना ऐसे ही दश प्रकार के भुवनपतिका जानना ॥ १२ ॥ एकेन्द्रिय का वृद्धि, हीन व अवस्थित रहने का काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यातवा भाग का है ॥ १३ ॥ बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का वृद्धि होना व हीन होना पहिले जैसे कहना और अवस्थित काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट

ने० नारकी के० कितना काल व० बढते हैं गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट आ० आवलिका के अ० असंख्यात भाग ए० ऐसे हा० हीन होते हैं णे० नारकी के० कितने काल अ० अव-स्थित गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट च० चौबीस मुहूर्त ए० ऐसे स० सातों पु० पृथ्वी में र० रत्नप्रभा में अ० अडतालीस मु० मुहूर्त स० सर्कर प्रभा च० चौदह रा० रात्रिदिन वा० वालु प्रभा मे मा० मास पं० पंकप्रभा में दो० दोमास धू० धूम्रप्रभा में च० चार मास त० तमप्रभा

वड्ढति ? गोयमा ! जहण्ण एग समय, उक्कोसेण आवालियाए असखेज्जइभाग, एव हायतिवा । नेरइयाण भते ! केवइय काल अवाट्ठिया ? गोयमा ! जहण्ण एग समय उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता, एव सत्तसु विपुढविसु वाड्ढति हायंति भाणियव्व णवर अवाट्ठिएसु इम णाणत्त त० रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीस मुहुत्ता सक्करप्पभाए चउद्दस राइदि-

अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भागतक नारकी बढते रहते हैं उतने ही कालतक हीन होते रहते हैं अहो भगवन् ! नारकी कितने काल तक अवस्थित रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त सातों नारकी में वृद्धि व हीन होने का वक्त कथनानुसार जानना परतु अवस्थित में रत्न प्रभा पृथ्वी में नारकी ४८ मुहूर्ततक अवस्थित रहते हैं, सर्करप्रभा में चौदह रात्रिदिन, वालुप्रभा में एक मास, पंकप्रभा में दोमास, धूम्रप्रभा में चार मास, तमप्रभामें आठ मास

सोचव पुच्छा ? गोयमा ! णवणउइ जोयण सहस्साइ सराय बारसुरचरे जोयणसए एगावण्णच एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठि भागच एग सत्तहा छेत्ता एगे चुण्णिया भाग आयामविक्खभेण तिण्णि जोयण सय सहस्साइं पण्णरस जोयण सहस्साइ तिण्णिय एगूणवीसे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण ॥ अब्भतर तच्चेण जाव पुच्छा ? गोयमा ! णवणउइ जोयण सहस्साइ सत्तय पचासीए जोयणसए इगतालीसच एग सट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठि भागच एग सत्तहा छेत्ता दोण्णि चुण्णियाभाए आयामविक्खेभेण ॥ तिण्णिय जोयणसयसहस्साइ पण्णरस जोयण सहस्साइ, पचय एगूणपण्णे जोयणसए, किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण ॥ एव खलु एएण उवाएण णिक्खममाणे चदे जाव सकममाणे २ यावत्तारि २ जोयणाइ एगावण्ण-

आभ्यतर दूसरा मडल की पृच्छा, अहो गौतम ! ९९७२२ योजन और सातिये एक चूर्णिया भाग का लम्बा चौडा है और उस की परिधि ३१५३१९ योजन से कुच्छ अधिक की है आभ्यतर तीसरे मंडल की पृच्छा, अहो गौतम ! ९९७८५ $\frac{४१}{६१}$ और सातिये दो चूर्णिये भाग का लम्बा चौडा है इस की परिधि ३१५५४९ योजन से कुच्छ अधिक की है इस तरह निकलता हुवा चद्र यावत् सक्रम करता हुव ७२ $\frac{५१}{६१}$ योजन और सातिया एक चूर्णिया भाग एक २ मडल पर बढाते हुवे और दोसोतीस२

च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागंच एग सत्ताहाछेत्ता एग चुण्णियाभाग एगमेगे मडले विक्खभ वुड्ढि अभिवड्ढेमाणे २ दोदो तीसाइ जोयणसयाइ परिरय वुड्ढि अभिवड्ढमाणे २ सव्वबाहिरमडल उवसकमित्ता चार चरइ ॥ सव्वबाहिरएण भते ! चदमडले केवइय आयामविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ता ? गोयमा ! एग जोयणसयसहस्सं छच्चसट्ठे जोयणसए आयाम विक्खभेणं, तिण्णि जोयणसय सहस्साइ अट्ठारस जोयण सहस्साइ तिण्णिय पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेण॥ बाहिराणतरं पुच्छा ? गोयमा ! एग जोयणसयसहस्स पंचसत्तासीए जोयणसए णवय एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागंच एग सत्तहाछेत्ता छचुण्णियाभाए आयाम विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ अट्ठारस जोयण सहस्साइ पचसीइ जोयणाइच परिक्खे-

योजन और सातिया एक चूर्णिया भाग एक २ मंडल पर बढाते हुए २ और दोसो तीस २ योजन परिधि में बढाते हुए सब से बाहिर के मंडल पर जाकर चाल चलता है अहो भगवन् ! चन्द्रमा का सब से बाहिरका चन्द्र मंडल कितना लम्बा चौडा कहा है और कितनी परिधि है ? अहो गौतम सब से बाहिरका चंद्र मंडल १००६६० योजनका लम्बा चौडा है ३१८३१५ योजनकी परिधि कही है बाहिर का दूसरा मंडलकी पृच्छा? अहो गौतम! १००५८७ ६१ और सातिये छ चुर्णिये भागका लम्बा चौडा और

क्षेण ॥ बाहिरतक्षेण पुच्छा ? गोयमा ! एगं जोयणसय सहस्स पच चउदसुत्तरे जोयणसए एगूणवीसच एगसट्ठिभाए जोयणस्स, एगसट्ठिभागच एग सत्तहाछेत्ता पचचुण्णियाभाए आयामविक्खभेण, तिण्णि जोयणसय सहस्साइ सत्तारस जोयण सहस्साइ अट्ठय पण्णपण्ण जोयणसए परिक्खेवेण ॥ एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे चदे जाव सकममाणे २ बावत्तरि २ जोयणाइ एगावण्णच एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागच एगसत्तहाछेत्ता एगचुण्णियाभाग एगमेगे मडले विक्खभवुड्ढि णिवुड्ढेमाणे २ दोदो तीसाइ जोयणसयाइ परिरयवुड्ढिं णिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ ॥ ७ ॥ २१ ॥ जयाण भते ! चदे सव्वब्भतर मडलं उवसकमित्ता चार चरइ, तयाण एगमेगेण मुहुत्तेण केवइय खेत्त गच्छइ ?

परिधि ३१८०८९ योजन की है बाहिर के तीसरे चद्र मडल की पृच्छा? अहो गौतम ! १००५१४ $\frac{१९}{६१}$ योजन और सातिये पांच चूर्णिये भागका लम्बा चौडा है इस की परिधि ३१७८५८ योजन की है इस तरह प्रवेश करता चंद्र एक २ मंडल पर जाता हुवा, ७२ $\frac{५१}{६१}$ योजन और सातिये एक चूर्णिया भाग लम्बाइ चौडाइमें कम करता हुवा और दोसो तीस योजन परिधिमें कम करता हुवा सबसे आभ्यतर मंडलपर आकर चाल चलता है ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! जब सूर्य सब से आभ्यतर मंडल पर चाल चलता है

गोयमा ! पचजोयणसहस्साइं, तेवत्तरिंच जोयणाइं सत्त्तरिंच चोयालेभागसए गच्छइ मडले, तेरसहिंसहस्सेहिं सत्तहिय पणवीसेहिं छेत्ता, तयाण इहगयस्स मणुसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहिं अतेवट्ठेहिं जायणसएहिं एगवीसाए असट्ठिभाएहिं जोयणस्स चदे चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ॥ जयाण भते ! चदे अब्भतराणंतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ जाव केवइय खेत्त गच्छइ ? गोयमा! पचजोयणसहस्साइ सत्तत्तरिंच जोयणाइ छत्तीसच चोअत्तरे भागसए गच्छइ मडल, तेरसहिं सहस्सेहिं जाव छेत्ता ॥ जयाण भत ! चंदे अब्भतरतच्च मडलं जाव गच्छई ? गोयमा' पचजोयणसहस्साइ असीइचजोयणाइ तेरसयभागसहस्साइ तिण्णिय

तब एक २ मुहूर्त में कितना चलता है ? अहो गौतम ! ५०७३ $\frac{७७४४}{१३७२५}$ योजन एक मुहूर्त में चद्रमा सब से आभ्यतर मडल पर चलता है उस समय यहां पर रहे हुए मनुष्य को ४६२६३ $\frac{२१}{६०}$ योजन दूर से चंद्र दृष्टिगत होता है अहो भगवन् ! जब चद्र आभ्यतर दूसरे मडल पर चाल चलता है तब एक २ मुहूर्त में कितना क्षेत्र जाता है ? अहो गौतम ! ५०७७ $\frac{३६७४}{१३७२५}$ योजन एक २ मुहूर्त में चंद्र चलता है अहो भगवन् ! जब चद्र आभ्यतर तीसरे मडल पर चलता है तब एक २ मुहूर्त में कितना चलता है ? अहो गौतम ! ५०८० $\frac{१३३२१}{१३७२५}$ योजन एक २ मुहूर्त में चलता है, इस तरह निकलता

एगूणतीसे भागसए गच्छइ मडलं, तेरसहिं जाव छेत्ता ॥ एवं खलु एएण उवाएण णिक्खममाणे चंदे तयाणंतराओ मडलाओ तयाणतरं जाव सकममाणे २ तिण्णि २ जोयणाइं छण्णउइंच पचावण्णे भागसए एगमेगे मडले मुहुत्तगइ अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मडल उवसकमित्ता चार चरइ ॥ जयाण भंते ! चंदे सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तयाण एगमेगेणं मुहुत्तेण केवइय खेत्तगच्छइ ? गोयमा ! पच- जोयणसहस्साइं एगंचपणवीस जोयणसय अउणत्तरिं चणउएभागसए गच्छइमडल, तेर सहिभागसहस्सेहिं जाव छित्ता ॥ तयाण इहगयस्स मणुसस्स इक्कतीसाए जोयण सहस्सेहिं अट्ठहिएगत्तीसेहिं जोयणसएहिं चंदे चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ॥ जयाण भंते ! चंदे बाहिराणतर पुच्छा ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइ एगंच एक्कवीस

हुवा चंद्र एक २ मंडल पर से जाता हुवा ३ [illegible] योजन की गति में वृद्धि करता हुवा सब से बाहिर के मंडल पर जाकर चाल चलता है अहो भगवन् ! जब चंद्र सब से बाहिर के मंडल पर चाल चलता है तब एक २ मुहूर्त में कितना जाता है ? अहो गौतम ! ५१२५ [illegible] योजन एक २ मुहूर्त में चलता है उस समय यहां रहे हुए मनुष्य को ३१८३१ योजन दूर से चंद्र दृष्टिगत होता है अब बाहिर के दूसरे मंडल की पृच्छा, अहो गौतम ! ५१२१ [illegible] योजन एक मुहूर्त में चंद्र दूसरे

जोयणसय इक्कारसय सट्ठिभाग सहस्सेहिंच गच्छइ मडल, तेरसहिं जाव छेत्ता ॥ जयाण भते ! बाहिर तच्च पुच्छा ? गोयमा ! पच जोयणसहस्साई एगच अट्ठारसुत्तर जोयणसय चहठसय पचुत्तरे भागसए गच्छइ मडल तेरसहिं सहस्सेहिं सत्तपणवीसइसएहिछेत्ता ॥ एव खलु एएणं उवाएणं जाव सकममाणे २ तिण्णि २ जोयणाइ छण्णउइच पचावण्णे भागसए एगमेगेमडले मुहुत्तगइ णिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भतर मडल उवसंकमित्ता चारचरइ ॥ ८ ॥ २२ ॥ कइण भते ! णक्खत्त मडला पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ णक्खत्तमडला पण्णत्ता ॥ जम्बूदीवेण भते ! दीवे केवइय ओगाहित्ता केवइया णक्खत्त मडला पण्णत्ता ? गोयमा ! जबुदीवे २

मडल पर चलता है बाहिर के तीसरे मंडल की पृच्छा, ? अहो गौतम ! बाहिर के तीसरे मंडल पर चंद्र एक मुहूर्त में ५११८ [illegible] योजन की दुरी पर से दीखता है इस तरह यावत् जाता हुवा चंद्र ३ [illegible] योजन एक २ मंडल पर मुहूर्त गति में कम करता हुवा सब से आभ्यंतर मंडल पर जाकर चाल चलता है ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! कितने नक्षत्र मंडल कहे हैं ? अहो गौतम ! (नक्षत्र मंडल आठ कहे हैं अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में कितना क्षेत्र अवगाह कर कितने नक्षत्र मडल कहे हैं ? अहो

असीअ जोयणसय ओगाहित्ता एत्थण दो णक्खत्त मडला पण्णत्ता ॥ लवणेण भते ! समुद्दे केवइय ओगाहित्ता केवइया णक्खत्तमडला पण्णत्ता ? गोयमा ! लवणेण समुद्दे तिण्णितीसे जोयणसए ओगाहित्ता एत्थण छ णक्खत्त मडला पण्णत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण जबूदीवे दीवे लवणेय समुद्दे अट्ठ णक्खत्त मडला भवति त्तिमक्खाय ॥ २ ॥ २३ ॥ सव्वब्भतराओण भते ! णक्खत्त मडलाओ केवइयाए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्त मडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पचदसुत्तरे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्त मडले पण्णत्ते ॥३॥ णक्खत्त मडलस्सण भंते ! णक्खत्तमंडलस्सय एसग केवइयाए अबाहाए अतरे पण्णत्ता ? गोयमा !

गौतम ! जम्बूद्वीप में १८० योजन अवगाह कर दो नक्षत्र मडल कहे हैं) अहो भगवन् ! लवण समुद्र में कितना क्षेत्र अवगाह कर कितने नक्षत्र मडल कहे हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र में ३३० योजन अवगाह कर ६ नक्षत्र मंडल कहे हैं यों जम्बूद्वीप व लवण समुद्र में सब मीलकर ८ नक्षत्र मडल कहे हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! सब से आभ्यंतर नक्षत्र मंडल से सब से बाहिर के नक्षत्र मडल पर्यंत अबाधा से कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! उस में ५१० योजन का अतर कहा है अहो भगवन् ! एकेक नक्षत्र मडल में अबाधा से कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! दो २ योजन का प्रत्येक नक्षत्र

दोदो जोयणाइ णक्खत्तामडलस्सय २ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥ ४ ॥ २४ ॥ णक्खत्तामडलेण भते ! केवइय आयामविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण केवइय बाहल्लेण पण्णत्ता ? गोयमा ! गाउय आयामविक्खभेण, त तिगुणसविसेस परिक्खेवेण अद्धगाऊय बाहल्लेण पण्णत्ता ॥ ५ ॥ २५ ॥ जबूदीवेण भते ! दीवे मदरस्स पव्वयस्स केवइयाए अबाहाए सव्वब्भतर णक्खत्तमडले पण्णत्ते ? गोयमा ! चोयालीस जोयणसहस्साइ अट्ठयवीस जोयणसए अबाहाए सव्वब्भतरे णक्खत्तमडले पण्णत्ते ॥ जबूदीवेण भते ! दीवे मदरस्स पव्वयस्स केवइयाए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्तमडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीस जोयण सहस्साइ तिण्णिय

मडल में अतर कहा है ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! नक्षत्र मडल कितना लम्बा चौडा कितनी परिधिवाला व कितना जाडा कहा है ? अहो गौतम ! एक गाउ का लम्बा, चौडा उस से तीन गुनी से अधिक परिधिवाला और आधे गाउ का जाडा है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से सब से आभ्यतर नक्षत्र मडल पर्यंत कितना अतर कहा है ? अहो गौतम ! ४४८२० योजन का अतर कहा है अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से सब से बाहिर का नक्षत्र मडल का कितना अंतर कहा है !

तीसे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्त मडले पण्णत्ते ॥ ६ ॥ २६ ॥ सव्वब्भतरेण भते ! णक्खत्त मडले केवइय आयामविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! णवणउइ जोयण सहस्साइ छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम विक्खभेण, तिण्णि जोयण सयसहस्साइ पण्णरस जोयण सहस्साइ एगूणणवइंच जोयणाइं किंचि विसेसाहियाइ परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ सव्वबाहिरएण भते ! णक्खत्त मडले केवइय आयामविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! एग जोयणसयसहस्स छच्चसट्ठ जोयणसए आयाम विक्खभेण, तिण्णि जोयण सयसहस्साइं अट्ठारस जोयण सहस्साइ तिण्णिय पण्णरसुत्तरे

अहो गौतम ! ४५३३० योजन का अबाधा से सब से बाहिर का नक्षत्र मंडल का अंतर कहा है ॥२६॥ अहो भगवन् ! सब से आभ्यंतर नक्षत्र मडल कितना लम्बा चौडा है और उन की कितनी परिधि कही है? अहो गौतम ! ९९६४० योजन का सब से आभ्यतर मंडल लम्बा चौडा है और ३१५०८९ योजन से किंचित अधिक की परिधि है अहो भगवन् ! सब से बाहिर का मंडल कितना लम्बा चौडा और कितनी परिधिवाला है ! अहो गौतम ! सब से बाहिर का मंडल १००६६० योजन का लम्बा चौडा

जोयणसए परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ ७ ॥ २७ ॥ जयाण भंते ! णक्खत्ते सव्वब्भंतर मंडल उवसंकमित्ता चारचरइ, तयाण एगमेगेण मुहुत्तेण केवइय खेत्त गच्छइ ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं दोण्णिय पण्णट्ठे जोयणसए अट्ठारसय भाग सहस्से दोण्णियतेवट्ठे भागसए गच्छइ मंडल,एक्कवीसाए भाग सहस्सेहिं णवहिय सट्ठेहिं सएहिं छेत्ता ॥ जयाण भंते ! णक्खत्ते सव्वबाहिर मंडल उवसंकमित्ता चारचरइ तयाण एगमेगेणं मुहुत्तेण केवइय खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंचजोयण सहस्साइं तिण्णिय एगूणवीसे जोयणसए सोलसय भाग सहस्से तिण्णिय पण्णट्ठे भागसए गच्छइ मंडल,एक्कवीसाए भागसहस्सेहिं णवहिय सट्ठेहिं सएहिछेत्ता ॥ ८ ॥ २८ ॥ एएण भंते! अट्ठ णक्खत्त मंडला कइहिं चंदमंडलेहिं समोअरंति ? गोयमा ! अट्ठहिं

है और ३१८३१५ योजन की परिधि है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! जब नक्षत्र सब से आभ्यंतर मंडल पर होते हैं तब एक २ मुहूर्त में कितने चलते हैं ? अहो गौतम ! सब से आभ्यंतर मंडल पर नक्षत्र एक २ मुहूर्त में ५२६५ $\frac{१८२६३}{२१९६०}$ योजन जाते अहो भगवन् ! जब नक्षत्र सब से बाहिर के मंडल पर चाल चलता है तब एक मुहूर्त में कितना चलता है ? अहो गौतम ! सब से बाहिर के मंडल पर ५३१९ $\frac{१६३६५}{२१९६०}$ योजन एक मुहूर्त में चलता है ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! नक्षत्र के जो आठ

तीसे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्त मडले पण्णत्ते ॥ ६ ॥ २६ ॥ सव्वब्भतरेण भते ! णक्खत्त मडले केवइय आयामविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! णवणउइ जोयण सहस्साइ छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम विक्खभेण, तिण्णि जोयण सयसहस्साइ पण्णरस जोयण सहस्साइ एगूणणवइंच जोयणाइं किंचि विसेसाहियाइ परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ सव्वबाहिरएण भते ! णक्खत्त मडले केवइय आयामविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! एग जोयणसयसहस्स छच्चसट्ठ जोयणसए आयाम विक्खभेण, तिण्णि जोयण सयसहस्साइं अट्ठारस जोयण सहस्साइ तिण्णिय पण्णरसुत्तरे

अहो गौतम ! ४५३३० योजन का अबाधा से सब से बाहिर का नक्षत्र मंडल का अंतर कहा है ॥२६॥ अहो भगवन् ! सब से आभ्यंतर नक्षत्र मडल कितना लम्बा चौडा है और उन की कितनी परिधि कही है? अहो गौतम ! ९९६४० योजन का सब से आभ्यतर मंडल लम्बा चौडा है और ३१५०८९ योजन से किंचित अधिक की परिधि है अहो भगवन् ! सब से बाहिर का मंडल कितना लम्बा चौडा और कितनी परिधिवाला है ! अहो गौतम ! सब से बाहिर का मंडल १००६६० योजन का लम्बा चौडा

मुहुत्तेण-णक्खत्ते केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ? गोयमा! जज मडल उवसकमित्ता चारचरइ तस्स २ मडल परिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसए गच्छइ मडल सयसहस्सेण अट्ठाणउईएय सपर्हिछेत्ता ॥३०॥ जम्बूदीवेण भते! दीवे सरिया उदीण पाईण मुग्गच्छ, पाईण दाहिण मागच्छति, पाईण दाहिण मुग्गछ दाहिण पाईण मागच्छति, दाहिण पाईण मुगच्छपाईण उदीण मागच्छति पाईण उदीण मुगच्छ

अठारसो तीस भाग एक मुहूर्त में अतिक्रमता है अहो भगवन्! एक २ मुहूर्त में नक्षत्र कितने भाग जाते हैं? अहो गौतम! जिस २ मडल पर जाकर चाल चलते हैं उस २ मंडल की परिधि के एक लाख अठाणवे भाग करके १८३५ भाग जितना चलते हैं ॥ ३० ॥ अत्र उदय अस्त का कहना अहो भगवन्! जम्बूद्वीप में सूर्य उत्तर पूर्व में उदित होकर पूर्व दक्षिण आग्निकौन में क्या जाता है, अग्नि कौन में उदित होकर क्या नैऋत्य कौन में जाता है, नैऋत्य कौन में उदित होकर क्या वायव्य कौन में जाता है, और वायव्य कौन में उदित होकर ईशान कौन में क्या जाता है? हां गौतम! वैसे होता है जैसे भगवती सूत्र के पांचवे शतक के प्रथम उद्देशे में कथन किया वैसे जानना उस समय वहां भी वर्षा ऋतु का प्रथम समय, ऐसे ही ऋतु, अयन, यावत् युग जो भरत व एरवत क्षेत्र में होते हैं वैसे ही महा विदेह क्षेत्र में जानना क्यों कि सब का फल की अपेक्षा एक ही सब भाव है पूर्व पश्चिम महा विदेह में

षटमडलेहिं समोअराति, तजहा—पढमे चदमडले, तईए छट्ठे सत्तमे अट्ठमे दसमे एक्कारसमे पण्णरसमे चदमडले ॥ २९ ॥ एगमेगेण भते! मुहुत्तेण चद केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ ? गोयमा ! जज मडले उवसकमित्ता चारचरइ तस्स २ मडल परिक्खेवस्स सत्तरस २ अट्ठट्ठेभागसए गच्छइ मडल सयसहस्सेण अट्ठाणउईएय सएहिंछेत्ता ॥ एगमेगेण भते ! मुहुत्तेण सूरिए केवइया भागसयाइ गच्छइ ? गोयमा! जज मडल उवसकमित्ता चारचरइ तस्स२ मडल परिक्खेवस्स अट्ठारसतीसे भागसए गच्छइ, मडल सयसहस्सेण, अट्ठाणउईएअ सएहिं छेत्ता ॥ एगमेगण भते !

मंडल हैं वे चंद्रमा के कितने मंडल साथ मीले हुए हैं ? अहो गौतम ! चंद्रमा के आठ मंडल साथ मीले हुवे हैं सो बताते हैं प्रथम, तीसरा छठा, सातवा, आठवा दसवा, अग्यारहवा, और पन्नरहवा यों चंद्र मंडल पर आठ नक्षत्र मंडल अनुक्रम से मीले हुवे हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! चंद्रमा एक मुहूर्त में मंडल की परिधि का कितना भाग अतिक्रमता है ? अहो गौतम ! जिस मंडल के आश्रय से गमन करे उस मंडल की परिधि के एक लाख अठाणवे भाग करे वैसे सत्तरहसो अडसठ भाग अतिक्रमता है अहो भगवन् ! सूर्य एक मुहूर्त में मंडल की परिधि का कितना भाग अतिक्रमता है ? अहो गौतम ! जिस २ मंडल पर सूर्य चलता है उस २ मंडल की परिधि के एक लाख अठाणु सो भाग का छेदन करे वैसे

॥ संवत्सराणा माधिकार ॥

कइंण भते ! सवच्छरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पच सवच्छरा पण्णत्ता तजहा-णक्खत्त सवच्छरे, जुगसवच्छरे, पमाण सवच्छरे, लक्खण सवच्छरे, सणिच्छर सवच्छरे ॥ १ ॥ णक्खत्त सवच्छरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालस विहे पण्णत्ते तजहा—सावणे, भद्दवए, जाव असाढे ॥ जवा विहप्फई महग्गहे दुवालसेहिं सवच्छरेहिं सव्वणक्खत्तमडल समाणेइ सेत्त णक्खत्त सवच्छरे ॥ जुग सवच्छरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते तजहा—चदे, चदे,

अब सवत्सर का कथन करते हैं अहो भगवन् ! सवत्सर कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच संवत्सर कहे हैं उन के नाम—१ नक्षत्र सवत्सर, २ युग संवत्सर, ३ प्रमाण संवत्सर ४ लक्षण संवत्सर और ५ शनैश्चर सवत्सर ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नक्षत्र संवत्सर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! बारह भेद कहे हैं तद्यथा—१ श्रावण, २ भाद्रपद यावत् अषाढ उन का बृहस्पति नामक महा ग्रह बारह सवत्सर में सब नक्षत्र मंडल को फीरता है यह नक्षत्र संवत्सर हुवा ॥ अहो भगवन् ! युग संवत्सर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! युग सवत्सर के पांच भेद कहे हैं.

उदीण पाईण मागच्छति ? हता गोयमा ! जहा पचमसर पढम उद्देसे जाव णेवरिथओ स्सप्पिणी अवट्ठिएण तत्थ काले पण्णत्ते समणा उसो ! इच्चेसा जबूद्दीवे पण्णत्ती सूरपण्णत्ती वत्थूसमासेण सम्मत्ता भवई ॥२१॥ जबूद्दीवेणभते ! दीवे चदिमा उदीण पाईण मुग्गच्छपाईणदाहिणमागच्छति जहा सूरवत्तव्वया जहा पचम सयस्स दसमे उद्देसे जाव अवट्ठिएण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ! इच्चेसा जबूद्दीव पण्णत्ती चद पण्णत्ती वत्थुसमासेण सम्मत्ता भवई ॥ * ॥ इति सप्तम अधिकार ॥ *

अवसर्पिणी काल नहीं है अहो आयुष्मन् श्रमणों ! यहां अवस्थित एक स्वरूप काल का वर्तार है यह जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति नामक उपांग में सूर्य के अधिकार रूप सूर्य प्रज्ञप्ति के वस्तु अधिकार के समास में संक्षेप से यह कथन संपूर्ण हुवा ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! जम्बुद्वीप नामक द्वीप में चंद्रमा ईशान कौन में उदय होकर अग्नि कौन में क्या अस्त होवे इत्यादि जैसे सूर्य का वर्णन कहा वैसे ही कहना विशेष में कथन भगवती सूत्र के पांचवे शतक के दशवे उद्देशे में कहा वैसा ही यहां कहना यावत अवस्थित रूप यहां महा विदेह क्षेत्र में काल है यह जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति उपांग में चंद्र के आधिकार रूप चंद्र प्रज्ञप्ति वस्तु अधिकार का वर्णन संक्षेप से पूर्ण हुवा यह पांचवा अधिकार सपूर्ण हुवा *

एवामेवसपुव्वावरेण पच सवच्छरिए जुगे एगे चउव्वीसे पव्वसए पण्णत्ता ॥ सेत्त जुग सवच्छरे ॥ पमाण सवच्छरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते तजहा—णक्खत्ते, चदे, ऊऊ, आइच्चे, अभिवड्ढिए, सेत्त पमाण सवच्छरे ॥ लक्खण संवच्छरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते तजहा (गाहा)समय णक्खत्ता जोग,जोअति समय ऊऊ परिणमाति॥णच्चुण्णणाइसीओ,

सम्यक् प्रकार से ऋतु परिणमे अर्थात् इस संवत्सर में नक्षत्र सरिखे नाम से ऋतु के पर्व वर्तते मास सपूर्ण करे; जैसे उत्तरापाढा नक्षत्र अषाढी पूर्णमासी समाप्ति करे अषाढी पूर्णिमा के साथ ऋतु भी सपूर्ण होवे, अति ताप न होवे, अति शीत न होवे और वर्षा बहुत होवे इन पांच लक्षण से नक्षत्र संवत्सर जानना अब चंद्र संवत्सर का लक्षण कहते हैं—चंद्रमा की साथ सम्यक् प्रकार से पूर्णिमा में नक्षत्र योग करे, विषम चारी नक्षत्र होवे, जिस नाम का मास होवे उस से दूसरे नामवाले नक्षत्र एक साथ पूर्णिमा का योग सपूर्ण करे, वर्षा बहुत होवे परन्तु कटु होवे, शीत तापादि बहुत होवे, रोगादिक परिणमे, ऐसा जिस संवत्सर में होवे उसे चद्र सवत्सर कहना अब तीसरा ऋतु अथवा कर्म सवत्सर का लक्षण कहते हैं जिस सवत्सर में वनस्पति विषम काल में अंकूरवाली होवे, विना ऋतु पुष्प फलादि होवे, सम्यक् प्रकार से वर्षा होवे नहीं उसे कर्म संवत्सर कहते हैं ४ अब आदित्य सवत्सर का लक्षण

अभिवड्डिए, चंदे, अभिवड्डिएचेव ॥ पढमस्सण भंते ! चंद सवच्छरस्स कइ पव्वा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्वीस पव्वा पण्णत्ता ॥ विइअस्सण भंते ! चंद संवच्छरस्स कईपव्वा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्वीस पव्वा पण्णत्ता ॥ एव पुच्छा तइअस्सण ? गोयमा ! अभिवड्डिअ सवच्छरस्स छव्वीस पव्वा पण्णत्ता, चउत्थस्स चंद सवच्छरस्स चउव्वीस पव्वा पण्णत्ता, पंचमस्सण अभिवड्डिअ सवच्छरस्स छव्वीस पव्वा पण्णत्ता

जिन के नाम—१ चंद्र, २ चंद्र, ३ अभिवर्धन, ४ चंद्र और ५ अभिवर्धन अहो भगवन् ! प्रथम चंद्र सवत्सर के कितने पर्व कहे हैं ? अहो गौतम ! चौवीस पर्व कहे हैं अहो भगवन् ! दूसरे चंद्र सवत्सर के कितने पर्व कहे हैं ? अहो गौतम ! दूसरे चंद्र सवत्सर के २४ पर्व कहे हैं तीसरे अभिवर्धन संवत्सर के २६ पर्व अधिक मास के दो पर्व ज्यादा हुए चौथे चंद्र संवत्सर के २४ पर्व और पांचवे अभिवर्धन संवत्सर के २६ पर्व कहे हैं यों अनुक्रम से पांचों सवत्सर का एक युग होता है और एक युग के १२४ पर्व कहे हैं अहो भगवन् ! प्रमाण सवत्सर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! प्रमाण सवत्सर के पांच भेद कहे हैं जिन के नाम—१ नक्षत्र, २ चंद्र, ३ ऋतु, ४ आदित्य और ५ अभिवर्धन यह प्रमाण सवत्सर हुवा अहो भगवन् ! लक्षण सवत्सर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! लक्षण संवत्सर के पांच भेद कहे हैं १ सम्यक् प्रकार से नक्षत्र साथ चंद्र योग करे, और

एगामेवसपुव्वावरेणं पच सवच्छरिए जुगे एगे चउव्वीसे पव्वसए पण्णत्ता ॥ सेत्त जुग सवच्छरे ॥ पमाण संवच्छरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते तजहा—णक्खत्ते, चदे, ऊऊ, आइच्चे, अभिवड्ढिए, सेत्त पमाण सवच्छरे ॥ लक्खण सवच्छरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते तजहा (गाहा)समय णक्खत्ता जोग,जोअति समय ऊऊ परिणमति॥णच्चुण्णणाइसीओ,

सम्यक् प्रकार से ऋतु परिणमे अर्थात् इस संवत्सर में नक्षत्र सरिखे नाम से ऋतु के पर्व वर्तते मास संपूर्ण करे; जैसे उत्तराषाढा नक्षत्र अषाढी पूर्णमासी समाप्ति करे अषाढी पूर्णिमा के साथ ऋतु भी सपूर्ण होवे, अति ताप न होवे, अति शीत न होवे और वर्षा बहुत होवे इन पांच लक्षण से नक्षत्र संवत्सर जानना अब चंद्र संवत्सर का लक्षण कहते हैं—चद्रमा की साथ सम्यक् प्रकार से पूर्णिमा में नक्षत्र योग करे, विषम चारी नक्षत्र होवे, जिस नाम का मास होवे उस से दूसरे नामवाले नक्षत्र एक साथ पूर्णिमा का योग संपूर्ण करे, वर्षा बहुत होवे, परंतु कटु होवे, शीत तापादि बहुत होवे, रोगादिक परिणमे, ऐसा जिस संवत्सर में होवे उसे चंद्र सवत्सर कहना अब तीसरा ऋतु अथवा कर्म सवत्सर का लक्षण कहते हैं जिस संवत्सर में वनस्पति विषम काल में अंकूरवाली होवे, विना ऋतु पुष्प फलादि होवे, सम्यक् प्रकार से वर्षा होवे नहीं उसे कर्म संवत्सर कहते हैं ४ आदित्य सवत्सर का लक्षण

बहु उदओहोई णक्खत्ते ॥ १ ॥ ससिसमग पुण्णमासि, जोइंति विसमचारी ॥ णक्खत्ता कडुओ बहुउदओवा, तमाहु सवच्छर चद ॥ २ ॥ विसम पवालिणो परिणमति अणऊऊसुदिंति पुप्फफल, ॥ वास न समा वासई, तमाहु सवच्छर कम्म ॥ ३ ॥ पुढविदगाण च रस, पुप्फफलाणच देइ आइच्चो ॥ अप्पेणवि वासेण, सम्मणिप्फजएसस्सं ॥ ४ ॥ आइच्चतेअतविया, खणलवादिवसा ऊऊपरिणमति ॥

कहते हैं, अल्प वर्षा से पृथ्वी, पानी, पुष्प, फलादि की तथा धान्यादिक की बहुत उत्पत्ति होवे, उसे आदित्य संवत्सर कहते हैं अब आभिवर्धन संवत्सर का कथन करते हैं—जिस में सूर्य के तेज से क्षण, लव, दिन व ऋतु परिणमते होवे, सब ऊंचा नीचा स्थान जल से परिपूर्ण होवे उसे आभिवर्धन सवत्सर कहते हैं यह लक्षण संवत्सर हुवा अहो भगवन्! शनैश्चर सवत्सर के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! शनैश्चर संवत्सर के अठ्ठाइस भेद कहे हैं जिन के नाम—१ अभिच, २ श्रवण ३ धनिष्ठा, ४ शतभिषा, ५ पूर्वाभाद्रपद, ६ उत्तराभाद्रपद ७ रेवती, ८ अश्विनी, ९ भरणि, १० कृत्तिका, ११ रोहिणी, १२ मृगशर, १३ आर्द्रा, १४ पुनर्वसु, १५ पुष्य, १६ अश्लेषा, १७ मघा, १८ पूर्वाफाल्गुनी, १९ उत्तराफाल्गुनी, २० हस्त, २१ चित्रा, २२ स्वाति २३ विशाखा २४ अनुराधा २५ ज्येष्ठा २६ मूल, २७ पूर्वाषाढा और २८ उत्तराषाढा, यावत् शनैश्चर महा ग्रह तीस सवत्सर में सब नक्षत्र

पूरेइ अणिणजले, तमाहु अभिवड्डियजाणे ॥ ५ ॥ सेत्त लक्खण सवच्छरे ॥ साण-च्छर सवच्छरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते तजहा (गाहा) अभिई सवण धणिट्ठा सयभिसया दोअहोंति भद्दवया ॥ रेवइ अस्सिणि भरणी कत्तिय तह रोहिणीचेव ॥ १ ॥ जाव उत्तरासाढाओ जवा साणिच्छरे महग्गहे तीसाए सवच्छरेहिं सव्व णक्खत्त मडल समाणेइ ॥ सेच साणिच्छर सवच्छरे ॥ २ ॥ एगमेगस्सण भते ! सवच्छरस्स कइमासा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुवालसमासा पण्णत्ता, तेसिण दुविहा णामधेज्जा पण्णत्ता तजहा—लोइआय, लोगुत्तरिआय ॥ तत्थलोइया णामा इमे तजहा—सावणे, भद्दवए जाव आसाढे ॥ लोउत्तरियाणामाइमे तजहा (गाहा)अभिणदिए, पइट्ठेय, विजए, पीइवद्धणे, सेअसेअ, सिवचेव, सिसिरेय,

मंडल का स्पर्श कर सपूण करता है यह शनैश्चर संवत्सर होता है ॥२॥ अहो भगवन् ! एक २ सवत्सर के कितने मास कहे हैं ? अहो गौतम ! एक २ सवत्सर के बारह २ मास कहे हैं उन के दो प्रकार से नाम कहे हैं तद्यथा लौकिक नाम और लोकोत्तर नाम उन में से लौकिक नाम, श्रावण भाद्रपद यावत् अषाढ और लोकोत्तर नाम—१ अभिनदित, २ प्रतिष्ठान, ३ विजय, ४ प्रीति वर्धन, ५ श्रेय श्रेय, ६ शिव,

सहेमत्र ॥ १ ॥ णवमेवसतमासे, दसमे कुसुम सभवे, एक्कारसेणिदाहेय, वणवि-रोहेय वारसे ॥ २ ॥ ३ ॥ एगमेगस्सण भते!मासस्स कइपक्खा पण्णत्ता ?गोयमा! दो पक्खा पण्णत्ता तजहा—बहुल पक्खेय सुक्कपक्खेय ॥ एगमेगस्सण भते ! पक्खस्स कइदिवसा पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरसदिवसा पण्णत्ता तजहा—पडिवा दिवसे, विआ दिवसे जाव पण्णरसी दिवस ॥ एएसिण भते ! पण्णरसण्ह दिवसाण कइणा-मधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा!पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तजहा (गाहा) पुव्वगे, सिद्ध, मणोरमेय, ततो मणोहरे चेव जसभद्देय जसधरे छट्ठे सव्वकाम समिद्धेय ॥ १ ॥

७ शिशिर, ८ हेमंत, ९ वसंत, १० कुसुमसभव, ११ निदाघ और १२ वन विरोध ॥ १ ॥ अहो भगवन्! एक महिने के कितने पक्ष कहे हैं? अहो गौतम! एक मास के दो पक्ष कहे हैं जिन के नाम—बहुल (कृष्ण) पक्ष और शुक्ल पक्ष अहो भगवन्! एक पक्ष के कितने दिन कहे हैं? अहो गौतम! पन्नरह दिन कहे हैं जिन के नाम—१ प्रतिपदा दिवस २ द्वितीया दिवस यावत् पन्नरहवा दिवस अहो भगवन्! इन पन्नरह दिन के कितने नाम कहे हैं? अहो गौतम! उन के पन्नरह नाम कहे हैं जिन के नाम—१ पूर्वांग, २ सिद्ध मनोरम, ३ मनोहर, ४ यशोभद्र, ५ यशोधर, ६ सर्व काम समृद्ध, ७ इन्द्र मूर्द्धाभिषिक्त, ८ सौमनस, ९ धनंजय, १० अर्थ सिद्ध, ११ अभिजात, १२ अत्यशन,

इदमुद्धाभिसित्तेय, सोमणस धणजएय बोधव्वे ॥ अत्थसिद्धे अभिजाए, अच्चसण सयजए चेव ॥ २ ॥ अग्गिवेसे उवसमे, दिवसाण होंति णामधेज्जा ॥ एएसिण भंते ! पण्णरसण्ह दिवसाण कइ तिही पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरस तिही पण्णत्ता तंजहा-नंदे भद्दे जए तुच्छ पुण्णे पक्खस्स पंचमी, पुणरवि णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स दसमी ॥ पुणरवि णंदे भद्देजए तुच्छे पुण्णेपक्खस्स पण्णरसी ॥ एव ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाणंति ॥ ४ ॥ एगमेगस्सण भंते ! पक्खस्स कइ राईओ पण्णत्ताओ? गोयमा! पण्णरसराईओ पण्णत्ताओ तंजहा-पडिवाराई, जावपण्णरसी

१३ सर्वंजय, १४ अग्निवेश, और १५ उपशम अहो भगवन् ! इन पन्नरह दिन की कितनी तीथि कही है? अहो गौतम ! पन्नरह दिन की पन्नरह तीथि कही हैं जिन के नाम—१ नंदा, २ भद्रा ३ जया ४ तुच्छा, ५ पूर्ण पक्षनी ये प्रथम की पांच तिथियों के नाम—फीर भी ६ नंदा, षष्ठी ७ भद्रा सप्तमी, ८ जया अष्टमी ९ तुच्छा नवमी, १० पूर्ण पक्षनी दशमी, ११ नंदा एकादशी, १२ भद्रा द्वादशी, १३ जया त्रयोदशी १४ तुच्छा चतुर्दशी और पूर्ण पक्षनी पूर्णिमा इस तरह पांच नाम को तिगुना करने से पन्नरह तिथियों के नाम हुए ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! एक पक्ष की कितनी रात्रियों कही हैं? अहो गौतम ! पन्नरह रात्रियों कही हैं, जिन के नाम—प्रतिपदा रात्रि यावत् पन्नरहवी रात्रि अहो भगवन् !

राई ॥ एयासिण भंते ! पण्णरसण्ह राईण कई णामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता तजहा उत्तमाय सुणक्खत्ता एलावच्चा जसोहरा ॥ सोमाणसाचेव तहा सिरीसमूआय बोधव्वा ॥ १ ॥ विजयाय वेजयंती जयत्ती अपराइआय, इच्छाय समाहाराचेव तहा तेआतहा अइतेआय ॥ २ ॥ देवाणदा णिरई रयणीण णामधेज्जाइ ॥एएसिण भंते ! पण्णरसण्ण राईण कइतिही पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरसतिही पण्णत्ता तजहा—उग्गावई, भोगवई जसवई, सव्व-सिद्धा, सुहणामा ॥ पुणरवि उग्गावई, भोगवई, जसवई, सव्वसिद्धा, सुह

इन पन्नरह रात्रि के कितने नाम कहे हैं ? अहो गौतम ! उन के पन्नरह नाम कहे हैं जिन के नाम, १ उत्तमा, २ सुनक्षत्रा, २ एलावच्चा, ३ यशोधरा, ४ सोमनसा, ५ श्रीसंभूता, ६ विजया, ७ वैजयंती, ८ जयंती, ९ अपराजिता, १० इच्छा, ११ समाहारा, १२ तेजा, १३ अतितेजा १४ देवानंदा और १५ निरति अहो भगवन् ! इन पन्नरह रात्रि की कितनी तिथियों कही हैं ? अहो गौतम ! पन्नरह तिथियों कही हैं जिन के नाम—१ उग्रवती, २ भोगवती, ३ यशवती, ४ सर्वसिद्धा और ५ शुभ नामा ये प्रथम पांच रात्रि के नाम हुए फीर भी ६ उग्रवती, ७ भोगवती, ८ यशवती, ९ सर्व

णामा ॥ पुणःवि उग्गावई, भोगवई, जसवई, सव्वसिद्धा, सुहणामा ॥ एवं तिगुणा एतेतिहीओ सव्वेसिं राईण ॥ ५ ॥ एगमेगस्सण भंते ! अहोरत्तस्सण कई मुहुत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! तीस मुहुत्ता पण्णत्ता तंजहा—रुद्दे, सेए, मित्ते, वाउ, सुवीए, तहेव अभिचंदे, माहिंदे, बलव, बंभे, बहुसच्चे, चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तट्ठेय, भावियप्पा, वेसमणे वरुणेय, आणंदे, विजएय, वीससेणे, पायावच्चे, उवसमेय ॥ २ ॥ गंधव्व, अग्गिवेसे, सयवसहे, आयवय, अममेय, अणव, भोमे, वसहे सव्वट्ठे, रक्खसेचेव ॥ ३ ॥ ६ ॥ कइण भंते ! करणा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस

सिद्धा और १० सुख नामा और भी ११ उग्रवती, १२ भोगवती, १३ यशवती, १४ सर्व सिद्धा और १५ सुख नामा इस तरह पांच नाम के तिन गुना करते जाना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! एक २ अहो रात्रि के कितने मुहूर्त कहे हैं ? अहो गौतम ! एक २ अहो रात्रि के तीस मुहूर्त कहे हैं जिन के नाम १ रौद्र २ श्वेत, ३ मित्र, ४ वायु ५ सुवीत, ६ अभिचंद्र ७ महेन्द्र, ८ बलवान, ९ ब्रह्म १० बहु सत्य ११ ईशान, १२ त्वष्टा, १३ भवितात्मा, १४ वैश्रमण १५ वरुण १६ आनंद, १७ विजय, १८ विश्वसेन १९ प्रजापत्य, २० उपशम, २१ गंधर्व, २२ अग्निवेश, २३ शतवृषभ, २४ आतपवान, २५ अमम, २६ ऋणवान २७ भौम, २८ वृषभ, २९ सर्वार्थ और ३० राक्षस ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! करण कितने

राई ॥ एयासिणं भंते ! पण्णरसण्ह राईण कई णामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता तजहा उत्तमाय सुणक्खत्ता एलावच्चा जसाहरा ॥ सोमाणसाचेव तहा सिरीसभूआय बोधव्वा ॥ १ ॥ विजयाय वेजयती जयती अपराइआय, इच्छाय समाहाराचेव तहा तेआतहा अइतेआय ॥ २ ॥ देवाणदा णिरई रयणीण णामधेज्जाइ ॥एएसिणं भंते ! पण्णरसण्ण राईण कइतिही पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरसतिही पण्णत्ता तजहा—उग्गावई, भोगवई जसवई, सव्वसिद्धा, सुहणामा ॥ पुणरवि उग्गावई, भोगवई, जसवई, सव्वसिद्धा, सुह

इन पन्नरह रात्रि के कितने नाम कहे हैं ? अहो गौतम ! उन के पन्नरह नाम कहे हैं जिन के नाम, १ उत्तमा, २ सुनक्षत्रा, ३ एलावत्या, ४ यशोधरा, ५ सोमनसा, ६ श्रीसभूता, ७ विजया, ८ वेजयती, ९ जयंती, १० अपराजिता, ११ इच्छा, १२ समाहारा, १३ तेजा १४ अतितेजा १५ देवानन्दा और १६ निरति अहो भगवन् ! इन पन्नरह रात्रि की कितनी तिथियों कही हैं ? अहो गौतम ! पन्नरह तिथियों कही हैं जिन के नाम—१ उग्रवती, २ भोगवती, ३ यशवती, ४ सर्वसिद्धा और ५ शुभ नामा ये प्रथम पांच रात्रि के नाम हुए फीर भी ६ उग्रवती, ७ भोगवती, ८ यशवती, ९ सर्व

णामा ॥ पुणरवि उग्गावई, भोगवई, जसवई, सव्वसिद्धा, सुहणामा ॥ एवं तिगुणा एतेतिहीओ सव्वेंसि राईण ॥ ५ ॥ एगमेगस्सण भंते ! अहोरत्तस्सण कई मुहुत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! तीस मुहुत्ता पण्णत्ता तंजहा—रुद्दे, सेए, मित्ते, वाउ, सुवीए, तहेव अभिचंदे, माहिंदे, बलव, बंभे, बहुसच्चे, चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तट्ठेय, भावि यप्पा, वेसमणे, वरुणेय, आणंदे, विजएय, वीससेणे, पायावच्चे, उवसमेय ॥ २ ॥ गधव्व, अग्गिवेसे, सयवसहे, आयवय, अममेय, अणव, भोमे, वसहे, सव्वट्ठे, रक्खसेचेव ॥ ३ ॥ ६ ॥ कइण भंते ! करणा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस

सिद्धा और १० सुख नामा और भी ११ उग्रवती, १२ भोगवती, १३ यशवती, १४ सर्व सिद्धा और १५ सुख नामा इस तरह पांच नाम के तिन गुना करते जाना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! एक २ अहो रात्रि के कितने मुहूर्त कहे हैं ? अहो गौतम ! एक २ अहो रात्रि के तीस मुहूर्त कहे हैं जिन के नाम १ रौद्र २ श्वेत, ३ मित्र, ४ वायु ५ सुवीत, ६ अभिचद्र ७ महेन्द्र, ८ बलवान, ९ ब्रह्म १० बहु सत्य ११ ईशान, १२ त्वष्टा, १३ भावितात्मा, १४ वैश्रमण १५ वरुण १६ आनंद १७ विजय, १८ विश्वसेन १९ प्रजापत्य, २० उपशमं, २१ गन्ध, २२ अग्निवेश, २३ शतवृषभ, २४ आत्मावान, २५ अमम, २६ ऋणवान २७ भौम, २८ वृषभ, २९ सर्वार्थ और ३० राक्षस ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! करण कितने

करणा पण्णत्ता तजहा—बव, बालव, कोलव, थीविलोयण, गराइ, वणिज, विट्ठी, सउणी, चउप्पय, णाग, किंछुग्ग ॥ १ ॥ एएसिण भंते ! एक्कारसण्ह करणाण कइ करणाचरा कइ करणथिरा पण्णत्ता? गोयमा ! सत्तकरणाचरा, चत्तारि करणा-थिरा पण्णत्ता तंजहा—बव, बालव, कोलव, थिविलोयण, गराइ, वणिज, विट्ठी, एएण सत्तकरणाचरा चत्तारि करणाथिरा पण्णत्ता तजहा—सउणी, चउप्पय, णाग, किंछुग्ग एएण चत्तारि करणा थिरा पण्णत्ता ॥ ७ ॥ एएण भंते ! चरा वा थिरावा करणा कया भवति ? गोयमा ! सुक्कपक्खस्स पडिवाए, राओ ववे करणे भवई ॥

कहे हैं ! अहो गौतम ! अग्यारह करण कहे हैं जिन के नाम १ बव, २ बलव, ३ कोलव, ४ स्त्री विलोचन, ५ अनंत वैसगरादि ६ वाणिज्य, ७ विष्टि, ८ शकुनी ९ चतुष्पद, १० नाग और ११ किंस्तुघ्न. अहो भगवन् ! इन अग्यारह करण में से कितने करण चलने वाले होते हैं और कितने करण स्थिर होते हैं? अहो गौतम ! सात करण चलते हैं जिन के नाम, बव, बालव, कोलव स्त्रिविलोचन, गरादि, वाणिज्य विष्टि और चार करण स्थिर हैं जिनके नाम—शकुनी, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! ये चर व स्थिर करण कब होते हैं? अहो गौतम! शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा की रात्रि को बव करण होता है, द्वितीया को दिन को बालव करण होता है,

बइआए दिवा वालवे करणे, भवई राओ कोलवे करणे भवइ ॥ तइयाए दिवसे थिविलोयण करण भवइ, राओगराइ करण भवइ ॥ चउत्थीए दिवा वणिज, राओ विट्ठी ॥ पंचमीए दिवा ववं, राओ वालव ॥ छट्ठीए दिवा कोलव राओ त्थी विलोयण ॥ सत्तमीए दिवा गराइ राओ वाणिज्ज अट्ठमीए दिवाविट्ठी, राओ वव ॥ णवमीए दिवा वालव, राओकोलव ॥ दसमीए दिवा त्थिविलोयण राओ गराइ एक्कारसीए दिवा वणिज राओ विट्ठि वारसीए दिवा वव राओ वालव तेरसीए दिवा कोलव राओ त्थिविलोयण ॥ चउदसीए दिवा गराइ राओवणिज ॥ पुण्णिमाए दिवाविट्ठी करणे भवति,

रात्रि को कोलव करण होता है, तृतीया के दिन को स्त्रीविलोचन करण होता है, रात्रि को गरादि करण होता है, चतुर्थी के दिन को वाणिज्य करण होता है, रात्रि को विष्टि करण होता है पंचमी के दिन को बव करण होता है, रात्रि को बालव करण होता है षष्टि दिन को कोलव करण रात्रि को स्त्री विलोचन करण होता है सप्तमी के दिन को गरादि करण और रात्रि को वाणिज्य करण, अष्टमी के दिन को विष्टि करण और रात्रि को बव करण, नवमी के दिन को बालव करण और रात्रि को कौलव करण, दशमी के दिन को स्त्री विलोचन करण और रात्रि को गरादि करण एकादशी के दिन को वाणिज्य करण और रात्रि को विष्टि करण, द्वादशी के दिन को बव करण और रात्रि का बालव करण, त्रयोदशी के दिन को कोलव करण और रात्रि को स्त्रीलोचन करण, चतुर्दशी के दिन को गरादि करण और रात्रि को वाणिज्य करण, पूर्णिमा के दिन को

राओ ववकरण भवति॥ बहुल पक्खस्स पडिवाए दिवा बालव, राओ कोलवं ॥ बिइ-याए दिवा त्थीविलोयण राओगराइ ॥ तइयाए दिवावणिज, राओविट्ठी ॥ चउत्थीए दिवा वव, राओ बालवं॥पचमीए दिवा कोलव राओ त्थीविलोयण, छट्ठीए दिवा गराइ राओ वणिज,सत्तमीए दिवाविट्ठी राओ वव ॥ अट्ठमीए दिवा बालव राओ कोलव॥नवमीए दिवा त्थीविलोयण राओ गराइ॥दसमीए दिवा वणिज राओ विट्ठी एक्कारसीए दिवा वव,राओ बालव॥बारसीए दिवा कोलव राओ त्थीविलोयण।तेरसीए दिवागराइ राओ वणिज।चऊद्-

विष्टि करण और रात्रि को बव करण होता है कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन को बालव करण, और रात्रि को कोलव करण होता है, द्वितीया के दिन को स्त्री विलोचन करण और रात्रि को गरादि करण होता है, तृतीया के दिन को वाणिज्य करण और रात्रि को विष्टि करण, चतुर्थी के दिन को बव करण और रात्रि को बालव करण, पंचमी के दिन को कौलव करण और रात्रि को स्त्री विलोचन करण, षष्टि के दिन को गरादिकरण और रात्रि को वाणिज्य करण, सप्तमी के दिन को विष्टिकरण और रात्रि को बव करण, अष्टमी के दिन को बालव करण और रात्रि को कौलव करण, नवमी के दिन को स्त्री विलोचन और रात्रिको गरादिकरण, दशमी के दि को वाणिज्यकरण और रात्रिको विष्टीकरण, एकादशी के दिनको बवकरण,और रात्रिको बालवकरण, द्वादशी के दिनको कौलवकरण और रात्रिको स्त्री विलोचन करण,

सीए दिवा विट्ठी, राओ सउणी अमावासाए दिवा चउप्पय राओणाग॥ सुक्कपक्खस्स पडिवाए दिवा किंछुग्गकरण भवइ ॥८॥ किमाइयाण भते!संवच्छरा,किमाइयाअयणा, किमाइया ऊऊ, किमाइया मासा, किमाइया पक्खा, किमाइया अहोरत्ता, किमाइया मुहुत्ता, किमाइया करणा, किमाइया णक्खत्ता, पण्णत्ता ? गोयमा ! चदाइया संवच्छरा, दक्खिणाइया अयणा, पाउसाइया उऊ, सावणाइया मासा, बहुलाइया पक्खा, दिवसाइया अहोरत्ता, रोद्दाइया मुहुत्ता, बवाइया करणा, अभिजियाइया

त्रयोदशी के दिन को गरादि करण और रात्रि को वाणिज्य करण चतुर्दशी के दिन को विष्टि करण और रात्रि को शकुनी करण, अमावास्या के दिन को चतुष्पद और रात्रि को नाग करण होता है और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन को किंस्तुघ्न करण होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! प्रथम संवत्सर कौनसा प्रथम अयन कौनसी, प्रथम ऋतु कौनसी, प्रथम मास कौनसा, प्रथम पक्ष कौनसा, प्रथम अहो रात्रि कौनसी, प्रथम मुहूर्त कौनसा, प्रथम करण कौनसा, और प्रथम नक्षत्र कौनसा कहा है?अहो गौतम ! संवत्सर में प्रथम चंद्र संवत्सर है, अयन में प्रथम दक्षिणायन है, ऋतु में प्रथम प्रावृट् ऋतु है, मास में प्रथम श्रावण मास है, पक्ष में प्रथम कृष्ण पक्ष है, अहोरात्रि में प्रथम दिन है, मुहूर्त में प्रथम रुद्र है, करण में प्रथम

राओ वत्रकरण भवति ॥ बहुल पक्खस्स पडिवाए दिवा वालव, राओ कोल्व ॥ त्रिइ-याए दिवा त्थीविलोयण राओगराइ ॥ तइयाए दिवावणिज, राओविट्ठी ॥ चउत्थीए दिवा वव, राओ बालवं ॥ पचमीए दिवा कोलव राओ त्थीविलोयण, छट्ठीए दिवा गराइ राओ वाणिज,सत्तमीए दिवाविट्ठी राओ वव ॥ अट्ठमीए दिवा बालव राओ कालव॥नवमीए दिवा त्थीविलोयण राओ गराइ॥दसमीए दिवा वणि ज राओ विट्ठी एक्कारसीए दिवा वव,राओ बालय॥बारसीए दिवा कोलव राओ त्थीविलोयण।तेरसीए दिवागराइ राओ वाणिज।चऊद्द-

विष्टि करण और रात्रि को बब करण होता है कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन को बालव करण, और रात्रि को कोलव करण होता है, द्वितीया के दिन को स्त्री विलोचन करण और रात्रि को गरादि करण होता है, तृतीया के दिन को वाणिज्य करण और रात्रि को विष्टि करण, चतुर्थी के दिन को बब करण और रात्रि को बालव करण, पंचमी के दिन को कौलव करण और रात्रि को स्त्री विलोचन करण, षष्टि के दिन को गरादिकरण और रात्रि को वाणिज्य करण, सप्तमी के दिन को विष्टिकरण और रात्रि को बब करण, अष्टमी के दिन को बालव करण और रात्रि को कौलव करण, नवमी के दिन को स्त्री विलोचन और रात्रिको गरादिकरण, दशमी के दि को वाणज्यकरण और रात्रिको विष्टीकरण, एकादशी के दिनको बबकरण,और रात्रिको बाल्वकरण, द्वादशी के दिनको कौलवकरण और रात्रिको स्त्री विलोचन करण,

॥ नक्षत्राणा मधिकारः ॥

(गाहा)जोगो, देवय, तारग्ग, गोत्त, सठाण, चद, रविजोगो॥ कुल, पुण्णिमअवमसाय, साण्णिवाएअणेताय ॥ १ ॥ कइण भंते ! णक्खत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठावीस णक्खत्ता पण्णत्ता तजहा—अभिई, सवणो, धणिट्ठा, सयाभिसया, पुव्वभद्दवया, उत्तरभद्दवया, रेवई अस्सिणी, भरणी, कत्तिया, रोहिणी, मिअसिर, अद्दा, पुणव्वसु, पूसो,अस्सेसा,मघा, पुव्वफग्गुणी,उत्तरफग्गुणी हत्थो, चित्ता, साई, विसाहा, अणुराहाये,

अब अग्यारह द्वार से नक्षत्रों का कथन करते हैं-१ नक्षत्र का चद्र के साथ योग होना, २ देवता नक्षत्राधिष्ठित ३ नक्षत्र के तारा की सख्या, ४ नक्षत्र के गोत्र, ५ नक्षत्र के संस्थान, ६ चद्रयोग ७ सूर्ययोग ८ कुल उपकुल व कुलोपकुल नक्षत्र का कथन, ९ पूर्णिमा व अमावास्या का कथन, १० सन्निपात और महिने परिसमा नक्षत्र ॥१॥ अहो भगवन् ! नक्षत्र कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! नक्षत्र अठाइस कहे हैं। जिन के नाम—१ अभिजित, २ श्रवण ३ धनिष्ठा ४ शतभिषा, ५ पूर्वाभाद्रपद, ६ उत्तराभाद्रपद, ७ रेवती, ८ अश्विनी, ९ भरनी १० कृत्तिका ११ रोहिनी १२ मृगशर, १३ आर्द्रा, १४ पुनर्वसु, १५ पुष्य, १६ अश्लेषा, १७ मघा, १८ पूर्वाफाल्गुनी, १९ उत्तरा फाल्गुनी, २० हस्त, २१ चित्रा, २२ स्वाति, २३ विशाखा, २४ अनुराधा, २५ ज्येष्टा, २६ मूल,

णक्खत्ता, पण्णत्ता समणाउसो ॥ १ ॥ पचसवच्छारिएण भते ! जुगे केवइया अयणा, केवइया ऊऊ, केवइया मासा केवइया पक्ख, केवइया अहोरत्ता, केवइया मुहुत्ता पण्णत्ता? गोयमा! पच सवच्छरिएण जुगे, दस अयणा, तीस ऊऊ, सट्ठी मासा, एगेवीसुत्तरे पक्खसए अट्ठारस तीसा अहोरत्तसया चउप्पण्ण, मुहुत्त सहस्सा णवसया पण्णत्ता ॥ इति सवच्छर अधिकार ॥ ७ ॥ * * *

थम है, और नक्षत्र में अभिजित् प्रथम है ॥ १ ॥ अहो भगवन्! पांच सवत्सर के बने युग के कितनी अयन, कितनी ऋतु कितने मास, कितने पक्ष, कितनी अहोरात्रि, और कितने मुहूर्त कहे हैं ? अहो गौतम! पांच सवत्सर के बने हुए युग के दश अयन, तीस ऋतु, साठ मास, एक सो बीस पक्ष, अठारह सो तीस अहोरात्रि और चौपन हजार नव सो मुहूर्त कहे हैं यह सवत्सर का अधिकार सपूर्ण हुआ ॥ ७ ॥

तहेव मूलो॥बाहिरओ बाहिर मडलस्स छप्पेते णक्खत्ता॥१॥ तत्थण ज त णक्खत्ता जेण सया चदस्स उत्तरेण जोग जोएति तेण बारस तजहा अभिई, सवण। धणिट्ठा सयाभिसया, पुव्वभद्दवया उत्तरभद्दवया, रेवई, अस्सिणी, भरणी, पुव्वाफग्गुणी, उत्तरफग्गुणी, साई ॥ तत्थण जे ते णक्खत्ता जेण सया चदस्स दाहिणओवि उत्तरओवि पमद्दपि जोग जोएति, तेण सत्त तजहा कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसु मघा, चित्ता, विसाहा, अणुराहा ॥ तत्थण जे ते णक्खत्ता जेणसया चदस्स, दाहिण-ओउवि पमद्दपि जोग जोयति, ताओण दुवे आसाढाओ ॥ सव्वबाहिरए मडलेजोग जोइसुवा, जोइतिवा जोइस्सतिवा ॥ तत्थण जेते णक्खत्ते जेण सया चदस्स

इन में जो नक्षत्र चंद्रमा के साथ उत्तर दिशा से योग करते हैं वे बारह हैं जिन के नाम—१ अभिजित, २ श्रवण, ३ धनिष्टा, ४ शतभिषा, ५ पूर्वाभाद्रपद ६ उत्तराभाद्रपद, ७ रेवती ८ अश्विनी ९ भरनी, १० पूर्वाफाल्गुनी ११ उत्तराफाल्गुनी और १२ स्वाति, अब जो नक्षत्र चद्रमा के साथ सदैव दक्षिण व उत्तर दिशा स प्रमद योग करते हैं वे सात हैं जिन के नाम—१ कृत्तिका, २ रोहिणी, ३ पुनर्वसु ४ मघा ५ चित्रा, ६ विशाखा, और ७ अनुराधा, जो नक्षत्र चद्रमा के साथ सदैव दक्षिण से प्रमद योग करते हैं वे दो हैं जिन के नाम पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा इन सब ने बाहिर के मडल में योग किया, करते हैं व करेंगे

जिट्ठा, मूल, पुव्वासाढा, उत्तरासाढा ॥२॥ एए सिण भते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण कयरे णक्खत्ता जेण सया चदस्स दाहिणेण जोग जोएति ॥ कयरे णक्खत्ता जेण सया चदस्स उत्तरेण जोग, जोएति, कयरे णक्खत्ता जेण चदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणावि पमद्दपि जोग जोएति, कयरे णक्खत्ता जेण चदस्स दाहिणेणवि पमद्दपि जोग जोएति ॥ कयरे णक्खत्ता जेण चदस्स सया पमद्द जोग जोएति ? गोयमा ! एए सिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण तत्थ जे ते णक्खत्ता जेण सया चदस्स दाहिणेण जोग जोएति तेण छ णक्खत्ता तजहा– (गाहा) मियासिर, अद्दा, पुस्सो, सिलेस, हत्थो,

२७ पूर्वाषाढा और २८ उत्तराषाढा ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! इन अट्ठाईस नक्षत्रों में से कितने नक्षत्र सदैव चंद्रमा साथ दक्षिण दिशा से योग करते हैं कितने नक्षत्र चंद्रमा साथ उत्तर दिशा से योग करते हैं, कितने नक्षत्र चंद्रमा साथ दक्षिण व उत्तर से प्रमर्द योग करते हैं कितने नक्षत्र चंद्रमा साथ प्रमर्द योग करते हैं और कितने नक्षत्र चंद्रमा साथ सदैव प्रमर्द योग करते हैं ? अहो गौतम ! इन अट्ठाईस नक्षत्रों में से जो नक्षत्र चन्द्रमा के साथ दक्षिण दिशा से योग करते हैं वे छ हैं जिन के नाम १ मृगशर २ आर्द्रा, ३ पुष्य, ४ अश्लेषा, ५ हस्त और ६ मूल यह नक्षत्र चंद्र के बाहिर के अंतिम मण्डल के बाहिर हैं

णक्खत्ताण एसो परिवाडी णेयव्वा जाव उत्तरासाढा किं देवया पण्णत्ता? गोयमा! विस्स देवया पण्णत्ता ॥ ४ ॥ एएसिण भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभिई णक्खत्ते कइतारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तितारे पण्णत्ते, एव णेयव्वा जस्स जइयाओ ताराओ इमचत तारग्गतिवा—(गाहा)तिग, तिग, पचग, सय, दुगे, दुगे, बत्तीसग, तिग तहतिगच, छ पचग, तिग, एक्कग, पचग, तिग, छक्कग, चेव॥१॥

का नैऋति २७ पूर्वाषाढा का बलदेव और २८ उत्तराषाढा का विश्वदेवता इस तरह क्रम से अठाइस नक्षत्रों के देवता के नाम जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इन अठाइस नक्षत्र में से अभिजित् नक्षत्र के कितने तारे कहे हैं ? अहो गौतम ! अभिजित् नक्षत्र के तीन तारे कहे हैं इस ही प्रकार जिस नक्षत्र के जितने तारे हैं उन की संख्या गाथा द्वारा कहते हैं १ अभिजित् के तीन तारे २ श्रवण के तीन तारे, ३ धनिष्ठा के पांच तारे, ४ शतभिषा के १०० तारे, ५ पूर्वाभाद्रपद के दो तारे, ६ उत्तराभाद्रपद के दो तारे, ७ रेवती के ३२ तारे, ८ अश्विनी के तीन, ९ भरणी के तीन, १० कृत्तिका के छ तारे, ११ रोहिणी के पांच तारे १२ मृगशर के तीन, १३ आर्द्रा का एक, १४ पुनर्वसु के पांच तारे, १५ पुष्य के तीन १६ अश्लेषा के छ तारे, १७ मघा के सात तारे, १८ पूर्वाफाल्गुनी के दो तारे, १९ उत्तराफाल्गुनी के दो तारे, २० हस्त के पांच तारे, २१ चित्रा का एक तारा, २२ स्वाति का एक तारा

पमद्दजोग जोएइ साण एगाजेट्ठा ॥ ३ ॥ एएसिंण भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभिई णक्खत्ते किं देवयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! बम्हदेवयाए पण्णत्ता, सवणे णक्खत्ते विण्हूदेवयाए पण्णत्ता, धणिट्ठावसु देवयाए पण्णत्ता, एएण कमेण णयव्वा अणुपरिवाडी इमाओ देवयाओ तजहा—बम्हा, विण्हू, वसु, वरुण, अवि, अभिवड्ढी, पूसे, आसे, जमे, अग्गी, पयावई, सोमे, रुद्दे, अदिति, विहस्सइ, सप्प, पिउ, भगे, अज्जमे, सविया, तट्ठा, वाऊ, इदग्गी, मित्ते, इंदे, निरइ, आऊ, विस्साय ॥ एव

जो नक्षत्र सदैव चन्द्रमा के साथ प्रमद योग करता है वह एक ज्येष्ठा है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन अठाइस नक्षत्रों में से अभिजित नक्षत्र का कौनसा देवता है ? अहो गौतम ! ब्रह्म नामक देवता है श्रवण नक्षत्र का विष्णु नामक देवता है धनिष्ठा नक्षत्र का वसु देवता है यों नक्षत्रों के अनुक्रम से देवता के नाम जानना जैसे १ ब्रह्म, २ विष्णु ३ वसु ४ शतभिषा का वरुण ५ पूर्वाभाद्रपद का अज ६ उत्तराभाद्रपद का अभिवृद्धि ७ रेवती का पुष्य ८ अश्विनी का अश्व, ९ भरणी का यम, १० कृत्तिका का अग्नि ११ रोहिनी का प्रजापति १२ मृगशर का सोम, १३ आर्द्रा का रौद्र १४ पुनर्वसु का आदित्य १५ पुष्य का ब्रहस्पति, १६ अश्लेषा का सर्प, १७ मघा का पितृ, १८ पूर्वाफाल्गुनी का भाग देव, १९ उत्तराफाल्गुनी का अर्यम, २० हस्त का सविता, २१ चित्रा का त्वष्टा २२ स्वाति का वायु, २३ विशाखा का इन्द्राग्नि, २४ अनुराधा का मित्र, २५ ज्येष्ठा का इन्द्र, २६ मूल

भारद्दाए, लोहिच्चा चेव, वासिट्ठे ॥ २ ॥ ओमज्जायणे' मडव्वायणेय, पिंगायणेय, गोवल्ले,कासव कोसिय दब्भायणे, चामरच्छाय,सुगाय,गोलव्वायण,तेगिच्छायणेअ कच्चा-यणे हवइ मूले, ततोय वग्भिआयणे, वग्घोवच्चेय गोत्ताइ ॥४॥६॥ एएसिण भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभिई णक्खत्ते किं सट्ठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! गोसीसा वलिसठिए पण्णत्ता, गाहा—गोसीसावालि, काहार, सऊणी, पुप्फोवयार ॥ वावीय,

अवमज्जायन गोत्र, १६ अश्लेषा का मंडव्यायन गोत्र, १७ मघा का पिंगायन गोत्र, १८ पूर्वफाल्गुनी का गोवाल्लायन गोत्र, १९ उत्तराफाल्गुनी का काश्यप गोत्र, २० हस्त का कौशिक गोत्र, २१ चित्रा का दर्भायन गोत्र, २२ स्वाति का चामर छायन गोत्र २३ विशाखा का शृगायन गोत्र, २४ अनुराधा का गोवल्यास्यान गोत्र, २५ ज्येष्टा का तिगित्सायन गोत्र, २६ मूल का कात्यायन गोत्र, २७ पूर्वाषाढा का वग्भियायन गोत्र और उत्तराषाढा का व्याघ्रमत्य गोत्र यह अठाइस नक्षत्र के गोत्र कहे हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! इन अठाइस नक्षत्रों में से अभिजित नक्षत्र का कौनसा संस्थान कहा है ? अहो गौतम ! अभिजित नक्षत्र का गोशीर्ष वाली का सस्थान है यों आगे सब का सस्थान गाथा से कहते हैं १ अभिजित का गोशीर्षावाले का संस्थान २ श्रवण का काहारका ३ धनिष्टा पक्षीके पिंजरेका, शतभिषा का पुष्प के पुंजका, ६ उत्तराभाद्रपद का बावडी के आकार, ७ रेवती का नावा के आकार,

सत्तग, दुग, दुग पंचग, एक्के, क्कग, पंच, चउ, तिग, चेव ॥ एक्कारसग, चउक्क, चउक्क, चेव तारग ॥ ५ ॥ एएसिणं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किं गोत्ते पण्णत्ते ? गोयमा ! मोग्गल्लायण गोत्ते ॥ गाहा—मोग्गल्लायण, सखायणे, तहअग्गभाव, कण्णिल्ले ॥ ततोअ आउकण्णे, धणजए चेव बोधव्वे ॥ १ ॥ पुस्सायणेय अस्सायणेय भग्गवेसेय, अग्गिवेसेय, गोयम,

२३ विशाखा के पांच तारे, २४ अनुराधा के चार तारे २५ ज्येष्ठा के तीन तारे २६ मूल के ११ तारे, २७ पूर्वाषाढा के चार तारे, और २८ उत्तराषाढा के चार तारे यों अठ्ठाईस नक्षत्र के ताराओं की संख्या कही ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इन अठ्ठाइस नक्षत्रों में अभिजित् नक्षत्र का कौनसा गोत्र कहा है ? अहो गौतम ! अभिजित् नक्षत्र का मोद्गलायन गोत्र कहा है इस ही प्रकार आगे भी प्रत्येक नक्षत्रों का भिन्न२ गोत्र गाथा से बताते हैं १ अभिजित् नक्षत्र का मोद्गलायन गोत्र, २ श्रवण का सखायन गोत्र, ३ धनिष्ठा का अग्रभाव गोत्र, ४ शतभिषा का कर्णिलायन गोत्र, ५ पूर्वाभाद्रपद का जातुकर्ण गोत्र, ६ उत्तराभाद्रपद का धनंजय गोत्र, ७ रेवती का पुष्यायन गोत्र, ८ अश्विनी का अश्वायन गोत्र, ९ भरणि का भार्गवेश गोत्र, १० कृत्तिका का अग्निवेश गोत्र, ११ रोहिणी का गौतम गोत्र, १२ मृगशर का भारद्वाज गोत्र, १३ आर्द्रा का लोहित्य गोत्र, १४ पुनर्वसु का वशिष्ठ गोत्र, १५ पुष्य का

भरणी भी, अद्दा अस्सेसा साइजेट्ठाय, एए छ णक्खत्ता, पण्णरस मुहुत्त सजोगा ॥ २ ॥ तिण्णे चउत्तराइ पुण्णवव्वसू रोहिणी विसाहाय, एए छ णक्खत्ता पणयाल ॥ ३ ॥ अवसेसा णक्खत्ता, पण्णरस वि हुति तिसइ मुहुत्ता चदंमि मुहुत्ता सयोगा ॥ ३ ॥ अवसेसा णक्खत्ता, पण्णरस वि हुति तिसइ मुहुत्ता चदंमि एस जोगो णक्खत्ताणे मुणेयव्वो ॥ ४ ॥ एतेसिण भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभीई णक्खत्ते कति अहोरत्ते सूरेण सद्धिं जोग जोएति ? गोयमा ! चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोग जोएति ॥ एव इमाहिं गाहाहिं णेयव्वं ॥ अभीई छच्च मुहुत्ते चत्तारिय केवले अहोरत्ते ॥ सूरेण सम गच्छइ एत्तो सेसाण

है १शतभिषा, २भरणी, ३आर्द्रा ४अश्लेषा, ५स्वाति और ६ज्येष्ठा ये छ नक्षत्र पन्नरह मुहूर्त पर्यंत चद्रमा के साथ योग करते हैं १उत्तराभाद्रपद २उत्तराफाल्गुनी, ३उत्तराषाढा, ४पुनर्वसु, ५ रोहिणी व विशाखा ये नक्षत्र तीस महूर्त पर्यंत चद्र के साथ योग करते हैं ॥४॥ अहो भगवन् ! इन अठ्ठाइस नक्षत्रों में से अभिजित् नक्षत्र कितनी अहो रात्रि पर्यंत सूर्य के साथ योग करता है ! अहो गौतम ! अभिजित् नक्षत्र सूर्य के साथ चार अहोरात्रि व छ मुहूर्त तक योग करता है इसी तरह आगे भी सब का प्रमाण गाथा द्वारा कहते हैं अभिजित नक्षत्र चार अहो रात्रि व छ मुहूर्त पर्यंत योग करता है, शतभिषा, भरणी, आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति और ज्येष्ठा ये नक्षत्र छ अहो रात्रि व इक्कीस मुहूर्त पर्यंत सूर्य के साथ योग करते हैं, १उत्तराभाद्रपद, २उत्तरा फाल्गुनी

णात्राय, आसक्खधग, भग, छुरधाराय, सगडुद्धी, मिगसीसावलि, रुहिरबिंदु तुच्छ, वद्धमाणग, पडागा, पागारे, पलिअके, हत्थ,मुहफुल्लएचेव ॥ २ ॥ कीलग, दामणि, एगावलीय, गयदत विच्छुलगुले, ॥ गयविक्कमेय ततो सीहनिसीईय सठाणा ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥ एएसिण भते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभिई णक्खत्ते कई मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोग जोएई ? गोयमा! णव मुहुत्ते सत्तावीसच सत्तसट्ठि भाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धिं जोग जोएइ ॥ एव इमाहिं गाहाहिं अणुगतव्व—अभिइस्स चदजोगो सत्तट्ठि खडीओ अहोरत्तो, तेहुति णवमुहुत्ता सत्तावीस कलाओय ॥१॥ सयभिसया

८अश्विनी का अश्वस्कंध जैसा ९भरणि का भग,जैसा १०कृत्तिका का क्षुरधार का ११रोहिणी का शकट (गाडे) के आकार १२मृगशर का मृगशीर्ष जैसा १३आर्द्रा का रुधिर बिन्दु समान १४ पुनर्वसु का तुला १५पुष्य का वर्धमान सरावले का १६ अश्लेषा का ध्वजा का संस्थान १७मघा का गढ का संस्थान १८ पूर्वाफाल्गुनी और १९ उत्तराफाल्गुनी का पर्यंक का संस्थान २०हस्त का हाथ के पंजे का संस्थान २१ चित्रा का मुख के आभरण का २२ स्वाति का कीलक का संस्थान २३ विशाखा का दामनी का संस्थान २४ अनुराधा का एकावली का संस्थान,२५ज्येष्ठा का गजदांत का संस्थान २६मूल का वृश्चिक की पृछ का संस्थान,२७ पूर्वाषाढा का गज विक्रम और २८ उत्तराषाढा का बैठा हुवा सिंह का संस्थान है ॥७॥ अहो भगवन् ! अठाईस नक्षत्र कितने मुहूर्त पर्यंत चंद्र के साथ योग करते हैं? अहो गौतम! अभिजित नक्षत्र ९२७/६७ मुहूर्त पर्यंत चद्रमा के साथ योग करता

कुल, मघाकुल, उत्तर फग्गूणीकुलं, चित्ताकुल, विसाहाकूल, मूलोकूल, उत्तारासाढा कुल, ॥ (गाहा) मासाण परिणामा होति कुलाओवकुलाउहेट्ठिमगा॥ होति पुणकुलोवकुला, अभीइसय अद्द अणुराहा, ॥ १ ॥ बारस उवकुला, तजहा—सवणो उवकुल, पुव्वभद्दवया उवकुल, रेवई उवकुल, भरणी उवकुल, रोहिणी उवकुल, पुणव्वसु उवकुल, अस्सेसा उवकुल, पुव्वफग्गुणी उवकुल, हत्थोउवकुल, साईउवकुल, जेट्ठा उवकुल, पुव्वासाढा उवकुल, ॥ चत्तारि कुलोवकुला तजहा—अभिई कुलोवकुला, सयभिसया कुलोवकुला, अद्दा कुलोवकुला, अणुराहा कुलोवकुला ॥ ९ ॥ कईण भते पुण्णिमाओ कई अमावासाओ पण्णत्ता ? गोयमा ! बारस पुण्णिमाओ,

के दिन आवे वह कुल नक्षत्र कुल के आगे का नक्षत्र उस मास की पूर्णिमा को आवे सो उपकुल और उपकुल नक्षत्र पीछे का नक्षत्र आवे सो कुलोपकुल होता है बारह उपकुल हैं जिनके नाम १ श्रवण, २ पूर्वाभाद्रपद, ३ रेवती ४ भरणी, ५ रोहिणी, ६ पुनर्वसु, ७ अश्लेषा, ८ पूर्वाफाल्गुनी, ९ हस्त, १० स्वाति, ११ ज्येष्ठा और १२ पूर्वाषाढा चार कुलोपकुल अभिजित् शतभिषा, आर्द्रा और अनुराधा ये चार कुलोपकुल ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! कितनी पूर्णिमा व कितनी अमावास्या कही हैं ? अहो गौतम ! बारह पूर्णिमा व बारह अमावास्या

वोच्छामि ॥ १ ॥ सयभिसया भरणीओ, अद्दा अस्सेसाइ जेट्ठाया, वच्चति मुहुत्ते इक्कवीसा छच्चेव अहोरत्ता ॥ २ ॥ तिण्णिव उत्तराइ पुणव्वसू रोहिणी विसाहाय ॥ वच्चति मुहुत्ते तिण्णि चेव वीस अहोरत्ते ॥ ३ ॥ अवसेसा णक्खत्ता पण्णरसवि सूरसहगयाजति ॥ बारस चेव मुहुत्ते, तेरसयसमे अहोरत्ते ॥ ४ ॥ ८ ॥ कइंण भते ! कुला कई उवकुला कई कुलोवकुला पण्णत्ता ? गोयमा ! बारस कुला, बारस उवकुला चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता ॥ बारस कुला पण्णत्ता तजहा– धणिट्ठा कुल, उत्तरभद्दवयाकुल, अस्सिणीकुल, कत्तियाकुल, मिअसिरकुल, पुस्सो-

३ उत्तराषाढा ४ पुनर्वसु ५ रोहिणी और ६ विशाखा ये छ नक्षत्र बीस अहो रात्रि व तीन मुहूर्त पर्यन्त सूर्य के साथ योग करते हैं, और शेष पन्नरह नक्षत्र तेरह अहो रात्रि और बारह मुहूर्त पर्यंत सूर्य के साथ योग करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कितने कुल नक्षत्र, कितने उपकुल नक्षत्र, और कितने कुलो- पकुल नक्षत्र हैं ? अहो गौतम ! बारह कुल नक्षत्र, बारह उपकुल नक्षत्र और चार कुलोपकुल नक्षत्र हैं बारह कुल नक्षत्र के नाम—१ धनिष्टा, २ उत्तराभाद्रपद, ३ अश्विनी, ४ कृत्तिका, ५ मृगशर, ६ पुष्य ७ मघा, ८ उत्तराफाल्गुनी ९ चित्रा १० विशाखा ११ मूल, और १२ उत्तराषाढा जो नक्षत्र महिने के नाम से होवे और महिने की पूर्णिमा

गोयमा ! दो जोग जएति तंजहा रेवई अस्सिणीय ॥कत्तीईण दो-भरणी कत्तिआय॥ मग्गसिरीणदो रोहिणी मग्गसिरच ॥ पोसिण तीणि-अद्दा, पुणव्वसू, पुस्सो ॥ माघीण दो-अस्सेसा मघाय ॥ फग्गुणीण दो पुव्वफग्गुणीय, उत्तराफग्गुणीय ॥ चेत्तीण दो हत्थो, चित्ताय ॥ वेसाहीण दो-साई, विसाहाय ॥ जेठा मूलीण तिण्णि-अणुरहा जेठा मूलो॥आसाढीण दो पुव्वासाढा उत्तरासाढाय॥ १ १॥साविट्ठीण भंते!पुण्णिम किं कुले जोएइ, उवकुल जोएई, कुलोव कुलजोएइ? गोयमा ! कुल जोएई, उवकुल वाजोएई कुलोवकुलवा जोएई कुलजोएमाणे—धणिट्ठा णक्खत्ते जोएई उवकुल

योग होता है जिन के नाम-रेवती और अश्विनी अहो भगवन्!कार्तिकी पूर्णिमा को कितने नक्षत्र का योग होता है ? अहो गौतम ! दो नक्षत्र योग होता है जिन के नाम-भरणी और कृत्तिका मृगशर मास की पूर्णिमा को दो नक्षत्र योग होता है जिन के नाम—रोहिणी और मृगशर पोषी पूर्णिमा को तीन नक्षत्र जिनके नाम-आर्द्रा,पुनर्वसु और पुष्य माघ मास की पूर्णिमा को दो नक्षत्र अश्लेषा औरमघा फाल्गुनीपूर्णिमा को दो पूर्वा फाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी, चैत्री पूर्णिमा को दो-हस्त और चित्रा, विशाखी पूर्णिमा कोदो स्वाति और विशाखा ज्येष्ठा मूली को तीन अनुराधा, ज्येष्ठा व मूल और अषाढी पूर्णिमा को दो पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा ॥ ११ ॥अहो भगवन्! श्रावण पूर्णिमा को क्या कुल नक्षत्र योग का होता है कि उपकुल का योग होता है या कुलोपकुल नक्षत्र का योग होता है ? अहो गौतम ! कुल नक्षत्र का भी योग होता है उपकुल नक्षत्र का भी योग होता है

बारस अमावासाओ पण्णत्ताओ, तंजहा—साविट्ठी, पोठवई, आसोई, कत्तिगी, मग्गसिरि, पोसी, माही, फग्गुणी, चेत्ती, वेसाही, जेट्ठामूली, आसाढी ॥ १० ॥ साविट्ठीण भंते ! पुण्णमासिं कइ णक्खत्ता जोग जोएति ? गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता जोग जोएति तंजहा—अभिई सवणो धणिट्ठा ॥ पोठवईण भंते ! पुण्णिम कइणक्खत्ता जोगजोएति ? गोयमा ! तिण्णिणक्खत्ता जोगजोएति तंजहा सयभिसया पुव्वभद्दवया, उत्तरभद्दवय ॥ आसोइण भंते ! पुण्णिम कइणक्खत्ता जोगजोएति ?

कही हैं १ श्राविष्टी श्रावण मास की २ भाद्रपद मास की पोष्टवती, ३ आश्विन मास की आश्विनी ४ कार्तिक मास की कार्तिकी, ५ मृगसर मास की मृगश्री, ६ पोष मास की पोषी, ७ माघ मास की माघी, ८ फाल्गुन मास की फाल्गुनी, ९ चैत मास की चैत्री, १० वैशाख मास की विशाखी, ११ ज्येष्ट मासकी ज्येष्टा मूली और १२ अषाढ मास की आषाढी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! श्रावण मास की पूर्णिमा को कितने नक्षत्र योग करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र योग करते हैं जिन के नाम—१ अभिजित् २ श्रवण और ३ धनिष्ठा अहो भगवन् ! पोष्टवती (भाद्रवी) पूर्णिमा को कितने नक्षत्र का योग होता है ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र योग होता हैं जिन के नाम—शतभिषा पूर्वाभाद्रपद और उत्तरा भाद्रपद अहो भगवन् ! आश्विनी पूर्णिमा को कितने नक्षत्र का योग होता है ? अहो गौतम ! दो नक्षत्र

उवकुलजोएमाणे-रेवई णक्खत्ते जोएइ, आस्सोईण पुण्णिमं कुलंवाजोएइ उवकुलवा जोएई, कुलेणवाजुत्ता उवकुलेणवाजुत्ता, आस्सोई पुण्णिमा जुत्तोत्ति वत्तव्वसिया ॥ कत्तिइण भते ! पुण्णिम किंकुलत्रा ३ पुच्छा ? गोयमा ! कुलंवाजोएई उवकुलवा जोएई, णो कुलोवकुलजोएई कुलजोएमाणे-कत्तिया णक्खत्ते जोएई, उवकुलभरणी, कत्तिइण जाव वत्तव्वासिया ॥ मग्गासिरिण भते ! पुण्णिम किंकुल तचेव दो जोएई णो भवति कुलोवकुल कुलजाएमाणे मग्गसिर णक्खत्ते, उवकुलरोहिणी मग्गसि-रीण पुण्णिम जाव वत्तव्वसिया ॥ एव सेसियाओवि 'जाव आसाढि पोसिं जेठामूलींच

होता है कुल योग होवे तो उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का योग होवे, उपकुल का योग होवे तो पूर्वाभाद्रपद और कुलोपकुल योग होवे तो शतभिषा इस से यावत् प्रोष्टवती पूर्णिमा कुल, उपकुल व कुलोपकुल नक्षत्र से युक्त है आश्विनी पूर्णिमा की पृच्छा ? कुल अथवा उपकुल का दो प्रकार का योग होता है, कुल के योग में अश्विनी और उपकुल योग में रेवती नक्षत्र का योग होता है कार्तिकी पूर्णिमा को कुल उपकुल दो नक्षत्र का योग होता है, कुलमें कृत्तिका और उपकुलमें भरणी मृगशर पूर्णिमा को कुल अथवा उपकुल दो नक्षत्र का योग होता है, कुलका योग होवे तो मृगशर और उपकुल होवे तो रोहिणी इस तरह यावत् अषाढी पूर्णिमा पर्यंत सब पूर्णिमा का योग कहना पोषी और ज्येष्ठा मूली को कुल उपकुल व कुलोपकुल तीनों प्रकार के योग कहना शेष में कुल

जोएमाणे सवणणक्खत्ते जोएई, कुलोवकुल जोएमाणे—अभिई णक्खत्ते जोएई सावित्थीणं पुण्णमासि कुलवा जोएई जाव कुलोव कुलवा जोएई कुलेणवाजुत्ता उवकुलेणवाजुत्ता, कुलोवकुलेणवाजुत्ता, साविठी पुण्णिमा जुत्तेत्तिवत्तव्वसिया ॥ पोठवइण भंते ! पुण्णिम किं कुल जोएई, उवकुल जोएई, कुलोवकुल जोएई ? गोयमा ! कुलवा, उवकुलवा कुलोवकुलवा जोएइ, कुलंजोएमाणे उत्तरभद्दवया णक्खत्ते जोएइ, उवकुलपुव्वभद्दवया, कुलोयकुलसयाभिसया पोट्ठवईण पुण्णिमा कुलवा जोएइ जाव कुलोवकुलवा जोएइ, कुलेणवाजुत्ता जाव कुलोवकुलेवाजुत्ता पोट्ठवइ पुण्णिमा जुत्तेति वत्तव्वसिया ॥ आस्सोईण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! कुलवा जोएई उवकुलवा जोएइ, णो कुलोवकुल जोएइ, कुल जोएमाणे-अस्सिणी णक्खत्ते जोएई,

अथवा कुलोपकुल नक्षत्र का भी योग होता कुल नक्षत्र का योग होवे तो धनिष्ठा नक्षत्र होवे, उपकुल नक्षत्र का योग होवे तो श्रवण नक्षत्र होवे और कुलोपकुल नक्षत्र का योग होवे तो अभिजित् नक्षत्र होवे इस तरह श्रावणी पूर्णिमाके कुल उपकुल अथवा कुलोपकुल यों तीनों नक्षत्रों का योग होता है, इस से श्रावणी पूर्णिमा कुल, उपकुल अथवा कुलोपकुल तीनों प्रकार से युक्त कही जाती है अहो भगवन् पोषवती (भाद्रवी) पूर्णिमा को क्या कुल उपकुल अथवा कुलोपकुल नक्षत्र का योग होता है? अहो गौतम! कुल, उपकुल व कुलोपकुल यों तीनों प्रकार के नक्षत्र योग का

भरणी, कत्तिआय, जेठा मूलीण दो रोहिणी मग्गसिरच्च ॥ आसाढीणं तिण्णि-अद्दा, पुणव्वसु पुस्सो ॥ १४ ॥ साविट्ठीण भते ! अमावास किं कुलजोएई उवकुलजोएई कुलोवकुलजोएई ? गोयमा ! कुलवाजोएइ उवकुलवा जोएई णोलभइकुलोवकुल कुलजोएमाणे-महाणक्खत्ते जोएइ, उवकुल जोएमाणे-अस्सेसाणक्खत्ते जोएइ सावित्ठीण अमावास कुलवाजोएई उवकुलवा जोएई कुलेणवाजुत्ता, उवकुलेणवाजुत्ता साविट्ठी अमावासा जुत्तेत्तिवत्तव्वसिया ॥ पोट्ठवईण भते ! अमावासा तचेव दो जोएइ कुलवा, उवकुलवा, णो लभते कुलोवकुल कुलजोएमाणे उत्तराफग्गुणी,

अमावास्या को दो-भरणी व कृत्तिका, ज्येष्ठा मूली को दो-रोहिणी व मृगशर, अषाढी को तीन आर्द्रा, पुनर्वसु व पूष्य ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! श्रावणी अमावास्या को क्या कुल नक्षत्र का योग होता है कि उपकुल का योग होता है कि कुलोपकुल नक्षत्र का योग होता है ? अहो गौतम ! कुल अथवा उपकुल नक्षत्र का योग होता है परतु कुलोपकुल नक्षत्र का योग नहीं होता है कुल नक्षत्र का,योग होवे तब मघा का योग होवे और उपकुल नक्षत्र का योग होवे तब अश्लेषा का होवे यों श्रावण की अमावास्या कुल अथवा उपकुल का योग होवे इस से श्रावण की अमावास्या कुल अथवा उपकुल से युक्त है पोष्टपती [भाद्रवी] अमावास्या को कुल अथवा उपकुल दोनों प्रकार के नक्षत्र का योग होवे कुल का योग होवे तब उत्तराफाल्गुनी का होवे और उपकुल का योग होवे तब पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का

कुलवा उवकुलंवा कुलोवकुलवा सेसियाण कुलवा उवकुलवा कुलोवकुलवा णभण्णई ॥१३॥ साविठीम भते!अमावस कइणक्खत्ता जोएति ? गोयमा!दो णक्खत्ता जोएति तंजहा अस्सेसाय, महाय ॥ पोट्ठवईण भंते ! अमावास कइणक्खत्ता जोएंति ? गोयमा ! दो–पुव्वाफग्गुणीय, उत्तराफग्गुणिय, ॥ आस्सोइण दो हत्थो चित्ताय ॥ कत्तिइण दो-साई, विसाहाय ॥ मग्गसिरिण तिण्णि- अणुराहा जेट्ठा मूलेय॥पोसीण दो पुव्वासाढा, उत्तरासाढाय॥माहिण तिण्णि अभिई सवणो धणिट्ठा॥फग्गुणीण तिण्णि सयभिसया पुव्वभद्दवया, उत्तर भद्दवया॥चेत्ताण-दो रेवई अस्सिणीय, वेसाहीण दो-

व उपकुल दोही प्रकार के कहना॥१३॥अहो भगवन्'श्रावण मास की अमावास्या को कितने नक्षत्र का योग होता है अहो गौतम'दो नक्षत्र का योग होता है जिन के नाम-अश्लेषा और मघा अहो भगवन्'पोटरवी (भाद्रवी) अमावास्या को कितने नक्षत्र का योग होता है!अहो गौतम!दो नक्षत्र का योग होता है जिन के नाम-पूर्वाफाल्गुनी व उत्तराफल्गुनी आश्विन मास को दो नक्षत्र का योग होता है हस्त और चित्रा कार्तिकी अमावास्या को दो-स्वाति और विशाखा मृगशर की अमावस्या को तीन अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल पोष की अमावास्या को दो पूर्वाषाढा व उत्तराढा. माघ की अमावास्या को तीन आभिजित, श्रवण व धनिष्ठा फाल्गुनी को अमावास्या को तीन-शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद व उत्तराभाद्रपद चैत्र की अमावास्या का दो-रेवती व अश्विनी, वैशाखी

भरणी, कत्तिआय, जेठा मूलीण दो रोहिणी मग्गसिरच ॥ आसाढीणं तिण्णि-अद्दा, पुणव्वसु पुस्सो ॥ १९ ॥ साविट्ठीण भंते ! अमावास किं कुलजोएई उवकुलजोएई कुलोवकुलजोएई ? गोयमा ! कुलवाजोएइ उवकुलवा जोएई णोलभइकुलोवकुल कुलजोएमाणे-महाणक्खत्ते जोएइ, उवकुल जोएमाणे-असेसाणक्खत्ते जोएइ साविट्ठीण अमावास कुलवाजोएई उवकुलवा जोएई कुलेणवाजुत्ता, उवकुलेणवाजुत्ता साविट्ठी अमावासा जुत्तेत्तिवत्तव्वसिया ॥ पोट्ठवईण भंते ! अमावासा तचेव दो जोएइ कुलवा, उवकुलवा, णो लभते कुलोवकुल कुलजोएमाणे उत्तराफग्गुणी,

अमावास्या को दो-भरणी व कृत्तिका, ज्येष्ठा मूली को दो-रोहिणी व मृगशर, अषाढी को तीन-आर्द्रा, पुनर्वसु व पूष्य ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! श्रावणी अमावास्या को क्या कुल नक्षत्र का योग होता है कि उपकुल का योग होता है कि कुलोपकुल नक्षत्र का योग होता है ? अहो गौतम ! कुल अथवा उपकुल नक्षत्र का योग होता है परतु कुलोपकुल नक्षत्र का योग नहीं होता है कुल नक्षत्र का,योग होवे तब मघा का योग होवे और उपकुल नक्षत्र का योग होवे तब अश्लेषा का होवे यों श्रावण की अमावास्या कुल अथवा उपकुल का योग होवे इस से श्रावण की अमावास्या कुल अथवा उपकुल से युक्त है पोष्टवती [भाद्रवी] अमावास्या को कुल अथवा उपकुल दोनों प्रकार के नक्षत्र का योग होवे कुल का योग होवे तब उत्तराफाल्गुनी का होवे और उपकुल का योग होवे तब पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का

णक्खत्ते जोएई ॥ उवकुलं पुव्वफग्गुणी पोठवईण अमावास जाव वत्तव्वसिया ॥ मग्गसिरीण तचेव कुलंमूले णक्खत्ते जोएई, उवकुल जेठा, कुलोवकुल अणुराहा जाव जुत्ताति वत्तव्वंसिया कुलएवं माहीए ॥ फग्गुणीए आसाढीए कुलवा उवकुल-वा कुलोवकुलवा, अवसेसियाण कुलवा उवकुलवा जोएई ॥ १५ ॥ जयाण भंते ! साविट्ठी पुण्णिमा भवई तयाणं माही अमावासा भवई ? जयाण भंते ! माही पुण्णिमा भवई, तयाणं साविट्ठी अमावासा भवई ? हंता गोयमा ! जयाण साविट्ठी तचेव वत्तव्व ॥ जयाण भंते ! पोट्ठवई पुण्णिमा भवई तयाण फग्गुणी अमावासा

होवे मृगशर अमावास्या को कुल, उपकुल व कुलोपकुल तीनो प्रकार के नक्षत्र का योग होवे कुल का योग होवे तब मूल, उपकुल का होवे तब ज्येष्ठा और कुलोपकुल का होवे तब अनुराधा ऐसे ही माघ, फाल्गुन व अषाढ मास की अमावास्या को तीनों नक्षत्र का योग होता है और शेष सब अमावास्या को कुल व उपकुल दो प्रकार के ही नक्षत्र का योग होता है ॥१५॥ अहो भगवन्! जब श्रावण मास की पूर्णिमा होती है तब क्या माघ मास की अमावास्या होती है? और जब माघ मास की पूर्णिमा होती है तब क्या श्रावण मास की अमावास्या होती है ? हां गौतम !// जब श्रावण मास की अमावास्या होती है तब माघ मास की पूर्णिमा होती है और जब माघ

भवई जयाण फग्गुणी पुण्णिमा भवई तयाण पोट्ठवई अमावासा भवई ? हता गोयमा! तचेव॥एव एएण अभिलावेण इमाओ पुण्णिमाओ अमावासाओ णेअव्वाओ अस्सिणी पुण्णिमा चेत्तीअमावासा कत्तीगी पुण्णिमा वेसाही अमावासा, मग्गसिरी पुण्णिमा जेट्ठा मूली अमावासा, पोसी पुण्णिमा आसाढी अमावासा॥ १६ ॥ वासाण भते ! पढम मास कइणक्खत्ताणेति? गोयमा! चत्तारि णक्खत्ता णेति तजहा-उत्तरासाढा, अभिई सवणे, धणट्ठा। उत्तरासाढा,चउद्दस अहोरत्ता णइ, अभिई सत्त अहोरत्तणेइ,सवणो अट्ठ अहोरत्तणेइ, धणिट्ठा एग अहोरत्तणेइ ॥ तसिचण मासंसि चउरंगुल पोरसीए छायाए

मास की पूर्णिमा होती है तब श्रावण की अमावास्या होती है इसी अभिलाप से पूर्णिमा व अमावास्या का कथन करना पोष्टपदी पूर्णिमा फाल्गुनी अमावास्या आश्विनी पूर्णिमा चैत्री अमावास्या कार्तिकी पूर्णिमा वैशाखी अमावास्या मृगशरी पूर्णिमा, ज्येष्ठा मूली अमावास्या, पोषी पूर्णिमा अषाढी अमावास्या ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! वर्षा ऋतु के प्रथम मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं? अहो गौतम ! चार नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम-उत्तराषाढा, अभिजित, श्रवण व धनिष्ठा उत्तराषाढा चउदह अहोरात्रि अभिजित सात अहोरात्रि, श्रवण आठ अहोरात्रि, और धनिष्ठा एक अहोरात्रि पर्यंत रहता है उस मास में चार अंगुल की

भवइ ॥ हेमताण भते ! तच्च मास कइ णक्खत्ता णेंते ? गोयमा ! तिण्णि तंजहा-पुस्सो, असिलेसा, महा पुस्सो चउद्दस, असिलेसा पण्णरस, महाएक्क तयाण वीसंगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसिचण दिवससि तिण्णिपयाइ अट्ठंगुलाइ पोरसी भवइ ॥ हेमताण भते ! चउत्थे मासे कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तजहा—महा पुव्वाफग्गुणी, उत्तरा फग्गुणी चउद्दस, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस, उत्तरा फग्गुणी एग अहोरत्त णेइ तयाण सोलस-

और पूष्य एक दिन पर्यंत रहता है उस समय चउवीस अंगुल प्रमाण पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस के अंतिम दिन को तीन पांव चार अंगुल से पौरसी होती है अहो भगवन्! हेमंत ऋतु के तीसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं? अहो गौतम! तीन नक्षत्र आते हैं जिन के नाम-पूष्य, अश्लेषा और मघा पूष्य चउदह दिन, अश्लेषा पन्नरह दिन और मघा एक दिन पर्यंत रहता है उस समय वीस अंगुल प्रमाण पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के अंतिम दिन को तीन पांव व आठ अंगुल से पौरुषी होती है अहो भगवन्! हेमंत ऋतु के चतुर्थ मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं? अहो गौतम! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम—मघा पूर्वा फाल्गुनी, व उत्तराफाल्गुनी, मघा चउदह दिन, पूर्वा फाल्गुनी

कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तजहा कत्तिया, रोहिणी, मिअसिर कत्तिया चउद्दस, रोहिणी पण्णरस मियसिर एग अहोरत्त णेंति तसिचण मासासि वीसगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जे से चरिमेदिवसे तसिचण दिवससि तिण्णिपयाइ अट्ठय अगुलाइ पोरसि भवई ॥ हेमताण भंते ! दोच्चमास कइणक्खत्ताणेंति ? गोयमा! चत्तारि णक्खत्ताणेंति तजहा—मिअसिर, अद्दा, पुणव्वसु, पुस्सो मिगसिर चउदस, अद्दाअट्ठ, पुणवसूसत्त, पुस्सोएग, राइंदियणेइ॥ तयाण चउवीसगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टई ॥ तस्सण मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तसिचण दिवससि लेहट्ठाइ चत्तारि पयाइ पोरसि

दिन आता है॥१७॥ अहो भगवन्! हेमंत ऋतु के प्रथम मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम—कृत्तिका, रोहिणी व मृगशर कृत्तिका चउदह दिन, रोहिणी पन्नरह दिन और मृगशर एक दिन, यों तीस दिन होते हैं उस मास में बीस अंगुल की पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के चरिम दिन में तीन पांव आठ अंगुल की पौरुषी होती है अहो भगवन् ! हेमंत ऋतु के दूसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! चार नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम-मृगशर, आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य मृगशर चउदह दिन, आर्द्रा आठ दिन, पुनर्वसु सात दिन,

भवइ ॥ हेमताण भते ! तच्चे मासे कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तजहा-पुस्सो, असिलेसा, महा पुस्सो चउद्दस, असिलेसा पण्णरस, महाएक तयाण वीसगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तसिचण दिवससि तिण्णिपयाइ अट्ठगुलाइ पोरसी भवइ ॥ हेमताण भते ! चउत्थे मासे कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तजहा—महा पुव्वाफग्गुणी, उत्तरा फग्गुणी चउद्दस, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस, उत्तरा फग्गुणी एग अहोरत्त णेइ तयाण सोलस-

और पूष्य एक दिन पर्यंत रहता है उस समय चउवीस अगुल प्रमाण पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस के अतिम दिन को तीन पांव चार अगुल से पोरसी होती है अहो भगवन्! हेमंत ऋतु के तीसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं? अहो गौतम! तीन नक्षत्र आते हैं जिन के नाम-पूष्य, अश्लेषा और मघा पूष्य चउदह दिन, अश्लेषा पन्नरह दिन और मघा एक दिन पर्यंत रहता है उस समय वीस अंगुल प्रमाण पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के अंतिम दिन को तीन पांव व आठ अंगुल से पोरुपी होती है अहो भगवन्! हेमत ऋतु के चतुर्थ मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं? अहो गौतम! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम—मघा पूर्वा फाल्गुनी, व उत्तराफाल्गुनी, मघा चउदह दिन, पूर्वा-फाल्गुनी

कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तजहा कत्तिया, रोहिणी, मिअसिर कत्तिया चउद्दस, रोहिणी पण्णरस मियसिर एग अहोरत्त णेति तंसिचण मासंसि वीसंगुल पारसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जे से चरिमेदिवसे तंसिचण दिवसंसि तिण्णिपयाइ अट्ठय अगुलाइ पोरसि भवई ॥ हेमताण भंते ! दोच्चमास कइणक्खत्ताणेंति ? गोयमा! चत्तारि णक्खत्ताणेंति तजहा—मिअसिर, अद्दा, पुणव्वसु, पुस्सो मिगसिर चउदस, अद्दाअट्ठ, पुणवसूसत्त, पुस्सोएग, राइदियणेइ॥ तयाण चउवीसंगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टई ॥ तस्सण मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसिचण दिवसंसि लेहट्ठाइ चत्तारि पयाइ पोरसि

दिन आता है॥१७॥ अहो भगवन्! हेमंत ऋतु के प्रथम मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम—कृत्तिका, रोहिणी व मृगशर कृत्तिका चउदह दिन, रोहिणी पनरह दिन और मृगशर एक दिन, यों तीस दिन होते हैं उस मास में बीस अंगुल की पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के चरिम दिन में तीन पांव आठ अंगुल की पौरुषी होती है अहो भगवन् ! हेमंत ऋतु के दूसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! चार नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम-मृगशर, आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य मृगशर चउदह दिन, आर्द्रा आठ दिन, पुनर्वसु सातदिन,

भवइ ॥ हेमताण भते ! तच्चे मासे कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तंजहा-पुस्सो, असिलेसा, महा पुस्सो चउद्दस, असिलेसा पण्णरस, महाएक्क तयाण वीसंगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तसिंचण दिवससि तिण्णिपयाइ अट्ठगुलाइ पोरसी भवइ ॥ हेमताण भते ! चउत्थे मासे कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तंजहा—महा पुव्वाफग्गुणी, उत्तरा फग्गुणी चउद्दस, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस, उत्तरा फग्गुणी एग अहोरत्त णेइ तयाण सोलस-

और पुष्य एक दिन पर्यंत रहता है उस समय चउवीस अंगुल प्रमाण पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस के अंतिम दिन को तीन पांव चार अंगुल से पौरसी होती है अहो भगवन्! हेमत ऋतु के तीसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं? अहो गौतम! तीन नक्षत्र आते हैं जिन के नाम-पुष्य, अश्लेषा और मघा पुष्य चउदह दिन, अश्लेषा पन्नरह दिन और मघा एक दिन पर्यंत रहता है उस समय वीस अंगुल प्रमाण पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के अंतिम दिन को तीन पांव व आठ अंगुल से पौरुषी होती है अहो भगवन्! हेमत ऋतु के चतुर्थ मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं? अहो गौतम! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम—मघा पूर्वा फाल्गुनी व उत्तराफाल्गुनी, मघा चउदह दिन, पूर्वा फाल्गुनी

गुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्सण मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तसिंचण दिवसंसि तिण्णिपयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरसीभवइ ॥ १८ ॥ गिम्हाण भते ! पढम मास कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तजहा–उत्तरा फग्गुणी, हत्थो, चित्ता, उत्तरा फग्गुणी चउद्दस, हत्थो पण्णरस, चित्ता एग राइंदियणेइ ॥ तयाण दुवालसगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसिंचण माससि लेहट्ठाइ तिण्णि पयाइ पोरसी भवइ ॥ गिम्हाण भते ! दोच्च मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा! तिण्णि तजहा–चित्ता, साई, विसाहा चित्ता चउद्दस

पन्नरह दिन और उत्तराफाल्गुनी एक दिन तक रहता है उस समय सोलह अंगुलकी पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है और उस मास के अंतिम दिन को तीन पांव व चार अंगुल से पोरसी होती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! ग्रीष्म ऋतु के प्रथम मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम-उत्तराफाल्गुनी, हस्त व चित्रा उत्तराफाल्गुनी चउदह दिन, हस्त पन्नरह दिन और चित्रा एक दिन तक रहता है उस समय बारह अंगुल की पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है और पौनेतीन पांव से पोरसी होती है अहो भगवन् ! ग्रीष्म ऋतु के दूसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं चित्रा, स्वाति व विशाखा चित्रा चउदह दिन, स्वाति पन्नरह दिन और

साई पण्णरस, विसहा एग राइंदियणेइ, तयाण अट्ठंगुलपोरसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि दो पयाइ अट्ठगुलाइ पोरिसी भवई ॥ गिम्हाणं भते ! तच्च मास कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! चत्तारि तजहा विसाहा, अणुराहा जेट्ठामूलो विसाहा चउद्दस, अणुराहा अट्ठ, जेट्ठा सत्त, मूलो एक्क राइदिअ णेइ तयाण चउरंगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणु परियट्टइ तस्सण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसिदिवससि दो पयाइ चत्तारि अंगुलाइ पोरसी भवइ ॥ गिम्हाणं भते! चउत्थमास कइ णक्खत्ता णेंति? गोयमा ! तिण्णि

विशाखा एक दिन रहता है उस समय आठ अंगुल पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के चरिम दिन को दो पाव आठ अंगुल से पोरसी होती है अहो भगवन् ! ग्रीष्म ऋतु के तीसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! चार नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम—विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल विशाखा चउदह दिन, अनुराधा आठ दिन, ज्येष्ठा सात, और मूल एक अहोरात्रि तक रहता है उस समय चार अंगुल पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के चरिम दिन को दो पाव व चार अंगुल से पोरसी होती है. अहो भगवन् ! ग्रीष्म ऋतु के चतुर्थ मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ?

गुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्सण मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तसिचण दिवससि तिण्णिपयाइ चत्तारि अगुलाइं पोरसीभवइ ॥ १८ ॥ गिम्हाण भते ! पढम मास कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तजहा–उत्तरा फग्गुणी, हत्थो, चित्ता, उत्तरा फग्गुणी चउद्दस, हत्थो पण्णरस, चित्ता एगराइंदियणेइ ॥ तयाणं दुवालसगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसिचण माससि लेहट्ठाइ तिण्णि पयाइ पोरसी भवइ ॥ गिम्हाण भते ! दोच्च मास कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा! तिण्णि तजहा–चित्ता, साई, विसाहा चित्ता चउद्दस

पन्नरह दिन और उत्तराफाल्गुनी एक दिन तक रहता है. उस समय सोलह अंगुलकी पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है और उस मास के अंतिम दिन को तीन पांव व चार अंगुल से पोरसी होती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! ग्रीष्म ऋतु के प्रथम मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम-उत्तराफाल्गुनी, हस्त व चित्रा उत्तराफाल्गुनी चउदह दिन, हस्त पन्नरह दिन और चित्रा एक दिन तक रहता है उस समय बारह अंगुल की पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है और पौनेतीन पांव से पौरसी होती है अहो भगवन् ! ग्रीष्म ऋतु के दूसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं चित्रा, स्वाति व विशाखा चित्रा चउदह दिन, स्वाति पन्नरह दिन और

साई पण्णरस, विसहा एग राइदियणेइ, तयाण अट्ठंगुलपोरसीए छायाए सूरिए अणुपरिअट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि दो पयाइं अट्ठंगुलाइ पोरिसी भवई ॥ गिम्हाणं भते! तच्च मास कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! चत्तारि तजहा विसाहा, अणुराहा जेट्ठामूलो विसाहा चउद्दस, अणुराहा अट्ठ, जेट्ठा सत्त, मूलो एक्क राइदिअ णेइ तयाण चउरंगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणु परियट्टइ तस्सण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसिदिवससि दो पयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरसी भवइ ॥ गिम्हाणं भते! चउत्थमास कइ णक्खत्ता णेंति? गोयमा! तिण्णि

विशाखा एक दिन रहता है उस समय आठ अंगुल पुरुप छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के चरिम दिन को दो पांव आठ अंगुल से पोरसी होती है अहो भगवन्! ग्रीष्म ऋतु के तीसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं? अहो गौतम! चार नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम-विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल विशाखा चउदह दिन, अनुराधा आठ दिन, ज्येष्ठा सात, और मूल एक अहोरात्रि तक रहता है उस समय चार अंगुल पुरुप छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस मास के चरिम दिन को दो पांव व चार अंगुल से पोरसी होती है. अहो भगवन्! ग्रीष्म ऋतु के चतुर्थ मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं?

गुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्सण मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तसिंचण दिवसंसि तिण्णिपयाइ चत्तारि अगुलाइं पोरसीभवइ ॥ १८ ॥ गिम्हाणं भते ! पढम मास कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि तजहा–उत्तरा फग्गुणी, हत्थो, चित्ता, उत्तरा फग्गुणी चउद्दस, हत्थो पण्णरस, चित्ता एग राइंदियणेइ ॥ तयाणं दुवालसगुल पोरसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ॥ तस्सण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसिंचण माससि लेहट्ठाइ तिण्णि पयाइ पोरसी भवइ ॥ गिम्हाण भते ! दोच्च मास कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा! तिण्णि तजहा–चित्ता, साई, विसाहा चित्ता चउद्दस

पन्नरह दिन और उत्तराफाल्गुनी एक दिन तक रहता है. उस समय सोलह अंगुलकी पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है और उस मास के अंतिम दिन को तीन पांव व चार अंगुल से पोरसी होती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! ग्रीष्म ऋतु के प्रथम मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम-उत्तराफाल्गुनी, हस्त व चित्रा उत्तराफाल्गुनी चउदह दिन, हस्त पन्नरह दिन और चित्रा एक दिन तक रहता है उस समय बारह अंगुल की पुरुष छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है और पौनेतीन पांव से पोरसी होती है अहो भगवन् ! ग्रीष्म ऋतु के दूसरे मास को कितने नक्षत्र पूर्ण करते हैं ? अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं चित्रा, स्वाति व विशाखा चित्रा चउदह दिन, स्वाति पन्नरह दिन और

॥ ज्योतिषि चक्रस्याधिकार ॥

(गाहा) हिट्ठिं, ससि परिवारो, मदरवाहा तहेव लोगते, धरणिअलाओ अबाहाए,अतो बाहिंच उड्डमहे ॥१॥सठाण च पमाण,वहाति सीहगई, इड्डिमताय ॥तारतर ग्गमहिसी, तुडिअपहु ठिईय अप्पबहु ॥ २ ॥ १ ॥ अत्थिण भते ! चदिमसूरिआण हिट्ठिपि तारारूवा अणुपि तुल्लावि समेवि तारारूवा अणुपि तुल्लावि, उप्पिपि तारारूवा अणुपि तुल्लावि ? हता गोयमा ! तचेव उच्चारेयव्व ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुचइ

अब और भी ज्योतिषी चक्र आश्रिय सोलह द्वार कहते हैं—तद्यथा—१ नीचे ऊपर ताराओं का द्वार, २ चन्द्रमा का परिवार संख्या द्वार ३ ज्योतिषी चक्र का मेरु से अन्तर ४ लोकान्त से ज्योतिषी का अन्तर, ५ समभूमि से ज्योतिषी की ऊंचाइ, ६ अन्दर बाहिर ऊपर नीचे नक्षत्र विचार ॥ १ ॥ ७ ज्योतिषी के विमान का संस्थान, ८ विमान का प्रमाण ९ विमान वाहकदेव १० शीघ्र गति, ११ ऋद्धि की न्यूनाधिकता, १२ तारा तारा का अन्तर, १३ अग्रमहिषीकी संख्या, १४ आभ्यतरादि तीनों परिषदा १५ स्थिति-आयुष्य और १६ अल्पाबहुत्व ॥ १ ॥ प्रथम अधो ऊर्ध्व द्वार—अहो भगवन् ! चन्द्रमा के सूर्य के विमान के नीचे तथा ऊपर ताराओं के विमान ऋद्धिकर द्युतिकर, विभवादिकर, कितनेक कम

तजहा–मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा मूलो चउद्दस राइदियाइ णेइ, पुव्वासाढा पण्णरस राइदियाइ णेइ, उत्तरासाढा, एग राइदिय णेइ ॥ तयाण वट्टाए समचउरंसे संठाण संठियाए णग्गोह परिमंडलाए सकायमणुरागियाए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ तस्सण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसिदिवसंसि लेहट्ठाए दोपयाइ पोरसी हवइ ॥ एएसिंच पुव्ववण्णियाण पयाण, इमा संगहणी तजहा(गाहा) जोगो देवय तारग्गा, गोत्त संठाण चंद रविजोगो ॥ कुलपुण्णिम अमावासा, णेया छायाय बोधव्वा ॥१॥ इति नक्खत्ताधिकार ॥ ८ ॥

अहो गौतम ! तीन नक्षत्र पूर्ण करते हैं जिन के नाम-मूल, पूर्वांषाढा, व उत्तराषाढा मूल चउदह दिन पूर्वाषाढा पन्नरह दिन और उत्तराषाढा एक दिन तक रहता है उस समय वर्तुल, समचतुस्र, व न्यग्रोध परिमंडल संस्थानवाली अपनी काया समान छाया से सूर्य परिभ्रमण करता है उस समय दो पाँव से पौरसी होती है अब यहां पूर्वोक्त द्वारों के नाम गाथाद्वारा संक्षेप से कहते हैं योग, देवता, तारा, गोत्र, संस्थान, चंद्र सूर्य क योगवाले, कुल, पूर्णिमा, अमावास्या और छाया का कथन जानना यह नक्षत्र का अधिकार संपूर्ण हुवा

णक्खत्ता परिवारो, छावट्ठि सहस्साइ णवसया पणहत्तरी तारागण कोडा कोडीण परिवारो ॥ ३ ॥ मदरस्सण भते ! पव्वयस्स केवइयाए अबाहाए जोइस चार चरइ ? गोयमा ' इक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अवाहाए जोइस चारचरइ २ ॥ ४ ॥ लोगताओण भते ! केवइयाए अबाहाए जोइस चार चरइ ? गोयमा ! एक्कारस एक्कारसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे पण्णत्ता ॥ ५ ॥ धरणिअलाओण भते ! उड्ड उप्पइत्ता केवइयाए अबाहाए हेट्ठिल्ले जोइसे चार चरइ ? गोयमा !

छांसट हजार नव सो पचहत्तर क्रोडाक्रोडी ६६९७५,००,००,००,००,००० इतने ताराओं का परियार है इतना ही सूर्य का परिवार जानना ॥३॥ मेरु से अन्तर द्वार—अहो भगवन् ' जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से कितनी दूर पर ज्योतिषी चक्र चाल चलता है ? अहो गौतम! इग्यारह सो इक्कीस [११२१] योजन मेरु से फिरते चारों तरफ ज्योतिषी चक्र दूर रहा हुवा परिभ्रमण कर रहा है ॥ ४ ॥ लोकान्तसे अन्तर द्वार—अहो भगवन् ! लोक के अन्त से कितनी अन्तर से ज्योतिषी चक्र लोक कासनी अढाइ द्वीप बाहिर होने से ज्योतिषी अचल है ? अहो गौतम ! इग्यारह सो इग्यारह ११११ योजन लोक के अन्त से चारों तरफ फिरता ज्योतिषी चक्र रहा हुवा है ॥ ५ ॥ समभूमीक से ऊर्ध्व अन्तर द्वार—अहो भगवन् ! सम भूतल से कितने ऊपर जावे वहां कितने अन्तर से नीचे का ज्योतिषी चक्र तारा रूप चलता है ? अहो गौतम !

अत्थिण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा जहाण तेसिं देवाण तवणियमबंभचेराणि ऊसियाइ भवति, तहाण तहाण तेसिं देवाण एव पण्णायए तजहा-अणुतेवा, तुल्लतेवा, जहा जहाण तेसिं देवाण तवनियमबंभचेराणि णो ऊसियाइ भवति, तहा तहाण तेसिं देवाण णो पण्णायए तजहा-अणुएवा तुल्लएवा ॥ २ ॥ एगमेगस्सण भंते ! चंदस्स केवइया महग्गहा परिवारो, केवइया णक्खत्ता परिवारो, केवइयाओ तारागण कोडा कोडीओ पण्णत्ता ? गोयमा अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो, अट्ठावीस

कितनेक बराबर हैं क्या ? हां गौतम ! उक्त प्रकार ही है अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि चन्द्र, सूय से तारा कम तथा तुल्य हैं ? अहो गौतम ! जिस २ प्रकार व तारा रूप जो देवता हुवे हैं उनोंने पूर्व भवमें तप नियम ब्रह्मचर्य आदिक उत्कृष्ट अधिक व कम पालन किये है, उस २ प्रकार हीनपनको वा तुल्यपने को प्राप्त हुवे हैं, जिस २ प्रकार उन देवताओंको पूर्वभव सम्बन्धी तप नियम ब्रह्मचर्य अधिक होवे वैसे २ वे देवता परस्पर ऋद्धि द्युति आदिक की अधिकता को प्राप्त हुवे हैं॥ २॥ *परिवार द्वार-अहो भगवन् ! एकेक चन्द्रमा के कितने ग्रह का परिवार है, कितना नक्षत्र का परिवार है कितने क्रोडाक्रोड ताराओं का परिवार है ? अहो गौतम ! एकेक चन्द्रमा के ८८ महा ग्रह परिवार रूप है, २८ नक्षत्र परिवार रूप है,

* चन्द्रमा सूय से तारा अधिक ऋद्धिवाले नहीं होते से फक्त हीनता और तुल्यता का ही प्रश्न किया है

णक्खत्ता परिवारो, छावट्ठि सहस्साइं णवसया पणइत्तरी तारागण कोडा कोडीण परिवारो ॥ ३ ॥ मदरस्सण भते ! पव्वयस्स केवइयाए अबाहाए जोइस चार चरइ ? गोयमा ! इक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइस चारचरइ ३ ॥ ४ ॥ लोगताओण भते ! केवइयाए अबाहाए जोइस चार चरइ ? गोयमा ! एक्कारस एक्कारसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे पण्णत्ता ॥ ५ ॥ धरणिअलाओण भते ! उड्ढ उप्पइत्ता केवइयाए अबाहाए हेट्ठिल्ले जोइसे चार चरइ ? गोयमा !

छांसट हजार नव सो पचहत्तर क्रोडाक्रोडी ६६९७५,००,००,००,००,००० इतने ताराओं का परिवार है इतना ही सूर्य का परिवार जानना ॥३॥ मेरु से अन्तर द्वार—अहो भगवन् ! जम्बुद्वीप के मेरु पर्वत से कितनी दूर पर ज्योतिषी चक्र चाल चलता है ? अहो गौतम! इग्यारह सो इक्कीस [११२१] योजन मेरु से फिरते चारों तरफ ज्योतिषी चक्र दूर रहा हुवा परिभ्रमण कर रहा है ॥ ४ ॥ लोकान्त से अन्तर द्वार—अहो भगवन् ! लोक के अन्त से कितनी अन्तर से ज्योतिषी चक्र लोक कासनी अढाइ द्वीप बाहिर होने से ज्योतिषी अचल है ? अहो गौतम ! इग्यारह सो इग्यारह ११११ योजन लोक के अन्त से चारों तरफ फिरता ज्योतिषी चक्र रहा हुवा है ॥ ५ ॥ सम भूमी से ऊर्ध्व अन्तर द्वार—अहो भगवन् ! सम भूतल से कितने ऊपर जावे वहां कितने अन्तर से नीचे का ज्योतिषी चक्र तारा रूप चलता है ? अहो गौतम !

अत्थिण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा जहाण तेसिं देवाण तवणियमबभचेराणि ऊसियाइ भवति, तहाण तहाण तेसिं देवाण एव पण्णायए तजहा-अणुतेवा, तुल्लतेवा, जहा जहाण तेसिं देवाण तवनियमबभचेराणि णो ऊसियाइ भवति, तहा तहाण तेसिं देवाण णो पण्णायए तजहा-अणुएवा तुल्लएवा ॥ २ ॥ एगमेगस्सण भंते ! चदस्स केवइया महग्गहा परिवारो, केवइया णक्खत्ता परिवारो, केवइयाओ तारागण कोडा कोडीओ पण्णत्ता ? गोयमा अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो, अट्ठावीस

कितनेक बराबर हैं क्या ? हां गौतम ! उक्त प्रकार ही है अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि चन्द्र, सूर्य से तारा कम तथा तुल्य हैं ? अहो गौतम ! जिस २ प्रकार व तारा रूप जो देवता हुवे हैं उनोंने पूर्व भवमें तपनियम ब्रह्मचर्य आदिक उत्कृष्ट अधिक व कम पालन किये हैं, उस २ प्रकार हीनपनको वा तुल्यपने को प्राप्त हुवे हैं जिस२ प्रकार उन देवताओंको पूर्वभव सम्बन्धी तप नियम ब्रह्मचर्य अधिक होवे तैसे२ वे देवता परस्पर ऋद्धि द्युति आदिककी अधिकता को प्राप्त हुवे हैं॥२॥ *परिवार द्वार-अहो भगवन् ! एकेक चन्द्रमा के कितने ग्रह का परिवार है, कितना नक्षत्र का परिवार है कितने क्रोडाक्रोड ताराओं का परिवार है ? अहो गौतम ! एकेक चन्द्रमा के ८८ महा ग्रह परिवार रूप हैं, २८ नक्षत्र परिवार रूप हैं,

* चन्द्रमा सूर्य से तारा अधिक ऋद्धिवाले नहीं होते से फक्त हीनता और तुल्पता का ही प्रश्न किया है

णक्खत्ता परिवारो, छावट्ठि सहस्साइ णवसया पणहत्तरी तारागण कोडा कोडीण परिवारो ॥ ३ ॥ मंदरस्सण भंते ! पव्वयस्स केवइयाए अवाहाए जोइस चार चरइ ? गोयमा ! इक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अवाहाए जोइस चारचरइ ३ ॥ ४ ॥ लोगताओण भंते ! केवइयाए अबाहाए जोइस चार चरइ ? गोयमा ! एक्कारस एक्कारसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे पण्णत्ता ॥ ५ ॥ धरणिअलाओण भंते ! उड्ढ उप्पइत्ता केवइयाए अबाहाए हेट्ठिल्ले जोइसे चार चरइ ? गोयमा !

छासट हजार नव सो पचहत्तर क्रोडाक्रोडी ६६९७५,००,००,००,००,००० इतने ताराओं का परिवार है इतना ही सूर्य का परिवार जानना ॥३॥ मेरु से अन्तर द्वार—अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से कितनी दूर पर ज्योतिषी चक्र चाल चलता है ? अहो गौतम! इग्यारह सो इक्कीस [११२१] योजन मेरु से फिरते चारों तरफ ज्योतिषी चक्र दूर रहा हुवा परिभ्रमण कर रहा है ॥ ४ ॥ लोकान्त से अन्तर द्वार—अहो भगवन् ! लोक के अन्त से कितनी अन्तर से ज्योतिषी चक्र लोक कासनी अढाइ द्वीप बाहिर होने से ज्योतिषी अचल है ? अहो गौतम ! इग्यारह सो इग्यारह ११११ योजन लोक के अन्त से चारों तरफ फिरता ज्योतिषी चक्र रहा हुवा है ॥ ५ ॥ समभूमीका से ऊर्ध्व अन्तर द्वार—अहो भगवन् ! सम भूतल से कितने ऊपर जावे वहां कितने अन्तर से नीचे का ज्योतिषी चक्र तारा रूप चलता है ? अहो गौतम !

अत्थिण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा जहाण तेसिं देवाण तवणियमबंभचेराणि ऊसियाइं भवति, तहाण तहाण तेसिं देवाण एव पण्णायए तजहा-अणुतेवा, तुल्लतेवा, जहा जहाण तेसिं देवाण तवनियमबंभचेराणि णो ऊसियाइ भवति, तहा तहाण तेसिं देवाण णो पण्णायए तजहा—अणुएवा तुल्लएवा ॥ २ ॥ एगमेगस्सण भंते ! चदस्स केवइया महग्गहा परिवारो, केवइया णक्खत्ता परिवारो, केवइयाओ तारागण कोडा कोडीओ पण्णत्ता ? गोयमा अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो, अट्ठावीस

कितनेक बराबर हैं क्या ? हां गौतम ! वैसे प्रकार ही है अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि चन्द्र, सूर्य से तारा कम तथा तुल्य हैं ? अहो गौतम ! जिस २ प्रकार व तारा रूप जो देवता हुवे हैं उनोंने पूर्व भवमें तपनियम ब्रह्मचर्य आदिक उत्कृष्ट अधिक व कम पालन किये हैं, उस २ प्रकार हीनपनको वा तुल्यपने को प्राप्त हुवे हैं, जिस २ प्रकार उन देवताओंको पूर्वभव सम्बन्धी तप नियम ब्रह्मचर्य अधिक होवे तैसे २ वे देवता परस्पर ऋद्धि द्युति आदिककी अधिकता को प्राप्त हुवे हैं ॥ २ ॥ *परिवार द्वार-अहो भगवन् ! एकेक चन्द्रमा के कितने ग्रह का परिवार है, कितना नक्षत्र का परिवार है कितने क्रोडाक्रोड ताराओं का परिवार है ? अहो गौतम ! एकेक चन्द्रमा के ८८ महा ग्रह परिवार रूप हैं, २८ नक्षत्र परिवार रूप हैं,

* चन्द्रमा सूर्य से तारा अधिक ऋद्धिवाले नहीं होते से फक्त हीनता और तुल्यता का ही प्रश्न किया है

ओयणसए उवरिल्ले तारारूवे चारचरइ चदविमाणाओ वीसाए जोयणेहिं उवरिल्ले तारारूवे चार चरइ ॥६॥ जंबूद्दीवेण भंते ! दीवे अट्ठावीसाए णक्खत्ताण कयरे णक्खत्ते सव्वब्भतर चारचरइ, कयरे णक्खत्ते सव्ववाहिर चारचरइ, कयरे सव्वहिट्ठिल्ल चारचरइ, कयरे सव्वउवरिल्ले चारचरइ ? गोयमा ! अभिइ णक्खत्ते सव्वब्भतर चारचरइ, मूलो सव्ववाहिर, भरणी सव्वहिट्ठिल्लग, साई सव्वुवरिल्ल चारचरइ ॥ ७ ॥

१०० योजन ऊपर तारा रूप नक्षत्र ग्रह चलते हैं चन्द्रमा के विमान से २० योजन ऊपर ग्रह तारा रूप चलते हैं ॥ ६ ॥ आभ्यंतर बाह्य द्वार—अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में अट्ठावीस नक्षत्रों में से कौनसा नक्षत्र सब से अन्दर चलता है, कौनसा नक्षत्र सब से बाहिर के मंडल पर चलता है, कौनसा नक्षत्र सब नक्षत्रों से नीचे चलता है, कौनसा नक्षत्र सर्व नक्षत्रों से ऊपर चलता है ? अहो गौतम ! अभिजित् नक्षत्र सर्व नक्षत्रों के आभ्यंतर-अन्दर चलता है, मूल नक्षत्र सब नक्षत्रों के बाहिर चलता है, भरणी नक्षत्र सर्व नक्षत्रों से नीचा चलता है और स्वाति नक्षत्र सब नक्षत्रों से ऊंचा चलता है ॥ ७ ॥ संस्थान द्वार—अहो भगवन् ! चन्द्रमा का विमान किस संस्थान से संस्थित है ? अहो गौतम ! ऊर्ध्व मुख अर्ध कविठ के फल के संस्थान में संस्थित है, स्फटिक रत्नमय अभ्युद्गत उत्सित प्रभावशाली जानना यों सब ज्योतिषी के विमान का कथन जानना ॥ ८ ॥ विमान प्रमाण द्वार—अहो भगवन् !

सत्तहिं णउएहिं जोयणसएहि हिट्ठिल्ले जोइस चारचरइ ॥ एवं सूरविमाण, अट्ठहिं सएहिं चदविमाणे अट्ठहिं असीएहिं, जोयणसएहिं, उवरिल्ले तारारूवे नवहिं जोयण सएहिं चारचरइ ॥ चद विमाणे अट्ठहिं असीएहिं, उवरिल्ले तारारूवे नवहिं जोयण-सएहिं चार चरइ ॥ ६ ॥ जोइसयाण भंते ! हेट्ठिल्लाओ तलाओ केवइयाए अबाहाए सूरविमाणे चारचरइ ? गोयमा ! दसहिं जोयणेहिं, अबाहाए चारचरइ एव चद विमाणे णउइए जोयणेहिं चारचरइ ॥ उवरिल्ले तारारूवे दसुत्तरे जोयणसए चारचरइ ॥ सूरविमाणाओ चदविमाणे असीए जोयणहिं, चारचरइ, सूरविमाणाओ

समभूमिसे ७९० योजन ऊपर नीचेका ताराख्प ज्योतिषी चक्र है ऐसे ही सूर्यका विमान समभूतल से ८०० योजन ऊपर है चन्द्रमा का विमान समभूतल से ८८० आठ सो अस्सी योजन ऊपर चाल चलता है ऊपर के ग्रह तारा रूप समभूतल से ९०० नवसो योजन चाल चलते हैं चन्द्रमा के चार योजन ऊपर नक्षत्र पटल है, उस के ऊपर चार योजन बुद्ध पटल है, तीन योजन ऊपर बृहस्पति है, तीन योजन ऊपर मंगल है और तीन योजन ऊपर शनि है यों २० योजन में ऊपर सब तारायों है अहो भगवन् ! ताराओं के विमान से कितना ऊपर सूर्य का विमान है ? अहो गौतम ! नीचे के तारा रूप ज्योतिषी चक्र से १० योजन ऊपर सूर्य चलता है, इस के ऊपर ८० योजन ऊपर चन्द्रमा चलता है नीचे ऊपर के तारा रूप सब ज्योतिषी चक्र ११० एक सो दश योजन में चलता है, सूर्य विमान से चन्द्रमा का विमान ८० योजन ऊपर चलता है, सूर्य विमान से

ओयणसए उवरिल्ले तारारूवे चारचरइ चदविमाणाओ वीसाए जोयणेहिं उवरिल्ले तारारूवे चार चरइ ॥ ६ ॥ जंबुद्दीवेण भंते ! दीवे अट्ठावीसाए णक्खत्ताण कयर णक्खत्ते सव्वब्भतर चारचरइ, कयरे णक्खत्ते सव्ववाहिर चारचरइ, कयरे सव्वहिट्ठिल्ल चारचरइ, कयरे सव्वउवरिल्ले चारचरइ ? गोयमा ! अभिइ णक्खत्ते सव्वब्भतर चारचरइ, मूलो सव्ववाहिर, भरणी सव्वहिट्ठिल्लग, साई सव्वुवरिल्ल चारचरइ ॥ ७ ॥

१०० योजन ऊपर तारा रूप नक्षत्र ग्रह चलते हैं चन्द्रमा क विमान से २० योजन ऊपर ग्रह तारा रूप चलते हैं ॥ ६ ॥ आभ्यतर बाह्य द्वार—अहो भगवन् ! (जम्बूद्वीप में) अट्ठावीस नक्षत्रों में से कौनसा नक्षत्र सब से अन्दर चलता है, कौनसा नक्षत्र सब से बाहिर के मंडल पर चलता है, कौनसा नक्षत्र सब नक्षत्रों से नीचे चलता है, कौनसा नक्षत्र सर्व नक्षत्रों से ऊपर चलता है ? अहो गौतम ! अभिजित् नक्षत्र सर्व नक्षत्रों के आभ्यतर-अन्दर चलता है, मुल नक्षत्र सब नक्षत्रों के बाहिर चलता है, भरणी नक्षत्र सर्व नक्षत्रों से नीचा चलता है और स्वाति नक्षत्र सब नक्षत्रों से ऊचा चलता है ॥ ७ ॥ सस्थान द्वार—अहो भगवन् ! चन्द्रमा का विमान किस सस्थान से संस्थित है ? अहो गौतम ! ऊर्ध्व मुख अर्ध कविठ के फल के सस्थान से संस्थित है, स्फटिक रत्नमय अभ्युद्गत चतिसत प्रभावाला जानना यों सब ज्योतिषी के विमान का कथन जानना ॥ ८ ॥ विमान प्रमान द्वार—अहो भगवन् !

सत्तहिं णउएहिं जोयणसएहिं हिट्ठिल्ले जोइसे चारचरइ ॥ एवं सूरविमाणे, अट्ठहिं सएहिं चंदविमाणे अट्ठहिं असीएहिं, जोयणसएहिं उवरिल्ले तारारूवे नवहिं जोयण सएहिं चारचरइ ॥ चंद विमाणे अट्ठहिं असीएहिं, उवरिल्ले तारारूवे नवहिं जोयण-सएहिं चार चरइ ॥ ६ ॥ जोइसयाणं भंते ! हेट्ठिल्लाओ तलाओ केवइयाए अबाहाए सूरविमाणे चारचरइ ? गोयमा ! दसहिं जोयणेहिं, अबाहाए चारचरइ एवं चंद विमाणे णउइए जोयणेहिं चारचरइ ॥ उवरिल्ले तारारूवे दसुत्तरे जोयणसए चारचरइ ॥ सूरविमाणाओ चंदविमाणे असीए जोयणेहिं, चारचरइ, सूरविमाणाओ

समभूमिसे ७९० योजन ऊपर नीचेका तारारूप ज्योतिषी चक्र है ऐसे ही सूर्यका विमान समभूतल से ८०० योजन ऊपर है चन्द्रमा का विमान समभूतल से ८८० आठ सो अस्सी योजन ऊपर चाल चलता है ऊपर का सब तारा रूप समभूतल से ९०० नवसो योजन चाल चलते हैं चन्द्रमा के चार योजन ऊपर नक्षत्र पटल है, उस के ऊपर चार योजन बुद्ध पटल है, तीन योजन ऊपर बृहस्पति है, तीन योजन ऊपर मंगल है और तीन योजन ऊपर शनि है यों २० योजन में ऊपर सब तारायें हैं अहो भगवन् ! ताराओं के विमान से कितना ऊपर सूर्य का विमान है ? अहो गौतम ! नीचे के तारा रूप ज्योतिषी चक्र से १० योजन ऊपर सूर्य चलता है, उस के ऊपर ८० योजन ऊपर चन्द्रमा चलता है नीचे ऊपर के तारा रूप सब ज्योतिषी चक्र ११० एक सो दश योजन में चलता है, सूर्य विमान से चन्द्रमा का विमान ८० योजन ऊपर चलता है, सूर्य विमान से

वहति ? गोयमा ! सोलसदेव साहस्सीओ परिवहति ॥ चदविमाणस्सण पुरत्थिमेण सेयाण सुभगाण सुप्पभाण सखतल विमल निम्मल दहिघण गोखीर फेण रययणिगर प्पगासाण थिरलट्ठ पउट्ठ वट्ट पीवर सुसिलिट्ठ विसिट्ठ तिक्खदाढाविडंविय मुहाण रत्तुप्पल पत्तमउय सुकुमाल तालुजीहाण, महुगुलिय पिंगलक्खाण पीवरवरोरूण, पडिपुण्ण विउलखधाण, मिउविसय सुहुम लक्खण पसत्थ वरवण्ण केसराडोवसोहियाण, ऊसिय सुनमिअ सुजाय आफोडिअ लगूलाण, वइरामय णक्खाण, वइरामय दाढाण, वइरामय

वाहक देवताओं का द्वार—अहो भगवन् ! चन्द्रमा के विमान को कितने देवता उठाकर चलते हैं ? अहो गौतम ! सोलह हजार देवता उठाकर चलते हैं जिन का विवरण—चार हजार देवता पूर्व दिशा की तरफ श्वेत वर्णवाले श्वेत सुभग सौभाग्यवत अच्छी प्रभा कान्ति के धारक शंख के तले समान उज्वल निर्मल दधी (दही) के घन-समूह समान तथा गाय का दूध समुद्र का फेन, रूपा के पात्र का समूह इस समान श्वेत वर्णवाले तेज प्रकाश को प्रसारते हुवे, स्थिर दृढ लष्ट पुष्ट वर्तुल पुष्ट सुश्लिष्ट विरलता रहित लक्षणोपेत तीक्ष्ण दाढों के धारक, सोभायमान नखवाले रक्तोत्पल [लाल] कमल समान मृदु कोमल तालूआ और जिव्हा है जिन की, मधुगुटीका समान पीली है आँखों जिन की, पुष्ट है जंघा जिन की, प्रतिपूर्ण-विस्तीर्ण है स्कन्ध जिन का, मृदु विशद सूक्ष्म लक्षण कर प्रशस्त अच्छे प्रधान वर्णोपेत केशर के

चदविमाणेण भते ! किं सठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! अद्धकविट्ठ सठाण सठिए, सव्वफालिहामए अब्भूग्गय मुसिय पहसिए, एव सव्वाइ णेयव्वाइ ॥ ८ ॥ चद विमाणेण भते ! केवइय आयाम विक्खभेण केवइय वाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! (गाहा) छप्पण्ण खलु भाए विच्छिण्ण चद मडले होइ॥अट्ठावीसंभाए वाहल्ल तस्स बोधव्व ॥ १ ॥ अडयालीसभाए विच्छिण्ण सूरमडल होई॥चउवीस खलुभाए, वाहल्ल तस्स बोधव्व ॥ २ ॥ दो कोसेय गहाण, णक्खत्ताण तु हवइ तसद्ध ॥ तसद्ध ताराण, तस्सद्धचेव बाहल्ल ॥ ३ ॥ ९ ॥ चदविमाणेण भते ! कइ देवसाहस्सीओ परि-

चन्द्रमा का विमान कितना लम्बा चौडा जाडा-ऊंचा है ? अहो गौतम ! एक योजन के एकसठ भाग करे उस में के छप्पन भाग जितना लम्बा चौडा गोलाकार है और अठावीस भाग जितना जाडा है ऐसे ही अडतालीस भाग जितना सूर्य का विमान लम्बा चौडा है और चौवीस भाग जितना जाडा है दो कोस लम्बा चौडा और एक कोस जाडा ग्रह का विमान है एक कोस का लम्बा चौडा और आधा कोस का जाडा नक्षत्रों का विमान है आधा कोस लम्बा चौडा और पाव कोस जाडा ताराओं का विमान है (यह तारा के विमान का उत्कृष्ट प्रमाण कहा जघन्य पांच सो धनुष्य का लम्बा चौडा और अढाई सो धनुष्य का जाडा भी होता है, ऐसा बहु अर्थ वाली जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में लिखते हैं)॥९॥ विमान

वहति ? गोयमा ! सोलसदेव साहस्सीओ परिवहति ॥ चदाविमाणस्सण पुरात्थमेण सेयाण सुभगाण सुप्पभाण सखतल विमल निम्मल दहिघण गोखीर फेण रययणिगर प्पगासाण थिरलट्ठ पउट्ठ वट्ट पीवर सुसिलिट्ठ विसिट्ठ तिक्खदाढाविडविय मुहाण रत्तुप्पल पत्तमउय सुकुमाल तालुजीहाण, महुगुलिय पिंगलक्खाणं पीवरवरोरूण, पडिपुण्ण विउलखधाण, मिउविसय सुहुम लक्खण पसत्थ वरवण्ण केसराडोवसोहियाण, ऊसिय सुनमिअ सुजाय आफोडिअ लगूलाण, वइरामय णक्खाण, वइरामय दाढाण, वइरामय

वाहक देवताओं का द्वार—अहो भगवन् ! चन्द्रमा के विमान को कितने देवता उठाकर चलते हैं ? अहो गौतम ! सोलह हजार देवता उठाकर चलते हैं जिन का विवरण—चार हजार देवता पूर्व दिशा की तरफ श्वेत वर्णवाले श्वेत सुभग सौभाग्यवंत अच्छी प्रभा कान्ति के धारक शंख के तले समान उज्वल निर्मल दधी (दही) के घन-समूह समान तथा गाय का दूध समुद्र का फेन, रूपा के पात्र का समूह इस समान श्वेत वर्णवाले तेज प्रकाश को प्रसारते हुवे, स्थिर दृढ लष्ट पुष्ट वर्तुल पुष्ट सुश्लिष्ट विरलता रहित लक्षणोपेत तीक्ष्ण दाढों के धारक सोभायमान नखवाले रक्तोत्पल [लाल] कमल समान मृदु कोमल तालुआ और जिव्हा है जिन की, मधुगुटीका समान पीली है आँखों जिन की, पुष्ट है जंघा जिन की, प्रतिपूर्ण-विस्तीर्ण है स्कन्ध जिन का, मृदु विशद सूक्ष्म लक्षण कर प्रशस्त अच्छे प्रधान वर्णोपेत केशर के

दंताणं, तवणिज्ज जीहाणं तवणिज्जतालुयाणं, तवणिज्ज जोत्तग सुजोईयाणं, कामगमाणं, पीइगमाणं, मणोगमाणं मणोरमाणं, अमियगमाणं, अमियगाणं, अमियबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमाणं, महया अफोडिय सीहणाय बोल कलकलरवेणं, महुरेण मणहरेण पूरतो अंवर दिसाओय सोभयंता, चत्तारिदेव साहस्सीओ सीहरूवधारीणं देवाणं पुरत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति ॥ चंदविमाणस्सणं दाहिणेणं सेआणं सुभाणं सुभगाणं सुप्पभाणं संखतल विमलनिम्मल दहिघण

टोप कर शोभायमान है उचित ऊर्द्ध अच्छे प्रकार नमाया हुआ जातिवंत आस्फोटित भूमि पर प्रस्फोटता गूच्छ-पूछ जिन का, वज्रमय नखवाले, वज्रमय दाढोंवाले, वज्रमय दांतवाले, तपनीय रक्त सुवर्णमय जिव्हा वाले, तपनिय रक्त सुवर्णमय तालुवाले तपनीय रक्त सुवर्णमय जोतकर काम-इच्छा प्रमाण गति करने-वाले, प्रीति चित्त के हुल्लासवंत गतिवाले, मन के समान वेगवंत गतिवाले, अमित गतिवाले, अमित अप्रमाण गतिवाले, अमित-अप्रमाण बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रमवन्त, महा आस्फोटित सिंहनाद बोल रूप के कलकलाट शब्द कर मधुर मनोहर शब्द कर आकाश तल को पूरते हुवे दशों दिशा को शोभाते हुवे चार हजार देवता सिंह प्रकार सिंह का रूप धारन कर पूर्व दिशा की तरफ विमान को उठाकर चलते हैं चन्द्रमा के विमान के दक्षिण दिशा में श्वेत उज्वल वर्णवाले शुभ सौभाग्यवंत, अच्छी प्रभा

गोखीर फेण रयणणिगर प्पगासाण वइरामय कुंभजुयल सुट्ठिय पीवर वइरसोंडि वट्टिअ दित्त सुरत्त पउमप्पगासाण अब्भुण्णय मुहाण, तवणिज्ज विसाल कण्ण चचल चलत विमलुज्जलाण महुवण्णभिसतणिद्ध पत्तलनिम्मलत्तिवण्ण मणिरयण लोयणाण, अब्भुग्गय मउलिया धवल सरिस संठिअ णिव्वण दढ कसिण फालियामय सुजायदत मुसलोवसोभियाण, कचण कोसीपविट्ठ दतग्ग विमल मणिरयण रुइलपेरतचित्त रूवगविराइयाण, तवणिज्ज विसाल तिलग प्पमूह परिमंडियाण, णाणा मणिरयणि

कान्तिवाले, घृत के सळे के समान निर्मल अत्यन्त विमल, दधी का समुह, गाय का दूध फेन तथा रूपा का दग इस के समान उज्वल, प्रकाशवन्त, वज्रमय प्रधान वर्तुलाकार सूडा दड धारक, देदीप्यमान रक्त कमल समान प्रकाशमान अभ्युन्नत-ऊंचा है मुख जिन का, तपनीय रक्त सुवर्णमय विस्तीर्ण कांतिवाले, अत्यन्त चपल चालु हलते कानवाले, वणकर मधु सेहत के समान देदीप्यमान ; स्निग्ध स्नेहवत मांपन है जिन के, ऐसे निर्मल दोप रहित तीन वर्ण-रक्त, पित, श्वेत इन रंग की मणिमय लोचन-आंखोंवाले, अभ्युन्नत-ऊंचे मल्लिका के समान श्वेत सामान्यपने रहे व्रण रहित दृढ कृत्स्न समग्रपने स्फटिकमय सुजात जातिवत दन्तरूप मुशल कर उपशोभित शोभायमान सुवर्णमय को सीसा-श्याम बेठाये हुवे दन्ताग्र है जिन के निर्मल मणिरत्नमय रुचिर भगे उर चित्रकर्म रूपकर विराजमान है, तपनीय रक्त सुवर्णमय विशाल

दत्ताणं, तवणिज्ज जीहाणं, तवणिज्जतालुयाणं, तवणिज्ज जोत्तग सुजोईयाणं, कामगमाणं, पीइगमाणं, मणोगमाणं मणोरमाणं, अमियगमाणं, अमियगाणं, अमियबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमाणं, महया अफ्फोडिय सीहणाय बोल कलकलरवेणं, महुरेणं मणहरेणं पूरेतो अंबरं दिसाओय सोभयंता, चत्तारिदेव साहस्सीओ सीहरूवधारीणं देवाणं पुरत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति ॥ चंदविमाणस्सणं दाहिणेणं सेआणं सुभगाणं सुप्पभाणं संखतल विमलनिम्मल दहिघण

दीप कर शोभायमान है उचित ऊर्द्ध अच्छे प्रकार नमाया हुवा गोविवत आस्फालित भूमि पर आस्फालता ऐ ग्रूल-पूंछ जिन का, वज्रमय नखवाले, वज्रमय दाढोंवाले, वज्रमय दांतवाले, तपनीय रक्त सुवर्णमय जिव्हा वाले, तपनिय रक्त सुवर्णमय तालुवाले, तपनीय रक्त सुवर्णमय जोतकर काम-इच्छा प्रमाण गति करने-वाले, प्रीति चित्त के हुल्लासवत गतिवाले, मन के समान वेगवत गतिवाले, अमित गतिवाले, अपित अप्रमाण गतिवाले, अमित-अप्रमाण बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रमवन्त, महा आस्फोटित सिंहनाद बोल रूप के कलकलाट शब्द कर मधुर मनोहर शब्द कर आकाश तल को पूरते हुवे दशों दिशा को शोभाते हुवे चार हजार देवता उक्त प्रकार सिंह का रूप धारन कर पूर्व दिशा की तरफ विमान को उठाकर चलते हैं चन्द्रमा के विमान के दक्षिण दिशा में श्वेत उज्वल वर्णवाले शुभ सौभाग्यवंत, अच्छी प्रकाश

वइरसा॥६ गोखीर फेण रयणणिगर प्पगासाण वइरामय कुंभजुयल सुट्ठिय पीवर वइरसा॥६
वट्टिअ दिच सुरत्त पउमप्पगासाण अब्भूणय मुहाण, तवणिज्ज विसाल कण्ण चचल
चलत विमलुज्जलाण महुवण्णभिसतणिद्ध पत्तलनिम्मलत्रण्ण मणिरयण लोयणाण,
अब्भुग्गय मल्लिया धवल सरिस साठिअ णिव्वण दढ कसिण फालियामय सुजायदत
मुसलोवसोभियाण, कंचण कोसीपविट्ठ दतग्ग विमल मणिरयण रुइलपेरतचित्त
रूवगविराइयाण, तवणिज्ज विसाल तिलग प्पमूह परिमडियाण, णाणा मणिरयणि

कान्तिवाले, शंख के तळे के समान निर्मल अत्यन्त विमल, दधी का समुह, गाय का दूध फेन तथा रूपा का दग उस के समान उज्वल, प्रकाशवन्त, वज्रमय प्रधान वर्तुलाकार मूदा दृढ धारक, देदीप्यमान रक्त कमल समान प्रकाशमान अभ्युन्नत-ऊंचा है मुख जिन का, तपनीय रक्त सुवर्णमय विस्तीर्ण कांतिवाले, अत्यन्त चपल चाल हलते कानवाले, वर्णकर मधु सेहत के समान देदीप्यमान स्निग्ध स्नेहवत मांपन है जिन के, ऐसे निर्मल दोष रहित तीन वर्ण-रक्त, पित, श्वेत इन रंग की मणिमय लोचन-आंखोंवाले, अभ्युन्नत-ऊंचे मल्लिका के समान श्वेत सामान्यपने रहे व्रण रहित दृढ कृत्स्न समग्रपने स्फटिकमय सुजात जातिवत दंतरूप मुशल कर उपशोभित शोभायमान सुवर्णमय को सीसा-श्याम बेठाये हुवे दन्ताग्र है जिन के निर्मल मणिरत्नमय रुचिर प्रान्त उर चित्रकर्म रूपकर विराजमान है, तपनीय रक्त सुवर्णमय विशाल

मुक्तगोविज्ज वक्खगलयवर भूसणाण, वेरुलिय विचित्त दडनिम्मल वइरामय तिक्ख-लट्ठ अंकुस कुंभजुयलंतरोडियाण, तवणिज्ज सुबद्ध कच्छदीप्प अवलूकराण, विमल-घण मडल वइरामय लालाललिय णाणामणिरयण घंट पासग ययामय बद्धरज्जु लंबिय घंटा जुयल महुर सरमणहराण, अल्लीणपमाण जुत्तवट्टिय सुजाय लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालगत्त परिपुंछगाण उवचिय पडिपुण्ण कुम्मचलण लहुविक्कमाण, अंकमयणक्खाण, तवणिज्ज जीहाण, तवणिज्ज तालुयाण, तवणिज्जजोत्तग सुजोइयाण

विस्तीर्ण तिलक प्रमुख मुखाभरण कर प्रति मंडित अनेक प्रकार के मणिरत्नमय मस्तक के आभरण ग्रैवेय के आभरण प्रधान बन्धे हुवे हैं जिन के वैडूर्य रत्नमय विचित्र प्रकार के दंड निर्मल वज्रमय तीक्षण लष्ट ऐसे अंकुश कुम्भस्थल पर स्थापे हैं तपनीय रक्त सुवर्णमय अच्छे प्रकार बन्धी है कुक्षि को दोरी उस का दर्पवत, घलवत निर्मल घनमंडल वज्रमय माला बाजती हुई सहित, लालित मनोहर ताडन बजाने का जिन का ऐसी अनेक प्रकार की मणिरत्न घंटाओं और उन के पास रजत रूपामय बंधी-रज्जू-डोरी, उस से लम्बायमान लगा-छोटी घंटा के युगल जोडे उस के मधुर स्वर से मनोहर बना अलीन प्रमाणोपेत वर्तित वर्तुलाकार सुजात लक्षण कर प्रशस्त रमणिय है इस प्रकार गात्र परीपूर्ण पूछ है जिस का, उपचित पुष्ट प्रतिपूर्ण कूर्म-काछवे के समान उन्नत चरण उस का लघु-

कामगंमाण, पीईगमाण, मणोगमाण,मनोरमाण मणोहराण, अभियगईण, अमिय बल-
वीरिय पुरिसक्कार परक्कमाण महयागमीर गुलगुलाईअरवेण महुरेण मणहरेण पूरतो
अंबर दिसाओय सोभयता चत्तारिदेव साहस्सीओ गयरूवधारीण देवाणं दाहि-
णिल्ल बाह परिवहति ॥ चदविमाणस्सण पच्चत्थिमेण सेयाण सुभगाण सुप्पभाण चलचवल
ककुहसालीण घणणिचिय सुबद्ध लक्खणुण्णयईसिआणयवस भीट्ठाण चंक्कमिअ ल-

शीघ्र गति वाले, अकरत्नमय पांवों के नख हैं तपनीय रक्त सुवर्णमय तालुय हैं, तपनीय रक्त सुवर्णमय जोतकर जोते हुवे हैं. वांछित गति के करने वाले मीति हर्षित गति के करने वाले, मन प्रमाने गति के करनेवाले, मनोरम मनोहर अमित गति के करने वाले, अमित बलवीय पुरुषाकार पराक्रम के करने वाले, अमित-अप्रमान बलवीर्य पुरुषाकार पराक्रमवन्त महागमीर गुल गुलाट शब्द कर अकाश तलको पूरते हुवे दशों दिशा को शोभाते हुवे, ऐसे चार हजार देवता हत्थी का रूप धारन कर दक्षिण दिशा की तरफ विमान को उठाकर चलते हैं चन्द्र विमान को पश्चिम दिशा में श्वेत—उज्वल सौभाग्यवन्त अच्छी प्रभा सहित चल चचल चपल हलता हुआ कुम्भस्कन्ध उरा कर शोभायमान निविष्ट निचित पुष्ट सुबद्ध लक्षण कर उन्नत इषत—कुछनमे हुवे वृषभ प्रधान श्रेष्ट ओष्ट हैं जिन के, ऐसे चक्रमित कुटिलगति विलास गति पुलित नामागति चपल—अत्यन्त चपल गर्वन्त गति वाले, सन्तत अच्छे प्रकार नमे हैं पासे-पाँसालेय

मुद्धगेविज्ज बद्धगलयवर भूसणाण, वेरुलिय विचित्त दंडनिम्मल वइरामय तिक्ख लट्ठ अकुस कुंभजुयलंतरोडियाण, तवणिज्ज सुबद्ध कच्छदप्पि अबलुद्धराण, विमल-घण मंडल वइरामय लालाललिय णाणामणिरयण घंट पासग ययामय बद्धरज्जु लंबिय घंटा जुयल महुर सरमणहराण, अल्लीणपमाण जुत्तवट्टिय सुजाय लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालगत्त परिपुंछगाण उवचिय पडिपुण्ण कुम्मचलण लहुविक्कमाण, अंकमयणक्खाण, तवणिज्ज जीहाण, तवणिज्ज तालुयाण, तवणिज्जजोत्तग सुजोइयाण

विस्तीर्ण तिलक प्रमुख मुखाभरण कर अति मंडित अनेक प्रकार के मणिरत्नमय मस्तक के आभरण ग्रीवा के आभरण प्रधान बन्धे हुवे हैं जिन के वैडूर्य रत्नमय विचित्र प्रकार के दंड निर्मल वज्रमय तीक्ष्ण लष्ट ऐसे अंकुश कुम्भस्थल पर स्थापे हैं तपनीय रक्त सुवर्णमय अच्छे प्रकार बन्धी है कुक्षि को दोरी उस का दर्पवत, बलवंत निर्मल घनमंडल वज्रमय माला धारती हुई सहित, लम्बित मनोहर शब्द बजाने का जिन का ऐसी अनेक प्रकार की मणिरत्न घंटाओं और उन के पास रजत रूपामय बंधी-रज्जू-डोरी, उस से लम्बायमान लघु-छोटी घंटा के युगल जोडे उस के मधुर स्वर से मनोहर बना अलीन प्रमाणोपेत वर्तित वर्तुलाकार सुजात लक्षण कर प्रशस्त रमणिय है इस प्रकार गात्र परीपूर्ण पूंछ है जिस का, उपचित पुष्ट प्रतिपूर्ण कूर्म-काछवे के समान उन्नत चरण उस का लघु-

कयमालियाण, वरघटागलय मालुज्जलसिरिधराण ॥ पउमुप्पल सगलसुरहि माला-
विभूसियाण, वईरखुराण विविहक्खुराण, फलिआमयदंताण, तवणिज्ज जीहाण,
तवणिज्ज तालुयाण तवणिज्ज जोत्तग सुजोइयाण, कामगमाण, पीइगमाण, मणोगमाण
मणोरमाण, अमियगईण, अमिय बलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमाण, महयागज्जियग-

उस सहित अनेक प्रकार की मणि सुवर्ण और रत्नमय छोटी घंटिका जिसकी प्रभा के प्रकाश अच्छी रचित है मालिका श्रेणि प्रधान पद्मों गले में माला का उज्वल शोभा के धारक, पद्मकमल सूर्य विकासी उत्पल कमल चन्द्र विकासी इत्यादि सर्व प्रकार के सुरभी सुगन्धी माला कर विभूषित ऐसी वज्ररत्नमय खुरी है जिन की, ऐसे विविध प्रकार खुरी पर खुरी है जिन के, स्फटिकरत्न दांत है तपनीय रक्त सुवर्णमय जिव्हा है, तपनीय रक्त सुवर्ण जोतकर जोते हुवे, काम—वांछित गति करने वाले, प्रीतिकारी गति क करने वाले मन प्रमान गति करने वाले, मनोहर अप्रमित गति के करने वाले, अप्रमित बलवीय पुरुषाकार पराक्रम के धारक महागर्जित गंभीर शब्द करनेवाले, मधुरमिष्ट मनोहर शब्द कर पूरते हुवे आकाश तलको, दशो दिशा को शोभाते हुवे चार हजार देवता वृषभ (बैल) का रूप धारन कर पश्चिम दिशा के तरफ विमान को उठाकर चलते हैं ॥ चन्द्रमा के विमान के

लिअ पुलिय चलन्चवलगाव्वियगईण, सण्णयपासाण, सगय पासाण, सुजाय पासाण, पत्रिरवट्टिअसुसाट्ठिय कडीण ओलव पलव लक्खण पमाण जुत्त रमणिज्ज वालगडाण,सम-खुर वालिधाणाण, समलिहिय सिंगतिक्खग्ग सगयाण तणुसुहुम सुजाय णिद्धलोम-च्छविधराण, उवचिय मसल विसाल पडिपुण्ण खंध पएस सुदराण, वेरुलिय भिसत कडक्ख सुनिरिक्खणाणं,जुत्तपमाण पहाणलक्खण पसत्थ रमणिज्जगग्गर सोभियाण घरघरग सुसद्द बद्धकट्ठ परिमंडियाण, णाणामणि कणगरयण घंटिया वेगच्छियसु

जिन की समत-एकत्र मिलीहुई हैं पांसलियों जिन की, सुजात-उत्तम हैं पांसलियों जिन की ऐसी पुष्ट और वर्तुलाकार सुसंस्थित अच्छा है कटिविभाग जिनका, ऐसे अवलम्बन स्थान मतम्बाय मान प्रमाण २२ प्रमाण युक्त रमणीय मनोहर है वालगढ चमर जिन के, समान एकसे हैं खुर जिन के वालधान-पूछ परस्पर एकसे तीक्ष्ण अग्रभाग-अणीयो है जिन की, इस प्रकार के शृंग वाले, सूक्ष्म पतले हैं सूक्ष्म सुजात अच्छे स्निग्ध रोमावली की कान्ति के धारक उपचित पुष्ट मसाल मांसकर सहित विशाल विस्तीर्ण प्रतिपूर्ण ऐसे स्कंध प्रदेश स्तम्भ इस प्रकार शोभायत वैडूर्य रत्नमय देदीप्यमान कटाक्षवत सुष्टु अच्छे निरीक्षण लोचन हैं, जिन के, ऐसे प्रमानापेत प्रधान लक्षण सहित अच्छे रमणिय गर्गरक नामक प्रधान पत्र का शोभायत, घरघरक नामक कंठ का आभरण के अच्छे शब्द युक्त बन्ध किया है कंठ में जिन के

सिक्खियगईणं ललतलामगललाय वरभूसणाण, सण्णयपासाणं, सगयपासाण, सुजायपासाण, पीवरवट्टिय सुसठियकडीण, ओलबपलब लक्खणपमाणजुत्त रमणिज्ज वालपुच्छाण तणुसुहुमसुजाय णिद्धलोम च्छविधराण, मिउविसय सुहुमलक्खण पसत्थ विच्छिण्ण केसवालिधराण ललतथासग ललाडवर भूसणाण मुहमडगओ चूलग, चामर थासग परिमढियकडीण, तवणिज्जखुराण, तवणिज्जजीहाण, तवणिज्ज

मुख मंडक मुख का आभरन प्रलम्बायमान गुच्छे चामर स्यासग जिनका परिमंडित है स्कटि विभाग जिन का, तपनीय रक्त सुवर्णमय है खुरी जिन की, रक्त सुवर्णमय है जिव्हा जिन की, रक्त सुवर्णमय है तालु जिन के, रक्त सुवर्णमय जोतकर जाते हुवे, ऐसे काम-वांछित गति के करने वाले, प्रीति हर्षकारी गति के करने वाले, मनोहर गति के करने वाले मनोहर अप्रमित गति के करने वाले, अप्रमित बलवीर्य पुरुषाकार पराक्रमवंत बडे घोडों के हेषारव शब्द कर मिष्ठ मनोहर दशों दिशा को पूर्ण करते हुवे अकाश तल का ऐसे चार हजार देवता घोडे के रूप धारन कर उत्तर दिशा की तरफ चन्द्र विमान को उठा कर चलते हैं॥ इस प्रकार सोले हजार देवता चन्द्रमा के विमान को चारों दिशा में चार प्रकार के रूप धारन कर चलते हैं. जिस प्रकार सोले हजार देवता चद्रमा के विमान को उठाकर चलते हैं इस ही प्रकार सोले

भीररवेण, महुरेण मणहरेण पूरता अबरदिसोओय सोभयता चचारि देवसाहस्सीओ वसहरूवधारीण देवाण पच्चत्थिमिल्ल वाह परिवहति ॥ चदविमाणस्सण उत्तरेण सेयाण सुभाण सुभगाण सुप्पभाणं वरमल्लिहायणाण हरिमेलामउल मल्लियच्छाण चचुचिअललिय पुलिय चलचवल चचलगईण, लघण वग्गण धावण धोरण तिवइ जइण

उत्तर दिशा श्वेत-उज्वल सौभाग्यवत अच्छे वर्णवाले हायत सवत्सर अर्थात यौवनवत हरिक्मेल्लर वनस्पति का सुकुमाल फूल तथा मल्लिका समान श्वेत आखों है चचल कुटिल गति वाले विलासवत गति वाले पुलित नामक गति वाले, वायु जैसे चपल गति वाले, लघन थदी करने वाले, वल्गन-कूदना धावन-दौडना धोरण-चतुरगति, त्रिपदी-तीनपाँव पर रहना इत्यादि अनेकगति वाले, डोलाते हुवे हलते हुवे घुम्मरू मनोहर कठ-गले में बधे हैं प्रधान भूषण के धारक, नमी हुई पासलियों हैं मिलती हुई पासलियों है, अच्छे पासे हैं पुष्ट वर्तुलाकार सुस्थित कटि विभाग जिन का ऐसे अवलम्बन स्थान प्रलम्बमान लक्षण और प्रमाण कर युक्त मनोहर चमर जिन के अत्यन्त स्वच्छ जातिवंत स्निग्ध रोम उस की क्रांति के धारक सुकुमाल निर्मल सूक्ष्म लक्षण प्रशस्त विस्तीर्ण लम्बी स्कन्धपर केश की श्रेणि के धारन हार शोभित खासग-दर्पन के आकार वाला आभरन को .... स्थापन किये हुवे, प्रधान उत्तम भूषण के धारक

सिक्खियगईणं ललतलामगललाय वरभूसणाण, सण्णयपासाण, सगयपासाण, सुजायपासाण, पीवरवट्टिय सुसठियकडीण, ओलम्बपलम्ब लक्खणपमाणजुत्त रमणिज्ज वालपुच्छाण तणुसुहुमसुजाय णिद्धलोम च्छविधराण, मिउविसय सुहुमलक्खण पसत्थ विच्छिण्ण केसवालिधराण ललतथासग ललाडवर भूसणाण मुहमडगओ चूलग, चामर थासग परिमडियकडीण, तवणिज्जखुराण, तवणिज्जजीहाण, तवणिज्ज

मुख मंडक मुख का आभरन प्रलम्बायमान गुच्छे चामर स्यासग जिनका परिमडित है स्कदि विभाग जिन का, तपनीय रक्त सुवर्णमय है खुरी जिन की, रक्त सुवर्णमय है जिव्हा जिन की, रक्त सुवर्णमय है तालु जिन के, रक्त सुवर्णमय जोतकर भाते हुवे, ऐसे काम-वांछित गति के करने वाले, प्रीति हर्षकारी गति के करने वाले, मनोहर गति के करने वाले मनोहर अप्रमित गति के करने वाले, अप्रमित बलवीर्य पुरुषाकार पराक्रमवंत बडे घोडों के हेषारव शब्द कर मिष्ट मनोहर दशों दिशा को पूर्ण करते हुवे अकाश तल का ऐसे चार हजार देवता घोडे के रूप धारन कर उत्तर दिशा की तरफ चन्द्र विमान को उठा कर चलते हैं ॥ इस प्रकार सोले हजार देवता चन्द्रमा के विमान को चारों दिशा में चार प्रकार के रूप धारन कर चलते हैं जिस प्रकार सोले हजार देवता चंद्रमा के विमान को उठाकर चलते हैं इस ही प्रकार सोले

तालुआण, तवणिज्जजोत्तगसुजोईयाण, कामगमाण पीइगमाण, मणोगमाण, मणोरमाण, अमियगईण अमिअ वल्वीरय पुरिसक्कार परक्कमाण महयाहयहेसिय किलकिलाइअरवेण मुहुरेण मणहरेण पुरता अवरदिसाओय सोभयता चत्तारि देवसाहस्सीओ हयरूवधारीण देवाण उत्तरिल्ल वाह परिवहति ॥ एव सूरविमाणाण जाव तारारूव विमाणाण, णवर एस देवसघाए (गाहा) सोलस देवसहस्सा

हजार देवता सूर्य के विमान को भी उठाकर चलते हैं, और इस ही प्रकार ग्रह नक्षत्र व ताराओं के विमान को भी उठाकर चलते हैं; जिस में इतना विशेष वह गाथा से कहते हैं, चन्द्रमा और सूर्य के विमान को, उठाकर चलने वाले सोले हजार देव, ग्रह के विमान को आठ हजार देव उठाकर चलते हैं जिस में से दो हजार देवता उक्त कहे चारों प्रकार के रूप धारन कर उठते हैं, नक्षत्र के विमान को चार हजार देवता उस में से एकेक हजार देवता उक्त कहे चारों प्रकार के रूप धारन कर उठाकर चलते हैं और तारा रूप विमान को दो हजार देवताओं में से पांच सो २ देवता उक्त कहे चारों प्रकार के रूप धारन कर चारों दिशा में उठाकर चलते हैं ॥ (नोट) (यहां चन्द्रादिक ज्योतिषी के विमान जगत के स्वभाव कर निराधारपने रहे हैं, परतु उन के अभियोगीक देवता हैं वे तारस नाम कर्म के उदय से

हवंति चंदेसुचेव सूरेसु ॥ अट्ठेवसहस्साइ इक्किक्कमीगहविमाण ॥ १ ॥ चत्तारि सहस्साइ, णक्खत्तमिय हवंति इक्किक्के ॥ दो चेव सहस्साइ, तारारूवेक्कमेक्कामि ॥२॥ ॥ १० ॥ एएसिण भंते ! चंदिमसूरिअगहगण णक्खत्ततारारूवाण, कयरेसव्वसिग्घगई, कयरेसव्वसिग्घगइतराचेव कयरेसव्वप्पगइ ? गोयमा ! चंदेहिंतो सूरासिग्घगई, सूरेहिंतो गहासिग्घगइ, गहेहिंतो णक्खत्तासिग्घगई, णक्खत्तेहिंतो तारारूवा सिग्घगई सव्वप्पगइचंदा, सव्वसिग्घगई तारारूवा ॥ ११ ॥ एएसिण भंते ! चंदिम सूरिय

अपने जैसे या अपने से हल्की जाति के देवता को अपनी महिमा अतिशय बताने को माने यह इन्द्रो के विमान को अथवा बडे देवता के विमान को चलाने वाले देवता हैं इस प्रकार बडापना अपने मन में मानते हुवे हर्षवन्तबने हुवे कितनेक सिंह के रूप से, कितनेक हाथी के रूप से कितनेक बैल के रूप से, और कितनेक घोडे के रूप से चन्द्रादिक के विमान को उठाकर चलते हैं, ऐसा बहु अर्थवाली जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में लिखते हैं) ॥ १० ॥ अब गति अल्पाबहुत्व कहते हैं—अहो भगवान ! चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषीयों में किस की सब से शीघ्रगति है और किसकी सब से थोडी गति है ? अहो गौतम ! चन्द्रमासे सूर्य की शीघ्र गति है, सूर्य से ग्रह की शीघ्र गति है, ग्रह से नक्षत्रों की शीघ्र गति है और नक्षत्रों से ताराओं की शीघ्र गति है, सब से अल्प गति वाले चन्द्र देव हैं और सब से शीघ्र गति वाले

गहगण णक्खत्त ताराख्वाण कयरे सव्व महिड्डिया, कयरेसव्वप्पिड्डिया ? गोयमा ! ताराख्वेहिंतो णक्खत्ता महिड्डिया, णक्खत्तेहिंतो गहामहिड्डिया गहेहिंतो सूरिया महिड्डिया, सूरिएहिंतो चंदा महिड्डिया सव्वप्पिड्डिया ताराख्वा, सव्वमहिड्डिया चंदा॥ १२॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे ताराएय ताराएय केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते? गोयमा ! दुविहे अंतरे पण्णत्ते तंजहा-वाघाइएय, निव्वाघाइए निव्वाघाइए जहण्णेणं

तारा रूप विमान वाले देव हैं ॥ ११ ॥ अब अल्पाधिक ऋद्धि द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! चन्द्र, सूर्य ग्रह नक्षत्र ताराओं में कौन अल्प ऋद्धि वाले हैं और कौन सब से अधिक ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! तारारूप देव से नक्षत्र देव अधिक ऋद्धि वाले हैं, नक्षत्रों से ग्रह अधिक ऋद्धि वाले हैं ग्रह से सूर्य अधिक ऋद्धि वाले हैं, और सूर्य से चद्रमा अधिक ऋद्धि वाले हैं सब से थोडी ऋद्धि वाले तारा देव हैं और सब से अधिक ऋद्धि वाले चन्द्र देव हैं ॥ १२ ॥ अब तारा २ के परस्पर अन्तर द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में रहे हुवे ताराओं के विमान में परस्पर कितना अन्तर है ? अहो गौतम ! अन्तर दो प्रकार का कहा है तद्यथा—व्याघात पर्वतादि मध्य में आने से अन्तर होवे निर्व्याघात स्वभाविक अन्तर होवे इस में निर्व्याघात अन्तर जघन्य पांच सो धनुष्य और उत्कृष्ट दो कोश का अन्तर है और जो व्याघातिक अन्तर है वह जघन्य दोसो छासठ(२६६)योजन (चारसो योजन

पचधणुसयाइ, उक्कोसेण दो गाऊयाइ, वाघाईएअए जहण्णेण दोण्णि छावट्ठे जोयण सए, उक्कोसेण बारस जोयणसहस्साइ दोण्णि य बायालेजोयणसए तारारूवस्स २ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥ १३ ॥ चदस्सण भते ! जोईसिंदस्स जोइसरण्ण कई अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तजहा चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाला, पभकरा ॥ ताओण एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवी सहस्साइ परिवारो पण्णत्ता । पभूण ताओ एगमेगादेवी अन्नदेवी सहस्स परिवार

ऊचा निषध पर्वतपर पांचसो योजनका कूंट ऊचा है वे शिखर ऊपर अढाइ सो योजनके चौडे हैं उससे दोसो योजन तारे दूर हैं यों दो सो छासट योजन होते हैं) उत्कृष्ट बारह हजार दो सो बयालीस १२२४२ योजन तारा २ के अन्तर है [दश हजार योजन का मेरु पर्वत चौडा और मेरु से इग्यारह सो इक्कीस योजन दूर ताराओं हैं यों १२२४२ योजन उत्कृष्ट अन्तर होता है] ॥ १३ ॥ अग्रमहिषी द्वार—अहो भगवन् ! चन्द्रमा ज्योतिषी का राजा उस के अग्रमहिषीयों कितनी है ? अहो गौतम ! चार अग्रम हिषियों हैं उन के नाम—१ प्रभा, २ ज्योत्सनाभा, ३ अर्चिमाली और ४ प्रभकरा इन चार में एकेक के चार २ हजार देवी का परिवार है, यों सोलह हजार हुइ और इन में की एकेक देवी चार २

गहगण णक्खत्ता तारारूवाण कयरे सव्व महिड्डिया, कयरेसव्वप्पिड्डिया ? गोयमा ! तारारूवेहिंतो णक्खत्ता महिड्डिया, णक्खत्तेहिंतो गहामहिड्डिया गहेहिंतो सूरिया महिड्डिया, सूरिएहिंतो चदा महिड्डिया सव्वप्पिड्डिया तारारूवा, सव्वमहिड्डिया चदा॥१२॥ जबूद्दीवेण भते ! दीवे ताराएय ताराएय केवइए अबाहाए अतरे पण्णत्ते? गोयमा ! दुविहे अतरे पण्णत्ते तजहा-वाघाईएय, निव्वाघाइए निव्वाघाइए जहण्णेण

तारा रूप विमान वाले देव हैं ॥ ११ ॥ अब अल्पाधिक ऋद्धि द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र ताराओं में कौन अल्प ऋद्धि वाले हैं और कौन सब से अधिक ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! तारारूप देव से नक्षत्र देव अधिक ऋद्धि वाले हैं, नक्षत्रों से ग्रह अधिक ऋद्धि वाले हैं ग्रह से सूर्य अधिक ऋद्धि वाले हैं, और सूर्य से चंद्रमा अधिक ऋद्धि वाले हैं सब से थोडी ऋद्धि वाले तारा देव हैं और सब से अधिक ऋद्धि वाले चन्द्र देव हैं ॥ १२ ॥ अब तारा २ के परस्पर अन्तर द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में रहे हुवे ताराओं के विमान में परस्पर कितना अन्तर है ? अहो गौतम ! अन्तर दो प्रकार का कहा है तद्यथा—व्याघात पर्वतादि मध्य में आने से अन्तर होवे निर्व्याघात स्वभाविक अन्तर होवे इस में निर्व्याघात अन्तर जघन्य पांच सो धनुष्य और उत्कृष्ट दो कोश का अन्तर है और जो व्याघातिक अन्तर है वह जघन्य दोसो छासठ(२६६)योजन (चारसो योजन

पचधणुसयाइ, उक्कोसेण दो गाऊयाइ, वाघाईएअए जहण्णेण दोण्णि छावट्ठे जोयण-सए, उक्कोसेण बारस जोयणसहस्साइ दोण्णिय बायालेजोयणसए ताराख्वस्स २ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥ १३ ॥ चदस्सण भते ! जोईसिंदस्स जोइसरण्ण कई अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तजहा-चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाला, पभकरा ॥ ताओण एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवी सहस्साइ परिवारो पण्णत्ता । पभूण ताओ एगमेगादेवी अन्नदेवी सहस्स परिवार

ऊचा निषध पर्वतपर पांचसो योजनका कूट ऊचा है वे शिखर ऊपर अढाइ सो योजनके चौडे हैं उससे दोसो योजन तारे दूर है यों दो सो छासट योजन होते हैं) उत्कृष्ट बारह हजार दो सो बयालीस १२२४२ योजन तारा २ के अन्तर है [दश हजार योजन का मेरु पर्वत चौडा और मेरु से इग्यारह सो इक्कीस योजन दूर ताराओं हैं यों १२२४२ योजन उत्कृष्ट अन्तर होता है] ॥ १३ ॥ अग्रमहिषी द्वार—अहो भगवन् ! चन्द्रमा ज्योतिषी का राजा उस के अग्रमहिषीयों कितनी है ? अहो गौतम ! चार अग्रम हिषियों हैं उन के नाम—१ प्रभा, २ ज्योत्सनाभा, ३ अर्चिमाली और ४ प्रभकरा. इन चार में एकेक के चार २ हजार देवी का परिवार है, यों सोलह हजार हुए और इन में की एकेक देवी चार २

विउव्वित्तए, एवामेवसपुव्वावरेण सोलस देवीसहस्सा सेत तुडिए ॥ १४ ॥ पभूण भते ! चदे जोईसिंदे जोइसराया चदवाडिंसए विमाणे चदाए रायहाणीए सभासुहम्माए तुडिएण सद्धिं महयाहय णट्टगीय वाईय जाव दिव्वाइ भोग भोगाइ भुंजमाणे विहरित्तए? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेण भते! जाव विहरित्तए? गोयमा! चदस्सणं जोइसिंदस्स चदवडिंसए विमाणे चदाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइय खभे वइरामएसुगोल वट्टसमुग्गएसु बहुइओ जिणस्स कहाओ सणिक्खित्ताओ चिट्ठति ताओण चदस्स अण्णेसिंच बहूण देवाणय देवीणय अच-

हजार रूप वैक्रेय बनाती है यह अग्रमहिषी की संख्या कही ॥ १४ ॥ अब सभा द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! चन्द्रमा ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चन्द्रावतसक नामक विमान में चन्द्र नामक राज्यधानी की सौधर्मिक सभा में त्रुटिक अग्रमहिषि सहित महा शब्द वादिंत्र बजाते गीत गायन होते यावत् देवता सम्बन्धी भोगने योग्य भाग भोगते हुवे विचरने समर्थ हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं, किस कारन, अहो भगवन् ! यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम ! चन्द्रमा ज्योतिषी का इन्द्र चन्द्रावतसक विमान में चन्द्रमा की राज्यधानी सौधर्मिक सभा में माणवक नामक चैत्य स्तंभ में वज्र रत्नमय गोल वर्तुलाकार समुद्गके-डब्बे में बहुत जिन की दाढों हैं वे दाढो चन्द्रमा के और भी बहुत से

णिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ से तेणट्ठेण गोयमा ! णो पभू जाव विहरित्तए, पभूण चदे सभाए सुहम्माए चउहिं सामाणिय साहस्सीहिं एव जाव दिव्वाइ भोग भोगाइ भुजमाणे विहरित्तए, केवल परियारिअ इड्ढीए णो चेवण मेहुण वत्तिय विजया वेजयाति जयति अपराजिता सव्वेसिं गहाण एयाओ अग्गमहिसीओ छवचर-स्सवि गहसयस्स एयाओ अग्गमहिसीओ वत्तव्वाओ॥१५॥गहणामाइं इमाहि (गाहा) इगालए विआलए, लोहिअके, सणिच्छरे, चेव॥ आहुणिए पाहुणिय कणग सणामायपचेव ॥१॥ सोमे सहिए अस्सासणेय, कज्जोवएय कच्छूरए ॥ अयकरए दुदुसए सखसणा-

देवता के देवी के पूज्यनीय कहे यावत् पयुपासना योग्य हैं इस लिये अहो गौतम ! चार हजार सामानिक देव, सोल हजार आत्मरक्षक यावत् देव सम्बन्धी भोग भोगवने को समर्थ है, परंतु मैथुन सेवने समर्थ नहीं है सब ग्रह नक्षत्र ताराओं के-विजय वैजयती, जयती, और अपराजिता नाम का चार देवीयों हैं १ प्रभा, २ आतपाभा, ३ अर्चि माली, और ४ प्रभकरा, इस नाम की चार सूर्य की अग्रमहिषीयों हैं ॥ १५ ॥ अब अठयासी ग्रह के नाम कहते हैं—१ अङ्गारक, २ विआलक, ३ लोहिताक्ष ४ शनैश्चर, ५ आधुनिक, ६ प्राधुनिक, ७ कण, ८ कणक ९ कणकणक, १० कणविताणक, ११ कण सतानिक १२ सोम, १३ सहित, १४ अश्वासन, १५ कार्योपग, १६ कच्छुरक, १७ अजकरक, १८ दुदभक, १९ शंख, २० शखनाभ, २१ शखवर्णाभ, २२ कंश, २३ कंसनाभ, २४ कंसवर्णाभ, २५ नील,

मास तिल्याव ॥ २ ॥ तिण्णव कसणामा, नीलस्पपी हवति चचारि ॥
मास तिल पुप्फवण्णे, दगवण्णे काय वझेय ॥ ३ ॥ इन्दग्गि धूमकेऊ, हरि पिंगलए
बुहय ॥ सुक्केय, विहस्सइ, राहु, अगत्थी, माणवगे कामफासेय ॥ ४ ॥ धुरए पमुहे
वियडे विसंधिकप्पे, तहा पयल्लेय ॥ जडिआलए अरुणे, अग्गिले, काले महाकाले
॥ ५ ॥ सात्थिय सोवत्थियए, वद्धमाणग तहा, पलंबेय ॥ निच्चालोए णिच्चुज्जोए,
सयपहचेव ओभासे ॥ ६ ॥ सेयंकरे, खेमंकरे, आभंकरेय पभंकरेय ॥ बोधव्वे अरए
विरएय, तहा असोग, तहवी असोगेय ॥ ७ ॥ विमल वितत्त विवत्थे, विसाल

२६ नीलाभास, २७ रूप, २८ रूपावभास, २९ भस्म, ३० भस्मराशी, ३१ तिल, ३२ तिल पुष्पवर्ण ३३ दक, ३४ दकवर्ण, ३५ काय ३६ वध्य, ३७ इन्द्राग्नि, ३८ धूमकेतु ३९ हरि, ४० पिंगमरू, ४१ बुध, ४२ शुक्र, ४३ बृहस्पति, ४४ राहु ४५ अगस्तिक, ४६ माणवक, ४७ काम स्पर्श, ४८ धुर, ४९ प्रमुख, ५० विकट, ५१ विसन्धिकल्प, ५२ प्रकल्प, ५३ जगल ५४ अरुण, ५५ अग्गिल, ५६ काल, ५७ महा काल, ५८ स्वास्तिक ५९ सौवास्तिक ६० वर्द्धमानक ६१ प्रलम्ब, ६२ नित्यप्रोत, ६३ नित्योद्योत, ६४ स्वयप्रभु, ६५ अवभास, ६६ श्रेयस्कर, ६७ क्षेमकर ६८ आभंकर, ६९ प्रभंकर ७० अरजा, ७१ विरजा, ७२ अशोक, ७३ वितशोक, ७४ विमल ७५ वितत, ७६ वित्रस्त, ७७ विशाल ७८ शाल, ७९ सुव्रत, ८० अनिवृत्ति, ८१ एकजटि, ८२ द्विजटि, ८३ कर, ८४ करिक, ८५ राजा,

तहसाल सुव्वए चेव॥अनिपट्टी एगजडी होइ विजडीय बोधव्वे ॥ ८ ॥ कर करिय रायअग्गल, बोधव्वे पुप्फ भावकेऊय ॥ अट्ठासीइ गहा खलु णायव्वा आणुपुव्वीए॥९॥ एवं भाणियव्वं जाव भावकेऊस्स अग्गमहिसीओ ॥१६॥ (गाहा) बम्हा विण्णुय वसु, वरुणे अय बुड्ढि पूस॥आस जमे अग्गि पयावइ, सोमे रुद्दे अइती॥ १ ॥ विहस्सइ सप्पे पिउ भग अज्जम सविया ॥ तट्ठे वाऊ तहेव इंदग्गी मित्ते इंदे निरई, आऊ विस्साय बोधव्वा ॥ २ ॥ १७ ॥ चंदविमाणेण भंते ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णणं चउभाग पलिओवम, उक्कोसेणं पलिओवम वास

८६ अंगल, ८७ पुप्फकेतु और ८८ भाव केतु यह ८८ ग्रह निश्चय से जानना ऐसे ही कहना यावत भाव केतु के भी चार अग्रमहिषीयों कहना ॥ १६ ॥ अब अठावीस नक्षत्र देवता युक्त कहते हैं— १ ब्रह्म-अभिजित २ विष्णु श्रवण, ३ वसु धनिष्ठा, ४ वरुण शतभिषा, ५ अज-पूर्वाभाद्रपद, ६ वृद्धि उत्तराभाद्रपद, ७ पुष्य-रेवती, ८ अश्व-अश्विनी, ९ यम भरणी, १० अग्नि कृत्तिका, ११ प्रजापति रोहिणी, १२ सौम्य-मृगशिर, १३ रुद्र-आर्द्रा, १४ अदिती-पुनर्वसु, १५ बृहस्पति पुष्य, १६ सर्प अश्लेषा, १७ पितृ-मघा, १८ भग पूर्वाफाल्गुनी, १९ अर्यम उत्तराफाल्गुनी, २० सविता-हस्त, २१ त्वष्टा चित्रा, २२ वायु-स्वाति, २३ इन्द्राग्नि विशाखा, २४ मित्र अनुराधा २५ इन्द्र-जेष्ठा, २६ नऋति मूल, २७ आप पूर्वाषाढा और २८ विश्व-उत्तराषाढा यह २८ नक्षत्र जानना ॥ १७ ॥ अब स्थिति द्वार कहते हैं—

सयसहस्स मब्भहियं ॥ चंदविमाणेणं देवीणं जहण्णेणं चउब्भागं पलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वास सहस्सेहिं अब्भहियं ॥ सूरविमाणे देवाणं जहण्णेणं चउब्भागं पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वास सहस्स मब्भहियं, सूरविमाणे देवीणं जहण्णेणं चउब्भागं पलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वास सएहिं अहियं ॥ गहविमाणेणं देवाणं जहण्णेणं चउब्भागं पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं, गहविमाणे देवीणं जहण्णेणं चउब्भागं पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥ णक्खत्त विमाणे देवाणं जहण्णेणं चउब्भागं पलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं, णक्खत्त विमाणे देवीणं जहण्णेणं चउब्भागं पलिओवमं, उक्कोसेणं

अहो भगवन् ! चन्द्र विमान के देवता की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य एक पल्य का चौथा भाग की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, चन्द्र विमान में रहनेवाली देवियों का जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्ट आधा पल्य पचास हजार वर्ष की सूर्य विमान में रहनेवाले देवता की जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्ट एक पल्य एक हजार वर्ष की, सूर्य के विमान में रहनेवाली देवियों की जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्ट आधे पल्य पांचसो वर्ष की ग्रह विमान में रहनेवाले देवता की जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्ट एक पल्य की, ग्रह विमानवासी देवियों जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्ट आधे पल्य की, नक्षत्र विमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्ट आधे पल्य की, नक्षत्र विमानवासी देवियों की

साहिय चउब्भाग पलिओवम ॥ ताराविमाणे देवाण जहण्णेण अट्ठभाग पलिओवम, उक्कासेण चउब्भाग पलिओवम, ताराविमाण देवीण जहण्णेण अट्ठभागपलिओवम उक्कासेण साइरेगट्ठभाग पलिओवम ॥ १८ ॥ एएसिण भते ! चद सूरिय गह णक्खत्त ताराख्वाण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! चदिमसूरिया दुवे तुल्ला सव्वत्थोवा, णक्खत्त सखेज्जगुणा, गहासखज्जगुणा तारारूवासखेज्जगुणा, ॥ इति जोतिषी चक्काधिकार ॥ ९ ॥ * * *

जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्ट पाव पल्य कुछ अधिक, तारा विमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्ट पाव पल्यसे कुछ अधिक तारा विमानवासी देवियों की जघन्य पल्य के आठवे भाग उत्कृष्ट पल्य के आठवे भाग कुछ अधिक ॥ १८ ॥ अब अल्पाबहुत्व द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! चन्द्रमा सूर्य ग्रह नक्षत्र ताराओं में कौन कौन से बहुत थोडे तुल्य विशेप हैं ? अहो गौतम ! चन्द्रमा और सूर्य दोनों परस्पर तुल्य हैं और सब ज्योतिषीयों से थोडे हैं उस से नक्षत्र संख्यातगुने अधिक हैं क्यों कि अठावीस गुने हैं, उन से ग्रह सख्यातगुने अधिक हैं क्यों कि अठ्यासी गुने हैं, और उन से तारा रूप सख्यातगुने अधिक हैं क्यों कि ६६९७५ क्रोडाक्रोडी गुणे अधिक हैं इति ज्योतिषी चक्र ॥

॥ समुच्चयाधिकार ॥

जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे जहण्णपएवा उक्कोसपएवा केवइया तित्थयरा सव्वग्गेण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णपए चत्तारि, उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थयरा सव्वग्गेण पण्णत्ता ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे जहण्णपएवा उक्कोसपएवा केवइया चक्कवट्टी सव्वग्गेण पण्णत्ता–गोयमा ! जहण्णपए चत्तारि, उक्कोसपए तीसं चक्कवट्टी सव्वग्गेण पण्णत्ता ॥ बलदेवा तत्तिआचेव, जत्तिआ चक्कवट्टी ॥ वासुदेवावि तत्तिआचेव ॥ २ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे केवइया णिहिरयणा सव्वग्गेण पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि

अब कुछ जम्बूद्वीप पन्नति में कहा अधिकार संक्षेप में कहते हैं—अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप में एक वक्त में सब कितने तीर्थंकर होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य चार तीर्थंकर होते हैं, मेरु के चारों तरफ चारों विदेह क्षेत्र में और उत्कृष्ट चौतीस तीर्थंकर होते हैं बत्तीस तो बत्तीस विदेह में और एक भरत में तथा एक ऐरावत क्षेत्र में यों सब ३४ तीर्थंकर एक वक्त में उत्कृष्ट पाते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में एक वक्त में कितने चक्रवर्ती महाराजा होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य चार होते हैं मेरु के चारों तरफ चारों विदेह में, और उत्कृष्ट तीस होते हैं अठावीस तो अठावीस विदेह में (इस वक्त जघन्य पद चार विजय में चार बलदेव तथा वसुदेव पाते हैं इस कारन २८ ही गिने हैं) और एक भरत में तथा एक ऐरावत में ऐसे ही जघन्य चार और उत्कृष्ट ३० बलदेव तैसे ही

छलुत्तरा णिहिरयणा सव्वग्गेण पण्णत्ते ॥ ३ ॥ जम्बूद्दीवेण भंते ! दीवे केवइया णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहण्णपए छत्तीस णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति उक्कोसपए दोण्णिसित्तरा णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४ ॥ जम्बूद्दीवेण भंते ! दीवे केवइया पंचिंदिया रयणसया सव्वग्गेण पण्णत्ता ? गोयमा ! दोदसुत्तरा पंचिंदिय रयणसया सव्वग्गेण पण्णत्ते ? ॥ ५ ॥ जम्बूद्दीवेण भंते ! दीवे

जघन्य चार उत्कृष्ट ३० वासुदेव जानना क्यों कि जिस वक्त जघन्य पद में चक्रवर्ती होते हैं उस वक्त उत्कृष्ट पद में बलदेव वासुदेव होजाते हैं और जिस वक्त जघन्य पद में बलदेव वासुदेव होते हैं. उस वक्त में उत्कृष्ट पद में तीर्थंकर होजाते हैं एक ही स्थान में चक्रवर्ती और बलदेव वासुदेव साथ नहीं होते हैं इस लिये ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप में कितने निधान चक्रवर्ती के उपभोग में आते ऐसे हैं ? अहो गौतम ! ३०६ हैं बत्तीस विदेह में और दो भरत ऐरावत में यों ३४ स्थान में नव २ निधान शाश्वत हैं तो चौतीस को नवगुना करने से ३०६ होते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में कितने निधान चक्रवर्ती के उपभोग में शीघ्रता से आते हैं ? अहो गौतम ! एकेक चक्रवर्ती के नव २ निधान परिभोगपने आते हैं तो जघन्य पद चार चक्रवर्ती को ३६ निधान उपभोग में आते हैं और उत्कृष्ट पद तीस चक्रवर्ती को २७० निधान एक ही वक्त में परिभोग में आते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में सेनापति प्रमुख पंचेन्द्रिय रत्न कितने हैं ? अहो गौतम ! दो सो दश पंचेन्द्रिय रत्न सब होते हैं एकेक चक्रवर्ती के सात २ होते हैं तो तीस चक्रवर्ती के २१० हुवे ॥ ५ ॥

जहण्णपएवा उक्कोसपएवा केवइया पंचिंदिया रयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति? गोयमा ! जहण्णपए अट्ठावीस उक्कोसपए दोण्णिदसुत्तरा पंचिंदिय रयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ६ ॥ जंबूद्दीवेण भंते ! दीवे केवइयाए एगिंदिय रयणसया जहण्णपएवा उक्कोसपएवा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहण्णपए अट्ठावीस उक्कोसपए दोण्णिदसुत्तरा एगिंदिय रयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ७ ॥ जंबूद्दीवेण भंते ! दीवे केवइयं आयामविक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं, केवइयं उव्वेहेणं, केवइयं उड्ढं उच्चत्तेणं केवइयं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवेदीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णिजोयणसय-

अहो भगवन् ! जम्बुद्वीप में चक्रवर्ती के उपभोग पने एक वक्त में कितने पंचेन्द्रिय रत्न आते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद में चार चक्रवर्ती के २८ पंचेन्द्रिय रत्न भोग में आते हैं और उत्कृष्ट पद २१० पंचेन्द्रिय रत्न उपभोग में आते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप कितना लम्बा चौडा है कितना परिधि वाला है, कितना ऊंडा है कितना ऊंचा है ? अहो गौतम ! एक लाख योजन लम्बा चौडा गोलाकार है तीन लाख सोला हजार दोसो सतावीस योजन, तीन कोस एकसो अठावीस धनुष्य और साडितेरे अंगुल परिधि वाला है एक हजार योजन का ऊंडा है अधोगामीनी सलीलावती विजय की अपेक्षा तथा मेरु पर्वत एक हजार योजन जमीन में ऊंडा है इस अपेक्षा,

सहस्साइ सोलसयसहस्साइ दोण्णिमसत्त वीसे जेयणसए तिण्णिअकोसे अट्ठावीसम्च धणुसय तेरसय अद्धगुलत्व विसेसाहिय परिक्खेवेण ॥ एग जोयणसहस्स उव्वेहेण णवणउइ जोयणसहस्साइ साइरेगाइ उड्ढ उच्चत्तेण, साइरेग जोयणसयसहस्स सव्वग्गेण पण्णत्ता ॥ ८ ॥ जबूद्दीवेण भते ! दीवे किं सासए असासए ? गोयमा ! सिय सासए सियअसासए ॥ सेकेणट्ठेण भते! एव वुच्चइ सिय सासए सिय असासए ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वण्ण गध रस फास पज्जवेहिं असासए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ सिय सासए सिय असासए ॥ ९ ॥ जबूद्दीवेण भते ! दीवे

निन्याणू हजार योजन कुच्छ अधिक ऊंचा है क्यों कि जम्बू द्वीप का सम भूतल से ९९ हजार योजन मेरु ऊचा है. ऊपर चालीस योजन चूलका ऊंची है इस अपेक्षा से यों समग्रमिलकर जम्बुद्वीप एक लाख योजन का लम्बा चौडा है और कुछ अधिक एक हजार योजनका ही ऊचा नीचा है॥८॥ अहो भगवन्! जम्बू द्वीप शाश्वत है कि अशाश्वत है ? अहो गौतम ! शाश्वता भी है और अशाश्वता भी है किस कारन अहो भगवन् ! एसा कहते हो कि शाश्वता अशाश्वता दो ही प्रकार है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप द्रव्य पर्याय की अपेक्षा शाश्वता है और वर्ण गध रस स्पर्श की अपेक्षा कर अशाश्वता है क्यों कि इन को पलटा होता ही रहता है अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा कि शाश्वता भी है और अशाश्वता भी है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप काल से

कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! णकयाविणासी, णकयावि णरिथ, णकयावि ण भविस्सइ भुविंच भवइय भविस्सइय धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे जम्बूद्दीवेदीवे पण्णत्ते ॥ १० ॥ जम्बूद्दीवेणं भंते ! दीवे किं पुढवि परिणामे, आऊपरिणामे, जीवपरिणामे, पुग्गलपरिणामे ? गोयमा ! पुढवि परिणामेवि, आऊपरिणामेवि, जीवपरिणामेवि पुग्गलपरिणामेवि ॥ ११ ॥ जम्बूद्दीवेणं भंते ! दीवे सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता पुढविकाइयत्ताए आऊकाइयत्ताए तेऊकाइयत्ताए वाऊकाइयत्ताए वणस्सइकाइयत्ताए उववण्ण पुव्वा ? हंता गोयमा !

कितने काल तक रहेगा? अहो गौतम! जम्बूद्वीप अतीत कालमें किसीवक्त नहीं था ऐसा भी नहीं मानना वर्तमान काल में किसी वक्त न है ऐसा भी नहीं मानना अनागत काल में किसी वक्त नहीं रहेगा ऐसा भी नहीं मानना परंतु अतीत अनंत काल में था, वर्तमान में है और अनागत के अनंत काल तक रहेगा स्थिर है निश्चय है, शाश्वत है, इस का किसी भी वक्त क्षय नहीं होगा, व्यय भी न होगा यह ऐसा ही अवस्थित सदैव रहेगा, एक ही रूप में नित्य यह जम्बुद्वीप नामक द्वीप कहा है ॥ १० ॥ अहो भगवन्! जम्बुद्वीप नामक द्वीप क्या पृथ्वी परिणाममय है कि पानी परिणाममय है कि जीव परिणाममय है अथवा पुद्गल परिणाममय है ? अहो गौतम ! पृथ्वीमय भी जम्बूद्वीप है पानीमय भी है जीव कर भरा होने से जीवमय भी है और पुद्गल पिण्ड रूप होने से पुद्गलमय भी है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् !

असइ अदुवा अणत खुत्तो ॥ १२ ॥ स केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जम्बूदीवेदीवे गोयमा ! जबूदीवेणदीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहव जबूरुक्खा जबूवण्णा जबूवणसडा णिच्च कुसुमिया जाव पिंडि मजरी विडसगधरा सिरीए अईव२ उवसोभे माणा चिट्ठति ॥ जबूएय सुदसणाए अणाढीए णाम देवे महढिए जाव पलिओवम ठिईए परिवसइ, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जबूदीवे २ ॥ १३ ॥ तएण समणे भगव महावीरे महिलाए णयरीए माणिभद्द चेइए बहूण समणाण, बहूण

जम्बुद्वीप नामक द्वीप में सब प्राणी-बेन्द्रिय तेन्द्रिय चौरिन्द्रिय सब भूत-वनस्पति, सब जीव पचन्द्रिय और सब सत्व पृथ्वी पानी तेऊ वायु गत काल में उत्पन्न हुवे हैं, क्या ? हां गौतम ! कदाचित् अनेक वक्त अथवा अनती वक्त उत्पन्न हुवे हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप ऐसा क्यों कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप में उस २ देश में उस २ स्थानों में तहां बहुत जम्बु [जामन] के वृक्ष हैं जम्बु के वन हैं बहुत जम्बु वृक्ष के वनखण्ड हैं वे सदैव कुसुम-फुलों कर फुले हुवे यावत पिंडमय मांजरीरूप अवतसक की शोभा कर अत्यन्त शोभायमान हैं तथा जम्बूद्वीप में जम्बू सुदर्शन नामक रत्नों का वृक्ष है उसपर जम्बूद्वीप का मालक अनाढ्य नामक देवता महाऋद्धिवत यावत् एक पल्योपम के आयुष्य वाला रहता है इसलिये अहो गौतम ! इसे जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है ॥ १३ ॥ तब फिर श्री श्रमण भगवत महावीर स्वामी मिथिला नामक नगरी के मणिभद्र नाम चैत्य में बहुत साधु

समणीण, बहुण सावयाण, बहूण सावियाण, बहुण देवाण, बहूण देवीण मज्झगए एवमाइक्खई एव भासेई एव पण्णवेइ एव परूवेइ जबूदीव पण्णत्ती णाम अज्झो! अज्झयणे अट्ठंच हेउंच पसिणच कारणच वागरणच भुज्जो२ उवदसेइ ॥ तिबेमि ॥

इति श्री जबूद्दीव पण्णत्ती सूत्त सम्मत्त ॥ ५ ॥

—

बहुत साध्वी बहुत श्रावक बहुत श्राविका बहुत देवताओं बहुत देवीयों इन की परिषदा के मध्य में विराजे हुवे ऐसा वचन से कहा, ऐसे विशेष का भाखा, ऐसे प्रशस्त किया, ऐसे प्ररूपा यह जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति नामक अध्ययन प्रश्नों के उत्तर रूप अर्थ करके हेतु उदाहरण करके प्रश्नोत्तर करके कारण [illegible] करके व्याकरण विस्तार युक्ति करके वारम्वार उपदेशा-बताया उस ही प्रकार अहो जम्बू! मैने तेरे प्रते सुनाया ॥ इति जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति नामक पांचवा अंग समाप्तम् ॥ ५ ॥ १६ ॥

॥ इति षोडश ॥

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र समाप्तम्.

वीर संवत २४४६' पोष कृष्ण ११ शनिवार